अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की
ख़िलाफ़ते राशिदा पर मुश्तमिल मदनी फूलों से मा'मूर एक जामेअ़, मुदल्लल व तख़रीज शुदा किताब

FAIZANE FAROOQE AA'ZAM, JILD-2 (HINDI)

फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर का मुकम्मल बयान) जिल्द दुवुम

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, जिल्द दुवुम"** उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त्** करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़्हा व सत़्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
की ख़िलाफ़ते राशिदा पर मुश्तमिल मदनी फूलों से मा'मूर
एक जामेअ़, मुदल्लल व तख़रीज शुदा किताब

फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म

﴾जिल्द दुवुम, ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर का मुकम्मल बयान﴿

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत

नाशिर
मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ

नाम किताब : फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द दुवुम)

(ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर का मुकम्मल बयान)

पेशकश : शो'बा फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तबाअ़ते अव्वल : रजबुल मुरज्जब, सिने 1438 हिजरी

ता'दाद : 1100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 29 जुमादल उख़रा 1435 हि. हवाला नम्बर : 190

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ اَجۡمَعِیۡن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म" (उर्दू)

(जिल्द दुवुम, ख़िलाफ़त के सुन्हरे दौर का मुकम्मल बयान)

(**मतबूआ : मक्तबतुल मदीना**) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मतालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

02-03-2014

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी

उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म" (उर्दू) के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ **:** मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، یحیی بن قیس، ج۶، ص۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

.....बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

.....जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई अ़रबी इ़बारत पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ ﴾11﴿ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴾مؤطا امام مالک ج۲ ص۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱﴿ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾13﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّ حِیۡم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

अबवाबे फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द सानी)

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म	27	अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे इह्तिसाब	344
बा'दे ख़िलाफ़त इब्तिदाई मुआ़मलात	35	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मह्कमए पोलीस व फ़ौज	394
फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा	49	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां	409
फ़ारूक़े आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद	111	अ़ह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात	534
अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम	186	फ़ारूक़ी गवर्नर और इन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर	693
निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	226	अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात	769
अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया	247	अ़ह्दे फ़ारूक़ी तारीख़ के आईने में	811
निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम	317		

इजमाली फ़ेहरिस्त

तआरुफ़े अल मदीनतुल इल्मिय्या	11	फ़ारूक़े आ'ज़म का मसाजिद को रौशन करना	75
फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'जम़ के बारे में.......	12	फ़ारूक़े आ'ज़म का वज़ीफ़ा	77
पहला बाब : ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म	27	बा'दे ख़िलाफ़त फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़िज़ा	80
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन आयाते मुबारका	28	फ़ारूक़े आ'ज़म का सादा व मुबारक लिबास	89
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन अहादीसे मुबारका	31	फ़ारूक़े आ'ज़म की आजिज़ी	96
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाए सहाबा	32	फ़ारूक़े आ'ज़म और चन्द मुआ़शरती उमूर	98
दूसरा बाब : बा'दे ख़िलाफ़त इब्तिदाई मुआ़मलात	35	सफ़र के मदनी फूल	100
ख़िलाफ़त के बा'द इब्तिदाई मुआ़मलात	36	झूट के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म	101
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के बुन्यादी उसूल	43	ता'रीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीन	102
तीसरा बाब : फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा	49	फ़ारूक़े आ'ज़म और बैठने के मदनी फूल	103
फ़ारूक़े आ'ज़म और मुख़्तलिफ़ इबादात का एहतिमाम	50	फ़ारूक़े आ'ज़म और क़ैलूला	106
फ़ारूक़े आ'ज़म और नमाज़ का एहतिमाम	51	फ़ारूक़े आ'ज़म और अंगूठी	107
फ़ारूक़े आ'ज़म और तरावीह की जमाअ़त	63	फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़्वाहिशाते नफ़्स	108
फ़ारूक़े आ'ज़म और रोज़ों का एहतिमाम	69	**चौथा बाब : फ़ारूक़े आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद**	111
फ़ारूक़े आ'ज़म और इस्तिक़्बाले रमज़ान	70	हुक़ूक़ुल इबाद पर तफ़्सीली हदीसे मुबारका	113
फ़ारूक़े आ'ज़म और हज्जे बैतुल्लाह	72	इज़ाफ़ी हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी	118
फ़ारूक़े आ'ज़म और ज़िक्रुल्लाह का एहतिमाम	74	रिआ़या की ख़बर गीरी करना	120

www.dawateislami.net

माले ग़नीमत की तक़्सीम कारी	126	ख़िलाफ़े शरीअ़त आरा की मुमानअ़त	239
अ़हदे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ का निज़ाम	129	तौहीने मुस्लिम वाली आरा की मुमानअ़त	242
उम्महातुल मोमिनीन के वज़ाइफ़	135	**सातवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया**	247
दीगर लोगों के वज़ाइफ़	135	अ़द्लो इन्साफ़ करने पर तीन आयाते मुबारका	249
फ़ौजियों के वज़ाइफ़	136	अ़द्लो इन्साफ़ न करने पर तीन आयाते मुबारका	250
बैतुल माल के माल की तक़्सीम	141	अ़द्लो इन्साफ़ पर तीन अहादीसे मुबारका	250
मुश्किल वक़्त में रिआ़या की ख़ैरख़्वाही	146	फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़द्लो इन्साफ़	252
अ़वाम के ग़म में बराबरी की शिर्कत	147	अ़द्ल पर फ़ारूक़े आ'ज़म के तीन फ़रामीने मुबारका	252
रिआ़या के साथ इज़्हारे हमदर्दी	151	अ़हदे फ़ारूक़ी के "निज़ामे अ़द्लिया" की तफ़्सील	253
बारगाहे इलाही से इस्तिआ़नत	154	निज़ामे अ़द्लिया के उसूलो ज़वाबित़	255
अ़वामुन्नास की ख़ैरख़्वाही	155	निज़ामे अ़द्लिया के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़	255
रिआ़या को आ'माले सालेहा की तरग़ीब	162	निज़ामे अ़द्लिया के उ़मूमी उसूलो ज़वाबित़	256
फ़ारूक़े आ'ज़म और बारिश की दुआ़	163	अ़हदे फ़ारूक़ी के अ़दालती क़ाज़ी व जज	262
सय्यिदुना अ़ब्बास के वसीले से दुआ़	164	अ़दालती जजों की फ़ारूक़ी तरबिय्यत	266
इस्लाम में वसीले का तसव्वुर	168	फ़ारूक़ी क़ाज़ियों के मुख़्तलिफ़ औसाफ़	266
वसीले के सुबूत पर तीन आयाते मुबारका	168	क़ाज़ियों के फ़राइज़े मन्सबी	271
अम्बियाए किराम के वसीले से दुआ़ मांगना	171	फ़ारूक़े आ'ज़म ने रिश्वत का दरवाज़ा बन्द कर दिया	279
औलियाए किराम के वसीले से दुआ़ करना	174	फ़ारूक़े आ'ज़म का एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिहादी अम्र	280
आज़्माइश में अ़वाम के साथ बराबरी की शिर्कत	175	अ़दालती जजों का एहतिसाब और उन की मा'ज़ूली	281
फ़ारूक़े आ'ज़म की जानवरों पर शफ़्क़त	183	निज़ामे अ़द्लिया का अस्ल मक़्सद	283
पांचवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम	186	अ़हदे फ़ारूक़ी में अ़वाम की क़ानून से वाक़िफ़िय्यत	284
फ़ारूक़े आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ मुशावरतें	195	फ़ारूक़े आ'ज़म के फ़ैसले	286
शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा ज़रूरी उमूर	211	फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला करने का अन्दाज़	291
छटा बाब : निज़ामे अ़हदे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	226	फ़ारूक़े आ'ज़म के चन्द तारीख़ी फ़ैसले	294
अ़हदे फ़ारूक़ी में मज़्हबी आज़ादी	227	फ़ारूक़े आ'ज़म की जराइम के ख़िलाफ़ क़ानूनी सज़ाएं	296
अ़हदे फ़ारूक़ी में आमदो रफ़्त की आज़ादी	230	फ़ारूक़े आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ फ़ैसले	298
अ़हदे फ़ारूक़ी में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी	232	फ़ारूक़े आ'ज़म अ़द्लो इन्साफ़ का नमूना थे	302
अ़हदे फ़ारूक़ी और आज़ादिये राए	232	फ़ारूक़ी तमग़ए इम्तियाज़ हा़सिल करने वाले क़ाज़ी	306
हा़किमे वक़्त की इस्लाह़ करने की इजाज़त	234	अ़हदे फ़ारूक़ी के ख़ुसूसी जज	308
फ़ारूक़े आ'ज़म की आ'ला ज़र्फ़ी	238	फ़ारूक़े आ'ज़म के मुआ़विने ख़ुसूसी फ़िल क़ज़ा	313

www.dawateislami.net

आठवां बाब : निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम	317	मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान	428
		मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों का सद्दे बाब	430
फ़ारूक़े आ'ज़म की अपनी ही अ़दालतों में हाज़िरी	324	ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआन	433
फ़ारूक़े आ'ज़म की मुसावात की चन्द मिसालें	326	फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़िदमते क़ुरआन का सिला	435
फ़ैसला करने के मदनी फूल	329	फ़ारूक़े आ'ज़म और हिफ़ाज़ते ह़दीस	436
दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करने का मश्वरा	339	हिफ़ाज़ते ह़दीस के उमूर की तफ़्सील	436
अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर	340	(1)....फ़ारूक़े आ'ज़म का ख़ुद अह़ादीस बयान न करना	437
नवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब	344	(2)....गवाह के बिग़ैर अह़ादीस बयान करने की मुमानअ़त	440
फ़ारूक़े आ'ज़म का اَمر بِالْمَعْرُوْف और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر	345	(3)....बिग़ैर गवाह ह़दीस बयान करने पर सरज़निश	443
फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने घरवालों का एह़तिसाब	347	(4)....उमूरे हिफ़ाज़ते ह़दीस की ह़िक्मतें	445
बा'ज़ मुख़्तलिफ़ शख़्सिय्यात का एह़तिसाब	358	सह़ाबए किराम का कसरते रिवायत से रुकना	449
बा'ज़ बेजा तसर्रुफ़ाती उमूर का एह़तिसाब	362	फ़ारूक़े आ'ज़म का शौक़े इल्मे ह़दीस	452
फ़ारूक़े आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ इस्तिद्लालात	372	इल्म को फैलाने की तरग़ीब	453
रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर तवज्जोह	381	मुख़्तलिफ़ सुवालात करने की मुमानअ़त	453
फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने नफ़्स का मुह़ासबा	391	रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत की कोशिशें	455
दसवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी में मोह़क्मए पोलीस व फ़ौज	394	फ़ारूक़े आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ इस्लाही मल्फ़ूज़ात	455
		फ़ारूक़े आ'ज़म के ज़र्बुल मसल ह़कीमाना अक़्वाल	474
अ़हदे फ़ारूक़ी में मोह़क्मए पोलीस	395	अ़हदे फ़ारूक़ी का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़	476
अ़हदे फ़ारूक़ी में मोह़क्मए फ़ौज	396	अह़कामे शरइय्या के मराकिज़ व दारुल इफ़्ता	483
अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ौज की तक़्सीम	396	(1)....अ़हदे फ़ारूक़ी का मक्की तरबिय्यती दारुल इफ़्ता	483
मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां	398	(2)....अ़हदे फ़ारूक़ी का मदनी दारुल इफ़्ता	487
मुख़्तलिफ़ फ़ौजी छावनियां और इन के ज़िम्मेदार	398	(3)....अ़हदे फ़ारूक़ी का बसरी दारुल इफ़्ता	488
ग्यारहवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां	409	(4)....अ़हदे फ़ारूक़ी का कूफ़ी दारुल इफ़्ता	495
		(5)....अ़हदे फ़ारूक़ी का शामी दारुल इफ़्ता	498
इल्म की अहम्मिय्यत पर फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म	410	(6)....अ़हदे फ़ारूक़ी का मिस्री दारुल इफ़्ता	507
हिफ़ाज़ते इल्म के लिये फ़ारूक़ी ख़िदमात	411	फ़ारूक़े आ'ज़म की इल्मी मुआ़वनत	508
फ़ारूक़े आ'ज़म और हिफ़ाज़ते क़ुरआन	412	उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की तनख़्वाहें	509
फ़ारूक़े आ'ज़म की हिफ़ाज़ते क़ुरआन की तदाबीर	414	मुदर्रिसीन का मदनी लिबास	511
क़ुरआने पाक से मुतअ़ल्लिक़ दीगर फ़ारूक़ी इक़्दामात	423	अ़हदे फ़ारूक़ी का शानदार मुदर्रिस कोर्स	511

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी में मदारिस का ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब	515	जंगे यरमूक का पहला दिन	592
ता'लीमी निसाब	516	इस्लामी तारीख़ का सुन्हरी बाब	592
अख़्लाक़ी निसाब	517	जंगे यरमूक का दूसरा दिन	606
इस्लामी बहनों का ता'लीमी निसाब	518	(9)....जंगे बैतुल मुक़द्दस	619
फ़ारूके़ आ'ज़म और किताबत (लिखाई)	518	फ़ारूके़ आ'ज़म की बैतुल मुक़द्दस में तशरीफ़ आवरी	624
फ़ारूके़ आ'ज़म और हिजरी तारीख़	519	(10)....जंगे ह़ल्ब	633
तारीख़ वज़्अ़ करने की वुजूहात	519	(11)....जंगे क़ल्अ़ए इ'ज़ाज़	642
अ़हदे फ़ारूक़ी की इल्मी मुशावरतें	521	(12)....फ़त्हे़ इन्ताकिया (दारुस्सल्त़नत)	643
फ़ारूके़ आ'ज़म और शे'र व शो'रा	522	(13)....साहि़ली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात	650
शरीअ़त के मुत़ाबिक़ अश्आर पढ़ने की इजाज़त	527	(14)....पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात	651
फ़ारूके़ आ'ज़म और इस्लाही़ अश्आर	530	(15)....जंगे मरजुल क़बाइल	654
इल्मो हि़क्मत के मदनी फूल	531	(16)....जंगे नख़्ल	659
बारहवां बाब : अ़हदे फ़ारूक़ी की फ़ुतूह़ात	534	(17)....फ़त्हे़ क़ल्अ़ए त़राबुलुस	660
इस्लाम तल्वार से नहीं फैला.....!	537	(18)....फ़त्हे़ क़ल्अ़ए सुव्वर	661
फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की तफ़्सील	546	(19)....फ़त्हे़ क़ैसारिया	663
अ़हदे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात	549	अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते मिस्र	664
(1)....जंगे हि़स्न अबिल क़ुदस	555	अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते इराक़	665
इस जंग के तीन अहम वाक़िआ़त	556	इराक़ की अ़ज़ीम जंग "जंगे क़ादिसिया"	668
(2)....जंगे क़िन्नसिरीन	563	अ़हदे ईसवी के एक शख़्स का ज़ुहूर	677
जंगे क़िन्नसिरीन के दवाहिम व मुबारक वाक़िआ़त	566	अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते ईरान	680
(3)....जंगे बा'लबक	578	फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	686
जंगे बा'लबक के चार अहम वाक़िआ़त	578	फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुजूहात	687
(4)....जंगे हि़म्स (बारे अव्वल)	583	फ़ुतूह़ात में फ़ारूके़ आ'ज़म का इख़्तिसास	690
जंगे हि़म्स का एक अहम वाक़िआ़	584	फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की आख़िरी ह़द	692
(5)....फ़त्हे़ रुस्तन	585	**तेरहवां बाब : फ़ारूक़ी गवर्नर और इन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर**	693
(6)....जंगे शीज़र	587		
(7)....जंगे हि़म्स (बारे दुवुम)	588	हु़कूमत व मन्सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूके़ आ'ज़म	695
जंगे हि़म्स के अहम वाक़िआ़त	588	गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइत़	696
(8)....जंगे यरमूक	591	गवर्नरों की शराइते़ साबिता	696

www.dawateislami.net

गवर्नरों की शराइते़ नाफ़िया	701	मुल्के शाम के फ़ारूक़ी कमान्डर	765
गवर्नरों से मुतअ़ल्लिक़ एहतियाती़ तदाबीर	707	**चौदहवां बाब : अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात**	769
फ़ारूक़ी गवर्नरों की चन्द अहम ख़ुसूसिय्यात	713	अ़ह्दे फ़ारूक़ी की दाख़िली ता'मीरात	771
गवर्नरों का सालाना मदनी मश्वरा	720	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में गि़लाफे़ का'बा की तब्दीली	776
हुक्मरानों की ज़िम्मेदारियां	722	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मसाजिद की ता'मीर	777
फ़ारूके़ आ'ज़म और गवर्नरों का एहतिसाब	733	दीनी ता'लीमो तरबिय्यत वाली मसाजिद	778
हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाएं	737	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मक़ामे इब्राहीम की तब्दीली	780
गवर्नरों की मा'ज़ूली	738	अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ख़ारिजी ता'मीरात	780
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली	740	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में दीवान की ता'मीर	782
हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ रिआ़या की ज़िम्मेदारियां	744	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में बैतुल माल का क़ियाम	784
अ़ह्दे फ़ारूक़ी के गवर्नर	754	मुसाफ़िरों के लिये पानी की सबीलें	786
मक्कए मुकर्रमा के फ़ारूक़ी गवर्नर	754	मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर	787
मदीनए मुनव्वरा के फ़ारूक़ी गवर्नर	756	मुख़्तलिफ़ नहरों की खुदाई	790
ता़इफ़ के फ़ारूक़ी गवर्नर	756	नहरी व दरयाई रास्तों पर पुलों की ता'मीर	792
यमन के फ़ारूक़ी गवर्नर	757	मुख़्तलिफ़ शहरों की आबादकारी	793
बह़रैन के फ़ारूक़ी गवर्नर	758	अ़ह्दे फ़ारूक़ी और मुल्की ख़ज़ाने	798
मिस्र के फ़ारूक़ी गवर्नर	759	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ज़कात की वुसूली	799
फ़िलिस्ती़न के फ़ारूक़ी गवर्नर	759	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जिज़्ये की वुसूली	801
दिमश्क़ के फ़ारूक़ी गवर्नर	760	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ख़िराज की वुसूली	802
ह़ौरान के फ़ारूक़ी गवर्नर	760	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में उ़शूर की वुसूली	803
रमला के फ़ारूक़ी गवर्नर	761	माले फ़ै और माले ग़नीमत की वुसूली	804
हिम्स के फ़ारूक़ी गवर्नर	761	अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ज़रई निज़ाम	805
अल जज़ीरा के फ़ारूक़ी गवर्नर	762	अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आबपाशी का निज़ाम	810
इराक़ के फ़ारूक़ी गवर्नर	762	ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म तारीख़ के आईने में....	811
बसरा के फ़ारूक़ी गवर्नर	763	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	814
कूफ़ा के फ़ारूक़ी गवर्नर	764	माख़ज़ो मराजेअ़	836
कस्कर के फ़ारूक़ी गवर्नर	765	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की मत़बूआ़ कुतुब की फ़ेहरिस्त	844
उ़मान के फ़ारूक़ी गवर्नर	765		

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब

﴿3﴾ शो'बए इस्लाही़ कुतुब ﴿4﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब

﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 **हिजरी**

www.dawateislami.net

"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म" के बारे में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक "**दा'वते इस्लामी**" की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" के शो'बे "**फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत**" ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते तय्यिबा पर काम करने का बीड़ा उठाया। अव्वलन "अ़शरए मुबश्शरा" की सीरत पर काम शुरूअ़ किया गया। अ़शरए मुबश्शरा में से चारों खुलफ़ाए राशिदीन के इलावा बक़िय्या छे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते तय्यिबा पर काम की तक्मील के बा'द ख़लीफ़ए अव्वल, यारे ग़ार, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते तय्यिबा बनाम "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" पर काम करने की सई की और कमो बेश छे माह के क़लील अ़र्से में इस मुबारक किताब की तक्मील हो गई। بِحَمْدِاللّٰہِ تَعَالٰی इस किताब को तवक़्क़ोआत से बढ़ कर पज़ीराई मिली, मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों, मुबल्लिग़ीन व वाइज़ीन, अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन, खु़त़बा व प्रोफ़ेसर ह़ज़रात, उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की त़रफ़ से कसीर मक्तूब (ख़ुतूत़) मौसूल हुवे जिन में इस किताब के मवाद, तरतीब, तख़रीज व त़बाअ़त वग़ैरा मुख़्तलिफ़ उमूर को सराहा गया। नीज़ कई लोगों की त़रफ़ से सिलसिला "फ़ैज़ाने अ़शरए मुबश्शरा" की आइन्दा आने वाली किताब "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" का भी मुत़ालबा किया गया। वाज़ेह़ रहे कि किसी शै के मुत़ालबे के बा'द उस की अहम्मिय्यत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। येही वज्ह है कि "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" पर फ़िलफ़ौर काम शुरूअ़ कर दिया गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" आ़लमी मे'यार की एक इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी मजलिस है, इस की मुख़्तलिफ़ कुतुब दुन्या भर में आ़म हो रही हैं, इस के काम करने का इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी अन्दाज़ उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब को चार चांद लगा देता है, येही वज्ह है कि अ़वामो ख़वास बे शुमार लोग इस की मत़बूआ़ कुतुब पर ए'तिमाद करते हैं। मुअल्लिफ़ीन व मुसन्निफ़ीन इस बात से ब ख़ूबी आगाह हैं कि किसी भी ऐसे मौज़ूअ़ पर किताब लिखना या मुरत्तब करना जिस पर पहले ही से कई कुतुब लिखी जा चुकी हों एक मुश्किल काम है। लेकिन पहले से लिखी गई किताबों की ख़ूबियों और दीगर तमाम उमूर को सामने रखते हुवे जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ उसी मौज़ूअ़ पर एक नई किताब, इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी त़र्ज़ पर मुरत्तब की जाए तो उस की इफ़ादिय्यत बढ़ जाती है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते तय्यिबा बनाम "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" पर इसी अन्दाज़ में काम करने की सई की गई और कमो बेश बारह माह के क़लील अ़र्से में दो जिल्दों पर मुश्तमिल येह ज़ख़ीम किताब मुकम्मल की गई।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए **''फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत''** (**अल मदीनतुल इल्मिय्या**) के तीन इस्लामी भाइयों **अबू फ़राज मुहम्मद ए'जाज़ अत्तारी अल मदनी, नासिर जमाल अत्तारी अल मदनी और वली मुहम्मद अत्तारी अल मदनी** سَلَّمَهُمُ اللّٰهُ الْغَنِی ने काम करने की सआदत हासिल की है। इस किताब पर अव्वल ता आख़िर कमो बेश 12 मुख़्तलिफ़ मराहिल में काम किया गया है जो इस किताब की खुसूसिय्यात में शुमार किये जा सकते हैं, तफ़्सील कुछ यूं है :

﴾1﴿.....मवाद जम्अ़ करने का मर्हला

तस्नीफ़ व तालीफ़ दोनों के लिये अव्वलन मवाद की मौजूदगी बहुत ज़रूरी है, जब तक मवाद मौजूद न हो किसी भी किताब को मुरत्तब नहीं किया जा सकता। **''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म''** के मवाद के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

- .....अ़रबी, उर्दू और फ़ारसी तीनों त़रह की मुख़्तलिफ़ कुतुब के इलावा ख़ास ''सीरते फ़ारूके़ आ'ज़म'' पर लिखी गई मश्हूरो मा'रूफ़ कुतुब को भी सामने रखा गया है नीज़ बा'ज़ कुतुब की अ़दम दस्तयाबी के सबब उन के मत़्बूआ़ कम्प्यूटर नुस्खे़ इन्टरनेट से भी डाउन लोड़ *(Download)* किये गए हैं।
- .....**''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** की कुतुब से मवाद के लिये मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या और मजलिसे आई टी की मुश्तरका पेशकश ''अल मदीना लाइब्रेरी'' सॉफ़्टवेर से मदद ली गई है।''
- .....अ़रबी मवाद के लिये मुख़्तलिफ़ मत़्बूआ़ अ़रबी कुतुब के इलावा अ़रबी कुतुब के कम्प्यूटर सॉफ़्टवेर्ज़ से भी मदद ली गई है।
- .....सीरते फ़ारूके़ आ'ज़म के ह़वाले से मश्हूरो मा'रूफ़ मगर मुस्तनद वाक़िआ़त को लिया गया है।
- .....जिस मक़ाम से मवाद लिया गया फ़क़त़ उसी मक़ाम पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया बल्कि उस मवाद के अस्ली माख़ज़ कुतुबे अह़ादीस, शुरूहे ह़दीस, कुतुबे तफ़ासीर, कुतुबे सियर व तारीख़ व फ़िक़्ह वग़ैरा तक पहुंचने की ह़त्तल मक़्दूर कोशिश की गई है।
- .....जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इन्टरनेट के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ वेब साइट्स से भी मवाद लिया गया है।
- .....''सीरते फ़ारूके़ आ'ज़म'' के ह़वाले से लिखे गए मुख़्तलिफ़ मज़ामीन *(Articles)* से भी मदद ली गई है।
- .....मवाद जम्अ़ करते वक़्त इस बात का खुसूसी ख़याल रखा गया है कि मौज़ूअ़ व मन घड़त रिवायात से एह़तिराज़ किया जाए, नीज़ मवाद जम्अ़ करने के बा'द तख़रीज करते वक़्त भी इस बात का खुसूसी ख़याल रखा गया है।

﴾2﴿.....जम्अ़ शुदा मवाद की तरतीब व उस्लूब

किसी भी किताब की अहम्मिय्यत और उस के मुसन्निफ़ या मुअल्लिफ़ की तस्नीफ़ी या तालीफ़ी सलाहिय्यत का अन्दाज़ा उस किताब की तरतीब व उस्लूब से होता है कि मुसन्निफ़ ने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से मवाद को मुरत्तब किया है या नहीं ? **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** में मवाद की तरतीब व उस्लूब के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

- .....اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बा है, इस की किताबों को उ़लमाए किराम, मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम के इलावा चूंकि आ़म इस्लामी भाई भी कसरत से पढ़ते हैं इसी लिये इस किताब की तरतीब में तह़क़ीक़ी व इस्लाह़ी दोनों असालीब को पेशे नज़र रखा गया है।
- ....."**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" को मुरत्तब करते हुवे मुश्किल और पेचीदा अल्फ़ाज़ से एह़तिराज़ करते हुवे आ़म फ़ह्म ज़बान इस्ति'माल की गई है। अलबत्ता जहां ज़रूरतन इस्तिलाह़ात या मुश्किल अल्फ़ाज़ ज़िक्र किये गए हैं वहां हिलालैन "(......)" में उन का तर्जमा या तस्हील कर दी गई है।
- .....सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा को बयान करने का मुआ़मला निहायत ही ह़स्सास और एक तेज़ धार वाली तल्वार पर चलने के मुतरादिफ़ है जिस में छोटी सी ग़लत़ी किसी बड़े नुक़्सान का सबब भी बन सकती है, येही वज्ह है कि **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** समेत इल्मिय्या की तमाम कुतुब में अदबो एह़तिराम से भरपूर इन्तिहाई मोह़तात़ ज़बान का इल्तिज़ाम किया जाता है।
- .....सीरत को बयान करने के कई उस्लूब हैं : (1) तारीख़ के ए'तिबार से (2) वाक़िआ़त के ए'तिबार से (3) ह़ालाते ज़िन्दगी के ए'तिबार से (4) और मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर मुकम्मल ह़यात को बयान करना वग़ैरा। **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** में सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की मश्हूर किताब "तारीख़ुल ख़ुलफ़ा" का उस्लूब या'नी **"मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर मुकम्मल ह़यात को बयान करना"** इख़्तियार किया गया है।
- .....मवाद को मुरत्तब करते हुवे मुख़्तलिफ़ रिवायात व वाक़िआ़त के तह़त इस्लाह़ी मदनी फूल भी पेश किये गए हैं।

www.dawateislami.net

❁.....जिस रिवायत या वाक़िए़ से कोई अ़क़ीदए अह्ले सुन्नत साबित होता है तो उस की निशान देही भी की गई है।

❁.....बा'ज़ जगह इख़्तिलाफ़ी अक़्वाल को बयान करने के साथ साथ उन में मुत़ाबक़त भी ज़िक्र कर दी गई है।

❁.....मवाद को मुरत्तब करते हुवे इस बात का ख़ास इल्तिज़ाम किया गया है कि किताब इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी मवाद से भरपूर हो, फ़क़त़ सुर्ख़ियां (Headings) लगाने पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया।

❁.....रिवायात व वाक़िआ़त को बयान करते हुवे ह़त्तल मक़्दूर इस बात की कोशिश की गई है कि क़ारी (या'नी किताब पढ़ने वाले) का ज़ौक़ व शौक़ बर क़रार रहे।

❁.....अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के अस्माए मुबारका के साथ दुआ़इय्या कलिमात का इल्तिज़ाम किया गया है।

❁.....उ़लमाए किराम, वाइ़ज़ीन व ख़ुत़बा ह़ज़रात के लिये मुख़्तलिफ़ रिवायात व वाक़िआ़त में मख़्सूस जुम्लों की अ़रबी इ़बारत मअ़ तर्जमा भी ज़िक्र कर दी गई है।

❁.....इस बात का ख़ास ख़याल रखा गया है कि जो बात जिस बाब से तअ़ल्लुक़ रखती है उसी बाब में ज़िक्र की जाए।

❁.....बा'ज़ जगहों पर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्सूब ग़लत़ बातों की निशान देही भी की गई है।

❁.....अगर किसी रिवायत या वाक़िए़ का तअ़ल्लुक़ चन्द अबवाब से है तो एक बाब में उसे तफ़्सीली बयान कर के दीगर अबवाब में इजमालन बयान किया गया है नीज़ बा'ज़ जगह तफ़्सीली वाक़िए़ वाले सफ़ह़े की त़रफ़ इशारा भी कर दिया गया है।

❁.....कई मक़ामात पर तह़क़ीक़ी व वज़ाह़ती, मुफ़ीद और ज़रूरी ह़वाशी भी लगाए गए हैं।

❁.....रावियों के अस्मा और दीगर कई मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब का भी इल्तिज़ाम किया गया है नीज़ बा'ज़ पेचीदा अल्फ़ाज़ का तलफ़्फ़ुज़ भी बयान कर दिया गया है।

❁.....रिवायात बयान करने में अह़ादीस को तरजीह़ दी गई है ब सूरते दीगर मुस्तनद कुतुबे तारीख़ को इख़्तियार किया गया है।

❁.....मुख़्तलिफ़ अबवाब के शुरूअ़ में तम्हीदी कलिमात भी ज़िक्र किये गए हैं ताकि उस बाब के तह़त आने वाले उमूर की अहम्मिय्यत व इफ़ादिय्यत क़ारी पर वाज़ेह़ हो सके।

www.dawateislami.net

۞.....अ़वाम में मश्हूर ऐसे वाक़िआ़त या अक़्वाल जो हमें किसी मुस्तनद किताब में नहीं मिले उन्हें शामिल नहीं किया गया।

۞.....बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि मुख़ात़ब को कोई बात ज़बानी कलामी समझ में नहीं आती लेकिन उसी बात को नक़्शा बना कर समझाया जाए तो फ़ौरन समझ में आ जाती है, नक़्शा बना कर बात को समझाना ख़ुद ह़दीसे मुबारका से साबित है।(1) येही वज्ह है कि **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** में बा'ज़ मक़ामात पर अहम उमूर की वज़ाह़त के लिये मुख़्तलिफ़ नक़्शे और चन्द मक़ामात की तसावीर भी दी गई हैं।

۞.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के हर हर गोशे से मुतअ़ल्लिक़ कई कई रिवायात और वाक़िआ़त मिलते हैं लेकिन ज़ख़ामत के पेशे नज़र चीदा चीदा अहम रिवायात व वाक़िआ़त को ही लिया गया है।

﴾3﴿.....अ़रबी इ़बारात का तर्जमा

अ़रबी या फ़ारसी वग़ैरा कुतुब से मवाद ले कर उसे बि ऐ़निही उसी मफ़्हूम पर उर्दू ज़बान में ढालना एक बहुत बड़ा फ़न और निहायत ही मुश्किल अम्र है, मुतर्जिमीन के लिये इस में बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है कि बसा औक़ात तर्जमा करते हुवे नफ़्से मफ़्हूम ही तब्दील हो जाता है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात के तर्जमे के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया :

۞.....अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात में लफ़्ज़ी तर्जमे के बजाए मफ़्हूमी तर्जमा किया गया है।

۞.....तर्जमा करते वक़्त इस बात का ख़ास लिह़ाज़ रखा गया है कि नफ़्से मस्अला में कोई तग़य्युर वाक़ेअ़ न हो।

۞.....रिवायात व अह़ादीस का तर्जमा करते हुवे उ़लमाए अह्ले सुन्नत के तराजिम को भी सामने रखा गया है।

۞.....तर्जमा करते वक़्त शुरूह़ व लुग़ात की त़रफ़ भी रुजूअ़ किया गया है।

۞.....अह़ादीस व रिवायात के तर्जमे में त़वील सनद बयान करने के बजाए फ़क़त़ आख़िरी रावी के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया गया है नीज़ बा'ज़ मक़ामात पर एक ही मौज़ूअ़ की मुख़्तलिफ़ रिवायात को भी ज़रूरतन बयान किया गया है।

۞.....दौराने तर्जमा मुश्किल मक़ामात पर "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के शो'बे "तराजुमे कुतुब" के माहिर मुतर्जिमीन मदनी उ़लमाए किराम से भी मुशावरत की गई है।

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب الامل وطولہ، ج۴، ص ۲۲۴، حدیث: ۶۴۱۷۔

﴾4﴿.....अ़रबी इ़बारात का तक़ाबुल

इ़बारत को ग़लत़ी से मह़फ़ूज़ करने के लिये उस का तक़ाबुल करना (या'नी जिस अस्ल किताब से वोह इ़बारत ली गई है उस के मुत़ाबिक़ करना) बहुत ज़रूरी है, बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि नक़्ल दर नक़्ल एक ग़लत़ी आगे मुन्तक़िल होती रहती है लेकिन जब उस के अस्ल माख़ज़ की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है तो वहां वोह इ़बारत मौजूद ही नहीं होती या मन्क़ूला इ़बारत के मुत़ाबिक़ नहीं होती। येह ग़लत़ी उ़मूमन तक़ाबुल न करने और फ़क़त़ "नक़्ल" पर ए'तिमाद करने से वाक़ेअ़ होती है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में अ़रबी इ़बारात के तक़ाबुल के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

- .....अ़रबी कुतुब से जो तर्जमा किया गया है उस का अस्ल किताब से इन्तिहाई एह़तियात़ के साथ तक़ाबुल किया गया है।
- .....अगर किसी इ़बारत के तर्जमे में उर्दू किताब से मुआ़वनत ली गई है तो उस का अस्ल अ़रबी किताब से भी बिल इस्तीआ़ब तक़ाबुल कर लिया गया है।
- .....इ़बारत ज़िक्र करने के बा'द जिस किताब का ह़वाला दिया गया है उसी किताब से तक़ाबुल किया गया है।
- .....क़ुरआनी आयात और उन के तर्जमे का भी अस्ल नुस्ख़े से तक़ाबुल कर लिया गया है।

﴾5﴿.....अ़रबी इ़बारात की तफ़्तीश

कम्प्यूटर टेक्नॉलोजी से जहां पूरी दुन्या में एक ह़ैरत अंगेज़ इन्क़िलाब आया है वहीं कुतुब की त़बाअ़त में भी उस ने अहम किरदार अदा किया है। कम्प्यूटर से पहले किताबें हाथ से लिखी जाती थीं जिन में वक़्त बहुत लगता था लेकिन जैसे ही कम्प्यूटर आया इस से मुसन्निफ़ीन व नाशिरीन को सब से बड़ा फ़ाइदा येह ह़ासिल हुवा कि क़लील वक़्त में कसीर कुतुब की त़बाअ़त होने लगी। लेकिन वाज़ेह़ रहे कि इस का एक नुक़्सान येह भी ज़ाहिर हुवा कि प्रुफ़ रीडिंग की अग़लात़ पहले की ब निस्बत अब ज़ियादा होने लगीं हैं। येही वज्ह है कि बा'ज़ औक़ात मुख़्तलिफ़ कम्प्यूटराइज़्ड कुतुब के जदीद और क़दीम नुस्ख़ों की इ़बारतों में भी काफ़ी फ़र्क़ आ जाता है। इस फ़र्क़ को वाज़ेह़ या दूर करने के लिये क़दीम नुस्ख़ों की मदद से अ़रबी इ़बारात की तफ़्तीश की जाती है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में

www.dawateislami.net

भी मवाद को तरतीब देते वक़्त कई ऐसी इबारतें सामने आईं जिन में मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों की वज्ह से इख़्तिलाफ़ पाया गया लिहाज़ा उन इबारतों की रिवायत व दिरायत दोनों ए'तिबार से क़दीम नुस्ख़ों (मख़्तूतात) की मदद से तफ़्तीश की गई और फिर मुशावरत से दुरुस्त इबारत को ले लिया गया नीज़ उस इबारत का हवाला देते हुवे उस नुस्ख़े की वज़ाहत भी कर दी गई है।

﴾6﴿.....इबारात की तख़रीज

साबिक़ा अदवार में लोग हुसूले इल्म के लिये लम्बे लम्बे सफ़र तै करते थे, अहादीस की अस्नाद वग़ैरा पर उन्हें ऐसी महारत होती कि अगर किसी के सामने कोई हदीस सहीह सनद के साथ किताब का हवाला बयान किये बिग़ैर ज़िक्र कर दी जाती तो वोह फ़ौरन समझ जाता, लेकिन जूं जूं लोग इल्म से दूर होते गए बिग़ैर हवाले के कोई बात करना दुश्वार होता गया। बा'ज़ औक़ात हवाले के बिग़ैर बयान कर्दा सहीह रिवायात को भी लोग कम इल्मी की बिना पर रद कर देते हैं नीज़ कम इल्मी की बिना पर बा'ज़ लोगों ने कई मौज़ूअ़ व मन घड़त रिवायात को भी बयान करना शुरूअ़ कर दिया लिहाज़ा आज के दौर में कोई भी हदीसे मुबारका, सहाबी का फ़रमान, बुज़ुर्ग का क़ौल या कोई भी रिवायत बिग़ैर मुस्तनद हवाले के बयान करना ख़तरे से ख़ाली नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में भी मुख़्तलिफ़ आयाते मुबारका, अहादीसे मुबारका, अक़्वाले सहाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन वग़ैरहा की तख़ारीज का इल्तिज़ाम किया गया है। तख़ारीज के हवाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

- .....अ़रबी किताब की अ़रबी और उर्दू किताब की उर्दू रस्मुल ख़त में तख़रीज दी गई है अलबत्ता अ़रबी कुतुब में उन के अस्ल और तवील अ़रबी नाम के बजाए मा'रूफ़ और मुख़्तसर नाम दिये गए हैं।
- .....तख़रीज में किताब का मुकम्मल हवाला (किताब, बाब, फ़स्ल, नौअ़, रक़मुल हदीस, जिल्द और सफ़हा वग़ैरा के साथ) इस तरह दिया गया है कि पढ़ने वाला बा आसानी उस मक़ाम तक पहुंच सकता है।
- .....तख़रीज करते हुवे जिन कुतुब का हवाला दिया गया है, मौज़ूआ़त के ए'तिबार से उन के अस्मा, शहरे तबाअ़त, मुसन्निफ़ीन के अस्मा ब ए'तिबारे तारीख़े वफ़ात की तफ़्सील आख़िर में "फ़ेहरिस्त माख़ज़ो मराजेअ़" में दे दी गई है।

www.dawateislami.net

۞.....अगर किसी वज्ह से एक किताब के दो मुख़्तलिफ़ मत़बूआ नुस्ख़ों का ह़वाला दिया गया है तो उन दोनों नुस्ख़ों की निशान देही भी आख़िर में कर दी गई है।

۞.....दो मुसन्निफ़ीन की एक ही नाम वाली कुतुब में ग़ैर मश्हूर किताब के साथ मुसन्निफ़ की वज़ाह़त कर दी गई है मसलन : "सुनने कुब्रा" नाम से दो किताबें हैं : एक इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की और दूसरी इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की। **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** में जहां मुत़लक़, "सुनने कुब्रा" लिखा होगा वहां इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब मुराद होगी जब कि इमाम नसाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब का ह़वाला देते हुवे नाम की सराह़त कर दी गई है।

۞.....तख़ारीज में किसी भी किताब का ऐसा ह़वाला दर्ज नहीं किया गया जो हमारे पास किसी भी ह़वाले से मौजूद न हो।

۞....."**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" में अह़ादीस, सियर व तारीख़ व फ़िक़्ह वग़ैरा सेंकड़ों कुतुब से मवाद लिया गया है लेकिन बत़ौरे तख़रीज व माख़ज़ अक्सर अ़रबी व मुस्तनद उर्दू कुतुब ही को लिया गया है।

۞....."**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" (जिल्द सानी) में कमो बेश 1250 तख़ारीज की गई हैं।

﴾7﴿.....मुश्किल इबारात की तस्हील

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** की मुख़्तलिफ़ कुतुब उ़लमाए अह्ले सुन्नत की कुतुब से ही माख़ूज़ होती हैं, क़दीम उर्दू के सबब बा'ज़ औक़ात उन कुतुब में ऐसे मुश्किल मक़ामात भी आ जाते हैं जिन की तस्हील करना निहायत ज़रूरी होता है। **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** में भी मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर उ़लमाए अह्ले सुन्नत की कुतुब से मुख़्तलिफ़ इक़्तिबासात ज़िक्र किये गए हैं, क़ारिईन की आसानी के लिये मुश्किल इबारात की तस्हील भी हिलालैन "(......)" में कर दी गई है। तस्हील के लिये उ़लमाए अह्ले सुन्नत ही की कुतुब की त़रफ़ रुजूअ़ किया गया है।

﴾8﴿.....किताब की प्रुफ़ रीडिंग

"प्रुफ़ रीडिंग" किसी भी किताब को लफ़्ज़ी, मा'नवी, किताबत वग़ैरा की ग़लत़ियों से मह़फ़ूज़ रखने का एक बेहतरीन अ़मल है, क़ुरआने पाक के इलावा अगर्चे कोई भी किताब ग़लत़ियों से मुबर्रा (मह़फ़ूज़) नहीं हो सकती लेकिन किसी किताब में ग़लत़ियों की कसरत उस की प्रुफ़ रीडिंग न होने की त़रफ़ इशारा है। **"फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म"** की कमो बेश 11 बार प्रुफ़ रीडिंग की गई है :

www.dawateislami.net

❁ मवाद जम्अ़ करते वक़्त कम्पोज़िंग के बा'द। ❁ किताब को मुरत्तब करने के बा'द। ❁ मुरत्तब शुदा मवाद की तख़रीज के दौरान। ❁ अ़रबी या उर्दू इबारात के तक़ाबुल के वक़्त। ❁ अग़लात़ की तस्ह़ीह़ करने के बा'द। ❁ "तन्ज़ीमी मुफ़त्तिश" की त़रफ़ से तफ़्तीश के साथ। ❁ "शरई मुफ़त्तिश" की त़रफ़ से दौराने तफ़्तीश। ❁ तन्ज़ीमी व शरई तफ़्तीश की अग़लात़ की तस्ह़ीह़ के बा'द। ❁ मक्तबतुल मदीना पर त़बाअ़त के लिये भेजने से क़ब्ल फ़ाइनल फ़ोरमेशन के बा'द। ❁ कोरल ड्रो पर मुकम्मल किताब की पेस्टिंग के बा'द। ❁ इल्मिय्या के फ़ाइनल प्रुफ़ रीडर से कोरल ड्रो पर मुकम्मल किताब की पेस्टिंग के बा'द भी पूरी किताब की बिल इस्तीआ़ब (मुकम्मल लफ़्ज़ ब लफ़्ज़) प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

﴾9﴿.....किताब की फ़ोरमेशन

किताब की बेहतरीन त़बाअ़त भी क़ारी के ज़ौक़े मुत़ालआ़ में इज़ाफ़े का एक बहुत बड़ा सबब है, बेहतर त़बाअ़त के साथ साथ अगर किताब के अबवाब वग़ैरा की अह़सन अन्दाज़ में फ़ोरमेशन की जाए तो किताब का ज़ाहिरी हुस्न मज़ीद निखर जाता है। "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" की फ़ोरमेशन के ह़वाले से दर्जे ज़ैल उमूर को पेशे नज़र रखा गया है :

❁.....इबारत के मआ़नी व मफ़ाहीम समझने के लिये "अ़लामाते तरक़ीम" का ख़ास एहतिमाम किया गया है।

❁.....कई मक़ामात पर एक ही मौज़ूअ़ के तह़त आने वाली मुख़्तलिफ़ बातों की नम्बरिंग कर दी गई है।

❁.....जली सुर्ख़ियों (Main Headings) और ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) में इम्तियाज़ करते हुवे अ़लाहिदा अ़लाहिदा रस्मुल ख़त़ में लिखा गया है।

❁.....अ़रबी इबारात को ए'राब समेत अ़रबी रस्मुल ख़त़ "क़मर" में लिखा गया है ताकि क़ारी ए'राबी ग़लत़ी से मह़फ़ूज़ रहे जब कि फ़ारसी इबारत को "नस्ख़" फ़ोन्ट में लिखा गया है ताकि अ़रबी और फ़ारसी दोनों में इम्तियाज़ रहे।

❁.....आ़म अ़रबी इबारत के इलावा दुआ़इय्या अ़रबी इबारात का रस्मुल ख़त़ भी जुदा रखा गया है ताकि किताब पढ़ने वाले इस्लामी भाई इन दुआ़ओं को बा आसानी याद कर सकें।

❁.....आयाते मुबारका ख़ूब सूरत क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ और मुनक़्क़श ब्रेकेट ﴾......﴿ में दी गई हैं।

www.dawateislami.net

❁.....तमाम दुआइय्या इबारात का रस्मुल ख़त़ **"अल मुस्ह़फ़"** रखा गया है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी को हिलालैन "(.....)" में लिखा गया है।

❁.....तख़ारीज का रस्मुल ख़त़ अ़रबी, उर्दू व फ़ारसी इबारत से जुदा रखा गया है।

❁.....हर बाब के शुरूअ़ में एक अ़लाहि़दा सफ़ह़ा दिया गया है जिस में बाब नम्बर, बाब का नाम और इस के तह़त आने वाले तमाम मौज़ूआ़त की तफ़्सील दी गई है, नीज़ बाब का नाम तमाम मुतअ़ल्लिक़ा सफ़ह़ात के ऊपर भी दे दिया गया है।

❁.....किताब की इजमाली व तफ़्सीली दोनों त़रह़ की फ़ेहरिस्तें बनाई गईं हैं, इजमाली फ़ेहरिस्त में तमाम अबवाब और इन के तह़त आने वाली जली सुर्ख़ियों (Main Headings) को ज़िक्र किया गया है, जब कि तफ़्सीली फ़ेहरिस्त में अबवाब और जली सुर्ख़ियों समेत तमाम ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) को भी ज़िक्र किया गया है नीज़ इजमाली फ़ेहरिस्त किताब के शुरूअ़ में और तफ़्सीली फ़ेहरिस्त आख़िर में दी गई है।

❁.....इस किताब में ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म को कमो बेश 250 जली सुर्ख़ियों (Main Headings) और 1100 ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) के ज़रीए़ निहायत ही अह़सन अन्दाज़ में बयान किया गया है।

❁.....इस किताब को दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मदनी उ़लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم ने शरई ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है।

﴾10﴿.....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म की दो जिल्दें

शो'बा **फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत** में अव्वलन अ़शरए मुबश्शरा में से चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन के इ़लावा बक़िय्या छे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर काम मुकम्मल किया गया जो छे मुख़्तलिफ़ रसाइल की सूरत में छोटे सफ़ह़े (A5) पर था। **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** पर भी अव्वलन छोटे सफ़ह़े ही में काम शुरूअ़ किया गया लेकिन देखते ही देखते सफ़ह़ात की ता'दाद एक हज़ार 1000 से तजावुज़ कर गई लिहाज़ा इसे बड़े सफ़ह़े (A4) में तब्दील कर दिया गया जो कमो बेश सात सौ बीस 720 सफ़ह़ात बन गए। **फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर** के बा'द जब **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** पर काम शुरूअ़ किया गया तो येही ख़याल था कि इस मुबारक किताब के भी ज़ियादा से ज़ियादा आठ सौ (800) बड़े सफ़ह़ात (A4) बनेंगे, लेकिन मवाद जम्अ़ करने, मुरत्तब करने और तख़रीज करने के बा'द ज़ाहिर हुवा कि **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** फ़ाइनल होने के बा'द कमो बेश

www.dawateislami.net

उन्नीस सौ[1900] सफ़्हात पर मुश्तमिल होगी। यक़ीनन नाशिरीन के लिये इतनी ज़ख़ीम किताब की जिल्द बन्दी (Binding) करना, इल्मी ज़ौक़ रखने वालों के लिये इसे ख़रीदना और इस की हिफ़ाज़त करना एक मुश्किल अम्र है। येही वज्ह है कि **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** और **शो'बा फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत** की मुश्तरका मुशावरत से **फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म** को दो जिल्दों में (मुख़्तलिफ़ अबवाब बना कर) तक़्सीम कर दिया गया।

फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द दुवुम) की अबवाब बन्दी

फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म (जिल्द अव्वल) में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश से ले कर विसाल तक (इलावा ख़िलाफ़त) मुकम्मल हयाते तृय्यिबा, फ़ज़ाइल व दीगर उमूर को बित्तफ़्सील उन्नीस[19] अबवाब में बयान किया गया है, जब कि इस जिल्द दुवुम में ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म के सुन्हरे दौर को बित्तफ़्सील चौदह[14] अबवाब में बयान किया गया है जिन की तफ़्सील कुछ यूं है :

۞.....पहला बाब, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर मुख़्तलिफ़ दलाइल, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन आयाते मुबारका, तीन अहादीसे मुबारका, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाए सहाबा, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर मुख़्तलिफ़ अइम्मए किराम के अक़्वाल।

۞.....दूसरा बाब, बा'दे ख़िलाफ़त इब्तिदाई मुआमलात

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मिम्बरे रसूल पर तशरीफ़ आवरी, बा'दे ख़िलाफ़त पहला ख़ुतबा, अहदे सिद्दीक़ी में आप के जलाल और सख़्ती की हिक्मत, आप की सख़्ती से मुतअ़ल्लिक़ लोगों की तशवीश और इस का बेहतरीन इज़ाला, आप ने तमाम वा'दे पूरे कर दिखाए, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के बारह[12] बुन्यादी उसूल।

۞.....तीसरा बाब, फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुख़्तलिफ़ इबादात का एहतिमाम, तरावीह की जमाअ़त का एहतिमाम, बा'दे ख़िलाफ़त आप का वज़ीफ़ा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक गिज़ा का बयान, मुबारक लिबास का बयान, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुख़्तलिफ़ मुआ़शरती उमूर का बयान, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त।

۞......चौथा बाब, फ़ारूक़े आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुक़ूक़ुल इबाद से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली ह़दीसे मुबारका, रिआ़या की ख़बरगीरी, माले ग़नीमत की तक़्सीम कारी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ का निज़ाम, सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ, फ़ौजियों और दीगर मुख़्तलिफ़ लोगों के वज़ाइफ़ का बयान, बैतुल माल का क़ियाम, माल की तक़्सीम, मुसीबत के वक़्त रिआ़या के ग़म में शिर्कत, ख़ैर ख़्वाही और इज़्हारे हमदर्दी, आ़मुर्रमादह में सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से दुआ, क़ुरआनो सुन्नत से वसीले का सुबूत, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानवरों पर शफ़्क़त ।

۞.....पांचवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम

शूराई निज़ाम किसे कहते हैं ? अ़ह्दे रिसालत, अ़ह्दे सिद्दीक़ी और अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ मुशावरतें, फ़ौजी कमान्डरों और जंगी उमूर के माहिरीन से मुशावरत, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में शूराई निज़ाम की वुस्अ़त, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुशावरत के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित, शूराई निज़ाम के नफ़ाज़ की एह़तियातें और दीगर ज़रूरी उमूर, मश्वरे, मश्वरा लेने वाले और मश्वरा देने वाले के लिये मदनी फूल, दा'वते इस्लामी का शूराई निज़ाम, मुख़्तलिफ़ मजालिस व मर्कज़ी मजलिसे शूरा ।

۞......छटा बाब, निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मज़हबी आज़ादी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आमदो रफ़्त की आज़ादी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आज़ादिये राए, ह़ाकिमे वक़्त पर तन्क़ीद की इजाज़त, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ'ला ज़र्फ़ी, ख़िलाफ़े शरीअ़त और तौहीने मुस्लिम वाली आरा की मुमानअ़त ।

۞.....सातवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया

अ़द्लो इन्साफ़ करने या न करने पर आयात व अह़ादीसे मुबारका, अ़द्लो इन्साफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया और उस के बुन्यादी व उ़मूमी उसूलो ज़वाबित, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के अ़दालती क़ाज़ी, जज और उन की फ़ारूक़ी तरबिय्यत,

www.dawateislami.net

जजों व क़ाज़ियों के मुख़्तलिफ़ औसाफ़, फ़राइज़े मन्सबी और एह़तिसाब व मा'ज़ूली, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चन्द फ़ैसले और आप के फ़ैसला करने का मुबारक अन्दाज़, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जराइम के ख़िलाफ़ क़ानूनी सज़ाएं, आप से मन्सूब चन्द ग़लत़ फ़ैसलों की वज़ाह़त, फ़ारूक़ी तमग़ए इम्तियाज़ ह़ासिल करने वाले अ़ज़ीमुश्शान क़ाज़ी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के ख़ुसूसी जज व मुआ़विने ख़ुसूसी फ़िल क़ज़ा।

❁.....आंठवां बाब, निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम

निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम, मुसावात के क़ियाम के लिये शख़्सिय्यात के ख़िलाफ़ चन्द फ़ैसले, ज़ुल्म के ख़िलाफ़ सालाना इजतिमाई मश्वरा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अपनी ही क़ाइम कर्दा अ़दालतों में ह़ाज़िरी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुसावात की चन्द अमसिला फ़ैसला करने के दस बुन्यादी मदनी फूल, आपस की शकर रन्जियां और उन के नुक़्सानात, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के फ़ैसला करने का मदनी अन्दाज़।

❁......नवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अपने घरवालों का एह़तिसाब, दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाला फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ शख़्सिय्यात का एह़तिसाब, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बा'ज़ बेजा तसर्रुफ़ाती उमूर का एह़तिसाब, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्सूब चन्द ग़लत़ इस्तिद्लालात की वज़ाह़त, रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर आप की ख़ुसूसी तवज्जोह, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अपने ही नफ़्स का एह़तिसाब करना।

❁......दसवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह़कमए पोलीस व फ़ौज

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह़कमए पोलीस के फ़ौजी अफ़्सरान, फ़ौज की तक़्सीम, मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियों का क़ियाम और उन के ज़िम्मेदारान, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इस्लामी फ़ौज की वुस्अ़त, फ़ौजियों की तनख़्वाहें और दीगर ज़रूरियात की तफ़्सील, तनख़्वाहों की तक़्सीम का त़रीक़ए कार और सालाना इज़ाफ़ा, फ़ौजियों की घर वापसी की मुद्दत, इस्लामी फ़ौज के जज़्बए जिहाद से भरपूर ना'रों की तफ़्सील, फ़ौजियों के साथ रहने वाली ज़रूरी अश्या की तफ़्सील।

www.dawateislami.net

۞.....ग्यारहवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां

इल्म की अहम्मिय्यत पर फ़रामीने फ़ारूके़ आ'ज़म, हिफ़ाज़ते इल्म के लिये फ़ारूक़ी ख़िदमात, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हिफ़ाज़ते कुरआनो ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर, रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत और चन्द इस्लाही़ मल्फ़ूज़ात, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़, अह़कामे शरइय्या के मराकिज़ व अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मुख़्तलिफ़ दारुल इफ़्ता, मक्की, मदनी, बसरी, कूफ़ी और शामी दारुल इफ़्ता और उन के मुफ़्तियाने किराम व मुसद्दिक़ीन, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शानदार मुदर्रिस कोर्स, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मदारिस का ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हिजरी तारीख़, इल्मी मुशावरतें, शे'र व शो'रा से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ उमूर।

۞.....बारहवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूह़ात का पस मन्ज़र, क्या इस्लाम तल्वार से फैला? फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की तफ़्सील, इस्लामी लश्कर के कुल्ली उसूलो ज़वाबित़, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ैबी सिक्यूरिटी गार्ड, इस्लामी तारीख़ का एक सुन्हरा बाब, जंगे यरमूक का बयान, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ आवरी और उस की फ़त्ह़, मुल्के शाम के साहि़ली और पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात, फ़ुतूह़ाते मिस्र व इराक़, इराक़ की एक अ़ज़ीम जंग "जंगे क़ादिसिया" का बयान, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते ईरान, फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुस्अ़त और वुजूहात, फ़ुतूह़ात में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इख़्तिसास।

۞......तेरहवां बाब, फ़ारूक़ी गवर्नर और उन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर

फ़ारूक़ी गवर्नर और उन से मुतअ़ल्लिक़ उमूर, हुकूमत व मन्सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूके़ आ'ज़म, गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइते़ साबिता व नाफ़िया, गवर्नरों से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियाती़ तदाबीर, फ़ारूक़ी गवर्नरों की चन्द अहम खुसूसिय्यात, गवर्नरों का सालाना मदनी मश्वरा, हुक्मरानों की रिआ़या से मुतअ़ल्लिक़ ज़िम्मेदारियां, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गवर्नरों का एह़तिसाब, हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाएं और गवर्नरों की मा'ज़ूली, हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ रिआ़या की ज़िम्मेदारियां, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के चन्द गवर्नरों का मुख़्तसर तआ़रुफ़।

www.dawateislami.net

❁......चौदहवां बाब, अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की दाख़िली ता'मीरात, मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ और उस से मुतअ़ल्लिक़ा दीगर उमूर की तफ़्सील, मस्जिदे ह़राम के चबूतरों और ह़िफ़ाज़ती दीवार की ता'मीर व ग़िलाफ़े का'बा की तब्दीली अ़ह्दे फ़ारूक़ी में दीनी ता'लीमो तरबिय्यत वाली मुख़्तलिफ़ मसाजिद की ता'मीर, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मक़ामे इब्राहीम की तब्दीली, अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ख़ारिजी ता'मीरात, दारुद्दक़ीक़ (ग़ल्ले का गोदाम), सरायों, दारुल अमारा और दीवान की ता'मीरात, बैतुल माल का क़ियाम, बैतुल माल के निगरान और मुख़्तलिफ़ इमारतें, मुसाफ़िरों के लिये पानी की सबीलें और मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ नहरों की खुदाई और पुलों की ता'मीर, मुख़्तलिफ़ शहरों की ता'मीर व आबादकारी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी और मुल्की ख़ज़ाने, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ज़कात, जिज़्या, ख़िराज, उ़श्र और माले ग़नीमत की वुसूली, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ज़र्रई व आबपाशी का निज़ाम।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस किताब की कम्पोज़िंग से ले कर फ़ाइनल करने तक हर हर मर्ह़ले में बहुत एह़तियात़ से काम लिया गया है लिहाज़ा इस में मौजूद तमाम ख़ूबियां यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम, उस के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़ुसूसी फ़ैज़ान, तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत जो भी ख़ामियां हों उन में हमारी कोताह फ़ह्मी को दख़्ल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ है कि वोह हमारी इस सई को अपनी पाक बारगाह में क़बूल फ़रमाए, हमारी ख़त़ाओं से दर गुज़र फ़रमाए, दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए, हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बा फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

पहला बाब

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये........................

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर मुख़्तलिफ़ दलाइल

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर तीन आयाते मुबारका

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर तीन अहादीसे मुबारका

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर इजमाए सहाबा

.....इजमाअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अइम्मए किराम के अक़्वाल

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त पर इजमाए उम्मत

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल

....

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई और वहीं मुस्तक़िल रिहाइश इख़्तियार फ़रमा ली तो तमाम इन्तिज़ामी उमूर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद ही देखा करते थे और रफ़्ता रफ़्ता येह सल्त़नते मुस्त़फ़ा न सिर्फ़ मदीनए मुनव्वरा बल्कि पूरे अ़रब पर मुह़ीत़ हो गई। तमाम मुसलमान निहायत ही इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त का अक्सरो बेशतर ह़िस्सा मुख़्तलिफ़ फ़ितनों के ख़िलाफ़ जिहाद करते गुज़रा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाले मुबारका के बा'द अब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे, तारीख़ इस बात पर गवाह है कि जिस क़दर फ़ुतूह़ात और अह़कामाते शरइय्या का नफ़ाज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने में हुवा इतना किसी और ख़लीफ़ा के ज़माने में न हुवा और क्यूं न होता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में ही सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त को भी लोगों के सामने बिल्कुल ज़ाहिर फ़रमा दिया था, क़ुरआने पाक की कई आयाते मुबारका और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कई फ़रामीने मुबारका आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त पर दलालत करते हैं। चुनान्चे,

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन आयाते मुबारका

पहली आयते मुबारका

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ इब्ने अबी ह़ातिम علیہ رحمۃ اللّٰہ الحاکم ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल ह़मीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِید से रिवायत की है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िलाफ़त का ज़िक्र किताबुल्लाह में मरक़ूम है। फिर उन्हों ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ۪ وَ لَیُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِیْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَیُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًاؕ یَعْبُدُوْنَنِیْ لَا یُشْرِكُوْنَ بِیْ شَیْــٴًـاؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾﴾ (پ۱۸، النور: ۵۵)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा जैसी उन से पहलों को दी और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो उस के बा'द नाशुक्री करे तो वोही लोग बे हुक्म हैं।"(1)

दूसरी आयते मुबारका

﴿قُلْ لِّلْمُخَلَّفِیْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِیْعُوْا یُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّیْتُمْ مِّنْ قَبْلُ یُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ﴿۱۶﴾﴾ (پ۲۶،الفتح:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन पीछे रह गए हुवे गंवारों से फ़रमाओ अ़न क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की त़रफ़ बुलाए जाओगे कि उन से लड़ो या वोह मुसलमान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे फिर गए तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।"

येह आयते मुबारका भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़ते मुबारका पर दलालत करती है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस आयते मुबारका के बारे में मरवी है कि येह आयत अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही मदीनए मुनव्वरा के आ'राबियों या'नी क़बीलए जुहैना व मुज़ैना के लोगों को फ़ारिस और रूम से क़िताल के लिये दा'वत दी जैसा कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें कुफ़्फ़ारे मक्का के ख़िलाफ़ लड़ने की दा'वत दी थी। लिहाज़ा अब आयते मुबारका का मफ़्हूम येह हुवा :

فَاِنْ تُطِیْعُوْا اِذَا دَعَاكُمْ عُمَرُ تَكُنْ تَوْبَةً لِتَخَلُّفِكُمْ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْراً حَسَناً وَاِنْ تَتَوَلَّوْا اِذَا دَعَاكُمْ عُمَرُ كَمَا تَوَلَّیْتُمْ مِنْ قَبْلُ اِذْ دَعَاكُمُ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یُعَذِّبْكُمْ عَذَاباً اَلِیْماً

"या'नी अगर तुम उस वक़्त इत़ाअ़त करो जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हें क़िताल के लिये बुलाएं तो तुम्हारा इत़ाअ़त करना तुम्हारी तौबा शुमार होगा इस बात से कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलाने के बा'द पीछे रह गए। इस इत़ाअ़त

(1) ......تفسیر ابن ابی حاتم، پ۱۸، النور، تحت الآیة:۵۵، ج۵، ص۲۶۲۸۔

www.dawateislami.net

पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाएगा और अगर तुम लोग उस वक़्त पीठ फेर लो जब हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हें क़िताल के लिये बुलाएं जिस त़रह़ तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलाने के बा'द पीठ फेर ली थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।'' सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''उस क़ौम से बनी ह़नीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वोह मुराद हैं जिन से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंग फ़रमाई। और येह भी कहा गया है कि उन से मुराद अह्ले फ़ारिस व रूम हैं जिन से जंग के लिये हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दा'वत दी। येह आयत शैख़ैने करीमैन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सिह़ह़ते ख़िलाफ़त की दलील है कि इन हज़रात की इत़ाअ़त पर जन्नत का और इन की मुख़ालफ़त पर जहन्नम का वा'दा दिया गया।''[1]

तीसरी आयते मुबारका

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآىِٕمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝۵۴﴾ (پ۶، المائدة: ۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।''

इस आयते मुबारका के तह़त ह़ाफ़िज़ अबुल बरकात अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मह़मूद नसफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''या'नी इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की दलील है कि आप ने अपने अस्ह़ाब को उस बात की ख़बर दी जो अभी वाक़ेअ़ नहीं हुई थीं और फिर वोह बा'द में वाक़ेअ़ हो गई और इस में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का भी सुबूत है कि आप ने ही मुर्तद्दीन से जिहाद फ़रमाया था

---

1 ......درمنثور، پ۲۶، الفتح، تحت الآیۃ: ۱۶، ج۷، ص۵۲۰، خزائن العرفان، پ۲۶، الفتح: ۱۶۔

www.dawateislami.net

और येह आयते मुबारका आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त की सिह्हत के इस्बात पर दलालत करती है।[1]

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन अहादीसे मुबारका

(1) मेरे बा'द येही ख़ुलफ़ा होंगे

जब सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे क़ुबा की ता'मीर शुरूअ़ फ़रमाई तो सब से पहला पथ्थर रखने के बा'द इरशाद फ़रमाया : ....لِيَضَعْ اَبُوْبَكْرٍ حَجَرًا اِلٰى جَنْبِ حَجَرِيْ या'नी अब अबू बक्र एक पथ्थर मेरे रखे हुवे पथ्थर के क़रीब रखें। ....फिर इरशाद फ़रमाया : لِيَضَعْ عُمَرُ حَجَرًا اِلٰى جَنْبِ حَجَرِ اَبِيْ بَكْرٍ या'नी अब उ़मर एक पथ्थर अबू बक्र सिद्दीक़ के रखे हुवे पथ्थर के क़रीब रखें। ....फिर इरशाद फ़रमाया : لِيَضَعْ عُثْمَانُ حَجَرَهٗ اِلٰى جَنْبِ حَجَرِ عُمَرَ या'नी अब उ़स्मान एक पथ्थर उ़मर फ़ारूक़ के रखे हुवे पथ्थर के क़रीब रखें। ....फिर इरशाद फ़रमाया : هٰؤُلَاءِ الْخُلَفَاءُ بَعْدِيْ या'नी मेरे बा'द येही ख़ुलफ़ा होंगे।"[2]

(2) अबू बक्र व उ़मर की पैरवी करना

इमाम तिरमिज़ी और इमाम ह़ाकिम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِقْتَدُوْا بِالَّذَيْنِ مِنْ بَعْدِيْ اَبِيْ بَكْرٍ وَّعُمَرَ मेरे बा'द अबू बक्र और उ़मर की पैरवी करना।"[3]

(3) मेरे बा'द येही ख़ुलफ़ा होंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : اِلٰى مَنْ اُؤَدِّيْ صَدَقَةَ مَالِيْ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपने माली सदक़ात किस की बारगाह में पेश करूं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे दिया करो।" उस ने अ़र्ज़ की : فَاِنْ لَّمْ اَجِدْكَ या'नी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द किसे दिया करूं ? इरशाद फ़रमाया : اِلٰى اَبِيْ بَكْرٍ या'नी अबू बक्र सिद्दीक़ को। उस ने अ़र्ज़ की :

---

1 ......مدارک، پ۶، المائدۃ، تحت الآیۃ: ۵۴، ص ۲۹۰۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۰، ص ۲۱۸۔۲۱۹، تاریخ الخلفاء، ص ۶۔

3 ......ترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی بکر وعمر کلیھما، ج ۵، ص ۳۷۴، حدیث: ۳۶۸۲۔
مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، احادیث فضائل الشیخین، ج ۴، ص ۲۲، حدیث: ۴۵۰۸۔

www.dawateislami.net

فَإِنْ لَّمْ اَجِدْهُ या'नी इन के विसाले ज़ाहिरी के बा'द किसे दिया करूं ? इरशाद फ़रमाया : "उ़मर या'नी फ़ारूके़ आ'ज़म को देना ।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : هٰؤُلَاءِ الْخُلَفَاءُ بَعْدِی या'नी मेरे बा'द येही खुलफ़ा होंगे ।(1)

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाए सहा़बा

......शारेहे़ सही़ह़ मुस्लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त पर इजमाए सहा़बा को कुछ यूं ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त पर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जिस अ़ह्द नामे का नफ़ाज़ फ़रमाया था इस पर तमाम सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुत्तफ़िक़ थे ।(2)

......ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाअ़ नक़्ल करते हुवे अ़ल्लामा अबू नुऐ़म अस्फ़हानी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी कामिल फ़िरासत के ज़रीए़ इस बात को जान लिया कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दीगर लोगों से अफ़्ज़ल हैं, बेहतरीन ख़ैरख़्वाही करने वाले, ख़िलाफ़त को संभालने की ता़क़त रखने वाले हैं नीज़ उन्हों ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में मुश्किल औक़ात में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुकम्मल ताईदो नुस्रत फ़रमाई है तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मन्सबे ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमा लिया । चूंकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस बात को जानते थे कि तमाम सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप की राए से मुत्तफ़िक़ हैं और इस पर उन्हें कोई ए'तिराज़ व इश्काल नहीं है इस लिये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने तमाम सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा का इख़्तियार दिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तमाम मुसलमान आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ैसले से मुत़्मइन रहे और येह मुआ़मला आप ही के सिपुर्द कर दिया, जिस से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि तमाम सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़लीफ़ा बनाए जाने पर मुत्तफ़िक़ थे, अगर उन्हें आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बात से मा'मूली सा भी इख़्तिलाफ़ या शको शुबा होता तो

(1) ......تاریخ ابن عساکر، ج ۳۹، ص ۱۷۲، اخبار اصبھان، من اسمہ محمد، ج ۲، ص ۲۲۷۔

(2) ......شرح صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، الاستخلاف وترکہ، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۰۶۔

www.dawateislami.net

वोह इन्कार कर देते और आप की इत्तिबाअ़ व पैरवी न करते। दर ह़क़ीक़त सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की इमामत व ख़िलाफ़त बिल्कुल इसी त़रह़ साबित और सह़ीह़ है जिस त़रह़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त साबित और सह़ीह़ थी, गोया सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़ाते गिरामी उन के लिये अफ़्ज़ल और कामिल व अक्मल शख़्सिय्यत को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करने के लिये ब हैसिय्यते दलील और रहनुमा थी इसी वज्ह से तमाम सह़ाबए किराम علیہم الرضوان ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की पैरवी की।(1)

......ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाए़ सह़ाबा को नक़्ल करते हुवे सय्यिदुना अबू उ़स्मान साबूनी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "फिर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ की त़रफ़ से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को ख़लीफ़ा नामज़द कर देने और सह़ाबए किराम علیہم الرضوان के इस पर इजमाअ़ मुन्अ़क़िद हो जाने से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त अ़मल में आई और इस त़रह़ **अल्लाह** عزوجل ने इस्लाम की सर बुलन्दी और अ़ज़्मतो शान से मुतअ़ल्लिक़ अपना वा'दा मुकम्मल फ़रमाया।"(2)

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास उस वक़्त गया जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को नेज़ा मार कर ज़ख़्मी कर दिया गया था मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप के लिये जन्नत की ख़ुश ख़बरी है, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उस वक़्त इस्लाम लाए जब लोगों ने कुफ़्र किया, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के साथ मिल कर उस वक़्त जिहाद किया जब कुफ़्फ़ार आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की इ़ज़्ज़त के दरपे थे, रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा इस ह़ाल में फ़रमाया कि वोह आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से राज़ी थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुद्दते ख़िलाफ़त के बारे में कभी दो आदमियों ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया और आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिये शहादत की मौत है।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "दोबारा कहो।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपनी बात को दोबारा दोहराया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : "क़सम है

(1) ......الامامة والرد علی الرافضة، خلافة امیر المؤمنین عمر ابن الخطاب، ج ۱، ص ۲۷۴ ملتقطا۔

(2) ......الغنیة عن الکلام واھله، ج ۱، ص ۵۷۔

www.dawateislami.net

उस ज़ात की जिस के इलावा कोई हक़ीक़ी मा'बूद नहीं ! अगर तमाम ज़मीन का सोना और चांदी मिल जाएं ताकि मैं आख़िरत की हौलनाकियों से नजात पा जाऊं तो मैं सब कुछ फ़िदया दे दूं।"[1]

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

मज़्कूरए बाला तमाम इक़्तिबासात से येह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गई कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और उम्मते मुस्लिमा के इजमाअ़ व इत्तिफ़ाक़ से अ़मल में आई। इन तमाम मुबारक हस्तियों ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसले को खुशी खुशी क़बूल किया, بِحَمْدِاللہِ تَعَالٰی आज भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से महब्बत करने वाले, उन की सीरते तय्यिबा पर अ़मल करने वाले तमाम मुसलमान उन की ख़िलाफ़त को इजमाई व इत्तिफ़ाक़ी मानते हैं।

वाज़ेह रहे कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाने का इरादा फ़रमाया तो बा'ज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तबीअ़त की सख़्ती को सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने पेश किया जिस से येह मा'लूम होता है कि तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुव्वत व ईमानदारी व दयानत दारी पर मुत्तफ़िक़ थे अलबत्ता उन्हें आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़्ती से डर लगता था लेकिन بِحَمْدِاللہِ تَعَالٰی आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मन्सबे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द से ले कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत तक किसी सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह बात मन्क़ूल नहीं कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिला वज्ह किसी पर सख़्ती फ़रमाई हो जो इस बात की वाज़ेह दलील है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ा बनते वक़्त सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ज़ेह्नों में आप की तबीअ़त से मुतअ़ल्लिक़ जो ख़दशा था वोह भी बा'द में बिल्कुल दूर हो गया।

फ़ारिक़े हक़्क़ो बातिल इमामुल हुदा......तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र......उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر فضائل عمر، ج ۴، ص ۷۴، حدیث: ۱۷۵۴۔

www.dawateislami.net

दूसरा बाब

बा'दे ख़िलाफ़त इब्तिदाई मुआमलात

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..............

.....ख़िलाफ़त के बा'द इब्तिदाई मुआमलात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मिम्बरे रसूल पर तशरीफ़ आवरी

.....ख़ुलफ़ाए राशिदीन और मिम्बरे रसूल

.....ख़लीफ़ा बनने के बा'द सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पहला ख़ुत़बा

.....अ़हदे सिद्दीक़ी में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़्ती की ह़िक्मत

.....बा'दे ख़िलाफ़त सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक फ़िक्रअंगेज़ ख़ुत़बा

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम वा'दे पूरे कर दिखाए।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अख़्लाक़ व औसाफ़ व हुक़ूक़ुल इ़बाद से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली ह़दीसे मुबारका।

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के 12 बुन्यादी उसूल

......

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़त के बा'द इब्तिदाई मुआमलात

फ़ारूके आ'ज़म मिम्बरे रसूल पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे

अ़ल्लामा इब्ने शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : "मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पहला नया काम येह था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर की उस सीढ़ी पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे जहां ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमैने मुबारक होते थे या'नी नीचे से पहली सीढ़ी पर बैठे और क़दम ज़मीन पर लटका दिये।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : لَوْ جَلَسْتَ حَيْثُ كَانَ اَبُوْ بَكْرٍ يَجْلِسُ "या'नी अगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहीं तशरीफ़ फ़रमा होते जहां अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ फ़रमा होते थे तो ज़ियादा बेहतर था।" आप ने इरशाद फ़रमाया : حَسْبِيْ اَنْ يَكُوْنَ مَجْلِسِيْ حَيْثُ كَانَتْ تَكُوْنُ قَدَمَا اَبِيْ بَكْرٍ "या'नी मेरे लिये येही बहुत बड़ी सआ़दत है कि मेरे बैठने की जगह वोह हो जहां अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमैने मुबारका होते थे।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि जहां ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमैने मुबारका लगे हैं वोह जगह मेरे लिये बाइसे सआ़दत है जभी तो आप ने वहीं बैठने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में, बल्कि अ़हदे सिद्दीक़ी व अ़हदे रिसालत में भी मुक़द्दस मक़ामात को बा बरकत समझा करते थे येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक़ामे इब्राहीम को "مُصَلّٰى" या'नी नमाज़ पढ़ने की जगह बनाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की और कुरआने पाक की आयते मुबारका के ज़रीए इसे ताईदे इलाही ह़ासिल हुई।

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और मिम्बरे रसूल :

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 8, सफ़ह़ा 343 पर मिम्बरे रसूल की वज़ाह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस मिम्बर के तीन ज़ीने उस

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣١٥۔

तख़्त के इलावा थे जिस पर बैठा जाता है। हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरजए बाला पर ख़ुत्बा फ़रमाया करते, सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दूसरे पर पढ़ा, फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीसरे पर, जब ज़माना ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का आया फिर अव्वल पर ख़ुत्बा फ़रमाया, सबब पूछा गया, फ़रमाया : "अगर दूसरे पर पढ़ता लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हमसर हूं और तीसरे पर वह्म होता कि फ़ारूक़ के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पढ़ा जहां येह एहतिमाल मुतसव्वर ही नहीं। अस्ले सुन्नत अव्वल दरजे पर क़ियाम है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदब की बिना पर ऐसा किया और हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अदब की ख़ातिर।"

ख़लीफ़ा बनने के बा'द फ़ारूक़े आ'ज़म का पहला ख़ुत्बा

हज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब ख़लीफ़ा बने तो मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और ख़ुत्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

❀......مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَرَانِيْ اَنْ اَرٰى نَفْسِيْ اَهْلًا لِمَجْلِسِ اَبِيْ بَكْرٍ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे इस बात की हिम्मत न दे कि मैं अपने आप को हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की जगह बैठने के क़ाबिल समझूं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक दरजा नीचे तशरीफ़ लाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना बयान की और इरशाद फ़रमाया :

❀......اِقْرَؤُا الْقُرْاٰنَ تَعَرَّفُوْا بِهٖ "या'नी क़ुरआन पढ़ते रहो तुम्हें उस की मा'रिफ़त हासिल हो जाएगी।"

❀......وَاعْمَلُوْا بِهٖ تَكُوْنُوْا مِنْ اَهْلِهٖ "और क़ुरआन पर अ़मल करते रहो अह्ले क़ुरआन बन जाओगे।"

❀......وَزِنُوْا اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُوْزَنُوْا "और अपने नफ़्स का मुहासबा करते रहो क़ब्ल इस से कि तुम्हारे आ'माल का मुहासबा किया जाए।"

❀......وَتَزَيَّنُوْا لِلْعَرْضِ الْاَكْبَرِ يَوْمَ تُعْرَضُوْنَ عَلَى اللّٰهِ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ "और क़ियामत के उस दिन के लिये तय्यार रहो जिस दिन तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किये जाओगे और तुम में से कोई भी उस पर मख़्फ़ी नहीं होगा।"

❀......اِنَّهٗ لَمْ يَبْلُغْ حَقَّ ذِيْ حَقٍّ اَنْ يُطَاعَ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ "कोई भी शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इताअ़त कर के हक़दार का हक़ अदा नहीं कर सकता।"

اَلَا وَاِنِّیْ اَنْزَلْتُ نَفْسِیْ مِنْ مَالِ اللّٰہِ بِمَنْزِلَۃِ وَلِیِّ الْیَتِیْمِ...... "और ग़ौर से सुन लो ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल के मुआ़मले में अपने आप को यतीम के वली की जगह रखता हूं।"

اِنِ اسْتَغْنَیْتُ عَفَفْتُ وَاِنِ افْتَقَرْتُ اَکَلْتُ بِالْمَعْرُوْفِ...... "अगर मैं बज़ाते ख़ुद मालदार हुवा तो बिला ह़ाजत ख़ुद को उस माल से बचाऊंगा और अगर मालदार न हुवा तो जाइज़ त़रीके़ से उस में से खाऊंगा।"(1)

दौरे सिद्दीक़ी में फ़ारूके़ आ'ज़म की सख़्ती की हिक्मत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल के वक़्त भी येह बात ज़ाहिर हुई कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ त़बीअ़त के ए'तिबार से सख़्त हैं। इस की सब से बड़ी वज्ह येह थी कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह थे और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के वज़ीर थे। सल्त़नत के मुआ़मलात चलाने के लिये येह बात ज़रूरी है कि मम्लुकत के सरबराह या उस के वज़ीर दोनों में से एक नर्म त़बीअ़त का मालिक हो और दूसरा सख़्त त़बीअ़त का मालिक हो। चूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही शफ़ीक़ और नर्म त़बीअ़त के मालिक थे इस लिये ज़रूरी था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वज़ीर व मुशीर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़बीअ़त में सख़्ती हो ताकि सल्त़नत के मुआ़मलात दुरुस्त त़रीके़ से चल सकें, येही वज्ह है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जो मुआ़मलात पेश आए अगर उन का सामना (Face) करने में फ़क़त़ नर्मी को दख़्ल होता तो कभी भी वोह नताइज ह़ासिल न होते जो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़बई सख़्ती की वज्ह से ह़ासिल हुवे। अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप की येह त़बई सख़्ती काफ़ी ह़द तक नर्मी में तब्दील हो गई, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ब ज़ाहिर कोई मख़्सूस वज़ीर व मुशीर न था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अपनी ज़ात ही में दोनों वस्फ़ मौजूद थे जहां सख़्ती का मुआ़मला होता वहां सख़्ती फ़रमाते और जहां नर्मी का मुआ़मला होता वहां नर्मी फ़रमाते। इब्तिदाअन लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़्ती से बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा हुवे लेकिन बा'द में उन का येह तअस्सुर ज़ाइल हो गया। चुनान्चे,

---

1 ......المجالسۃ وجواھر العلم، ج۲، ص۴۷، الرقم: ۱۲۹۱۔

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़त संभालने के बा'द आप का एक फ़िक्र अंगेज़ ख़ुत़बा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे हुकूमत आने पर लोग बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा हो गए, और उन्हों ने खुले मैदानों में मिल कर बैठने का त़रीक़ा ख़त्म कर दिया कि कहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह त़रीक़ा ना गवार न गुज़रे। लोग कहने लगे : "ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़्क़त व रह़्म दिली का तो येह ह़ाल था कि रास्तों में बच्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गिर्द घेरा डाल लिया करते और ऐ बाप ! बाप ! कहा करते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मह़ब्बत से उन के सरों पर दस्ते शफ़्क़त फेरते। लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रो'ब लोगों पर ऐसा त़ारी है कि उन्हों ने मजलिसें मुन्अ़क़िद करना छोड़ दी हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब मा'लूम हुवा कि लोग मुझ से बहुत ख़ौफ़ज़दा हैं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुनादी करवा दी कि "जमाअ़त क़ाइम होने वाली है लोग मस्जिद में आ जाएं।" नमाज़ के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़दमों वाली जगह पर बैठ गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की, सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा। फिर एक फ़िक्र अंगेज़ ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

मुझे मा'लूम हुवा है कि लोग मेरी सख़्ती से ख़ौफ़ज़दा हैं और कहते हैं कि "प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में भी और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हुकूमत में भी उ़मर हम पर सख़्ती किया करता था और अब तो सारे इख़्तियारात ही इसे मिल गए हैं।" जिस शख़्स ने येह कहा है सच कहा है, मैं, ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहा मैं आप का अ़ब्द और ख़ादिम था। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसी नर्मी और रह़मत किसी दूसरे इन्सान में नहीं आ सकती, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप का नाम ही रह़मतुल्लिल आ़लमीन रखा और अपनी दो सिफ़ात "रऊफ़ व रह़ीम" आप को अ़त़ा कीं।(1) मैं उस वक़्त एक सोंती हुई तल्वार था प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब चाहते मुझे

---

(1)....फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ुरआने पाक की इस आयते मुबारका की त़रफ़ इशारा था :

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।"

www.dawateislami.net

रोक लेते और जब चाहते छोड़ देते और मैं भी तल्वार की मानिन्द चल पड़ता ह़त्ता कि जब सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले गए तो मुझ से राज़ी थे। इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द है और मैं इस पर फ़ख़्र करता हूं। फिर मुसलमानों की हुकूमत ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास आई, लोग आप की नर्मी, और सख़ावत का इन्कार नहीं कर सकते, मैं उन का ख़ादिम व मददगार रहा, मेरी शिद्दत उन की नर्मी से मिल गई तब भी मैं सोंती हुई तल्वार की मानिन्द रहा, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब चाहते मुझे रोक देते और जहां चाहते छोड़ देते, यहां तक कि जब सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी इस दारे फ़ानी से तशरीफ़ ले गए, तो वोह भी मुझ से राज़ी थे, इस पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द है, और येह भी बड़ी सआ़दत की बात है। फिर मैं ख़ुद तुम्हारा अमीर बना और मेरी सख़्ती दो चन्द हो गई, मगर सब लोग ग़ौर से सुनो ! वोह सख़्ती मह़ज़ ज़ालिमों और फ़सादियों के लिये है। अम्न पसन्द, मुत्तबिईने शरीअ़त और अस्ह़ाबे फ़ज़्ल के लिये मैं इतना नर्म हूं कि वोह ख़ुद आपस में भी इतने नर्म न होंगे। मैं जिस ज़ालिम को ज़ुल्म करते हुवे देख लूं उसे हरगिज़ नहीं छोड़ता बल्कि उस का एक रुख़्सार ज़मीन पर रख कर दूसरे को पाउं तले दबा देता हूं और उस वक़्त तक नहीं छोड़ता जब तक वोह अपने ज़ुल्म से तौबा न कर ले। ऐ लोगो ! तुम्हारे फ़ाइदे के लिये चन्द उमूर बताना मुझ पर लाज़िम हैं : (1) मुझ पर लाज़िम है कि मैं ख़िराज और माले ग़नीमत में से कुछ न छुपाऊं और इसे मसारिफ़ पर ही ख़र्च करूं (2) मैं तुम्हारे वज़ाइफ़ अदा करता रहूं (3) तुम्हें नुक़्सान देह मुआ़मलात में न उलझाऊं (4) और अगर तुम जंगों में जाना पसन्द करो तो तुम्हारे अह्लो इयाल के साथ ऐसे अख़्लाक़ से पेश आऊं कि उन्हें इस बात का ज़र्रा भर एह़सास न हो कि तुम उन के पास नहीं हो और उन्हें मैं तुम्हारी जैसी ही मह़ब्बत दूं। बस मैं ने जो कहना था सो कह दिया और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये मग़्फ़िरत त़लब करता हूं।"[1]

फ़ारूके आ'ज़म ने तमाम वा'दे पूरे कर दिखाए

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और सय्यिदुना अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो हम से किये गए तमाम वा'दों को पूरा

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۱۵، تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۶۴، فتاویٰ رضویہ، ج ۳۰، ص ۲۶۲۔ ۲۶۴۔

www.dawateislami.net

कर दिया।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رضی اللہ تعالٰی عنہ और सय्यिदुना अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुख़्तलिफ़ आ़दात को यूं बयान फ़रमाया :

✿......"आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कभी भी बिला वज्ह नर्मी व सख़्ती न फ़रमाई बल्कि जहां नर्मी करनी चाहिये थी वहां नर्मी की और जहां सख़्ती करनी चाहिये थी वहां सख़्ती की।"

✿......"आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जंग पर गए हुवे मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल के साथ ऐसा मह़ब्बत भरा सुलूक किया गोया आप उन के लिये अबुल इ़याल या'नी ख़ानदान के सर बराह बन गए।"

✿......"आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मुजाहिदीन के दरवाज़ों पर जा कर उन के घरवालों से कहा करते : "तुम्हें किसी ने तक्लीफ़ तो नहीं दी ? ह़ाजत हो तो बाज़ार से तुम्हें कुछ ख़रीद कर ला दूं ? क्यूंकि ख़रीदो फ़रोख़्त में तुम्हें कोई धोका दे येह मुझे पसन्द नहीं।" तो मुजाहिदीन के घरवाले अपने ग़ुलाम और लौंडियां आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के साथ भेज देते, जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बाज़ार में आते तो लौंडियों और ग़ुलामों की एक फ़ौज आप के पीछे होती थी। अगर किसी के हां ग़ुलाम या लौंडी न होती तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ख़ुद उस के घर सौदा सलफ़ पहुंचा कर आते।"

✿......"जब मुजाहिदीन के मक्तूब आते तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ख़ुद उन के घर पहुंच जाते और फ़रमाते : "ऐ मुजाहिदीन की घरवालियो ! तुम्हारे शौहर राहे ख़ुदा में हैं और तुम शहरे रसूले ख़ुदा में हो, तुम्हारे हां कोई ख़त़ पढ़ने वाला है तो बेहतर, नहीं तो दरवाज़े के क़रीब आ जाओ मैं बाहर से पढ़ कर सुना देता हूं।" फिर फ़रमाते कि "फ़ुलां दिन क़ासिद यहां से रवाना होगा, तुम जवाबात लिख कर हमें पहुंचा दो।" आप رضی اللہ تعالٰی عنہ सफ़ह़ात और क़लम व दवात लिये घर घर तशरीफ़ ले जाते, किसी ने ख़त़ लिख कर रखा होता तो वोह ह़ासिल कर लेते नहीं तो फ़रमाते : "दरवाज़े के पास आ जाओ और अन्दर ही से इम्ला करवा दो मैं लिख देता हूं।"

✿......"यूंही अगर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ सफ़र पर तशरीफ़ ले जाते तो जगह जगह पड़ाव करने के बा'द फ़रमाते : "कूच करो।" कहने वाला कहता : "येह देखो अमीरुल मोमिनीन ने कूच का हुक्म दे दिया है, उठो तय्यारी करो और निकल खड़े हो।" आप दोबारा निदा करते तो लोग कहते : "येह देखो अमीरुल मोमिनीन दोबारा सदा लगा रहे हैं।" जब लोग तय्यार हो जाते तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ अपने ऊंट पर बैठ जाते और रवाना हो जाते।"

……"आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के ऊंट पर दो बोरियां होती थीं एक में सत्तू दूसरी में खजूरें, सुवारी पर आप के आगे पानी का एक मश्कीज़ा और पीछे एक बड़ा प्याला धरा होता। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ जहां उतरते प्याले में सत्तू डाल कर उस में पानी मिला लेते और चटाई बिछा कर उस पर तशरीफ़ फ़रमा हो जाते। जो शख़्स कोई मुआ़मला सुलझाने के लिये या पानी की त़लब या कोई और ह़ाजत ले कर आप के पास आता, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उसे सत्तू और खजूर की दा'वत देते।"

……"जब लोग पड़ाव वाली जगह छोड़ कर आगे निकलते तो आप वहां आ कर देखते, अगर किसी की कोई शै गिरी होती तो उसे उठा लेते, किसी को चलने में दिक़्क़त या सुवारी को तक्लीफ़ पहुंची होती तो उसे दूसरी सुवारी ह़ासिल करने के लिये किराया मुहय्या करते और लोगों के पीछे सफ़र किया करते।"

……"अगर किसी का सामान गिरा पड़ा होता या किसी को चलने में दिक़्क़त आती तो उस की दस्त्गीरी फ़रमाते, रात भर चलने में जिस किसी का कुछ सामान गुम हो जाता तो वोह आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से ह़ासिल कर लेता था वोह इस त़रह़ कि जिस शख़्स की कोई चीज़ गुम होती तो वोह आप के पास आ कर बयान कर देता। आप ने लकड़ी का एक स्टेन्ड बनवाया हुवा था जिस पर लोगों की गिरी पड़ी चीज़ें लटका देते, अगर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को स्टेन्ड पर उस की चीज़ मिल जाती तो अपने ख़ैमे के अन्दर से वोह ले आते और उसे दे देते लेकिन साथ ही तम्बीहन डांट डपट भी करते और फ़रमाते : "क्या किसी का वोह बरतन भी गुम हो जाता है जिस से उस ने पानी पीना और वुज़ू करना होता है ? क्या मैं सारी रात तुम्हारी चीज़ों की निगरानी किया करूं और नींद से अपनी आंखें दूर रखा करूं ?" फिर वोह चीज़ उस के मालिक को लौटा देते।"

……"यूंही जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बैतुल मुक़द्दस गए तो वहां पहुंचने पर इस्लामी फ़ौज ने आप को तुर्की घोड़ा पेश किया ताकि दुश्मन आप को देख कर मरऊ़ब हो जाएं और फ़ौज ने इसरार किया कि "आप पोस्तीन (चमड़े के चूग़े) उतार दें और सफ़ेद लिबास ज़ेबे तन फ़रमा लें।" लेकिन आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इन्कार कर दिया। मगर उन के बेह़द इसरार पर आप अपनी पोस्तीन समेत ही तुर्की घोड़े पर सुवार हो गए। जब उस घोड़े ने ख़िरामां ख़िरामां लज़्ज़त अंगेज़ रफ़्तार से चलना शुरूअ़ किया तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़ौरन उस से उतर आए और अपनी ऊंटनी पर सुवार हो गए, फिर फ़रमाया : "इस घोड़े पर सुवारी कर के मुझे तो दिल में तकब्बुर पैदा होने का ख़त़रा हो गया था।"(1)

1……رياض النضرة،ج ١،٢ ،٣١٧-٣١٦

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के बुन्यादी उसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा बिल ख़ुसूस आप की ख़िलाफ़त पर दुन्या की कई ज़बानों में बेशुमार किताबें लिखी जा चुकी हैं जिन के अब तक लाखों नुस्ख़े लोगों तक पहुंचे होंगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त की मुद्दत बहुत त़वील है लिहाज़ा आज तक कोई कमाह़क़्क़ुहू इसे न बयान कर सका और न ही बयान करना मुमकिन है। अलबत्ता मन्सबे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द आप ने जो ख़ुत़बे दिये उन में अपनी ख़िलाफ़त के वोह बुन्यादी उसूल बयान फ़रमा दिये जिन पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का दारो मदार था, अगर आज भी इन पर अ़मल किया जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायत से छोटे घर से ले कर पूरी सल्त़नत में मदनी इन्क़िलाब बरपा किया जा सकता है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के वसीअ़ मुत़ालए़ से येह बात सामने आती है कि आप की ख़िलाफ़त हर ज़िम्मेदार के लिये एक बेहतरीन नमूना (Role Model) की हैसिय्यत रखती है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के बुन्यादी उसूल हर त़रह़ के ज़िम्मेदार के लिये ज़र्री उसूल हैं, चाहे वोह एक घर का ज़िम्मेदार हो या क़बीले का ज़िम्मेदार, तह़सील ज़िम्मेदार हो या ज़िलई ज़िम्मेदार, डिवीज़न ज़िम्मेदार हो या सूबाई ज़िम्मेदार, एक मुल्की ज़िम्मेदार हो या चन्द ममालिक का ज़िम्मेदार। बल्कि अगर वोह पूरी सल्त़नत का भी ज़िम्मेदार हो और इन उसूलों पर अ़मल करे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस की अपनी ज़ात के साथ साथ उस के तमाम मा तह़्त लोगों की इस्लाह़ का सामान भी होगा, मुआ़शरे में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के चन्द बुन्यादी उसूलों की वज़ाह़त दर्जे ज़ैल है :

(1).....अपनी इस्लाह़ की कोशिश ज़रूरी है

येह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि जब तक कोई शख़्स अपनी इस्लाह़ की कोशिश न करे उस की ज़बान में वोह तासीर पैदा नहीं होती जो एक बा अ़मल शख़्स की ज़बान में होती है। इस की सब से बड़ी वज्ह येह है कि जब कोई शख़्स किसी दूसरे की त़रफ़ हाथ उठा कर उस की ज़ात की त़रफ़ इशारा करे तो उस के अपने ही हाथ की अक्सर उंगलियां उस की त़रफ़ देख कर गोया येह सुवाल करती हैं कि जिन बातों को तू दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा है क्या ख़ुद भी इस का आ़मिल है या नहीं ? अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से बहुत ही मक़ामो मर्तबे वाली है, लेकिन इस के बा

www.dawateislami.net

वुजूद हर वक़्त अपनी ज़ाते मुबारका की इस्लाह़ की कोशिश में लगे रहते थे, नीज़ जो आप के उ़यूब को बयान करे आप उसे अपना दोस्त समझते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़िलाफ़त को एक बहुत बड़ी आज़्माइश समझते थे जिस का उख़रवी मुह़ासबा यक़ीनी त़ौर पर बहुत सख़्त होगा। गोया आप की निगाह में मन्सबे ख़िलाफ़त कोई बुलन्दियों तक पहुंचाने वाला अम्र नहीं था बल्कि एक अ़ज़ीम ज़िम्मेदारी होने के साथ साथ रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सख़्त आज़्माइश थी जिसे पूरा करने के लिये अव्वलन अपनी ज़ात की इस्लाह़ बहुत ज़रूरी थी।

(2)....ख़िलाफ़त के लिये ज़रूरी उमूर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुत़बात से येह बात सामने आती है कि ख़िलाफ़त जैसी अ़ज़ीम ज़िम्मेदारी के लिये तक़्वा व परहेज़गारी, फ़िक्रे आख़िरत, मुह़ासबए नफ़्स, ख़ौफ़े ख़ुदा, अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम और ज़ुल्मो सितम की रोक थाम निहायत ही ज़रूरी है इन उमूर के बिग़ैर ख़िलाफ़त, ख़िलाफ़त नहीं बल्कि दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी है।

(3).....तमाम मुआमलात ख़ुद ही ह़ल फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का एक बुन्यादी अम्र येह भी था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्की ज़िम्मेदारियों से मुतअ़ल्लिक़ जो भी मुआमलात होते उन्हें ख़ुद ही ह़ल फ़रमाते। अलबत्ता मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के ऐसे मसाइल जिन तक फ़िलफ़ौर आप की रसाई न होती उन अ़लाक़ों में बेहतरीन व बा सलाह़िय्यत उमरा और गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा देते, लेकिन येह भी वाज़ेह़ रहे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक उमूरे ख़िलाफ़त सर अन्जाम देने के लिये सिर्फ़ मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों पर गवर्नर या वुज़रा मुक़र्रर कर देना ही काफ़ी न था बल्कि उन गवर्नरों और हुक्काम की सख़्त निगरानी करना, उन की ज़िम्मेदारी से मुतअ़ल्लिक़ एह़तिसाब करना भी आप के मा'मूलात में शामिल था येही वज्ह है कि अगर किसी गवर्नर से मुतअ़ल्लिक़ आप को कोई शिकायत मौसूल होती तो फ़ौरन उसे अपने दरबार में त़लब फ़रमाते या उस पर लगाए गए इल्ज़ाम की वज़ाह़त त़लब फ़रमाते। नीज़ अच्छी कारकर्दगी पर उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करना और नाक़िस कारकर्दगी पर उन की गिरिफ़्त करना भी आप के बुन्यादी उमूर में शामिल था।

(4)....मुशावरत बहुत ज़रूरी है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त की असास मुशावरत है। इस की सब से बड़ी वज्ह अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ाइम किया हुवा शूराई निज़ाम था, चूंकि सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी कोई काम फ़क़त् अपनी ज़ाती राए की बुन्याद पर सर अन्जाम नहीं देते थे बल्कि अकाबिरीन की मुशावरत से हर मुआ़मले को तै फ़रमाते, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी चूंकि सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तरबिय्यत याफ़्ता थे इसी लिये आप ने भी सल्त़नते इस्लामिया में मुशावरती निज़ाम ही को राइज फ़रमाया, कोई काम फ़क़त् अपनी ज़ाती राए से न फ़रमाते बल्कि मुख़्तलिफ़ सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुशावरत से जो बात तै होती उस पर अ़मल करते।

(5)....अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम और ज़ुल्मो ज़ियादती की रोक थाम

चाहे एक छोटा सा घर हो या बहुत बड़ी रियासत, इस में अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम और ज़ुल्मो ज़ियादती की रोक थाम ना गुज़ीर है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ख़िलाफ़त के इब्तिदाई अय्याम में ही इस बात की वज़ाह़त फ़रमा दी कि अगर मेरी ज़ात के अन्दर आप ह़ज़रात सख़्ती मह़सूस करते हैं तो क़त्अ़न इस की त़रफ़ तवज्जोह करने की ह़ाजत नहीं, क्यूंकि जो शख़्स शरीअ़त की पासदारी करेगा मेरी येही सख़्ती उस के लिये ख़ालिस नर्मी और मेहरबानी में तब्दील हो जाएगी और अ़द्लो इन्साफ़ तो ज़ालिम के लिये भी है, अलबत्ता जिस ने ज़ुल्मो ज़ियादती की उसे सख़्त सज़ा मिलेगी नीज़ ज़िल्लतो रुस्वाई उस का मुक़द्दर होगी।

(6)...जानो माल और इमलाक का तह़फ़्फ़ुज़

किसी भी मा तह़्त शख़्स को अपने ह़ाकिम से एक ही ख़दशा होता है कि क्या मैं अपने ह़ाकिम से अपनी जान, माल, औलाद और इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ कर सकूंगा? या इन तमाम मुआ़मलात में उस के ज़ुल्मो सितम का शिकार हो जाऊंगा। क्या मेरा ह़ाकिम या ज़िम्मेदार मेरे तमाम बुन्यादी हु़क़ूक़ की पासदारी करेगा या उसे पामाल करने की कोशिशें करेगा? येह वोह सुवाल है जो मा तह़्त को अपने ह़ाकिम की इत़ाअ़त पर उक्साता और ना फ़रमानी पर उभारता है। येह बात बिल्कुल बदीही है कि अगर किसी ह़ाकिम से उस की रिआ़या के तमाम हु़क़ूक़ मह़फ़ूज़ हों तो वोह रिआ़या भी उस की जानो माल व इ़ज़्ज़त की मुह़ाफ़िज़ होती है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ाते गिरामी तो पूरी उम्मते मुस्लिमा के लिये रह़मत थी, फिर भी आप ने अपने अव्वलीन ख़ुत़्बे में लोगों के इस ख़द्शे को दूर किया और येह बात बावर करवाई कि मुझ से आप लोगों के तमाम हु़क़ूक़ मह़फ़ूज़ हैं। जो शरीअ़त की पासदारी करेगा उस के साथ क़त्अ़न किसी क़िस्म की ज़ियादती न होगी

www.dawateislami.net

और जो शरीअ़त की पासदारी नहीं करेगा उस के साथ किसी क़िस्म की नर्मी नहीं की जाएगी। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में न तो अ़वाम की त़रफ़ से किसी क़िस्म की बग़ावत हुई और न ही किसी ह़ाकिम की त़रफ़ से इस त़रह़ का कोई मुआ़मला सामने आया।

(7).....माली हुक़ूक़ की अदाएगी का अ़ह्द

एक ज़िम्मेदार के लिये येह भी बहुत ज़रूरी है कि वोह माली हुक़ूक़ की अदाएगी में किसी क़िस्म की कोताही न करे, इस की सब से बड़ी वज्ह येह है कि इन्सानी फ़ित़रत माल के मुआ़मले में बा'ज़ औक़ात समझोता नहीं कर पाती जो यक़ीनन उस के लिये मुआ़शरे और पूरी सल्त़नत के लिये शदीद नुक़्सान का बाइ़स है। इसी वज्ह से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िराज और माले फ़ै वग़ैरा माली हुक़ूक़ की कमाह़क़्क़ुहू अदाएगी का अ़ह्द किया कि वोह इस में से कुछ भी नहीं रोकेंगे और न ही इसे नाजाइज़ मक़ाम पर ख़र्च करेंगे बल्कि मुल्की ख़ज़ाने में इज़ाफ़ा कर के उन के वज़ीफ़ों और अ़तिय्यात में इज़ाफ़ा करेंगे। येह ह़क़ीक़त है कि आप ने माली मोहकमा और मुल्की ख़ज़ाने को बहुत तरक़्क़ी दी नीज़ बैतुल माल की आमदनी के ज़राएअ़ और मुल्की मफ़ाद में इस के मसारिफ़ को निहायत ही प्यारे अन्दाज़ में मुनज़्ज़म फ़रमाया।

(8)....रिआ़या के इस्लाही पहलू पर ख़ुसूसी तवज्जोह :

ह़ाकिम के लिये येह बात इन्तिहाई ज़रूरी है कि वोह अपनी रिआ़या के इस्लाही पहलू पर ख़ुसूसी तवज्जोह दे, क्यूंकि जब तक मुआ़शरे में रहने वाले अफ़राद की ख़ामियों को दूर न किया जाए तो एक अच्छे मुआ़शरे का क़ियाम अ़मल में नहीं लाया जा सकता। ख़रबूज़ा ख़रबूज़े को देख कर रंग पकड़ता है के मिस्दाक़ बा'ज़ औक़ात छोटी सी बुराई एक शख़्स से दूसरे की त़रफ़ मुन्तक़िल होती रहती है और इस त़रह़ मुआ़शरे में बहुत बड़ा बिगाड़ पैदा हो जाता है।

(9).....ह़ाकिम की इत़ाअ़त में ही फ़ाइदा है

ख़लीफ़ा या ह़ाकिम के हुक़ूक़ जो रिआ़या से मुतअ़ल्लिक़ा हैं उन में येह भी शामिल है कि अपने ख़लीफ़ा या ह़ाकिम की ख़ैरख़्वाही और उस की सम्अ़ व त़ाअ़त की ज़िम्मेदारी बेहतरीन त़रीक़े से निभाई जाए कि मुस्तह़्कम व मज़बूत़ मुआ़शरे के क़ियाम के लिये येह बात निहायत ही ना गुज़ीर है। यक़ीनन किसी ह़ाकिम या ज़िम्मेदार की ज़िम्मेदारी को तस्लीम करना इस बात की दलील है कि हर शख़्स अपना मुआ़मला ब ज़ाते ख़ुद ह़ल नहीं कर पाता जिस के लिये ख़लीफ़ा या ह़ाकिम की इत़ाअ़त

www.dawateislami.net

बहुत ज़रूरी है, अगर हर शख़्स अपनी मनमानी शुरूअ़ कर दे तो सल्त़नत का निज़ाम दरहम बरहम हो जाए। यक़ीनन हाकिम की इत़ाअ़त ही में फ़ाइदा है अलबत्ता اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف या'नी नेकी का हुक्म देना और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر या'नी बुराई से मन्अ़ करना भी जारी रखे कि इस से नफ़ीस ज़ेहनिय्यत की नश्वो नुमा में बहुत मुआ़वनत मिलेगी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا مَثَلُ الْعَرَبِ مِثْلُ جَمَلٍ اَنِفٍ اِتَّبَعَ قَائِدَہٗ या'नी अ़रब वालों की मिसाल नकील वाले उस ऊंट की त़रह़ है जो अपने शुतुरबान के पीछे पीछे चलता है।"(1)

या'नी जिस त़रह़ वोह अपने मालिक का ताबेअ़ होता है उस के पीछे पीछे चलता है इसी त़रह़ रिआ़या भी अपने ह़ाकिम की ताबेअ़ होती है और वोह उन्हें जहां ले जाए उसी के पीछे चल पड़ती है लिहाज़ा क़ियादत के इन्तिख़ाब में भी एह़तियात़ बहुत ज़रूरी है।

(10)......तुन्द मिज़ाजी और सख़्त दिली से नफ़रत

जो शख़्स सख़्त मिज़ाज का मालिक हो उ़मूमन ऐसा शख़्स लोगों के दिल जीतने में नाकाम रहता है जब कि नर्म दिल शख़्स हर दिल अ़ज़ीज़ होता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को चूंकि मा'लूम था कि लोग मेरी सख़्ती से ख़ौफ़ज़दा रहते हैं इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने इस मिज़ाज को काफ़ी ह़द तक बदलने की कोशिश फ़रमाई। चुनान्चे, जैसे ही मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं सख़्त हूं तू मुझे नर्म फ़रमा दे।" आप की येह दुआ़ क़बूल हुई और आप की ज़ाते गिरामी शफ़्क़त व नर्मी व मेहरबानी से मा'मूर हो गई नीज़ येह तमाम बातें आप की सिफ़ाते ख़ास्सा बन गईं। अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में लोग सिर्फ़ आप की सख़्ती को जानते थे लेकिन आप के अ़ह्द में लोगों के नज़्दीक आप जैसी रह़्म दिल शख़्सिय्यत कोई न थी, हर त़रफ़ आप की शफ़्क़त व मह़ब्बत ही के चर्चे थे।

(11).....अह्ले मदीना मतबूअ़ और बक़िय्या ताबेअ़ थे

वाज़ेह़ रहे कि ख़लीफ़ए वक़्त के अह़कामात सुनाने के लिये हर शहर और हर हर अ़लाक़े के लोगों को इकठ्ठा करना निहायत ही दुश्वार अ़मल था, इसी वज्ह से मदीनए मुनव्वरा और उस के क़रीबी अ़लाक़ों को तो मतबूअ़ की हैसिय्यत ह़ासिल थी कि इन तक ख़लीफ़ए वक़्त का बराहे रास्त हुक्म पहुंचता था जब कि दूर दराज़ के अ़लाक़े उन के ताबेअ़ थे और उन की मुख़्तलिफ़ अह़कामात पर अ़मली

(1)......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، باب فی فضل العرب، ج۷، ص۵۵۷، حدیث:۲۔

www.dawateislami.net

सत्ह़ ब त़रीक़ए तबइय्यत थी। नीज़ गवर्नरों को ब ज़रीअए क़ासिद ख़ुतूत़ के ज़रीए़ भी जदीद अह़कामात से ख़बरदार किया जाता था, येही वज्ह है कि ख़लीफ़ए वक़्त का हुक्म सिर्फ़ मदीनए मुनव्वरा में जारी होता था लेकिन इस पर अ़मल सल्त़नते इस्लामिया के हर हर शहर में दिखाई देता था और यक़ीनन येह निज़ाम आज भी पूरी मिल्लते इस्लामिया के इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ के लिये मश्अ़ले राह है।

(12)......साबिक़ा अधूरे कामों की तक्मील

किसी भी ज़िम्मेदार के लिये एक ज़रूरी अम्र येह भी है कि वोह ज़िम्मेदारी संभालते ही साबिक़ा ज़िम्मेदार के छोड़े हुवे कामों को मुकम्मल करे, क्यूंकि तजरिबा इस बात का शाहिद है कि जब भी किसी ह़ाकिम या ज़िम्मेदार ने ज़िम्मेदारी संभालते ही बिल्कुल नए सिरे से रियासत के उमूर को शुरूअ़ किया तो न ही वोह उन्हें पूरा कर सका और न ही साबिक़ा ज़िम्मेदार के छोड़े हुवे कामों को आगे बढ़ा सका, नीज़ इस से रिआ़या पर भी अच्छा तअस्सुर क़ाइम नहीं हो सकता, अलबत्ता जो ज़िम्मेदार साबिक़ा अधूरे कामों को आगे बढ़ाते हुवे उन की तक्मील की कोशिश करे और नए कामों का आग़ाज़ करे तो उसे अपने वज़ीरों मुशीरों की ताईद के साथ रिआ़या की ताईद भी ह़ासिल हो जाती है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अ़ह्दे सिद्दीक़ी में शुरूअ़ किये गए कई उमूर ख़ुसूसन फ़ित्नों की सरकोबी और कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन के साथ जिहाद जैसे अ़ज़ीम अम्र को अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जारी व सारी रखा।

(13).....सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम

रियासत के अहम मुआ़मलात को ब त़रीक़े अह़सन चलाने के लिये जहां माहिर व तजरिबा कार अफ़राद का होना ज़रूरी है वहीं इस बात का ख़याल रखना भी निहायत ज़रूरी है कि माहिर व तजरिबा कार अफ़राद की सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ उन्हें ज़िम्मेदारियां सोंपी जाएं, क्यूंकि येह ज़रूरी नहीं कि जो शख़्स मआ़शी मुआ़मलात का माहिर हो वोह ह़िफ़ाज़ती उमूर का भी माहिर हो। जिस रियासत में ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम सलाह़िय्यतों के ए'तिबार से नहीं की जाती उस का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता है नीज़ वोह रियासत आहिस्ता आहिस्ता तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ती जाती है। अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम के वक़्त इस उसूल को हमेशा मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखते थे, येही वज्ह है कि आप के अ़ह्द में रियासती निज़ाम मज़बूत़ से मज़बूत़ तर होता गया और तरक़्क़ी की ऐसी राहें उस्तुवार हुई कि तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीसरा बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये................

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुख़्तलिफ़ इबादात का एहतिमाम

.....नमाज़ का एहतिमाम, तरावीह की जमाअ़त और रोज़ों का एहतिमाम

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इस्तिक़्बाले रमज़ान और हज्जे बैतुल्लाह

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ज़िक्रुल्लाह का एहतिमाम, मसाजिद को रौशन करने का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़ीफ़ा, बा'दे ख़िलाफ़त आप की ग़िज़ा

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सादा व मुबारक लिबास, आप की आ़जिज़ी व इन्किसारी

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और चन्द मुआ़शरती उमूर, सफ़र के मदनी फूल

.....झूट के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म, ता'रीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ फ़रामीन

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बैठने के मदनी फूल, क़ैलूले के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ फ़रामीन

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त

....

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात **अज़्हर मिनश्शम्स** (सूरज से भी ज़ियादा रौशन) है कि उ़मूमन ओ़हदा मिलने से क़ब्ल इन्सान की त़बीअ़त कुछ और होती है और ओ़हदा मिलने के बा'द इस में कुछ न कुछ तब्दीली आ जाती है, बा'ज़ औक़ात येह तब्दीली मुस्बत होती है और बा'ज़ औक़ात मन्फ़ी । सियर व तारीख़ के मुत़ालए़ से येह बात आश्कार होती है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रवय्ये में बहुत मुस्बत तब्दीली आई, मुख़्तलिफ़ इ़बादात का ख़ुसूसी एहतिमाम, तक़्वा व परहेज़गारी में ज़ियादती, अपनी और सारी रिआ़या की इस्लाह़ का मदनी जज़्बा, नर्म रवय्या व रह़्म दीली जैसी कई सिफ़ात आप पर ग़ालिब आ गई थीं । येह तब्दीली कोई ढकी छुपी नहीं थी बल्कि तमाम लोग इसे मह़सूस किया करते थे । इस की सब से बड़ी वज्ह तो येह थी कि आप जानते थे कि "अगर ह़ाकिम दुरुस्त हो जाए तो सारी रिआ़या ख़ुद ब ख़ुद दुरुस्त हो जाएगी, यक़ीनन जिस रियासत का ह़ाकिम फ़ासिक़ो फ़ाजिर हो उस की रिआ़या में तक़्वा कहां से पैदा होगा ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इसी मदनी सोच का येह नतीजा ज़ाहिर हुवा कि जितना आप के दौर में अह़कामे शरइ़य्या पर लोगों ने अ़मल किया इतना किसी के दौर में अ़मल न हुवा । बा'दे ख़िलाफ़त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के चन्द गोशे पेशे ख़िदमत हैं ।

फ़ारूक़े आ'ज़म और मुख़्तलिफ़ इ़बादात का एहतिमाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिन्नो इन्स की तख़्लीक़ का मक़्सद बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाता है : ﴿ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ ﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۶)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें ।" इस आयते मुबारका में जिन्नो इन्स की तख़्लीक़ का मक़्सद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत को बयान फ़रमाया गया है और पूरा दीन ही इ़बादत में दाख़िल है । यक़ीनन दीने इस्लाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़त़ा किया हुवा वोह बेहतरीन निज़ाम है जो ख़ुर्दो नोश, क़ज़ाए ह़ाजत के आदाब वग़ैरा से ले कर इस्लामी ह़ुकूमत के क़ियाम, इस की तदबीरो सियासत, मुआ़मलात, जज़ा व सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ तमाम उमूर, नीज़ सुल्ह़ व जंग की ह़ालत में बैनल अक़्वामी तअ़ल्लुक़ाते आ़म्मा वग़ैरा ज़िन्दगी के हर हर गोशे में हमारी रहनुमाई फ़रमाता है ।

www.dawateislami.net

यक़ीनन इबादात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कु़र्ब का बहुत बड़ा ज़रीआ़ हैं, अ़क़ीदे में पुख़्तगी लाने, अख़्लाक़िय्यात की बुलन्दियों में इस्तिह़्काम पैदा करने और मुआ़शरे की तरबिय्यत व इस्लाह़ करने में इबादात का बहुत अहम किरदार होता है। येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इबादात के एहतिमाम पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी और मुसलमानों में अ़मल के जज़्बे को एक नई रूह़ अ़त़ा की। मुख़्तलिफ़ इबादात के एहतिमाम से मुतअ़ल्लिक़ा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के चन्द गोशे मुलाह़ज़ा कीजिये।

फ़ारूके़ आ'ज़म और नमाज़ का एहतिमाम

नमाज़ दीने इस्लाम का सब से अहम रुक्न है, मुख़्तलिफ़ इबादात में कु़रआने अ़ज़ीम में सब से ज़ियादा तज़्किरा नमाज़ ही का है। हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अपने दौर में नमाज़ के मुआ़मले में बहुत एह़तियात़ से काम लेते थे येही वज्ह है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे ख़िलाफ़त आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपने इन्ही दोनों दोस्तों की इत्तिबाअ़ करते हुवे नमाज़ के एहतिमाम पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ की अदाएगी के सिलसिले में लोगों को ख़ुसूसी ताकीद फ़रमाते और नमाज़ में सुस्ती करने के मुआ़मले में बहुत सख़्ती फ़रमाते। नीज़ नमाज़ न पढ़ने वालों को सज़ा भी देते।

फ़ारूके़ आ'ज़म और सदाए मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि जब नमाज़े फ़ज्र के लिये अपने घर से तशरीफ़ लाते रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते नीज़ अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बा'द अगर मस्जिद में कोई सोया होता तो उसे भी जगाते। बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़े फ़ज्र के लिये लोगों को जगाते हुवे अपने घर से तशरीफ़ ला रहे थे तो रास्ते में अबू लूअ लूअ फ़ीरोज़ नामी मजूसी ग़ुलाम ने आप को ख़न्जर के पै दर पै वार कर के शदीद ज़ख़्मी कर दिया और इसी सबब से आप शहीद हो गए।(1)

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ٣، ص ٢٦٣-

www.dawateislami.net

घरवालों को सदाए मदीना

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता उस वक़्त तक अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सलातुल्लैल अदा फ़रमाते और फिर रात के आख़िरी हिस्से में अपने घरवालों को यूं सदाए मदीना लगाते हुवे उठाते : "नमाज़, नमाज़ ।" फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाते

﴿وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾﴾ (پ۱۶، طٰهٰ:۱۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते हम तुझे रोज़ी देंगे और अन्जाम का भला परहेज़गारी के लिये ।" (1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप ने भी अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुहिब्बीन व तमाम दा'वते इस्लामी वालों को एक मदनी इन्आ़म सदाए मदीना का भी अ़ता फ़रमाया है, दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को सदाए मदीना कहा जाता है । बिला शुबा रोज़ाना सेंकड़ों इस्लामी भाई दीगर लोगों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाते और सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे नेकियों का ज़ख़ीरा जम्अ़ करते हैं ।

फ़ारूक़े आ'ज़म की नमाज़ में त़वील क़िराअत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़े फ़ज्र अदा की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूरए हज और सूरए यूसुफ़ की त़वील तिलावत ठहर ठहर कर फ़रमाई ।"(2)

कभी सूरए नह़्ल की भी तिलावत फ़रमाते

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसा औक़ात नमाज़े फ़ज्र में पहली रक्अ़त के अन्दर सूरए

---

1 ......شعب الایمان، باب فی الصلوات، فصل الاذان والاقامة۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۲۷، حدیث: ۳۰۸۶۔

2 ....موطا امام مالک، کتاب الصلاة، باب القراءة فی الصبح، ج ۱، ص ۹۳، حدیث: ۱۸۷ مختصرا

सूरए हज आधे पारे और सूरए यूसुफ़ तक़रीबन पोने पारे पर मुश्तमिल है । वाज़ेह़ रहे कि फ़र्ज़ की दो रक्अ़तों और वित्र व नवाफ़िल की हर रक्अ़त में मुत़लक़न एक आयत पढ़ना इमाम व मुन्फ़रिद पर फ़र्ज़ है, मुक़्तदी को सिर्री या जह्री किसी भी नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं न फ़ातिह़ा न आयत । इमाम की क़िराअत मुक़्तदी के लिये भी काफ़ी है ।

(बहारे शरीअ़त, जि.1, हिस्सा.3, स.512)

www.dawateislami.net

यूसुफ़ या सूरए नहल या इस जैसी किसी त़वील सूरत की तिलावत किया करते थे ताकि नमाज़ में लोग ज़ियादा से ज़ियादा शरीक हो जाएं।"(1)

हालते नमाज़ में गिर्या व ज़ारी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर औक़ात नमाज़ में गिर्या व ज़ारी फ़रमाते। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़ अदा की तो मैं ने तीन सफ़ों के पीछे से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रोने की आवाज़ सुनी। (2)

नमाज़ में हिचकियों की आवाज़ पिछली सफ़ों तक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन हाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई और येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْۤ اِلَى اللّٰهِ﴾ (پ۱۳، یوسف:۸۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रयाद **अल्लाह** ही से करता हूं।" तिलावत करते ही ज़ारो क़ित़ार रोने लगे यहां तक कि आप की हिचकियों की आवाज़ पिछली सफ़ों में भी सुनी गई।(3)

रोने की आवाज़ पूरी मस्जिद में गूंज उठी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी सबब से नमाज़े इशा में ताख़ीर हो गई तो मैं ने नमाज़े इशा की इमामत करवाई। आप बा'द में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ में शामिल हो गए। मैं ने सूरए ज़ारियात की तिलावत की और जब मैं इस आयते मुबारका पर पहुंचा : ﴿وَ فِی السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَ مَا تُوْعَدُوْنَ ۝۲۲﴾ (پ۲۶، الذّٰریٰت:۲۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है।" तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतनी बुलन्द आवाज़ से रोने लगे कि पूरी मस्जिद आवाज़ से गूंज उठी।"(4)

---

1 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قصۃ البیعۃ والاتفاق علی ---الخ، ج ۲، ص ۵۳۱، حدیث: ۳۷۰۰ ملتقطاً۔

2 ......حلیۃ الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۸۸۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الصلاۃ، مایقرء فی صلاۃ الفجر، ج ۱، ص ۳۹۱، حدیث: ۲۵۔

4 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فضائل الفاروق، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۵۷، حدیث: ۳۵۷۸۸۔

www.dawateislami.net

इबादत की मे'राज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई नमाज़ को इस की ह़क़ीक़ी लज़्ज़त के साथ अदा करना ही इबादत की मे'राज है, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़क़ीक़ी नमाज़ अदा करने वाले थे, येही वज्ह है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ नमाज़ में अल्लाह عزوجل के ख़ौफ़ से गिर्या व ज़ारी फ़रमाते, आह ! एक हमारी नमाज़ है कि अव्वलन नमाज़ के मआ़नी व मफ़्हूम ही नहीं जानते कि ह़क़ीक़ी नमाज़ कहते किसे हैं ? दूसरा नमाज़ के मुआ़मले में सुस्तियों से हमारी जान नहीं छूटती, अगर नमाज़ पढ़ भी लें तो इतनी तेज़ी के साथ अदा करते हैं कि शायद नमाज़ के अल्फ़ाज़ भी सह़ीह़ अदा न करते हों। काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं नमाज़ को अल्लाह عزوجل की रिज़ा के लिये इबादत समझ कर अदा करने वाले बन जाएं।

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त, हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर, हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

अ़ज़ाब वाली आयात सुन कर बीमार हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने येह आयते मुबारका पढ़ी : ﴿اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾﴾ (پ۲۷، الطور:۸،۷)· **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है उसे कोई टालने वाला नहीं।" तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की सांस उखड़ गई और आप को इस कैफ़िय्यत से तक़रीबन बीस दिन बा'द इफ़ाक़ा हुवा।[1]

नमाज़े ज़ोहर को ठन्डा कर के अदा फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ नमाज़े ज़ोहर को ठन्डा कर के अदा फ़रमाया करते थे और फ़रमाया करते थे : اَبْرِدُوْا بِالظُّهْرِ فَاِنَّ شِدَّةَ الْحَرِّ مِنْ فَيْحِ جَهَنَّمَ "या'नी नमाज़े ज़ोहर को गर्मियों में ठन्डा कर के अदा किया करो क्यूंकि गर्मी की शिद्दत जहन्नम के जोश के सबब है।"[2]

---

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الصحابة، فضائل الفاروق، الجزء: ١٢، ج٦، ص ٢٦٣، حديث: ٣٥٨٢٧۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، كتاب الصلاة، من كان يبرد بها---الخ، ج١، ص ٣٥٩، حديث: ٩۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म की नमाज़ से इस्तिआनत

कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ط﴾ (پ۲، البقرۃ: ۱۵۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस आयते मुबारका के आ़मिल थे और जब भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कोई मुश्किल पेश आती तो नमाज़ से मदद त़लब फ़रमाते । जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस्लामी फ़ौजों की ख़बर मिलने में देर हो जाती तो फ़ौरन नमाज़ के लिये खड़े हो जाते और इस में दुआ़ए कुनूत पढ़ते । इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी नमाज़ में मुजाहिदीन के लिये दुआ़एं भी करते और दुआ़ए कुनूत भी पढ़ते ।(1)

तमाम मुश्किलों और परेशानियों का हल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जो भी मुसलमान मुश्किल वक़्त में नमाज़ और सब्र से मदद त़लब करता है यक़ीनन वोह इन मुश्किलात से नजात ह़ासिल कर लेता है, मुश्किल वक़्त में नमाज़ से मदद त़लब करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नते मुबारका है । अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जब बारिश न होती तो इस मुश्किल से नजात के लिये नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा की जाती थी । इसी त़रह़ मुश्किल वक़्त में सलातुल ह़ाजत पढ़ना भी नमाज़ से मदद त़लब करने में शामिल है ।

नमाज़ में ताख़ीर पर दो ग़ुलामों की आज़ादी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर लोगों की त़रह़ फ़राइज़ व सुनन के आ़दी थे, एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उमूरे ख़िलाफ़त में मश्ग़ूलिय्यत के सबब नमाज़े मग़रिब में ताख़ीर हो गई तो आप ने इस के कफ़्फ़ारे में दो ग़ुलाम आज़ाद फ़रमाए ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कैसी मदनी सोच थी फ़क़त़ थोड़ी सी ताख़ीर हुई तो इस के कफ़्फ़ारे में दो ग़ुलाम आज़ाद कर दिये,

---

(1) شرح معانی الاثار، کتاب الصلاۃ، باب القنوت۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۲۵، حدیث: ۱۴۵۴

वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े, हां अगर ह़ादिसए अ़ज़ीमा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ़ के क़ब्ल कुनूत पढ़े । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 4, स. 657)

(2) الزھد لابن المبارک، باب ھوان الدنیا علی اللہ، ص ۱۸۷، الرقم: ۵۲۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

आज हमारी नमाज़ में ताख़ीर तो दूर की बात مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ें तक क़ज़ा हो जाती हैं लेकिन हमें कोई परवाह नहीं होती। काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे अपनी नमाज़ों की हि़फ़ाज़त करने वाले बन जाएं और पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करें।

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त, हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर, हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

फ़ारूके़ आ'ज़म सफ़ों को दुरुस्त करवाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ القَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल सफ़ों को दुरुस्त करवाते तो यूं इरशाद फ़रमाते : "ऐ फ़ुलां आगे हो जाओ। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम को ख़ुद पीछे नहीं करता जब तक वोह अपने आप को पीछे न करे।"[1]

घुटनों व पाउं की त़रफ़ देखते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़ की त़रफ़ बढ़ते तो (सफ़ों की दुरुस्ती के लिये लोगों के) घुटनों और पाउं की त़रफ़ देखते।"[2]

क़िब्ला रू हो कर नमाज़ की अदाएगी करो

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन सुवैद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ पढ़ते हुवे एक शख़्स को देखा जो क़िब्ला से दूर था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इरशाद फ़रमाया :

تَقَدَّمْ لَا تَفْسُدُ عَلَيْکَ صَلَاتُکَ وَمَا قُلْتُ لَکَ اِلَّا مَا سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْہِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُہٗ

"या'नी क़िब्ले की जानिब बढ़ जा कि नमाज़ ख़राब न हो और येह बात मैं अपनी त़रफ़ से नहीं कह रहा बल्कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येही फ़रमाते सुना है।"[3]

---

1 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب من ینبغی ان یکون۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۳۳، حدیث: ۲۴۶۲۔

2 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الصفوف، ج ۲، ص ۲۹، حدیث: ۲۴۳۹۔

3 ......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب القبلۃ۔۔۔الخ، باب فی القرب۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۵۳، حدیث: ۱۲۲۹۔

www.dawateislami.net

नमाज़ के बारे में पूछगछ फ़रमाते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बार जुमुआ़ के दिन ख़ुत़बा दे रहे थे कि सब से पहले हिजरत करने वाले मुहाजिरीन सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक सहा़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में देर से आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह तुम्हारे आने का क्या वक़्त है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! मैं आज बहुत मसरूफ़ था, अभी मैं घर लौटा ही था कि अज़ाने जुमुआ़ की आवाज़ आ गई तो मैं ने फ़क़त़ वुज़ू किया और मस्जिद चला आया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अच्छा ! वुज़ू ही कर के आए हो जब कि तुम जानते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो रोज़े जुमुआ़ गुस्ल करने का हु़क्म दिया करते थे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने ग़ैर ह़ाज़िर नमाज़ी की मा'लूमात लीं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द दुवुम, बाब "नेकी की दा'वत" हि़स्सा अव्वल, सफ़ह़ा 479 पर है : "अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अबी ह़स्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नहीं देखा। बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सय्यिदुना सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर था उन की मां ह़ज़रते सय्यिदतुना शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि "सुब्ह़ की नमाज़ में मैं ने सुलैमान को नहीं पाया !" उन्हों ने कहा : "रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे फिर नींद आ गई।" सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं येह मेरे नज़दीक बेहतर है इस से कि रात भर क़ियाम करूं।"(2) (या'नी रात भर नवाफ़िल पढ़ूं)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घर जा कर ग़ैर ह़ाज़िरी की वुजूहात मा'लूम कीं, इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शब भर

---

1 ......بخاری، کتاب الجمعۃ، باب فضل الغسل یوم الجمعۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۰۴، حدیث: ۸۷۸۔

2 ......مؤطا امام مالک، کتاب صلاۃ الجمعۃ، باب ماجاء فی۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۳۴، حدیث: ۳۰۰۔

www.dawateislami.net

नवाफ़िल पढ़ने या इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में रात गए तक शिर्कत करने के सबब सुब्ह़ की नमाज़ क़ज़ा हो जाना कुजा अगर फ़ज्र की जमाअ़त भी चली जाती हो तो लाज़िम है कि इस त़रह़ के मुस्तह़ब्बात छोड़ कर रात आराम करे और बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करे।

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त, हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें वक़्त ही पर, हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

गवर्नरों के नाम नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ उ़मूमी फ़रमान

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने गवर्नरों के पास नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ येह उ़मूमी फ़रमान भेजा कि :

اِنَّ اَهَمَّ اَمْرِكُمْ عِنْدِى الصَّلَاةُ مَنْ حَفِظَهَا وَحَافَظَ عَلَيْهَا حَفِظَ دِيْنَهُ وَمَنْ ضَيَّعَهَا فَهُوَ لِمَا سِوَاهَا اَضْيَعُ

"या'नी मेरे नज़्दीक तुम्हारा सब से अहम काम नमाज़ है, जिस ने इस की ह़िफ़ाज़त की और इस पर मुह़ाफ़ज़त (पाबन्दी) इख़्तियार की, उस ने अपना दीन मह़फ़ूज़ कर लिया और जिस ने नमाज़ ज़ाएअ़ कर दी वोह दूसरी चीज़ों को बदरजए औला ज़ाएअ़ करने वाला होगा।"[1]

फ़ज्र व अ़स्र के बा'द नमाज़ की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि एक बार मेरे हां पसन्दीदा शख़्सिय्यत तशरीफ़ फ़रमा थीं उन में मेरी सब से ज़ियादा पसन्दीदा शख़्सिय्यत या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे, इन तमाम ह़ज़रात ने इस बात को बयान किया कि : اَنَّ النَّبِیَّ نَهٰى عَنِ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصُّبْحِ حَتّٰى تَشْرُقَ الشَّمْسُ وَبَعْدَ الْعَصْرِ حَتّٰى تَغْرُبَ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ज्र के बा'द तुलूए़ शम्स तक और अ़स्र के बा'द गुरूबे शम्स तक नमाज़ अदा करने से मन्अ़ फ़रमाया।"[2]

तुलूए़ शम्स और गुरूबे शम्स के वक़्त शैत़ान के सींग

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَا تَحَرَّوْا بِصَلَاتِكُمْ طُلُوْعَ الشَّمْسِ وَلَا غُرُوْبَهَا فَاِنَّ الشَّيْطَانَ يَطْلُعُ قَرْنَاهُ مَعَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَيَغْرُبَانِ مَعَ غُرُوْبِهَا وَكَانَ يَضْرِبُ النَّاسَ عَلٰى تِلْكَ الصَّلَاةِ

---

1 موطا امام مالک، کتاب وقوت الصلاۃ، باب وقوت الصلاۃ، ج ۱، ص ۳۵، حدیث: ۶ ملتقطا۔

2 بخاری، کتاب مواقیت الصلاۃ، باب الصلاۃ بعد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۱۲، حدیث: ۵۸۱۔

www.dawateislami.net

"या'नी तुलूए़ शम्स और गुरूबे शम्स के वक़्त नमाज़ पढ़ने की कोशिश न करो क्यूंकि सूरज तुलूअ़ होते ही शैत़ान के सींग भी तुलूअ़ हो जाते हैं और इस के गुरूब होते ही वोह भी गुरूब हो जाते हैं।"

रावी कहते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन औक़ात में नमाज़ अदा करने वालों को मारा करते थे।(1)

पहली सफ़ वालों पर अल्लाह की रह़मत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को नमाज़ के साथ साथ इस बात की भी तरग़ीब दिलाते कि वोह सफ़े अव्वल में नमाज़ अदा करें। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़े अव्वल में खड़े होने वालों पर रह़मत भेजते हैं।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म रफ़्ए़ यदैन नहीं करते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप ने फ़क़त़ तक्बीरे तह़रीमा कहते हुवे हाथ उठाए फिर दोबारा न उठाए।"(3)

नमाज़ी के आगे से गुज़रने का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّيْ مَاذَا عَلَيْهِ كَانَ يَقُوْمُ حَوْلًا خَيْرٌ لَّهُ مِنْ ذٰلِكَ اِذَا لَمْ يَكُنْ بَيْنَ يَدَيِ الْمُصَلِّيْ سُتْرَةً

"या'नी बिग़ैर सुतरे के नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जान ले कि इस का क्या वबाल है तो वोह इस बात को पसन्द करे कि वोह वहीं एक साल तक खड़ा रहे।"(4)

---

1. ......موطا امام مالک، کتاب القرآن، النهی عن الصلاۃ---الخ، ج ۱، ص ۲۰۷، حدیث: ۵۲۶۔
2. ......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب افتتاح الصلاۃ، باب ماجاء فضل---الخ، ج ۲، ص ۳۰۹، حدیث: ۱۷۶۱۔
3. ......شرح معانی الآثار، کتاب الصلاۃ، باب التکبیر للرکوع---الخ، ج ۱، ص ۲۹۴، حدیث: ۱۳۲۹۔
4. ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب المارین یدی المصلی، ج ۲، ص ۱۱، حدیث: ۲۳۲۷۔

www.dawateislami.net

बिग़ैर सुतरे के नमाज़ अदा न करें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक शख़्स के क़रीब से गुज़रे जो बिग़ैर सुतरे के नमाज़ पढ़ रहा था तो इरशाद फ़रमाया : لَوْ يَعْلَمُ الْمَارُّ وَالْمُمَرُّ عَلَيْهِ مَاذَا عَلَيْهِمَا مَا فَعَلَا "या'नी अगर इस नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला और येह नमाज़ी भी जान ले कि इस का क्या वबाल है तो वोह नमाज़ी के आगे से गुज़रे और न येह बिग़ैर सुतरे के नमाज़ अदा करे।"(1)

नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले के साथ शैतान

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَا تَدَعْهُ يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْكَ فَإِنَّ مَعَهُ شَيْطَانَهُ "या'नी दौराने नमाज़ जो तुम्हारे सामने से गुज़रे तो उसे न छोड़ो क्यूंकि उस के साथ शैतान होता है।"(2)

सुतरे के साथ नमाज़ में शैतान हाइल नहीं होगा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا صَلَّى اَحَدُكُمْ فَلْيُصَلِّ اِلٰى سُتْرَةٍ لَا يَحُوْلُ الشَّيْطَانُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ صَلَاتِهٖ "या'नी जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो सुतरा रख कर पढ़े इस त़रह़ शैत़ान उस के और उस की नमाज़ के माबैन ह़ाइल नहीं होगा।"(3)

फ़ारूके़ आ'ज़म अपने सामने बत़ौरे सुतरा नेज़ा गाड़ लेते

हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है :

اِنَّ كَانَ عُمَرُ رُبَّمَا يَرْكُزُ الْعَنَزَةَ فَيُصَلِّيْ اِلَيْهَا وَالظَّعَائِنُ يَمُرُّوْنَ اَمَامَهٗ

"या'नी बसा औक़ात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मीन में बत़ौरे सुतरा नेज़ा गाड़ लेते और नमाज़ अदा फ़रमाते ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने से पालानों पर सुवार ख़्वातीन गुज़र रही होतीं थीं।"(4)

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب المارین یدی المصلی، ج ۲، ص ۱۴، حدیث: ۲۳۴۲۔
2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب کم یکون ـــ الخ، ج ۲، ص ۷، حدیث: ۲۳۴۸۔
3 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب المارین یدی المصلی، ج ۲، ص ۱۵، حدیث: ۲۳۰۷ مختصرا۔
4 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب سترۃ الامام ـــ الخ، ج ۲، ص ۹، حدیث: ۲۳۱۹۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके आ'ज़म नमाज़े फ़ज्र पढ़ कर सफ़र शुरूअ़ करते

हज़रते सय्यिदुना हरशा बिन हुर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ सुब्ह़ नमाज़े फ़ज्र अदा कर लेते और फिर सफ़र शुरूअ़ करते, फिर जो भी नमाज़ें आतीं उन्हें सफ़र में अदा फ़रमाते।"(1)

तमाम तकालीफ़ और परेशानियों का हल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त्ई जन्नती होने के बा वुजूद नमाज़ों का किस क़दर एहतिमाम फ़रमाया करते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं, और मुसलमानों पर सब से पहला फ़र्ज़ नमाज़ है, मगर अफ़्सोस आज हमारी मस्जिदें वीरान हैं, शायद येही वज्ह है कि आज हम त़रह़ त़रह़ की बीमारियों परेशानियों और मुसीबतों में मुब्तला हैं, कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई तंगदस्त व बे रोज़गार है तो कोई मजबूर व लाचार, कोई औलाद का त़लबगार है तो कोई अपनी ही ना फ़रमान औलाद की वज्ह से बेज़ार, अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है। यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की तमाम परेशानियों का वाहिद हल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताए हुवे कामों में लग जाना है। यक़ीनन नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नाज़िल होती है, नमाज़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है, नमाज़ मोमिन की मे'राज है, नमाज़ी को कल बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी, नमाज़ी के लिये सब से बड़ा इन्आ़म येह होगा कि कल बरोज़े क़ियामत उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार नसीब होगा। जब कि नमाज़ों में सुस्ती करने वालों और तारीकीने नमाज़ को दुन्या व आख़िरत दोनों में ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ेगा और रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में तबाही व बरबादी उन का मुक़द्दर होगी। काश ! हम भी सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करने वाले बन जाएं। प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप चाहते हैं कि नमाज़ों में कभी सुस्ती न हो, पाबन्दिये वक़्त के साथ पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने की सआ़दत नसीब हो जाए तो आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। बेशुमार इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हुवे और अपनी नमाज़ों के साथ साथ दीगर लोगों की नमाज़ों के भी मुह़ाफ़िज़ या'नी इमाम व मुअज़्ज़िन बन गए। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

---

(1) مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب وقت الصبح، ج ۱، ص ۴۱۹، حدیث: ۲۱۷۲۔

www.dawateislami.net

क़ातिल इमामत के मुसल्ले पर

दादू (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) में दा'वते इस्लामी की मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान के ज़िम्मेदार का बयान कुछ इस त़रह़ है : एक शख़्स क़त्ल के मुक़द्दमे में दादू की जेल में बत़ौरे क़ैदी लाया गया। ख़ुश क़िस्मती से वहां उस की मुलाक़ात दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाइयों से हुई जो जेल में मदनी काम करते, क़ैदियों को क़ुरआने मजीद पढ़ाते और सुन्नतें सिखाते थे चुनान्चे, उन इस्लामी भाइयों ने इस क़ैदी पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे इसे दा'वते इस्लामी की मजलिस इस्लाह़ बराए क़ैदियान के तह़्त मद्रसा (फ़ैज़ाने क़ुरआन) में दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ क़ुरआने मजीद पढ़ने और सुन्नतें सीखने की दा'वत दी, चुनान्चे, इस ने मद्रसे में दाख़िला ले लिया और यूं नेक सोह़बत की बरकत से इस में मुस्बत तब्दीलियां रूनुमा होने लगीं, क़ुरआने पाक की ता'लीम के साथ साथ पाबन्दी से नमाज़ें पढ़ने, ह़ुक़ूक़ुल्लाह अदा करने और इश्क़े मुस्त़फ़ा की नूरानिय्यत अपने दिल में बसाने लगे। कल तक जिस की आंखों में दहशत व बरबरिय्यत की सुर्ख़ी थी आज उस की आंखों में ख़ौफ़े ख़ुदा के आंसू थे, जिस की गुफ़्तगू में शरारत थी अब उस की ज़बां पर नेकी की दा'वत है, जिस की गर्दन ग़ुरूर व तकब्बुर से अकड़ी रहती थी अब रब عَزَّوَجَلَّ के रू बरू इबादत में झुकी रहती है। इन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़ गिड़ा कर अपने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर सुन्नतों के सांचे में ढल गए, नीज़ इस अ़ज़ीम मदनी मक़्सद "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" पर कारबन्द हो गए। रबीउ़ल आख़िर सिने 1427 हिजरी ब मुत़ाबिक़ मई सिन 2006 ईसवी को जब येह इस्लामी भाई रिहा हो कर बाहर निकलने लगे तो जेल का अ़म्ला और क़ैदियों की एक ता'दाद थी जिन की आंखें अश्कबार थीं कि वाह ! एक मुजरिम, गुनाहों के दिलदादह को दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल ने आ़शिक़े रसूल और नेकूकार बना दिया, मुसलमानों पर नाजाइज़ ज़ुल्मो सितम करने वाले को इन का ख़ैरख़्वाह बना दिया। आज اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर वोह ख़ुश नसीब इस्लामी भाई दादू की एक मस्जिद के इमाम हैं और दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

www.dawateislami.net

तू आ बे नमाज़ी, है देता नमाज़ी
ख़ुदा के करम से बना मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी
दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल
अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और तरावीह़ की जमाअ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! साल के दो महीने ऐसे हैं जिन का मुसलमानों को शिद्दत से इन्तिज़ार रहता है। एक तो रबीउ़ल अव्वल का महीना है जिस में पूरी दुन्या के मुसलमान अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यौमे विलादत निहायत ही शानो शौकत और इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से मनाते हैं। जब कि दूसरा महीना रमज़ानुल मुबारक है जिस में मुसलमानों की इ़बादतो रियाज़त का ज़ौक़ो शौक़ उ़रूज पर होता है। बड़े तो बड़े मदनी मुन्नों में भी रोज़ा, सह़री व इफ़्त़ार, नमाज़े तरावीह़ वग़ैरा में काफ़ी दिलचस्पी नज़र आती है। वाज़ेह़ रहे कि रमज़ानुल मुबारक के मुबारक महीने में रोज़ाना बा'द नमाज़े इशा बीस रक्अ़त तरावीह़ अदा करना सुन्नते मुअक्कदा है और अह़ादीसे मुबारका में इस की बहुत फ़ज़ीलत बयान हुई है। सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 688 पर इरशाद फ़रमाते हैं : "तरावीह़ मर्द व औ़रत सब के लिये बिल इजमाअ़ सुन्नते मुअक्कदा है इस का तर्क जाइज़ नहीं। इस पर ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने मुदावमत फ़रमाई और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि मेरी सुन्नत और सुन्नते ख़ुलफ़ाए राशिदीन को अपने ऊपर लाज़िम समझो।"(1)

रसूलुल्लाह ने नमाज़े तरावीह़ अदा फ़रमाई

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर से ही नमाज़े तरावीह़ का बहुत एहतिमाम किया जाता था और ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी तरावीह़ पढ़ी और इसे बहुत पसन्द फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

(1) ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء في الاخذ بالسنة۔۔۔الخ، ج۴، ص۳۰۸، حدیث:۲۶۸۵۔

www.dawateislami.net

रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَّاِحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ "या'नी जो रमज़ान में (नमाज़े तरावीह़ या दीगर इ़बादात वग़ैरा के लिये) कि़याम करे ईमान की वज्ह से और सवाब त़लब करने के लिये, उस के गुज़श्ता सब गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"(1)

उम्मत की मशक़्क़त के सबब जमाअ़त तर्क फ़रमाई

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इन्हें बताया कि एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आधी रात के वक़्त घर से बाहर निकले और आप ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और लोगों ने भी आप के साथ नमाज़ पढ़ी। फिर लोग सुब्ह़ के वक़्त उस नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बातें करने लगे, दूसरी रात नमाज़ियों की ता'दाद पहली रात से भी ज़ियादा हो गई तमाम लोगों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ी, फिर सुब्ह़ हुई तो लोगों ने इस सिलसिले में बातें की और तीसरी रात में नमाज़ी और ज़ियादा हो गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीसरी रात भी लोगों को नमाज़ पढ़ाई। फिर जब चौथी रात आई तो मस्जिद नमाज़ियों से भर गई और इस में बिल्कुल जगह ही न रही लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा न फ़रमाई। बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ज्र की नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाए, नमाज़ की अदाएगी के बा'द लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّهٗ لَمْ يَخْفَ عَلَيَّ مَكَانُكُمْ لٰكِنِّي خَشِيْتُ اَنْ تُفْرَضَ عَلَيْكُمْ فَتَعْجِزُوْا عَنْهَا "या'नी ह़म्दो सलात के बा'द ! बात येह है कि तुम्हारी ह़ालत मुझ पर पोशीदा नहीं, मुझे डर है कि कहीं वोह (तरावीह़ की) नमाज़ तुम पर फ़र्ज़ न कर दी जाए और तुम उस की अदाएगी से आ़जिज़ आ जाओ।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म ने दोबारा तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम फ़रमाई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं रमज़ानुल मुबारक में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के साथ मस्जिद में आया तो लोग वहां मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में नमाज़े तरावीह़ अदा कर रहे थे। कोई अपनी नमाज़ पढ़ रहा

---

1 ......بخاری، کتاب الایمان، باب تطوع قیام رمضان من الایمان، ج ۱، ص ۲۶، حدیث: ۳۷۔
ارشاد الساری، کتاب الایمان، باب تطوع قیام مضان۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۱۰، تحت الحدیث: ۳۷۔

2 ......بخاری، کتاب الجمعة، باب من قال فی۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۱۸، حدیث: ۹۲۴۔
ارشاد الساری، کتاب الجمعة، باب من قال فی۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۶۷۴، تحت الحدیث: ۹۲۴۔

था, और बा'ज़ ने जमाअ़त क़ाइम की हुई थी। येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنِّي اَرٰى لَوْ جَمَعْتُ هٰؤُلَاءِ عَلٰى قَارِئٍ وَاحِدٍ لَكَانَ اَمْثَلَ "या'नी मेरा ख़याल है अगर मैं इन सब को एक ही इमाम के पीछे जम्अ़ कर दूं तो बहुत अच्छा रहेगा।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ारिये क़ुरआन हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इमाम मुक़र्रर फ़रमा कर तमाम लोगों को इन की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने का हुक्म दे दिया। फिर एक रात मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मस्जिद में जाने के लिये निकला, मस्जिद पहुंचने पर देखा कि सब लोग एक ही इमाम के साथ नमाज़ में मश्ग़ूल हैं। येह मन्ज़र देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और इरशाद फ़रमाया : نِعْمَ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ "या'नी येह नया त़रीक़ा कितना अच्छा है !"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का हिक्मत से भरपूर जवाब

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें रमज़ानुल मुबारक में तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करने का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِنَّ النَّاسَ يَصُوْمُوْنَ النَّهَارَ وَلَا يُحْسِنُوْنَ اَنْ يَقْرَاُوْا فَلَوْ قَرَاْتَ عَلَيْهِمْ بِاللَّيْلِ "या'नी लोग दिन को रोज़ा तो अच्छी त़रह़ रख लेते हैं लेकिन रात को तरावीह़ में क़ुरआन अह़सन अन्दाज़ में नहीं पढ़ पाते क्या ही अच्छा हो कि तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम कर के तुम इन को क़ुरआन सुनाओ।" हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ هٰذَا شَيْءٌ لَمْ يَكُنْ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह चीज़ पहले तो नहीं थी।" अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : قَدْ عَلِمْتُ وَلٰكِنَّهٗ حَسَنٌ "मुझे मा'लूम है कि तरावीह़ की जमाअ़त पहले नहीं थी लेकिन येह एक अच्छा फ़े'ल है।" लिहाज़ा हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को बीस रक्अ़त तरावीह़ पढ़ाई।(2)

इ़ल्मो हिक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला ह़दीसे पाक से इ़ल्मो हिक्मत के बेशुमार मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

---

1 ......بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان، ج ۱، ص ۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

2 ......کنز العمال، کتاب الصلاۃ، صلاۃ التراویح، الجزء: ۸، ج ۴، ص ۱۹۲، حدیث: ۲۳۴۶۶۔

www.dawateislami.net

(1).....तरावीह़ की जमाअ़त फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर से पहले नहीं होती थी, येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही करते हुवे क़ाइम फ़रमाई।

(2).....फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में भी तरावीह़ की बीस रक्अ़त ही अदा की जाती थीं।

(3).....हर वोह काम जिस का वुजूद पहले न हो मगर मुसलमानों के नज़्दीक वोह अच्छा हो तो उसे करने में कोई ह़रज नहीं जैसा कि मज़्कूरए बाला ह़दीसे पाक में ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस सुवाल कि "तरावीह़ की जमाअ़त पहले तो न थी" के जवाब में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि "मुझे इस बात का इल्म है कि तरावीह़ की जमाअ़त पहले न थी लेकिन तरावीह़ की जमाअ़त एक अच्छा फ़े'ल है लिहाज़ा करने में कोई ह़रज नहीं।"

(4).....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ियामत तक के मुसलमानों के लिये एक उसूल बयान फ़रमा दिया कि हर वोह काम जिस का वुजूद पहले न हो मगर मुसलमानों की नज़र में वोह अच्छा हो तो उसे करने में कोई ह़रज नहीं। चुनान्चे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : فَمَا رَآهُ الْمُؤْمِنُونَ حَسَنًا ، فَهُوَ عِنْدَ اللهِ حَسَنٌ ، وَمَا رَآهُ الْمُؤْمِنُونَ قَبِيحًا، فَهُوَ عِنْدَ اللهِ قَبِيحٌ "या'नी वोह काम जिसे मुसलमान अच्छा समझें वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां भी अच्छा है और जिसे मुसलमान बुरा समझें वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां भी बुरा है।"[1]

(5).....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के "तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करने" जैसे मुबारक अ़मल से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ इयां हो गई कि अगर्चे कोई काम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया हो लेकिन अगर वोह अच्छा काम है तो उसे करने में कोई ह़रज नहीं। कई बद मज़्हब व गुमराह फ़िर्क़ों का मा'मूलाते अह्ले सुन्नत जैसे अज़ान वग़ैरा मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर दुरूदो सलाम पढ़ना, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे नामी इस्मे गिरामी पर अंगूठे चूमना, महाफ़िल व जुलूसे मीलाद, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन, नज़्रो नियाज़, बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी वग़ैरा पर येह ए'तिराज़ करना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो येह काम न किया ? सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के तरावीह़ की जमाअ़त पर इजमाअ़ से मर्दूद हो गया कि अह़कामे शरइय्या को सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ज़ियादा जानने वाला कोई नहीं।

[1] ......معجم کبیر، عبداللہ بن مسعود، ج۹، ص۱۱۲، حدیث:۸۵۸۳۔

www.dawateislami.net

अह्ले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

मौला अ़ली ने फ़ारूक़े आ'ज़म को तरावीह़ की तरग़ीब दिलाई

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को माहे रमज़ान की शब बेदारी (या'नी नमाज़े तरावीह़) पर रग़बत दिलाई। मैं ने अ़र्ज़ किया कि, सातवें आस्मान पर एक बाग़ है जिसे "حَظِیْرَۃُ الْقُدُس" कहा जाता है, वहां रहने वाले फ़िरिश्तों को "रूह़" कहते हैं। शबे क़द्र में वोह फ़िरिश्ते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त ले कर दुन्या में उतरते हैं। नमाज़ पढ़ते हुवे या नमाज़ की त़रफ़ जाते हुवे जिस शख़्स के पास से गुज़र जाएं वोह बरकतों वाला हो जाता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन ! आप इन लोगों को नमाज़े तरावीह़ की रग़बत दिलाएं ताकि सब को बरकत मिले।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को नमाज़े तरावीह़ की जमाअ़त का हुक्म दिया।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म ने तरावीह़ की जमाअ़त क्यूं क़ाइम फ़रमाई ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुकम्मल ह़याते त़य्यिबा पर अगर नज़र डाली जाए तो येह बात सामने आती है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इनफ़िरादिय्यत के मुक़ाबले में इजतिमाइय्यत को ज़ियादा पसन्द फ़रमाते थे। येही वज्ह है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में लोगों को इनफ़िरादी त़ौर पर नमाज़े तरावीह़ पढ़ते देखा तो उन सब को एक ही इमाम की इक़्तिदा में खड़ा कर के इजतिमाइय्यत को क़ाइम फ़रमाया।

तरावीह़ बीस रकअ़त है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबारका, इजमाए़ सह़ाबा और जमहूर उ़लमा के अक़्वाल से साबित है कि तरावीह़ बीस रक्अ़त है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : كُنَّا نَقُوْمُ فِيْ زَمَانِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ بِعِشْرِيْنَ رَكْعَةً وَالْوِتْرِ

---

[1] ......شعب الایمان، باب فی الصیام، التماس لیلة القدر، ج ۳، ص ۳۳۷، حدیث: ۳۶۹۲۔

www.dawateislami.net

"या'नी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में बीस रक्अ़त नमाज़े तरावीह़ और वित्र अदा किया करते थे।"(1)

मलिकुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अबू बक्र बिन मसऊ़द कासानी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

رُوِيَ اَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ جَمَعَ اَصْحَابَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ عَلَى اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ فَصَلَّى بِهِمْ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ عِشْرِينَ رَكْعَةً، وَلَمْ يُنْكِرْ اَحَدٌ عَلَيْهِ فَيَكُونُ اِجْمَاعًا مِنْهُمْ عَلَى ذٰلِكَ

"या'नी मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रमज़ानुल मुबारक के महीने में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा पर जम्अ़ फ़रमाया तो वोह रोज़ाना बीस रक्अ़त पढ़ाते थे और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी ने इस पर इन्कार नहीं किया तो बीस रक्अ़त नमाज़े तरावीह़ पर तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इजमाअ़ हो गया।"(2)

शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی हाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं :

وَهُوَ قَوْلُ جُمْهُوْرِ الْعُلَمَاءِ وَبِهِ قَالَ الْكُوْفِيُّوْنَ وَالشَّافِعِيُّ وَاَكْثَرُ الْفُقَهَاءِ وَهُوَ الصَّحِيْحُ عَنْ اُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ مِنْ غَيْرِ خِلَافٍ مِّنَ الصَّحَابَةِ

"या'नी बीस रक्अ़त तरावीह़ जमहूर उ़लमा का क़ौल है, उ़लमाए कूफ़ा, इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی और अक्सर फ़ुक़हाए किराम येही फ़रमाते हैं और येही सह़ीह़ है और येही ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है, इस में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इख़्तिलाफ़ नहीं।"(3)

बीस(20) रक्अ़त तरावीह़ की हिक्मत

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अजमदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बीस रक्अ़त तरावीह़ की हिक्मत येह है कि रात और दिन में कुल बीस रक्अ़त फ़र्ज़ व वाजिब हैं। सतरह रक्अ़त फ़र्ज़

1 ......سنن صغری، کتاب الصلاۃ، باب قیام شھر رمضان، ج ۱، ص ۲۷۸، حدیث: ۸۳۳۔

2 ......بدائع الصنائع، کتاب الصلاۃ، فصل فی مقدار صلاۃ التراویح، ج ۱، ص ۶۴۴۔

3 ......عمدۃ القاری، کتاب التراویح، باب فضل من قام رمضان، ج ۸، ص ۲۴۶، تحت الحدیث: ۲۰۱۰۔

www.dawateislami.net

और तीन वित्र। लिहाज़ा रमज़ानुल मुबारक में बीस रक्अ़त तरावीह़ मुक़र्रर की गई ताकि फ़र्ज़ व वाजिब के मदारिज और बढ़ जाएं और इन की ख़ूब तक्मील हो जाए।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म और रोज़ों का एहतिमाम

फ़ारूके़ आ'ज़म की नफ़्ली रोज़ों से मह़ब्बत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा (या'नी अक्सर) रोज़े रखते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِ يَصُوْمُ الدَّهْرَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा रोज़े रखा करते थे।"(2)

दो साल मुसलसल रोज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है : كَانَ يَسْرُدُ الصِّيَامَ قَبْلَ اَنْ يَمُوْتَ بِسَنَتَيْنِ اِلَّا يَوْمَ الْاَضْحٰى وَيَوْمَ الْفِطْرِ وَفِى السَّفَرِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने विसाल से क़ब्ल ईदुल अज़्हा, ईदुल फ़ित्र और सफ़र के इलावा मुसलसल दो साल तक रोज़े रखे।"(3)

रोज़े और मिस्वाक से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन हुदैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कसरत से रोज़े रखते और कसरत से मिस्वाक करते देखा है।"(4)

रिआ़या के लिये मुसलसल रोज़ों की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ों से बहुत मह़ब्बत करते थे मगर लोगों को सौमुद्दहर या'नी हमेशा रोज़े रखने से मन्अ़ फ़रमाते थे। चुनान्चे, एक बार

1....फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 380।

2......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثانی والخمسون، ص ۱۶۰۔

3......کنز العمال، کتاب الصوم، محظورات الصوم بالایام، الجزء: ۸، ج ۴، ص ۲۸۳، حدیث: ۲۴۴۱۲۔

4......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۰۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़बर मिली कि एक आदमी सौमुद्दह्‌र या'नी हमेशा रोज़े रखता है आप उस के पास आए और मारने के लिये दुर्रा उठाया और जलाल में उस से फ़रमाया : كُلْ يَادَهْرِيُّ "खा ऐ दह्‌री।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और इस्तिक़्बाले रमज़ान

इस्तिक़्बाले रमज़ान पर नसीहत आमोज़ ख़ुत़्बा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़कैम जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब रमज़ानुल मुबारक की आमद होती तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यकुम रमज़ानुल मुबारक की शब नमाज़े मग़रिब के बा'द लोगों को नसीह़त आमोज़ ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाते : "ऐ लोगो ! बेशक इस महीने के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये गए हैं, अलबत्ता इस में नवाफ़िल की अदाएगी फ़र्ज़ नहीं है लिहाज़ा जो भी नवाफ़िल अदा करने की इस्तित़ाअ़त रखता हो तो उसे चाहिये कि वोह नवाफ़िल अदा करे क्यूंकि येह वोही बेहतरीन नवाफ़िल हैं जिन के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया है और जो नवाफ़िल की अदाएगी की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता वोह सोता रहे। तुम में से हर बन्दा येह कहते हुवे डरे कि मैं तो इस लिये रोज़े रख रहा हूं कि फ़ुलां भी रोज़े रख रहा है, मैं तो इस लिये नवाफ़िल अदा कर रहा हूं कि फ़ुलां भी नवाफ़िल अदा कर रहा है। जो भी रोज़े रखे या नवाफ़िल अदा करे वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये रखे। तुम में से हर बन्दा येह जान ले कि वोह नमाज़ में है नमाज़ उस के इन्तिज़ार में नहीं है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर में फ़ुज़ूल बातें कम किया करो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तीन बार येह इरशाद फ़रमाया : "ख़बरदार ! तुम में से कोई भी इस मुबारक महीने को फ़ुज़ूल न गुज़ारे, जब तक चांद न देख लो उस वक़्त तक रोज़ा न रखो अगर चांद मश्कूक हो जाए तो तीस दिन पूरे करो और जब तक अन्धेरा (या'नी सूरज के डूब जाने का यक़ीन) न हो उस वक़्त तक इफ़्त़ार न करो।"(2)

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे इस्तिक़्बाले रमज़ान के लिये यकुम रमज़ान की शब सुन्नतों भरा

---

1 ......فتح الباری، کتاب الصوم، باب حق الاھل فی۔۔۔الخ، ج۵، ص ۱۹۳ ، تحت الحدیث: ۱۹۷۷۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب قیام رمضان، ج ۴، ص ۲۰۴، حدیث: ۷۷۴۸۔

www.dawateislami.net

बयान फ़रमाते और इस्लामी भाइयों का कसरत से नेकियां करने का मदनी ज़ेहन बनाते हैं, रमज़ानुल मुबारक की आमद होते ही आप पर एक ख़ास मसर्रत भरी कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है और जब रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी घड़ियां आती हैं तो इस माह की जुदाई पर आप ग़म से निढाल हो जाते हैं, क्यूंकि वोह मुबारक महीना जुदा हो रहा है जिस में नेकियों का सवाब कई गुना बढ़ा दिया जाता है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ह़ासिल होने की सूरत में माहे रमज़ानुल मुबारक की बरकतें ह़ासिल करने का बहुत ज़ेहन बनता है वरना बुरी सोह़बतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। गुनाहों के दलदल में धंसे एक फ़नकार का वाक़िआ़ (मदनी बहार) पेशे ख़िदमत है जिसे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल ने मदनी रंग चढ़ा दिया।

मैं फ़नकार था....

औरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! मैं एक फ़नकार था, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़ंक्शन्ज़ करते हुवे ज़िन्दगी के अनमोल औक़ात बरबाद हुवे जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हुवे थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एह़सास। सह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाईवे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ (1424 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 2003 ईसवी) में ह़ाज़िरी के लिये एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश कर के तरग़ीब दिलाई, ज़हे नसीब ! उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। तीन रोज़ा इजतिमाअ़ के इख़्तिताम पर रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, मैं अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मिल गया। मैं ने रक़्सो सुरौद (رَ-قْ-صْ / سُ-رُوْ-د) की मह़फ़िलों से तौबा कर ली और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया। 25 दिसम्बर 2004 को जब मैं मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्राई हुई आवाज़ में इन्हों ने अपने यहां होने वाली नाबीना बच्ची की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा : डोक्टरों ने कह

www.dawateislami.net

दिया है कि इस की आंखें रौशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। मैं ने येह कह कर ढारस बन्धाई कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में दुआ करूंगा। मैं ने मदनी क़ाफ़िले में खुद भी बहुत दुआएं कीं और मदनी क़ाफ़िले वाले आशिक़ाने रसूल से भी दुआएं करवाईं। जब मदनी क़ाफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कुराता हुवा फ़ोन आया और उन्हों ने खुशी खुशी येह ख़बरे फ़रहत असर सुनाई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रौशन हो गई हैं और डॉक्टर तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूंकि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशावरत के एक रुक्न की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें ह़ासिल कर रहा हूं।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र, रौशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो
आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर, भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल कितना प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुवे अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ मदनी क़ाफ़िलों की बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबतें रुख़्सत हो जाती हैं اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की आफ़तें भी राह़त में ढल जाएंगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज्जे बैतुल्लाह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज इस्लाम का एक अहम रुक्न है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़ह्दे रिसालत में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कई ह़ज अदा फ़रमाए, इसी

www.dawateislami.net

त़रह़ जब आप का अपना अ़ह्दे ख़िलाफ़त आया तो इस में भी ह़ज की अदाएगी को तर्क न फ़रमाया बल्कि अपनी मुबारक आ़दत के मुत़ाबिक़ ह़ज के सफ़र में भी आ़जिज़ी व इन्किसारी को इख़्तियार फ़रमाया। चुनान्चे,

सफ़रे ह़ज में आप की सादगी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं सफ़रे ह़ज में मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा तक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था फिर हम वापस भी आए लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न तो कोई ख़ैमा लगाया और न ही कोई ऐसी इमारत थी जिस से आप साया ह़ासिल करते, फ़क़त़ एक चमड़े का टुकड़ा था जिसे ज़मीन पर बिछा लेते और उसी पर आराम फ़रमाते या उसे दरख़्त पर डाल देते और उस के साए में आराम फ़रमाते।(1)

ह़ज के अख़राजात फ़क़त़ पन्द्रह दीनार

ह़ज़रते सय्यिदुना यसार बिन नुमैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : كَمْ اَنْفَقْنَا فِي حَجَّتِنَا هٰذِهٖ؟ "इस ह़ज में हमारे कितने अख़राजात हुवे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : خَمْسَةَ عَشَرَ دِيْنَارًا "या'नी सिर्फ़ पन्द्रह दीनार।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज की ज़िम्मेदारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़त के पहले साल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया कि वोह लोगों को ह़ज कराएं, इस के बा'द आख़िरी उ़म्र तक आप ख़ुद ही लोगों को ह़ज करवाते रहे, आप ने मुसलसल दस साल तक लोगों को ह़ज कराया, सिने 23 हिजरी में आप ने आख़िरी ह़ज फ़रमाया जिस में अज़्वाजे मुत़ह्हरात भी शामिल थीं, आप ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में तीन उ़मरे अदा फ़रमाए, एक सिने 16 हिजरी रजब में, एक सिने 17 हिजरी रजब में और एक उ़मरह सिने 22 हिजरी रजब के महीने में।(3)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۱، انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج ۱۰، ص ۳۱۵۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۵، انساب الاشراف، تمصیر الامصار، ج ۱۰، ص ۳۲۴۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और ज़िक्रुल्लाह का एहतिमाम

ज़िक्रुल्लाह को अपने लिये लाज़िम कर लो

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **ज़िक्रुल्लाह** के शैदाई थे और हर वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान मुबारका ज़िक्रे इलाही से तर रहा करती थी, फ़रमाया करते थे : عَلَيْكُمْ بِذِكْرِ اللهِ فَاِنَّهٗ شِفَاءٌ وَاِيَّاكُمْ وَذِكْرَ النَّاسِ فَاِنَّهٗ دَاءٌ "या'नी ज़िक्रे इलाही को अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि येह शिफ़ा है और ख़ुद को लोगों के तज़्किरे व तबसेरे से बचाओ क्यूंकि येह बीमारी है ।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़िक्रुल्लाह के हल्क़े में शिर्कत

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को **ज़िक्रुल्लाह** करने वालों के साथ बैठना भी बहुत पसन्द था । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि नमाज़े इ़शा के बा'द रात में एक मरतबा मस्जिद का जाइज़ा लेते अगर कोई शख़्स उस वक़्त मस्जिद में बिग़ैर किसी वज्ह के मिल जाता तो उसे बाहर जाने का कहते और अगर कोई नमाज़ वग़ैरा की अदाएगी करता हुवा मिलता तो उसे कुछ न कहते । एक मरतबा चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **ज़िक्रुल्लाह** का ह़ल्क़ा क़ाइम किये मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे । इन में ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" अ़र्ज़ किया : "अमीरुल मोमिनीन ! येह आप ही के घराने के लोग हैं ।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "नमाज़ के बा'द येह लोग यहां क्या कर रहे हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम सब यहां बैठ कर **ज़िक्रुल्लाह** कर रहे हैं । येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहीं बैठ गए । फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़रीब बैठे हुवे शख़्स से फ़रमाया : "दुआ़ शुरूअ़ करो ।" उस ने दुआ़ की , फिर आप ने एक एक कर के वहां मौजूद तमाम लोगों से दुआ़ करवाई यहां तक कि मेरे पास पहुंचे, मैं आप के पहलू में था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम भी दुआ़ करो ।" मैं मुश्किल में पड़ गया और मेरे बाज़ू कांपने लगे । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कुछ कहो, येही कह दो कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बख़्श दे, ऐ **अल्लाह** हम पर रह़्म फ़रमा, फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद ही दुआ़ शुरूअ़

---

(1) الزهد للامام احمد، زهد عمر بن الخطاب، ص ١٥٠ ، الرقم: ٦٢٤ـ

www.dawateislami.net

फ़रमा दी । तो हम सब ने देखा कि उस पूरे ह़ल्के़ में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ से ज़ियादा आंसू बहाने वाला और गिर्या व ज़ारी करने वाला कोई न था । जब आप दुआ़ से फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया : "ठीक है अब तुम लोग जा सकते हो ।"(1)

दिलों का चैन ज़िक्रुल्लाह में है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज पूरी दुन्या में एक आ़लमगीर बेचैनी पाई जा रही है, कोई मुल्क, कोई शहर, कोई घर ऐसा नहीं जहां बे चैनी न पाई जाती हो, इस की सब से बड़ी वज्ह **ज़िक्रुल्लाह** से ग़फ़्लत है क्यूंकि दिलों का चैन **ज़िक्रुल्लाह** में है । चुनान्चे, **अल्लाह** عزوجل कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है ।" काश हम भी **ज़िक्रुल्लाह** करने वाले बन जाएं, हर वक़्त यादे इलाही में गुम रहें ।

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही.........न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में........पिला जाम ऐसा पिला या इलाही
मैं बेकार बातों से बच कर हमेशा.........करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म का मसाजिद को रौशन करना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सालहा साल से मुसलमानों में इस बात का रवाज है कि जब कोई इस्लामी तेहवार आता है चाहे वोह रबीउ़ल अव्वल का महीना हो या रमज़ानुल मुबारक का महीना तमाम मुसलमान अपने घरों को सजाने के साथ साथ **अल्लाह** عزوجل के घर या'नी मसाजिद को भी सजाते हैं, इन्हें मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से रौशन कर के इन्हें आबाद करते हैं । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने भी अपने दौर में मसाजिद को आबाद करने के लिये इन्हें रौशन करने का खुसूसी एहतिमाम फ़रमाया और तमाम सह़ाबए किराम علیہم الرضوان ने इसे बहुत पसन्द फ़रमाया । मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के लिये इस फे़'ल पर खुसूसी दुआ़ भी फ़रमाई । चुनान्चे,

---

(1)......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۲۳۔

www.dawateislami.net

अल्लाह आप की क़ब्र रौशन व मुनव्वर फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ हमदानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) रमज़ानुल मुबारक की पहली रात बाहर निकले तो देखा कि मसाजिद पर क़िन्दीलें चमक रही हैं और लोग **किताबुल्लाह** की तिलावत कर रहे हैं। येह देख कर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

نَوَّرَ اللّٰهُ لَکَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ فِيْ قَبْرِکَ كَمَا نَوَّرْتَ مَسَاجِدَ اللّٰهِ بِالْقُرْآنِ

"या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की क़ब्र को वैसा ही मुनव्वर कर दे जैसा आप ने मसाजिद को क़ुरआन से मुनव्वर किया।"(1)

अल्लाह आप पर नूर की बारिश फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) रमज़ानुल मुबारक की रात को बाहर निकले तो आप ने मसाजिद से तिलावते क़ुरआन की आवाज़ सुनी तो आप ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ह़क़ में यूं दुआ़ की : نَوَّرَ اللّٰهُ عَلٰى عُمَرَ قَبْرَهُ كَمَا نَوَّرَ مَسَاجِدَنَا "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मज़ारे पूर अन्वार में उन पर नूर की बारिश फ़रमाए जिस त़रह़ उन्हों ने हमारी मसाजिद को मुनव्वर किया।"(2)

मसाजिद को रौशन करने के मुतअ़ल्लिक़ एक जामेअ़ फ़तवा

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा** ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से फ़तावा रज़विय्या में एक सुवाल पूछा गया कि : "लोगों का सत्ताईसवीं शब रमज़ान के मौक़अ़ पर मसाजिद को आरास्ता करना, रौशनियों का ख़ुसूसी एहतिमाम करना, मीलाद शरीफ़ की तक़रीबात के लिये मकानात को सजाना, फ़ानूस और फूल वग़ैरा लगाना, बुज़ुर्गाने दीन के सालाना उ़र्सों में ख़ानक़ाहों पर और आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर इस क़िस्म का बन्दो बस्त करना सिवाए माले वक़्फ़ के दुरुस्त है या ह़राम ?" तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......موسوعة ابن ابی الدنیا، فضائل شهر رمضان، ج ۱، ص ۳۶۹، الرقم: ۳۰۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی والثلاثون، ص ۴۲۔

www.dawateislami.net

मज़्कूरा ज़ेबो ज़ीनत शरअ़न जाइज़ है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है :

﴿قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْۤ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ﴾ (پ۸، الاعراف:۳۲) फ़रमा दीजिये कि इस ज़ीनत व ज़ेबाइश को किस ने ह़राम ठहरा दिया है जो उस ने अपने बन्दों के लिये ज़ाहिर फ़रमाई है।" इसी त़रह़ ज़रूरत और मस्लह़त के मुत़ाबिक़ रौशनी का इन्तिज़ाम करना भी जाइज़ है (मुख़्तलिफ़ ह़ालात के लिह़ाज़ से ज़रूरत बदलती रहती है) मसलन मकान की तंगी और कुशादगी, लोगों की क़िल्लतो कसरत, मनाज़िल की वह़दत व तअ़द्दुद वग़ैरा इन सूरतों में ज़रूरत और ह़ाजत में तब्दीली आ जाती है। तंग मन्ज़िल और थोड़े मज्मअ़ में दो तीन चराग़ बल्कि एक भी काफ़ी होता है। कुशादा और बड़े घर ज़ियादा लोगों और मुतअ़द्दिद मन्ज़िलों के लिये दस बीस बल्कि इन से भी ज़ियादा की ज़रूरत पड़ती है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) रमज़ान शरीफ़ में रात के वक़्त मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए तो मस्जिद को चराग़ों से मुनव्वर और जगमगाते हुवे देखा कि हर सम्त रौशनी फैल रही थी आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ब ज़रीअ़ए दुआ़ याद फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि "ऐ फ़रज़न्दे ख़त्ताब ! तुम ने हमारी मसाजिद को मुनव्वर व रौशन किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी क़ब्र को मुनव्वर फ़रमाए।" अलबत्ता रौशनी का बे फ़ाइदा और फ़ुज़ूल इस्ति'माल जैसा कि बा'ज़ लोग ख़त्मे क़ुरआन वाली रात या बुज़ुर्गों के उ़र्सों के मवाक़ेअ़ पर करते है सेंकड़ों चराग़ अ़जीबो ग़रीब वज़्अ़ व तरतीब के साथ ऊपर नीचे और बाहर बराबर त़रीक़ों से रखते हैं मह़ले नज़र है और इसराफ़ के ज़ुमरे में आता है चुनान्चे, फ़ुक़हाए किराम ने कुतुबे फ़िक़्ह में मसलन ग़मज़ुल उ़यून वग़ैरा में इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) की बिना पर ऐसा करने से मन्अ़ फ़रमाया है इस में कोई शक नहीं कि जहां इसराफ़ सादिक़ आएगा वहां परहेज़ ज़रूरी है। अल्लाह तआ़ला पाक, बरतर और ख़ूब जानने वाला है।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म का वज़ीफ़ा

बैतुल माल के मुआ़मले में आ़म आदमी की हैसिय्यत

बैतुल माल के मुआ़मले में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

(1)....फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 257 ता 259 बितसर्रुफ़।

www.dawateislami.net

की हैसिय्यत एक आ़म मुसलमान जैसी थी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना वज़ीफ़ा भी आ़म मुहाजिरीन सह़ाबा के बराबर मुक़र्रर कर रखा था।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म मुसलमानों के अमवाल के अमीन

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "मुसलमानों का माल मेरे पास ऐसे है जैसे किसी वारिस के पास यतीम का माल होता है, मैं बिला ज़रूरत इस से कुछ नहीं लेता, अगर ज़रूरत हो भी तो जाइज़ त़रीके़ से कुछ ह़ासिल कर लेता हूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "या अमीरल मोमिनीन ! वोह जाइज़ त़रीक़ा क्या है ?" फ़रमाया : "अ़रबी जानवर चारा दांतों से चबा कर खाता है, पूरे का पूरा मुंह भर कर निगल नहीं जाता।" (या'नी क़लील पर इक्तिफ़ा कर लेता हूं ज़ियादा ह़ासिल करने की ख़्वाहिश नहीं रखता।)[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म और बैतुल माल से क़र्ज़

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब कभी ह़ाजत होती तो आप बैतुल माल से क़र्ज़ भी ले लिया करते थे, बा'ज़ औक़ात तो ऐसा भी होता कि बैतुल माल के निगरान आप के पास क़र्ज़ की वापसी का मुत़ालबा ले कर आते मगर आप के पास अदाएगी के लिये कुछ न होता तो उस से मोहलत लेते, बा'ज़ औक़ात कुछ माल होता तो क़र्ज़ अदा कर देते। एक दिन आप मस्जिद में आ कर मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और इस बात की शिकायत की तो आप के लिये घी का एक डिब्बा भेज दिया गया। लेकिन आप ने लोगों से फ़रमाया : "अगर तुम लोग मुझे इस के इस्ति'माल की इजाज़त देते हो तो ठीक वरना येह मुझ पर ह़राम है।"[3]

बैतुल माल से फ़ारूके़ आ'ज़म के अख़राजात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने और अपने घरवालों के लिये ब क़दरे किफ़ायत ही ख़ुराक लिया करते थे, गर्मियों में एक हुल्ला लेते अगर वोह कहीं से फट जाता तो उसे

---

1 ......سمط النجوم العوالی، ذکر الخلفاء الاربعة، ذکر اسلامه، ج ۱، ص ۴۴۷، ریاض النضرة، ج ۱، ص ۴۱۳۔

2 ......ریاض النضرة، ج ۱، ص ۴۱۳، عیون الاخبار، کتاب السلطان، خیانات العمال، ج ۱، ص ۱۱۷ ملتقطا۔

3 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب التاسع والثلاثون، ص ۱۰۰۔

www.dawateislami.net

पैवन्द लगा लेते, जब तक उस से काम चलता चलाते और फिर उसे तब्दील कर लेते, हर साल पिछले साल से कम ही माल लेते। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप से इस मुआ़मले में बात की तो आप ने फ़रमाया : "मैं मुसलमानों के माल से अपने ख़र्चे के लिये माल लेता हूं और मुझे इतना ही माल किफ़ायत करता है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के यौमिय्या अख़राजात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इब्राहीम عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحِیْم अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि : كَانَ عُمَرُ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ يَسْتَنْفِقُ كُلَّ يَوْمٍ دِرْهَمَيْنِ لَهُ وَلِعَيَالِهِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने और अपने घरवालों पर यौमिय्या फ़क़त़ दो दिरहम ख़र्च किया करते थे।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़ज के अख़राजात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इब्राहीम عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحِیْم अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज के लिये जाते तो फ़क़त़ एक सौ अस्सी दिरहम ख़र्च करते।"(3)

हुक्मरानों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ए वक़्त होने के बा वुजूद बैतुल माल से कितने क़लील अख़राजात लिया करते थे, आप की आमदनी दिन ब दिन कम होती थी ज़ियादती का कोई तसव्वुर न था क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को मुसलमानों के अमवाल का अमीन समझते थे और इन के माल में बेजा तसर्रुफ़ को ख़ियानत समझते थे, यक़ीनन सीरते फ़ारूक़ी के इस मदनी पहलू में उन तमाम हुक्मरान व ज़िम्मेदारों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं जिन का तअ़ल्लुक़ रिआ़या के माली मुआ़मलात से है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मन्सब को मालो दौलत कमाने का ज़रीआ़ न बनाया मगर अफ़्सोस ! आज मन्सब व ओ़ह्दे को अपनी आमदनी बढ़ाने का आसान ज़रीआ़ तसव्वुर किया जाता

(1) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۲۔
(2) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۲۔
(3) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۲۔

www.dawateislami.net

है और अज़ाबाते आख़िरत को भूल कर ज़ियादा से ज़ियादा माल जम्अ़ करने के ग़ैर शरई तरीक़े अपनाए जाते हैं। हालांकि इधर इन्सान की आंखें बन्द हुई उधर माल का साथ ख़त्म !

कितनी परेशान कुन बात है कि इन्सान दुन्या से फूटी कोड़ी तक भी अपने साथ नहीं ले जा सकता मगर हिसाब उसे सारे माल का देना पड़ेगा। यक़ीनन येह बेवफ़ा दुन्या न पहले किसी की हुई न अब होगी, इस दुन्या के मालो अस्बाब के पीछे हम कितना ही दौड़ें येह पेट भरने वाला नहीं है जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का फ़रमाने इब्रत निशान है : "अगर इन्सान को सोने की दो वादियां मिल जाएं तो वोह तीसरी की तमन्ना करेगा, इन्सान का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है।"**[1]

मुझे मालो दौलत की आफ़त ने घेरा....बचा या इलाही बचा या इलाही
मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर......कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
न दे जाहो हश्मत न दौलत की कसरत....गदाए मदीना बना या इलाही
मुझे दोनों आलम की ख़ुशियां अ़ता हों....मिटा दे ज़माने के ग़म या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बा'दे ख़िलाफ़त फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़िज़ा

दौरे ख़िलाफ़त में रूखा सूखा खाना

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने ख़ुश्क रोटी और पुराना ज़ैतून खाने के लिये रखा था। इतने में ख़ादिम ने आ कर अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! बाहर हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन फ़रक़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हैं और अन्दर आने की इजाज़त तलब कर रहे हैं।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "उन्हें अन्दर बुला लाओ।" जैसे ही वोह अन्दर आए तो उन की नज़र आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने रखे हुवे खाने पर पड़ी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "उ़त्बा ! क़रीब आ जाओ और खाओ।" जब वोह खाना खाने लगे तो उन से ख़ुश्क रोटी चबाई न गई, वोह बे साख़्ता कहने लगे : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या आप के पास वोह खाना नहीं है जिसे हुव्वारी कहा जाता है ?" (अ़रबी में मेदे को **हुव्वारी** कहते हैं)

---

1 ......بخاری، کتاب الرقاق، باب ما یتقی من فتنۃ المال، ج ۴، ص ۲۲۸، حدیث: ۶۴۳۶۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अफ़्सोस है तुम पर ! जिस खाने की तुम बात कर रहे हो क्या वोह खाना सब मुसलमानों के पास है ?" अ़र्ज़ किया : "नहीं।" फ़रमाया : "ऐ उ़त्बा ! क्या तुम येह चाहते हो कि मैं अपनी ने'मतें दुन्या में ही ह़ासिल कर लूं ?"(1) (और आख़िरत में मेरे लिये कुछ न रहे।)

एक ही रात में इतना फ़र्क़

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मुल्के शाम में तशरीफ़ लाए तो आप के लिये ऐसा उ़म्दा खाना तय्यार किया गया जो इस से पहले आप ने कभी न देखा था। जब खाना आप की बारगाह में पेश किया गया तो उसे देख कर फ़रमाया : "येह खाना तो मेरे लिये बनाया गया है, लेकिन उन ग़रीब मुसलमानों के लिये कौन सा खाना तय्यार किया है जिन्हों ने जव की रोटी से पेट भरे बिग़ैर रात गुज़ार दी ?" हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! उन के लिये तो जन्नत है।" येह सुन कर आप आबदीदा हो गए और फ़रमाया : اِنْ كَانَ حَظُّنَا فِيْ هٰذَا وَيَذْهَبُ اُولٰٓئِكَ بِالْجَنَّةِ لَقَدْ بَاتُوْا بُوْنًا بَعِيْدًا "या'नी अगर इस खाने में हमारा हिस्सा है और वोह लोग अपने हिस्से में जन्नत ले जाएंगे तो यक़ीनन उन लोगों ने बहुत बड़े फ़र्क़ के साथ रात गुज़ार दी।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ खाने

अहले बसरा का एक वफ़्द हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सरबराही में अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। आप के सामने रोज़ाना खाने के वक़्त सूखी रोटी लाई जाती, जिसे कभी घी के साथ कभी ज़ैतून के साथ और कभी दूध के साथ तनावुल फ़रमाते। कभी ख़ुश्क गोश्त के टुकड़ों को पानी में उबाल कर लाया जाता, कभी क़लील मिक़्दार में ताज़ा गोश्त भी लाया जाता जिसे आप तनावुल फ़रमाते। एक दिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वफ़्द से इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक मैं तुम्हारे उन अन्दाज़ों को भी देख रहा हूं जो तुम मेरे खाने के बारे में लगा रहे हो और उस के बारे में जो तुम्हारी ना पसन्दीदगी है उसे भी देख रहा हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं चाहूं तो तुम लोगों से बेहतर खाना खाऊं और ऐश करूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सीने और कोहान के गोश्त, भुने हुवे गोश्त और गोश्त के

1 ......اسد الغابۃ، عمر بن خطاب، ج۴، ص ۱۶۸۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الخمسون، ص ۱۵۴۔

www.dawateislami.net

मसालेहों से भी नावाक़िफ़ नहीं हूं, लेकिन मैं ने सुना है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ने'मत व आसाइश पाने वाली क़ौम को आ़र दिलाई है। चुनान्चे, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

﴾اَذۡهَبۡتُمۡ طَیِّبٰتِکُمۡ فِیۡ حَیَاتِکُمُ الدُّنۡیَا وَ اسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا ۚ﴿ (پ۲۶، الاحقاف:۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथियों से फ़रमाया : "अगर तुम लोग अमीरुल मोमिनीन से अपने लिये बात करना चाहो तो कर लो कि वोह तुम्हारे लिये बैतुल माल से कुछ मुक़र्रर कर दें।" जब उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन से बात की तो आप ने फ़रमाया : "ऐ सरदारों के गुरौह ! क्या तुम लोग येह नहीं चाहते कि जो कुछ मैं ने अपने लिये इख़्तियार किया है तुम भी वोही इख़्तियार करो।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि : "हुज़ूर ! मदीनए मुनव्वरा में गुज़ारा करना बहुत मुश्किल है, ख़ुसूसन आप का खाना, इस के ज़रीए न तो गुज़ारा किया जा सकता है और न ही इसे खाया जा सकता है, हम तो ऐसी ज़मीन के रहने वाले हैं जहां बहुत अच्छा गुज़ारा किया जा सकता है हमारा अमीर हमें ऐसे खाने खिलाता है जो हम खा सकते हैं।" चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन लोगों के लिये बैतुल माल से मा'क़ूल वज़ीफ़ा वग़ैरा मुक़र्रर कर दिया।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की सख़्त ग़िज़ा और फ़िक्रे आख़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुश्क शामी रोटी मीठे दूध के साथ तनावुल फ़रमा रहे थे। मैं ने अ़र्ज़ किया : "या अमीरल मोमिनीन ! अगर आप कहें तो मैं आप के लिये नर्म ग़िज़ा ले आऊं ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने फ़रक़द ! क्या तुम मुझ से ज़ियादा किसी को इस से उ़म्दा ग़िज़ा ह़ासिल करने पर क़ादिर समझते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "नहीं।" फ़रमाया : "क्या तुम ने क़ुरआने मजीद की येह आयते मुबारका नहीं सुनी जिस में रब عَزَّوَجَلَّ ने बा'ज़ क़ौमों को आ़र दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया है :

﴾اَذۡهَبۡتُمۡ طَیِّبٰتِکُمۡ فِیۡ حَیَاتِکُمُ الدُّنۡیَا وَ اسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا ۚ فَالۡیَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ الۡهُوۡنِ﴿ (پ۲۶، الاحقاف:۲۰)

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۲۹۸۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।"(1)

उ़म्दा गिज़ा से परहेज़ की वज्ह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम से बेहतर लिबास पहन सकता हूं, अच्छा खाना खा सकता हूं और आसाइश से भरपूर ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं सीने के गोश्त, घी, आग पर भुने हुवे गोश्त, चटनी और चपातियों से नावाक़िफ़ नहीं हूं लेकिन (इस्ति'माल इस लिये नहीं करता कि) मैं ने सुना है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ने'मत व आसाइश पाने वाली क़ौम को आ़र दिलाई है। जैसा कि इरशादे ख़ुदावन्दी है :

﴿اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ﴾ (پ۲۶، الاحقاف: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।"(2)

आख़िरत के अज्र पर नज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम भी ज़िन्दगी की लज़्ज़ात चाहते हैं कि हम हुक्म दें कि हमारे लिये छोटी बकरी भूनी जाए और मेदे की रोटी और मश्कीज़े में नबीज़ बनाई जाए यहां तक कि जब गोश्त चकोर (या'नी तीतर की मिस्ल पहाड़ी परन्दे के गोश्त) की त़रह़ (नर्म) हो जाए तो उसे खाएं और उस से पियें लेकिन हम येह चाहते हैं कि पाकीज़ा चीज़ों को आख़िरत के लिये बचा लें क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

﴿اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ﴾ (پ۲۶، الاحقاف: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।"(3)

---

1 ......رياض النضرة، ج ۱، ص ۳۶۵۔

2 ......الزهد لابن مبارك، باب ماجاء في الفقر، ص ۲۰۴، الرقم: ۵۷۹۔

3 ......حلية الاولياء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۸۵۔

www.dawateislami.net

गोश्त में भी नशा है

मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर खजूर खाया करते थे, गोश्त तनावुल नहीं फ़रमाते थे। और फ़रमाते कि "गोश्त की कसरत से बचो कि शराब की त़रह़ गोश्त में भी एक नशा है।"(1)

कच्चे प्याज़ और लह्सन की ना पसन्दीदगी

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कच्चा बदबूदार लह्सन और प्याज़ ना पसन्द फ़रमाते थे। चुनान्चे, एक बार आप ने अपने ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम उन दोनों दरख़्तों में से खाते हो जिन को मैं बुरा समझता हूं या'नी प्याज़ और लह्सन। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप जब किसी शख़्स से इन दोनों में से किसी की बू मह़सूस फ़रमाते तो आप के हुक्म से उस का हाथ पकड़ कर बक़ीअ़ की त़रफ़ निकाल दिया जाता था लिहाज़ा कोई शख़्स इन दोनों को खाना चाहे तो इन को पका कर इन की बू को ख़त्म कर ले।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म का एक वक़्त में एक ही खाना

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक बार मेरे वालिदे माजिद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे घर तशरीफ़ लाए। मैं ने ठन्डा शोरबा ज़ैतून के साथ मिला कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पेश किया। आप ने फ़रमाया : "एक बरतन में दो सालन ?" ख़ुदा की क़सम ! मैं इसे कभी नहीं चखूंगा।"(3)

ख़लीफ़ए वक़्त के ख़ानदान की सादा ग़िज़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम दस्तर ख़्वान पर बैठे थे। मैं ने मजलिस के दरमियान से आप के लिये जगह बना दी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तशरीफ़ फ़रमा होने के बा'द بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ पढ़ी और एक लुक़्मा लिया। फिर दूसरा लिया और साथ ही फ़रमाया : "खाने

1 ......مؤطا امام مالک، کتاب صفۃ النبی، باب ماجاء فی اکل اللحم، ج ۲، ص ۴۲۶، حدیث: ۱۷۸۹۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۶۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۳۔

www.dawateislami.net

में गोश्त की चिकनाहट के इलावा भी कोई और चिकनाहट मा'लूम होती है।'' सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ''अमीरुल मोमिनीन ! आज मैं बाज़ार गया ताकि अच्छा गोश्त ख़रीद सकूं लेकिन वोह बहुत मेहंगा था लिहाज़ा मैं ने पतला गोश्त ख़रीदा और इस के साथ एक दिरहम का घी भी ख़रीद लिया क्यूंकि मैं येह चाहता था कि घर के हर फ़र्द के ह़िस्से में कुछ न कुछ तो आए।'' येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''हम ने जब भी हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में खाना खाया तो एक ही चीज़ खाई अगर कोई दूसरी चीज़ होती तो सदक़ा कर दी जाती।'' अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अब तो आप तनावुल फ़रमाइये ! मेरे पास भी येह दोनों चीज़ें कभी इकठ्ठी इस्ति'माल नहीं हुईं, फ़क़त़ आज ही ऐसा हुवा है।'' सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं इस खाने को हाथ भी नहीं लगाऊंगा।''(1)

कभी छना हुवा आटा न खाया

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे छना आटा खाते हुवे देखा है तब से मैं ने भी कभी छना हुवा आटा नहीं खाया।''(2)

एक ही खजूर से भूक मिटा ली

हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन मुह़म्मद उ़मरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शदीद भूक लगी तो आप घर तशरीफ़ लाए और ज़ौजा से फ़रमाया : ''क्या कुछ खाने के लिये है ?'' इन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''चारपाई के नीचे देख लें शायद कुछ मिल जाए।'' आप ने चारपाई के नीचे से एक थाल निकाला तो उस में एक ही खजूर मौजूद थी, आप ने उसे खा कर ऊपर से पानी पी लिया, फिर अपने पेट पर हाथ फेर कर इरशाद फ़रमाया : وَیْحٌ لِّمَنْ اَدْخَلَہٗ بَطْنُہُ النَّار या'नी बरबादी है उस के लिये जिसे उस के पेट ने जहन्नम में दाख़िल कर दिया।(3)

---

1 ......ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الجمع بین السمن واللحم، ج۴، ص ۵۳، حدیث: ۳۳۶۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر طعام رسول اللہ ۔۔۔ الخ، ج۱، ص ۳۰۱۔

3 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السادس والاربعون، ص ۱۳۵۔

www.dawateislami.net

बेहतरीन खाना और नेकियों में कमी का अन्देशा

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अबुल आ़स رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के खाने के वक़्त उन के पास हाज़िर हुवा करते थे लेकिन आप के साथ खाना नहीं खाते थे। एक बार सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछ लिया कि "तुम हमारे साथ खाना क्यूं नहीं खाते हो ?" अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप का खाना सादा और बहुत सख़्त होता है, जब कि मैं नर्म ग़िज़ा खाने में रग़बत रखता हूं।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के खाने को चखा और फ़रमाया : "क्या तुम मुझे इस बात से आ़जिज़ समझते हो कि मैं एक बकरी ज़ब्ह़ करने का हुक्म दूं, जिस के बाल उतारे जाएं, फिर आटा लाने का कहूं जिसे छान लिया जाए, फिर उस से नर्म रोटी बनाई जाए, फिर एक साअ़ किशमिश लाने का हुक्म दूं जिसे चरबी में डाला जाए, फिर उस पर पानी डाला जाए जिस से वोह ऐसी सुर्ख़ हो जाए जैसे हिरन का ख़ून होता है।" अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मुझे मा'लूम है कि आप येह सब कुछ कर सकते हैं।" फ़रमाया : "उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर मुझे अपनी नेकियां कम होने का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर तुम्हारे जैसी आराम देह ज़िन्दगी बसर करता।"(1)

क़ियामत में हिसाब कैसे देंगे ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ए वक़्त होने के बा वुजूद कितनी सादा और पाकीज़ा ग़िज़ा तनावुल फ़रमाया करते थे, जहां सादा ग़िज़ा खाने के दुन्यवी फ़वाइद हैं वहीं इस का एक उख़रवी फ़ाइदा येह भी है कि कल बरोज़े क़ियामत इस के हिसाब में आसानी होगी। हज़रते सय्यिदुना हा़तिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم को एक मालदार शख़्स ने ब इसरार दा'वते त़आ़म दी, फ़रमाया : "मेरी येह तीन शर्तें मानो तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आऊंगा : (1) मैं जहां चाहूंगा बैठूंगा। (2) जो चाहूंगा खाऊंगा। (3) जो कहूंगा वोह तुम्हें करना पड़ेगा।" उस मालदार ने वोह तीनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। वलिय्युल्लाह की ज़ियारत के लिये बहुत सारे लोग जम्अ़ हो गए, पुर तकल्लुफ़ त़आ़म का एहतिमाम था। वक़्ते मुक़र्ररा पर हज़रते सय्यिदुना हा़तिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم भी तशरीफ़ ले आए और आते ही जहां लोगों के जूते पड़े थे वहीं तशरीफ़ फ़रमा हो गए। चूंकि शर्त़ थी : "जहां चाहूंगा बैठूंगा।" लिहाज़ा मेज़बान ने कुछ न कहा। जब खाना शुरूअ़

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۲۔

www.dawateislami.net

हुवा, लोगों ने मुर्ग़ मुसल्लम पर हाथ साफ़ करने शुरूअ़ कर दिये लेकिन वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी झोली में हाथ डाल कर सूखी रोटी का टुकड़ा निकाला और तनावुल फ़रमाने लगे। जब सिलसिलए त़आ़म का इख़्तिताम हुवा आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मेज़बान से फ़रमाया : "चुल्हा लाओ और उस पर तवा रखो।" हुक्म की ता'मील हुई, जब आग की तपिश से तवा सुर्ख़ अंगारा बन गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस पर नंगे पाउं खड़े हो गए ! लोगों की आंखें ह़ैरत के मारे फटी की फटी रह गईं ! आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं ने आज के खाने में सूखी रोटी खाई है।" येह फ़रमा कर तवे से नीचे उतर आए और ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : "अब आप ह़ज़रात भी बारी बारी इस तवे पर खड़े हो कर जो कुछ अभी खाया है उस का ह़िसाब दीजिये।" येह सुन कर लोगों की चीख़ें निकल गईं, बयक ज़बान बोल उठे : "या सय्यिदी ! आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तो वलिय्युल्लाह हैं और येह आप की करामत है, कहां येह गर्म गर्म तवा और कहां हमारे नाज़ुक क़दम ! हम तो गुनाहगार दुन्यादार लोग हैं।" आप ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! उस वक़्त को याद कीजिये जब सूरज सिर्फ़ सवा मील दूर होगा, आज सूरज हम से करोड़ों मील दूर है और इस का पिछला रुख़ हमारी त़रफ़ है जब कि उस वक़्त सूरज का अगला रुख़ हमारी जानिब होगा, ज़मीन भी आग की होगी, उस दहकती हुई ज़मीन पर ग़ौर फ़रमाइये और इस गर्म तवे के बारे में सोचिये ! येह तवा जो कि दुन्यवी आग में गर्म हुवा है इस की तपिश ख़ुदा की क़सम ! मैदाने क़ियामत की आग की ज़मीन के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं, उस आग की ज़मीन पर खड़ा होना पड़ेगा, क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ یَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِیْمِ﴾ (پ۳۰، التکاثر:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।" जब इस दुन्यवी गर्म तवे पर खड़े हो कर सिर्फ़ एक वक़्त के खाने का ह़िसाब नहीं दे सकते तो कल बरोज़े क़ियामत आप ह़ज़रात के अन्दर ऐसी कौन सी करामत पैदा हो जाएगी कि दहकती हुई ज़मीन पर खड़े हो कर ज़िन्दगी भर की ने'मतों का ह़िसाब चुकाएंगे !" येह रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुन कर लोग दहाड़ें मार मार कर रोने और गुनाहों से तौबा तौबा पुकारने लगे।[1]

या इलाही ! जब ह़िसाबे ख़न्दए बे जा रुलाए
चश्मे गिर्याने शफ़ीए़ मुर्तजा का साथ हो
या इलाही ! जब बहें आंखें ह़िसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ़ का साथ हो

1 ......تذکرۃ الاولیاء، ج ۱، ص ۲۲۲۔

www.dawateislami.net

महशर की हौलनाक मन्ज़र कशी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वलिय्ये कामिल हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने किस क़दर अछूते अन्दाज़ में हिसाबे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ ''नेकी की दा'वत'' इनायत फ़रमाई, यक़ीनन वोही शख़्स कामयाब व कामरान है जो दुन्या में रहते हुवे आख़िरत की तय्यारी करे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बसा औक़ात आग जला कर अपना हाथ उस के क़रीब करते और फिर अपने आप को यूं मुख़ातब करते : اِبْنَ الْخَطَّابِ هَلْ لَّکَ عَلٰی هٰذَا صَبْرٌ ''या'नी ऐ ख़त्ताब के बेटे ! क्या तू इस आग की तपिश पर सब्र कर सकता है ?''(1)

वाक़ेई हश्रो नश्र के मुआ़मलात इन्तिहाई तश्वीश नाक हैं, इन का नक़्शा खींचते हुवे **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं : ''(इन्सान) मरने के बा'द ऐसा बदबूदार मुर्दा हो जाएगा कि सब उस को देख कर अपनी नाक बन्द करेंगे और वोह क़ब्र में कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनेगा और फिर रफ़्ता रफ़्ता ख़ाक हो जाएगा जो कि बिल्कुल हक़ीर व ज़लील चीज़ है अलबत्ता मरने के बा'द वोह जानवरों की त़रह़ ख़ाक ही रहता तो ग़नीमत था मगर अफ़्सोस कि ऐसा न होगा और येह ख़ाक रहने वाली दौलत उसे मुयस्सर न होगी बल्कि क़ियामत में उस को क़ब्र से उठाया जाएगा, हैबत व दहशत के मक़ाम पर रखा जाएगा, उस वक़्त वोह आस्मानों को देखेगा कि फटे हुवे हैं, सितारे गिर पड़े हैं, चांद व सूरज बे नूर हो चुके हैं और पहाड़ रूई के गालों (या'नी रूई के गोलों) की त़रह़ परागन्दा (پَرا۔گَنده या'नी मुन्तशिर) हैं, ज़मीन बदली हुई है, दोज़ख़ के फ़िरिश्ते कमन्दें (کَ۔مَن۔دیں या'नी फंदे) फेंक रहे हैं, दोज़ख़ गरज रहा है, फ़िरिश्ते हर एक के हाथ में आ'माल नामा दे रहे हैं, वोह तमाम उ़म्र में जो बुरे काम किये होंगे उन को देखता होगा, हर एक अपने अपने गुनाहों को पढ़ कर परेशान हो रहा होगा, उस से कहा जाएगा कि आ और जवाब दे कि तू ने ऐसा क्यूं किया ? वैसा क्यूं कहा ? क्यूं बैठा और क्यूं उठा ? क्यूं देखा और क्यूं सोचा ? अगर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जवाब न दे सकेगा तो उस को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा ! उस वक़्त कहेगा : ''काश ! मैं ख़ूक (सूअर) या सग (कुत्ता) पैदा हुवा होता तो ख़ाक हो

---

(1) ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الخمسون، ص ۱۵۴۔

www.dawateislami.net

जाता क्यूंकि वोह (जानवर) इस अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ और आज़ाद हैं। पस जो शख़्स (बे अ़मल और रुस्वा होने की सूरत में) सूअर और कुत्ते से बदतर हो उस को तकब्बुर और फ़ख़्र करना किस त़रह़ ज़ेबा है !"(1)

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम — तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा — मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही
मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर — कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली — मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही
गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं — पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही
मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो — कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म का सादा व मुबारक लिबास

ख़लीफ़ए वक़्त और क़ौम की ख़िदमत

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन होते हुवे भी सिर्फ़ एक जुब्बा पहना करते थे और इस में भी जगह जगह पैवन्द लगे हुवे थे, कहीं कहीं इस में चमड़ा भी लगा होता था। आप कन्धे पर दुर्रा लिये बाज़ारों में चक्कर लगाते जो लोगों को सीधा रखने के लिये था नीज़ आप खजूरों की गुठलियां वग़ैरा उठा कर लोगों के घरों में फैंक देते ताकि वोह इसे काम में ले आएं।"(2)

खजूर की गुठलियों के फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी रिआ़या को ब ज़ाहिर कार आमद नज़र न आने वाली चीज़ या'नी खजूर की गुठलियों को भी काम में ले आने का मदनी ज़ेहन दिया करते थे। खजूर खाना सुन्नत है, जिस त़रह़ खजूर के कसीर फ़वाइद हैं उसी त़रह़ उस की गुठली के भी बहुत फ़वाइद हैं। चन्द फ़वाइद पेशे ख़िदमत हैं :

1 ......کیمیائے سعادت، ج۲، ص۷۱۷۔
2 ......المجالسة وجواهر العلم، ج۱، ص۱۲۱، الرقم: ۲۱۵۔

۞......खजूर की गुठलियों को आग में जला कर इस का मन्जन बना लीजिये। येह दांतों को चमकदार और मुंह की बदबू को दूर करता है।

۞......खजूर की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का ख़ून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है।

۞......खजूर की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेना बवासीर के मस्सों को ख़ुश्क करता है।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म का "शाही लिबास"

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "एक बार मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दोनों कन्धों के दरमियान क़मीस पर चार पैवन्द देखे।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म के तहबन्द में बारह पैवन्द

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में तहबन्द बांधा हुवा था जिस में बारह पैवन्द लगे हुवे थे।"[3]

क़मीस के सबब ताख़ीर पर मा'ज़िरत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू जमीला अन्सारी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाजे़ जुमुआ़ के लिये ताख़ीर हो गई, जब आप तशरीफ़ लाए तो लोगों से मा'ज़िरत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **اِنَّمَا حَبَسَنِي قَمِيصِي هَذَا لَمْ يَكُنْ لِي قَمِيصٌ غَيْرُهُ** या'नी इस क़मीस की वज्ह से मैं लेट हो गया क्यूंकि इस के इ़लावा मेरे पास कोई क़मीस नहीं है।[4]

1.....फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द, 1 स. 1022

2......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۴۷، حدیث:۲۔

3......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۵۹۔

4......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۵۱۔

مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السادس والاربعون، ص۱۳۲۔

www.dawateislami.net

पुरानी क़मीस दोबारा पहन ली

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (मुल्के शाम के सफ़र में) ऐला के मक़ाम पर पहुंचे तो आप के साथ कसीर ता'दाद में मुहाजिरीन व अन्सार अस्ह़ाब थे। आप ने जो क़मीस पहनी हुई थी त़वील सफ़र के सबब पीछे से फट गई थी, लिहाज़ा आप ने वहां के ह़ाकिम को अपनी क़मीस दे दी ताकि वोह उसे पैवन्द लगा दे। ह़ाकिम ने पैवन्द लगा के उसे धुलवा दिया और साथ ही उस जैसी एक नई क़मीस भी बनवा कर आप की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़्फ़ा पेश कर दी। लेकिन आप ने नई क़मीस न ली बल्कि अपनी वोही पैवन्द वाली पुरानी क़मीस ले कर पहन ली और फ़रमाया : **هٰذَا اَنْشَفُهُمَا لِلْعَرَقِ** "या'नी मेरी येह क़मीस तुम्हारी क़मीस के मुक़ाबले में ज़ियादा पसीना चूसने वाली है।"(1)

अ़रबो अ़जम के ख़लीफ़ा का लिबास

मरवी है कि एक बार पचास के क़रीब मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मस्जिदे नबवी में जम्अ़ हुवे और इन्हों ने आपस में मश्वरा किया कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुल्यए मुबारका के बारे में क्या किया जाए ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के हाथ पर क़ैसरो किसरा की हुकूमतें फ़त्ह़ कर दी हैं, मशरिक़ो मग़रिब को आप के लिये खोल दिया है नीज़ अ़रबो अ़जम के वुफ़ूद आप की बारगाह में ह़ाज़िर होते हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बारह पैवन्द वाला पुराना जुब्बा देखते हैं तो अच्छा तअस्सुर नहीं पड़ता। लिहाज़ा अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में अ़र्ज़ किया जाए कि हुज़ूर आप इस जुब्बे की जगह कोई और लिबास ज़ेबे तन फ़रमाएं जिस से आप की हैबत में इज़ाफ़ा हो, नीज़ सुब्ह़ो शाम आप के पास उ़म्दा खानों की भी तरकीब हो जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्ह़ाब खाया करें।" बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जलाल और हैबत के सबब सब ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में इस अ़र्ज़ को पेश करने के लिये हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा जाए क्यूंकि वोह आप के सुसर हैं। लेकिन जब मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस बात का ज़िक्र किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साफ़ मन्अ़ फ़रमा दिया कि मैं येह काम नहीं कर सकता। अलबत्ता आप लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात की बारगाह में अ़र्ज़ करें क्यूंकि वोह उम्महातुल मोमिनीन हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बात करने की जुरअत रखती हैं। हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص ۴۸۹۔

www.dawateislami.net

हैं कि लोग उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और इन दोनों की बारगाह में येही अ़र्ज़ पेश की। उ़मूमन ऐसा होता था कि हर मस्अले में इन दोनों की राए एक ही होती थी लेकिन इस मुआ़मले में मुख़्तलिफ़ हो गई। वोह इस त़रह़ कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''मैं अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में येह अ़र्ज़ कर दूंगी।'' लेकिन उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ''मेरा ख़याल है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस बात को हरगिज़ क़बूल नहीं फ़रमाएंगे।''

चुनान्चे, दोनों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दोनों को क़रीब बिठाया तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا यूं गोया हुईं : ''क्या आप मुझे बात करने की इजाज़त देंगे ?'' फ़रमाया : ''ऐ मोमिनों की मां ! कहिये जो बात कहनी है।'' तो सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : ''बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रब की जन्नत व रिज़्वान की त़रफ़ इस ह़ाल में तशरीफ़ ले गए कि न आप ने कभी दुन्या की ख़्वाहिश की, न दुन्या ने आप की। इसी त़रीके़ पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ज़िन्दगी गुज़ारी। अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ पर क़ैसरो किसरा की हुकूमतें और ख़ज़ाने खोल दिये हैं। मशरिक़ो मग़रिब से इन के अमवाल आप के हां पहुंचा दिये हैं और हमारी दुआ़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़ीद फ़ुतूह़ात अ़त़ा फ़रमाए। अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह हैसिय्यत हो गई है कि आप की बारगाह में अ़रबो अ़जम के मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद का हर वक़्त आना जाना लगा रहता है लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ाहिरी ह़ालत येह है कि आप के बदन पर बारह पैवन्द वाला जुब्बा होता है। अगर आप इस की जगह कोई और कपड़ा पहनें जिस से आप का वक़ार बढ़े, सुब्ह़ो शाम खाने के त़बाक़ आया करें जिस से ह़ाज़िरे ख़िदमत मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबा तनावुल करें तो कितना अच्छा हो।''

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। फिर यूं गोया हुवे : ''ऐ उम्मुल मोमिनीन ! क्या आप जानती हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पन्दरह या पांच या तीन दिन मुसलसल सैर हो कर खाना खाया ? या किसी दिन घर में सुब्ह़ो शाम दो वक़्त का खाना जम्अ़ किया हो ?'' अ़र्ज़ किया : ''नहीं।'' फ़रमाया : मैं आप को क़सम देता हूं आप बताएं क्या आप को मा'लूम है कि ''हु़ज़ूर नबिय्ये करीम,

www.dawateislami.net

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी ज़मीन से बालिश्त भर ऊंचा खाने का मेज़ लगवाया हो ? आप तो ज़मीन पर खाने का बरतन रखवा लेते ।'' अ़र्ज़ किया : ''जी हां ! ऐसा ही था ।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों उम्महातुल मोमिनीन से फ़रमाया : ''आप दोनों उम्महातुल मोमिनीन और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाज हैं, आ़म लोगों पर आप का ह़क़ कम और मुझ पर ज़ियादा है । मगर आप दोनों मुझे दुन्या की रग़बत दिलाने आई हैं ह़ालांकि मेरे इ़ल्म में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा सूफ़ का जुब्बा पहना जिस की सख़्ती से आप का जिस्मे नाज़नीन बसा औक़ात ज़ख़्मी हो गया । क्या आप दोनों के इ़ल्म में भी येह बात है ?'' अ़र्ज़ किया : ''जी हां ! है ।'' फ़रमाया : ''क्या आप जानती हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने चोग़े को दोहरा किये बिग़ैर बिछा कर उस पर सो जाते थे ? ऐ आ़इशा ! आप के घर में जो दिन को एक चटाई और रात को बिस्तर बिछाया जाता था जिस में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्तिराह़त फ़रमाया करते वोह इतना खुरदरा होता था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अक़्दस पर उस के निशानात बन जाते थे । ऐ ह़फ़्सा ! तुम ही ने मुझे येह बताया था कि एक बार मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिस्तर दोहरा कर के बिछा दिया जो आप को बड़ा नर्म मह़सूस हुवा और जब आप उस पर आराम फ़रमा हुवे तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अज़ान ही से बेदार हुवे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ ह़फ़्सा ! येह तुम ने क्या किया ? दोहरा बिस्तर बिछा दिया ? जिस के सबब मुझे सुब्ह़ तक नींद ने लिये रखा, मेरा दुन्या से और दुन्या का मुझ से क्या तअ़ल्लुक़ ? तुम मुझे नर्म बिस्तरों में मश्ग़ूल रखना चाहती हो ?'' इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ऐ ह़फ़्सा क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के सबब से आप के अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्श दिये थे ? इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ारी कि रातों को जागते, रुकूअ़ व सुजूद फ़रमाते, दिन रात ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ गिर्या व ज़ारी फ़रमाते यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को अपनी रह़मत व रिज़्वान की त़रफ़ बुला लिया ।'' फिर फ़रमाया : ''उ़मर ने भी न कभी उ़म्दा खाना खाया है और न नर्म कपड़ा पहना है और अपने दोनों दोस्तों के त़रीक़ए ह़यात पर चलते हुवे न कभी दो त़रह़ का सालन एक साथ खाया है, सिर्फ़ पानी और ज़ैतून एक साथ रखे हैं और एक माह में एक बार से बढ़ कर कभी गोश्त नहीं खाया ।''

www.dawateislami.net

बहर हाल तमाम लोग बाहर आ गए, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी इन बातों का इ़ल्म हो गया और विसाल तक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येही मा'मूल रहा।(1)

अच्छा लिबास पहनें, लेकिन.....!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा के इस मुबारक गोशे में नसीह़तों के कई मदनी फूल हैं, अगर्चे अच्छा लिबास पहनने में कोई ह़रज नहीं बल्कि अच्छी निय्यतों के साथ कसीर अज्रो सवाब की उम्मीद है, लेकिन ऐसा लिबास पहनने से बचना निहायत ज़रूरी है जिसे पहन कर गुरूर व तकब्बुर में मुब्तला होने का अन्देशा हो, जिसे पहन कर दिल में अपनी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की ख़्वाहिश पैदा हो कि मेरे लिबास को देख कर लोग मेरी इ़ज़्ज़त करें। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "खुरदरा और तंग लिबास पहना करो ताकि इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई और फ़ख़्र को तुम में कोई जगह न मिले।"(2)

अदना लिबास ईमान की अ़लामत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "अदना दरजे का लिबास पहनना ईमान में से है।"(3) (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ करते हुवे आ'ला लिबास तर्क करना और अदना लिबास को तरजीह़ देना ईमान की अ़लामत है।)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस का मत़लब है कि मा'मूली लिबास, फटे पुराने कपड़े से शर्म व आ़र न होना कभी पहन भी लेना मोमिने मुत्तक़ी की अ़लामत है, हमेशा आ'ला दरजे के लिबास पहनने का आ़दी बन जाना कि मा'मूली लिबास पहनते शर्म आए येह त़रीक़ा मुतकब्बिरीन का है, यहां ईमान से मुराद कमाले ईमान है।"(4)

फ़ारूक़े आ'ज़म का सफ़ेद व जदीद लिबास

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बेकसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص ۲۹۳۔

2 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، التواضع، الجزء: ۳، ج۲، ص ۴۹، حدیث: ۵۷۲۸۔

3 ......ابوداود، کتاب الترجل، باب النھی عن ۔۔۔ الخ، ج۴، ص ۱۰۲، حدیث: ۴۱۶۱ ملتقطا۔

4 ....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 109।

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सफ़ेद रंग का लिबास देखा तो इरशाद फ़रमाया : ''ऐ उ़मर ! तुम ने नई क़मीस पहनी है या धुली हुई ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''नई ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''कपड़े पहनो तो जदीद (नए) ले कर और ज़िन्दा रहो तो ह़मीद (क़ाबिले ता'रीफ़) बन कर और वफ़ात पाओ तो शहीद बन कर ।''(1)

शलवार नाफ़ के ऊपर बांधते

ह़ज़रते सय्यिदुना हिज़ाम बिन हिशाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद फ़रमाते हैं कि ''मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप शलवार नाफ़ के ऊपर बांधते थे ।''(2)

टख़्नों से नीचे शलवार काट दी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़रशा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक शख़्स की शलवार टख़्नों से नीचे बढ़ी हुई थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस्तरा मंगवाया और उस की शलवार को ऊपर उठा कर जितनी टख़्नों से नीचे थी उसे काट दिया ।(3)

फ़ारूक़े आ'ज़म का इ़मामा शरीफ़

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ई़द के दिन देखा कि आप ने इ़मामा बांधा हुवा था और उस का शिम्ला अपनी पीठ के पीछे लटकाया हुवा था ।''(4)

(2) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए तो आप ने इ़मामा शरीफ़, इज़ार और मोज़े पहने हुवे थे ।(5)

(3) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : اَلْعَمَائِمُ تِیْجَانُ الْعَرَب या'नी इ़मामे अ़रबों के ताज हैं ।''(6)

---

1 ......صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابۃ۔۔۔الخ، ذکر دعاء المصطفی۔۔۔الخ، ج۹، ص۲۲، حدیث:۶۸۵۸۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۵۲۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب اللباس والزینۃ، موضع الازار۔۔۔الخ، ج۶، ص۲۹، حدیث:۱۳۔

4 ......شعب الایمان، باب فی الملابس، فصل فی العمائم، ج۵، ص۱۷۴، حدیث:۶۲۵۵۔

5 ......المنھاج فی شعب الایمان، الحادی والسبعون، باب فی الزھد، ج۳، ص۳۸۷۔

6 ......البیان والتبیین، باب من کلام المحذوف، ج۲، ص۲۸۷۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म की टोपी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इमामा शरीफ़ के इलावा बा'ज़ औक़ात फ़क़त़ टोपी भी पहना करते थे।(1)

औ़रतों की त़रह़ बनाव सिंगार की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बिज़ातिही बहुत नफ़ीस त़बीअ़त के मालिक थे, साफ़ सुथरा रहना पसन्द फ़रमाते थे लेकिन हर वक़्त औ़रतों की त़रह़ बनाव सिंगार को ना पसन्द फ़रमाते थे, इसी त़रह़ रोज़ाना सुरमा लगाने और औ़रतों की त़रह़ चेहरे के बाल बिल्कुल साफ़ करने को ना पसन्द फ़रमाते।''(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की आजिज़ी

फ़ारूक़े आ'ज़म ने एक शख़्स से मुआ़फ़ी मांगी

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स के बारे में फ़रमाया : اِنِّیْ لَاُبْغِضُ فُلَانًا या'नी मुझे फ़ुलां शख़्स से नफ़रत है। येह बात किसी ने उस शख़्स को भी बता दी। उस के बा'द दोबारा कई लोगों ने जब उस से येह बात ज़िक्र की तो वोह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : ''हुज़ूर ! येह इरशाद फ़रमाएं कि मैं ने इस्लाम में कोई फूट डाली है ?'' फ़रमाया : ''नहीं।'' अ़र्ज़ किया : ''क्या मैं ने कोई जुर्म किया है ?'' फ़रमाया : ''नहीं।'' अ़र्ज़ किया : ''मैं ने किसी बिदअ़त (सय्यिआ) का इरतिकाब किया है ?'' फ़रमाया : ''नहीं।'' अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ''जब मैं ने इन तमाम नाजाइज़ कामों में से कोई नहीं किया तो आप मुझे क्यूं ना पसन्द करते हैं ? ह़ालांकि कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا۠(۵۸)﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।''

1 ......ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل الشهداء ۔۔۔الخ، ج۳، ص۲۴۱، حدیث: ۱۶۵۰ ملتقطا۔

2 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، باب الثانی فی الاخلاق المذمومة، الجزء: ۳، ج۲، ص۳۲۱، حدیث: ۸۸۰۲۔

यक़ीनन आप के इस क़ौल से मुझे तक्लीफ़ पहुंची है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को कभी मुआ़फ़ नहीं करेगा।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस ने सच कहा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न तो इस ने इस्लाम में कोई फूट डाली और न ही कोई दूसरा जुर्म किया।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स से मुआ़फ़ी मांगी और उस वक़्त तक मुआ़फ़ी मांगते रहे जब तक उस ने मुआ़फ़ न कर दिया।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका में फ़िक्रे आख़िरत का कैसा अ़ज़ीम जज़्बा कार फ़रमा था कि आप उस शख़्स से उस वक़्त तक मुआ़फ़ी मांगते रहे जब तक उस ने मुआ़फ़ न कर दिया, आज हमारा ह़ाल येह है कि लोगों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ कर देते हैं, उन के माल वग़ैरा हड़प कर जाते हैं लेकिन हमारे कान पर जूं तक नहीं रेंगती। प्यारे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत का मुआ़मला निहायत दुश्वार है, हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में एह़तियात़ फ़रमाइये, अगर किसी का कोई ह़क़ तलफ़ कर दिया हो तो उस से दुन्या में ही मुआ़फ़ करवा लीजिये कि इसी में आख़िरत की भलाई है। यक़ीनन अपनी ग़लत़ी पर किसी से मुआ़फ़ी मांगना, मुआ़फ़ी को क़बूल कर लेना दोनों बाइसे इ़ज़्ज़त और अ़क़्लमन्दी के काम हैं। चुनान्चे,

सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन जुहा़दह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَعْقَلُ النَّاسِ اَعْذَرُھُمْ لَھُمْ "या'नी लोगों में सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द वोही है जो उन के ज़ियादा उ़ज़्र क़बूल करने वाला है।"(2)

न कोई मुह़ाफ़िज़, न कोई ख़ादिम

ईरान के चन्द वुफ़ूद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिलने के लिये आए। वोह लोग आप को तलाश करते हुवे आप के घर आए तो पता चला कि आप मस्जिद में हैं, मस्जिद में आए तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस त़रह़ तशरीफ़ फ़रमा हैं कि न तो आप के पास कोई मुह़ाफ़िज़ (Guard) है और न ही कोई दूसरा शख़्स। येह अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र देख कर

---

1 ......درمنثور، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیة:۵۸، ج۶، ص۶۵۸۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الباب الستون، ص۱۸۵۔

www.dawateislami.net

वोह सब बयक ज़बान पुकार उठे : هٰذَا هُوَ الْمَلِکُ وَاللّٰہِ لَا مَلِکُ کِسْرٰی या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हक़ीक़ी बादशाह तो येह हैं न कि शाहे किसरा ।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ग़ुलामों का हाथ बटाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हर हफ़्ते मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ के अ़लाक़े में जाया करते जहां बाग़ात और खेत वग़ैरा होते थे । वहां काम करने वाले ग़ुलामों में अगर कोई ऐसा ग़ुलाम होता जिसे वज़्न वग़ैरा उठाने में मशक़्क़त होती तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के काम में मुआ़वनत फ़रमाया करते ।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और चन्द मुआ़शरती उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़राद से मिल कर मुआ़शरा बनता है, अगर हर फ़र्द अपनी इस्लाह़ की कोशिश में लग जाए तो पूरा मुआ़शरा दुरुस्त हो सकता है, फ़र्दे वाह़िद की इस्लाह़ में एक ह़ाकिम का किरदार बहुत अहम्मिय्यत का ह़ामिल होता है, ह़ाकिम की छोटी सी ग़लत़ी किसी भी फ़र्द के ज़ेहन को मुन्तशिर करने का बाइ़स बन सकती है, जिस से पूरे मुआ़शरे के बिगाड़ का शदीद अन्देशा है, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुआ़शरती उमूर पर ख़ुसूसी तवज्जोह देते थे, हर हर फ़र्द पर ख़ुसूसी तवज्जोह देना आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका में शामिल था, लोगों के साथ इनफ़िरादी त़ौर पर आप का रवय्या कुछ ऐसा था कि हर फ़र्द येही समझता कि शायद फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ पर सब से ज़ियादा नज़र रखते हैं, मेरे मुआ़मलात में ज़ियादा दिलचस्पी लेते हैं, यक़ीनन एक कामयाब हुक्मरान के लिये येह बात निहायत ज़रूरी है कि वोह इजतिमाइ़य्यत के साथ साथ इनफ़िरादी त़ौर पर रिआ़या के अह़वाल से बा ख़बर रहे, उन की दिलजूई के साथ साथ तमाम मसाइल को ह़ल करने की कोशिश करता रहे । अगर्चे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पूरी ख़िलाफ़त ही इन तमाम उमूर की अ़क्कासी करती है लेकिन यहां चन्द गोशे पेशे ख़िदमत हैं ।

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والاربعون، ص ١٤٦ ۔

2 ......اتحاف السادۃ المتقین، کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ والصحبۃ، الباب الثالث، ج ٧، ص ٣٠٣ ۔

www.dawateislami.net

हाकिम रिआया के माल का अमीन है

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ज़ियाद हारिसी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की बारगाह में एक वफ़्द आया और आप के रहन सहन और सख़्त खाने की शिकायत की। सय्यिदुना रबीअ़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने अ़र्ज़ किया : "लोगों से ज़ियादा आप इस बात के ह़क़दार हैं कि नर्म खाना, उ़म्दा सुवारी और आराम देह लिबास इख़्तियार फ़रमाएं।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने खजूर की एक शाख़ ले कर उन के सर पर मारी और फ़रमाया : "मुझे नहीं लगता कि तुम ने येह बात कर के अल्लाह عزوجل की रिज़ा त़लब की है बल्कि तुम तो मेरा क़ुर्ब चाहते हो और मेरे नज़्दीक इस में तुम्हारी बरबादी है, क्या तुम जानते हो कि मेरी और इन तमाम लोगों की मिसाल क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! आप ही बयान फ़रमा दीजिये कि वोह मिसाल क्या है ?" फ़रमाया : "येह ऐसे है जैसे चन्द लोग सफ़र कर रहे हों, फिर तमाम लोग एक शख़्स को अपने सारे अख़राजात दे दें और उस से कहें कि तुम हम पर ख़र्च करो तो क्या वोह शख़्स उस में से अपनी ज़ात पर ख़र्च कर सकता है ?" अ़र्ज़ किया : "नहीं।" फ़रमाया : "मेरी और इन तमाम लोगों की मिसाल भी येही है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म का जज़्बए ख़ैरख़्वाही

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ईदगाह के बाज़ार में हज़रते सय्यिदुना हात़िब बिन अबी बल्तआ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़रीब से गुज़रे जो दो बड़े टोकरों में किशमिश बेच रहे थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन से किशमिश की क़ीमत मा'लूम की। उन्हों ने एक दिरहम के बदले दो मुद बताई। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे त़ाइफ़ से आने वाले एक क़ाफ़िले की इत्तिलाअ़ मिली है जो किशमिश ले कर आ रहे हैं, वोह भी आप की क़ीमत का ए'तिबार करेंगे, या तो आप अपनी क़ीमत बढ़ा दो या फिर अपनी किशमिश अपने घर ले जाओ और जैसे चाहे बेचो।" फिर जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ घर तशरीफ़ लाए तो अपने नफ़्स का मुह़ासबा फ़रमाया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हात़िब رضی اللہ تعالٰی عنہ के घर गए और उन से फ़रमाया : "मैं ने आप से जो कहा था वोह न तो कोई पुख़्ता बात

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۱۲۔

www.dawateislami.net

थी और न ही मेरा कोई फ़ैसला था, बस वोह एक मश्वरा था जिस से मैं ने दीगर लोगों के लिये भलाई का इरादा किया था, तुम्हारी मरज़ी जहां चाहो जैसे चाहो बेचो ।"(1)

मर्दों, औ़रतों के इख़्तिलात़ की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मर्दों और औ़रतों के इख़्तिलात़ को ना पसन्द फ़रमाते थे क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही आ'ला फ़ेह्मो फ़िरासत के मालिक थे और जानते थे कि मर्दों और औ़रतों के इख़्तिलात़ से कई फ़ितने पैदा होते हैं । चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक हौज़ पर तशरीफ़ लाए देखा कि वहां पर मर्द और औ़रतें सब वुज़ू कर रहे हैं, आप ने सब को कोड़े लगाए और फिर हौज़ के मालिक को हुक्म दिया कि मर्दों के लिये अ़लाहि़दा और औ़रतों के लिये अ़लाहि़दा हौज़ बनाया जाए ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मर्दों और औ़रतों का इख़्तिलात़ जहां कहीं हो वहां फ़ितनों के पैदा होने का शदीद अन्देशा है, येही वज्ह है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों के लिये अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा हौज़ बनाने का हुक्म दिया, आप के इस फ़रमान में नसीह़तों के बेशुमार मदनी फूल हैं, खु़सूसन आज के पुर फ़ितन दौर में जहां हर त़रफ़ इ़ज़्ज़तों के चोर दन दनाते फिरते हैं, इस्लाम में औ़रतों के हुक़ूक़ की मुकम्मल पासदारी की गई है, हर हर मुआ़मले में औ़रतों के हुक़ूक़ को भी उसी त़रह़ बयान किया गया है जिस त़रह़ मर्दों के हुक़ूक़ को बयान किया जाता है । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़मल से ज़ाहिर होता है कि औ़रतों के लिये जुदागाना हैसिय्यत की तरकीब बनाई जाए, इसी में आ़फ़िय्यत है ।

सफ़र के मदनी फूल

तीन मुसाफ़िर एक को अमीर बना लें

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई तीन लोग सफ़र करें तो एक को अपना अमीर बना लें ।"(3)

---

1 ....موطاامام مالک، کتاب البیوع، باب الحکرۃ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۸۴، حدیث: ۱۳۸۹۔
سنن کبری، کتاب البیوع، باب التسعیر، ج ۶، ص ۴۸، حدیث: ۱۱۱۴۶۔

2 ....مصنف عبد الرزاق، کتاب الطھارۃ، باب وضوء الرجال۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۸، حدیث: ۲۴۶۔

3 ....مصنف عبد الرزاق، کتاب الزکوۃ، باب احتلاب الماشیۃ، ج ۴، ص ۵۱، حدیث: ۶۹۹۰ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

कोई भी रात को तन्हा सफ़र न करे

हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक ऐसा शख़्स आया जिस के सर और दाढ़ी के आधे आधे बाल सफ़ेद हो चुके थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो उस ने अ़र्ज़ किया कि एक बार मैं रात को फुलां क़बीले के क़ब्रिस्तान से गुज़र रहा था, मैं ने देखा कि एक शख़्स दूसरे को आग के कोड़े से मार रहा है, वोह उस के आगे आगे भाग रहा है जैसे ही वोह उस के क़रीब पहुंचता है दोबारा उसे मारना शुरूअ़ कर देता है। भागते भागते वोह शख़्स मेरे क़रीब आया और बोला : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मेरी मदद कर।" लेकिन दूसरे शख़्स ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : "इस की हरगिज़ मदद न करना क्यूंकि येह बहुत बुरा इन्सान है।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "इसी वज्ह से हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बात को ना पसन्द फ़रमाते थे कि तुम में से कोई भी रात को अकेला सफ़र करे।"(1)

किसी दिन सफ़र करने की मुमानअ़त नहीं

हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को देखा जो सफ़र करने की तय्यारी में था और साथ ही येह भी कह रहा था कि : "अगर आज जुमुए़ का दिन न होता तो मैं ज़रूर सफ़र पर रवाना हो जाता।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "तुम सफ़र पर रवाना हो जाओ, जुमुआ़ तुम्हें नहीं रोकता।"(2)

झूट के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म

चार फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म

(1)......"मोमिन कभी झूटा नहीं हो सकता।"(3)

---

1 ......كنز العمال، كتاب السفر، آداب مفترقة، الجزء: ٦، ج ٣، ص ٣٠٨، حديث: ١٧٥٩٥۔

2 ......مسند امام شافعی، ومن كتاب الامالی ـــ الخ، ص ٢٦۔

3 ......شعب الايمان، باب فی حفظ اللسان، آثار وحكايات ـــ الخ، ج ٤، ص ٢٣٠، حديث: ٤٨٨٧۔

www.dawateislami.net

(2)......"किसी शख़्स के झूटा होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात आगे बयान कर दे।"(1)

(3)......"कोई बन्दा उस वक़्त तक ईमान की ह़क़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक मज़ाक़ में भी झूट न छोड़ दे।"(2)

(4)......"झूट से बचो क्यूंकि झूट जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है।"(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के झूट से मुतअ़ल्लिक़ मज़्कूरए बाला फ़रामीन में इब्रत के कैसे मदनी फूल हैं, वाक़ेई अपने आप को हमेशा झूट से बचाना चाहिये मगर सद अफ़्सोस ! आज हमारी अक्सरिय्यत झूट बोलने को कमाल और तरक़्क़ी की अ़लामत जब कि सच को बे वुक़ूफ़ी और तरक़्क़ी की राह में रुकावट तसव्वुर करती है, बल्कि बा'ज़ औक़ात तो मज़्मूम मक़ासिद के लिये झूटी क़समें उठाने से भी दरेग़ नहीं किया जाता। याद रखिये ! झूट बोलने वाला दुन्या में चाहे कितनी ही कामयाबियां और कामरानियां समेट ले, मगर आख़िरत में नाकामियां और रुस्वाइयां उस का इस्तिक़्बाल करेंगी, लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपनी ज़बान को हमेशा झूट बोलने से मह़फ़ूज़ रखें।

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

آمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ता'रीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीन

ता'रीफ़ करने की मज़म्मत

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : "ता'रीफ़ सरासर हलाकत है।"(4)

मुंह पर ता'रीफ़ करना हलाकत है

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، من کرہ للرجل۔۔۔الخ، ج۶، ص۲۲۵، حدیث:۲۔
2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، ماجاء فی الکذب، ج۶، ص۲۳۴، حدیث:۸۔
3 ......تاریخ ابن عساکر، ج۱۹، ص۲۸، ملتقطا۔
4 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، فی الرجل یمدح۔۔۔الخ، ج۶، ص۲۰۲، حدیث:۵۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ की तो आप ने उस से इरशाद फ़रमाया : اَتُهْلِكُنِیْ وَتُهْلِكُ نَفْسَكَ "या'नी क्या तू मुझे और अपने आप को हलाक करना चाहता है ?"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हौसला अफ़्ज़ाई करना अच्छी बात है लेकिन किसी के मुंह पर उस की ता'रीफ़ करना भी उसे आज़्माइश में मुब्तला कर सकता है, लिहाज़ा इस में बहुत ही एह़तियात़ की ह़ाजत है, किसी की दिल आज़ारी भी न की जाए कि येह सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

फ़ारूक़े आ'ज़म और बैठने के मदनी फूल

ज़ियादा देर धूप में न बैठो

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ियादा देर धूप में बैठने को पसन्द नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ज़ियादा देर तक धूप में न बैठो क्यूंकि धूप रंग को तब्दील कर देती है, जिल्द को सुकेड़ देती है, कपड़ों को पुराना कर देती है और दबी हुई बीमारी को उभार देती है।"[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म के बैठने का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चार ज़ानू पीठ से इस त़रह़ टेक लगा कर बैठते थे कि एक टांग को दूसरी टांग पर रख लिया करते थे।"[3]

इ़शा के बा'द लोगों से उ़मूमी गुफ़्तगू

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़रशा बिन हुर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के साथ उ़मूमन इ़शा के बा'द गुफ़्तगू किया करते थे।"[4]

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والاربعون، ص ۱۴۶۔
2 ......کنز العمال، کتاب الصحبۃ، حق المجالس۔۔۔الخ، الجزء: ۹، ج۵، ص ۹۷، حدیث: ۲۵۷۴۸۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۳۔
4 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من کرہ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۸۰، حدیث: ۴۔

www.dawateislami.net

इशा के बा'द ग़लतियों की इस्लाह

हज़रते सय्यिदुना सलमान बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े इशा के बा'द हमारी ग़लतियों की इस्लाह फ़रमाया करते थे ।(1)

घर में बच्चों की त़रह रहो

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि "मर्द को चाहिये कि वोह अपने घरवालों में एक बच्चे की त़रह रहे और जब उस से मर्दानगी त़लब की जाए तो मर्द बने ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक फ़रमान में ऐसे लोगों के लिये नसीह़तों के बे शुमार मदनी फूल हैं जो अपने घरवालों पर बिला वज्ह सख़्ती करते रहते हैं । याद रखिये कि घरवालों पर बिला वज्ह सख़्ती भी मुख़्तलिफ़ बुराइयों ख़ुसूसन घरेलू नाचाक़ियों के पैदा होने का एक बहुत बड़ा सबब है । कई हंसते खेलते ख़ानदान छोटी सी मा'मूली ग़लती के सबब तबाहो बरबाद हो जाते हैं लिहाज़ा न तो बिला वज्ह सख़्ती की जाए और न ही उन्हें खुली छूट दी जाए बल्कि शरीअ़त के दाइरे में रहते हुवे उन की तरबिय्यत की जाए । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ घर अम्न का गहवारा बन जाएगा ।

किसी के नमाज़ रोज़े को न देखो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन दुलाफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "किसी की नमाज़ और रोज़े न देखो, येह देखो कि जब वोह बात करता है तो सच बोलता है, जब उसे अमानत दी जाए ख़ियानत तो नहीं करता, क्या दुन्या के मुक़ाबले में तक़्वा इख़्तियार करता है ?"(3)

सब से अफ़ज़ल कौन......?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "सब से अफ़ज़ल

---

(1) ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، کان یکرہ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۸۰، حدیث: ۳۔

(2) ......المجالسۃ وجواہر العلم، ج ۲، ص ۴۰۴، الرقم: ۱۰۳۸۔

(3) ......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، آثار وحکایات۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۳۰، حدیث: ۴۸۸۸۔

www.dawateislami.net

कौन है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "नमाज़ी ।" फ़रमाया : "नमाज़ी तो नेक और गुनहगार दोनों होते हैं ।" अ़र्ज़ की : "रोज़ेदार ।" फ़रमाया : "रोज़ेदार भी नेक और गुनहगार दोनों होते हैं ।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "मुजाहिदीन ।" फ़रमाया : "मुजाहिदीन भी नेक और गुनहगार दोनों होते हैं ।" फिर ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया : "मुत्तक़ी व परहेज़गार क्यूंकि तक़्वा व परहेज़गारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की तक्मील करते हैं ।"(1)

हम्माम में दाख़िले की ना पसन्दीदगी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से हम्माम में दाख़िल होने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हम्माम में जाना ना पसन्द फ़रमाते थे ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले ज़माने में नहाने के लिये ऐसी बड़ी बड़ी जगहें होती थीं जहां कई लोग बयक वक़्त नहाते थे ऐसी जगहों को "ह़म्माम" कहते थे । ग़ालिबन ऐसी जगहों पर बे पर्दगी का अन्देशा होता है इस लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इसे ना पसन्द फ़रमाते थे । यक़ीनन अपना सित्र किसी ग़ैर के सामने ज़ाहिर करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है लिहाज़ा नह्रों, दरयाओं या साहि़ले समन्दर पर नहाने वालों को भी बहुत एह़तियात़ की ज़रूरत है ।

फ़ारूक़े आ'ज़म और चन्द मुआ़शरती बुराइयां

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तीन त़रह़ के लोग सब से बदतर हैं : (1) वालिदैन को ह़क़ीर जानने वाला (2) मियां बीवी के दरमियान फ़साद पैदा कर के उन के माबैन जुदाई डलवाने वाला (3) लोगों के दरमियान झूट बोल कर दंगे फ़साद कराने और बुग़्ज़ो इनाद फैलाने वाला ।"(3)

---

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ۱۷۴۔

2 ......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب الطھارۃ، باب ماجاء۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۸۹، حدیث: ۷۳۳۔

3 ......اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب الادب، باب الترھیب من النمیمۃ، ج ۷، ص ۲۲۶، حدیث: ۷۲۱۲۔

www.dawateislami.net

सफ़र करो सिह्हतयाब हो जाओगे

हज़रते सय्यिदुना इब्ने ताऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "सफ़र करो सिह्हतयाब हो जाओगे।"(1)

धूप के पानी से न नहाओ

हज़रते सय्यिदुना हब्बान बिन मुन्क़िज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "धूप के पानी से न नहाओ क्यूंकि येह बरस को पैदा करता है।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और क़ैलूला

(1)......हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه दोपहर या इस से थोड़ी देर पहले हमारे पास से गुज़रते तो फ़रमाते : "उठो और क़ैलूला कर लो और जो रह जाएगा वोह शैत़ान के लिये होगा।"(3)

(2)......हज़रते सय्यिदुना शुवैस अ़दवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ नमाज़े ज़ोहर पढ़ते और घर आ कर क़ैलूला करते।"(4)

(3)......हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह ख़बर मिली कि एक आ़मिल क़ैलूला नहीं करता तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें एक मक्तूब लिखा कि : "क़ैलूला किया करो क्यूंकि मुझे पता चला है कि शैत़ान क़ैलूला नहीं करता।"(5)

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب المناسک، باب صلاۃ الجمعۃ فی السفر، ج۵، ص ۱۱۷، حدیث: ۹۳۳۲۔

2 ......دارقطنی، کتاب الطھارۃ، باب الماء المسخن، ج ۱، ص ۵۴، حدیث: ۸۵۔

3 ......شعب الایمان، باب فی تعدید۔۔۔الخ، فصل فی النوم۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۸۲، حدیث: ۴۷۴۰۔

4 ......طبقات کبری، شویس بن جباش، ج ۷، ص ۹۱۔

5 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، ما ذکر۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۲۶۲، حدیث: ۱۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और अंगूठी

(1)......हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुतवक्किल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अंगूठी पर येह इ़बारत नक़्श थी : كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا يَا عُمَرُ "या'नी ऐ उ़मर ! वा'ज़ो नसीह़त के लिये मौत ही काफ़ी है।"(1)

(2)......हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बाएं हाथ में अंगूठी पहना करते थे।"(2)

(3)......हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को देखा जिस ने सोने की अंगूठी पहनी हुई थी, आप ने उस से फ़रमाया : "इस अंगूठी को उतार दो।" उस ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मेरी येह अंगूठी सोने की नहीं बल्कि लोहे की है।" फ़रमाया : "फिर तो उस से भी ज़ियादा बदबूदार है।" बा'ज़ रिवायत के मुताबिक़ आप ने फ़रमाया : "जो अंगूठी बनवाना चाहे तो चांदी की बनवाए।"(3)

तीन ख़ूबियां, तीन बुराइयां

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी ज़ात में अपने भाई से मह़ब्बत के तीन औसाफ़ होने चाहिये : (1) उस से मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना (2) अपनी मजलिस में उस के लिये कुशादगी करना। (3) और उसे उस के पसन्दीदा नामों से पुकारना।

और तीन ही चीज़ें ना पसन्दीदा हैं : (1) लोगों पर उन मुआ़मलात में नाराज़ी का इज़्हार करना कि जिन में तुम ख़ुद मुब्तला हो। (2) लोगों के उन उ़यूब को ज़ाहिर करना जिन को तुम अपने लिये मख़्फ़ी रखना चाहते हो। (3) और बे मक़्सद बातों से अपने दोस्त को तक्लीफ़ पहुंचाना।"(4)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۶۰۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۵۲۔

3 ......طبقات کبری، ابوموسی الاشعری، ج ۴، ص ۸۶۔

4 ......شعب الایمان، باب فی مقاربۃ۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۴۳۱، حدیث: ۸۷۷۶۔

मुआशरती बुराइयां और उन के नताइज

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الرَّجْفَ مِنْ كَثْرَةِ الزِّنَا وَاِنَّ قُحُوْطَ الْمَطَرِ مِنْ قُضَاةِ السُّوْءِ وَاَئِمَّةِ الْجَوْرِ "या'नी बेशक ज़लज़ले ज़िना की कसरत से आते हैं और क़हत़ साली बद किरदार क़ाज़ी व ज़ालिम हुक्मरानों से आती है।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और ख़्वाहिशाते नफ़्स

ख़्वाहिशे नफ़्स की मुख़ालफ़त

हज़रते सय्यिदुना साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मशरूब की ख़्वाहिश हुई तो आप की ख़िदमत में शहद वाला पानी पेश किया गया। आप उसे हाथ में ले कर हिलाते रहे और फ़रमाने लगे : "मैं इसे तब पियूंगा जब इस की मिठास ख़त्म हो जाएगी और कड़वाहट बाक़ी रह जाएगी।" फिर आप ने वोह मशरूब किसी और शख़्स को दे दिया जिस ने उसे पी लिया।(2)

ख़्वाहिशाते नफ़्स में ताख़ीर

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नफ़्स का सब से बड़ा शर येह है कि जब वोह किसी चीज़ की ख़्वाहिश करे तो तू फ़ौरन वोह खा ले।"(3)

नफ़्स की मुख़ालफ़त और इस के उ़यूब का बयान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई नफ़्स के जरी और बेबाक होने के लिये इतना ही काफ़ी है कि वोह किसी चीज़ की ख़्वाहिश करे और हम उसे फ़ौरन वोह चीज़ मुहय्या कर दें। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की येह आ़दते मुबारका थी कि जब भी उन का नफ़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश करता तो उसे कभी भी वोह चीज़ फ़ौरन न देते बल्कि उस से ख़ूब सब्र करवाते। यक़ीनन नफ़्स की

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الستون، ص ۱۹۱۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والاربعون، ص ۱۳۸۔

3 ......تفسیر غرائب القرآن ورغائب الفرقان، پ ۱۹، الفرقان، ج ۵، ص ۲۵۴، تحت الایۃ: ۲۶۔

www.dawateislami.net

मुख़ालफ़त इबादत की अस्ल है। बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं : "नफ़्स को मुख़ालफ़त की तल्वारों से ज़ब्ह करना हक़ीक़ी इस्लाम है।"(1)

नफ़्स की बीमारी और इस का इलाज

सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं कि मैं एक रात बेदार हुवा और अपना वज़ीफ़ा पढ़ने के लिये उठा तो मुझे वोह मिठास और लज़्ज़त हासिल न हुई जो मैं अपने रब से मुनाजात में हासिल करता था, मैं हैरान हो गया, जब मैं ने सोने का इरादा किया तो सो न सका, बैठ गया लेकिन बैठ न सका, मैं ने दरवाज़ा खोला और बाहर आ गया अचानक मैं ने एक शख़्स को देखा जो अपने चोग़े में लिपटा हुवा रास्ते में पड़ा है, मैं उस के पास गया जैसे ही उस ने मेरी आमद महसूस की तो अपना सर उठाया और कहने लगा : "ऐ अबुल क़ासिम ! तुम ने इतनी देर लगा दी !" मैं ने कहा : "मेरे आक़ा ! हमारे दरमियान कोई वा'दा न था।" कहने लगा : "क्यूं नहीं, मैं ने दिलों को हरकत देने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की थी कि वोह आप के दिल को हरकत दे।" मैं ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा कर दिया, आप क्या चाहते हैं ?" उस ने कहा : "नफ़्स की बीमारी कब उस की दवा बन जाती है ?" मैं ने कहा : "जब नफ़्स अपनी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करे तो उस की बीमारी उसी की दवा बन जाती है।" येह सुन कर उस शख़्स ने अपने नफ़्स से मुख़ातब हो कर कहा : "सुना तुम ने ! मैं ने येही बात तुम से सात बार कही थी लेकिन तुम इस बात पर मुसिर्र थे कि येह बात तुम ने जुनैद बग़दादी के इलावा किसी से नहीं सुननी लो अब तुम्हारी तसल्ली हो गई।" सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि फिर वोह शख़्स चला गया और मुझे नहीं मा'लूम कि वोह कौन था और कहां से आया।(2)

चालीस साल से गाजर न खाई

हज़रते सय्यिदुना सिरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मेरा नफ़्स मुझ से तीस या चालीस साल से इस बात की ख़्वाहिश कर रहा है कि मैं एक गाजर शहद में डुबो कर खाऊं लेकिन मैं ने अभी तक इस की बात नहीं मानी।" एक शख़्स को हवा में बैठा हुवा देखा गया तो उस से पूछा कि "तुम्हें येह मक़ाम कैसे मिला ?" उस ने कहा : "मैं ने ख़्वाहिशाते नफ़्स को छोड़ दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने

(1) رسالہ قشیریہ، باب مخالفۃ النفس وذکر عیوبہا، ص ۱۸۸۔

(2) رسالہ قشیریہ، باب مخالفۃ النفس وذکر عیوبہا، ص ۱۸۹۔

www.dawateislami.net

मेरे लिये हवा को मुसख़्ख़र कर दिया।" बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं : "अगर मोमिन के सामने एक हज़ार ख़्वाहिशें भीं आएं तो वोह ख़ौफ़ की वज्ह से उन को छोड़ देता है और अगर फ़ासिक़ो फ़ाजिर के सामने एक ख़्वाहिश भी आए तो वोह उस के दिल से ख़ौफ़ को निकाल देती है।" येह भी कहा गया कि : "अपनी लगाम ख़्वाहिशात के हाथ में न दो कि येह तुम्हें तारीकी की त़रफ़ ले जाएंगी।"(1)

मुख़ालफ़ते नफ़्स के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल

(1)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स ने रात के वक़्त कोई अच्छा काम किया उसे उस के दिन में किफ़ायत की जाती है। (या'नी दिन में रात वाले अच्छे काम के सबब बुराई से बच जाता है।) और जिस ने दिन के वक़्त कोई अच्छा काम किया उसे रात के वक़्त किफ़ायत ह़ासिल हो जाती है और जो शख़्स अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को (रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर) छोड़ने में सच्चा हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ज़ाबे नार से मह़फ़ूज़ फ़रमाएगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात से बहुत ज़ियादा करीम है कि वोह ऐसे दिल को सज़ा में मुब्तला फ़रमाए जिस ने उस की ख़ातिर अपनी ख़्वाहिश को तर्क किया हो।"

(2)......एक शख़्स को हवा में बैठा हुवा देखा गया तो उस से पूछा गया कि तुम्हें येह मक़ाम कैसे मिला? उस ने कहा : تَرَكْتُ الْهَوٰى فَسُخِّرَلِىَ الْهَوَاءُ "या'नी मैं ने ख़्वाहिशे नफ़्स को छोड़ दिया तो हवा को मेरे लिये मुसख़्ख़र कर दिया गया।"

(3)......कहा गया है कि अगर मोमिन के सामने एक हज़ार ख़्वाहिशें भी आएं तो वोह ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से उन को छोड़ देता है जब कि फ़ाजिर के सामने एक ख़्वाहिश भी आए तो वोह ख़्वाहिश उस के दिल से ख़ौफ़े ख़ुदा को निकाल देती है।(2)

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी नफ़्स की शरारतों से मह़फ़ूज़ फ़रमा, बेजा ख़्वाहिशात से मह़फ़ूज़ फ़रमा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करते हुवे दुन्या व आख़िरत दोनों की बे शुमार भलाइयां अ़त़ा फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......رسالہ قشیریہ، باب مخالفۃ النفس وذکر عیوبھا، ص ۱۹۰۔۱۹۱۔

2 ......رسالہ قشیریہ، باب مخالفۃ النفس وذکر عیوبھا، ص ۱۹۱۔

www.dawateislami.net

चौथा बाब

फ़ारूक़े आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये...........................

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ फ़रामीने मुबारका

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ इस्लाही मदनी फूलों से मुअ़त्तर मदनी गुलदस्ते

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुत्बात का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ सियासी, इस्लाही व इल्मी ख़ुत्बात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूबात का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ लोगों को लिखे गए सियासी, इस्लाही व इल्मी मक्तूबात

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यतों का बयान

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वक़्ते विसाल और दीगर औक़ात में की गई वसिय्यतें

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल मुख़्तलिफ़ दुआएं

......**......**......

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद

हुक़ूक़ुल इबाद से ख़लासी नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसलमान पर बालिग़ होते ही **हुक़ूक़ुल्लाह** व कई हुक़ूक़ुल इबाद लाज़िम हो जाते हैं। अगर बिलफ़र्ज़ हुक़ूक़ुल्लाह में कोताही हो जाए तो इस की तलाफ़ी की सूरत तौबा है, सच्ची तौबा करने से इस का इज़ाला हो सकता है, लेकिन हुक़ूक़ुल इबाद में कोताही हो जाए तो इस का इज़ाला फ़क़त् तौबा से नहीं हो सकता बल्कि जिस शख़्स का हक़ तलफ़ किया उस से मुआफ़ करवाना भी ज़रूरी है, ब सूरते दीगर क़ियामत में सख़्त परेशानी का सामना होगा। जिस शख़्स का जितने लोगों से मेल जोल है उस का तअ़ल्लुक़ उतना ही हुक़ूक़ुल इबाद से जुड़ा हुवा है, घर के सरबराह का तअ़ल्लुक़ अपने बीवी बच्चों से है तो उन के हुक़ूक़ की अदाएगी ज़रूरी है, अगर पूरे ख़ानदान का सरबराह है तो उस का तअ़ल्लुक़ ख़ानदान के तमाम लोगों के हुक़ूक़ से है, इसी त़रह़ सूबाई ज़िम्मेदार, मुल्की ज़िम्मेदार और चन्द ममालिक का ज़िम्मेदार। अल ग़रज़ जिस शख़्स के तह़्त जितने लोग हैं वोह उन के हुक़ूक़ का जवाब देह है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मदनी सोच तो इस से भी मा वरा थी, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ न सिर्फ़ इन्सानों बल्कि सल्त़नत के जानवरों और दीगर चीज़ों के बारे में भी हुक़ूक़ की अदाएगी का ज़ेह्न रखते थे, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : **لَوْمَاتَ جِدْیٌ بِطَفِّ الْفُرَاتِ خَشَیْتُ اَنْ یُّحَاسِبَ بِہِ اللہُ عُمَرَ** "या'नी अगर दरयाए फ़ुरात के किनारे बकरी का एक छोटा बच्चा भी (भूक से) मर गया तो मुझे ख़ौफ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर से उस का भी ह़िसाब लेगा।"(1)

यक़ीनन जो शख़्स हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद दोनों की इख़्लास के साथ अदाएगी करता है दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़रू होता है, मगर अफ़्सोस कि आज कल हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद दोनों ही से ग़फ़्लत बरती जा रही है। जिस का भयानक नतीजा सब के सामने है कि अम्नो सुकून उड़ चुका है, बद अम्नी व बेचैनी आ़म है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी रियासत में हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में इन्तिहाई एह़तियात़ से काम लिया **بِحَمْدِ اللہِ تَعَالٰی** आप के दौर में मुआ़शरा अम्नो आश्ती का गहवारा बन गया। हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में आप की अ़ज़ीम कोशिशों की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

---

(1) صفة الصفوة، ذکر خوفه من الله ـ ـ ـ الخ، ج ۱، ص ۱۴۸ ـ

www.dawateislami.net

हुक़ूक़ुल इबाद पर तफ़्सीली ह़दीसे मुबारका

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला तो आप को मा'लूम हुवा कि लोगों के अज़्हान में आप की त़बीअ़त की सख़्ती गर्दिश कर रही है, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुत़बा देने खड़े हुवे और इस में इरशाद फ़रमाया : "सब लोग ग़ौर से सुनो ! मेरी सख़्ती सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ालिमों और फ़सादियों के लिये है, अम्न पसन्द, मुत्तबिईने शरीअ़त और अस्ह़ाबे फ़ज़्ल के लिये मैं इतना नर्म हूं कि वोह ख़ुद आपस में भी इतने नर्म न होंगे। मैं जिस ज़ालिम को ज़ुल्म करते हुवे देख लूं उसे हरगिज़ नहीं छोड़ता, मैं उस का एक रुख़्सार ज़मीन पर रख कर दूसरे को पाउं तले दबा देता हूं और उस वक़्त तक नहीं छोड़ता जब तक वोह अपने ज़ुल्म से तौबा न कर ले। ऐ लोगो ! तुम्हारे फ़ाइदे के लिये चन्द उमूर मुझ पर लाज़िम हैं जिन्हें मुझ से ह़ासिल करना तुम्हारा ह़क़ है : (1) मुझ पर लाज़िम है कि मैं ख़िराज में से कुछ न छुपाऊं और उसे सह़ीह़ मक़ाम पर ख़र्च करूं। (2) मैं तुम्हारे वज़ाइफ़ बिग़ैर कमी बेशी अदा करता रहूं। (3) तुम्हें नुक़्सान देह मुआ़मलात में न उलझाऊं। (4) और अगर तुम जंगों में जाना पसन्द करो तो तुम्हारे अह्लो इयाल के साथ ऐसे अख़्लाक़ से पेश आऊं कि उन्हें इस बात का ज़र्रा भर एह़सास न हो कि तुम उन के पास नहीं हो।"(1)

इस बयान के बा'द लोगों को इत़्मीनान हो गया और इस ख़ुत़्बे में मौजूद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस बात की गवाही दी कि जैसा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था वैसा ही किया और विसाले ज़ाहिरी तक आप ने न तो हुक़ूक़ुल्लाह तलफ़ किये और न ही हुक़ूक़ुल इबाद। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द जो जो हम से वा'दे किये थे वोह सारे के सारे कमाह़क़्क़ुहू पूरे कर दिखाए।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक़ूक़ुल इबाद से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ उमूर को निहायत तफ़्सील से बयान फ़रमाया। हम उन को मुख़्तलिफ़ उ़नवानात के तह़त मफ़्हूमन ज़िक्र करते हैं ताकि हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में आप की कोशिशें वाज़ेह़ हो जाएं। चुनान्चे,

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۶۲، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۱۵۔

www.dawateislami.net

(1) फ़ारूक़े आ'ज़म का मिसाली रवय्या

मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी रिआ़या पर चाहे वोह मुसलमान हों या ज़िम्मी कुफ़्फ़ार कभी भी बिला वज्ह नर्मी या सख़्ती न फ़रमाई। बल्कि जहां नर्मी की ह़ाजत थी वहां नर्मी की और जहां सख़्ती की ज़रूरत थी वहां सख़्ती फ़रमाई, यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़मले में मश्अ़ले राह है।

(2) मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल से सुलूक

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंग पर गए हुवे मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल के साथ इन्तिहाई हुस्ने सुलूक के साथ पेश आते, उन की तमाम ज़रूरियात को पूरा करते, और उन्हें इस बात का एह़सास ही न होने देते कि उन के घर का सरबराह जंग के सिलसिले में शहर से बाहर गया हुवा है, आप ने उन से ऐसा मह़ब्बत भरा सुलूक किया कि गोया आप उन के लिये "اَبُو الْعِیَال" या'नी ख़ानदान के सरबराह हैं।

(3) मुजाहिदीन के घरों पर जा कर ख़बर गीरी

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि जंग पर गए हुवे मुजाहिदीन के घरों पर जा कर पूछते कि तुम्हें किसी ने तक्लीफ़ तो नहीं दी ? क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना येह फ़र्ज़े मन्सबी समझते थे कि मुजाहिदीन के जंगों पर जाने के बा'द उन के घरवालों को हर त़रह़ की तकालीफ़ और परेशानी से बचाएं।

(4) मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल के लिये ख़रीदारी

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी आ़दते मुबारका थी कि जंग पर गए हुवे मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल को अगर किसी चीज़ की ह़ाजत होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाते कि मैं तुम्हें बाज़ार से कुछ ख़रीद कर ला दूं ? क्यूंकि मुझे येह बात ना पसन्द है कि तुम्हें ख़रीदो फ़रोख़्त में धोका दिया जाए।

(5) लौंडियों और ग़ुलामों का हुजूम लग जाता

मुजाहिदीन के अह्लो इ़याल अपनी ज़रूरतों के लिये अपने ग़ुलाम या लौंडियां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ भेज देते, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाज़ार में आते तो लौंडियों और ग़ुलामों की एक फ़ौज आप के पीछे होती थी, आप सामान ख़रीद कर उन ग़ुलामों और लौंडियों के ह़वाले कर देते।

www.dawateislami.net

(6) ख़ुद घर पर सौदा सलफ़ पहुंचाते

अगर किसी मुजाहिद के अह्लो इयाल के पास कोई ख़ादिम या लौंडी वग़ैरा न होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद सौदा सलफ़ बाज़ार से ला कर उन के घर पहुंचाते।

(7) मुजाहिदीन के मक्तूब घरों पर पहुंचाते

जब जंगी मुजाहिदीन के मक्तूब आते जिस में वोह अपनी ख़ैर ख़ैरिय्यत वग़ैरा लिख कर भेजते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद उन के घर वोह मक्तूब ले कर पहुंच जाते और उन के घरवालों को देते।

(8) मक्तूब ख़ुद पढ़ कर सुनाते

फिर अगर उन मुजाहिदीन के घर में कोई ऐसा होता कि जो मक्तूब वग़ैरा पढ़ ले तो ठीक वरना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते : "ऐ मुजाहिदीन की घरवालियो ! तुम्हारे शौहर राहे ख़ुदा में हैं और तुम शहरे रसूले ख़ुदा में हो, तुम्हारे हां कोई ख़त़ पढ़ने वाला है तो बेहतर, नहीं तो दरवाज़े के क़रीब आ जाओ मैं बाहर से पढ़ कर सुना देता हूं।"

(9) जवाबी मक्तूब के लिये भी आते

मक्तूब देने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जवाबी मक्तूब लेने के लिये भी आते और इरशाद फ़रमाते : "फ़ुलां दिन डाक यहां से रवाना होगी, तुम जवाबात लिख कर हमें पहुंचा दो हम मुतअ़ल्लिक़ा मुजाहिद तक ब ख़ैरिय्यत पहुंचा देंगे।"

(10) जवाबी मक्तूब ख़ुद लिख देते

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़ह़ात और क़लम व दवात लिये घर घर तशरीफ़ ले जाते, किसी ने ख़त़ लिख कर रखा होता तो वोह ह़ासिल कर लेते, अगर किसी मुजाहिद के घर में कोई ऐसा फ़र्द न होता जो जवाबी मक्तूब लिख सकता तो फ़रमाते : "दरवाज़े के पास आ जाओ और अन्दर ही से इम्ला करवा दो मैं लिख देता हूं।"

(11) दौराने सफ़र रुख़्सती का ए'लान फ़रमाते

यूंही अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़र पर तशरीफ़ ले जाते तो जगह जगह पड़ाव करने के बा'द फ़रमाते : "कूच करो।" कहने वाला कहता : "येह देखो अमीरुल मोमिनीन ने कूच का हुक्म दे दिया

www.dawateislami.net

है, उठो तय्यारी करो और निकल खड़े हो।" आप दोबारा निदा करते तो लोग कहते : "वोह देखो अमीरुल मोमिनीन दोबारा सदा लगा रहे हैं।" जब लोग तय्यार हो जाते तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ऊंट पर बैठ जाते और रवाना हो जाते।

(12) सत्तू और खजूर की दा'वते आ़म फ़रमाते

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ऊंट पर दो बोरियां होती थीं एक में सत्तू दूसरी में खजूरें, सुवारी पर आप के आगे पानी का एक मश्कीज़ा और पीछे एक बड़ा प्याला धरा होता। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जहां उतरते प्याले में सत्तू डाल कर उस में पानी मिला लेते और चटाई बिछा कर उस पर तशरीफ़ फ़रमा हो जाते। जो शख़्स कोई मुआ़मला सुलझाने के लिये आप के पास आता या पानी की त़लब या कोई और ह़ाजत ले कर आता, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे सत्तू और खजूर की दा'वत देते।

(13) क़ाफ़िले वालों की अश्या की हिफ़ाज़त फ़रमाते

उ़मूमन ऐसा भी होता है कि जब बड़ा क़ाफ़िला किसी जगह पड़ाव डाले तो वहां से कूच के वक़्त किसी का कुछ सामान वग़ैरा पीछे रह जाए। इस लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि सब से आख़िर में निकलते और जब लोग पड़ाव वाली जगह छोड़ कर आगे निकलते तो आप वहां आ कर देखते, अगर किसी की कोई चीज़ देखते तो उसे उठा लेते और बा'द में उसे दे देते।

(14) क़ाफ़िले वालों की ख़ैरख़्वाही

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ाफ़िले वालों और उन के सामान वग़ैरा की भी ख़ैरख़्वाही फ़रमाते रहते थे, अगर किसी को चलने में कोई परेशानी होती या सुवारी को तक्लीफ़ पहुंची होती तो उसे दूसरी सुवारी ह़ासिल करने के लिये किराया मुहय्या करते और लोगों के पीछे पीछे सफ़र किया करते थे।

(15) गिरी पड़ी अश्या को उठा लेते

अगर किसी का सामान गिर जाता या किसी को चलने में तक्लीफ़ होती तो उस की दस्त्गीरी फ़रमाते, रात भर चलने में जिस किसी का कुछ सामान गुम हो जाता तो वोह आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़ासिल कर लेता था वोह इस त़रह़ कि जिस शख़्स की कोई चीज़ गुम होती तो वोह आप के पास आ कर बयान कर देता। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लकड़ी का एक स्टेन्ड बनवाया हुवा था जिस पर लोगों की

www.dawateislami.net

गिरी पड़ी चीजे़ं लटका देते, अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को स्टेन्ड पर उस की चीज़ मिल जाती तो अपने ख़ैमे के अन्दर से वोह ले आते और उसे दे देते लेकिन साथ ही तम्बीहन डांट डपट भी करते और फ़रमाते : "क्या किसी का वोह बरतन भी गुम हो जाता है जिस के साथ उस ने पानी पीना और वुज़ू करना होता है ? क्या मैं सारी रात तुम्हारी चीज़ों की निगरानी किया करूं और नींद से अपनी आंखें दूर रखा करूं ?" फिर वोह चीज़ उस के मालिक को लौटा देते ।(1)

इल्मो हिक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा, खुसूसन हुक़ूकु़ल इबाद के ह़वाले से बेहतरीन रहनुमाई करती है इस ह़दीसे मुबारका में हमारे लिये इल्मो ह़िक्मत के कितने मदनी फूल महक रहे हैं । वाके़ई हम अपनी ज़ात पर ग़ौर करें कि क्या आज हमारा रवय्या हमारे मा तह़त इस्लामी भाइयों के साथ वैसा ही है जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने मा तह़त लोगों के साथ था ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो उन के घरवालों को इस बात का एह़सास तक न होने देते थे कि वोह घर से दूर हैं, उन की तमाम ज़रूरिय्यात पूरी कर दिया करते थे, मगर अफ़्सोस ! आज हमारे मा तह़त इस्लामी भाई अगर ग़ैर ह़ाज़िर हों, उन से हमारी एक या दो दिन तक मुलाक़ात न हो तो हमें इस बात की कोई फ़िक्र ही नहीं होती कि वोह किस ह़ाल में हैं ? उन के घर वाले किस ह़ाल में हैं ? काश हम भी हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुख्यारी उम्मत की ख़ैरख़्वाही करने वाले बन जाएं, खुसूसन उन लोगों के मुआ़मले में जिन के हुक़ूक़ हम पर हैं, जिन के बारे में हो सकता है कल बरोज़े क़ियामत हम से पूछगछ हो, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा हमारे लिये बेहतरीन नमूना है, अगर आज भी हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की भलाइयां हमारा मुक़द्दर होंगी ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......رياض النضرة، ج ١، ص ٣١٦ - ٣١٧ مفهوماً

www.dawateislami.net

इज़ाफ़ी हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी

मुख़्तलिफ़ मुआमलात में मुशावरत

किसी भी हाकिम या ज़िम्मेदार का उस की रिआया या मा तह़त इस्लामी भाइयों के साथ जो तअ़ल्लुक़ है इस में एक त़बई ह़क़ मुशावरत भी है, जो ज़िम्मेदार अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों से किसी भी मुआ़मले में मुशावरत नहीं करता वोह अपने मा तह़त से मत़लूबा नताइज ह़ासिल न करने के साथ साथ अपनी ज़िम्मेदारी ब त़रीक़े अह़सन निभाने में भी नाकाम रहता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़वामुन्नास के इस ह़क़ को ब त़रीक़े अह़सन पूरा फ़रमाया करते थे, मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मुशावरत आप की आ़दते मुबारका थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुख़्तलिफ़ मजालिसे मुशावरत भी क़ाइम फ़रमाई थीं जिन से अहम उमूर में मुशावरत फ़रमाया करते थे, जहां अ़वामी मश्वरे की ह़ाजत होती वहां अ़वामी मश्वरा लेते और जहां किसी ख़ुसूसी मश्वरे की ह़ाजत होती वहां ख़ुसूसी मश्वरा त़लब फ़रमाते, जो बात त़ै होती उसे अ़वामुन्नास में राइज कर दिया जाता।(1)

अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम

जैसे "प्यासे" के लिये पानी और भूके के लिये "खाना" बहुत अहम्मिय्यत का ह़ामिल है, भूक प्यास की कैफ़िय्यत में अगर वोह पानी और खाना न भी त़लब करें मगर इन दोनों का येह लाज़िमी ह़क़ है, इसी त़रह़ रिआ़या, अ़वामुन्नास और मा तह़त लोगों को अ़द्लो इन्साफ़ दिलाना, उन्हें जान माल का तह़फ़्फ़ुज़ देना हाकिमे वक़्त या ज़िम्मेदार पर एक लाज़िमी ह़क़ है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस ह़क़ के मुआ़मले में बहुत ह़स्सास थे, आप ने अपनी सल्त़नत में ऐसा अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम फ़रमाया जिस की तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती।(2)

मुआ़शरे में आज़ादिये राए

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में लोगों को हर त़रह़ की आज़ादी अ़त़ा फ़रमाई, किसी शख़्स पर कोई भी ग़ैर शरई पाबन्दी आ़इद न थी।(3)

---

1 ....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम" सफ़ह़ा 186 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 ....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया" सफ़ह़ा 247 का मुत़ालआ़ कीजिये।

3 ....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त" सफ़ह़ा 226 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

मुजरिमों को सज़ाएं देना

रिआया के हुक़ूक़ में बा'ज़ ऐसे भी हुक़ूक़ होते हैं जो उन के साथ बिला वासिता मुतअ़ल्लिक़ होते हैं, जब कोई शख़्स किसी जुर्म का मुरतकिब होता है तो हाकिमे वक़्त को दो त़रह़ के हुक़ूक़ की अदाएगी करना पड़ती है, एक तो येह कि वोह उस मुजरिम की गिरिफ़्त कर के उस की इस्लाह़ का सामान करे ताकि वोह आइन्दा पेश आने वाले नुक़्सान से बच सके। दूसरा ह़क़ येह है कि वोह उस मुजरिम को सज़ा दे कर मुआ़शरे को जराइम से बचाए, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस अ़वामी ह़क़ को ब त़रीके़ अह़सन पूरा फ़रमाया।[1]

ज़ालिमों के ज़ुल्म से बचाना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ होने के बा'द जो सब से पहला खुत़बा था वोह इन ही मदनी निकात पर मुश्तमिल था कि मैं ज़ालिमों की सरकोबी करते हुवे मज़्लूमों को उन के ज़ुल्म से बचाऊंगा, तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है, नीज़ तारीख़ इस बात की गवाह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसा फ़रमाया था वैसा कर दिखाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में हर हर ज़ालिम की सरकोबी फ़रमाई और हमेशा मज़्लूमों की दाद रसी की।

मुफ़्त निज़ामे ता'लीम का नफ़ाज़

रियासत की अ़वाम व रिआ़या के बुन्यादी हुक़ूक़ में से एक बुन्यादी ह़क़ येह भी है कि ह़ाकिमे वक़्त उन के लिये अच्छी ता'लीम का मुफ़्त इन्तिज़ाम करे, क्यूंकि ता'लीम एक ऐसा हथयार है जिस के ज़रीए़ मुआ़शरे को अम्न का गहवारा बनाया जा सकता है, ता'लीम से आइन्दा आने वाली क़ौमों पर गहरे असरात मुरत्तब होते हैं, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में बिला मुआ़वज़ा ता'लीम का ऐसा निज़ाम राइज फ़रमाया कि अ़वामो ख़वास, छोटे बड़े सब फ़ैज़ाने इल्म से फ़ैज़याब हुवे।[2]

1....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब" सफ़ह़ा 344 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2....तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़हदे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां" सफ़ह़ा 409 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

मुसाफ़िरों व मेहमानों की ख़ैरख़्वाही

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सल्तनत में मुक़ीम लोगों के इलावा मुसाफ़िरों व मेहमानों के हुक़ूक़ का भी पूरा पूरा ख़याल रखा करते थे, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा और इसी त़रह़ दीगर रास्तों पर मुसाफ़िरों के लिये मेहमान ख़ानों और सबीलों का इन्तिज़ाम फ़रमाया।

रिआ़या की ख़बरगीरी करना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "वोह ह़ाकिम ही क्या जिसे अपनी रिआ़या की ख़बर न हो।" अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि अपनी रिआ़या की हर वक़्त ख़बरगीरी फ़रमाते रहते, सह़राए अ़रब की चिलचिलाती धूप और रात की घटाटोप सियाही भी रिआ़या की ख़बरगीरी से आप को न रोक सकी। आप की सीरते त़य्यिबा के बे शुमार ऐसे वाक़िआ़त हैं जिस में आप ने अपनी रिआ़या की ख़बरगीरी करते हुवे उन के मुख़्तलिफ़ मसाइल को ह़ल फ़रमाया। चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं।

भूके बच्चों वाली ख़ातून की दाद रसी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने ख़ादिम के साथ रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमा रहे थे, एक ख़ातून अपने बच्चों के साथ अपने घर में मौजूद थी, जो रात के वक़्त अपने बच्चों को बहलाने के लिये हन्डिया में पानी डाल कर चुल्हे पर चढ़ाए बैठी थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की दाद रसी फ़रमाई, अपने कांधों पर खाने का सामान ले कर आए, ख़ुद अपने हाथों से पका कर उस ख़ातून के बच्चों को खिलाया, जब तक वोह बच्चे सो न गए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहीं रहे, बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए।(1)

सह़ाबी की साहिबज़ादी की दस्तगीरी

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़बीलए बनू ग़िफ़्फ़ार के इमाम व ख़त़ीब थे, आप को ग़ज़्वए हुदैबिय्या में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आप का इन्तिक़ाल हुवा। एक मरतबा आप की साहिबज़ादी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े

(1) الکامل فی التاریخ، ج۲، ص ۴۵۳۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : ''मेरे शौहर का इन्तिक़ाल हो चुका है और उन्हों ने अपने पीछे छोटी छोटी बच्चियां छोड़ी हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! न तो हमारे पास बकरी के पाए हैं (कि उन्हें पका कर गुज़र बसर कर लें) न ही खेत हैं और न ही दूध देने वाले जानवर। अगर सिलसिला यूं ही चलता रहा तो मुझे डर है कि येह फ़क्रो फ़ाक़ा इन की हलाकत का सबब न बन जाए।'' अपने मुआ़शी मसाइल बयान करने के बा'द उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ करवाते हुवे अ़र्ज़ की : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी हूं, मेरे वालिदे मोह़तरम ग़ज़्वए हुदैबिय्या में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ाज़िर थे।'' सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : مَرْحَباً بِنَسَبٍ قَرِيْبٍ ''या'नी नसबे क़रीब को ख़ुश आमदीद।'' फिर आप एक क़वी ऊंट की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और उस पर ग़ल्ले की दो बोरियां लादीं, उन के दरमियान ज़रूरत की काफ़ी सारी अश्या रख दीं और उस ऊंट की नकील उन ख़ातून के हाथ में दे दी और इरशाद फ़रमाया : ''जाओ इसे ले जाओ, इस के ख़त्म होने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस से बेहतर अ़ता फ़रमाएगा।''[1]

अपाहज, नाबीना, बूढ़ी औ़रत की मदद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार रात के वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर से निकले तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें देख लिया और चुपके चुपके उन का पीछा करने लगे कि देखूं अमीरुल मोमिनीन इस वक़्त कहां जा रहे हैं ? सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक घर में दाख़िल हो गए। कुछ देर के बा'द बाहर आए और फिर एक और घर में दाख़िल हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस घर को ज़ेह्न में बिठा लिया और सुब्ह़ उस घर में गए तो देखा कि उस घर में एक बूढ़ी, अपाहज नाबीना ख़ातून रहती है। उस से पूछा : مَا بَالُ هٰذَا الرَّجُلِ يَاْتِيْكِ؟ ''या'नी येह शख़्स तुम्हारे घर में क्यूं आता है ?'' उस ने कहा : اِنَّهُ يَتَعَاهَدُنِيْ مُنْذُ كَذَا وَكَذَا، يَاْتِيْنِيْ بِمَا يُصْلِحُنِيْ وَيُخْرِجُ عَنِّي الْاَذٰى ''या'नी येह शख़्स मेरे पास काफ़ी अ़र्से

---

1 .....بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ، ج ۳، ص ۰ ۷، حدیث: ۱ ۶ ۱ ۴ ملخصاً۔
الاستیعاب، خفاف بن ایماء، ج ۲، ص ۳ ۲، الرقم: ۱ ۷ ۶۔

www.dawateislami.net

से आ रहा है (मैं चूंकि मा'ज़ूर हूं लिहाज़ा) येह मेरे घरेलू काम-काज कर देता है, मेरी तकालीफ़ दूर कर देता है।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत रन्जीदा हुवे और अपने आप से कहने लगे : ثَكِلَتْكَ اُمُّكَ يَا طَلْحَةُ اَعَثَرَاتِ عُمَرَ تَتَّبِعُ "या'नी ऐ त़ल्ह़ा ! तेरी मां तुझे रोए ! तू अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ामियां तलाश करता है !"(1)

शीर ख़्वार बच्चे वाली ख़ातून की ख़ैरख़्वाही

मदीनए मुनव्वरा से बाहर ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ज़ाते ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रात के वक़्त उन की निगरानी करने की ज़िम्मेदारी ले ली, चुनान्चे, दोनों ने शब बेदारी करते हुवे उस क़ाफ़िले में इस त़रह़ निगरानी की, कि बारी बारी दोनों नमाज़ पढ़ते रहे, उसी क़ाफ़िले से एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की मां से चुप करवाने के लिये कहा, दूसरी मरतबा भी ऐसा ही हुवा फिर तीसरी मरतबा भी हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस ख़ातून के पास गए और उस से अस्ल माजरा दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ख़ातून ने कहा : "अमीरुल मोमिनीन ने दूध पीने वाले बच्चों का वज़ीफ़ा जारी नहीं किया इस लिये मैं इस का दूध छुड़ा रही हूं।" आप फ़ज्र की नमाज़ के दौरान रोते रहे और नमाज़ के बा'द मुनादी के ज़रीए़ येह ए'लान करवा दिया कि कोई औ़रत अपने बच्चे का दूध न छुड़ाए कि अब एक दिन के बच्चे को भी बैतुल माल से वज़ीफ़ा दिया जाएगा।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ग़म ख़्वारी करना, उन के ग़म में शरीक होने के साथ साथ उन का मदावा करना एक अ़ज़ीम सआ़दत है। अगर तमाम इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेहन बना लें कि मुझे कम अज़ कम उन लोगों की ख़ैरिय्यत ज़रूर दरयाफ़्त करनी है जिन का मेरे साथ कोई न कोई तअ़ल्लुक़ है, मेरे साथ काम करते हैं, मेरे साथ उठते बैठते हैं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक पुर अम्न मुआ़शरे के साथ साथ उम्मत की ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से भरपूर मदनी माह़ोल बनाने में भी मुआ़वनत मिलेगी। इस दुख्यारी उम्मत की ख़ैरख़्वाही का अपने अन्दर जज़्बा पैदा कीजिये। अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मुरीदीन, मुतअ़ल्लिक़ीन व मुहि़ब्बीन को ख़ैरख़्वाही की तल्क़ीन फ़रमाते ही रहते हैं, आप

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ٦٨، حلیة الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج ١، ص ٨٤۔

2 ......البدایه والنهایة، ج ٥، ص ٢١٥-٢١٦ مفهوما۔

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अपना ज़ाती अ़मल भी येही है कि जब किसी इस्लामी भाई के बारे में मा'लूम हो कि वोह किसी आज़्माइश में मुब्तला है तो ह़त्तल मक्दूर फ़ोन वग़ैरा कर के उस की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते हैं, नीज़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जो हमें मदनी इन्आ़मात का तोह़फ़ा अ़ता फ़रमाया है उस में भी इस बात की तरग़ीब दिलाई है चुनान्चे, इस्लामी भाइयों के 72 मदनी इन्आ़मात में से 53 वां मदनी इन्आ़म है : "क्या आप ने इस हफ़्ते कम अज़ कम एक मरीज़ या दुख्यारे के घर या अस्पताल जा कर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **ग़म ख़्वारी** की ? और उस को तोह़फ़ा (ख़्वाह मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला या पेम्फ़्लेट) पेश करने के साथ साथ ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के इस्ति'माल का मश्वरा दिया ?"

नाबीना सह़ाबी के लिये रहनुमा की तक़र्रुरी

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन यरबूअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बहुत ही जलीलुल क़द्र और त़वील उ़म्र पाने वाले सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इन की बीनाई चली गई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه इन के पास आए और ता'ज़िय्यत फ़रमाई। साथ ही येह भी इरशाद फ़रमाया : لَا تَدَعِ الْجُمُعَةَ وَلَا الْجَمَاعَةَ فِيْ مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में न तो जुमुआ़ की नमाज़ छोड़ें और न ही जमाअ़त को तर्क करें।" इन्हों ने अ़र्ज़ किया : لَيْسَ لِيْ قَائِدٌ "या'नी मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स नहीं जो मुझे मस्जिद तक ले जाए।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इस मुआ़मले में एक शख़्स की ड्यूटी लगा दी।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि ख़लीफ़ए वक़्त थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के पास इतना वक़्त नहीं था कि उन नाबीना सह़ाबी को ख़ुद ले कर आते इस लिये आप ने एक और शख़्स की ज़िम्मेदारी लगा दी। ग़म ख़्वारी करने का येह भी एक अच्छा त़रीक़ा है कि अगर आप के पास इतना वक़्त नहीं है या वसाइल नहीं हैं तो आप किसी ऐसे इस्लामी भाई की तवज्जोह मब्ज़ूल करवा दें जो मुतअ़ल्लिक़ा इस्लामी भाई की ख़ैरख़्वाही कर सकता है, यूं आप भलाई के काम में मुआ़वनत करने वाले बन जाएंगे और यक़ीनन भलाई के कामों में मदद करने वाला भी ऐसा ही है जैसे उस ने ख़ुद भलाई की हो। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِنَّ الدَّالَّ عَلَى الْخَيْرِ كَفَاعِلِهٖ "या'नी भलाई की त़रफ़ रहनुमाई करने वाला, भलाई करने वाले की त़रह है।"(2)

---

1 ......اسد الغابة، سعيد بن يربوع، ج ۲، ص ۴۷۰۔

2 ......ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء الدال علی ۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۰۵، حدیث: ۲۶۷۹۔

www.dawateislami.net

शौहर की जुदाई पर दाद रसी

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा की गलियों में रात को दौरा फ़रमा रहे थे कि किसी मकान से एक औ़रत के अश्आ़र की आवाज़ आई जो अपने शौहर की जुदाई को बड़े ही दिलसोज़ अन्दाज़ में बयान कर रही थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब सूरते ह़ाल दरयाफ़्त की तो मा'लूम हुवा कि उस का शौहर जिहाद पर गया हुवा है और वोह उस की जुदाई पर ग़मगीन है, लिहाज़ा आप ने अपनी लाडली बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا के मश्वरे से इस्लामी फ़ौज में येह हुक्म जारी फ़रमा दिया कि कोई भी फ़ौजी चार माह से ज़ियादा अपने घरवालों से दूर न रहे।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाके़ई येह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ियामत तक आने वाले तमाम मुसलमानों पर एह़साने अ़ज़ीम है कि आप के ज़रीए़ एक अहम शरई मस्अला उम्मते मुस्लिमा तक पहुंचा जिस का तअ़ल्लुक़ मियां बीवी के हुकू़क़ से है, नीज़ आप के इस मुबारक अ़मल से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ इयां हो जाती है कि بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی मुसलमान फ़क़त़ आज नहीं बल्कि चौदह सौ साल पहले भी हुकू़कु़ल इबाद और हुकू़के़ आ़म्मा के मुहाफ़िज़ थे।

फ़ारूके़ आ'ज़म की एक ख़ानदान की दाद रसी

एक रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमा रहे थे कि एक ख़ैमे पर नज़र पड़ी, जब क़रीब गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी के तक्लीफ़ में मुब्तला होने की आवाज़ें आईं, उस ख़ैमे के बाहर एक शख़्स बैठा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सलाम के बा'द उस से ह़ाल दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि वोह ख़लीफ़ए वक़्त से ही मिलने आया है अलबत्ता उसे येह मा'लूम नहीं था कि ख़लीफ़ए वक़्त उस के सामने खड़ा है। बहर ह़ाल उस ने बताया कि उस की ज़ौजा ह़ामिला है और वोह दर्दे ज़ेह (बच्चे की पैदाइश से पहले होने वाले दर्द) में मुब्तला है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर तशरीफ़ लाए और अपनी ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से फ़रमाया : "क्या तुम सवाब कमाना चाहती हो ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे ख़ुद तुम

---

(1) ......مصنف عبدالرزاق، باب حق المراة علی زوجها، ج۷، ص۱۱۹، حدیث:۱۲۶۲۵ ملخصاً

www.dawateislami.net

तक पहुंचाया है !" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! क्या बात है ?" आप ने फ़रमाया : "एक अजनबी औ़रत दर्दे ज़ेह में मुब्तला है और उस के पास कोई भी नहीं है।" अ़र्ज़ किया : "अगर आप राज़ी हैं तो मैं चलती हूं।" फ़रमाया : "ठीक है तुम ज़रूरी सामान वग़ैरा ले कर चलो।" जब वहां पहुंचे तो आप ने अपनी ज़ौजा को अन्दर भेज दिया और खुद उस शख़्स के पास बैठ गए। उस से फ़रमाया : "आग जलाओ।" उस ने आग जलाई तो आप ने हांडी उस के ऊपर रख दी। जब हांडी पक गई तो दूसरी त़रफ़ बच्चे की विलादत भी हो गई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने अन्दर से आवाज़ दी : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अपने साथी को बेटे की खुश ख़बरी दे दीजिये।" जैसे ही उस शख़्स ने लफ़्ज़ "अमीरुल मोमिनीन" सुना तो डर गया और आ़जिज़ी के साथ थोड़ा सा पीछे हट के बैठ गया। आप ने फ़रमाया : "जैसे बैठे थे वैसे ही बैठे रहो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हान्डी उठा कर अपनी ज़ौजा को दी और फ़रमाया कि : "ख़ातून को खिलाओ और उसे आसूदा करो।" फिर आप ने उस शख़्स को भी खाने के लिये दिया और फ़रमाया : "कल सुब्ह मेरे पास आना मैं तुम्हारी ज़रूरिय्यात को पूरा कर दूंगा।" जब वोह शख़्स सुब्ह आप के पास आया तो आप ने उस के नौ मौलूद बच्चे का वज़ीफ़ा भी जारी किया और उसे भी माल वग़ैरा अ़ता किया।[1]

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कैसी सादा और मुबारक ज़िन्दगी थी कि आप की रिआ़या में से बा'ज़ लोग आप को पहचान न पाते थे, जैसा कि मज़्कूरा वाक़िए़ में उस शख़्स को एह़सास भी न हुवा कि मेरे साथ बैठने वाले ही अमीरुल मोमिनीन हैं। काश हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे सादा ज़िन्दगी बसर करने वाले बन जाएं।

......येह भी मा'लूम हुवा कि बच्चे की पैदाइश पर मुबारक बाद देना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के अ़ह्दे मुबारका में भी राइज था, जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने बच्चे की मुबारक बाद दी। जब एक आ़म बच्चे के दुन्या में आने पर मुबारक बाद देना जाइज़ है तो यक़ीनन औलियाए किराम, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام सय्यिदुल अम्बिया, अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत पर एक दूसरे को

1 ......التبصرة، المجلس التاسع والعشرون فی فضل۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۲۰۔

www.dawateislami.net

मुबारक बाद देना भी न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि बाइसे ख़ैरो बरकत है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में हमें ईमान मिला, क़ुरआन मिला, इस्लाम मिला, बल्कि सारा जहान मिला और कल बरोज़े क़ियामत भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के सदक़े जन्नतुल फ़िरदौस में आ'ला मक़ाम मिलेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मुसलमानो सुब्हे बहारां मुबारक .... कि बरसाते अन्वार सरकार आए

न क्यूं बारहवीं पे हमें प्यार आए .... कि आए इसी रोज़ सरकार आए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ौजियों के हुक़ूक़ की रिआयत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ शहरों में मुक़ीम लोगों के हुक़ूक़ की रिआयत फ़रमाते बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौजियों के हुक़ूक़ की भी पासदारी फ़रमाते थे, आप ने फ़ौजियों के हुक़ूक़ का हर त़रह़ से ख़याल रखा, आप की येह कोशिश होती थी कि किसी भी फ़ौजी को कोई तक्लीफ़ न हो ह़त्ता कि आप उन के घरवालों का भी ख़ुद ही ख़याल रखा करते थे।(1)

माले ग़नीमत की तक़्सीम कारी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का माले ग़नीमत की तक़्सीम का त़रीक़ा वोही था जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि उस का ख़ुमुस निकाल कर बक़िय्या तमाम मुजाहिदीन में तक़्सीम फ़रमा दिया करते थे। ख़ुमुस के भी जो मसारिफ़ थे उसे भी उन में ख़र्च फ़रमाया करते थे।

ख़ुमुस से ख़ानदाने रसूलुल्लाह की ख़ैरख़्वाही

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर इराक़ के माले ग़नीमत में से ख़ुमुस आ गया तो मैं किसी हाशिमी को निकाह़ करवाए बिग़ैर न छोडूंगा और जिस के पास कनीज़ न होगी उसे ख़िदमत गुज़ार कनीज़ फ़राहम करूंगा।"(2)

---

(1)....तफ़्सीलात के लिये इसी किताब के बाब "अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह़कमए पोलीस व फ़ौज" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(2)......کتاب الاموال لابی عبید، کتاب الخمس واحکامہ وسننہ، باب سھم ذی القربی۔۔۔الخ، ص ۳۴۵، الرقم: ۸۵۵۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से बेहद महब्बत फ़रमाया करते थे और अपने आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान का ख़ादिम समझते थे, हालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द पूरी उम्मत में सब से अफ़्ज़ल हैं ।

औरतों वाला बेग सय्यिदा आइशा को दे दिया

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते सय्यिदुना ज़कवान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ख़वातीन वाला थैला (Ladies Bag) आया । अक्सर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उसे देखा लेकिन उस की क़ीमत का अन्दाज़ा न लगा सके । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर आप लोग इजाज़त दें तो मैं इसे हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भेज दूं क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से बहुत ज़ियादा महब्बत फ़रमाया करते थे ।" सब ने ब ख़ुशी इजाज़त दे दी तो सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वोह बेग भेज दिया गया ।(1)

येह माल उ़मर या इन की औलाद का नहीं

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि लोगों को उन के वज़ीफ़े और अ़तिय्यात दे दो । उन्हों ने तक़्सीम कर दिये लेकिन माल बच गया, लिहाज़ा उन्हों ने जवाबन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि तक़्सीम करने के बा'द भी माल बच गया है । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा लिखा : "जो माल बाक़ी बच गया है वोह भी उन्हीं में तक़्सीम कर दो क्यूंकि येह उन ही का माल है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को दिया है, येह माल उ़मर या उन की औलाद का नहीं ।"(2)

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، تعظیم عمر لعائشۃ ـ ـ ـ الخ، ج۵، ص۱۰، حدیث: ۶۷۸۵ـ

2 ......طبقات کبری، استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۷ـ

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! वक़्फ़ का वोह माल जो किसी मख़्सूस मद में दिया गया हो उसे उसी मद में ख़र्च करना ज़रूरी है, इस के इलावा दीगर जगहों में ख़र्च नहीं किया जा सकता । इस के इस्ति'माल में हर तरह की एहतियात कीजिये ।(1)

अपने अहले ख़ाना पर दूसरों को तरजीह

हज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन अबी मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए त़य्यिबा की औ़रतों में रेशमी चादरें तक़्सीम कीं, जिन में से एक उ़म्दा चादर बच गई । बा'ज़ लोगों ने कहा : ''ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह चादर अपनी ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दे दें ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''उम्मे सलीत़ इस की ज़ियादा ह़क़दार हैं क्यूंकि उन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की है और जंगे उहुद में हमारे लिये मश्कीज़े उठा कर लाया करती थीं ।''(2)

पन्दरह हज़ार दिरहम का हार दे दिया

वाज़ेह़ रहे कि जंग में उ़मूमन ऐसा होता था कि अव्वलन दोनों लश्करों के बहादुर सिपाही फ़र्दन फ़र्दन या'नी एक एक कर के मुक़ाबले के लिये मैदान में आते थे, इस सूरते मख़्सूसा का क़ाइदा येह था कि अगर कोई मुसलमान मुक़ाबले में किसी काफ़िर को क़त्ल कर देता तो उस काफ़िर का सारा साज़ो सामान उस मुक़ाबला करने वाले मुसलमान को दे दिया जाता था, उसे जंग के बा'द जम्अ़ किये जाने वाले माले ग़नीमत में शामिल नहीं किया जाता था । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा तो उन्हों ने एक फ़ारसी बादशाह को क़त्ल कर दिया । उस का एक इन्तिहाई क़ीमती हार था जिस की क़ीमत पन्दरह हज़ार दिरहम थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह हार हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया ।(3)

1....वक़्फ़ के तफ़्सीली मसाइल जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब ''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब'' का मुत़ालआ़ कीजिये ।

2......بخاری، کتاب الجھاد والسیر، باب حمل النساء القرب الی الناس فی الغزو، ج۲، ص۲۷۶، حدیث: ۲۸۸۱۔

3......تاریخ ابن عساکر، ج۲۷، ص۱۵۱، سیر اعلام النبلاء، فصل فی بقیۃ کبراء الصحابۃ، ج۳، ص۹۰، الرقم: ۱۸۳۔

www.dawateislami.net

पैदल के लिये एक, सुवार के लिये दुगना हिस्सा

माले ग़नीमत का एक उसूल येह भी था घुड़ सुवार फ़ौजी को दो हिस्से एक उस का और एक उस की सुवारी का दिया जाता था जब कि पैदल फ़ौजी को फ़क़त़ एक ही हिस्सा सिर्फ़ उसी की ज़ात का दिया जाता था। येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि "अ़रबी घुड़ सुवार के लिये दो हिस्से, पैदल के लिये एक हिस्सा और ख़च्चर वाले के लिये भी एक ही हिस्सा है।"(1)

माले फ़ै में तमाम लोगों का हिस्सा है

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन औस बिन ह़दसान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने माले फ़ै (या'नी बिग़ैर जंग के दुश्मनों से ह़ासिल होने वाले माल) का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस माले फ़ै का सिर्फ़ मैं ही ह़क़दार नहीं बल्कि हम में से हर शख़्स इस का ह़क़दार है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुसलमानों में से ग़ुलामों के इलावा कोई भी शख़्स ऐसा नहीं है जिस का इस माले फ़ै में ह़िस्सा न हो, अलबत्ता इस की तक़्सीम क़ुरआनो सुन्नत के बयान कर्दा दरजात के मुत़ाबिक़ होगी जिस में किसी का क़दीमुल इस्लाम होना, इस्लाम की ख़ात़िर ज़ियादा तकालीफ़ बरदाश्त करना, घर बार वाला होना, इस्लाम में बहुत ज़ियादा मशक़्क़त वाला होना, ह़ाजत मन्द होना वग़ैरा का भी लिह़ाज़ रखा जाएगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मैं ज़िन्दा रहा तो सन्आ़ पहाड़ के चरवाहे का भी इस माल में ह़िस्सा होगा, ह़ालांकि वोह अपनी बकरियां भी चरा रहा होगा।"(2)

अ़हदे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ का निज़ाम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़वामुन्नास व रिआ़या के ह़ुक़ूक़ की पासदारी का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रियासत के मुख़्तलिफ़ लोगों के लिये वज़ाइफ़ का इजरा फ़रमाया, वज़ाइफ़ दर अस्ल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से अ़वामुन्नास की बेहतरीन माली ख़ैरख़्वाही थी जिस से लोगों की माली ह़ालत बहुत बेहतर हो गई, नीज़ उन की ज़रूरिय्यात भी पूरी होती गईं। वज़ाइफ़ दर अस्ल अ़वामो ख़वास तमाम लोगों के लिये होते थे, जंगों में शिर्कत करने वाले फ़ौजी ह़ज़रात से ले कर

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، باب السھام للخیل، ج۵، ص۱۲۸، حدیث: ۹۳۸۸۔

2 ......ابو داود، کتاب الخراج۔۔۔الخ، باب فیما یلزم۔۔۔الخ، ج۳، ص۱۸۹، حدیث: ۲۹۵۰، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۷۔

www.dawateislami.net

अ़वामुन्नास में से एक आ़म शख़्स तक सब को सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से वज़ाइफ़ दिये जाते थे। अलबत्ता मरातिब के ए'तिबार से वज़ाइफ़ में भी फ़र्क़ था। इन तमाम वज़ाइफ़ की तफ़्सील कुछ यूं है।

वज़ाइफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने फ़ारूके आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक माल बढ़ता रहेगा मैं वज़ाइफ़ भी बढ़ाता रहूंगा और उन की गिनती को पूरा करूंगा, मैं उन को मुठ्ठियां भर भर कर बिला ह़िसाब दूंगा क्यूंकि लोग जो माल ले रहे हैं वोह उन्ही का है।"(1)

ख़लीफ़ा बनते ही वज़ाइफ़ जारी फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप ने वज़ाइफ़ मुक़र्रर फ़रमाए, दीवान मुरत्तब फ़रमाए और लोगों को आपस में एक दूसरे से रूशनास व मुतआ़रिफ़ कराया। सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे साथियों से मुझे रूशनास करवाया।"(2)

बैतुल माल और रजिस्टर बनाए

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बह़रैन से माले ग़नीमत ले कर ह़ाज़िर हुवे। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "कितना माल लाए हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "पांच लाख दिरहम" फ़रमाया : "तुम जानते हो कि क्या कह रहे हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "जी हुज़ूर ! पांच लाख दिरहम या'नी एक लाख, एक लाख, एक लाख, एक लाख और एक लाख।" सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कल सुब्ह़ आना।" जब वोह दूसरी सुब्ह़ ह़ाज़िर हुवे तो आप ने दोबारा पूछा कि कितना माल लाए हो ?" उन्हों ने वोही जवाब दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस कसीर माल की तक़्सीम के लिये मश्वरा किया, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रजिस्टर बनाने का

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۱۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، باب ماقالوافی الفروض۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۶۱۸، حدیث: ۱۸۔

www.dawateislami.net

मश्वरा दिया जिस में तमाम लोगों के नाम लिखे जाएं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रजिस्टर बनाने का हुक्म दिया।(1)

तमाम मुसलमानों को जिज़्या मिलता रहे

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर आख़िरी मुसलमान बाक़ी हो और कोई अ़लाक़ा फ़त्ह़ हो तो मैं उस के ह़िस्से मुसलमानों के दरमियान वैसे ही तक़्सीम करूंगा जैसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर की ज़मीन तक़्सीम फ़रमाई थी, लेकिन मैं येह चाहता हूं कि मुसलमानों को हमेशा जिज़्या मिलता रहे और ऐसा न हो कि आख़िरी मुसलमान के लिये कुछ न बचे।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की दूरअन्देशी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दूरअन्देशी थी कि अगर इस ज़मीन को तक़्सीम कर दिया जाता तो सब लोग अपना अपना ह़िस्सा ले कर चले जाते और फिर इसे अपने इस्ति'माल में ले आते जिस से इस के फ़वाइद फ़क़त़ उन्ही तक मह़दूद रहते और आइन्दा आने वाले मुसलमान इस से मह़रूम हो जाते। मा'लूम हुवा कि ह़ाकिमे वक़्त को चाहिये कि मुल्की मईशत के मुआ़मले में वोह तमाम जाइज़ और शरई इक़्दामात करे जिस से मौजूदा मुसलमानों के साथ साथ आइन्दा आने वाले मुसलमानों को भी भरपूर फ़ाइदा ह़ासिल हो।

मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारान के वज़ाइफ़

हज़रते सय्यिदुना अबू मिज्लज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीनों को कूफ़ा भेजा। सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ और क़िताल वग़ैरा के मुआ़मलात का निगरान बनाया, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ज़ा और बैतुल माल के मुआ़मलात का निगरान बनाया, सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمۃ، باب التفضیل علی۔۔۔الخ، ج۶، ص۵۶۹، حدیث:۱۲۹۹۶۔

2 ......بخاری، کتاب الحرث والمزارعۃ، باب اوقاف۔۔۔الخ، ج۲، ص۸۹، حدیث:۲۳۳۴۔

www.dawateislami.net

को ज़मीन की पैमाइश का निगरान बनाया। इन तीनों ज़िम्मेदारान के लिये रोज़ाना एक बकरी का मुशाहरा मुक़र्रर फ़रमाया इस त़रह़ कि आधी सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये, एक चौथाई सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये और एक चौथाई सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये।(1)

वज़ाइफ़ देने की तरतीब

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वज़ाइफ़ जारी करने का इरादा फ़रमाया तो लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! सब से पहले अपनी ज़ात से शुरूअ़ करें।" फ़रमाया : "नहीं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ुर्बत का लिह़ाज़ करते हुवे वज़ाइफ़ देना शुरूअ़ किये, चुनान्चे, सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वज़ीफ़ा अ़त़ा फ़रमाया, फिर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को वज़ीफ़ा अ़त़ा फ़रमाया यहां तक कि पांच क़बाइल को दे दिया और फिर सब से आख़िर में अपने क़बीले या'नी अ़दी बिन का'ब को वज़ाइफ़ दिये।(2)

रसूलुल्लाह के रिश्तेदारों का लिहाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि एक बार मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आठ लाख दिरहम ले कर पहुंचा, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या ले कर आए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "आठ लाख दिरहम।" फ़रमाया : "तुम अस्सी हज़ार लाए होगे।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "नहीं बल्कि मैं आठ लाख दिरहम ही लाया हूं।" फ़रमाया : "मैं ने तुम से कहा नहीं था कि तुम यमन के बे अ़क़्ल आदमी हो, तुम अस्सी हज़ार ही लाए होगे, अच्छा येह बताओ आठ लाख कितने होते हैं ?" मैं ने एक एक लाख कर के गिने यहां तक कि आठ लाख हो गए। फ़रमाया : "क्या येह पाकीज़ा माल है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।"

बा'दे अज़ां आप अपने घर तशरीफ़ ले गए और पूरी रात बे चैनी में गुज़ारी, सुब्ह़ आप की ज़ौजा ने वज्ह पूछी तो फ़रमाया : "उ़मर बिन ख़त़्त़ाब को कैसे नींद आ सकती है कि अब इतने लोग आ

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، ما اخذ من الارض عنوۃ، ج٦، ص ٨٠، حدیث: ١٠١٦٤ ملخصا۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجہاد، ماقالوا فیمن یبدابہ۔۔۔الخ، ج٧، ص ٦٢٠، حدیث: ١۔

www.dawateislami.net

गए कि ज़मानए इस्लाम में कभी इतने न थे, अगर उ़मर इस माल को इस के ह़क़दारों तक पहुंचाए बिग़ैर मर गया और हलाक हो गया तो इसे कौन बचाएगा ?" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हुवे तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप के पास जम्अ़ हो गए, फ़रमाया : "आज रात इतना माल आया है कि पहले कभी इतना माल नहीं आया, आप लोग मश्वरा दें कि क्या किया जाए ? मैं ने तो येह सोचा है कि लोगों को पैमाने भर भर कर दूं।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ऐसा न करें क्यूंकि लोग इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं और माल बढ़ता जा रहा है, बल्कि आप इन को किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ देते जाइये, क्यूंकि इस त़रह़ जब भी माल ज़ियादा होगा और लोग भी ज़ियादा होंगे तो आप आसानी से वज़ाइफ़ दे सकेंगे।" फ़रमाया : "मुझे येह मश्वरा दो कि पहले किस से शुरूअ़ करूं ?" अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अपने आप से शुरूअ़ कीजिये, क्यूंकि आप ही इस मुआ़मले के ज़िम्मेदार हैं, आप अमीरुल मोमिनीन हैं।" फ़रमाया : "नहीं बल्कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शुरूअ़ करता हूं, फिर जो आप के ज़ियादा क़रीब हो, फिर इसी त़रह़ दरजा ब दरजा।" चुनान्चे, इसी के मुत़ाबिक़ फ़ेहरिस्त तय्यार की गई, बनू हाशिम, बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब से शुरूअ़ किया गया और इन सब को दिया गया फिर बनू अ़ब्दे शम्स को दिया गया, फिर नौफ़ल बिन अ़ब्दे मुनाफ़ को दिया गया।(1)

मुहाजिरीने अव्वलीन का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुहाजिरीने अव्वलीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का वज़ीफ़ा चार चार हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाया, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़ीफ़ा साढ़े तीन हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया। जब इस की वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : "इन के वालिदैन इन को हिजरत कर के अपने साथ लाए थे इस लिये येह उन की त़रह़ नहीं जिन्हों ने अज़ ख़ुद हिजरत की।"(2)

मुहाजिराते अव्वलीन का वज़ीफ़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वलन हिजरत करने वाली सह़ाबिय्यात का वज़ीफ़ा एक एक हज़ार दिरहम मुक़र्रर फ़रमाया, इन सह़ाबिय्यात में

1 ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمة، باب اعطاء الفی علی الدیوان۔۔۔الخ، ج٦، ص ٥٩١، حدیث: ١٣٠٧٠۔

2 ......بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی۔۔۔الخ، ج ٢، ص ٥٩٧، حدیث: ٣٩١٢۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस, आप की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़ब्द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) के अस्माए मुबारका शामिल हैं।[1]

अन्सार का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्सार के लिये चार हज़ार वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया।[2]

जंगे बद्र में शरीक होने वालों का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे बद्र में शरीक होने वाले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का वज़ीफ़ा पांच हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया।[3]

शरीकाने बद्र की औलाद का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे बद्र में शरीक होने वाले ऐसे अफ़राद जिन की औलाद जंगे बद्र में शरीक न हुई थी उन का वज़ीफ़ा भी चार हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया।[4]

जंगे बद्र में शामिल ग़ुलामों का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्लद ग़िफ़्फ़ार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि तीन ग़ुलामों ने जंगे बद्र में शिर्कत की थी तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का सालाना वज़ीफ़ा तीन तीन हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया।[5]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۱۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجھاد، ماقالوفی الفروض۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۶۱۸، حدیث: ۱۷ ملتقطا۔

3 ......بخاری، کتاب المغازی، ج ۳، ص ۲۳، حدیث: ۴۰۲۲۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجھاد، ماقالوافی الفروض۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۶۱۸، حدیث: ۱۷ ملتقطا۔

5 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجھاد، فی العبید یفرض۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۶۱۸، حدیث: ۱۔

www.dawateislami.net

वज़ाइफ़ में महब्बते रसूलुल्लाह का लिहाज़

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीन हज़ार वज़ीफ़ा दिया और हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को साढ़े तीन हज़ार दिया, जब वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत का लिहाज़ कर रहा हूं।"(1) (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा महब्बत फ़रमाया करते थे इस लिये मैं ने वज़ीफ़ा ज़ियादा दिया।)

उम्महातुल मोमिनीन के वज़ाइफ़

उम्महातुल मोमिनीन को वज़ाइफ़ भेजा करते

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें हमारा हिस्सा भेजा करते थे ह़त्ता कि सिरी और पाए भी भेजा करते।(2)

उम्महातुल मोमिनीन का वज़ीफ़ा चार चार हज़ार

एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बहुत सा माल आया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और बाहमी मुशावरत से उम्महातुल मोमिनीन का वज़ीफ़ा चार चार हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया।(3)

दीगर लोगों के वज़ाइफ़

दामाद को ज़ाती माल से अ़ता फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामाद आप की बारगाह में हाज़िर हुवे और दरख़्वास्त की, कि बैतुल माल से उन्हें भी कुछ माल अ़ता फ़रमाएं। सय्यिदुना फ़ारूक़े

---

(1) ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمۃ، باب التفضیل علی السابقۃ والنسب، ج۶، ص۵۶۸، حدیث: ۱۲۹۹۴۔

(2) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۰۔

(3) ......کنز العمال، کتاب الجہاد، الارزاق والعطایا، الجزء: ۴، ج۲، ص۲۴۴، حدیث: ۱۱۶۸۰۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें डांटा और फ़रमाया : اَرَدْتَّ اَنْ اَلْقَی اللّٰہَ مَلِکًا خَائِنًا ''या'नी क्या तुम येह चाहते हो कि मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ख़ियानत करने वाले बादशाह की हैसिय्यत से मुलाक़ात करूं ।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़ाती हिस्से से उन्हें दस हज़ार दिरहम अ़ता फ़रमाए ।(1)

फ़ौजियों के वज़ाइफ़

हर फ़ौजी का वज़ीफ़ा चार हज़ार तक

हज़रते सय्यिदुना अ़बीदा सलमानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से पूछा : ''तुम क्या समझते हो कि एक शख़्स को कितना वज़ीफ़ा दिया जाए कि वोह उस के लिये काफ़ी हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! इतना इतना होना चाहिये तो फ़रमाया : ''अगर मैं ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर फ़ौजी का वज़ीफ़ा चार हज़ार तक कर दूंगा, एक हज़ार उस के ज़ाती अख़राजात के लिये, एक हज़ार उस के घरवालों के ख़र्चे के लिये, एक हज़ार उस के जंगी सामान वग़ैरा के लिये और एक हज़ार उस के घोड़े के लिये ।''(2)

मरातिब के लिहाज़ से वज़ाइफ़

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी ह़बीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया : ''पहले उन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को देखो जिन्हों ने दरख़्त के नीचे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की थी, उन का वज़ीफ़ा दो सौ दीनार मुक़र्रर कर दो, येही वज़ीफ़ा अपने लिये, अपने घरवालों के लिये मुक़र्रर करो, इसी त़रह़ हज़रते ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी दो सौ दीनार दो क्यूंकि वोह बहुत बहादुर इन्सान हैं, उ़स्मान बिन क़ैस बिन अबुल आ़स का वज़ीफ़ा भी दो सौ दीनार मुक़र्रर करो क्यूंकि वोह बहुत मेहमान नवाज़ी करने वाले हैं ।''(3)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۳۰۔

2 ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمۃ، باب من قال---الخ، ج۶، ص ۵۶۴، حدیث: ۱۲۹۷۳۔

3 ......کنز العمال، کتاب الجہاد، الارزاق والعطایا، الجزء: ۴، ج۲، ص ۲۴۳، حدیث: ۱۱۶۷۱۔

www.dawateislami.net

लश्कर के अमीरों के वज़ाइफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुबैरा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि लश्करों के जो उमरा अपने घरों में दीगर काम काज के लिये आ रहे थे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने मुनादी को येह हुक्म दे कर भेजा कि उन के वज़ाइफ़ बरक़रार हैं और उन के घरवालों को भी वज़ाइफ़ दिये जा रहे हैं लिहाज़ा उन्हें कोई और काम करने की ज़रूरत नहीं।"(1)

नौमौलूद बच्चों के वज़ाइफ़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه नौमौलूद बच्चों को भी वज़ाइफ़ अ़ता फ़रमाते थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : اِنَّ عُمَرَ کَانَ یَفْرِضُ لِلصَّبِیِّ اِذَا اسْتَهَلَّ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बच्चों को भी वज़ाइफ़ अ़ता फ़रमाते थे।"(2)

बच्चों के वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने का सबब

अव्वलन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़क़त उन ही बच्चों का वज़ीफ़ा जारी फ़रमाते थे जो दूध छोड़ चुके होते, बा'दे अज़ां आप ने नौमौलूद या दूध पीते बच्चों का भी वज़ीफ़ा जारी फ़रमा दिया इस का मुहर्रिक एक वाक़िआ़ बना। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक बार ताजिरों का एक क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा के बाहर आ कर ठहरा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को मा'लूम हुवा तो आप ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : "क्या आप इस बात पर राज़ी हैं कि हम दोनों इस तिजारती क़ाफ़िले की निगहबानी करें ?" उन्हों ने रिज़ा का इज़्हार किया और दोनों मिल कर उस क़ाफ़िले की निगरानी करते रहे और पूरी रात नमाज़ भी पढ़ते रहे। एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो आप उस की मां के पास आए और उसे चुप कराने के लिये कहा। फिर आप वहां से वापस आ गए, कुछ देर बा'द दोबारा उस बच्चे के रोने की आवाज़ आई।

---

(1)......کنز العمال، کتاب الجهاد، الارزاق والعطایا، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۴۳، حدیث: ۱۱۶۷۳۔

(2)......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، فی الصبیان هل یفرض---الخ، ج ۷، ص ۶۱۹، حدیث: ۱۔

www.dawateislami.net

आप उस की मां के पास दोबारा आए और उसे चुप कराने के लिये कहा। जब तीसरी बार बच्चे के रोने की आवाज़ आई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की मां के पास गए और इरशाद फ़रमाया : وَيْحَكِ اِنِّي لَاَرَاكِ اُمَّ سُوْءٍ مَالِيْ اَرٰى اِبْنَكِ لَا يَقِرُّ مُنْذُ اللَّيْلَةِ "या'नी तू बरबाद हो ! मैं तुझे एक बुरी मां तसव्वुर करता हूं, तेरे बच्चे के साथ क्या मस्अला है ? मैं देख रहा हूं कि पूरी रात तेरे बच्चे को आराम नहीं मिला।" बच्चे की मां कहने लगी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! बात येह है कि येह दूध पीना चाहता है हालांकि मैं इस का दूध छुड़ाना चाहती हूं।" फ़रमाया : "वोह क्यूं ?" वोह औ़रत कहने लगी : "इस लिये कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़क़त़ उन ही बच्चों का वज़ीफ़ा जारी फ़रमाते हैं जो दूध छोड़ चुके हों।" फ़रमाया : "इस बच्चे को कितने महीने हो चुके हैं ?" उस ने बताया कि इतने इतने।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तू बरबाद हो ! अपने बच्चे के दूध छुड़ाने के मुआ़मले में जल्दी न कर।"

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के इस वाक़िए़ से बहुत ग़मगीन हुवे और नमाज़े फ़ज्र पढ़ाते हुवे इतना रोए कि लोगों को क़िराअत की आवाज़ भी सहीह़ त़रह़ सुनाई न देती थी, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़े ही दर्दनाक अन्दाज़ में (आ़जिज़ी करते हुवे) फ़रमाया : بُؤْسًا لِعُمَرَ كَمْ قَتَلَ مِنْ اَوْلَادِ الْمُسْلِمِيْنَ "या'नी उ़मर के लिये बड़ी रुस्वाई की बात है कि उस ने कितने ही मुसलमानों के बच्चे क़त्ल किये।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा और मुसलमानों के तमाम अ़लाक़ों में येह ए'लान करवा दिया कि कोई भी अपने बच्चों को दूध छुड़ाने में जल्दी न करे क्यूंकि अब से इस्लाम में जो भी बच्चा पैदा होगा, पैदा होते ही उस का वज़ीफ़ा जारी कर दिया जाएगा।"(1)

ग़ुलामों, बांदियों, घोड़ों के वज़ाइफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ुलामों, बांदियों और घोड़ों के भी वज़ाइफ़ अ़त़ा फ़रमाते थे।(2)

ख़ुद अपने हाथों से वज़ाइफ़ तक़्सीम फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम का'बी رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप ने बनू

(1) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۸، البدایۃ والنھایۃ، ج۵، ص۲۱۵۔

(2) ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجھاد، فی العبید یفرض لھم۔۔۔الخ، ج۷، ص۲۱۸، حدیث:۴۔

www.dawateislami.net

खु़ज़ाआ़ की फे़हरिस्तें उठा रखी हैं यहां तक कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कु़दैद पहुंचे वहां आप ने वज़ाइफ़ इस त़रह़ तक़्सीम फ़रमाए कि उन की शादीशुदा व कंवारी कोई भी औ़रत ऐसी न थी जिस ने अपने हाथ से वज़ीफ़ा वुसूल न किया हो । फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़स्फ़ान पहुंचे और खु़द ही वज़ाइफ़ तक़्सीम फ़रमाए, फिर सारी ज़िन्दगी आप का येही मा'मूल रहा ।[1]

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की उ़म्र में बरकत की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़रफ़ुत़ा उ़ज़्री رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से वज़ाइफ़ तक़्सीम होने के बा'द लोगों के तअस्सुरात के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! मैं ने देखा कि लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आप की उ़म्र में बरकत की दुआ़ मांगते हैं, जो भी क़ादिसिया गया था उस का वज़ीफ़ा, पन्दरह सौ, दो हज़ार तक है, जो भी नौमौलूद बच्चा या बच्ची पैदा हुई है उस का भी वज़ीफ़ा सौ दिरहम और दो जुरैब हर माह मुक़र्रर किया गया है, हमारे हां जो बच्चा अभी बालिग़ हुवा है उस का वज़ीफ़ा पांच सौ से छे सौ तक जा पहुंचा है । अगर वोह इस माल को अपने तमाम घरवालों पर ख़र्च करे जिन में खाने वाले भी हों और न खाने वाले भी हों तो आप का क्या ख़याल है कि वोह अपने इस माल को जहां ख़र्च करना चाहिये वहां ख़र्च कर रहा है या जहां नहीं करना चाहिये वहां कर रहा है ?" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नसीह़तों के मदनी फूल देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ह़क़ीक़ी मददगार है, येह उन तमाम लोगों का ह़क़ था जो मैं ने उन्हें दिया है और येह तो मेरी खु़श नसीबी है कि मैं ने उन लोगों का ह़क़ ले कर उन तक पहुंचा दिया है । लिहाज़ा इस पर मेरी ता'रीफ़ करने की कोई ह़ाजत नहीं, क्यूंकि अगर येह मेरे बाप ख़त्ताब का माल होता तो मैं कौन सा उन को देता लेकिन मैं जानता हूं कि इस में बड़ी फ़ज़ीलत है, मैं इसे मुनासिब नहीं समझता कि इसे उन से रोकूं, पस अगर उन देहातियों के माल में से घरवालों पर ख़र्च करने के बा'द कुछ बच जाता है तो वोह इस से बकरियां ख़रीद लें, अपने जंगल में रख लें, फिर अगर दोबारा माल में से कुछ बच जाए तो इस से ग़ुलाम ख़रीद लें । ऐ ख़ालिद बिन उ़रफ़ुत़ा ! हाए अफ़्सोस ! मैं इस बात से डरता हूं कि मेरे बा'द ऐसे लोग आएंगे

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۶۔

www.dawateislami.net

जिन के नज़्दीक इन वज़ाइफ़ वग़ैरा की कोई माली हैसिय्यत न होगी, उन के ज़माने में लोग इन वज़ाइफ़ में रग़्बत छोड़ देंगे, जो माल भी आएगा बादशाह और उन की औलादें उसे अपना माल समझेंगे और उसी पर तक्या कर बैठेंगे। मेरी येह ख़ैरख़्वाही तुम्हारे लिये वैसी ही है जैसे उस शख़्स के लिये है जो सरहदों पर बैठा हो हालांकि तुम यहां बैठे हो, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन का मुआमला मेरे सिपुर्द किया है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स इस हाल में मरा कि अपनी रिआया से वोह धोका करता था तो वोह शख़्स जन्नत की ख़ुश्बू भी न पाएगा।"(1)

हुक्मरानों और ज़िम्मेदारान के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जो भी हाकिम या ज़िम्मेदार अपनी रिआया या मा तहत इस्लामी भाइयों के साथ शरीअ़त के दाइरे में रहते हुवे उन की ख़ैरख़्वाही करता रहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों में उस की महब्बत डाल देता है, लोग पीठ पीछे भी उस के लिये दुआएं करते हैं, दूर भागने के बजाए उस का क़ुर्ब हासिल करने की कोशिश करते हैं, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सीरते तय्यिबा के पैराए में तमाम ऐसे हुक्मरानों और ज़िम्मेदारान इस्लामी भाइयों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है जो अपनी रिआया या मा तहत इस्लामी भाइयों ख़ुसूसन ख़ादिमीन इस्लामी भाइयों के साथ ऐसा रवय्या रखते हैं कि वोह उन के क़रीब आने के बजाए उन से दूर भागते हैं, उन के बारे में अच्छे तअस्सुरात नहीं रखते। काश ! हम भी तमाम इस्लामी भाइयों के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये खुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आएं, उन्हें महब्बत देने वाले बन जाएं, अगर उन की किसी मुआमले में इस्लाह की हाजत हो तो अच्छे अन्दाज़ में इस्लाह की तरकीब बनाएं। अपने आप को किसी भी इस्लामी भाई की दिल आज़ारी से महफ़ूज़ रखने वाले बन जाएं।

माल देख कर फ़ारूके़ आ'ज़म रोने लगे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे बुलाया तो मैं ने देखा कि आप के सामने सोना बिखरा हुवा है, और वोह एक एक मुठ्ठी या'नी डली के हिसाब से है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने अ़ब्बास ! यहां आओ और येह सोना अपनी

(1) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۶۔

www.dawateislami.net

फ़ौज में तक़्सीम कर दो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है कि उस ने अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इसे दूर रखा और मुझे अ़ता फ़रमाया। क्या येह मुझे किसी भलाई के लिये दिया गया या बुराई के लिये ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं, उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी बुराई की वज्ह से नहीं रोका गया और न ही मुझे किसी भलाई की वज्ह से दिया गया।"(1)

कम से कम वज़ीफ़ा दो हज़ार

हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने शुयूख़ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَئِنْ عِشْتُ لَاَجْعَلَنَّ عَطَاءَ سَفِلَۃِ النَّاسِ اَلْفَیْن "या'नी मैं ज़िन्दा रहा तो अदना से अदना शख़्स का वज़ीफ़ा भी दो हज़ार कर दूंगा।"(2)

तमाम हक़दारों का हक़ अदा कर दिया

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून कुछ यूं था : "हम्दो सलात के बा'द ! मैं साल का वोह दिन भी जानता हूं कि बैतुल माल में एक दिरहम भी बाक़ी नहीं रहेगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है कि मैं ने हक़दार को उस का हक़ अदा कर दिया है।"(3)

बैतुल माल के माल की तक़्सीम

समन्दरी रास्ते से ग़ल्ला लाया गया

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......كنز العمال، كتاب الجهاد، الارزاق والعطايا، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۴۳، حديث: ۱۱۲۶۸۔

2 ......طبقات كبرى، ذكر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۱۔

3 ......طبقات كبرى، ذكر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۰۔

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ की तक़सीम का चार्ट

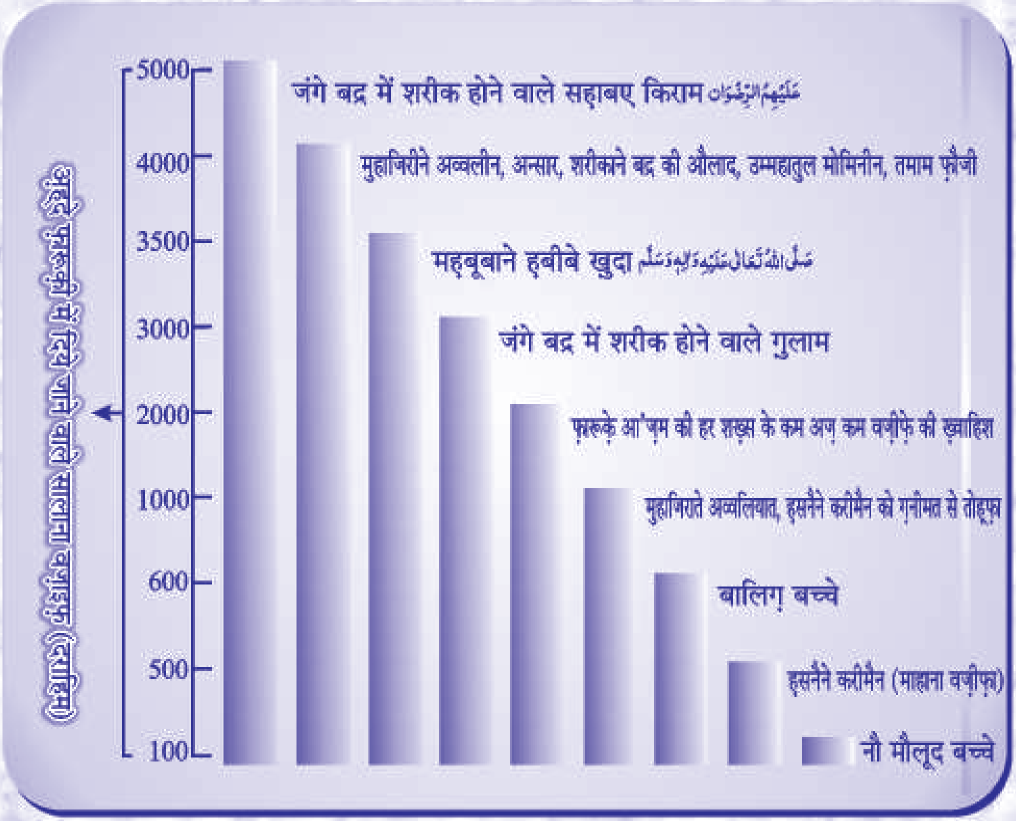

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर का यौमिया ख़र्च दो दिरहम था या'नी सालाना कमो बेश 720 दिरहम। गोया आप का सालाना ख़र्च एक बालिग़ बच्चे के ख़र्च से कुछ ज़ियादा था, हालांकि आप की येह ख़्वाहिश थी कि हर शख़्स का सालाना ख़र्च कम अज़ कम दो हज़ार दिरहम हो जाए। या'नी आप अपने इलावा तमाम लोगों को ग़नी कर देना चाहते थे।

www.dawateislami.net

की त़रफ़ मक्तूब रवाना किया जिस में मिस्र से समन्दरी रास्ते के ज़रीए़ खाने पीने का सामान मदीनए मुनव्वरा लाने का फ़रमाया, चुनान्चे, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र से बीस कश्तियों में सामान भेजा, हर कश्ती में कमो बेश तीन हज़ार **इर्दब** (चौबीस साअ़ का एक पैमाना) अनाज के दाने थे, तमाम कश्तियां साहि़ल पर आ लगीं तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ उन के इस्तिक़्बाल के लिये साहि़ल पर गए, जब आप ने कश्तियों को देखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया कि जिस ने उन के लिये समन्दर को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया था ताकि इस में मुसलमानों के फ़ाइदे मदीनए मुनव्वरा तक पहुंच सकें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि सारा सामान वुसूल कर लें। जब आप मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह सारा माल तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को पर्चियां लिख कर देते जिसे दिखा कर वोह खाने वगै़रा का सामान वुसूल कर लेते।(1)

सारा का सारा माल तक़्सीम कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गा़लिबन ज़ोहर के वक़्त मुझे बुलाया, मैं गया और अभी दरवाज़े तक ही पहुंचा था कि मुझे अन्दर से रोने की आवाज़ें आईं, मैं ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن पढ़ा और समझ गया कि ज़रूर कोई न कोई ह़ादिसा पेश आ गया है, फिर मैं अन्दर दाखि़ल हो गया और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिलासा देते हुवे उन के कन्धे पर हाथ रख कर दो दफ़्आ़ बोला : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! कोई बात नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "न सिर्फ़ बात है बल्कि बहुत बड़ी बात है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा हाथ पकड़ा और कमरे में ले गए जहां सामान से भरे हुवे थैले पड़े हुवे थे। फ़रमाया : "ख़त्ता़ब की औलाद पर आज़्माइश का वक़्त आ गया है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो येह सारा माल मेरे दोनों साथियों या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी देता और वोह कोई इस का ऐसा त़रीक़ा निकालते जिस की मैं पैरवी करता।" सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन

(1) ......كنز العمال، كتاب الجهاد، الارزاق والعطايا، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۴۳، حديث: ۱۱۶۷۴۔

www.dawateislami.net

औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप तशरीफ़ रखिये, हम इस का कोई न कोई ह़ल सोचते हैं।" चुनान्चे, इस माल में से उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का वज़ीफ़ा चार हज़ार दिरहम, मुहाजिरीन का वज़ीफ़ा भी चार चार हज़ार दिरहम और दीगर तमाम लोगों का वज़ीफ़ा दो दो हज़ार दिरहम मुक़र्रर कर के इसी तरतीब से सारा माल तक़्सीम कर दिया।(1)

हर माह वज़ाइफ़ जारी फ़रमा दिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू क़ैस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और इरशाद फ़रमाया : "ह़म्दो सलात के बा'द मैं येह कहता हूं कि हम ने तुम्हारे अ़तिय्यात और वज़ाइफ़ हर माह जारी कर दिये हैं।" रावी कहते हैं कि आप के हाथ में दो पैमाने "**मुद**" और "**क़िस्त़**" थे, फिर इरशाद फ़रमाया : "इन दोनों को ले लो जिस ने इन में कमी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के साथ ऐसा ऐसा करे।"(2)

"मुद" और "क़िस्त़" क्या है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "**मुद**" और "**क़िस्त़**" माल नापने या मापने के दो पैमाने हैं जो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईजाद किये। "**क़िस्त़**" बिल्कुल सह़ीह़ तोलने वाले तराज़ू को कहते हैं जब कि "**मुद**" भी एक पैमाना है, इस के वज़्न में इख़्तिलाफ़ है, अह़नाफ़ के नज़दीक येह दो "**रित़्ल**" का है जब कि "**रित़्ल**" मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होता है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन ही दोनों पैमानों के बारे में फ़रमाया करते थे :

رُبَّ سُنَّۃٍ رَاشِدَۃٍ مَھْدِیَّۃٍ قَدْ سَنَّھَا عُمَرُ فِیْ اُمَّۃِ رَسُوْلِ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مِنْھَا الْمُدْیَانِ وَالْقِسْطَانِ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में राहनुमाई के बहुत से सीधे त़रीके़ ईजाद फ़रमाए जिन में पैमाइश के दो पैमाने "**मुद**" और "**क़िस्त़**" भी हैं।"(4)

---

1 ......کنز العمال، کتاب الجھاد، الارزاق والعطایا، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۴۴، حدیث: ۱۱۶۸۰۔
2 ......کتاب الاموال لابی عبید، کتاب مخارج الفی ۔۔۔ الخ، باب اجراء الطعام علی ۔۔۔ الخ، ص ۲۱۱، الرقم: ۲۱۴۔
3 ......لسان العرب، باب القاف، تحت اللفظ: قسط، باب المیم، تحت اللفظ: مدد۔
4 ......کتاب الاموال لابی عبید، کتاب مخارج الفی ۔۔۔ الخ، باب اجراء الطعام علی ۔۔۔ الخ، ص ۲۱۱، الرقم: ۲۱۵۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म ने ग़नी कर दिया

हज़रते सय्यिदुना उ़यैना बिन हि़स्न رضی اللہ تعالٰی عنہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़लीफ़ा बनने के बा'द ह़ाज़िर हुवे और यूं अ़र्ज़ किया :

اِنَّ عُمَرَ اَعْطَانَا فَاَغْنَانَا فَاَتْقَانَا "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हमें इतना अ़ता फ़रमाया कि हमें ग़नी कर दिया और साथ ही साथ हमें मुत्तक़ी व परहेज़गार भी बना दिया।"(1)

इ़ल्मो हिक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** रिआ़या व अ़वामुन्नास को वज़ाइफ़ देने वाली मज़्कूरए बाला तमाम रिवायात से मा'लूम हुवा कि ह़ाकिमे वक़्त को चाहिये कि अ़वाम की फ़लाह़ो बहबूद और उन को ख़ुशह़ाल रखने के लिये मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ का इजरा करे, इस से मुल्की मईशत पर बहुत गहरे असरात मुरत्तब होंगे।

......ह़ाकिमे वक़्त मुख़्तलिफ़ लोगों के मरातिब, सलाहि़य्यतों और उन की ज़रूरिय्यात को पेशे नज़र रखते हुवे मुख़्तलिफ़ वज़ाइफ़ भी दे सकता है जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के मुबारक अ़मल से बिल्कुल ज़ाहिर है।

......ह़क़ीक़ी त़ौर पर मदद करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है, लेकिन उस की अ़ता से उस के बन्दे भी मदद करते हैं, इसी त़रह़ ह़क़ीक़ी त़ौर पर ग़नी फ़रमाने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है और उस की अ़ता से उस के बन्दे भी एक दूसरे को मालो दौलत से ग़नी कर सकते हैं, येही वज्ह है कि हज़रते सय्यिदुना उ़यैना बिन हि़स्न رضی اللہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि "उन्हों ने हमें ग़नी फ़रमा दिया।" मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के प्यारे प्यारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि "ह़क़ीक़ी त़ौर पर मदद करने वाला अल्लाह है और उस की अ़ता से उस के बन्दे भी मदद कर सकते हैं बल्कि इतनी मदद करते हैं कि ग़नी कर देते हैं।"

---

1 ..... مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب المستشار، ج ١٠، ص ٢٦٣، حدیث: ٢١١١١ ملتقطاً

......वाज़ेह रहे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी रिआ़या को इतना मालो दौलत दे दिया था कि उन्हें ग़नी कर दिया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मालो दौलत की कसरत को पसन्द नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म और माल की मज़म्मत

हज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास क़ादिसिया के अमवाले ग़नीमत में से माल लाया गया तो आप उसे उलट पुलट कर के देखने लगे और साथ साथ रोते भी जा रहे थे। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! येह तो ख़ुशी का मौक़अ़ है।" फ़रमाया : اَجَلْ وَلٰكِنْ لَمْ يُؤْتَ هٰذَا قَوْمٌ قَطُّ اِلَّا اَوْرَثَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ "या'नी वाक़ेई येह ख़ुशी का दिन है, लेकिन येह माल जिस क़ौम को भी दिया गया उन में इस माल के सबब दुश्मनी और बुग़्ज़ पैदा हो गया।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मालो दौलत की हि़र्स सरासर नुक़्सान देह है, माल की ज़ियादती बसा औक़ात कई त़रह़ की आज़्माइशों ख़ुसूसन गुनाहों के मरज़ में मुब्तला करने का बहुत बड़ा सबब है कि जब किसी शख़्स के पास माल की ज़ियादती होती है तो शैत़ान उसे त़रह़ त़रह़ के ज़ाहिरी व बात़िनी गुनाहों में मुलव्विस करने की कोशिश में लग जाता है, आ़फ़िय्यत इसी में है कि फ़क़त़ उतने ही माल पर इक्तिफ़ा किया जाए जो ज़रूरियात को पूरा करने के लिये काफ़ी हो, माल की ज़ियादती नहीं बल्कि माल में बरकत की दुआ़ मांगनी चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

मुश्किल वक़्त में रिआ़या की ख़ैरख़्वाही

आ़मुर्रमादह की तफ़्सील

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द सिने 18 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा और इस के अत़राफ़ के अ़लाक़ों में तक़रीबन नौ माह तक शदीद क़ह़त़ पड़ा ह़त्ता कि लोग खाने पीने की अश्या के मोह़ताज हो गए, भूक की शिद्दत और ख़ूराक न होने का येह आ़लम था कि जंगलों के दरिन्दे भी इन्सानी आबादी में आ कर पनाह लेने लगे, खाना न खाने की वज्ह से जानवर भी बेकार हो गए यहां तक कि अगर कोई बकरी ज़ब्ह़ करता तो उस का गोश्त खाने को दिल

(1) ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمۃ، باب الاختیار فی التعجیل---الخ، ج۶، ص ۵۸۲، حدیث: ۱۳۰۲۴۔

www.dawateislami.net

न करता, भूक की वज्ह से हज़ारों मवेशी हलाक हो गए, लोगों ने दीगर मुख़्तलिफ़ शहरों का रुख़ करना शुरूअ़ कर दिया, चूंकि बारिश कम होने की वज्ह से ज़मीन का रंग राख की त़रह़ काला हो गया था इस लिये जिस साल येह क़ह़त़ पड़ा उसे "**आ़मुर्रमादह** या'नी राख वाला साल" कहते हैं।[1]

तमाम लोगों की नज़र अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर लगी थी कि आप इस का क्या ह़ल फ़रमाते हैं, इस मुसीबत को सब से ज़ियादा मह़सूस करने वाले ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, आप ने इस अ़ज़ीम मुसीबत से निमटने के लिये जो ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार की उस की तफ़्सील कुछ यूं है :

अ़वाम के ग़म में बराबरी की शिर्कत

अपने पेट से कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ऊपर घी खाना ह़राम कर लिया था, सिर्फ़ ज़ैतून का तेल ही इस्ति'माल फ़रमाते थे आप के पेट से "क़र क़र" की आवाज़ आई, आप ने पेट के अन्दर उंगली चुभो कर फ़रमाया : تَقَرْقَرْ تَقَرْقُرَکَ اِنَّہٗ لَیْسَ لَکَ عِنْدَنَا غَیْرُہٗ حَتّٰی یَحْیَا النَّاسُ "या'नी तू जिस त़रह़ भी आवाज़ निकालता है निकाल तुझे इस के इ़लावा उस वक़्त तक कुछ नहीं मिलेगा जब तक लोग मा'मूल के मुत़ाबिक़ (Normal) ज़िन्दगी न गुज़ारने लग जाएं।"[2]

घी और गोश्त न खाने की क़सम

(1) एक बार आ़मुर्रमादह में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में घी से चुपड़ी हुई रोटी लाई गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक देहाती आदमी को बुलाया ताकि वोह भी खाने में शरीक हो जाए। वोह देहाती बहुत ही रग़बत के साथ घी को खाने लगा, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब उसे देखा तो फ़रमाया : اَجَلْ مَا اَکَلْتَ سَمْنًا وَّلَا زَیْتًا "या'नी लगता है तुम ने कभी घी और ज़ैतून नहीं खाया।" उस ने अ़र्ज़ किया : "जी हुज़ूर ! मैं ने इतने अ़र्से से येह दोनों चीज़ें नहीं

1 ......البدایۃ والنہایۃ، ج۵، ص۱۶۵، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۵۔
مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص۷۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۸۔

www.dawateislami.net

खाई हैं।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम उठाई कि उस वक़्त तक घी और गोश्त न खाएंगे जब तक लोगों के ह़ालात पहले की त़रह़ न हो जाएं।(1)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने आप के लिये साठ दिरहम का घी ख़रीदा। आप ने उसे देख कर इरशाद फ़रमाया : "येह क्या है ?" अ़र्ज़ की : "येह मैं ने अपने पैसों से ख़रीदा है आप के अख़राजात से नहीं।" आप ने फ़रमाया : مَا اَنَا بِذَائِقِهٖ حَتّٰى يُحْيِىَ النَّاسُ "या'नी मैं इस घी में से उस वक़्त तक न चखूंगा जब तक लोग ख़ुशह़ाल न हो जाएं।"(2)

ह़ाकिम को अ़वाम का दर्द कैसे मह़सूस होगा.....?

एक बार मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार में घी और दूध के डिब्बे आए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम चालीस दिरहम में घी और दूध का एक डिब्बा आप के लिये ख़रीद लाए और अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ قَدْ اَبَرَّ اللّٰهُ يَمِيْنَكَ وَعَظَّمَ اَجْرَكَ قَدِمَ السُّوْقَ وَطَبٌ مِنْ لَبَنٍ وَعَكَّةٌ مِنْ سَمَنٍ فَابْتَعْتُهُمَا بِاَرْبَعِيْنَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की क़सम को पूरा फ़रमा दिया है और आप के अज्र को बढ़ा दिया है, देखिये मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार में दूध और घी के डिब्बे आए हैं मैं ने आप के लिये येह दोनों चीज़ें चालीस दिरहम में ख़रीदी हैं।" येह सुन कर आप ने इरशाद फ़रमाया : اَغْلَيْتَ بِهِمَا فَتَصَدَّقْ بِهِمَا فَاِنِّيْ اَكْرَهُ اَنْ آكُلَ "या'नी तुम ने येह चीज़ें बहुत महंगी ख़रीदी हैं, इन्हें सदक़ा कर दो, मुझे पसन्द नहीं कि मैं इस में से कुछ खाऊं।" फिर इरशाद फ़रमाया : كَيْفَ يَعْنِيْنِيْ شَاْنُ الرَّعِيَّةِ اِذَا لَمْ يَمَسَّنِيْ مَا مَسَّهُمْ "या'नी मैं अ़वामुन्नास और रिआ़या के दुख दर्द और ग़मों को कैसे मह़सूस करूंगा जब तक ख़ुद उन में मुब्तला न होऊं।"(3)

हुक्मरानों के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़्कूरए बाला फ़रमान तमाम हुक्मरानों ज़िम्मेदारान के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह है,

---

(1) ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۷، تاریخ مدینۂ منورہ، امر الرمادۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۰۷۔

(2) ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۲۔

(3) ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۵۰۸، تاریخ مدینۂ منورہ، امر الرمادۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۰۷۔

www.dawateislami.net

वाक़ेई अगर कोई हाकिम या ज़िम्मेदार रिआ़या या मा तह़त इस्लामी भाइयों के दुख दर्द और ग़मों को मह़सूस करना चाहता है तो ख़ुद को उन की जगह तसव्वुर करे तब ही उन के दर्द को मह़सूस कर सकेगा, मगर आह ! आज कल के हुक्मरान व ज़िम्मेदारान चार जानिब इसी बात का डंका बजाते हैं कि हम अ़वाम या मा तह़त इस्लामी भाइयों के दुख में बराबर के शरीक हैं, उन की तक्लीफ़ों को समझते हैं लेकिन जब उन की ज़ात को देखा जाए तो उन के इस क़ौल में ज़र्रा बराबर भी सदाक़त नज़र नहीं आती। काश ! हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं। जो अपने लिये पसन्द करते हैं अपनी रिआ़या या मा तह़त अफ़राद के लिये भी वोही पसन्द करें, जब हम अपनी ज़ात को किसी तक्लीफ़ में मुब्तला होता नहीं देख सकते तो अपने मा तह़त अफ़राद को भी तकालीफ़ से बचाने की कोशिश करें, कल बरोज़े क़ियामत हर ज़िम्मेदार से उस के मा तह़त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "तुम सब निगरान हो और तुम में से हर एक से उस के मा तह़त अफ़राद के बारे में पूछा जाएगा, बादशाह निगरान है, उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा, आदमी अपने अह्लो इ़याल का निगरान है उस से उस के अह्लो इ़याल के बारे में पूछा जाएगा। औ़रत अपने ख़ाविन्द के घर और औलाद की निगरान है उस से उन के बारे में पूछा जाएगा।"(1)

सूखी खजूरों पर गुज़ारा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आ़मुर्रमादह में देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने एक साअ़ खजूरें रखी जातीं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें छिल्के और दीगर चीज़ों समेत ही खाते ह़त्ता कि वोह खजूरें भी खाते जो पकने से पहले ही दरख़्त पर सूख जातीं हैं जिन में न तो गुठली होती है और न ही गूदा व मिठास।(2)

फ़क़त़ ज़ैतून खाने से रंग तब्दील हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ख़लीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप का रंग सियाह हो

---

1 ......بخاری، کتاب الجمعۃ، باب الجمعۃ فی القری والمدن، ج ۱، ص ۳۰۹، حدیث: ۸۹۳ ملتقطاً۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۲۔

www.dawateislami.net

चुका है हालांकि आप बिल्कुल सफ़ेद रंग के थे क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़रबिय्युन्नस्ल थे और अ़रब गोरे होते हैं, काला रंग होने की वज्ह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों के मुसीबत में मुब्तला होने की वज्ह से अपने ऊपर घी और दूध को ह़राम कर लिया था फ़क़त़ रोग़ने ज़ैतून इस्ति'माल फ़रमाते थे, इसी वज्ह से आप का रंग तब्दील हो गया, आप ने भूक की काफ़ी मशक़्क़तें बरदाश्त कीं।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म बे मिसाल हुक्मरान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बे मिसाल हुक्मरान थे, आप के इ़लावा तारीख़ में किसी ऐसे ह़ाकिम की मिसाल नहीं मिलती जिस ने अ़वामुन्नास के दर्द को मह़सूस करने के लिये अपनी ज़ात पर ऐसी मशक़्क़त त़ारी की हो कि उस का रंग ही तब्दील हो गया हो। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ीक़ी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले थे, आप के पेशे नज़र आख़िरत की वोह आज़्माइशें थीं जिन के आगे दुन्या की तकालीफ़ कोई हैसिय्यत नहीं रखतीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेशे नज़र हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ा वोह तमाम फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे जिन में उन के लिये नसीह़तों के बे शुमार मदनी फूल हैं, चुनान्चे, तीन फ़रामीन पेशे ख़िदमत हैं :

(1) مَا مِنْ عَبْدٍ اِسْتَرْعَاہُ اللّٰہُ رَعِیَّۃً فَلَمْ یَحُطْھَا بِنَصِیْحَۃٍ اِلَّا لَمْ یَجِدْ رَائِحَۃَ الْجَنَّۃِ "या'नी जिस शख़्स को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी रिआ़या का निगरान बनाया फिर उस ने उन की ख़ैरख़्वाही का ख़याल न रखा वोह जन्नत की ख़ुश्बू न पाएगा।"(2)

(2) اَیُّمَا رَاعٍ اِسْتَرْعٰی رَعِیَّۃً فَغَشَّھَا فَھُوَ فِی النَّارِ "या'नी जो निगरान अपनी निगरानी में मा तह़्तों को धोका दे वोह जहन्नम में जाएगा।"(3)

(3) مَا مِنْ اَمِیْرِ عَشَرَۃٍ اِلَّا یُؤْتٰی بِہٖ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مَغْلُوْلًا لَا یَفُکُّہٗ اِلَّا الْعَدْلُ اَوْ یُوْبِقُہُ الْجَوْرُ "या'नी जो शख़्स दस आदमियों पर निगरान बनाया गया, क़ियामत के दिन इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गर्दन से बन्धा होगा, अब या तो उस का अ़द्ल उसे छुड़ाएगा या उस का ज़ुल्म उसे तबाह कर देगा।"(4)

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۱، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۷۔

2 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب من استرعی رعیۃ۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۴۵۶، حدیث: ۷۱۵۰۔

3 ......مسند امام احمد، حدیث معقل بن یسار، ج ۷، ص ۲۸۴، حدیث: ۲۰۳۱۱۔

4 ......مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ج ۳، ص ۴۲۵، حدیث: ۹۵۷۹۔

www.dawateislami.net

रिआ़या के साथ इज़्हारे हमदर्दी

मैं कितना ही बुरा हाकिम होऊंगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि क़ह़त़ साली के दौरान अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : بِئْسَ الْوَالِيْ اَنَا اِنْ اَكَلْتُ طَيِّبَهَا وَاَطْعَمْتُ النَّاسَ كَرَادِيْسَهَا "या'नी मैं कितना बुरा ह़ाकिम होऊंगा अगर मैं ने ख़ुद तो बेहतरीन खाना खाया और लोगों को रूखा सूखा खिलाया।"(1)

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह है सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़ज़ीमुश्शान तक़्वा और रिआ़या के बारे में मदनी ज़ेह्न कि ख़ुद तो रूखा सूखा खाएं और अ़वाम को बेहतरीन खिलाएं, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले ह़क़ीक़ी ह़ाकिम की येही निशानी होती है कि वोह अपनी ज़ात पर रिआ़या को तरजीह़ देता है कि कल बरोज़े क़ियामत रिआ़या के ह़ुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ इस की पकड़ भी हो सकती है।

फ़ारूक़े आ'ज़म ही हर बात कहने के ह़क़दार

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के त़वील नसीह़त फ़रमाई, उस में येह भी इरशाद फ़रमाया : "तेरे लिये येह मुनासिब ही नहीं है कि तू मुंह भर भर के बातें करे, क्या तू जानता है कि येह किस के लिये रवा है, वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, क्यूंकि वोह लोगों को तो बेहतरीन खाने खिलाते थे और ख़ुद रूखा सूखा खाते थे, उन्हें बेहतरीन नर्म व मुलाइम लिबास पहनाते और ख़ुद सख़्त व ख़ुरदरा लिबास पहनते, उन के ह़ुक़ूक़ की मुकम्मल पासदारी फ़रमाते बल्कि ह़ुक़ूक़ की अदाएगी में मुबालग़ा फ़रमाया करते थे, आप ने एक साह़िब को चार हज़ार दिरहम वज़ीफ़ा दिया फिर उन के वज़ीफ़े में एक हज़ार का मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया। आप से कहा गया कि जिस त़रह़ उन के वज़ीफ़े में आप ने एक हज़ार का इज़ाफ़ा किया है इसी त़रह़ अपने बेटे के वज़ीफ़े में एक हज़ार का इज़ाफ़ा क्यूं नहीं फ़रमाते ?" तो इरशाद फ़रमाया : "मैं ने जिस के वज़ीफ़े में एक हज़ार का इज़ाफ़ा किया है उस के वालिद जंगे उह़ुद में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे।"(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۷ ملتقطا۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۹۔

www.dawateislami.net

इस जानवर पर सुवारी न करूंगा

हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि आमुर्रमादह में सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक जानवर पर सुवार हुवे तो उस ने रास्ते में लीद कर दिया, उस के लीद में जव के दाने नज़र आए तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया :

اَلْمُسْلِمُوْنَ يَمُوْتُوْنَ هُزْلًا وَهٰذِهِ الدَّابَّةُ تَاْكُلُ الشَّعِيْرَ لَا وَاللهِ لَا اَرْكَبُهَا حَتّٰى يَحْيَا النَّاسُ

"या'नी मुसलमान तो भूक से मर रहे हैं और येह "जव" खाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस वक़्त तक इस पर सुवारी नहीं करूंगा जब तक मुसलमानों के जीने का सामान न मुहय्या हो जाए।"(1)

अपने ऊपर गोश्त खाना हराम कर लिया

हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आमुर्रमादह में लोगों के गोश्त खाने तक अपने ऊपर गोश्त को हराम कर लिया था।(2) (या'नी लोगों की खुशहाली तक न खाने की क़सम खा ली थी।)

अपनी अज़्वाज से दूरी

हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते उ़बैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की अज़्वाज में से एक ज़ौजा ने बयान किया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आमुर्रमादह में जब तक लोगों का ग़म दूर न हुवा अपनी अज़्वाज के क़रीब नहीं जाते थे।(3)

मुसलमानों के ग़म से वफ़ात पा जाते

हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अगर रमादह के साल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ह्त़ साली को दूर न फ़रमाता तो हमारा येह गुमान था कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमानों के ग़म में ही वफ़ात पा जाते।(4)

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۷۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۸۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۹۔
4 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۹۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़हत़ साली में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की अ़वामुन्नास और रिआ़या की ख़ैर ख़्वाही के इन वाक़िआ़त से भी येह साबित होता है कि आप के निज़ामे सल्त़नत की बुन्याद ख़ौफ़े ख़ुदा पर क़ाइम थी, वोह जो कुछ करते थे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर, क़ियामत की पकड़ और मौत के ख़ौफ़ को पेशे नज़र रखते हुवे करते थे क्यूंकि येही वोह तमाम उमूर हैं जो इन्सान को दुन्या से बे रग़बत और आख़िरत की तय्यारी की त़रफ़ माइल करते हैं । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه तो अपनी रिआ़या और अ़वाम को मसाइबो आलाम में देख कर ऐसी कैफ़िय्यत में मुब्तला हो गए कि लोगों को येह गुमान हुवा कि आप इसी ग़म से वफ़ात पा जाएंगे, आज कल के हुक्मरान व ज़िम्मेदारान भी अपने रवय्ये पर ग़ौर करें कि वोह अ़वाम व रिआ़या नीज़ अपने मा तह़्त अफ़राद के ग़म में किस क़दर शरीक होते हैं, अगर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जैसे ग़म की सूरत है तो दुन्या व आख़िरत की भलाइयां मुक़द्दर होंगी ब सूरते दीगर रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में आख़िरत की तबाही व बरबादी मुक़द्दर हो सकती है । या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जैसी ख़ैरख़्वाही और रिआ़या की तकालीफ़ में शिर्कत जैसी ज़िम्मेदारी अ़त़ा फ़रमा । आमीन

तरबूज़ खाने पर बेटे को डांट

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मा'मर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने आ़मुर्रमादह में अपने बेटे को तरबूज़ खाते देखा तो अफ़्सोस करते हुवे फ़रमाया : **بَخٍ بَخٍ یَا ابْنَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ تَاْکُلُ الْفَاکِهَةَ وَاُمَّةُ مُحَمَّدٍ هَزْلٰی** "या'नी सद करोड़ अफ़्सोस ! ऐ अमीरुल मोमिनीन के बेटे ! तू फल खा रहा है जब कि उम्मते मुह़म्मदिय्या भूक से निढाल है ।[1]

आ़मुर्रमादह में घी और रोग़नी खाना न खाया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیۡهِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **اَصَابَ النَّاسَ سَنَةٌ فَمَا اَکَلَ عَامَئِذٍ سَمَنًا وَّ لَا سَمِیْنًا** "या'नी जिस साल मदीनए मुनव्वरा के लोग क़ह़त़ साली में मुब्तला हुवे तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने न तो घी खाया और न ही रोग़नी खाना खाया ।"[2]

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۴۰۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص۱۰۲۔

www.dawateislami.net

बेहतरीन खाना रिआया के लिये

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उ़मूमन रोजे़ रखा करते थे, आ़मुर्रमादह में आप का येह मा'मूल था कि ज़ैतून को रोटी से मिला कर खाते। एक दफ़्आ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने एक ऊंट ज़ब्ह़ किया और कोहान और कलेजी का बेहतरीन गोश्त पका कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में पेश किया, फ़रमाया : "येह क्या है ?" अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! आज एक ऊंट ज़ब्ह़ किया था येह उसी का गोश्त है।" आप ने फ़रमाया :

بَخٍ بَخٍ بِئْسَ الْوَالِيْ اَنَا اِنْ اَكَلْتُ طَيِّبَهَا وَاَطْعَمْتُ النَّاسَ كَرَادِيْسَهَا اِرْفَعْ هٰذِهِ الْجَفْنَةَ هَاتِ لَنَا غَيْرَ هٰذَا الطَّعَامِ

"या'नी हाए अफ़्सोस ! मैं कितना बुरा ह़ाकिम होऊं अगर मैं उ़म्दा व बेहतरीन खाना खाऊं और दीगर लोग बचा कुचा खाएं, ले जाओ येह खाना और कोई दूसरा खाना लाओ।" चुनान्चे, आप का वोही पहले वाला खाना रोटी और ज़ैतून लाया गया जिस में आप ने रोटी तोड़ तोड़ कर डाली और तनावुल करने लगे। फिर अपने गुलाम से फ़रमाया :

وَيْحَكَ يَا يَرْفَا اِحْمِلْ هٰذِهِ الْجَفْنَةَ حَتّٰى تَاْتِيَ بِهَا اَهْلَ بَيْتٍ بِثَمْغٍ فَاِنِّيْ لَمْ آتِهِمْ مُنْذُ ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ وَاَحْسِبُهُمْ مُقْفِرِيْنَ فَضَعْهَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

"या'नी ऐ यरफ़ा ! बड़े अफ़्सोस की बात है, इस खाने को उठाओ और समग़ के घरवालों को दे आओ क्यूंकि मैं उन के पास तीन दिन से नहीं गया और मेरे ख़याल से वोह तीन दिन से भूके ही होंगे।"(1)

बारगाहे इलाही से इस्तिआ़नत

उम्मते मुह़म्मदिय्या को मेरे हाथ पर हलाक न फ़रमा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह ह़ालत थी कि आप इ़शा की नमाजे़ बा जमाअ़त के बा'द घर तशरीफ़ ले जाते और मुसलसल नवाफ़िल अदा करते रहते, फिर बाहर तशरीफ़ लाते और लोगों के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करते, फिर घर जाते और नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते, फिर बाहर आते और शिगाफ़ ज़दा जगहों के गिर्द चक्कर लगाते और वक़्ते सह़र बारगाहे इलाही में यूं मुनाजात करते : اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَلَاكَ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ عَلٰى يَدَيَّ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मुह़म्मदिय्या को मेरे हाथ पर हलाक न फ़रमा।"(2)

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۷۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۸۔

www.dawateislami.net

हम से इस बला को दूर फ़रमा

हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को आधी रात के वक़्त मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुवे देखा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बार बार यूं दुआ़ फ़रमा रहे थे : اَللّٰهُمَّ لَا تُهْلِكْنَا بِالسِّنِيْنَ وَارْفَعْ عَنَّا الْبَلَاءَ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस क़ह़त़ साली से हलाक न फ़रमा हम से इस बला को दूर फ़रमा।"(1)

तौबा व इस्तिग़फ़ार की तल्क़ीन

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि क़ह़त़ साली वाले साल मैं ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को येह निदा देते हुवे सुना : "ऐ लोगो ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार करो, फ़ज़्ले इलाही के सुवाली बनो, रह़मत भरी बारिश मांगो न कि अ़ज़ाब वाली बारिश।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का उस वक़्त तक येही मा'मूल रहा जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने खुश्क साली दूर न फ़रमा दी।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे ओ़हदा और मन्सब बहुत बड़ी आज़माइश है, जिस शख़्स को इस आज़माइश में मुब्तला कर दिया गया गोया वोह दुन्या में फंस गया लेकिन जब आज़माइश में आ ही गए तो अब इस पर सब्र करते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मदद त़लब कीजिये, अपने त़ौर पर पूरी कोशिश कीजिये कि कोई कोताही न हो, हर त़रह़ से रिआ़या के हुक़ूक़ की पासदारी कीजिये। उन्हें तक्लीफ़ में मुब्तला देखें तो खुद उन की ख़ैरख़्वाही करें, उन से तकालीफ़ को दूर करें। अगर आप के बस में नहीं तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तक्लीफ़ को दूर करने की दुआ़ ज़रूर कीजिये।

अ़वामुन्नास की ख़ैरख़्वाही

ऊंटों का एक त़वील क़ाफ़िला

हज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में आ़मुर्रमादह में क़ह़त़ साली हुई तो

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۴۳۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۴۳۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

''مِنْ عَبْدِ اللّٰہِ عُمَرَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اِلٰی عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، سَلَامٌ اَمَّا بَعْدُ فَلِعُمْرِیْ یَا عَمْرُو مَا تُبَالِیْ اِذَا شَبِعْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَکَ اَنَّ اَھْلَکَ اَنَا وَمَنْ مَّعِیْ، فَیَا غَوْثَاہُ ثُمَّ

''या'नी येह मक्तूब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे, अमीरुल मोमिनीन उ़मर की त़रफ़ से अ़म्र बिन आ़स की त़रफ़ है ! तुम पर सलामती हो, ह़म्दो सलात के बा'द मैं येह कहता हूं कि ऐ अ़म्र ! मेरी जान की क़सम ! जब तुम और तुम्हारे मुल्क वाले सैर हों तो तुम्हें कुछ परवाह नहीं कि मैं और मेरे मुल्क वाले हलाक हो जाएं, अरे फ़रयाद को पहुंच ! अरे फ़रयाद को पहुंच।''

इस कलिमे को बार बार तह़रीर फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबी मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

''لِعَبْدِ اللّٰہِ عُمَرَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، اَمَّا بَعْدُ فَیَا لَبَّیْکَ ثُمَّ یَا لَبَّیْکَ وَقَدْ بَعَثْتُ اِلَیْکَ بِعِیْرًا اَوَّلُھَا عِنْدَکَ وَآخِرُھَا عِنْدِیْ، وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ

''या'नी येह जवाबी मक्तूब अ़म्र बिन आ़स की त़रफ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये है। ह़म्दो सलात के बा'द मैं येह कहता हूं कि हुज़ूर ! मैं बार बार ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हूं, फिर बार बार ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हूं इस त़रह़ कि मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में सामान से लदे ऊंट इतनी ता'दाद में भेज रहा हूं कि उन ऊंटों में सब से पहला ऊंट आप के पास होगा और उस का आख़िरी मेरे पास। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आप पर सलामती, उस की रह़मतें और बरकतें नाज़िल हों।''

फिर जब सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से माल आया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस सामान के ज़रीए़ मुसलमानों पर ख़ूब वुस्अ़त फ़रमाई, मदीनए मुनव्वरा और अत़राफ़ के लोगों को एक घर के लिये एक ऊंट मअ़ सामान अ़त़ा फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा कि वोह येह माल लोगों में तक़्सीम करें। उन्हों ने हर घर में एक एक ऊंट और खाने वग़ैरा का सामान दिया ताकि लोग खाना खाएं, ऊंट ज़ब्ह़ करें, उस का गोश्त खाएं, चर्बी पिघला कर सालन बनाएं, उस की खाल को काम में लाएं जूतियां वग़ैरा बनाएं, जिस थेली के अन्दर खाना था उस का लिह़ाफ़ बना लें। इस सामान के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों पर वुस्अ़त फ़रमा दी।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह देखा तो आप ने रब عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के हुकूमती रुफ़क़ा को अपनी बारगाह में बुलाया, उन्हें निहायत ही ए'ज़ाज़ो इकराम अ़ता फ़रमाया, फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़म्र बिन आ़स ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मिस्र को मुसलमानों के हाथ फ़त्ह़ फ़रमाया और अह्ले मिस्र को तमाम मुसलमानों के लिये त़ाक़त व कुव्वत का ज़रीआ़ बनाया, मैं ने येह सोचा है कि जब मैं अह्ले ह़रमैन पर आसानी करना चाहता हूं तो क्यूं न एक नह्र खुदवाऊं कि वोह दरयाए नील से समन्दर में बहे और आइन्दा ग़ल्ला वग़ैरा दीगर सामान समन्दरी रास्ते से मदीनए मुनव्वरा पहुंचे क्यूंकि इस त़रह़ ऊंटों पर सामान वग़ैरा लाद कर लाना काफ़ी मुश्किल काम है। आप तमाम लोग इस बारे में मुशावरत कर लें और इत्तिफ़ाक़े राए से येह काम करें।"

बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुशावरत की अव्वलन कुछ इख़्तिलाफ़ात वाके़अ़ हुवे लेकिन बा'द में इत्तिफ़ाक़ हो गया और मिस्र वालों ने एक नह्र खोदी जो शहरे फ़ुस्त़ात़ की त़रफ़ से दरयाए नील से बह़रे कुल्ज़ुम तक पहुंचती थी, उस में कश्तियां चलने लगीं, जिन के ज़रीए़ मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा खाने का सामान वग़ैरा आसानी के साथ आने लगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के ज़रीए़ अह्ले ह़रमैन को बहुत फ़ाइदा पहुंचाया, उस नह्र का नाम "**ख़लीजे अमीरुल मोमिनीन**" रखा गया और येह नह्र ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर तक बाक़ी रही बा'दे अज़ां हुक्काम की ग़फ़्लत के बाइ़स बन्द हो गई।[1]

रोज़ाना बीस ऊंट ज़ब्ह़ फ़रमाते

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़िरास दीली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुर्रमादह में मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही

1 ......صحیح ابن خزیمة، باب ذکر اللیل۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۶۸، حدیث: ۲۳۶۷، مستدرک حاکم، کتاب الزکاة، لا یدخل۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۶، حدیث: ۱۵۱۱، سنن کبریٰ، کتاب قسم الفی والغنیمة، باب ما یکون۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۵۷۷، حدیث: ۱۳۰۱۶، کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۷۵، حدیث: ۳۵۹۰۰۔

www.dawateislami.net

करते हुवे रोज़ाना बीस ऊंट नहर किया करते थे जो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिस्र से भेजे थे।[1]

लोगों में सदक़ात तक़्सीम किये

ह़ज़रते सय्यिदुना कर्दम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सदक़ा तक़्सीम करने वाले को येह हुक्म दे कर भेजा कि जिस के पास एक बकरी और एक चरवाहा हो उस को मज़ीद दे दो।[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ात मर्जए ख़लाइक़

आ़मुर्रमादह में अहले अ़रब चार जानिब से मदीनए मुनव्वरा पहुंचने लगे। गोया सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात मर्जए ख़लाइक़ थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने उमरा को येह हुक्म दे रखा था कि वोह मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से आने वाले लोगों की ज़रूरियात को पेशे नज़र रखें। एक रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "शाम का खाना हमारे पास कितने लोग खाते हैं उन की गिनती करो।" लिहाज़ा जब गिनती की गई तो उन की ता'दाद चालीस हज़ार थी, फिर चन्द दिन बा'द उन की दोबारा गिनती की गई तो येह ता'दाद साठ हज़ार तक पहुंच गई। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चन्द लोगों की येह ज़िम्मेदारी लगाई कि वोह मुख़्तलिफ़ शहरों से आने वाले लोगों को अपने अपने शहरों में भेजें और उन के शहरों में खाने का सामान और ग़ल्ला वग़ैरा भेजने का इन्तिज़ाम करें। तमाम लोगों के लिये एक बड़े बरतन में आटे और रोग़न में खाना बनाया जाता था।[3]

फ़ारूक़े आ'ज़म ने अपने हाथों से पका कर खिलाया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इब्ने ह़न्तमा (या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर रह़्म फ़रमाए, मैं ने देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुर्रमादह में अपनी पीठ पर दो बोरियां लादे और हाथ में तेल से भरा हुवा एक डिब्बा उठाए जा रहे हैं, आप के साथ आप के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं, दोनों बारी बारी वोह सामान उठाते हैं, इतने में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र मुझ पर पड़ी तो फ़रमाया : مِنْ اَیْنَ یَا اَبَا هُرَیْرَة؟ "या'नी ऐ अबू हुरैरा कहां जा रहे हो ? मैं ने

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۹۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۶۔
3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۰ ملخصا۔

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर मैं क़रीब ही जा रहा हूं।" फिर मैं ने भी उन का हाथ बटाया, उस सामान को ले कर हम मक़ामे "सरार" तक पहुंचे जहां तक़रीबन बीस घरों के लोग मुक़ीम थे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "तुम लोग यहां पर क्यूं आए हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! खाने वग़ैरा की तलाश में आए हैं।" फिर उन्हों ने वोह चमड़े दिखाए जिन्हें बतौ़रे खाना खाते थे और बोसीदा हड्डियों का वोह सफ़ूफ़ भी दिखाया जिसे वोह फांकते थे। येह देखते ही सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी चादर उतारी और खुद ही अपने हाथों से खाना पकाने लगे, खाना पका पका कर सब को खिलाना शुरूअ़ किया यहां तक कि सब सैर हो गए। फिर आप ने अपने ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि "इन लोगों के लिये ऊंट ले कर आओ।" वोह ऊंट लाए तो आप ने उन को सुवार कराया और जब्बाना के मक़ाम पर ठहराया, फिर उन्हें पहनने के लिये कपड़े वग़ैरा दिये जो उन्हों ने ज़ेबे तन कर लिये। येही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मा'मूल रहा कि मुख़्तलिफ़ लोगों के पास जा कर उन की मदद फ़रमाते रहे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लोगों से इस क़ह्त़ साली जैसी मुसीबत को दूर फ़रमा दिया।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म ने खाना पकाने का त़रीक़ा बताया

हज़रते सय्यिदुना हिज़ाम बिन हिशाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप आ़मुर्रमादह में एक औ़रत के क़रीब से गुज़रे जो अ़सीदा खाना बना रही थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : لَيْسَ هٰكَذَا تَعْصِدِيْنَ "या'नी येह खाना ऐसे नहीं बनाते।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद ही उस को बना कर दिखाया और फ़रमाया : هٰكَذَا "या'नी ऐसे बनाते हैं।"[2]

फ़ारूके़ आ'ज़म खाना पकाना सिखाते

हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन ख़ालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि आ़मुर्रमादह में मैं ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप औ़रतों को खाना पकाना सिखा रहे थे, उन्हें बता रहे थे कि पानी में आटा उस वक़्त तक न डालो जब तक वोह

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۸۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۳۹۔

www.dawateislami.net

अच्छी त़रह़ गर्म न हो जाए, जब वोह गर्म हो जाए तो फिर थोड़ा थोड़ा कर के उस में आटा डालो और साथ साथ उसे हिलाती भी जाओ इस त़रह़ खाना ज़ियादा और मज़ेदार बनेगा और एक जगह जमेगा भी नहीं।(1)

रिआ़या के साथ मां जैसा सुलूक

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आ़मुर्रमादह में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़वामुन्नास के साथ मदनी सुलूक को देख कर ऐसा लगता है जैसे आप के नज़्दीक आप की रिआ़या औलाद की हैसिय्यत रखती हो, जैसे वालिदैन अपने बच्चों की हर हर मुआ़मले में रहनुमाई करते हैं, बिऐ़निही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ऐसा ही फ़रमाया करते थे और आ़मुर्रमादह में तो वैसे ही अनाज काफ़ी मुश्किल से मिलता था फिर ख़्वातीन की ना तजरिबा कारी और ग़फ़्लत के सबब खाना सह़ीह़ और अच्छा न बने, आप ने उस का भी सद्दे बाब फ़रमा दिया। मज़्कूरए बाला रिवायात से वाज़ेह़ है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने हाथों से खुद खाना पका कर खिलाया, बल्कि पकाना भी सिखाया, वाक़ेई अगर कोई ह़ाकिम या ज़िम्मेदार अपने आप को वालिद या वालिदा के दरजे में रख कर अ़वाम या मा तह़्त इस्लामी भाइयों की तरबिय्यत करता है, उन की तक्लीफ़ों को दूर करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन के दिल में उस की मह़ब्बत डाल देता है।

फ़ारूके़ आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ ख़िदमात

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन औस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि आ़मुर्रमादह में मेरे क़बीले या'नी बनू नज़ीर के सौ घरानों पर मुश्तमिल लोग अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास मक़ामे "जब्बाना" में आए, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जो लोग भी आते उन्हें खाना वग़ैरा देते और जो नहीं आ सकते थे उन की ज़रूरत की चीज़ें उन के पास ही भेज देते थे।(2)

(2) मरीज़ों की इयादत करना, वफ़ात पा जाने वाले लोगों के कफ़न का इन्तिज़ाम करना भी आप की आ़दात में शामिल था। क़ह़त़ साली की वज्ह से काफ़ी अमवात भी हुईं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दस ऐसे अश्ख़ास पर एक साथ नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जिन की मौत चमड़ा खाने की वज्ह से हुई थी।

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۳۹۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۴۱۔

www.dawateislami.net

जब क़ह्त़ साली दूर हो गई बारिश वग़ैरा का नुज़ूल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह हुक्म जारी फ़रमाया : اُخْرُجُوْا مِنَ الْقَرْيَةِ اِلٰى مَا كُنْتُمْ اِعْتَدْتُّمْ مِنَ الْبَرِّيَّةِ "या'नी तमाम लोग जिन जिन सहराई अ़लाक़ों से आए थे वहीं वापस चले जाएं। क़ह्त़ साली की वज्ह से जो लोग कमज़ोर व नातुवां हो गए थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद उन्हें सुवारियों पर उन के घर पहुंचाया।(1)

मजलिसे ख़ैरख़्वाही का क़ियाम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से आए हुवे लोगों की ख़ैरख़्वाही के लिये एक मजलिस भी क़ाइम फ़रमा दी थी जिस के अराकीन लोगों की ख़ैरख़्वाही करते और रात को इस की मुकम्मल तफ़्सील बारगाहे फ़ारूक़ी में पेश कर देते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आ़मुर्रमादह वाले साल लोग हर त़रफ़ से मदीनए मुनव्वरा उमड़ आए तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चन्द अफ़राद को लोगों के खाने और रिहाइश वग़ैरा की ख़ैरख़्वाही पर मामूर फ़रमा दिया। इन में ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उख़्ते नमिर, ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم थे। येह तमाम लोग रात को बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर होते और पूरे दिन की कारकर्दगी पेश करते, इन में से हर एक मदीनए मुनव्वरा के एक एक कोने पर मामूर था।(2)

मरीज़ों के लिये अ़लाह़िदा खाने का इन्तिज़ाम

आ़मुर्रमादह में मरीज़ों के लिये अ़लाह़िदा से खाने का इन्तिज़ाम किया जाता था, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा अफ़राद सह़री के वक़्त आ जाते और खाना पकाने में मश्ग़ूल हो जाते, सुब्ह़ तक खाना तय्यार हो जाता और फिर मरीज़ों को खिलाया जाता। बा'दे अज़ां दीगर लोगों के लिये खाना तय्यार किया जाता।(3)

क़ह्त़ साली के मुतअस्सिरीन की ता'दाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार अपनी इसी मजलिस को खाना खाने वाले लोगों को शुमार करने का हुक्म दिया तो उन की ता'दाद सात ह़ज़ार

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۱-

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۰-

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۱-

www.dawateislami.net

सामने आई, फिर औ़रतों बच्चों और मरीज़ों के साथ शुमार किया गया तो कुल ता'दाद चालीस हज़ार हो गई। चन्द दिन बा'द दोबारा शुमार किया गया तो फ़क़त़ खाना खाने वालों की ता'दाद दस हज़ार हो गई और दीगर लोगों को भी शुमार किया गया तो उन की ता'दाद पचास हज़ार हुई। फिर उन में भी इज़ाफ़ा होता रहा और येह तमाम लोग उस वक़्त तक मदीनए मुनव्वरा में ही रहे जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ह़त़ साली को दूर न फ़रमा दिया। क़ह़त़ साली दूर होने के बा'द सब लोगों ने अपने अपने अ़लाक़ों की त़रफ़ वापसी शुरूअ़ कर दी, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब को ग़ल्ला और राशन वग़ैरा दे कर ख़ुद रवाना करते, लोगों की अपने अ़लाक़ों में वापसी के वक़्त मजमूई ता'दाद एक तिहाई रह गई थी जब कि बक़िय्या का इन्तिक़ाल हो गया था।(1)

रिआ़या को आ'माले सालिह़ा की तरग़ीब

अपने रब को राज़ी करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : "ऐ लोगो ! मुझे अन्देशा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी आ़म हो गई है, तुम सब अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करो, गुनाहों को छोड़ दो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो और नेक आ'माल इख़्तियार करो।"(2)

अपने रब से डरो

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से रिवायत है कि आ़मुर्रमादह में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अपनी ज़ात के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो ख़ुसूसन उन मुआ़मलात के बारे में जो लोगों की नज़र से पोशीदा हैं, मैं तुम्हारी वज्ह से और तुम लोग मेरी वज्ह से आज़माइश में हो, मैं नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मुझ पर तुम्हारी वज्ह से है या तुम पर मेरी वज्ह से है या हम सब की वज्ह से है। तमाम लोग आओ ! हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करते हैं कि वोह हमारे दिलों को सह़ीह़ फ़रमा दे, हम पर रह़म फ़रमाए और हम से इस क़ह़त़ साली को दूर फ़रमा दे।"(3)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۴۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۴۵۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۴۵۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और बारिश की दुआ

बाराने रहमत का सुवाल करो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइदा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि आमुर्रमादह में एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मग़रिब की नमाज़ अदा की और लोगों को ख़िताब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो, उस की बारगाह में तौबा करो, उस का फ़ज़्लो करम त़लब करो, उस से ऐसी बारिश का सुवाल करो जो बाराने रहमत हो, बाराने ज़हमत न हो, येही अ़मल करते रहो यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे।"(1)

बारिश वाली आयात की तिलावत की

हज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस्तिस्क़ा या'नी बारिश त़लब करने के लिये बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾﴾ (پ۲۹، نوح: ۱۰، ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो मैं ने कहा अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो बेशक वोह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है तुम पर शर्राटे का मींह भेजेगा।"

फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾﴾ (پ۱۲، هود: ۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा और जुर्म करते हुवे रूगर्दानी न करो।"

लोगों ने पूछा कि "हुज़ूर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने आयात की तिलावत फ़रमाई लेकिन बारिश त़लब न की इस की क्या वज्ह है ?" फ़रमाया : لَقَدْ طَلَبْتُ بِمَجَادِيحِ السَّمَاءِ الَّتِي يُسْتَنْزَلُ بِهَا الْقَطْرُ "या'नी जिस आस्मान से क़त़रा क़त़रा बारिश त़लब की जाती है मैं ने उस की हर जानिब से बारिश को त़लब किया है।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۳۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الدعاء، مایدعی۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۷ ۶، حدیث: ۱۔

www.dawateislami.net

रोते रोते दाढ़ी मुबारका तर हो गई

हज़रते सय्यिदुना नियार अस्लमी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللہِ القَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम लोगों के साथ मैदान में निकल कर नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ने का इरादा फ़रमाया और अपने उ़म्माल को भी लिखा कि फ़ुलां फ़ुलां तारीख़ को लोगों के साथ निकल कर रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ़जिज़ी और तौबा व इस्तिग़फ़ार के साथ दुआ़ करें ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ह्त़ साली को दूर फ़रमा दे। आप ख़ुद भी उस तारीख़ को निकले, आप के जिस्म पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक थी, ईदगाह पहुंचे और लोगों को ख़ुत़बा दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही आ़जिज़ी व इन्किसारी फ़रमा रहे थे, आप की दुआ़ इस्तिग़फ़ार पर मुश्तमिल थी, जब दुआ़ ख़त्म करने का वक़्त क़रीब आया तो हाथों को दराज़ कर के ऊपर उठाया और चादर का एक किनारा दाईं और दूसरा बाईं त़रफ़ कर दिया, फिर हाथ को बुलन्द कर के ख़ूब गिर्या व ज़ारी की, इतना रोए, इतना रोए कि रोते रोते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाढ़ी मुबारका तर हो गई।(1)

सय्यिदुना अ़ब्बास के वसीले से दुआ़

या अल्लाह ! हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मदीनए मुनव्वरा में जब क़ह्त़ साली हुई तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से यूं दुआ़ मांगी : **اَللّٰھُمَّ اِنَّا کُنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّنَا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَتَسْقِیْنَا وَاِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِعَمِّ نَبِیِّنَا فَاسْقِنَا** "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पहले हम तेरे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से बारिश की दुआ़ किया करते थे तो तू हम पर बारिश नाज़िल फ़रमाता था और अब हम तेरे नबी के चचा के वसीले से दुआ़ मांगते हैं हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा।" सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के यूं दुआ़ करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा दी।"(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۴۴۔

2 ......بخاری، کتاب الاستسقاء، باب سوال الناس۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۴۶، حدیث: ۱۰۱۰۔

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह के क़ासिद की आमद

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन का'ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि मदीनए मुनव्वरा में जो क़ह़त़ आया उस ने दीगर लोगों के साथ साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भी परेशान कर दिया था। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ करने लगे :

اَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكَ يَقُوْلُ لَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَدْ عَهِدْتُّكَ كَيِّسًا وَّمَا زِلْتَ عَلٰى ذٰلِكَ فَمَا شَأْنُكَ

"या'नी मैं आप की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ासिद बन कर आया हूं, मैं ने ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप से इरशाद फ़रमा रहे हैं : ऐ उ़मर ! मैं तो तुम से बा ए'तिबार दानाई वाक़िफ़ हूं और तुम हमेशा दाना ही रहे लेकिन अब येह तुम्हारी क्या ह़ालत है ? येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह ख़्वाब तुम ने कब देखा है ? अ़र्ज़ किया : "कल रात को।" फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने लोगों को दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ाई और पूछा : اَيُّهَا النَّاسُ اَنْشُدُكُمُ اللّٰهَ هَلْ تَعْلَمُوْنَ مِنِّيْ اَمْرًا غَيْرُهٗ خَيْرٌ مِّنْهُ "या'नी ऐ लोगो ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं : क्या तुम ने मेरी ज़ात में कोई ऐसी बात देखी जिस में मज़ीद बेहतरी की गुन्जाइश हो ?" लोगों ने कहा : "नहीं।" फिर आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का ख़्वाब सुनाया तो लोगों ने इस की तस्दीक़ करते हुवे कहा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने बिल्कुल सच कहा है, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मुसलमानों के लिये बारिश को त़लब कीजिये।" चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ले कर निकले और निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ मांगी, जिस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बारिश नाज़िल फ़रमाई।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म और सय्यिदुना अ़ब्बास की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जब तमाम लोगों को जम्अ़ कर के दुआ़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त तमाम लोगों पर रिक़्क़त त़ारी थी, क्यूंकि तमाम मुसलमान सख़्त आज़माइश में मुब्तला थे, सब की नज़रें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ाते मुबारका पर लगी हुई थीं, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपनी दुआ़

---

1 ......البداية والنهاية، ج٥، ص١٢٦۔

www.dawateislami.net

के आख़िर में कहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपनी रिआ़या के मुआ़मले में मजबूर हो गया हूं, ऐ प्यारे रब عَزَّوَجَلَّ जो कुछ तेरे पास है वोह सब इन्सानों के लिये काफ़ी है।" फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का हाथ थामा और यूं अ़र्ज़ किया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरे नबी के चचा और आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बक़िय्या अज्दाद व अकाबिरीन की दुआ़ओं के ज़रीए़ तेरा कुर्ब चाहते हैं, तेरी बात सच्ची है और तू ख़ुद इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَ كَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ كَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ﴾ (پ۱۶، الکھف:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "रही वोह दिवार वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन का बाप नेक आदमी था।"

"ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने उन बच्चों के बाप के नेक होने की वज्ह से उस दीवार की हि़फ़ाज़त फ़रमाई, लिहाज़ा तू अपने नबी के चचा के वसीले से हमारी हि़फ़ाज़त फ़रमा, हम उन को तेरी बारगाह में अपनी शफ़ाअ़त के लिये पेश कर रहे हैं, तू इन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा।" फिर आप ने लोगों की त़रफ़ मुंह किया और येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾﴾ (پ۲۹، نوح:۱۰، ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो बेशक वोह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है तुम पर शर्राटे का मींह भेजेगा।"

फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّ يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَ لَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾﴾ (پ۱۲، ھود:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा और जुर्म करते हुवे रू गर्दानी न करो।"

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ साथ ख़ुद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर भी रिक़्क़त त़ारी थी, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मुबारक आंखों से आंसू जारी थे, आप की दाढ़ी मुबारका आंसू से तर हो चुकी थी, सय्यिदुना अ़ब्बास ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में इल्तिजा करते हुवे अ़र्ज़ किया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ही हमारा निगहबान है, गुम होने वाले को तू राएगां न फ़रमा, बे सहारों को हलाकत की वादियों में अकेला न छोड़, हमारे छोटे कमज़ोर और बड़े दुबले होते जा रहे हैं, ऐ बारी

www.dawateislami.net

तआला ! मेरी अ़र्ज़ फ़क़त़ तेरी बारगाह में है, तू ख़ुफ़्या और पोशीदा बातों को जानने वाला है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू इन लोगों पर अपनी रह़मत वाली बारिश अ़त़ा फ़रमा, इन लोगों ने तेरे नबी की निस्बत की वज्ह से मुझे इस जगह ला खड़ा किया है।"

इन रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा और अचानक एक ख़ुशनुमा बादल ज़ाहिर हुवा, लोग कहने लगे : "वोह देखो वोह देखो।" वोह बादल चलता हुवा आया और फिर ठहर गया और हवाएं चलने लगीं, फिर मूसलाधार बारिश शुरूअ़ हो गई, बारिश का इतना पानी था कि लोग अपनी इज़ार के पाइंचों को उठाए वापस आए, पानी उन के टख़्नों तक आ गया, लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामन को थाम लिया और आप को मुबारक बाद देते हुवे कहने लगे : هَنِيْئًا لَّکَ سَاقِیَ الْحَرَمَيْنِ "या'नी मुबारक हो कि आप ह़रमैन या'नी मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा को सैराब फ़रमाने वाले हैं।"(1)

सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित के अश्आ़र

इस अ़ज़ीमुश्शान वाक़िए के बा'द सना ख़्वाने रसूल सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में येह तीन अश्आ़र कहे :

سَاَلَ الْاِمَامُ وَقَدْ تَتَابَعَ جَدْبُنَا ... فَسَقَى الْغَمَامُ بِغُرَّةِ الْعَبَّاسِ

तर्जमा : "इमाम या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में सुवाल किया इस ह़ाल में कि हम पर मुसलसल क़ह़त़ त़ारी था, तो बादल ने सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चमक से बारिश बरसाई।"

عَمِّ النَّبِيِّ وَصِنْوِ وَالِدِهِ الَّذِيْ ... وَرِثَ النَّبِيَّ بِذَاکَ دُوْنَ النَّاسِ

तर्जमा : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा, आप के वालिद के ह़क़ीक़ी भाई, दूसरों के इ़लावा वोही रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वारिस हुवे।"

اَحْيَا الْاِلٰهُ بِهِ الْبِلَادَ فَاَصْبَحَتْ ... مُخْضَرَّةُ الْاَجْنَابِ بَعْدَ الْيَاْسِ

तर्जमा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्ही या'नी सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से शहरों को आबाद फ़रमा दिया, मायूसी के बा'द वोह चारों जानिब से सर सब्ज़ हो गए।"(2)

---

1 ......الكامل فی التاريخ، ثم دخلت سنة ثمان عشرة۔۔۔الخ، ج ٢، ص ٣٩٧۔

2 ......اسد الغابة، عباس بن عبد المطلب، ج ٣، ص ١٦٦۔

www.dawateislami.net

इस्लाम में वसीले का तसव्वुर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत में इस बात का मुबारक ज़िक्र है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें सैराब फ़रमाया। लिहाज़ा ज़रूरी है कि इस्लाम में किसी हस्ती को वसीला बनाने का सह़ीह़ तसव्वुर पेश किया जाए ताकि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह मुबारक अ़मल हमारे सामने बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाए और तमाम मुसलमान इस से फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करें।

वसीला किसे कहते हैं.....?

अ़ल्लामा इब्ने असीर जज़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی वसीले की ता'रीफ़ करते हुवे लिखते हैं : مَا يُتَوَصَّلُ بِهِ إِلَى الشَّيْءِ وَيُتَقَرَّبُ بِهِ "या'नी जिस चीज़ के ज़रीए़ या सबब से किसी दूसरी चीज़ तक रसाई ह़ासिल की जाए और इस का कुर्ब ह़ासिल किया जाए वोह वसीला है।"(1)

वसीले के सुबूत पर तीन आयाते मुबारका

वसीला तलाश करो

(1)......कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْۤا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾﴾ (پ۶، المائدہ:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।"

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि मुसलमान को आ'माल के साथ अम्बिया व औलिया का वसीला भी ढूंडना चाहिये क्यूंकि आ'माल तो اِتَّقُوا اللّٰه में आ गए थे, फिर तलाशे वसीला का हुक्म हुवा। येह भी मा'लूम हुवा कि वसीले की राह में कोशिश करना चाहिये ताकि वसीला ह़ासिल हो। इस से मा'लूम हुवा कि कोई मुत्तक़ी मोमिन बिग़ैर वसीला रब तक नहीं पहुंच सकता, ख़याल रहे कि इस हुक्म में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल नहीं क्यूंकि आप सब का वसीला हैं, आप का वसीला कौन हो सकता है?"

---

(1)......النهاية في غريب الاثر، باب الواو مع السين، ج۵، ص۱۶۱۔

www.dawateislami.net

वसीला बनाना मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा

(2)......कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह मक्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं वोह आप ही अपने रब की त़रफ़ वसीला ढूंडते हैं कि इन में कौन ज़ियादा मुक़र्रब है उस की रह़मत की उम्मीद रखते और उस के अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तुम्हारे रब का अ़ज़ाब डर की चीज़ है ।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि मुक़र्रब बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाना जाइज़ और अल्लाह के मक्बूल बन्दों का त़रीक़ा है ।" मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि अल्लाह तक पहुंचने के लिये वसीला ढूंडना लाज़िम है, रब फ़रमाता है :

﴿وَابْتَغُوٓا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ﴾" (پ۶، المائدہ:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो ।"

हुज़ूर के वसीले से दुआ करते

(3)......कुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝﴾ (پ۱، البقرۃ:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब उन के पास अल्लाह की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है और उस से पहले इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो अल्लाह की ला'नत मुन्किरों पर ।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत और कुरआने करीम के नुज़ूल से क़ब्ल यहूद अपनी ह़ाजात के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ़ करते और कामयाब होते थे और इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا وَانْصُرْنَا بِالنَّبِیِّ الْاُمِّیِّ या रब हमें नबिय्ये उम्मी के सदके़ में फ़त्ह़ व नुसरत अ़त़ा फ़रमा। मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूलाने ह़क़ के वसीले से दुआ़ क़बूल होती है येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर से क़ब्ल जहान में हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से ख़ल्क़ की ह़ाजत रवाई होती थी।"

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "जब कभी अह्ले किताब मुशरिकीन से जंग करते तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के वसीले से दुआ़ए नुसरत करते थे कि ख़ुदाया इस नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के तुफ़ैल हमें फ़त्ह़ दे, रब उन्हें फ़त्ह़ देता था, क्यूंकि गुज़श्ता कुतुब और पहले नबियों ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का गुलगुला आ़लम में फैला दिया था, इस आयत में वोह वाक़िआ़त याद दिलाए जा रहे हैं कि पहले तुम उन के नाम के तुफ़ैल दुआ़एं मांगते थे, अब जब वोह मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले आए तो तुम उन के मुन्किर हो गए, मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के तवस्सुल से दुआ़एं मांगना बड़ी पुरानी सुन्नत है और उन के वसीले का मुन्किर यहूदो नसारा से बदतर है और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के वसीले से पहले भी ख़ल्क़ की ह़ाजत रवाई होती थी।"

आइन्दा आने वालों के वसीले से दुआ़ मांगना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला तीसरी आयते मुबारका में है कि पिछली उम्मतें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुश्मनों पर फ़त्ह़ की दुआ़ मांगती थीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाता था, ह़ालांकि उस वक़्त हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ न लाए थे। इस से मा'लूम हुवा कि आइन्दा आने वालों के वसीले से दुआ़ करना बिल्कुल जाइज़ है। मसलन यूं दुआ़ मांगना बिल्कुल जाइज़ है : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और क़ियामत तक आने वाले तेरे तमाम बरगुज़ीदा बन्दों का वसीला पेश करता हूं, तू मेरे तमाम गुनाहों को बख़्श दे, मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।"

www.dawateislami.net

अम्बियाए किराम के वसीले से दुआ मांगना

जिस तरह आइन्दा आने वाले लोगों के वसीले से दुआ मांगना जाइज़ है इसी तरह ज़िन्दों और जो विसाल फ़रमा चुके हैं उन के वसीले से दुआ मांगना भी जाइज़ है, जैसे पीछे हदीसे मुबारका गुज़री कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से बारिश की दुआ की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बारिश नाज़िल फ़रमाई। वाज़ेह रहे कि कुरआनो सुन्नत, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ताबेईन, तब्ए ताबेईन, औलियाए उज़्ज़ाम बल्कि पूरी उम्मते मुस्लिमा का इस बात पर इजमाअ है कि अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी कुबूर में ज़िन्दा हैं। इसी तरह तमाम शुहदाए किराम भी अपनी अपनी कुबूर में ज़िन्दा हैं, लिहाज़ा उन के वसीले से दुआ मांगना बिल्कुल जाइज़ है।

रसूलुल्लाह ने वसीले की तल्क़ीन फ़रमाई

एक नाबीना सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वसीले की तल्क़ीन फ़रमाई। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक नाबीना शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हुवा और अर्ज़ करने लगा : اُدْعُ اللّٰہَ اَنْ یُّعَافِیَنِیْ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप दुआ फ़रमा दीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी बीनाई को बहाल फ़रमा दे।" हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنْ شِئْتَ اَخَّرْتُ لَکَ وَھُوَ خَیْرٌ وَاِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ "या'नी अगर तुम चाहो मैं तुम्हारे लिये दुआ को मुअख़्ख़र कर दूं और येह तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये दुआ कर देता हूं।" उस ने अर्ज़ किया : "हुज़ूर आप दुआ फ़रमा दीजिये।" रावी कहते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अच्छी तरह वुज़ू करने का हुक्म दिया और उसे येह दुआ सिखाई कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह दुआ करे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّي اَسْاَلُکَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ یَا مُحَمَّدُ اِنِّي تَوَجَّھْتُ بِکَ

اِلٰی رَبِّي حَاجَتِي ھٰذِهٖ لِتُقْضٰی لِيَ اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ

"या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी बारगाह में सुवाल करता हूं और तेरी ज़ाते पाक की तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं तेरे इस नबी मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से जो नबिय्ये रहमत हैं, या

www.dawateislami.net

रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से तवज्जोह की है ताकि मेरी ह़ाजत पूरी हो जाए, या इलाही तू इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा।(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में क़ब्रे रसूल पर सह़ाबी की फ़रयाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ साली के वक़्त एक सह़ाबी ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर तवस्सुल किया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मालिकदार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है जो कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में खाने के ख़ाज़िन थे, फ़रमाते हैं कि जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में क़ह़त़ आया तो एक सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ करने लगे : يَا رَسُولَ اللّٰهِ اِسْتَسْقِ لِاُمَّتِكَ فَاِنَّهُمْ قَدْ هَلَكُوا "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपनी उम्मत के लिये बारिश की दुआ़ कीजिये क्यूंकि वोह हलाक हो रहे हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِئْتِ عُمَرَ فَاَقْرِئْهُ السَّلَامَ وَاَخْبِرْهُ اَنَّكُمْ مُسْتَقِيمُونَ وَقُلْ لَهُ عَلَيْكَ الْكَيْسُ عَلَيْكَ الْكَيْسُ

"या'नी उ़मर के पास जाओ और उन्हें मेरा सलाम कह दो और उन्हें येह ख़बर दे दो कि अ़न क़रीब तुम पर बारिश नाज़िल होने वाली है और उस से येह भी कह दो कि तुम पर सूझ बूझ लाज़िम है तुम पर सूझ बूझ लाज़िम है।" आप सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और उन को तमाम तफ़्सील से आगाह किया तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह सुन कर आबदीदा हो गए और ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और अ़र्ज़ करने लगे : يَا رَبِّ لَا آلُوا اِلَّا مَا عَجَزْتُ عَنْهُ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं सिर्फ़ वोही काम तर्क करता हूं जिस से मैं आ़जिज़ होता हूं।"(2)

बा'दे विसाल रसूलुल्लाह के वसीले से दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बिन सह्ल बिन हुनैफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने चचा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स अपने किसी काम के सिलसिले में

---

1 ......ابن ماجه، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی صلاة الحاجة، ج ۲، ص ۱۵٦، حدیث: ۱۳۸۵۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل عمر بن الخطاب، ج ۷، ص ۴۸۲، حدیث: ۳۵۔

فتح الباری، کتاب الاستسقاء، باب سوال الناس۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۴۲۹، تحت الحدیث: ۱۰۱۰۔

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाता रहता था, लेकिन आप उस की त़रफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाते थे और न ही उस के काम में ग़ौर करते थे, उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात की और सारा मुआ़मला बयान कर दिया। आप ने उस से फ़रमाया : ''तुम अच्छी त़रह़ वुज़ू करो, फिर मस्जिद में जा कर दो रक्अ़त नमाज़ अदा करो, फिर येह दुआ़ करो कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं हमारे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नबिय्ये रह़मत के वसीले से, ऐ मुह़म्मद ! मैं आप के वसीले से अपने रब की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा हूं ताकि मेरी येह ह़ाजत पूरी हो जाए और तुम अपनी ह़ाजत का ज़िक्र करो। फिर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगा।''

पस वोह शख़्स चला गया और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बताए हुवे त़रीक़े पर अ़मल किया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गया तो दरबान आया और उस का हाथ पकड़ कर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की ह़ाजत को पूरा कर दिया, फिर फ़रमाया : ''तुम ने अब तक अपनी ह़ाजत क्यूं न बयान की ? अब जब भी तुम्हें कोई काम हो तो उस का ज़िक्र किया करो।'' इस के बा'द वोह शख़्स वहां से चला गया और उस की मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई, उस ने कहा : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को नेक जज़ा दे, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरी त़रफ़ ग़ौर नहीं फ़रमाते थे, आप ने उन से सिफ़ारिश की।''

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने उन से तुम्हारे बारे में कोई बात नहीं की। मैं एक बार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर था जब आप के पास एक नाबीना सह़ाबी आए और अपनी बीनाई की शिकायत की तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें सब्र का फ़रमाया लेकिन उन्हों ने दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की, पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें यूं ही दुआ़ तल्क़ीन फ़रमाई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अभी हम अलग नहीं हुवे थे कि वोह नाबीना सह़ाबी ऐसे हो गए जैसे वोह नाबीना थे ही नहीं।''(1)

(1)......معجم کبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ج ۹، ص ۳۰، حدیث: ۸۳۱۱۔

www.dawateislami.net

औलियाए किराम के वसीले से दुआ़ करना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वसीले से दुआ़ मांगना जाइज़ है इसी त़रह़ सह़ाबए किराम व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के वसीले से दुआ़ मांगना भी बिल्कुल जाइज़ है। चुनान्चे,

सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी की क़ब्र के वसीले से दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल बर मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ब्रे अन्वर क़ुस्तुन्त़ीनिय्या के क़रीब है, लोग उस की ता'ज़ीम करते हैं, उन की क़ब्र के वसीले से बारिश त़लब करते हैं और उन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बारिश नाज़िल की जाती है।"(1)

सय्यिदुना इमाम बुख़ारी की क़ब्र के वसीले से दुआ़

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात के (दो सौ साल) बा'द समरक़न्द में ख़ुश्क साली की वज्ह से क़ह़त़ पड़ गया, लोगों ने बारहा नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़ी और दुआ़एं मांगीं लेकिन बारिश न हुई, फिर एक नेक शख़्स जो ज़ोह्दो तक़्वा और परहेज़गारी की वज्ह से मश्हूर था शहर के क़ाज़ी के पास गया और उसे मश्वरा दिया कि तुम शहर के लोगों को ले कर इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्र पर जाओ और वहां जा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बारिश की दुआ़ मांगो, शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमा ले। क़ाज़ी ने येह मश्वरा क़बूल कर लिया और लोगों के साथ इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्र पर आया, इमाम बुख़ारी के वसीले से दुआ़एं कीं और गिर्या व ज़ारी की, इमाम बुख़ारी से क़बूलिय्यते दुआ़ के लिये सिफ़ारिश की, निहायत ही ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से उस ने दुआ़ मांगी, उसी वक़्त आस्मान पर बादल छा गए और सात रोज़ तक मुसल्सल बारिश होती रही और इतनी बारिश हुई कि लोगों के लिये मक़ामे "ख़रतंग" से "समरक़न्द" तक पहुंचना भी मुश्किल हो गया।(2) (ह़ालांकि ख़रतंग से समरक़न्द तक का फ़ासिला फ़क़त़ तीन मील है।)

---

1 ......الاستيعاب، خالدبن زيد، ج ٢، ص ١٠، اسد الغابة، ابوايوب انصارى، ج ٦، ص ٢٩-

2 ......طبقات الشافعية الكبرى، الطبقة الثانية، ج ٢، ص ٢٣٤-

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी के वसीले से दुआ

हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इब्ने आ़बिदीन शामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी बिन फ़ीरोज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मशाइख़े किबार से हैं, मुस्तजाबुद्दा'वात थे, उन की क़ब्र के वसीले से दुआ़ की जाती है, येह हज़रते सय्यिदुना सिर्री सक़्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के उस्तादे मोह़तरम थे, 200 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।(1)

वसीले के बारे में ख़ुलासए कलाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला तमाम आयात व अह़ादीस, रिवायात व वाक़िआ़त से मा'लूम हुवा कि आइन्दा आने वाले अइम्मए किराम, औलियाए किराम व बुज़ुर्ग हस्तियों के वसीले से दुआ़ करना, तमाम अम्बियाए किराम, बिल ख़ुसूस ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा, विसाले ज़ाहिरी के बा'द, अह्ले बैते किराम, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان औलियाए उ़ज़्ज़ाम, इन तमाम की ज़ात व क़ुबूर के वसीले से दुआ़ मांगना, अपनी ह़ाजतों को रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से त़लब करना न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि बाइसे बरकत है कि इन अल्लाह वालों के वसीले से दुआ़एं क़बूल होती हैं। रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें नाज़िल होती हैं, मुश्किल काम आसान हो जाते हैं, मुसीबतें दूर हो जाती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को इन मुबारक, बरगुज़ीदा और रब तआ़ला के प्यारों के वसीले से दुआ़ मांगने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आज़माइश में अ़वाम के साथ बराबरी की शिर्कत

त़ाऊ़ने अ़मवास क्या है....?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में 18 सिने हिजरी में मुल्के शाम में त़ाऊ़न की वबा फैली। "अ़मवास" एक छोटा सा गाऊं है जो "बैतुल मुक़द्दस" और "रमला" के दरमियान वाक़ेअ़ है, सब से पहले यहीं से त़ाऊ़न की वबा फैली और फिर आहिस्ता आहिस्ता पूरे मुल्के शाम में फैल गई।(2)

---

1 ......ردالمحتار علی الدرالمختار، مقدمة، یجوز تقلید المفضول مع وجود الاصل، ج ۱، ص ۱۴۱۔

2 ......معجم البلدان، باب العین والمیم ومایلیھما، ج ۳، ص ۳۵۴۔

www.dawateislami.net

ताऊ़न किसे कहते हैं.....?

ताऊ़न एक वबाई मरज़ है जिस की वज़ाह़त अह़ादीसे मुबारका में बिल्कुल सराह़तन मौजूद है, चुनान्चे, ताऊ़न से मुतअ़ल्लिक़ चार अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1)......''ताऊ़न एक अ़ज़ाब था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस पर चाहता भेजता लेकिन मोमिनीन के लिये उसे रह़मत फ़रमा दिया है।''[1]

(2)......''मेरी उम्मत का ख़ातिमा दुश्मन के नेज़ों और ताऊ़न से ही होगा, ताऊ़न ऊंट की गिल्टी की त़रह़ है।''[2]

(3)......''ताऊ़न तुम्हारे दुश्मन जिन्नों का कूंचा है ऊंट के ग़दूद की त़रह़ गिल्टी है कि बग़लों और नर्म जगहों में निकलती है।''[3]

(4)......''ताऊ़न एक कूंचा है कि मेरी उम्मत को उन के दुश्मन जिन्नों की त़रफ़ से पहुंचेगा जैसे ऊंट की गिल्टी।''[4]

ताऊ़न से मरने वाला शहीद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुतवातरह से साबित है कि ताऊ़न से मरने वाला शहीद है, चुनान्चे, इस ज़िम्न में तीन अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1)......**اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ لِكُلِّ مُسْلِمٍ** ''या'नी ताऊ़न हर मुसलमान के लिये शहादत है।''[5]

(2)......**مَنْ مَاتَ فِى الطَّاعُوْنِ فَهُوَ شَهِيْدٌ** ''या'नी ताऊ़न में मरने वाला शहीद है।''[6]

(3)......**اَلطَّاعُوْنُ شَهَادَةٌ لِاُمَّتِى** ''या'नी ताऊ़न मेरी उम्मत के लिये शहादत है।''[7]

ताऊ़न से भागना ममनूअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ताऊ़न की वज्ह से ताऊ़न ज़दा अ़लाक़े छोड़ कर भाग जाने की सख़्ती से मुमानअ़त है और येह गुनाहे कबीरा है, क्यूंकि येह तक़्दीरे इलाही से भागना है, बल्कि ऐसे

---

1 ......مسند امام احمد، مسند السیدة عائشة، ج ۱۰، ص ۱۰۳، حدیث: ۲۶۱۹۹ ملتقطا۔

2 ......مسند امام احمد، مسند السیدة عائشة، ج ۱۰، ص ۱۱۰، حدیث: ۲۶۲۴۲ ملتقطا۔

3 ......معجم اوسط، من اسمه محمد، ج ۴، ص ۱۵۰، حدیث: ۵۵۳۱ ملتقطا۔

4 ......مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب فی الطاعون۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۵۱، حدیث: ۳۸۶۸ ملتقطا۔

5 ......بخاری، کتاب الجهاد، باب الشهادة سبع، حدیث: ۲۸۳۰، ج ۲، ص ۲۶۳۔

6 ......مسلم، کتاب الامارة، باب بیان الشهداء، ص ۱۰۶۰، حدیث: ۱۶۵ ملتقطا۔

7 ......معجم اوسط، من اسمه محمد، ج ۴، ص ۱۵۰، حدیث: ۵۵۳۱ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका में निहायत ही सख़्त हुक्म है, जिस त़रह़ त़ाऊ़न से भागना गुनाह है इसी त़रह़ त़ाऊ़न ज़दा जगह पर जाना भी मन्अ़ है कि इस में बलाए इलाही से मुक़ाबला करना है। चुनान्चे, बहारे शरीअ़त में है : "त़ाऊ़न जहां हो वहां से भागना जाइज़ नहीं और दूसरी जगह से वहां जाना भी न चाहिये। इस का मत़लब येह है कि जो लोग कमज़ोर ए'तिक़ाद के हों और ऐसी जगह गए और मुब्तला हो गए, उन के दिल में बात आई कि यहां आने से ऐसा हुवा न आते तो काहे को इस बला में पड़ते और भागने में बच गया, तो येह ख़याल किया कि वहां होता तो न बचता भागने की वज्ह से बचा ऐसी सूरत में भागना और जाना दोनों ममनूअ़। त़ाऊ़न के ज़माने में अ़वाम से अक्सर इसी क़िस्म की बातें सुनने में आती हैं और अगर इस का अ़क़ीदा पक्का है जानता है कि जो कुछ मुक़द्दर में होता है वोही होता है, न वहां जाने से कुछ होता है न भागने में फ़ाइदा पहुंचता है तो ऐसे को वहां जाना भी जाइज़ है, निकलने में भी ह़रज नहीं कि इस को भागना नहीं कहा जाएगा और ह़दीस में मुत़लक़न निकलने की मुमानअ़त नहीं बल्कि भागने की मुमानअ़त है।"(1)

वबा फैलने पर इत्तिलाअ़ देने का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रआ़ बिन ज़ुएफ़ दिमिश्क़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम के आ़मिल को लिखा कि जैसे ही वबा फैले तो मुझे ज़रूर इत्तिलाअ़ देना। जब शाम में वबा फैली तो उन्हों ने आप को मक्तूब रवाना किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाम का इरादा किया और मुल्के शाम पहुंच गए।(2)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का सफ़रे शाम और वापसी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिने 17 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम में जिहाद के लिये रवाना हुवे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "सर्ग़" के मक़ाम पर पहुंचे तो इस्लामी लश्कर के सिपह सालारों ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप का इस्तिक़्बाल किया और आप को इस बात की भी इत्तिलाअ़ दी कि मुल्के शाम में त़ाऊ़न की बीमारी फैली हुई है, लिहाज़ा आप मुसलमानों को ले कर वापस चले जाएं। सय्यिदुना फ़ारूक़े

1....बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा. 16, स. 658।

2......كنز العمال، كتاب الجهاد، الشهادة الحكمية، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۵۵، حديث: ۱۱۴۲۸۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मुहाजिरीन व अन्सार की बड़ी ता'दाद थी, लोग मुकम्मल तय्यारी के साथ आए थे, ताऊ़न की ख़बर सुनने के बा'द आप ने इस मुआ़मले में मुशावरत के लिये सब से पहले मुहाजिरीने अव्वलीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाया और उन से मश्वरा लिया कि क्या किया जाए ? उन्हों ने मुख़्तलिफ़ ख़यालात का इज़्हार किया, बा'ज़ ने सफ़र जारी रखने का मश्वरा दिया, बा'ज़ ने वापसी का मश्वरा दिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाया तो उन में वैसा ही इख़्तिलाफ़ हुवा जैसा मुहाजिरीने अव्वलीन में हुवा था, ऐसा लगता था कि उन्हों ने बिऐ़निही वोही मौक़िफ़ बयान किया है जो मुहाजिरीने अव्वलीन ने बयान किया था।

फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़त्ह़े मक्का के मुहाजिरीन क़ुरैश को बुलाया उन से मश्वरा त़लब किया तो उन्हों ने तक़रीबन एक ही बात कही कि "आप मुसलमानों को ले कर वापस चले जाएं क्यूंकि इस में मुसीबत और तबाही है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ए'लान फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं वापस जा रहा हूं तुम भी वापस चलो।" इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : اَفِرَارًا مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ "या'नी क्या आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से भाग रहे हैं ?" फ़रमाया : لَوْ غَیْرُکَ قَالَھَا یَا اَبَا عُبَیْدَةَ نَعَمْ نَفِرُّ مِنْ قَدَرِ اللّٰہِ اِلٰی قَدَرِ اللّٰہِ "या'नी ऐ अबू उ़बैदा काश येह बात तुम्हारे इलावा कोई और कहता, जी हां ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर ही की त़रफ़ भाग रहे हैं। फिर इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम देखते नहीं कि अगर तुम्हारे पास ऊंट हों जिन्हें तुम एक ऐसी वादी में चराओ, जिस की एक त़रफ़ ख़ुश्क हो और दूसरी त़रफ़ सर सब्ज़। ख़ुश्क त़रफ़ में चराना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर है और सर सब्ज़ त़रफ़ में भी चराना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक़्दीर है।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए, जिस वक़्त सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा लिया था उस वक़्त वोह वहां मौजूद नहीं थे, जब उन्हें मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वापस जाने का फ़ैसला फ़रमा लिया है तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर मेरे पास इस के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान मौजूद है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम्हें पता चले कि फ़ुलां ज़मीन में ताऊ़न आ गया है तो वहां न जाओ और जहां तुम हो वहां ताऊ़न आ जाए तो वहां से किसी दूसरे अ़लाक़े में न जाओ।" येह सुन कर सय्यिदुना

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की मुवाफ़िक़त में रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم का फ़रमाने मुबारक भी मौजूद है। फिर आप वापस आ गए।(1)

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को फ़ारूक़े आ'ज़म का मक्तूब

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को जब मा'लूम हुवा कि मुल्के शाम में त़ाऊ़न की वबा फैल चुकी है तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस्लामी लश्कर के सब से बड़े सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

اِنِّیْ قَدْ بَدَتْ لِیْ حَاجَۃٌ اِلَیْکَ فَلَا غِنٰی بِیْ عَنْکَ فِیْھَا فَاِنْ اَتَاکَ کِتَابِیْ لَیْلًا فَاِنِّیْ اَعْزِمُ عَلَیْکَ اَنْ تُصْبِحَ حَتّٰی تَرْکَبَ اِلَیَّ وَاِنْ اَتَاکَ نَھَارًا فَاِنِّیْ اَعْزِمُ عَلَیْکَ اَنْ تُمْسِیَ حَتّٰی تَرْکَبَ اِلَیَّ

"या'नी मुझे आप से ऐसा काम दर पेश आ गया है जिस में आप की बड़ी सख़्त ज़रूरत है, मैं आप को इस बात की ताकीद करता हूं कि अगर मेरा येह मक्तूब आप के पास रात को पहुंचे तो सुब्ह़ होने से क़ब्ल और दिन को पहुंचे तो शाम होने से क़ब्ल आप मेरी त़रफ़ रवाना हो जाइयेगा।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जैसे ही मक्तूब पढ़ा, फ़ौरन समझ गए और फ़रमाने लगे : قَدْ عَلِمْتُ حَاجَۃَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّتِیْ عَرَضَتْ وَاَنَّہٗ یُرِیْدُ اَنْ یَّسْتَبْقِیَ مَنْ لَّیْسَ بِبَاقٍ "या'नी मैं जानता हूं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को कौन सा ज़रूरी काम पेश आ गया है, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उसे बाक़ी रखना चाहते हैं जो बाक़ी नहीं रहेगा।" (या'नी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ चाहते है कि मैं ज़िन्दा रहूं लेकिन बिल आख़िर मुझे भी एक दिन ज़रूर मौत आ कर रहेगी।) फिर एक जवाबी मक्तूब रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

اِنِّیْ فِیْ جُنْدٍ مِّنَ الْمُسْلِمِیْنَ لَنْ اَرْغَبَ بِنَفْسِیْ عَنْھُمْ وَاِنِّیْ قَدْ عَلِمْتُ حَاجَتَکَ الَّتِیْ عَرَضَتْ لَکَ وَاَنَّکَ تَسْتَبْقِیْ مَنْ لَّیْسَ بِبَاقٍ فَاِذَا اَتَاکَ کِتَابِیْ ھٰذَا فَحَلِّلْنِیْ مِنْ عَزْمَتِکَ وَائْذَنْ لِیْ فِی الْجُلُوْسِ

"या'नी मैं लश्करे इस्लाम में मौजूद हूं, खुद को इन से अलग नहीं कर सकता और मैं येह भी जानता हूं कि आप को कौन सा ज़रूरी काम पेश आ गया है, आप उस शख़्स की ज़िन्दगी त़लब कर रहे हैं जिसे

(1) ......بخاری، کتاب الطب، مایذکر فی الطاعون، ج۴، ص۲۸، حدیث: ۵۷۲۹۔

www.dawateislami.net

मौत आ कर ही रहेगी, जब मेरा मक्तूब आप की बारगाह में पहुंचे तो अपने इरादे के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से दरगुज़र फ़रमाइयेगा और मुझे यहीं रहने की इजाज़त दीजियेगा।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही येह मक्तूब पढ़ा, आंखों से आंसू जारी हो गए, ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। जो लोग आप के पास मौजूद थे कहने लगे : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या बात है ? क्या ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया है ?" फ़रमाया : "नहीं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा उन्हें एक मक्तूब रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : اِنَّ الْاَرْضَ اَرْضُکَ اِنَّ الْجَابِیَۃَ اَرْضٌ نُزْهَةٌ فَاظْهَرْ بِالْمُهَاجِرِیْنَ اِلَیْهَا "या'नी तुम अपने लिये बेहतरीन ज़मीन का इन्तिख़ाब करो, मेरे ख़याल में जाबिया की आबो हवा तुम्हारे लिये बहुत बेहतर है, लिहाज़ा मुहाजिरीन को ले कर वहां चले जाओ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह मक्तूब पढ़ा तो फ़रमाया : اَمَّا هٰذَا فَنَسْمَعُ فِیْهِ اَمْرَ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَنُطِیْعُهٗ "या'नी अमीरुल मोमिनीन का येह हुक्म ऐसा है कि हम इस को तवज्जोह से सुनते हैं और ज़रूर इस की इत़ाअ़त करते हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे हुक्म दिया कि मैं सुवार हो जाऊं और लोगों को उन के ठिकाने तक पहुंचाऊं, इतन में मेरी ज़ौजा भी त़ाऊ़न में मुब्तला हो गई, मैं ने इस की इत्तिलाअ़ सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद जल्दी जल्दी लोगों को उन के मह़फ़ूज़ ठिकानों पर मुन्तक़िल करने लगे। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इसी सबब से वफ़ात पा गए।(1)

त़ाऊ़न के सबब शहीद होने वाले मुजाहिदीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मुवज्जेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ छत्तीस हज़ार (36,000) मुजाहिदीन थे, लेकिन इन में से सिर्फ़ छे हज़ार बाक़ी बचे बाक़ी तमाम मुजाहिदीन इसी त़ाऊ़ने अ़मवास के सबब शहादत पा गए।(2)

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۲۵، ص۴۸۳، کنز العمال، کتاب الجهاد، الشهادة الحکمیة الطاعون، الجزء:۴، ج۲، ص۲۵۴، حدیث:۱۱۷۴۵۔

2 ......کنز العمال، کتاب الجهاد، الشهادة الحکمیة الطاعون، الجزء:۴، ج۲، ص۲۵۴، حدیث:۱۱۷۴۵ ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

अकाबिरीन को ताऊ़न एक साथ लाहिक़ होना

हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन उ़मैरा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन तीनों अकाबिरीन को एक साथ ही ताऊ़न का मरज़ लाहिक़ हुवा जिस के सबब इन का विसाल हो गया।(1)

सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल और ताऊ़न

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि मुल्के शाम में ताऊ़न फैला तो हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रह़मते क़ल्बी के सबब फ़रमाया : اِنَّ هٰذَا الطَّاعُوْنَ رِجْسٌ فَفِرُّوْا مِنْهُ فِي الْاَوْدِيَةِ وَالشِّعَابِ "या'नी येह ताऊ़न नापाकी है, इस से भाग कर मुख़्तलिफ़ शहरों और घाटियों में चले जाओ।" हज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुना तो जलाल में आ गए और फ़रमाया : "शायद अ़म्र बिन आ़स को कोई ग़लत़ फ़हमी हो गई है, क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह बात उस वक़्त सुनी जब वोह वहां मौजूद नहीं थे कि ताऊ़न तुम्हारे रब की रह़मत, तुम्हारे नबी की दुआ़ और नेक लोगों की मौत है।"

जब येह बात हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में यूं दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ نَصِيْبَ آلِ مُعَاذٍ الْاَوْفَرِ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़ज़ की औलाद को भी इस में से वाफ़िर या'नी ज़ियादा हिस्सा अ़त़ा फ़रमा।" चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो बेटियों को ताऊ़न का मरज़ लाहिक़ हुवा जिस के सबब उन की वफ़ात हो गई। नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी ताऊ़न का मरज़ लाहिक़ हो गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

﴿اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "(ऐ सुनने वाले) येह ह़क़ है तेरे रब की त़रफ़ से (या ह़क़ वोही है जो तेरे रब की त़रफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना।"

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۲۲، ص ۴۷۷۔

www.dawateislami.net

इस के बा'द येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿سَتَجِدُنِیۡۤ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیۡنَ ﴿۱۰۲﴾﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हथेली की पुश्त पर ताऊ़न की गिल्टी निकल आई, उसे देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : هِيَ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ حُمْرِ النِّعَمِ "या'नी येह मुझे सुर्ख़ क़ीमती ऊंटों से भी ज़ियादा महबूब है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ताऊ़न में मुब्तला देख कर आप के अस्हा़ब में से एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रोने लगे, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से इरशाद फ़रमाया : "तुम क्यूं रो रहे हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर मैं किसी दुन्यवी ख़्वाहिश पर नहीं रो रहा कि आप के जाने के बा'द वोह मुझे न मिलेगी बल्कि मैं तो उस इ़ल्म पर रो रहा हूं जो मैं आप से ह़ासिल करता था और अब आप के विसाल के बा'द उस से मह़रूम हो जाऊंगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इरशाद फ़रमाया : "मत रोओ ! क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस ज़मीन पर मबऊ़स फ़रमाया उस में कोई इ़ल्म वाला नहीं था लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें इ़ल्म अ़ता फ़रमाया। लिहाज़ा इस मरज़ के सबब अगर मेरा विसाल हो जाए तो तुम चार लोगों से इ़ल्म ह़ासिल करना : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में येह एक अम्रे ख़ुदावन्दी था कि ताऊ़न की वबा मुल्के शाम में फैली और ऐन उसी वक़्त मुसलमानों का एक जम्मे ग़फ़ीर या'नी कसीर ता'दाद भी वहां मौजूद थी जिन में अकाबिरीन सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी शामिल थे, इसी ताऊ़न के सबब हज़ारों मुसलमानों की शहादत हुई, लेकिन सब से अहम बात येह है कि जब तक ताऊ़न की वबा मुल्के शाम में मौजूद रही किसी भी मुसलमान ने कोई भी शिक्वा वग़ैरा न किया बल्कि तमाम मुसलमानों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इसे एक आज़माइश जानते हुवे इस पर सब्रो शुक्र किया। आज हम पर कोई छोटी सी भी आज़माइश आती है तो फ़ौरन परेशान हो जाते हैं, शिक्वे शिकायतें करने लगते हैं, हा़लांकि इस बात पर ग़ौर नहीं करते कि जिस रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह आज़माइश नाज़िल हुई है उस की त़रफ़ से बे शुमार ने'मतें भी तो अ़ता हुई हैं,

(1) ......تاریخ ابن عساکر، ج۲۲، ص۴۷۶، سیر اعلام النبلاء، معاذ بن جبل، ج۳، ص۲۸۸۔

www.dawateislami.net

क्या हम ने उन तमाम ने'मतों का कमाहक़्क़ुहू शुक्र अदा कर दिया ? काश ! हम ज़मीनी व आस्मानी तमाम आफ़ात व बलिय्यात पर सब्र कर के अज्र कमाने वाले बन जाएं। काश हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से सब्र जैसी अज़ीम ने'मत हासिल हो जाए। मुसीबतों, परेशानियों और आज़्माइशों पर सब्र का मदनी ज़ेहन बनाने का एक तरीक़ा येह भी है कि जब भी कोई तक्लीफ़ पहुंचे हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आने वाली आज़्माइशों को याद कर लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी तमाम तकालीफ़ हैच नज़र आएंगी, नीज़ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये, इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, नेकियां करने, गुनाहों से बचने, तक्लीफ़ों, आज़्माइशों पर सब्र कर के अज्र कमाने का मदनी ज़ेहन बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म की जानवरों पर शफ़्क़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه न सिर्फ़ इन्सानों, मुसलमानों पर शफ़्क़त फ़रमाते बल्कि आप की शफ़्क़त व मेहरबानी से बे ज़बान जानवर भी बहरा मन्द होते थे। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की सीरते तृय्यिबा का येह एक ऐसा रौशन और महकता हुवा बाब है जिसे सुन्हरी हुरूफ़ से लिखा जाए तो भी कम है। जानवरों के हुक़ूक़ की पासदारी और उन के मुआ़मले में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के एहसासे ज़िम्मेदारी का अन्दाज़ा आप के इस फ़रमान से लगाया जा सकता है जिस में आप ने फ़रमाया : "अगर फ़ुरात के किनारे एक ऊंट मर जाए तो मुझे ख़ौफ़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बारे में भी मुझ से सुवाल करेगा।"(1)

ऊंट पर ज़ियादा बोझ लादने वाले की सरज़निश

जानवरों के बुन्यादी हुक़ूक़ में से एक ह़क़ येह भी है कि खु़सूसन लदाई वाले जानवरों पर उन की ताक़त से ज़ियादा बोझ न डाला जाए, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अगर किसी को देख

(1) طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۲۔

www.dawateislami.net

लेते कि वोह जानवर पर उस की ता़क़त से ज़ियादा बोझ लाद रहा है तो उस की सरज़निश फ़रमाते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन दारिम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि आप एक ऊंट वाले को मार रहे हैं और फ़रमा रहे हैं : "तुम अपने ऊंट पर इतना बोझ क्यूं लादते हो जिसे वोह उठाने की ता़क़त नहीं रखता ?"(1)

मुझ से बड़ा ख़ादिम कौन हो सकता है......?

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़मीरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन कै़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक वफ़्द की सूरत में ह़ाज़िर हुवे, उस दिन बहुत शदीद गर्मी थी, देखा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सर पर कपड़ा रखे सदके़ के ऊंटों पर तेल मल रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन कै़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर इरशाद फ़रमाया :

هَلُمَّ وَ اَعِنْ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى هٰذَا الْبَعِيْرِ فَاِنَّهُ مِنْ اِبِلِ الصَّدَقَةِ فِيْهِ حَقُّ الْيَتِيْمِ وَ الْاَرْمَلَةِ وَ الْمِسْكِيْنِ

"या'नी ऐ अह़नफ़ ! तुम भी अमीरुल मोमिनीन की इस मुआ़मले में मदद करो क्यूंकि येह सदके़ के ऊंट यतीमों, बेवाओं और मिस्कीनों का ह़क़ है।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की मग़्फ़िरत फ़रमाए, आप अपने ख़ुद्दाम में से किसी ख़ादिम को फ़रमा देते तो वोह येह काम कर देता। फ़रमाया : اَیُّ عَبْدٍ هُوَ اَعْبَدُ مِنِّیْ وَ مِنَ الْاَحْنَفِ بْنِ قَیْسٍ "या'नी मुझ से और अह़नफ़ बिन कै़स से बड़ा ख़ादिम कौन हो सकता है ?" फिर इरशाद फ़रमाया : "जब किसी को मुसलमानों के मुआ़मलात का वाली बना दिया जाए तो उस पर उन की ख़ैरख़्वाही और अमानत दारी के मुआ़मले में वोही हुकू़क़ लाज़िम हो जाते हैं जो एक ग़ुलाम पर उस के आक़ा के होते हैं।"(2)

इन जानवरों का भी तुम पर ह़क़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन कै़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार हम बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़ज़ीम फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी ले कर ह़ाज़िर हुवे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "आप लोग कहां ठहरे हैं ?" मैं ने जगह के बारे में बता दिया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे

---

1 ......الامر بالمعروف والنهي عن المنكر، ص ٤٥۔

2 ......مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ٧٣۔

www.dawateislami.net

साथ क़ाफ़िले तक आए और जब हमारी सुवारियों तक पहुंचे तो हर सुवारी को ग़ौर से देखते रहे, फिर इरशाद फ़रमाया : اَلَا اتَّقَيْتُمُ اللهَ فِيْ رِكَابِكُمْ هٰذِهٖ اَمَا عَلِمْتُمْ اَنَّ لَهَا عَلَيْكُمْ حَقًّا "या'नी क्या तुम लोग अपनी इन सुवारियों के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरते हो ? क्या तुम लोग नहीं जानते हो कि इन जानवरों का भी तुम पर ह़क़ है ?"(1)

ऊंट के बारे में पूछा जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ऊंट की पीठ के ज़ख़्म पर हाथ रख कर फ़रमाया करते थे : اِنِّيْ لَخَائِفٌ اَنْ اُسْاَلَ عَمَّا بِكَ "या'नी मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कल बरोज़े क़ियामत मुझ से तेरे बारे में भी पूछा जाएगा।"(2)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इन्सान तो इन्सान बे ज़बान जानवरों के हुक़ूक़ का भी किस क़दर ख़याल रखा करते थे, सीरते फ़ारूक़ी के इस नायाब बाब में ऐसे लोगों के लिये बे शुमार इ़ब्रत के मदनी फूल हैं जिन का तअ़ल्लुक़ बे ज़बान जानवरों से है, ख़ुसूसन गाऊं देहातों में रहने वाले लोग कि उ़मूमन येह अपने घरों में जानवर वग़ैरा पालते और इन से फ़ाइदे ह़ासिल करते हैं, जैसे इन्सानों को तकालीफ़ वग़ैरा का एह़सास होता है बिऐ़निही इन जानवरों को भी तक्लीफ़ होती है अलबत्ता येह अपनी तक्लीफ़ का इन्सानों की त़रह़ इज़्हार नहीं कर सकते, लिहाज़ा इन के मालिकान को इन पर ख़ुसूसी तवज्जोह देने की ह़ाजत है, अगर हमारी वज्ह से उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंची और कल बरोज़े क़ियामत इन के बारे में हम से पूछ लिया गया तो रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में तबाही व बरबादी हमारा मुक़द्दर बन सकती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे इन्सानों के साथ साथ जानवरों के हुक़ूक़ का भी ख़याल रखने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۲۹۱۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۷۔

www.dawateislami.net

पांचवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

......शुराई निज़ाम किसे कहते हैं ?

......अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी का शुराई निज़ाम

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुशावरत से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ फ़रामीन

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मजलिसे शूरा

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुख़्तलिफ़ मुशावरतें

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुशावरत के बुन्यादी व उ़मूमी उसूल

......शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा ज़रूरी उमूर

......मश्वरा करने, मश्वरा देने वाले और मश्वरा लेने वाले के मदनी फूल

......अमीरे अहले सुन्नत के मश्वरे का मदनी अन्दाज़

......दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा

......

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम

शूराई निज़ाम किसे कहते हैं ?

"शूरा" मश्वरे को कहते हैं, जिस निज़ाम में मुख़्तलिफ़ उमूर पर मुशावरत के बा'द तै शुदा उमूर पर अ़मल किया जाए उसे "शूराई निज़ाम" कहा जाता है । शूराई निज़ाम को इस्लाम में बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत हासिल है, इस का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इसे बयान फ़रमाया । चुनान्चे, इरशाद होता है : (پ۲۵، الشوریٰ:۳۸) ﴿وَ اَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَیْنَهُمْ۪﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और उन का काम उन के आपस के मश्वरे से है ।" कुरआने पाक की एक मुकम्मल सूरत का नाम भी "शूरा" है । ख़ुद दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुरआने पाक में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत का हुक्म दिया गया । चुनान्चे, इरशाद होता है : ﴿وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और कामों में उन से मश्वरा लो ।" इस आयत की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "इस में उन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाइदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आइन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी ।"(1)

मुशावरत से मुतअ़ल्लिक़ एक नफ़ीस तौजीह

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अस्हाब से मश्वरा करने का हुक्म इस वज्ह से नहीं दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के मश्वरे की हाजत है बल्कि इस लिये कि उन्हें मश्वरे की फ़ज़ीलत का इ़ल्म दे और आप के बा'द आप की उम्मत मश्वरा करने में आप की इक़्तिदा और इत्तिबाअ़ करे ।(2)

मश्वरे को उम्मत के लिये रह़मत बना दिया

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब येह आयते मुबारका : ﴿وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِ﴾ नाज़िल हुई तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 4, आले इमरान : 159 ।

2......احکام القرآن، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، ج۱، ص۱۹۲۔

عمدۃ القاری، کتاب الاعتصام۔۔۔الخ، باب قول اللہ۔۔۔الخ، تحت الباب: ۲۸، ج۱۶، ص۵۷۱۔

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मश्वरे से मुस्तग़नी हैं लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मश्वरे को मेरी उम्मत के लिये रह़मत बना दिया है।"(1)

अ़ह्दे रिसालत का शूराई निज़ाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि मुख़्तलिफ़ उमूर में मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत फ़रमाया करते थे, अक्सर औक़ात आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शैख़ैने करीमैन या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत फ़रमाते और इस के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने इस मुआ़मले को पेश फ़रमाते। एक बार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(ऐ अबू बक्र व उ़मर) अगर तुम दोनों किसी मश्वरे पर मुत्तफ़िक़ हो जाओ तो मैं उस की मुख़ालफ़त नहीं करूंगा।"(2)

गोया शूराई निज़ामे हुकूमत कोई नया निज़ाम नहीं था बल्कि येह निज़ाम हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ह्दे मुबारका से ही चला आ रहा था।

अ़ह्दे रिसालत में मुशावरत की पांच मिसालें

......ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से कुफ़्फ़ार के दो गुरौह या'नी अबू सुफ़्यान (जो उस वक़्त ईमान न लाए थे।) वाले गुरौह और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के गुरौह से मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा फ़रमाया।

......जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार के सत्तर अफ़राद क़ैद हो कर आए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से उन के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा फ़रमाया।

......ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया और उन के मश्वरे के मुत़ाबिक़ ख़न्दक़ खोदने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

......ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का के लिये आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शैख़ैने करीमैन से मुशावरत फ़रमाई।

---

(1) ......شعب الایمان، باب فی الحکم بین الناس، ج ۶، ص ۷۶، حدیث: ۷۵۴۲ مختصرا۔

(2) ......مسند امام احمد، مسند الشامیین، حدیث عبدالرحمن ۔۔۔ الخ، ج ۶، ص ۲۹۰، حدیث: ۱۸۰۱۶۔

www.dawateislami.net

......महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर औक़ात रात गए तक मुसलमानों के मुख़्तलिफ़ उमूर पर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुशावरत फ़रमाते रहते थे।

अ़ह्दे सिद्दीक़ी का शूराई निज़ाम

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** थे इस लिये आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी अ़ह्दे रिसालत के इस शूराई निज़ाम को बर क़रार रखा, अकाबिरीन सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ख़ुसूसन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुशावरत करना आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़दते मुबारका में शामिल था। येही वज्ह है कि जब कोई ऐसा अम्र दरपेश होता जिस में अह्ले फ़िक़्ह व अह्ले राए के मश्वरे की ज़रूरत होती तो आप ख़ास तौ़र पर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم), हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब, हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित और मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن को बुलाते और मश्वरा फ़रमाते।

मुशावरत को ख़ुद पर लाज़िम कर लो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : اِنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاوَرَنَا فِي الْحَرْبِ وَعَلَيْكَ بِهٖ "या'नी बेशक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से जंगी मुआ़मलात में मुशावरत फ़रमाया करते थे लिहाज़ा तुम पर भी इसे इख़्तियार करना लाज़िम है।"[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कसीर मुआ़मलात में मुशावरत फ़रमाया करते थे यहां तक कि जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बतौ़रे ख़लीफ़ा नामज़दगी से मुतअ़ल्लिक़ भी आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत फ़रमाई और तमाम लोगों के ख़दशात को दूर कर के सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन फ़रमाया।

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، المشورة، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٦١٣، حديث: ٨٧٦٢ مختصرا۔

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी की इत्तिबाअ़ करते हुवे अपनी ख़िलाफ़त की असास भी शूराइय्यत ही पर रखी, बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो छोटे से छोटे मुआ़मले में भी मुशावरत ही को तरजीह़ देते, किसी पर अपना हुक्म मुसल्लत़ करना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक निहायत ही मा'यूब था, ख़ुसूसन जब कोई नया मुआ़मला पेश आता तो उस के बारे में उस वक़्त तक कोई फै़सला न फ़रमाते जब तक अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व अह्ले राए से मुशावरत न फ़रमा लेते । मुशावरत और शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ लफ़्ज़ "फ़ारूक़" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पांच फ़रामीन पेशे ख़िदमत हैं :

(1) फ़ारूके़ आ'ज़म के नज़्दीक तीन त़रह़ के लोग हैं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक मर्दों की तीन क़िस्में हैं और सब से बेहतरीन वोही है जो मश्वरे के साथ काम करे चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं :

✿......اَلرِّجَالُ ثَلَاثَةٌ رَجُلٌ تَرِدُ عَلَيْهِ الْاُمُوْرُ فَيُصَدِّرُهَا بِرَاْيِهِ "या'नी मर्द तीन त़रह़ के हैं, एक तो वोह कि जिस के पास कोई मुआ़मला आता है तो वोह उसे अपनी राए से ह़ल करता है ।"

✿......وَرَجُلٌ يُشَاوِرُ فِيْمَا اَشْكَلَ عَلَيْهِ وَيَنْزِلُ حَيْثُ يَاْمُرُهُ اَهْلُ الرَّاْيِ "दूसरा वोह शख़्स जो अपने मुश्किल मुआ़मलात में मुशावरत से काम लेता है और अह्ले राए के मश्वरे से उमूर को सर अन्जाम देता है ।" (और यक़ीनन येही शख़्स कामयाब है ।)

✿......وَرَجُلٌ حَائِرٌ بَائِرٌ لَا يَاْتَمِرُ رُشْدًا وَلَا يُطِيْعُ مُرْشِدًا "और तीसरा शख़्स वोह है जिस का मुक़द्दर नाकामी व तबाही व बरबादी है क्यूंकि न तो वोह सह़ीह़ बात की जुस्त्जू करता है और न ही दुरुस्त बात कहने वाले की इत्तिबाअ़ करता है ।"(1)

---

(1)......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب النکاح، المرأة الصالحة والسيئة الخلق، ج ۳، ص ۴۰۰، حدیث: ۷ ملتقطاً

www.dawateislami.net

(2) जिस काम में मश्वरा नहीं उस में कोई भलाई नहीं

لَا خَيْرَ فِيْ اَمْرٍ اَبْرَمٍ عَنْ غَيْرِ شُوْرٰى مِنْ اُمُوْرِيْ...... "या'नी मेरे कामों में से वोह काम जो बिग़ैर मश्वरे के हो उस में कोई भलाई नहीं।"(1)

(3) ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले से मश्वरा करो

وَاسْتَشِرْ فِيْ اَمْرِكَ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ اللّٰهَ...... "या'नी अपने मुआ़मले में उन लोगों से मश्वरा करो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले हों।"(2)

(4) मुशावरत वाली बात ही पुख़्ता होती है

اَلرَّأْيُ الْفَرْدُ كَالْخَيْطِ السَّحِيْلِ وَالرَّأْيَانِ كَالْخَيْطَيْنِ الْمُبْرَمَيْنِ وَالثَّلَاثَةُ مِرَارٌ لَا يَكَادُ تَنْقَطِعُ......

"या'नी अकेले शख़्स की राए कच्चे धागे की त़रह़ है और दो लोगों की राए दो पुख़्ता धागों की मिस्ल है, जब कि तीन अफ़राद की राए न टूटने वाली रस्सी की त़रह़ है।"(3)

(5) जो बिल मुशावरत अम्र क़ाइम करे उस की इत्तिबाअ़ ज़रूरी है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार इरशाद फ़रमाया :

يَحِقُّ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ اَنْ يَكُوْنُوْا اَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ ذَوِى الرَّأْيِ مِنْهُمْ فَالنَّاسُ تَبَعٌ لِّمَنْ قَامَ بِهٰذَا الْاَمْرِ مَا اجْتَمَعُوْا عَلَيْهِ وَرَضُوْا بِهٖ لَزِمَ النَّاسُ وَكَانُوْا فِيْهِ تَبَعًا لَهُمْ وَمَنْ اَقَامَ بِهٰذَا الْاَمْرِ تَبَعٌ لِاُوْلِيْ رَأْيِهِمْ مَا رَاَوْا لَهُمْ وَرَضُوْا بِهٖ لَهُمْ مِنْ مَكِيْدَةٍ فِيْ حَرْبٍ كَانُوْا فِيْهِ تَبَعًا لَهُمْ

"या'नी मुसलमानों पर ह़क़ है कि उन के तमाम मुआ़मलात उन की और उन के अस्ह़ाबे राए की मुशावरत से तै पाएं। आ़म लोग उस शख़्स या'नी ह़ाकिमे वक़्त के ताबेअ़ हैं जिस को उन्हों ने (या'नी अस्ह़ाबे राए ने) इत्तिफ़ाक़े राए से वालिये ह़ुकूमत मुक़र्रर किया है और उसे पसन्द करते हैं और वोह ह़ाकिम उन अस्ह़ाबे राए का ताबेअ़ है। लिहाज़ा किसी जंगी मुआ़मले में भी उन अस्ह़ाबे राए की कोई राए मौज़ूं होगी तो तमाम लोगों को उसी की इत्तिबाअ़ करनी होगी।"(4)

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۱۰۲ ملتقطا۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، مایوسر بہ الرجل فی مجلسہ، ج ۶، ص ۱۱۳، حدیث: ۲ ملتقطا۔

3 ......عیون الاخبار، کتاب السلطان، المشاورۃ والرای، ج ۱، ص ۸۲۔

4 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۳۸۱۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म की मजलिसे शूरा

वाजे़ह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो मजलिसे शूरा बनाई थीं, उ़मूमन जिस मजलिसे शूरा का तज़्किरा तारीख़ व सियर की कुतुब में मिलता है इस से मुराद वोह मजलिसे शूरा थी जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वक़्ते वफ़ात ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के लिये बनाई थी। जब कि एक मजलिसे शूरा वोह थी जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द बनाई थी जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ उमूर में मुशावरत फ़रमाया करते थे। अलबत्ता दोनों के बनाने में एक फ़र्क़ बिल्कुल वाजे़ह़ है कि ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के लिये जो मजलिसे शूरा बनाई गई थी उस का क़ियाम ज़ाहिरी और लोगों पर बत़ौरे मजलिसे शूरा बिल्कुल अ़यां था, जब कि मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मुशावरत के लिये जो मजलिसे शूरा बनाई गई थी उस का क़ियाम लोगों पर बत़ौरे मजलिसे शूरा अ़यां नहीं था।

फ़ारूके़ आ'ज़म की मजलिसे शूरा के अराकीन

चूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुशावरत का दाइरए कार बहुत वसीअ़ था इस लिये मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन की ता'दाद मा'लूम करना बहुत मुश्किल है अलबत्ता इस शूरा में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी थे बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को तो आप सफ़रो ह़ज़र दोनों में अक्सर अपने साथ ही रखा करते थे, इन के इ़लावा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा सरे फ़ेहरिस्त हैं।[1]

फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा की मश्वरागाह

अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे फ़ारूक़ी में भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरों के लिये कोई जगह मख़्सूस नहीं थी, ज़ियादा तर मश्वरे मस्जिदे नबवी में ही हुवा करते थे, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में भी मदीनए मुनव्वरा में होने वाले अक्सर

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۶۰۔

www.dawateislami.net

मश्वरे मस्जिदे नबवी ही में हुवा करते थे, अलबत्ता अगर मदीनए मुनव्वरा से बाहर किसी ख़ास मक़ाम पर मश्वरे की ह़ाजत होती तो किसी भी मुनासिब जगह पर मश्वरा कर लिया जाता था, किसी ख़ास जगह का तअ़य्युन न था।

फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा के मश्वरे का त़रीक़ए कार

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मजलिसे शूरा मुहाजिरीन व अन्सार दोनों पर मुश्तमिल थी। क्यूंकि उस वक़्त मुसलमानों के येही दो बड़े ह़ल्क़े थे और इन दोनों के अराकीन का होना निहायत ही ज़रूरी था, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह भी फ़िरासत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों ह़ल्क़ों के अफ़राद को अपनी मजलिसे शूरा में शामिल फ़रमाया था। मश्वरे का त़रीक़ए कार कोई मख़्सूस न था, बा'ज़ वाक़िआ़त से मा'लूम होता है कि जब किसी अहम मुआ़मले में मश्वरा करना मक़्सूद होता तो पहले एक मुनादी यूं निदा करता : اَلصَّلَاۃُ جَامِعَۃٌ "या'नी सब लोग नमाज़ के लिये जम्अ़ हो जाएं।" जब लोग जम्अ़ हो जाते तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी तशरीफ़ लाते और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ाते। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द मदनी मश्वरा शुरूअ़ होता।[1]

फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरे

कुतुबे तारीख़ व सियर के मुत़ालए़ से येह ज़ाहिर होता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बनाई हुई मजलिसे शूरा के मश्वरे दो त़रह़ के होते थे :

(1) रोज़ मर्रा के मा'मूली और उ़मूमी मश्वरे। इन मश्वरों में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़क़त़ शूरा ही के मश्वरे पर इक्तिफ़ा करते हुवे उस का नफ़ाज़ फ़रमा दिया करते थे, क्यूंकि उ़मूमी मुआ़मलात कोई इतने पेचीदा या मुश्किल नहीं होते थे कि उन के ह़ल के लिये किसी त़वील मुशावरत की ह़ाजत हो।

(2) मख़्सूस और अहम मुआ़मलात के पेचीदा और मुश्किल मसाइल। इन मुआ़मलात में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अव्वलन मजलिसे शूरा का मश्वरा फ़रमाते, फिर इन के इलावा दीगर अकाबिरीन व साइबुर्राए ह़ज़रात और फिर तमाम अ़वामी नुमाइन्दों के सामने उसे रखते, इस त़रह़ मस्अला अपनी तमाम जुज़इयात के साथ खुल कर सामने आ जाता और हर त़रह़ से बिल्कुल मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले पर अ़मल होता जिस से न तो किसी के ज़ेह्न में कोई इश्काल पैदा होता और न ही कोई इख़्तिलाफ़ी फ़ज़ा पैदा होती।

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۱۰۱ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

मजलिसे शूरा के मश्वरों की चन्द झलकियां

......जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम में दाख़िले का इरादा फ़रमाया तो ताऊ़न की वबा फैलने की ख़बर पर एक अ़ज़ीम मुशावरत फ़रमाई जिस में मुख़्तलिफ़ अकाबिरीन की मुख़्तलिफ़ आरा सामने आईं और बिल आख़िर मुल्के शाम में दाख़िल न होने और वापसी का फ़ैसला किया गया।

......सिने 17 हिजरी जुमादल ऊला में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मफ़्तूहा अ़लाक़ों के दौरे के मुतअ़ल्लिक़ मदनी मश्वरा त़लब फ़रमाया जिस में अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपनी अपनी आरा को पेश फ़रमाया।

......जब अहले फ़ारिस ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ बाहमी अ़ह्दो पैमान कर लिया तो अहले कूफ़ा ने उन के ख़िलाफ़ आप से इजाज़त त़लब की आप ने उन्हें इजाज़त न दी और मजलिसे शूरा व तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के उन से इस बात पर मश्वरा त़लब किया कि मैं ख़ुद तमाम लोगों के साथ जाऊं और उन के ख़िलाफ़ कारवाई करूं मगर मजलिसे शूरा और अक्सर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस की ह़िमायत न की बल्कि अहले कूफ़ा को इजाज़त देने का मश्वरा दिया। इस मौक़ए़ पर मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन ने खुल कर मश्वरा पेश किया। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मश्वरे को बहुत पसन्द फ़रमाया और सिपह सालार मुन्तख़ब फ़रमा कर अहले फ़ारिस के ख़िलाफ़ लश्कर को रवाना फ़रमा दिया।

......मुल्के शाम व इराक़ की फ़ुतूह़ात के बा'द मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों के मुतअ़ल्लिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत मुशावरत फ़रमाई जिस में मजलिसे शूरा के अराकीन समेत दीगर बड़े़ बड़े़ क़बाइल के कई सरदार भी शरीक हुवे और तमाम ह़ज़रात ने खुल कर अपना मौक़िफ़ बयान किया, ख़ुद सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इस मौक़अ़ पर काफ़ी त़वील बयान फ़रमाया जो कुतुबे सियर व तारीख़ में मुलाह़ज़ा किया जा सकता है।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म की एक और उ़मूमी मजलिसे मुशावरत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मजलिसे शूरा के इलावा एक और भी मजलिस थी जो फ़क़त़ मुहाजिरीन पर मुश्तमिल थी, येह वोह मजलिस थी जिस में रोज़ मर्रा के उ़मूमी मुआ़मलात पर तबसेरा किया जाता था, बा'ज़ औक़ात मुख़्तलिफ़ उमूर पर

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۷۵ ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

मुशावरत की भी तरकीब बनाई जाती थी । मजूसियों के मुआमले की भी इसी मजलिस के तह्त मुशावरत हुई थी । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत करते हुवे फ़रमाते हैं :

كَانَ لِلْمُهَاجِرِيْنَ مَجْلِسٌ فِي الْمَسْجِدِ يَجْلِسُوْنَ فِيْهِ، فَكَانَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَجْلِسُ مَعَهُمْ فَيُحَدِّثُهُمْ عَمَّا يَنْتَهِيْ إِلَيْهِ مِنْ أَمْرِ الْآفَاقِ

"या'नी मुहाजिरीन की मस्जिदे नबवी में एक निशस्त गाह थी जहां वोह बैठा करते थे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी उन के साथ तशरीफ़ फ़रमा होते थे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन से रोज़ मर्रा की मुख़्तलिफ़ शहरों व अ़लाक़ाई ख़बरों के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू फ़रमाते थे ।"(1)

फ़ारूके आ'ज़म की मजलिसे मुशावरत के अराकीन

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मजलिसे मुशावरत के अराकीन उ़लमा व क़ुर्रा हज़रात हुवा करते थे । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं : كَانَ الْقُرَّاءُ أَصْحَابَ مَجَالِسِ عُمَرَ وَمُشَاوَرَتِهِ كُهُوْلًا كَانُوْا أَوْ شُبَّانًا "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मजलिसे मुशावरत के अराकीन क़ुर्रा व साहिबे इल्म हज़रात होते थे नीज़ उन में जवान और पुख़्ता उ़म्र के अफ़राद भी थे ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह रहे कि मज़्कूरए बाला रिवायत में "क़ुर्रा" से मुराद "अह्ले इ़ल्म" हैं क्यूंकि उस ज़माने में जो "सब से ज़ियादा इ़ल्म वाला" होता वोही "सब से बड़ा क़ारी" होता था । كَمَا فِيْ كُتُبِ الْفِقْهِ

फ़ारूके आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ मुशावरतें

फ़ारूके आ'ज़म की मुश्किल मुआमले में नौजवानों से मुशावरत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है फ़रमाते हैं :

إِذَا نَزَلَ الْأَمْرُ الْمُعْضَلُ دَعَا الْفِتْيَانَ فَاسْتَشَارَهُمْ يَبْتَغِيْ حِدَّةَ عُقُوْلِهِمْ "या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को जब कोई मुश्किल अम्र दरपेश होता तो आप नौजवानों को बुला कर उन की ज़ेहनी आज़्माइश की ग़रज़ से उन से मुशावरत फ़रमाते ।"(3)

(1) ......تاریخ مدینہ منورہ، مسیر عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۸۵۳۔

(2) ......بخاری، کتاب التفسیر، باب خذ ۔۔۔ الخ، ج ۳، ص ۲۲۷، حدیث: ۴۶۴۲ ملتقطا۔

(3) ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب من یشاور، ج ۱۰، ص ۱۹۳، حدیث: ۲۰۳۳۱ مختصرا۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म की औ़रतों से मुशावरत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अगर दौराने मुशावरत किसी औ़रत की त़रफ़ से भी ऐसी बात मिल जाती जो फ़ाइदे मन्द होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे बत़ौरे मश्वरा क़बूल फ़रमा लेते। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ لَيَسْتَشِيْرُ فِي الْأَمْرِحَتّٰى اِنْ كَانَ لَيَسْتَشِيْرُالْمَرْاَةَ فَرُبَّمَا اَبْصَرَ فِيْ قَوْلِهَا الشَّيْءَ يَسْتَحْسِنُهُ فَيَاْخُذُبِهٖ

''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ उमूर में मश्वरा ज़रूर फ़रमाते ह़त्ता कि अगर आप किसी औ़रत से मश्वरा त़लब फ़रमाते, फिर उस औ़रत के मश्वरे में कोई अच्छी बात होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे भी ले लिया करते थे।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म सय्यिदतुना शिफ़ा की राए को मुक़द्दम रखते

ह़ज़रते सय्यिदुना शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का शुमार निहायत ही समझदार और अ़क़्लमन्द ख़वातीन में होता था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मुअ़ल्लिमा होने का भी शरफ़ ह़ासिल था, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़वातीन में उन की राए को मुक़द्दम रखते थे।[2]

औ़रतों की क़ाबिले अ़मल बातों पर ही अ़मल करो

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ औ़रतों से मुशावरत करने से मन्अ़ नहीं फ़रमाते थे अलबत्ता औ़रतों से मुशावरत के बा'द उन की बहुत कम बातों पर अ़मल करने के क़ाइल थे, अक्सर बातों में मुख़ालफ़त ही के क़ाइल थे, बल्कि फ़रमाया करते थे कि **औ़रतों की मुख़ालफ़त में बरकत है**। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **خَالِفُوا النِّسَاءَ فَاِنَّ فِيْ خِلَافِهِنَّ بَرَكَةً ''या'नी औ़रतों की (अक्सर बातों में) मुख़ालफ़त करो क्यूंकि उन की मुख़ालफ़त में बरकत है।''**[3]

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب من یشاور، ج ۱۰، ص ۱۹۳، حدیث: ۲۰۳۳۲۔

2 ......الاصابۃ، الشفاء بنت عبد اللہ، ج ۸، ص ۲۰۲، الرقم: ۱۱۳۷۹۔

3 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، المشورۃ، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۳۱۷، حدیث: ۸۷۶۵۔

www.dawateislami.net

चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मज़्कूरए बाला फ़रमान पढ़ कर इस्लामी बहनें दिल बरदाश्ता न हों क्यूंकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ औ़रतों से मुत़लक़न मुशावरत के ख़िलाफ़ नहीं थे अगर दौराने मुशावरत कोई औ़रत अच्छा मश्वरा पेश करती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उसे भी ले लिया करते थे। बल्कि औ़रतों से मश्वरा लेना और इसे क़बूल करना तो ख़ुद सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित है जैसा कि सुल्ह़े हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मश्वरा त़लब फ़रमाया उन्हों ने मश्वरा दिया और सह़ीह़ मश्वरा दिया। अलबत्ता उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से एक रिवायत यूं भी मरवी है : **طَاعَةُ النِّسَاءِ نَدَامَةٌ "या'नी औ़रतों की इत़ाअ़त में नदामत है।"**[1] इन तमाम मरविय्यात को सामने रखा जाए तो चन्द बातें वाज़ेह़ होती हैं जो औ़रतों से मुशावरत के मुआ़मले में निहायत ही मुफ़ीद हैं :

......मर्दों के मुक़ाबले में औ़रतें उ़मूमन कमज़ोर दिल और नाक़िसुल अ़क़्ल होती हैं ग़ालिबन इस की एक वज्ह येह भी है कि औ़रत जब किसी मुआ़मले में फ़ैसला करती है तो उ़मूमन उस की नज़र ह़ाल पर होती है जब कि मर्द किसी मुआ़मले में फ़ैसला करता है तो उ़मूमन उस की नज़र ह़ाल के साथ साथ मुस्तक़्बिल पर भी होती है। इस लिये मर्द की सोच, फ़ैसले और मश्वरे में जो कुव्वत होती है वोह औ़रत की सोच, फ़ैसले और मश्वरे में नहीं होती इस लिये औ़रतों से कम से कम मुशावरत में ही फ़ाइदा है।

......एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ औ़रतें अक्सर मुआ़मलात में नफ़्अ़ व नुक़्सान से सर्फ़े नज़र करते हुवे फ़ैसला करती हैं येही वज्ह है कि इन के त़ै शुदा उमूर में फ़वाइद कम और नुक़्सानात ज़ियादा होते हैं, अगर कोई औ़रत ऐसा मश्वरा दे कि जिस में नुक़्सानात ज़ियादा हों तो उसे ब त़रीके़ अह़सन नुक़्सानात व फ़वाइद से आगाह किया जाए ताकि उस का मश्वरा रद करने में उस की दिल आज़ारी न हो नीज़ उस के मुफ़ीद मश्वरे पर अ़मल किया जाए।

......जो मुआ़मलात अन्दरूने ख़ाना से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, मसलन खाने पीने के मुआ़मलात, घरेलू ज़रूरिय्यात के मुआ़मलात, घर की तरतीब व तज़्ईन से मुतअ़ल्लिक़ा मुआ़मलात वग़ैरा इन में

[1] ......كشف الخفاء، ج۲، ص۳۔

www.dawateislami.net

औ़रतों ही से मुशावरत ज़ियादा मुफ़ीद है क्यूंकि औ़रत का तअ़ल्लुक़ इन तमाम मुआ़मलात से होता है और वोह इस में बहुत बेहतर मश्वरा दे सकती है, जब कि बैरूने ख़ाना मुआ़मलात में उन से मुशावरत लेने में कोई ह़रज नहीं अलबत्ता क़बूल करने में एह़तियात़ की जाए।

......ऐसे मुआ़मलात जिन का तअ़ल्लुक़ औ़रतों से है और वोही इस के बारे में ज़ियादा जानती हैं इन मुआ़मलात में तो सिर्फ़ औ़रतों से ही मुशावरत की जाए बल्कि ऐसे मुआ़मलात में औ़रतों से मुशावरत करने में बहुत ज़ियादा फ़वाइद हैं और येह ख़ुद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नते मुबारका है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शादीशुदा औ़रत के अपने शौहर से दूर रहने के मुआ़मले में अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मश्वरा लिया, नीज़ फ़क़त़ उन ही की राए के मुत़ाबिक़ हुक्म भी नाफ़िज़ फ़रमा दिया।

......ऐसे पेचीदा मुआ़मलात जिन में औ़रतों के मश्वरे क़बूल करने में नुक़्सान हो उस मुआ़मले में ह़त्तल मक़्दूर औ़रतों से मुशावरत न ही की जाए तो बेहतर है कि मश्वरा लेने के बा'द उसे क़बूल न करने में हो सकता है उस की दिल आज़ारी हो कि उ़मूमन औ़रतें नाज़ुक मिज़ाज होती है और बहुत जल्द मह़सूस कर लेती हैं। इस में औ़रतों की तख़्सीस नहीं बल्कि ऐसे पेचीदा मुआ़मलात में ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ा मर्दों से मुशावरत करने में भी एह़तियात़ की जाए।

......पुख़्ता उ़म्र की तजरिबा कार और वसीअ़ मा'लूमात रखने वाली औ़रतों से मुशावरत करने में भी कोई ह़रज नहीं जैसा कि घर की बुज़ुर्ग ख़्वातीन। बल्कि अक्सर मुआ़मलात में उन से मुशावरत की जाए कि तजरिबा किसी शख़्स की राए को पुख़्ता करता है, जो शख़्स जितना तजरिबा कार होगा उस की बात उतना ही वज़्न रखती है।

......वाज़ेह़ रहे कि मुशावरत में हर जगह शरीअ़त की पासदारी को ज़रूर बिज़्ज़रूर मल्ह़ूज़ रखा जाए, वरना दुन्या व आख़िरत के नुक़्सान के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कम उ़म्र होना मश्वरा देने के लिये रुकावट नहीं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक कम उ़म्र होना मश्वरा देने के लिये शर्त़ और मश्वरा देने में मानेअ़ या'नी रुकावट नहीं था। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक मजलिस जवान व उ़म्र रसीदा कुर्रा व उ़लमा ह़ज़रात से भरी होती थी बसा औक़ात उन से मश्वरा करते तो फ़रमाते :

لَا یَمْنَعُ اَحَدًا مِنْکُمْ حُدَاثَۃُ سَنَۃٍ اَنْ یُشِیْرَ بِرَاْیِہٖ فَاِنَّ الْعِلْمَ لَیْسَ عَلٰی حُدَاثَۃِ السِّنِّ وَلَا قِدَمِہٖ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ یَضَعُہٗ حَیْثُ شَاءَ

"या'नी तुम में से किसी को उस की कम उ़म्री मश्वरा देने से न रोके क्यूंकि इ़ल्म का मदार कम या ज़ियादा उ़म्र पर नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला जिसे चाहे इ़ल्म से नवाज़ देता है।[1]

ज़हीनो फ़तीन व उ़लूमे दीनिया के माहिर से मश्वरे का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही ज़हीनो फ़तीन थे, आप की विलादत क़ब्ले हिजरत या बा'दे हिजरत या ग़ज़्वए बद्र के दिन हुई, बेहतरीन मुबल्लिग़ और ख़तीब थे, निहायत ही फ़सीहो बलीग़ कलाम करते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में भेजा, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के मुशाहरे के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने निहायत ही फ़सीह़ अन्दाज़ में अपने मुशाहरे को बयान फ़रमाया, जिस से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत मुतअस्सिर हुवे, बा'द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर येह भी ज़ाहिर हुवा कि येह कुरआनो सुन्नत व अह़कामे शरइय्या के आ़लिम भी हैं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें दोबारा सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ भेज दिया और उन्हें उन से हुकूमती मुआ़मलात में मुशावरत का हुक्म इरशाद फ़रमाया। बल्कि बा'ज़ रिवायात में येह भी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बसरा के तमाम उमरा व गवर्नरों को हुक्म फ़रमाया कि सब उन के मश्वरे के मुत़ाबिक़ चलें।[2]

हिक्मत व दानाई अल्लाह की अ़त़ा है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब लिखा जिस में फ़रमाया :

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب العلم، باب المستشار، ج ۱۰، ص ۲۶۳، حدیث: ۲۱۱۱۱۔

2 ......الاستیعاب، زیاد بن ابی سفیان، ج ۲، ص ۱۰۰، تاریخ ابن عساکر، ج ۱۹، ص ۱۶۲ ملتقطاً

www.dawateislami.net

إِنَّ الْحِكْمَةَ لَيْسَتْ مِنْ كِبَرِ السِّنِّ وَلٰكِنَّهُ عَطَاءُ اللّٰهِ يُعْطِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ "या'नी बेशक हि़क्मत व दानाई उ़म्र की ज़ियादती से नहीं आती बल्कि येह तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा है और वोह जिसे चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसी पुख़्ता फ़िक्र, वसीउ़न्नज़्र, तजरिबा कार और साइबुर्राए शख़्सिय्यत जिस की दुरुस्ती व सवाब अग़्लब व अक्सर हो अगर बिग़ैर मश्वरे के भी कोई अम्र फ़रमा दे तो इस में कोई ह़रज नहीं कि ऐसी शख़्सिय्यत ही की आरा से तो क़ौमें बनती और फ़लाह़ पाती हैं। जैसा कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के लश्कर की रवानगी के सिलसिले में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मश्वरे के बिग़ैर अपनी वुस्अ़ते ज़ेह्नी और बालिग़ नज़री से फ़ैसला फ़रमाया, जिस के बा'द में कसीर फ़वाइद ज़ाहिर हुवे।

उ़त्बा कहते हैं कि क़ौमे अ़ब्स के एक शख़्स से किसी ने पूछा : "तुम्हारी क़ौम में दुरुस्त राए वाले कितने ज़ियादा हैं ?" उस ने जवाब दिया : "हम हज़ार आदमी हैं और हम में एक ही शख़्स ह़ाज़िम व तजरिबा कार है। हम सब अपने कामों में उसी से मश्वरा कर के चलते हैं। तो गोया हम सब के सब तजरिबा कार व दुरुस्त राए वाले हैं।"(2)

मुशावरत के लिये ओ़ह्दे दार होना शर्त़ नहीं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के नज़्दीक मश्वरा देने वाले का किसी ओ़ह्दे पर फ़ाइज़ होना शर्त़ नहीं था, येही वज्ह है कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना तुलैह़ा बिन ख़ुवैलद असदी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मुशावरत करने का हु़क्म दिया नीज़ येह भी फ़रमाया कि इन्हें ओ़ह्दा देने की कोई ह़ाजत नहीं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना तुलैह़ा बिन ख़ुवैलद असदी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

اِسْتَشِرْ وَاسْتَعِنْ فِيْ حَرْبِكَ بِطُلَيْحَةَ وَعَمْرِو بْنِ مَعْدِيْ كَرِبَ وَلَا تُوَلِّهِمَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْئًا فَاِنَّ كُلَّ صَانِعٍ اَعْلَمُ بِصَنَاعَتِهٖ

---

1 ......مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ١٧٧ ـ

2 ......العقد الفريد، المشورة، لعيسى فى الحزم، ج ١، ص ٦٠ ـ

www.dawateislami.net

''या'नी ऐ नो'मान बिन मुक़र्रिन ! आप तुलैहा बिन ख़ुवैलद असदी और अ़म्र बिन मा'दी करिब से मुशावरत कीजिये और उन की मदद को भी शामिले हाल रखिये अलबत्ता उन दोनों हज़रात को कोई ओ़हदा देने की हाजत नहीं क्यूंकि हर शख़्स अपना फ़न ख़ूब जानता है।''[1]

फ़ौजी कमान्डरों को मुशावरत का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक मश्वरे की अहम्मिय्यत थी कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने जंगी कमान्डरों को भी येह हुक्म इरशाद फ़रमा दिया था कि तमाम काम मुशावरत ही के ज़रीए किये जाएं। चुनान्चे,

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इराक़ के मुहाज़ पर अहले फ़ारिस से जंग करने के लिये भेजा तो उन को नसीहत करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِسْمَعْ وَاَطِعْ مِنْ اَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَشْرِكْهُمْ فِي الْاَمْرِ وَلَا تُجِيْبَنَّ
مُسْرِعاً حَتّٰى تَتَبَيَّنَ فَاِنَّهَا الْحَرْبُ وَلَا يَصْلُحُ لَهَا اِلَّا الرَّجُلُ الْمَكِيْثُ الَّذِيْ يَعْرِفُ الْفُرْصَةَ وَالْكَفَّ

''या'नी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की बात ग़ौर से सुनना, उन की इत़ाअ़त करना, उन्हें मुशावरत में भी शरीक करना और उन से जवाब देही में जल्दी न करना जब तक कोई मुआ़मला ज़ाहिर न हो जाए क्यूंकि येह जंग का मुआ़मला है और जंगी मुआ़मलात के लिये सब्रो तहम्मुल वाले शख़्स की ज़रूरत होती है जो मौक़अ़ महल की मा'रिफ़त के साथ साथ दिफ़ाअ़ की भी मा'रिफ़त रखता हो।''[2]

जंगी उमूर के माहिरीन से मुशावरत का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नर बना कर भेजा तो उन से इरशाद फ़रमाया :

كَتَبْتُ اِلَى الْعَلَاءِ الْحَضْرَمِيِّ اَنْ يَمُدَّكَ بِعَرْفَجَةَ بْنِ هَرْثَمَةَ وَهُوَ ذُوْ مُجَاهَدَةٍ لِلْعَدُوِّ وَمُكَايَدَتِهٖ فَاِذَا قَدِمَ عَلَيْكَ فَاسْتَشِرْهُ وَقَرِّبْهُ

''या'नी मैं ने अ़ला बिन हज़रमी को मक्तूब रवाना किया है कि वोह अ़रफ़जा बिन हरसमा के ज़रीए तुम्हें कुव्वतो त़ाक़त दें क्यूंकि वोह दुश्मन की चालों को अच्छी तरह समझने वाले और उन्हें ज़ेर करने

1 ......الاستیعاب، طلیحۃ بن خویلد، ج ۲، ص ۳۲۴۔

2 ......الکامل فی التاریخ، ذکر خبر المثنی بن الحارثۃ ـــ الخ، ج ۲، ص ۲۸۳۔

वाले हैं पस वोह तुम्हारे पास आएं तो उन को अपना मुशीर बना कर अपने मुआ़मलात में मुशावरत भी करो और उन्हें अपना कु़र्ब भी दो।[1]

मुल्के शाम में दाख़िले के लिये अ़ज़ीम मुशावरत

अ़हदे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम में ता़ऊन की वबा फैली जिस ने मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों को अपनी लपेट में ले लिया, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुल्के शाम जाने का इरादा रखते थे, अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक़ामे सर्ग़ में मौजूद थे कि वहीं आप को इस वबा की ख़बर मिली। तमाम गवर्नर और अकाबिर सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी वहीं मौजूद थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम लोगों को बुलाया और उन से मश्वरा त़लब फ़रमाया ताकि कोई फ़ैसला किया जा सके।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम जाने के लिये निकले। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक़ामे सर्ग़ में पहुंचे तो वहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात इस्लामी लश्कर के कमान्डर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से हो गई, उन्हों ने ता़ऊन की वबा फैलने का ज़िक्र किया। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **فَقَالَ عُمَرُ اُدْعُ لِيَ الْمُهَاجِرِينَ الْاَوَّلِيْنَ فَدَعَاهُمْ فَاسْتَشَارَهُمْ وَاَخْبَرَهُمْ اَنَّ الْوَبَاءَ قَدْ وَقَعَ بِالشَّامِ** "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि तमाम मुहाजिरीने अव्वलीन सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाओ। उन्हें बुलाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तमाम से मश्वरा त़लब किया और उन्हें बताया कि मुल्के शाम में ता़ऊन की वबा फैल गई है, क्या किया जाए?" मुख़्तलिफ़ लोगों की मुख़्तलिफ़ आरा सामने आईं, बहर ह़ाल इत्तिफ़ाके़ राए से मुल्के शाम में दाख़िले के बजाए वापसी का फ़ैसला किया गया।[2]

इस अ़ज़ीम मुशावरत की सब से अहम बात

इस मदनी मश्वरे की सब से अहम बात येह थी कि तमाम सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व दीगर शुरकाए मश्वरा की आरा का मर्कज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ कु़रआनो सुन्नत ही था। जो दाख़िले के क़ाइल थे वोह भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन से इस्तिद्लाल फ़रमा रहे थे और जो दाख़िले के

1 ......الکامل فی التاریخ، ذکر ولایۃ عتبہ بن غزوان، ج ۲، ص ۳۳۴۔

2 ......بخاری، کتاب الطب، باب مایذکر فی الطاعون، ج ۴، ص ۲۸، حدیث: ۵۷۲۹ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

ह़ामी न थे वोह भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन से इस्तिद्लाल फ़रमा रहे थे। इस मश्वरे में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की इजतिहादी क़ुव्वत भी खुल कर सामने आई कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के सामने दो ऐसी मुख़्तलिफ़ आरा थीं जिन का माख़ज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन थे। लिहाज़ा आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपनी खुदादाद फ़िरासत, मौक़अ़ के तमाम उसूलो जुज़इय्यात और इजतिहादी सलाह़िय्यत को ब रूए कार लाते हुवे वापसी का फ़ैसला फ़रमाया। इस से येह मस्अला भी खुल कर सामने आ गया कि अगर मुसलमानों के दो गुरौह ऐसे हों जो एक ही मस्अले में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो त़रह़ के फ़रामीन की रौशनी में इख़्तिलाफ़ कर रहे हों तो उन दोनों में कोई ग़लत़ नहीं होगा बल्कि दोनों ही सह़ीह़ होंगे। जैसे कि अह्ले सुन्नत व जमाअ़त के चारों फ़िक़ही गुरौह या'नी **ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी** और **ह़म्बली** कि इन तमाम के फ़िक़ही इख़्तिलाफ़ात का मर्कज़ क़ुरआनो सुन्नत ही है।

फ़ारूक़े आ'ज़म के शूराई निज़ाम का त़रीक़ए कार

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का शूराइयत का त़र्ज़े अ़मल निहायत ही उ़म्दा था, सब से पहले आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه आ़म मुसलमानों से मश्वरा लेते और उन की मुख़्तलिफ़ आरा सुनते, फिर अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उ़लमा व फ़ुज़ला ह़ज़रात को इकठ्ठा कर के उन से राए लेते और उन के सामने अ़वामी राए को भी पेश करते, फिर जिस बात पर वोह मुत्तफ़िक़ हो जाते तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه उसे नाफ़िज़ फ़रमा देते।

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में शूराई निज़ाम की वुस्अ़त

अगर्चे शूराई निज़ाम की इब्तिदा खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौर से ही शुरूअ़ हो गई थी, फिर अ़ह्दे सिद्दीक़ी में भी इस में थोड़ी सी वुस्अ़त पैदा हुई लेकिन अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इस शूराई निज़ाम का दाइरए कार काफ़ी वसीअ़ हो गया। इस की वज्ह येह थी कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में नित नए मसाइल पैदा हुवे, वाक़िआ़त व ह़वादिस ब कसरत रू नुमा हुवे और इस्लाम का दाइरा उन शहरों तक फैल गया था जहां मुख़्तलिफ़ क़ौमें आबाद थीं, चूंकि अ़रबों और उन के रस्मो रवाज में फ़र्क़ और उन का निज़ामे ज़िन्दगी उन से यक्सर मुख़्तलिफ़ था इसी लिये ऐसी जदीद व दक़ीक़ मुश्किलात पैदा हुईं जिन में वसीअ़ इजतिहाद की ज़रूरत पेश आई। मसलन :

www.dawateislami.net

जब फ़ुतूह़ात की कसरत हुई और मफ़्तूह़ा ज़मीनों की तक़्सीम और नए क़वाइदो ज़वाबित़ के मुत़ाबिक़ वहां के गवर्नरों और मुख़्तलिफ़ लोगों के वज़ाइफ़ को मुनज़्ज़म करने का मुआ़मला पेश आया ताकि मुल्की आमदनी को मुल्की ज़रूरिय्यात ही पर ख़र्च किया जा सके तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मुआ़मले के ह़ल के लिये किबार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की कसीर ता'दाद को मुशावरत में शामिल फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बद्र में शरीक होने वाले बुज़ुर्ग सह़ाबए किराम के इ़ल्मो फ़ज़्ल और इस्लाम लाने में उन की सबक़त के पेशे नज़र अह्ले शूरा में उन को ख़ास मक़ाम देते थे। ताहम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के साथ नौजवान सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी शरीक फ़रमाते थे कि उन बुज़ुर्गों के बा'द नौजवानों ने ही मुल्क व क़ौम की बागदौड़ संभालनी है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से येह जान लिया था कि उम्मते मुस्लिमा के उन नौजवान अफ़राद को आगे लाया जाए जो इ़ल्म, तक़्वा व परहेज़गारी के ए'तिबार से कामिल हों। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे नौजवानों पर ख़ुसूसी नज़र रखते थे, ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर आप की शफ़्क़त बहुत ज़ियादा होती थी क्यूंकि एक तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई थे, दूसरा सह़ाबिये रसूल थे, तीसरा निहायत ही ज़हीनो फ़त़ीन थे, चौथा बहुत ही इ़ल्मो फ़ज़्ल वाले थे और येह तमाम सिफ़ात वोही थीं जो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दरकार थीं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शूराई निज़ाम में ऐसे क़ाबिल नौजवानों को बहुत तरजीह़ दी जाती थी और येह बात सब पर ज़ाहिरो बाहिर थी, येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नौ उ़म्र जवानों को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया करते थे :

لَاتُحَقِّرُوا اَنْفُسَكُمْ لِحَدَاثَةِ اَسْنَانِكُمْ فَاِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ كَانَ اِذَا نَزَلَ
بِهِ الْاَمْرُ الْمُعَضَّلُ دَعَا الْفُتْيَانَ فَاسْتَشَارَهُمْ يَبْتَغِي حِدَّةَ عُقُولِهِمْ

''या'नी अपने कम उ़म्र होने की वज्ह से अपने आप को ह़क़ीर मत समझो क्यूंकि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब कोई मुश्किल मुआ़मला दर पेश होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नौजवानों को बुला कर उन की ज़ेहनी आज़माइश की ग़रज़ से उन से मुशावरत फ़रमाते।''(1)

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب من یشاور، ج ۱۰، ص ۱۹۳، حدیث: ۲۰۳۳۱۔

www.dawateislami.net

मशरिक़ो मग़रिब में फ़तावा फ़ारूक़ी की धूम का सबब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह आ़दते मुबारका थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बज़ाते ख़ुद बहुत बड़े फ़क़ीह व मुह़द्दिस होने के बा वुजूद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत फ़रमाया करते थे इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़तावा की मशरिक़ो मग़रिब में धूम मच गई और उन तमाम फ़तावा की पैरवी की गई क्यूंकि येह बात अज़्हर मिनश्शम्स है कि जब किसी शख़्स को येह मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां मस्अले पर कई लोगों का इत्तिफ़ाक़ है तो ज़ेह्नी व फ़ित़्री त़ौर पर वोह उस पर अ़मल करने में जल्दी करता है। क्यूंकि एक शख़्स की राए में ग़लत़ी का इमकान हो सकता है लेकिन जब कई इल्मो फ़ज़्ल वाले अफ़राद मिल कर किसी मस्अले में राए क़ाइम करें तो इस में ग़लत़ी का इमकान न होने के बराबर रह जाता है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

كَانَ مِنْ سِيْرَةِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهٗ كَانَ يُشَاوِرُ الصَّحَابَةَ وَيُنَاظِرُهُمْ حَتّٰى تَنْكَشِفَ الْغُمَّةُ وَيَاْتِيَهُ الثَّلْجُ فَصَارَ غَالِبُ قَضَايَاهُ وَفَتَاوَاهُ مُتَّبَعَةً فِيْ مَشَارِقِ الْاَرْضِ وَمَغَارِبِهَا وَهُوَ قَوْلُ اِبْرَاهِيْمَ لَمَّا مَاتَ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ذَهَبَ تِسْعَةُ اَعْشَارِ الْعِلْمِ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आ़दते मुबारका थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत फ़रमाते और उन से मुख़्तलिफ़ मसाइल में मुबाह़सा भी किया करते थे यहां तक कि उस मस्अले के सारे इब्हाम दूर हो जाते और मस्अला बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाता था येही वज्ह है कि मशरिक़ो मग़रिब दोनों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़तावा की धूम थी और उन की पैरवी की जाती थी, इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हो गया तो गोया इल्म के नौ ह़िस्से चले गए और सिर्फ़ एक ह़िस्सा बाक़ी रह गया।"(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म की मुशावरत के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मज़्कूरए बाला अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से उ़मूमन उन मसाइल में मुशावरत फ़रमाते जिन के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस में कोई हुक्म वाज़ेह़ न होता।

1 ......حجة الله البالغه، باب كيفية تلقي الامة الشرع من النبي صلى الله عليه وسلم، ج ١، ص ٣٢١ ـ

www.dawateislami.net

......इन मश्वरों से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़्सद सिर्फ़ येह होता था कि अगर किसी सह़ाबी के इ़ल्म में इस मस्अले से मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़दीसे मुबारका हो तो आप के इ़ल्म में भी आ जाए, क्यूंकि ऐसा होता था कि बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को कुछ ह़दीसें याद होतीं और दूसरे उसे नहीं जानते थे।

......इसी त़रह़ वोह शरई नुसूस जिन में मुतअ़द्दिद मा'नों का एह़तिमाल होता था उन की इफ़्हाम व तफ़्हीम के लिये मुशावरत फ़रमाते ताकि इन के मा'ना की ता'यीन हो जाए।

......मज़्कूरए बाला दोनों मुआ़मलात में कभी तो चन्द लोगों का ही मश्वरा काफ़ी होता और उसी पर अ़मल कर लिया जाता और बसा औक़ात उ़मूमी वाक़िआ़त की बात होती तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इकठ्ठा करते और ह़त्तल मक़्दूर मश्वरे का दाइरा वसीअ़ करते जैसा कि मुल्के शाम में जब त़ाऊ़न की वबा फैली और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां जाने का इरादा फ़रमाया तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ फ़रमा कर मश्वरा लिया।

......बारगाहे फ़ारूक़ी में मश्वरा देने वाले तमाम ह़ज़रात बिल्कुल आज़ादी के साथ बिला ख़ौफ़ो ख़त़र मश्वरा दिया करते थे क्यूंकि सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मश्वरा लेने के बा'द अगर्चे किसी के मश्वरे को किसी ख़ास वज्ह से क़बूल न भी फ़रमाते तो उस की ज़ात को मुत्तहम न फ़रमाते, न तो उसे डांट डपट करते और न ही उस की कोई पकड़ फ़रमाते, येही वज्ह थी कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में तमाम लोग आज़ादी के साथ अपनी राए का इज़्हार किया करते थे।

उर्द शेर बिन बाबक का क़ौल है : ''ह़क़ीर आदमी की दुरुस्त राए को कमतर न समझ, क्यूंकि ह़क़ीर ग़ोत़ाख़ोर की वज्ह से मोती की क़द्रो क़ीमत कम नहीं होती।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये मुशावरत के इन बुन्यादी उसूलों के मुत़ाबिक़ ही अपने मश्वरे किया करें, इन पर अ़मल की बरकत से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मह़ब्बत व उल्फ़त, लिह़ाज़ व मुरुव्वत, महारत व सलाह़िय्यत, ख़ैरख़्वाही व ह़िमायत और रिफ़्अ़त व शौकत की ऐसी ख़ुश्बू फैलेगी जिस से मशामे जां मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर हो जाएंगे।

मुशावरत के तमाम वाक़िआ़त को बयान करना मुश्किल है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते त़य्यिबा का गहरी नज़र से मुत़ालआ़ किया जाए तो येह बात सामने आती है कि

(1) ......مستطرف، الباب الحادی والعشرون، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۳۲۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ उमूर में इतने मश्वरे होते थे कि उन को बयान करना बहुत मुश्किल है, इस की वुजूहात हम पीछे ज़िक्र कर चुके हैं, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद की कामयाबी, मसाइल की फ़िरावानी, उन के ह़ल की जिद्दो जिहद और उस में मिलने वाली कामयाबी व कामरानी का सब से बड़ा सबब येही शूराई निज़ाम ही है, अगर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस शूराई निज़ाम को राइज न फ़रमाते तो यक़ीनन इस के वोह नताइज ह़ासिल न होते जो इस निज़ाम के राइज करने के बा'द ह़ासिल हुवे।

शूराई निज़ाम फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़िरासत व करामत है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीने अव्वलीन व क़दीमुल इस्लाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से जन्नत की ख़ुश ख़बरी दुन्या में ही अ़त़ा फ़रमा दी गई थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जन्नती होने में किसी क़िस्म का कोई शको शुबा नहीं था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत के तरबिय्यत याफ़्ता थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआने पाक की ता'लीम ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ासिल की थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलीलुल क़द्र फ़क़ीह और मसाइले शरइय्या के अ़ल्लामा होने के साथ साथ मुज्तहिद थे, इन तमाम सिफ़ात के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी भी किसी मस्अले को अपनी रिआ़या पर ज़बरदस्ती नाफ़िज़ करने की कोशिश न फ़रमाई, बल्कि हमेशा मुशावरत ही के ज़रीए उसे नाफ़िज़ फ़रमाया ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत ऐसी थी कि अगर बिलफ़र्ज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई मस्अला अपनी रिआ़या पर उन के मश्वरे के बिग़ैर भी नाफ़िज़ फ़रमा देते तो किसी को कोई ए'तिराज़ न होता। फिर वोह कौन सी वुजूहात थीं ? जिन के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी राए को तरजीह़ न दी बल्कि शूराई निज़ाम को राइज फ़रमाया। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

......आप ने शूराई निज़ाम की तरवीज ख़ालिसतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये फ़रमाई।

......आप ने शूराई निज़ाम की तरवीज इस लिये फ़रमाई ताकि लोगों में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ और इ़श्क़े रसूल का जज़्बा पैदा हो।

www.dawateislami.net

......सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी करते हुवे फ़रमाई जिस से येह ज़ाहिर हो गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई नया निज़ाम राइज नहीं फ़रमाया।

......शूराई निज़ाम की वज्ह से मुहाजिरीने अव्वलीन, क़दीमुल इस्लाम और बदरी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की क़द्रो मन्ज़िलत लोगों के दिलों में वैसे ही रहे जैसी अ़हदे रिसालत व अ़हदे सिद्दीक़ी में थी।

......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब के क़ुलूब में मौजूद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाले ज़ाहिरी के दो अ़ज़ीम ग़मों को कुछ तस्कीन पहुंचाई जा सके।

......मुख़्तलिफ़ उमूर के मुख़्तलिफ़ फ़ैसले ख़ता से महफ़ूज़ हो जाएं।

......मुसलमानों के मुआ़मलात उन्ही की मुशावरत से तै पाएं जिस से "बग़ावत" जैसी बुराई का क़ल्अ़ क़म्अ़ हो।

......उम्मते मुस्लिमा के ऐसे अ़ज़ीम और इल्मो फ़ज़्ल वाले बा सलाहिय्यत लोग सामने आएं जिन के हाथों में हुकूमत की भारी ज़िम्मेदारी दी जा सके।

......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में अ़हदे रिसालत व अ़हदे सिद्दीक़ी में मुसलमानों में मौजूद येह नज़रिया दूर हो जाए कि "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तबीअ़त के सख़्त हैं।"

......उस वक़्त के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन पर येह बात वाज़ेह हो जाए कि हर शख़्स इस्लाम में आज़ादिये राए का वोह हक़ जो क़ुरआनो ह़दीस के मुताबिक़ हो हाकिम तक पहुंचा सकता है।

शूराई निज़ाम की तरवीज के पस मन्ज़र में जब इन तमाम अस्बाब को देखा जाए तो हर शख़्स येह कहने पर मजबूर हो जाता है कि अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम फ़क़त एक मुशावरत वाला निज़ाम ही नहीं बल्कि दर ह़क़ीक़त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की "**कामिल फ़िरासत व अ़ज़ीम करामत**" है।

शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूलों का गुलदस्ता

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी

www.dawateislami.net

काम का इरादा करे और उस में किसी मुसलमान से मश्वरा करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दुरुस्त काम की हिदायत दे देता है।"(1)

......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ का फ़रमान है : "कोई क़ौम जब भी आपस में मश्वरा करती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उन की अफ़्ज़ल राए की त़रफ़ हिदायत दे देता है।"(2)

......ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने इस्तिख़ारा किया वोह ना मुराद नहीं होगा और जिस ने मश्वरा किया वोह नादिम नहीं होगा और जिस ने मियानारवी इख़्तियार की वोह मुफ़्लिस नहीं होगा।"(3)

......कहा जाता है कि जिसे चार चीज़ें दे दी गईं उस से चार चीज़ें नहीं रोकी जातीं : (1) जिसे शुक्र करने की तौफ़ीक़ मिली उस से मज़ीद अ़त़ा रोकी नहीं जाती। (2) जिसे तौबा की तौफ़ीक़ दी गई उस से क़बूलिय्यत नहीं रोकी जाती। (3) जिस ने इस्तिख़ारा किया उस से ख़ैर नहीं रोकी जाती। (4) और जिस ने मश्वरा किया उस से सवाब व दुरुस्ती नहीं रोकी जाती।(4)

......किसी दाना से पूछा गया कि कौन सी चीज़ अ़क़्ल की ज़ियादा मुअय्यद और कौन सी ज़ियादा मुज़िर है। उस ने कहा : अ़क़्ल के लिये ज़ियादा मुफ़ीद तीन चीज़ें हैं : (1) उ़लमाए किराम से मश्वरा करना। (2) मुख़्तलिफ़ उमूर का तजरिबा होना। (3) काम में ठहराव सुलझाव होना। और ज़ियादा मुज़िर भी तीन चीज़ें हैं : (1) ज़ुल्म (2) ना तजरिबा कारी (3) जल्द बाज़ी।(5)

......मन्क़ूल है कि "जब आदमी अल्लाह तआ़ला से इस्तिख़ारा, दोस्तों से मश्वरा और अपनी अ़क़्ल से ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ करने के बा'द कोई अम्र सर अन्जाम देता है तो अल्लाह तआ़ला उस का मुआ़मला उस की पसन्द के मुत़ाबिक़ कर देता है।"(6)

---

1 ......شعب الایمان، باب فی الحکم۔۔۔الخ، ج۶، ص۷۵، حدیث:۷۵۳۸۔

2 ......جامع احکام القرآن، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ:۱۵۹، الجزء:۴، ج۲، ص۱۹۳۔

3 ......معجم اوسط، من اسمہ محمد، ج۵، ص۷۷، حدیث:۶۶۲۷۔

4 ......مستطرف، الباب الحادی عشر فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۳۳۔

5 ......العقد الفرید، المشورۃ، لبعض الحکماء۔۔۔الخ، ج۱، ص۵۸۔

6 ......مستطرف، الباب الحادی عشر فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۳۳۔

www.dawateislami.net

......आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "उम्मत के लिये फ़ाइदए मश्वरा येह है कि तिलाह़ुक़े अन्ज़ारो अफ़्कार (या'नी इजतिमाई ग़ौरो फ़िक्र) से बारहा वोह बात ज़ाहिर होती है कि साह़िबे राए की नज़र में न थी।"(1)

......एक आ'राबी का क़ौल है कि "मश्वरे से बढ़ कर कोई क़वी मददगार नहीं।" क्यूंकि मश्वरे के बा'द कोई काम सर अन्जाम देने से नाकामी व नुक़्सान की सूरत में मश्वरा देने वाले मुमिद्दो मुआ़विन हो कर नुक़्सान पूरा करने में साई होते हैं वगरना बिग़ैर मश्वरे के किसी काम की अन्जाम देही से नाकामी की सूरत में बे यारी व मददगारी ख़जलत व शर्मिन्दगी और जग हंसाई का सामना हो सकता है।

......ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द साइदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो बन्दा मश्वरा ले वोह कभी बद बख़्त नहीं होता और जो बन्दा ख़ुद राए और दूसरों के मश्वरों से मुस्तग़्नी (या'नी बे परवाह) हो वोह कभी नेक बख़्त नहीं होता।"(2)

اِنَّ اللَّبِيْبَ اِذَا تَفَرَّقَ اَمْرُهُ، فَتَقَ الْاُمُوْرَ مُنَاظِراً وَ مُشَاوِرَا

तर्जमा : "अ़क़्ल मन्द का मुआ़मला जब मुतफ़र्रिक़ हो कर उलझ जाता है तो वोह ग़ौरो फ़िक्र और मश्वरा करते हुवे उस की जिहतों को यक़ीनन वाज़ेह़ कर लेता है।"

وَاَخُو الْجَهَالَةِ يَسْتَبِدُّ بِرَاْيِهِ فَتَرَاهُ يَعْتَسِفُ الْاُمُوْرَ مَخَاطِرَا

तर्जमा : और जाहिल व ना तजरिबा कार अपनी राए को तरजीह़ देता है, पस तू देखता है कि वोह ख़त़रे में पड़ते हुवे अपने काम बिग़ैर सोचे समझे कर गुज़रता है।"(3)

......"कहा जाता है : "जिस ने अपनी राए को बड़ा जाना बहक गया।"(4)

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) फ़रमाते हैं : "जिस ने अपनी राए को काफ़ी जाना वोह ख़त़रे में पड़ गया।"(5)

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 18, स. 491।

2......جامع احکام القرآن، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، الجزء: ۴، ج۲، ص ۱۹۳۔

3......مستطرف، الباب الحادی عشر، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج۱، ص ۱۳۱۔

4......جامع احکام القرآن، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، الجزء: ۴، ج۲، ص ۱۹۲۔

5......مستطرف، الباب الحادی عشر، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج۱، ص ۱۳۱۔

www.dawateislami.net

......मश्वरा करना ऐसा मुबारक फ़े'ल है कि इस से वोह शख़्स जिस से मश्वरा किया जाए अपनी क़द्रो क़ीमत और तकरीम व अहम्मिय्यत मह़सूस कर के मसरूर होगा और उस की मश्वरा लेने वाले से वाबस्तगी व क़ुर्बत बढ़ेगी। बल्कि अगर नाराज़ इस्लामी भाई से मश्वरा किया जाए तो येह मश्वरा करना उस का बुग़्ज़ो कीना काफ़ूर और नाराज़ी दूर कर के दिल में लुत़्फ़ो मह़ब्बत का नूर पैदा करेगा। जैसा कि बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत "وَشَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِ" के तह़त इस त़रफ़ इशारा फ़रमाया है।(1)

......और अगर नाराज़ इस्लामी भाई कोई मश्वरा त़लब करे तो उसे भी अच्छे अन्दाज़ में बेहतर मश्वरा ज़रूर देना चाहिये। किसी का क़ौल है : "जब तुझ से तेरा दुश्मन मश्वरा करे तो उसे उ़म्दा मश्वरा दे क्यूंकि मश्वरा करने से उस की तेरे साथ दुश्मनी मह़ब्बत में बदल जाएगी।"(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा ज़रूरी उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला शूराई निज़ाम की तफ़्सीलात, इस के फ़ज़ाइलो बरकात व समरात पढ़ कर यक़ीनन हर शख़्स येही चाहेगा कि अ़ह्दे रिसालत, अ़ह्दे सिद्दीक़ी और अ़ह्दे फ़ारूक़ी के इस मुबारक निज़ाम को अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करे, लेकिन हमेशा याद रखिये कि किसी भी निज़ाम की एह़तियाती तदाबीर और इस की मुकम्मल मुस्बत व मनफ़ी तफ़्सीलात की मा'रिफ़त ह़ासिल किये बिग़ैर फ़क़त़ इस के फ़वाइदो समरात को देखते हुवे अ़मल करने से हो सकता है फ़वाइद की बजाए नुक़्सान का सामना करना पड़े। लिहाज़ा ज़रूरी है कि शूराई निज़ाम, उस के मुतअ़ल्लिक़ीन या'नी मश्वरे से पहले व बा'द के उमूर, मश्वरा देने वाले, मश्वरा लेने वाले अफ़राद से मुतअ़ल्लिक़ कुछ मदनी फूल पेश किये जाएं जिन की रौशनी में शूराई निज़ाम को राइज किया जा सके और शूराई निज़ाम की नफ़ाज़ की कोशिश करने वाले इस के फ़वाइदो समरात से कमाह़क़्क़ुहू मुस्तफ़ीद हो सकें।

शूराई निज़ाम के नफ़ाज़ में एह़तियातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां शूराई निज़ाम के बे शुमार फ़वाइदो समरात हैं वहीं अगर बे एह़तियात़ी से काम लिया जाए तो इस में कई नुक़्सानात भी हैं, लिहाज़ा शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा चन्द एह़तियात़ी तदाबीर पेशे ख़िदमत हैं :

---

1 .....جامع احکامِ القرآن، پ ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹ ، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۱۹۲۔

2 .....مستطرف، الباب الحادی عشر، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۳۲۔

www.dawateislami.net

......शूराई निज़ाम की बुन्याद कु़रआनो ह़दीस में बयान कर्दा उसूलों पर रखें।

......शूराई निज़ाम इतना प्यारा निज़ाम है जिसे हर शख़्स अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ कर सकता है। एक घर के सरबराह से ले कर सल्त़नत के बादशाह तक तमाम लोग इस के फ़वाइदो समरात से फ़ाइदा उठा सकते हैं। अलबत्ता इस में जगह और माह़ोल का ख़ास ख़याल रखें कि जो अन्दाज़ घर की चार दीवारी में कामयाब हो ज़रूरी नहीं कि घर से बाहर भी इस से वोही फ़वाइद ह़ासिल हों।

......शूराई निज़ाम के नफ़ाज़ में जल्द बाज़ी से क़त्अ़न काम न लीजिये कि इस में सरासर नुक़्सान है, बा'ज़ औक़ात किसी काम के बहुत ज़ियादा फ़वाइद देख कर लोग जल्द बाज़ी में उसे नाफ़िज़ करने की कोशिश करते हैं, जिस के नतीजे में ''नफ़ाज़'' तब्दील हो कर ''तसल्लुत़'' बन जाता है जो सरासर नुक़्सान का बाइ़स है।

......मुख़्तलिफ़ जगहों के मुख़्तलिफ़ शूराई निज़ाम हो सकते हैं, लिहाज़ा एक जगह के निज़ाम को दूसरी जगहों के निज़ाम में ख़ल्त़ मल्त़ न कीजिये कि इस त़रह़ दोनों निज़ाम दरहम बरहम हो सकते हैं।

......शूराई निज़ाम की कामयाबी का दारो मदार इस बात पर है कि इस में सिर्फ़ उन लोगों को शामिल किया जाए जो इस से मुतअ़ल्लिक़ हों। ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ा लोगों को शामिल करने से न सिर्फ़ येह निज़ाम दरहम बरहम होगा बल्कि इस के नुक़्सानात भी सामने आएंगे।

मश्वरे को मुअस्सिर बनाने वाले मदनी फूल

......अगर आप कोई नया मश्वरा करने जा रहे हैं तो साबिक़ा मश्वरे का मुत़ालआ़ कीजिये और इस बात का यक़ीन कर लीजिये कि जो काम आप के सिपुर्द किये गए थे वोह अन्जाम पा चुके हैं ? क्यूंकि आप के इस मश्वरे की कामयाबी का दारो मदार इस से पहले किया गया मश्वरा है, अगर आप ने अभी तक पिछले मश्वरे के उमूर पर अ़मल की कोशिश नहीं की तो इस नए मश्वरे के उमूर पर अ़मल की तवक़्क़ोअ़ आप से कैसे की जा सकती है ?

......साबिक़ा मश्वरे के जिन उमूर की तफ़्सील दरकार हो उसे अगले मश्वरे से क़ब्ल ही अपने ज़िम्मेदार से ह़ासिल कर लीजिये ताकि आइन्दा मश्वरे मुफ़ीद साबित हो सके और जिन उमूर पर सुवालात क़ाइम होते हों उन्हें भी पहले ही तह़रीर कर लीजिये।

......इस बात पर भी ग़ौर फ़रमा लीजिये कि आइन्दा मश्वरे में किन किन उमूर पर किस त़रह़ गुफ़्तगू करनी है।

www.dawateislami.net

✿......मश्वरे से पेशतर या फ़ौरन बा'द कोई अहम काम पहले से तै न कीजिये।

✿......मश्वरे के दौरान किसी अहम फ़ोन या मुआमले की वज्ह से तवज्जोह के मुन्तशिर होने से बचने के लिये पहले से किसी ने'मुल बदल का इन्तिज़ाम फ़रमा लीजिये ताकि मश्वरे में हर त़रह़ की यक्सूई ह़ासिल हो।

✿......मश्वरे के लिये वक़्त मख़्सूस कर लीजिये और इस की पाबन्दी भी कीजिये, बल्कि हो सके तो वक़्त से पहले पहुंचिये ताकि आप अपना इज़्त़िराब दूर कर सकें और ख़ुद को मश्वरे के माह़ोल में ढाल सकें।

✿......आइन्दा मश्वरे के लिये आप ने जिन उमूर पर बात करनी है वोह मुकम्मल तय्यार हों, और इस मुआमले में आप का ज़ेह्न अपना मौक़िफ़ समझाने के लिये बिल्कुल साफ़ हो और इस के इजतिमाई फ़वाइद पर आप की नज़र हो।

✿......मश्वरे के दौरान येह बात ज़ेह्न नशीन रखिये कि मेरा मश्वरा या तजवीज़ नाक़िस है और मुमकिन है कि रद हो जाए। नीज़ ऐसी सूरत में हरगिज़ "अना" का मस्अला न बनने दीजिये, अलबत्ता अपना मौक़िफ़ इस क़दर मुदल्लल और ठोस अन्दाज़ में मगर नर्म गुफ़्त्गू के साथ पेश कीजिये कि लोगों के दिल मानने पर मजबूर हो जाएं।

✿......अपने पेश कर्दा मश्वरों के ज़रूरी कवाइफ़ मअ़ मुतअ़ल्लिक़ा लवाज़िमात लाज़िमी साथ रखिये।

✿......आप को मश्वरे में मदऊ़ किया गया और अगर किसी वज्ह से ग़ैर ह़ाज़िरी हो तो इस की पेशगी इत्त़िलाअ़ फ़रमा दीजिये, ज़िम्मेदार की इजाज़त हो तो अपने मुतबादल इस्लामी भाई को मुकम्मल तय्यारी के साथ भेज दीजिये

मश्वरे के दौरान इन उमूर को मद्दे नज़र रखिये

✿......तै शुदा बातों और दीगर गुफ़्त्गू को तह़रीर करने के लिये ज़रूरी स्टेशनरी जैसे डाइरी, क़लम वग़ैरा साथ रखिये।

✿......अपने मश्वरे वाज़ेह़ अन्दाज़ और मुख़्तसर गुफ़्त्गू में पेश कीजिये, लम्बी चोड़ी बह़स से इजतिनाब कीजिये।

✿......अगर आप कोई राए देना चाहें या कोई बात ज़ेह्न में हो और इस का इज़्हार करना चाहें तो मुनासिब वक़्त पर कर दीजिये मगर इस में साफ़ गोई और दियानत दारी को पेशे नज़र रखिये और शुरका की दिल आज़ारी से ख़ुद को बचा कर रखिये।

www.dawateislami.net

......ख़ुद भी तै शुदा उमूर पर ही गुफ़्त्गू कीजिये और तमाम शुरका को भी इस का पाबन्द कीजिये । ख़ल्ते मब्ह़स या'नी मौज़ूअ़ से हट कर ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ा गुफ़्त्गू से मश्वरे को बचाए रखिये ।

......अगर कोई बात आप की समझ में न आए तो इस की वज़ाह़त ज़रूर ह़ासिल कीजिये किसी सूरत में भी इब्हाम बाक़ी न रहने दीजिये ब सूरते दीगर आप ही का ज़ेह्न ख़दशात में घिरा रहेगा जो यक़ीनन नुक़्सान का बाइ़स है ।

......याद रखिये ! मश्वरे इजतिमाई उमूर, मुआ़शरे या इदारे की तरक़्क़ी, अहम उमूर पर फ़ैसलों और मसाइल के बेहतर ह़ल के लिये किये जाते हैं । लिहाज़ा जिस्मानी ह़ाज़िरी के साथ साथ ज़ेह्नी लिह़ाज़ से भी मुकम्मल तौर पर ह़ाज़िर रहें ताकि आप अपनी सलाहिय्यतों को भरपूर इस्ति'माल कर सकें ।

......शुरकाए मश्वरा के ह़िफ़्ज़े मरातिब और इ़ज़्ज़ते नफ़्स का ख़याल रखते हुवे सब के ख़यालात और आरा सुनने का ह़ौसला रखिये और इन्हें शामिले गुफ़्त्गू कीजिये कि इस से शुरका के ह़ौसले बढ़ते और ए'तिमाद बह़ाल रहता है ।

......उन मुआ़मलात से ख़ुद को बचाइये जिस से मश्वरे में इख़्तिलाफ़ और नज़ाई कैफ़िय्यत पैदा हो मसलन त़न्ज़ व तज़्ह़ीक वग़ैरा । नीज़ मज़ाक़ मस्ख़री, मे'यार से गिरी हुई मिसालों और क़ह्क़हों वग़ैरा से भी इजतिनाब कीजिये ।

......जो काम आप को आइन्दा के लिये दिये जा रहे हैं उन्हें वज़ाह़त के साथ अपने पास तह़रीर फ़रमा लीजिये ।

मश्वरा देने वाले के लिये मदनी फूल

......मश्वरे के बाब में येह बात इन्तिहाई अहम है कि मश्वरा देने वाला कैसा है ? क्यूंकि मुशीर का मश्वरे में बहुत अहम किरदार होता है । ख़ुलफ़ाए राशिदीन के ज़माने में पुर अम्न मुआ़शरे के क़ियाम और फ़ुतूह़ात की कसरत में सब अहम किरदार आ'ला औसाफ़ के ह़ामिल मुशीरों का रहा है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि मश्वरा देने वाला अपने आप को उन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ करे जिस से उस की राए ख़ाम (या'नी ना मुकम्मल) से ताम (या'नी मुकम्मल) हो जाए और वोह मश्वरा देने में मुफ़ीद किरदार अदा कर सके । चुनान्चे, मश्वरा देने वाला मुआ़मले की नौइ़य्यत से सह़ीह़ तौर पर आगाह, आदाबे मश्वरा से वाक़िफ़, तहज़ीब व शाइस्तगी का पैकर, ख़ुलूस व लिल्लाहिय्यत का ह़ामिल, ग़ौरो ख़ौज़ का आ़दी, सुलझा हुवा, सन्जीदा फ़िक्र इस्लामी भाई होना चाहिये ।

www.dawateislami.net

......मश्वरा देने वाला मुआ़मले की बारीकियों का सह़ीह़ इल्म रखने वाला, मुहज़्ज़ब व शाइस्ता राए वाला हो क्यूंकि बहुत से इ़ल्म वाले दुरुस्त राए की मा'रिफ़त नहीं रखते और कई ऐसे हैं जो मा'मूली बात में बह़्स करने में भी दुरुस्ती पर नहीं होते।

......मश्वरा देने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह आ़जिज़ी व इख़्लास का पैकर हो। उस का मक़्सद अपनी राए की बरतरी साबित करना नहीं बल्कि मुआ़मले की बेहतरी होना चाहिये। लिहाज़ा अगर ज़िम्मेदार उस की राए के इ़लावा किसी और बात में बेहतरी समझते हुवे इसे इख़्तियार करे तो उस के दिल में कुछ भी रन्ज पैदा नहीं होना चाहिये, बल्कि उसे अपना येही ज़ेह्न बनाए रखना चाहिये कि मेरा मश्वरा नाक़िस है अगर काम में आ जाए तो मेरे लिये सवाब है और अगर किसी और राए पर अ़मल हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस में ही बेहतरी फ़रमा दे। लिहाज़ा जब भी मश्वरा दें वुस्अ़ते नज़री व क़ल्बी के साथ दें।

......اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें येह ज़ेह्न दिया है कि जब भी मश्वरा दें येह कह कर दें कि "**येह मेरा नाक़िस मश्वरा है**।" जब हम खुद अपने मश्वरे को वाक़ेई नाक़िस जानेंगे तो क़बूल न होने पर रन्ज नहीं होगा और नफ़्सो शैत़ान भी कोई वार न कर सकेंगे और अगर क़बूल न होने पर नाराज़ी का इज़्हार कर बैठे तो इस का मत़लब येह हुवा कि हमारा ज़बान से अपने मश्वरे को नाक़िस कहना बत़ौरे आ़जिज़ी नहीं था। इस लिये मश्वरा देने वाले को पहले ही से अपना येह ज़ेह्न बना लेना चाहिये कि मेरा मश्वरा नाक़िस है और हो सकता है कि येह न माना जाए। वगर्ना मश्वरा मुस्तरद होने की सूरत में शैत़ान अपना काम कर दिखाता और इ़ज़्ज़ते नफ़्स व अना का मस्अला बनवा कर आपस में इख़्तिलाफ़ात पैदा करवा देता है। नीज़ मश्वरा देने वाला येह बात भी ज़ेह्न में रखे कि मश्वरा लेने वाले को शरअ़न येह ह़क़ ह़ासिल है कि वोह उस की राए से इत्तिफ़ाक़ न करे।

......मुशीर के लिये येह बात भी बहुत ज़रूरी है वोह अपने मश्वरे को मश्वरा समझ कर ही दे न कि हुक्म, कि इन दोनों में ज़मीन-आस्मान का फ़र्क़ है। चुनान्चे, इस ज़िम्न में एक रिवायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। ह़ज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बांदी थीं। इन के आक़ा ने इन का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से करवा दिया और कुछ अ़र्से के बा'द इन्हें आज़ाद कर दिया। आज़ाद होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह ह़क़ ह़ासिल हो गया कि वोह चाहें तो अपने शौहर के साथ रहें या अ़लाह़िदगी इख़्तियार फ़रमा लें। चुनान्चे, सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

ने अ़लाह़िदगी का इरादा फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजा से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते थे और अ़लाह़िदगी न चाहते थे। हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : لَوْ رَاجَعْتِهٖ "या'नी बेहतर है कि तुम इस से रुजूअ़ कर लो।" वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ تَاْمُرُنِي "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप का येह हुक्म है या मश्वरा ?" इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا اَنَا اَشْفَعُ "या'नी येह मेरा हुक्म नहीं बल्कि मैं तो सिर्फ़ सिफ़ारिश कर रहा हूं।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : لَا حَاجَةَ لِي فِيهِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इस (रुजूअ़) की ह़ाजत नहीं।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आक़ाए दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़जिज़ी के क़ुरबान ! किस क़दर प्यारा दर्स अ़ता फ़रमाया कि कोई कैसा ही ज़हीनो फ़त़ीन और कितनी ही अहम शख़्सिय्यत हो अगर कोई उस का मश्वरा क़बूल न करे तो उस से रन्जीदा ख़ातिर हो कर उस पर ग़ज़ब नाक न हो जाए और उस मश्वरा न मानने वाले के बारे में दिल में बुग़्ज़ न रख ले बल्कि इस त़रफ़ तवज्जोह रखे कि जिसे मैं मश्वरा दे रहा हूं उस पर लाज़िम कब है कि वोह मेरे मश्वरे पर अ़मल भी करे और एक मा तह़त के लिये तो निगरान व ज़िम्मेदार के बारे में इस से बढ़ कर आदाब क़ाबिले लिह़ाज़ हैं।

......मुशीर के लिये अमानत दार और साह़िबे राज़ होना भी बहुत ज़रूरी है। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक मरतबा नबियों के सरवर, रसूलों के अफ़्सर, मह़बूबे रब्बे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ैदी ग़ुलाम तक़्सीम फ़रमा रहे थे। जब दो ग़ुलाम बाक़ी रह गए तो एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ुसूले ग़ुलाम की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुवे। रसूले मुख़्तार, बिइज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन दोनों में से जो चाहो इख़्तियार कर लो।" उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बल्कि आप ख़ुद ही इन्तिख़ाब फ़रमा दें।" प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْمُسْتَشَارُ اَمِيْنٌ اَلْمُسْتَشَارُ اَمِيْنٌ "या'नी जिस से मश्वरा लिया जाए वोह अमीन है, जिस से मश्वरा लिया जाए वोह अमीन है।" फिर इरशाद फ़रमाया : "लो, इन दोनों ग़ुलामों में से येह ले लो क्यूंकि मैं ने इसे नमाज़ पढ़ते देखा है।"(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الطلاق، باب شفاعة النبی صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم---الخ، ج ۳، ص ۴۸۹، حدیث: ۵۲۸۳۔

2 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب العلم، باب المستشار، ج ۱۰، ص ۳۶۲، حدیث: ۲۱۱۱۰۔

www.dawateislami.net

......मश्वरा देने वाला अमीन होने के साथ साथ अगर आ़लिमे दीन भी हो तो बहुत ख़ूब, क्यूंकि सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि "दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ख़ुलफ़ा व अइम्मा मुबाह़ कामों में अमीन लोगों और उ़लमा से मश्वरा किया करते थे।"(1)

......मश्वरा देने वाला मुत्तक़ी व परहेज़गार हो। चुनान्चे, सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मुत्तक़ी, अमानत दार और ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले शख़्स से मश्वरा करना चाहिये।"(2)

......मश्वरा देने वाला तजरिबा कार हो। चुनान्चे, बा'ज़ उ़लमा फ़रमाते हैं : "किसी तजरिबा कार शख़्स से मश्वरा लेना चाहिये क्यूंकि वोह तुम को ऐसी राए देगा जो उसे तो गिरां क़दर दस्तयाब हुई मगर तुझे मुफ़्त में मिल जाएगी।"(3)

......जिस से मश्वरा लिया जा रहा है वोह इस बात में मश्वरा देने का अह्ल भी हो, लिहाज़ा मश्वरा इस के अह्ल से करना ज़रूरी है बीमारी में पोलीस और इमारत की ता'मीर में त़बीब से मश्वरा नहीं लिया जाएगा। इसी त़रह़ कहा गया है कि इन लोगों से भी मश्वरा न लिया जाए : (1) जाहिल (2) दुश्मन (3) रियाकार (4) बुज़दिल (5) बख़ील (6) ख़्वाहिशात का पैरू। क्यूंकि राए देने में जाहिल गुमराह करेगा, दुश्मन हलाकत चाहेगा, रियाकार लोगों की ख़ुशनूदी को पेशे नज़र रखेगा, बुज़दिल कम हिम्मती का मुज़ाहरा करेगा, बख़ील की राए ह़िर्से माल से ख़ाली न होगी और ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाला अपनी ख़्वाहिशात का ग़ुलाम होता है सिवा उस की राए उस की ख़्वाहिश के ताबेअ़ होगी।(4)

......लालची और ख़ुशामदी से भी मश्वरा नहीं करना चाहिये कि येह हमेशा अपना फ़ाइदा सोचेगा और इजतिमाई मफ़ादात से कुछ ग़रज़ न रखेगा। लिहाज़ा मश्वरा देने वाले को चाहिये कि मज़्कूरए बाला सिफ़ाते मज़्मूमा से ख़ुद को बचाए। और अपने अन्दर ऐसी आ'ला सिफ़ात और ऐसी कुढ़न और इख़्लास पैदा करे कि उस के मश्वरे मदनी कामों में ज़ियादा से ज़ियादा बेहतरी लाने के लिये मुफ़ीद व सूदमन्द साबित हो सकें।

---

1 ......بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ج ۴، ص ۵۲۸، تحت الباب: ۲۸ ملتقطا۔

2 ......جامع احکام القرآن، پ ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۱۹۳۔

3 ......جامع احکام القرآن، پ ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۵۹، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۱۹۳۔

4 ......مستطرف، الباب الحادی عشر، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۳۳۔

www.dawateislami.net

मश्वरा लेने वाले के लिये मदनी फूल

......मश्वरा लेने और देने वाला हो सके तो अच्छी अच्छी निय्यतें भी कर ले कि बिग़ैर निय्यत के किसी अ़मले ख़ैर का भी सवाब नहीं मिलता, अच्छी अच्छी निय्यतें करने से मश्वरा भी हो जाएगा और सवाब का ख़ज़ाना भी हाथ आएगा।

......मश्वरा लेने वाले के लिये येह बात बहुत ज़रूरी है कि जिन मुआ़मलात और उमूर पर मश्वरा लेना है उन के बारे में पहले ज़ाती त़ौर पर मुकम्मल मा'लूमात ह़ासिल कर ले कि इस त़रह़ इस मुआ़मले में जो मुख़्तलिफ़ आरा सामने आएंगी उस की जांच परख में आसानी होगी और किसी अच्छी राए पर अ़मल किया जा सकेगा। ब सूरते दीगर मश्वरे का मक़्सूद ह़ासिल न होगा ? वाज़ेह़ रहे कि मश्वरे का मक़्सद मा'लूमात का ह़ुसूल नहीं बल्कि पहले से ह़ासिल शुदा मुख़्तलिफ़ मा'लूमात से किसी एक अच्छी राए का ह़ुसूल और उस पर इत्तिफ़ाक़ है।

......मश्वरा लेने वाले के लिये येह बात निहायत ज़रूरी है कि वोह मश्वरे को मश्वरा ही रखे न कि पहले से तै़ शुदा मुआ़मलात की इत्तिलाअ़, बा'ज़ औक़ात कोई ज़िम्मेदार अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों को मश्वरे के लिये जम्अ़ करता है लेकिन इस में इस्लामी भाइयों को पहले से तै़ शुदा उमूर की इत्तिलाअ़ दे कर मश्वरे को ख़त्म कर देता है, याद रहे इसे मश्वरा नहीं कहते, बल्कि मश्वरा तो उसे कहते हैं कि किसी मख़्सूस मौज़ूअ़ पर मुख़्तलिफ़ लोगों की आरा ली जाएं और फिर उन की रौशनी में किसी अच्छी राए पर अक्सरिय्यत के इत्तिफ़ाक़ से अ़मली नफ़ाज़ की तरकीब बनाई जाए। यक़ीनन मश्वरे के नाम पर अह़काम की इत्तिलाअ़ मा तह़्त इस्लामी भाइयों को ज़ेह्नी अज़िय्यत में मुब्तला करने के साथ साथ बद गुमानी जैसे बड़े नुक़्सानात को पैदा करने का सबब बन सकती है। लिहाज़ा मश्वरा लेते वक़्त इस बात की एह़तियात़ निहायत ज़रूरी है।

......मश्वरा लेने वाला अगर मुतअ़ल्लिक़ा इस्लामी भाइयों को पहले से ही मश्वरे का मौज़ूअ़, मुक़र्ररा तारीख़, दिन और वक़्त भी बता दे तो इस से बहुत ही फ़ाइदा होगा कि तमाम इस्लामी भाई पहले ही से तय्यार हो कर आएंगे और बेहतरीन अन्दाज़ में अपना मौक़िफ़ पेश कर सकेंगे।

......मश्वरा लेने वाला वक़्त की पाबन्दी का बहुत ख़याल रखे, ऐसा न हो कि छब्बीस मिनट का मश्वरा एक सौ छब्बीस मिनट का हो जाए। लिहाज़ा मश्वरे का आग़ाज़ वक़्त पर किया जाए और तै़ शुदा वक़्त पर ही ख़त्म किया जाए।

www.dawateislami.net

......मश्वरा लेने वाला आ़म फ़हम ज़बान में मश्वरा करे, खुसूसन उस वक़्त जब कि मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलने वाले इस्लामी भाई मौजूद हों, ऐसी मुश्किल ज़बान या दक़ीक़ और बारीक अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना जिन से मफ़्हूम वाज़ेह़ न होता हो नुक़्सान का बाइ़स है नीज़ उन से मश्वरे का मक़्सूद ह़ासिल न होने का अन्देशा है।

......मश्वरा लेने वाला शुरकाए मश्वरा को गुफ़्तगू में शरीक रखे, न कि फ़क़त़ खुद ही कलाम करता चला जाए। मसलन अगर चन्द इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल मुशावरत है तो उन सब से एक एक कर के मश्वरा लिया जा सकता है और अगर इजतिमाई मश्वरे की तरकीब है जिस में इस्लामी भाइयों की कसरत है तो इस में मौज़ूअ़ को पेश कर के सब को इस बात की इजाज़त दे दी जाए कि इस मौज़ूअ़ पर जो भी मश्वरा देना चाहे दे सकता है।

......मश्वरा लेने वाला ह़िक्मते अ़मली, शफ़्क़त व मह़ब्बत, नज़्मो ज़ब्त़ से काम लेते हुवे माह़ोल को मज़ाक़, मस्ख़री, त़न्ज़ और दिल आज़ारी से बचाए कि येह तमाम बातें मश्वरे के लिये निहायत ही नुक़्सान देह हैं, इन से मुशावरत का मक़्सूद ह़ासिल नहीं होगा बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों का वक़्त ज़ाएअ़ होने के साथ साथ किसी इस्लामी भाई की दिल आज़ारी होने का अन्देशा है जो यक़ीनन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

......मश्वरा लेने वाला दुरुस्त फ़ैसलों तक पहुंचने के लिये राहें निकाले कि मश्वरे का मक़्सूद ही येही है अगर फ़क़त़ तमाम लोगों की राए लेने के बा'द मश्वरा ख़त्म कर दिया जाए तो यक़ीनन इस का मक़्सूद ही फ़ौत हो जाएगा।

......आमिराना अन्दाज़ से इजतिनाब कीजिये और ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाइये कि शुरका इस्लामी भाइयों में ए'तिमाद पैदा हो और अजनबिय्यत व ख़ौफ़ की कैफ़िय्यत जाती रहे। इस से तख़्लीक़ी ज़ेह्न खुल कर सामने आएंगे, तमाम इस्लामी भाई अपनी सलाह़िय्यतों के मुत़ाबिक़ खुल कर अपनी राए का इज़्हार करेंगे जो यक़ीनन फ़ैसला कुन राए तक पहुंचने में बहुत मुआ़विन होगा।

......मश्वरा लेने वाला अपनी राए का इज़्हार इब्तिदा में न करे तो ज़ियादा बेहतर है कि हो सकता है वोह अपना अ़न्दिय्या क़ब्ल अज़ वक़्त बयान कर के शुरका की राए से मह़रूम हो जाए लिहाज़ा अव्वलन सब को अपना मौक़िफ़ खुल कर बयान करने दीजिये हो सकता है कोई इस्लामी भाई इतनी प्यारी राए दे दे कि आप अपना मौक़िफ़ तब्दील करने पर मजबूर हो जाएं। अगर आप ने पहले ही अपना ज़ेह्न दे दिया तो फिर अच्छी राए क़बूल करने में भी "अना" का सामना हो सकता है।

www.dawateislami.net

......किसी दाना का क़ौल है : "जब तेरा दोस्त तुझे मश्वरा दे और उस का अन्जाम अच्छा न हो तो इस बात पर उसे मलामत व इताब न कर और इस त़रह़ भी न कह : तू ने ऐसा कहा था, तेरी वज्ह से ऐसा हुवा है, अगर तू न होता तो ऐसा न होता क्यूंकि येह सब ज़ज्रो मलामत ही है और इस से तेरा दोस्त शर्मिन्दा होगा और आइन्दा तू उस की भलाई से मह़रूम हो जाएगा।"(1)

......जो उमूर तै़ हो जाएं उन्हें साथ साथ लिखते जाइये और बा'द में उन को एक नज़र देख भी लीजिये कि अगर कोई ज़रूरी बात लिखने से रह गई हो तो लिखवा लीजिये। अपनी याद दाश्त पर हरगिज़ भरोसा न कीजिये हो सकता है आप एक अच्छे फ़ैसले से मह़रूम हो जाएं।

......बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि मश्वरे में सख़्त कलामी या बह़्स मुबाह़से में ऊंच नीच हो जाती है, लिहाज़ा मश्वरा लेने वाले को चाहिये कि आख़िर में तमाम इस्लामी भाइयों से और तमाम इस्लामी भाइयों की आपस में भी मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना ले इस त़रह़ बा'द में किसी को शैत़ान वर्ग़लाने और उस का ज़ेहन ख़राब करने की तरकीब नहीं बना सकेगा।

......मजलिस के इख़्तिताम पर मजलिस की दुआ़ भी इजतिमाई तौ़र पर सब को पढ़ा दीजिये ताकि सवाब का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आ जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी मजलिस में बैठा पस उस ने कसीर गुफ़्त्गू की तो उस मजलिस से उठने से पहले यूं कहे तो बख़्शा दिया जाएगा जो उस मजलिस में हुवा :(2) سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَن لَّآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوبُ اِلَیْکَ (तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू पाक है और तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से मुआ़फ़ी मांगता हूं और तेरी ही त़रफ़ तौबा करता हूं।)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो येह दुआ़ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है : سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू

1 ......مستطرف، الباب الحادی عشر، فی المشورۃ والنصیحۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۳۲۔

2 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا قام من المجلس، ج ۵، ص ۲۷۳، حدیث: ۳۴۴۴۔

www.dawateislami.net

पाक है और तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से मुआ़फ़ी मांगता हूं और तेरी ही त़रफ़ तौबा करता हूं।"[1]

दुआ़ए अ़त्तार : "या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم जो कोई इजतिमाअ़, दर्स, मदनी क़ाफ़िलों के ह़ल्क़े और दीनी व दुन्यवी बैठक के इख़्तिताम पर ह़स्बे ह़ाल येह दुआ़ पढ़े और मौक़अ़ पा कर पढ़वाने की आ़दत बनाए उस को जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस इनायत कर और मुझ पापी व बदकार, गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा।" اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

मश्वरे के बा'द येह बातें पेशे नज़र रखिये

......मश्वरे में जो उमूर तै किये गए हैं उन का बग़ौर जाइज़ा लीजिये और उन्हें ज़ेह्न नशीन कर लीजिये।

......मश्वरे में अगर कोई काम आप के सिपुर्द किया गया है तो उसे बेहतर अन्दाज़ में सर अन्जाम देने के लिये उस के बारे में ग़ौरो फ़िक्र कीजिये।

......जिन इस्लामी भाइयों तक मश्वरे में तै होने वाले उमूर की इत्तिलाअ़ पहुंचानी है फ़ौरन पहुंचा दीजिये।

......वोह बातें किसी के आगे बयान न कीजिये जिन के बारे में अभी फ़ैसला मह़फ़ूज़ है जिन्हें किसी और को बताने से रोका गया है कि यक़ीनन येह आप के पास अमानत हैं।

......जो बात इत्तिफ़ाक़े राए से तै हो गई अब उस मुआ़मले में लब कुशाई से ख़ुद को बचाइये वरना आप की शख़्सिय्यत और वक़ार दोनों मजरूह़ हो सकते हैं।

......तै शुदा मुआ़मलात के बारे में ऐसा अन्दाज़ भी इख़्तियार न कीजिये जो इजतिमाई फ़ैसले के तअस्सुर को ख़त्म कर के रख दे, अगर किसी फ़ैसले पर नज़रे सानी की ज़रूरत मह़सूस फ़रमाएं तो उसे आइन्दा मश्वरे के निकात में शामिल कर लीजिये।

......इत्तिफ़ाक़े राए से किये गए फ़ैसलों के बा'द इन पर अ़मल दर आमद आप की ज़िम्मेदारी है। अगर आप का इख़्तिलाफ़े राए दुरुस्त भी हो तब भी इजतिमाई फ़ैसलों की अपनी बरकत

1 ......ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ج ۴، ص ۳۴۷، حدیث: ۴۸۵۷۔

www.dawateislami.net

और इफ़ादिय्यत होती है। लिहाज़ा कभी भी "अनानिय्यत" और "ज़ातिय्यत" को बीच में लाने की कोशिश मत कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे मश्वरे का फ़ैज़ान आ़म फ़रमाया न सिर्फ़ खुद अ़मली तौ़र पर इस सुन्नत को ज़िन्दा किया बल्कि शफ़्क़त व नर्मी, ह़ौसला अफ़्ज़ाई और एह़तिरामे मुस्लिम से भरपूर मदनी मुशावरत का ऐसा प्यारा दिलकश अन्दाज़ पेश किया जो त़न्ज़, ह़ौसला शिकनी, तज़्ह़ीको तजहील और दुरुश्त रवी व अ़दमे तवज्जोगी से यक्सर पाक है बल्कि मर्कज़ी मजलिसे शूरा को इस सिलसिले में वाज़ेह़ अह़कामात अ़त़ा फ़रमा कर ज़ैली ह़ल्क़े से ले कर मजलिसे शूरा तक हर सत़्ह़ पर मुशावरत के क़ियाम का सिलसिला भी जारी फ़रमा दिया जिसे आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के मुबारक अन्दाज़ में ढालने की कोशिश जारी है। आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ह़याते त़य्यिबा के शूराई निज़ाम को देखा जाए तो बे साख़्ता दिल से येही निकलता है कि **"अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं।"**

अमीरे अह्ले सुन्नत के मदनी मश्वरे का अन्दाज़

अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मदनी मश्वरा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने खुश ख़िसाल की अ़मली तस्वीर हुवा करता है: **یَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا وَبَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا** "या'नी आसानी पैदा करो और तंगी न दो और खुश ख़बरी दो और मुतनफ़्फ़िर न करो।"(1)

चुनान्चे, देखा गया है कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मुशावरत आसानियों और खुश ख़बरियों की सहूलतों से भरी हुई, नफ़रत व इन्कार की तल्ख़ियों से पाको साफ़, सुरूर आमेज़ सन्जीदा माह़ोल में होती है। आप की शफ़्क़त की थपक और आप के मिज़ाज की नर्मी शुरकाए मश्वरा को इतना ह़ौसला दे देती है कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की विलायत के रो'ब के बा वुजूद कोई भी इस्लामी भाई अपने मश्वरे को पेश करने में झिजक मह़सूस नहीं करता। कोई कैसा ही ख़फ़ीफ़ व नामुनासिब बल्कि अह़मक़ाना मश्वरा ही दे बैठे आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उस को इन्तिहाई तह़म्मुल व वुस्अ़ते ज़र्फ़ी से सुनते और फिर बड़े

(1) بخاری، کتاب العلم، باب ما کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۲، حدیث: ۶۹۔

www.dawateislami.net

पुर शफ़्क़त व ह़कीमाना अन्दाज़ में उस मश्वरे की कमज़ोरियों पर रौशनी डाल कर इस त़रह़ उस का नामुनासिब होना वाज़ेह़ कर देते हैं कि मश्वरा देने वाले की ह़ौसला शिकनी भी नहीं होती और वोह अपनी ग़लत़ राए से रुजूअ़ भी कर लेता है।

अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस मुबारक अन्दाज़ से उन इस्लामी भाइयों को ज़रूर दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो अपने मश्वरों में ग़लत़ अन्दाज़ से दूसरों की बात की काट करते और किसी के नामुनासिब मश्वरे पर त़न्ज़ो तज़्ह़ीक से काम लेते हैं कि इस से जहां शुरकाए मश्वरा की ह़ौसला शिकनी होती है वहां वोह ख़ुद भी मुख़्लिस मुशीरों की वफ़ादारियों से हाथ धो बैठते हैं बल्कि अपने ख़िलाफ़ इस्लामी भाइयों का एक ह़ल्क़ा बना लेते हैं। यक़ीनन येह हमारा ह़िक्मते अ़मली से मह़रूम तंग ज़ेह्न ही है कि जिस की वज्ह से हम चन्द इस्लामी भाइयों के ज़िम्मेदार हो कर भी उन्हें अपना बनाने में नाकाम हैं और अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नर्मी व शफ़्क़त, ह़कीमाना इमारत और उ़म्दा मुशावरत का असर है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लाखों इस्लामी भाइयों के दिलों की धड़कन और रूह़ की राह़त बने हुवे हैं। लिहाज़ा हम भी अगर कामयाबी चाहते हैं तो हमें अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ह़िक्मत भरा अन्दाज़ इख़्तियार करना होगा, अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों की इ़ज़्ज़ते नफ़्स का ख़याल रख कर उन्हें सीने से लगाना होगा, उन के मश्वरे को अहम्मिय्यत दे कर उन्हें एह़सासे मह़रूमी का शिकार होने से मह़फ़ूज़ रखना होगा और अगर बिलफ़र्ज़ उन के मश्वरे पर अ़मल की सूरत में नुक़्सान ज़ाहिर हो तो भी उन के साथ हुस्ने सुलूक करते हुवे उन्हें मलामत व तौबीख़ या'नी डांट डपट करने से बचना होगा।

तू ने ऐसा कहा था.....!

किसी दाना का क़ौल है कि जब तेरा दोस्त तुझे मश्वरा दे और उस का अन्जाम अच्छा न हो तो इस बात पर उसे मलामत व इ़ताब न कर और इस त़रह़ भी न कह : "तू ने ऐसा कहा था, तेरी वज्ह से ऐसा हुवा है, अगर तू न होता तो ऐसा न होता। वग़ैरा वग़ैरा क्यूंकि येह सब ज़ज्रो मलामत ही है।"[1] (या'नी इस से तेरा दोस्त शर्मिन्दा होगा और तू आइन्दा उस के मुफ़ीद मश्वरे और उस की भलाई से मह़रूम हो जाएगा।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......مستطرف، الباب الحادى عشر...الخ، ج ١، ص ١٣٢ـ

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी का शूराई निज़ाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ न सिर्फ़ ख़ुद शूराई निज़ाम को पसन्द फ़रमाते हैं बल्कि आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने ख़ून पसीने से सींची हुई तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी में भी इसी शूराई निज़ाम को राइज फ़रमाया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज येह मदनी तह़रीक तादमे तह़रीर पोने दो सौ 175 मुमालिक में अपना पैग़ाम पहुंचा चुकी है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को इस वक़्त आ़लमे इस्लाम की सब से बड़ी और मुनज़्ज़म तह़रीक होने का ए'ज़ाज़ ह़ासिल है। इस तह़रीक की कामयाबियों की एक सब से बड़ी वज्ह इस का शूराई निज़ाम भी है कि इस में एक सत़र की तह़रीर से ले कर तन्ज़ीमी सत़्ह़ के तमाम बड़े बड़े फ़ैसले शूराई निज़ाम ही के तह़त अन्जाम पाते हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में शूराई निज़ाम राइज फ़रमाया था اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी भी इसी शूराई निज़ाम के नफ़ाज़ में मसरूफ़े अ़मल है।

दा'वते इस्लामी की मुख़्तलिफ़ मजालिस

दा'वते इस्लामी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ुरआनो सुन्नत की असास पर 87 से ज़ाइद शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, एक मस्जिद से ले कर दुन्या के कई मुमालिक तक दा'वते इस्लामी का शूराई निज़ाम फैला हुवा है, दा'वते इस्लामी की मुख़्तलिफ़ मजालिस क़ाइम हैं जो शूराई निज़ाम के तह़त मदनी कामों को फैलाने की सई में मसरूफ़े अ़मल हैं। दुन्या भर में हज़ारों मक़ामात पर सुन्नतों भरे हफ़्तावार इजतिमाआ़त हो रहे हैं और सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले बे शुमार मुबल्लिग़ीन इस मुक़द्दस जज़्बे के तह़त इस्लाहे़ उम्मत के कामों में मसरूफ़ हैं कि

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो
दा'वते इस्लामी ने दुन्या भर में धूम मचाई है
सारे जहां में इश्क़े मुह़म्मद की ख़ुश्बू फैलाई है

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने दा'वते इस्लामी के तमाम तर तन्ज़ीमी उमूर और मुख़्तलिफ़ शो'बाजात के मदनी कामों के लिये एक "मर्कज़ी मजलिसे शूरा" क़ाइम फ़रमाई है, जो तादमे तह़रीर 25 अराकीन पर मुश्तमिल है। येह मजलिस दा'वते इस्लामी के हर हर मुआ़मले में शूराई निज़ाम के तह़त मुशावरत की तरकीब बनाती है, नीज़ इस में जो मुआ़मलात तै़ होते हैं उन्हें पूरी दा'वते इस्लामी में नाफ़िज़ कर दिया जाता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला शूराई निज़ाम और इस की एह़तियाती़ तदाबीर वग़ैरा को पढ़ कर येह बात रोजे़ रौशन की त़रह़ वाजे़ह़ हो जाती है कि जो शख़्स भी इस शूराई निज़ाम की अपने घर व मुतअ़ल्लिक़ा इदारे में नफ़ाज़ की कोशिश करेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कामयाबी उस का मुक़द्दर होगी और मुआ़शरती निज़ाम की ख़राबियां दूर होने के साथ साथ दीगर बे शुमार फ़वाइदो समरात भी ह़ासिल होंगे। ग़लत़ फ़हमियां दूर होने के साथ साथ इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ की फ़ज़ा हमवार होगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ उल्फ़त व मह़ब्बत का दौर दौरा हो जाएगा।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अ़हदे रिसालत, अ़हदे सिद्दीक़ी व अ़हदे फ़ारूक़ी के मुबारक शूराई निज़ाम और इन के तमाम मदनी फूलों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा, हमें ख़ुद भी इस पर अ़मल करने और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, हमें दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की सआ़दत नसीब फ़रमा, मदीनए मुनव्वरा की बा अदब ह़ाज़िरी, जन्नतुल बक़ीअ़ में मद्फ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी तमाम जाइज़ ह़ाजात को पूरा फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

छटा बाब

निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त

इस बाब में मुलाहृज़ा कीजिये..................

......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मज़हबी आज़ादी

......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आमदो रफ़्त की आज़ादी

......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी

......अ़ह्दे फ़ारूक़ी और आज़ादिये राए

......ह़ाकिमे वक़्त की इस्लाह़ करने की इजाज़त

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ'ला ज़र्फ़ी

......ख़िलाफ़े शरीअ़त आरा की मुमानअ़त

......तौहीने मुस्लिम वाली आरा की मुमानअ़त

....…...

www.dawateislami.net

निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़ते राशिदा की एक अहम ख़ुसूसिय्यत येह भी थी कि आप के निज़ाम में बड़ी वुस्अ़त थी, या'नी शरीअ़ते इस्लामी के दाइरे में रहते हुवे तमाम इन्सानों को हर त़रह़ की आज़ादी ह़ासिल थी। इस्लाम की दा'वत दर अस्ल इन्सानों को मुकम्मल आज़ादी की दा'वत थी, क्यूंकि दीन के मुआ़मले में तो ज़ोर ज़बरदस्ती और मजबूरी का तो सुवाल ही पैदा नहीं होता क्यूंकि दीने इस्लाम की बुन्याद ईमान व यक़ीन है जिस का तअ़ल्लुक़ दिल से है और दिल कभी जब्र और ज़बरदस्ती के सामने सर ख़म कर ही नहीं सकता। दर अस्ल इस्लाम ब ह़ैसिय्यते दीन, किसी भी इन्सान के बात़िन पर इस त़रह़ असर अन्दाज़ होता है कि वोह ख़ुद ही अपने ज़ाहिर की इस्लाह़ पर आमादा हो जाता है। लिहाज़ा किसी की ज़बरदस्ती इस्लाह़ करने की कोशिश की जाए तो यक़ीनन वोह कभी भी इस्लाह़ को क़बूल नहीं करेगा। जिस से इस्लाम का मक़्सद ह़ासिल न होगा। जिस दीन ने ज़ुल्म व वह़शत व बरबरिय्यत के चुंगल से इन्सानों को निकाला वोह दीन सिर्फ़ ''इस्लाम'' है, इस्लाम ने लोगों के तमाम तर ह़ुक़ूक़ का हर त़रह़ ख़याल रखा, इस्लाम ने तमाम तर मआ़नी, मदलूलात और मफ़ाहीम का एक जामेअ़ तआ़रुफ़ पेश किया जिस की सब से वाज़ेह़ मिसाल सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक दौर है। फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी पर ज़बरदस्ती कोई चीज़ नाफ़िज़ करने के क़त़अ़न क़ाइल न थे। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मज़हबी आज़ादी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में सब से ज़ियादा ग़ैर मुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया लेकिन तारीख़ में एक भी मिसाल ऐसी नहीं मिलती कि किसी को ज़बरदस्ती इस्लाम क़बूल करवाया गया हो। इस की सब से बड़ी और वाज़ेह़ दलील येह है कि आज चौदह सौ बरस गुज़र जाने के बा वुजूद भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पूरी दुन्या के हर हर कोने में रोज़ाना पांच दफ़्आ़ अज़ान की आवाज़ गूंजती है, बल्कि एक सर्वे के मुत़ाबिक़ पूरी दुन्या में सिर्फ़ अज़ान ही ऐसी आवाज़ है जो हर वक़्त किसी न किसी कोने में गूंजती रहती है। हर रोज़ ''इन्डोनेशिया'' के ''मशरिक़ी जज़ाइर'' से तुलूए़ आफ़्ताब के साथ फ़ज्र की अज़ान शुरूअ़ हो जाती है और बयक वक़्त हज़ारों मुअज़्ज़िन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत का

www.dawateislami.net

ए'लान करते हैं "मशरिक़ी जज़ाइर" से येह सिलसिला "मग़रिबी जज़ाइर" तक चला जाता है डेढ़ घंटे बा'द येह सिलसिला "सुमाट्रा" में शुरूअ़ हो जाता है और "सुमाट्रा" के क़स्बों और देहातों में अज़ानें शुरूअ़ होने से क़ब्ल ही "मलाया" की मसाजिद में अज़ानें होने लगती हैं। येह सिलसिला एक घंटे बा'द "ढाका" जा पहुंचता है, "बंगला देश" में अभी अज़ानें ख़त्म नहीं होतीं कि "कलकत्ता" से "सी लंका" तक फ़ज्र की अज़ानें शुरूअ़ हो जाती हैं, दूसरी त़रफ़ येह सिलसिला "कलकत्ता" से "बम्बई" हिन्द तक पहुंचता है और पूरे "हिन्द" की फ़ज़ा तौह़ीदो रिसालत के ए'लान से गूंज उठती है। एक रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ "श्री नगर" कश्मीर और "ज़ियाकोट"(सियालकोट) में फ़ज्र की अज़ान का वक़्त एक ही है जब कि "ज़ियाकोट" (सियालकोट) से "कोइटा", "बाबुल मदीना" (कराची) और "गवादर" तक चालीस मिनट है, इस अ़र्से में फ़ज्र की अज़ानें तक़रीबन पूरे "पाकिस्तान" में गूंजती रहती हैं। "पाकिस्तान" में येह सिलसिला शुरूअ़ होने से पहले "अफ़ग़ानिस्तान" और "मस्क़त़" में अज़ानें शुरूअ़ हो जाती हैं। "मस्क़त़" से "बग़दाद" तक एक घंटे का फ़र्क़ है। इस अ़र्से में अज़ानें "अ़रब शरीफ़", "यमन", "अ़रब अमारात", "कुवैत" और "इराक़" तक गूंजती रहती हैं। "बग़दाद" से "इस्कन्दरया" तक फिर एक घंटे का फ़र्क़ है। इस वक़्त "शाम", "मिस्र", "सूमालिया" और "सूडान" में अज़ान की सदाएं बुलन्द होती रहती हैं। "इस्कन्दरया" और "इस्तम्बूल" एक ही तूल व अ़र्ज़ पर वाक़ेअ़ हैं वहां से "मशरिक़ी तुर्की" तक डेढ़ घंटे का फ़र्क़ है, इस दौरान "तुर्की" में अज़ानें शुरूअ़ हो जाती हैं, "इस्कन्दरया" से "त़राबुलुस" तक एक घंटे का फ़र्क़ है। इस अ़र्से में "शुमाली अमेरिका", "लीबिया" और "त्योनिस" में अज़ाने शुरूअ़ होने लगती हैं, यूं फ़ज्र की अज़ान जिस का आग़ाज़ "इन्डोनेशिया" के "मशरिक़ी जज़ाइर" से शुरूअ़ हुवा था साढ़े नौ घंटे का सफ़र त़े कर के "बह़िरा वक़यानूस" तक पहुंचने से पहले "मशरिक़ी इन्डोनेशिया" में ज़ोहर की अज़ान का वक़्त हो जाता है। इस त़रह़ कुर्रा अर्ज़ पर एक भी सेकन्ड ऐसा नहीं गुज़रता होगा जब सेंकड़ों, हज़ारों बल्कि लाखों मुअज़्ज़िन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत का ए'लान नहीं करते और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा। بِحَمْدِاللّٰهِ تَعَالٰی तक़रीबन तमाम मुमालिक में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" अपना मदनी पैग़ाम पहुंचा चुकी है। ग़ौर कीजिये ! अगर लोगों को ज़बरदस्ती, ज़ुल्मो सितम के ख़ौफ़ से इस्लाम क़बूल करवाया जाता तो आज लोगों की अ़क़ीदत व मह़ब्बत का येह आ़लम न होता। पूरी दुन्या में इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जिस में कोई शख़्स मज़हब को क़बूल करने में किसी

www.dawateislami.net

ज़बरदस्ती का शिकार नहीं है। क्यूंकि कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान हो ही नहीं सकता जब तक वोह दिल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत व रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत व दीगर ज़रूरिय्याते दीन का इक़रार न करे।

फ़ारूक़े आ'ज़म की बुढ़िया औरत को इस्लाम की दा'वत

एक दफ़्आ़ एक बुढ़िया अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के पास अपनी किसी ज़रूरत से आई तो आप ने उसे इस्लाम की दा'वत देते हुवे इरशाद फ़रमाया : **اَسْلِمِی تَسْلِمِی بَعَثَ اللّٰهُ بِالْحَقِّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** "या'नी ऐ बुढ़िया ! तुम मुसलमान हो जाओ सलामती वाली हो जाओगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (ह़ज़रते) **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया है।" उस ने आप के सामने अपना सर खोला तो उस के बाल बिल्कुल सफ़ेद हो चुके थे। गोया उस ने येह बता दिया कि मैं बिल्कुल बूढ़ी हो चुकी हूं, फिर कहने लगी : **اَنَا اَمُوْتُ الْاٰنَ** "या'नी अब तो मौत भी मेरे बहुत क़रीब है।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : **اَللّٰهُمَّ اَشْهَدْ** "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू गवाह हो जा।" (या'नी मैं ने इसे इस्लाम क़बूल करने पर मजबूर नहीं किया।) फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कुरआने पाक की येह आयते मुबारका तिलावत की : ﴿لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़ुलाम को इस्लाम की दा'वत

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का एक नसरानी ग़ुलाम था जिस का नाम "उस्सिक़" था। उस का बयान है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : "अगर तुम इस्लाम क़बूल कर लो तो हम तुम से मुसलमानों के मुआ़मलात में मदद लेंगे क्यूंकि हमारे नज़्दीक उन के मुआ़मलात में काफ़िरों से मदद लेना जाइज़ नहीं है।" मैं ने इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : **لَا اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ** "या'नी दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं।" फिर जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने मुझे आज़ाद फ़रमाया ह़ालांकि उस वक़्त भी मैं नसरानी था और इरशाद फ़रमाया : **اِذْهَبْ حَيْثُ شِئْتَ** "या'नी तुम आज़ाद हो जहां जाना चाहो चले जाओ।"(2)

1 ......سنن کبری، کتاب الطھارۃ، باب التطھر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۲، حدیث: ۱۳۰، درمنثور، پ ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۵۶، ج ۲، ص ۲۲۔

2 ......طبقات کبری، بقیۃ طبقۃ من روی۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۲۰۲۔

अ़हदे फ़ारूक़ी में आमदो रफ़्त की आज़ादी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम लोगों को आमदो रफ़्त की भी मुकम्मल आज़ादी अ़ता फ़रमाई थी, कोई भी शख़्स बिला झिजक कहीं भी, किसी भी शहर आ जा सकता था अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मुख़्तलिफ़ शहरों ख़ुसूसन मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में बिग़ैर किसी काम के जाने की मुमानअ़त फ़रमा दी थी, अलबत्ता अगर किसी को आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद इजाज़त दे देते, या उसे किसी अ़लाक़े का क़ाज़ी, गवर्नर या आ़मिल बना कर भेजते तो वोह चला जाता। चुनान्चे,

अकाबिरीन सहाबा को मदीनए मुनव्वरा में रहने का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब तक इन्तिक़ाल न हुवा तब तक क़ुरशी अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को आप ने मदीनए मुनव्वरा में ही रहने का हुक्म फ़रमाया, उन्हें बाहर न जाने देते थे। इरशाद फ़रमाया करते थे : اِنَّ اَخْوَفَ مَا اَخَافُ عَلٰی هٰذِهِ الْاُمَّةِ اِنْتِشَارُكُمْ فِی الْبِلَادِ "या'नी मुझे इस उम्मत के बारे में सब से ज़ियादा ख़ौफ़ आप लोगों की दूसरे शहरों में मुन्तक़िली से है।" और अगर इन में से कोई शख़्स जंग वग़ैरा में जाने की इजाज़त त़लब करता तो आप उस से फ़रमाते : قَدْ كَانَ لَكَ فِيْ غَزْوِكَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَبْلُغُكَ وَخَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْغَزْوِ الْيَوْمَ اَنْ لَّا تَرَى الدُّنْيَا وَتَرَاكَ "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ज़वात में शिर्कत तुम्हें काफ़ी है और आज तुम्हारे लिये ग़ज़्वे से बेहतर येह है कि तुम दुन्या को देखो न तुम्हें दुन्या देखे।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की सियासी हिक्मत व बसीरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल से आप की सियासी हिक्मत व बसीरत और लोगों की नफ़्सियात और तबाएअ़ से वाक़िफ़िय्यत का भी पता चलता है। कुतुबे सियर व तारीख़ के मुत़ालए से इस अ़मल की कई हिक्मते अ़मलियां और लत़ीफ़ वुजूहात सामने आती हैं जिन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इस लिये बाहर के अ़लाक़ों में जाने से मन्अ़ कर दिया था कि आप उन्हें अपने क़रीब रख कर उन से मुख़्तलिफ़ पेचीदा मुआ़मलात में मुशावरत कर सकें।

---

(1)......كنزالعمال، كتاب الفضائل، باب فضائل الامة، الجزء: ١٤، ج٧، ص ٣٤، حديث: ٣٧٤٩٦۔

www.dawateislami.net

......येह वोह सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان थे जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत पाई यक़ीनन येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या अ़वाम व ख़वास सब ही के लिये निहायत अहम्मिय्यत रखती थीं सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर अ़लाक़ों में जाने से मन्अ़ फ़रमा दिया ताकि येह मुबारक हस्तियां दीगर अ़लाक़ों के मुख़्तलिफ़ फ़ितनों और इन्तिशार से मह़फ़ूज़ रहें।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को इस लिये भी अपने पास मदीनए मुनव्वरा में रखा था कि जब अमीरुल मोमिनीन की त़रफ़ से कोई हुक्म अ़वामुन्नास तक पहुंचे तो वोह येह जान लें कि येह हुक्म तमाम अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की मुशावरत से तै होने के बा'द हम तक पहुंचा है। क्यूंकि अगर इन अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में से कोई दीगर किसी अ़लाक़े में होता तो वहां के मुक़ीम लोगों के दिलों में येह वस्वसा पैदा हो सकता था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह अकाबिर सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो यहां मौजूद हैं लिहाज़ा येह हुक्म इन की मुशावरत के बिग़ैर ही आया है और यक़ीनन येह वस्वसा कई फ़ितने पैदा कर सकता था लिहाज़ा आप ने मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की काट के लिये येह अ़मल फ़रमाया।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अ़ह्दे उ़स्मानी में मुख़्तलिफ़ फ़ितनों ने सर उठाया और मुसलमानों के माबैन मुख़्तलिफ़ फ़सादात पैदा हुवे इस की सब से बड़ी वज्ह येही थी कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिन अकाबिरीन को मदीनए मुनव्वरा में रोका हुवा था सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को इजाज़त दे दी, येह अकाबिरीन जैसे ही मुख़्तलिफ़ शहरों में गए लोग इन पर टूट पड़े और मुख़्तलिफ़ फ़ितनों ने सर उठाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद व त़लह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : فَکَانَ ذٰلِکَ اَوَّلَ وَھْنٍ دَخَلَ عَلَی الْاِسْلَامِ وَاَوَّلَ فِتْنَۃٍ کَانَتْ فِی الْعَامَّۃِ لَیْسَ اِلَّا ذٰلِکَ "या'नी इस्लाम में दाख़िल होने वाली सब से पहली कमज़ोरी और पहली आज़माइश येही थी कि सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिरीन सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को अ़व्वामुन्नास में जाने दिया।"[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الامۃ، الجزء: ۱۴، ج۷، ص ۳۴، حدیث: ۳۷۹۷۲ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में शरीअ़ते इस्लामिया के उसूलों के मुत़ाबिक़ तमाम हु़क़ूक़ की पासदारी की जाती थी, आप ने लोगों को इनफ़िरादी मिल्किय्यत की भी आज़ादी अ़त़ा फ़रमाई। अगर किसी की कोई ज़ाती मिल्किय्यत होती तो उसे उस के बारे में किसी क़िस्म का कोई ख़दशा न होता। चुनान्चे,

अह्ले ख़ैबर को इवज़ में माल अ़त़ा फ़रमाया

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अह्ले ख़ैबर के यहूदियों के साथ चन्द ज़मीनी मुआ़हदे किये थे जिन की उन्हों ने पासदारी न की, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ज़ुल्मो तशद्दुद किया (ह़ालांकि मुआ़हदे में येह बात शामिल थी कि वोह मुसलमानों को किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाएंगे।) सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ैबर के यहूदियों को अ़ह्द की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पर मदीनए मुनव्वरा से निकाल दिया। अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुसलमानों की त़रह़ उन के हु़क़ूक़ को क़त़अ़न पामाल न फ़रमाया और उन की इनफ़िरादी मिल्किय्यत का पास रखते हुवे उन्हें इस के इवज़ कसीर माल अ़त़ा फ़रमाया।(1)

ह़रमे मक्की की तौसीअ़ के लिये गिराए गए मकानों का मुआ़वज़ा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि जब मुसलमानों की कसरत की वज्ह से मस्जिदुल ह़राम में नमाज़ियों की जगह तंग हो गई तो आप ने उस की तौसीअ़ का इरादा फ़रमाया, तौसीअ़ का सब से बुन्यादी उसूल येह था कि तौसीअ़ के नक़्शे में जिन लोगों के ज़ाती घर आ रहे थे उन को मुतबादिल जगह पर घर दिये जाएं या उन से उन घरों को अच्छी क़ीमत दे कर ख़रीद लिया जाए और फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वैसा ही फ़रमाया।(2)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी और आज़ादिये राए

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में आज़ादिये राए का तसव्वुर बहुत वसीअ़ था, किसी भी शख़्स को ह़क़ बात कहने की खुली इजाज़त थी

---

1 ......بخاری، کتاب الشروط، باب اذا اشترط فی المزارعۃ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۲۳، حدیث: ۲۷۳۰ مختصرا۔

2 ......اخبار مکۃ للفاکھی، ج ۲، ص ۱۵۸۔

www.dawateislami.net

अगर्चे वोह बात ख़लीफ़ए वक़्त के ख़िलाफ़ हो। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को ख़ुद इस बात का मौक़अ़ दिया करते थे कि अपनी राए पेश करें अपना माफ़िय्युज़्ज़मीर (या'नी दिल की बात) बयान करें। यक़ीनन जितना रिआ़या अपने मुआ़शरे को समझती है इतना फ़क़त़ एक आ़म ह़ाकिम नहीं समझ सकता, जितना रिआ़या ख़ुद मुआ़शरती बुराइयों की इस्लाह़ कर सकती है एक ह़ाकिम अपनी कोशिशों से उस का अ़श्रे अ़शीर भी नहीं कर सकता। येही वज्ह है कि किसी भी ह़ुकूमत की कामयाबी में आज़ादिये राए को बहुत दख़्ल है, जिस ह़ुकूमत में आज़ादिये राए की गुन्जाइश न हो वोह ह़ुकूमत कभी भी तरक़्क़ी नहीं कर सकती।

मुज्तहिदीन को ग़ैर मन्सूस अ़लैय मसाइल में इजतिहाद की इजाज़त

जिन मसाइल में कोई शरई नस्स वारिद न होती आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ाज़ी व मुफ़्ती सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को उन में इजतिहाद की इजाज़त देते थे। येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया तो उन्हें एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में उन्हें यूं इजतिहाद की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई कि ''अव्वलन किताबुल्लाह से फ़ैसला करो, फिर सुन्नते रसूलुल्लाह से, फिर इजमाए उम्मत से, अगर इन तीनों से भी मस्अले का ह़ल न मिले तो फिर इस में इजतिहाद करो।''(1)

अ़वामुन्नास को नसीह़त करने की इजाज़त

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नसीह़त व ख़ैरख़्वाही को रिआ़या पर एक वाजिबी अम्र क़रार दे दिया था, नीज़ ह़ाकिमे वक़्त को भी चाहिये कि वोह अ़वामुन्नास से नसीह़त का मुत़ालबा करे ताकि उन्हें आज़ादिये राए का मुकम्मल एह़सास हो। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ होने के बा'द एक ख़ुत़बे में अ़वामुन्नास को नेकी की दा'वत देने, बुराई से मन्अ़ करने और वा'ज़ो नसीह़त करने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई। इरशाद फ़रमाया :

اَعِيْنُوْنِي عَلٰى نَفْسِيْ بِالْاَمْرِ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيِ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاِحْضَارِي النَّصِيْحَةَ فِيْمَا وَلَّانِيَ اللّٰهُ مِنْ اَمْرِكُمْ

''या'नी ऐ लोगो ! नेकी का हुक्म दे कर और बुराई से मन्अ़ कर के और जिन मुआ़मलात में मुझे तुम्हारा वाली बनाया गया है उन में वा'ज़ो नसीह़त कर के तुम लोग मेरी मदद करो।''(2)

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب البیوع والاقضیہ، باب فی القاضی ماینبغی۔۔۔الخ، ج۵، ص۳۵۸، حدیث:۳ملتقطا۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الخلافۃ، خلافۃ امیر المؤمنین۔۔۔الخ، الجزء:۵، ج۳، ص۲۷۲، حدیث:۱۴۱۸۰ملتقطا۔

www.dawateislami.net

ऐ रिआ़या ! ख़ैर पर हमारी मदद करो

एक बार सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَيَّتُهَا الرَّعِيَّةُ اَنَّ لَنَا عَلَيْكُمْ حَقًّا اَلنَّصِيْحَةُ بِالْغَيْبِ وَ الْمُعَاوَنَةُ عَلَى الْخَيْرِ "या'नी ऐ लोगो ! हमारा तुम पर हक़ है कि हमारी गै़र मौजूदगी में ख़ैरख़्वाह रहो और ख़ैर पर हमारी मदद करो।"(1)

हाकिमे वक़्त की इस्लाह़ करने की इजाज़त

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़वामुन्नास को ख़लीफ़ए वक़्त की इस्लाह़ करने की भी खुली छूट दे रखी थी कि अगर तुम लोग मुझ में भी कोई ग़लती देखो तो उसे बिला ख़ौफ़ो ख़त़र बयान करो। इस से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ'ला ज़र्फ़ी और अपनी इस्लाह़ के अ़ज़ीम जज़्बे का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। चुनान्चे,

मोह़्तसिब की मौजूदगी पर रब का शुक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दफ़्आ़ मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर में खजूर के तने पर बैठे अपनी ज़ात से हम कलाम थे। मैं आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब हुवा और अ़र्ज़ किया : مَا الَّذِي اَهَمَّكَ يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप को किस चीज़ ने फ़िक्र मन्द किया हुवा है ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इशारे से कुछ इरशाद फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ किया : "आप क्यूं फ़िक्र कर रहे हैं अगर हम आप की ज़ात में कोई ऐसी बात देखेंगे तो उस की इस्लाह़ कर देंगे।" आप ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! क्या वाक़ेई अगर तुम मेरी ज़ात में कोई ऐसी बात देखोगे तो उस की इस्लाह़ करोगे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां हु़ज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! वाक़ेई अगर हम आप की ज़ात में कोई ऐसी बात देखेंगे तो उस की इस्लाह़ कर देंगे।" आप येह सुन कर बहुत ही ज़ियादा ख़ुश हुवे और इरशाद फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَصْحَابَ مُحَمَّدٍ مَنِ الَّذِيْ اِذَا رَاٰى مِنِّيْ اَمْرًا يُنْكِرُهُ قَوَّمَنِيْ

(1)......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۷۸۔

www.dawateislami.net

"या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने तुम में अस्हाबे मुहम्मद मुस्त़फ़ा को पैदा फ़रमाया जो मेरी ज़ात में कोई बुराई देखेंगे तो उस की इस्लाह़ कर देंगे।"(1)

हम तल्वार से सीधा करेंगे

चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा देते हुवे अपना सर एक जानिब झुकाते हुवे इरशाद फ़रमाया : يَا مَعَاشِرَ الْمُسْلِمِيْنَ مَاذَا تَقُوْلُوْنَ لَوْ مِلْتُ بِرَأْسِيْ اِلَى الدُّنْيَا كَذَا "या'नी ऐ मुसलमानो ! अगर मैं अपना सर दुन्या के लिये इस त़रह़ झुका दूं तो तुम क्या कहोगे ? एक शख़्स खड़ा हुवा और अपनी तल्वार निकाल कर लहराते हुवे कहा : हम आप से तल्वार की ज़बानी बात करेंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِيَّایَ تَعْنِیْ بِقَوْلِکَ "या'नी तुम अपनी बात का मत़लब समझते हो ?" उस ने जवाब दिया : मैं इस बात का मत़लब अच्छी त़रह़ समझता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से तीन मरतबा येह कहा उस ने तीन मरतबा इसी लहजे में जवाब दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स की ह़क़गोई से मुतअस्सिर हो कर इरशाद फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ جَعَلَ فِيْ رَعِيَّتِيْ مَنْ اِذَا تَعَوَّجْتُ قَوَّمَنِيْ "या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं कि जिस ने मेरी रिआ़या में ऐसे लोग पैदा फ़रमाए हैं जो मेरी इस्लाह़ करने का भी ह़ौसला रखते हैं।"(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की सब से पसन्दीदा शख़्सिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : اَحَبُّ النَّاسِ اِلَيَّ مَنْ رَّفَعَ اِلَيَّ عُيُوْبِيْ "या'नी मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा शख़्स वोह है जो मेरे उ़यूब से मुझे आगाह करे।"(3)

दौराने बयान ए'तिराज़ को दूर किया

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास यमनी चादरें आईं, आप ने उसे मुसलमानों में एक एक कर के तक़्सीम फ़रमा दिया, बा'द में आप लोगों के दरमियान खड़े हुवे और ख़ुत़बा देना शुरूअ़ किया, उस वक़्त आप ने भी एक यमनी चादर से

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص ۱۵۴، حدیث: ۴۷۔

2 ......ریاض النضرة، ج ۱، ص ۳۸۱۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۲۔

www.dawateislami.net

तय्यार शुदा हुल्ला पहना हुवा था, आप ने अभी इतना ही कहा था कि : اِسْمَعُوْا رَحِمَكُمُ اللّٰه "या'नी ऐ लोगो ! सुनो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए।" कि एक शख़्स खड़ा हुवा और आप की बात काटते हुवे कहने लगा : وَاللّٰهِ لَا نَسْمَعُ، وَاللّٰهِ لَا نَسْمَعُ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम नहीं सुनेंगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम नहीं सुनेंगे। आप ने इरशाद फ़रमाया : لِمَ يَا عَبْدَ اللّٰهِ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे क्या बात है ? तुम क्यूं नहीं सुनोगे ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "आप ने दुन्या के मुआ़मले में हम पर ज़ियादती की है कि आप ने सब को एक एक चादर दी थी लेकिन अब आप हमारे सामने पूरा हुल्ला पहने खड़े हैं।" आप ने इरशाद फ़रमाया : اَيْنَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ؟ "या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर कहां हैं ?" वोह ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : जी हुज़ूर ! मैं यहां हूं।" फ़रमाया : لِمَنْ اَحَدُ هٰذَيْنِ الْبُرْدَيْنِ اللَّذَيْنِ عَلَيَّ؟ "या'नी येह जो मैं ने दो चादरें पहनी हुई हैं इन में से एक ज़ाइद चादर की वज़ाह़त करो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "येह मेरी चादर है।" फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस शख़्स से मुख़ात़िब हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू ने जल्दी की, ह़ालांकि मैं ने अपने कपड़े धोए हैं इस लिये अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर से उस की चादर आ़रियतन या'नी इस्ति'माल के लिये उधार ले ली।" येह सुन कर वोह शख़्स मुत़्मइन हो गया और अ़र्ज़ करने लगा : قُلِ الْاٰنَ نَسْمَعُ وَنُطِيْعُ "या'नी अब इरशाद फ़रमाइये ! हम सुनेंगे भी और इत़ाअ़त भी करेंगे।"(1)

ऐ उ़मर......! अल्लाह से डरो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और किसी शख़्स के माबैन कुछ मुआ़मला हो गया तो वोह आप से कहने लगा : "ऐ उ़मर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो।" किसी ने उस से कहा : "तुम अमीरुल मोमिनीन को कह रहे हो कि अल्लाह से डरो ?" येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : لَا خَيْرَ فِيْكُمْ اِذَا لَمْ تَقُوْلُوْهَا وَلَا خَيْرَ فِيْنَا اِذَا لَمْ نَقْبَلْهَا مِنْكُمْ "या'नी तुम में कोई ख़ैर नहीं अगर तुम हमें इस त़रह़ (अच्छी बात) न कहो और हम में कोई ख़ैर नहीं अगर हम इसे क़बूल न करें।"(2)

---

1 ......رياض النضرة، ج ا ، ص ٣٨٩-

2 ......مناقب امير المؤمنين عمر بن الخطاب، الباب الثامن والاربعون، ص ١٤٧-

www.dawateislami.net

अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई किसी भी हाकिम या ज़िम्मेदार के लिये येह बात बड़ी अहम्मिय्यत की हामिल है कि वोह अपनी रिआया या अपने मा तह्त इस्लामी भाइयों पर अपनी ही ज़ात को पेश कर दे कि वोह उस की ज़ात में मौजूद ख़ामियों की निशानदेही करें बल्कि उस की हाथों हाथ इस्लाह की तरकीब भी बनाएं। यक़ीनन ऐसा हाकिम अपनी इस्लाह के लिये फ़िक्रमन्द और आ़जिज़ी व इन्किसारी का पैकर होता है और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है, ऐसा हाकिम या ज़िम्मेदार अपनी रिआया या मा तह्त इस्लामी भाइयों के दिलों पर हुकूमत करता है। इन के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की महब्बत डाल देता है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन के सामने अपनी ज़ात को एक खुली किताब की त़रह़ रखा है, जिस के हर सफ़्हे की हर शख़्स वर्क़ गर्दानी कर सकता है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी सब को इस बात की इजाज़त दे रखी है कि अगर मेरी ज़ात में कोई भी ख़िलाफ़े शरअ़ बात देखें फ़ौरन मेरी इस्लाह करें, ह़त्ता कि जब भी आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मदनी मुज़ाकरे (सुवाल जवाब का सिलसिला) फ़रमाते हैं तो उस की इब्तिदा यूं फ़रमाते हैं :

"आप सुवालात कीजिये, हर सुवाल का जवाब और वोह भी बिस्सवाब (या'नी बिल्कुल सहीह) दे पाऊं येह ज़रूरी नहीं, अगर भूल करता पाएं तो फ़ौरन मेरी इस्लाह फ़रमाएं, मुझे आएं बाएं शाएं करता, अपने मौक़िफ़ पर बिला वज्ह अड़ता नहीं बल्कि शुक्रिया के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे।"

आप की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर इसी आ़जिज़ी व इन्किसारी और आ'ला ज़र्फ़ी की वज्ह से आज पूरी दुन्या में आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के लाखों मुरीदीन हैं, जो आप के अह़कामे शरइय्या से माला माल फ़रामीन पर दिलो जान से अ़मल करते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लोगों के दिलों में आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ऐसी महब्बत डाल दी है कि कई लोग बिग़ैर देखे ही आप के मुरीद बन जाते हैं, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वसीले से आप का फ़ैज़ान क़ियामत तक जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म की आ'ला ज़र्फ़ी

तीन बातें न होतीं तो बेहतर था

हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा बिन सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "अगर तीन बातें तुम में न होतीं तो बेहतर होता।" मैं ने पूछा : "हुज़ूर वोह तीन बातें कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "(1) तुम ने अपनी कुन्यत बना ली है जब कि तुम्हारी औलाद नहीं। (2) तुम ख़ुद को अ़रबी कहते हो हालांकि तुम तो रूमी हो। (3) और खाने में इज़ाफ़ी ख़र्च करते हो।" मैं ने तीनों बातों की वज़ाहत करते हुवे अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर आप का पहला सुवाल येह है कि (1) मैं ने कुन्यत बना ली है जब कि मेरी औलाद नहीं। तो इस की वज्ह येह है कि ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी कुन्यत अबू यहया रखी है। आप का दूसरा सुवाल येह है कि (2) मैं रूमी हो कर ख़ुद को अ़रबी कहता हूं तो इस की वज्ह येह है कि मैं नमिर बिन क़ासित़ की औलाद में से हूं (जो अ़रबी है)। मुझे रूमियों ने मौसिल शहर से गिरिफ़्तार कर लिया था हालांकि मैं उस वक़्त मा'रूफ़ुन्नसब लड़का था। (इस सबब से मैं रूमी मश्हूर हो गया हालांकि नसब के ए'तिबार से अ़रबी हूं) बाक़ी रहा आप का तीसरा सुवाल कि (3) मैं खाने में इज़ाफ़ी ख़र्च करता हूं तो इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ येह है कि मैं ने ख़ुद रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : اِنَّ خِیَارَکُمْ مَنْ اَطْعَمَ الطَّعَامَ "या'नी तुम में से बेहतर वोह है जो लोगों को खाना खिलाता है।"[(1)]

औ़रत ने सहीह कहा और मर्द ने ख़त़ा की

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَا تَزِیْدُوْا فِیْ مُھُوْرِ النِّسَاءِ عَلٰی اَرْبَعِیْنَ اَوْقِیَّةً، فَمَنْ زَادَ اُلْقِیَتِ الزِّیَادَةُ فِیْ بَیْتِ الْمَالِ "या'नी औ़रतों का हक़्क़े महर चालीस उक़िय्या से ज़ियादा न करो वरना जो ज़ियादा होगा उसे बैतुल माल में जम्अ़ कर दिया जाएगा। एक औ़रत बोली : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं हालांकि कुरआने पाक में तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यूं इरशाद फ़रमाता है : और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी

1 ......مستدرک حاکم، خیر کم من اطعم الطعام، کتاب الادب، ج۵، ص۳۹۲، حدیث:۷۸۱۰۔

www.dawateislami.net

बदलना चाहो और उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِمْرَاَۃٌ اَصَابَتْ وَرَجُلٌ اَخْطَا "या'नी एक औ़रत ने सह़ीह़ कहा और एक मर्द ने ख़त़ा की।"(1)

काश ! हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन देखा गया है कि जब कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स की बात से इख़्तिलाफे़ राए करता है तो सामने वाले के दिल में उस के लिये अच्छे तअस्सुरात पैदा नहीं होते, बल्कि शैत़ान उसे त़रह़ त़रह़ के वस्वसों में डाल देता है कि फ़ुलां शख़्स ने मेरी बात को क़बूल नहीं किया बल्कि अपनी ही राए देना शुरूअ़ कर दी वग़ैरा वग़ैरा। बसा औक़ात येह तमाम वस्वसे अमराजे़ इस्यां या'नी ग़ीबत तोहमत और बद गुमानी वग़ैरा में मुब्तला कर देते हैं जो दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी का सबब हैं। **काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं।** अगर कोई हमारी बात से दुरुस्त इख़्तिलाफ़ करे तो फ़ौरन क़बूल कर लें। इस मुआ़मले में अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का येह मुबारक अन्दाज़ देखने में आया है कि अगर कोई आप की बात से इख़्तिलाफे़ राए करता है और बिलफ़र्ज़ वोह दुरुस्त राए रखता है तो आप फ़ौरन उसे क़बूल फ़रमा लेते हैं बल्कि उस का शुक्रिया अदा करने के साथ साथ उसे जज़ाए ख़ैर की दुआ़ओं से भी नवाज़ते हैं, अगर बिलफ़र्ज़ उस की राए दुरुस्त न हो तो अह़सन त़रीके़ से उस की ऐसी इस्लाह़ फ़रमाते हैं कि उसे इस बात का एह़सास ही नहीं होता कि मेरी बात को क़बूल नहीं किया गया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़िलाफे़ शरीअ़त आरा की मुमानअ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में अगर्चे तमाम लोगों को अपनी राए देने की मुकम्मल आज़ादी थी लेकिन येह आज़ादी इस बात से मशरूत़ थी कि कोई गुमराह कुन और शरीअ़त के ख़िलाफ़ राए पेश न करे, ब सूरते दीगर उस की सरज़निश की जाएगी। बा'ज़ औक़ात सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ लोगों की पकड़ भी फ़रमाया करते और ख़िलाफे़ शरअ़ राए पेश करने पर सज़ा भी देते थे। चुनान्चे,

1 ..... كنز العمال، كتاب النكاح، استئذان النكاح، الجزء: ١٦، ج٨، ص٢٢٦، حديث: ٤٥٧٩٢-

www.dawateislami.net

ऐ अल्लाह के दुश्मन ! मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा

एक बार सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम में ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमा रहे थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़म्दो सलात के बा'द इरशाद फ़रमाया : مَنْ يَهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ "या'नी जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुमराह करे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता।" एक ईसाई पादरी खड़ा हुवा और फ़ारसी ज़बान में कुछ कहा, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुतर्जिम से फ़रमाया कि इस की बात का तर्जमा कर के हमें बताओ, मुतर्जिम ने कहा कि हुज़ूर येह कह रहा है : اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِلُّ اَحَدًا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को गुमराह नहीं करता।" चूंकि उस का येह क़ौल तक़्दीरे इलाही के इन्कार पर मुश्तमिल और ख़िलाफ़े शरीअ़त था इस लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे दोबारा ऐसी बात कहने से मन्अ़ किया और इरशाद फ़रमाया :

كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ بَلِ اللّٰهُ خَلَقَكَ وَهُوَ اَضَلَّكَ وَهُوَ يُدْخِلُكَ النَّارَ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ وَلَوْلَا وَلْتُ عَقْدًا لَضَرَبْتُ عُنُقَكَ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! तू झूटा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे पैदा फ़रमाया और उसी ने तुझे गुमराह फ़रमाया और अगर वोह चाहेगा तो तुझे जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा और अगर मैं तुम (ईसाइयों) से अ़क़्दे मुसालह़त न कर चुका होता तो तुम्हारी गर्दन उड़ा देता।[1]

अपनी आख़िरत दाव पर मत लगाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तक़्दीर के मुआ़मले में बह़सो मुबाह़सा करना मन्अ़ है, तक़्दीर का इन्कार करने वालों को इस उम्मत का मजूस बताया गया है। यक़ीनन तक़्दीर के मुआ़मलात पर बह़स–मुबाह़सा करना अपनी आख़िरत दाव पर लगाना है, ख़ुद भी इस मुआ़मले में बह़स करने से बचिये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी बचाइये। चुनान्चे, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, स. 11 पर फ़रमाते हैं : "वोही (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) हर शै का ख़ालिक़ है, ज़वात हों ख़्वाह अफ़्आ़ल, सब उसी के पैदा किये हुवे हैं। ह़क़ीक़तन रोज़ी पहुंचाने वाला वोही है। मलाइका वग़ैरहुम वसाइल व वसाइत़ हैं। हर भलाई, बुराई उस ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था, अपने इ़ल्म से जाना और वोही लिख लिया तो येह नहीं कि जैसा उस ने लिख दिया

1 ......كنزالعمال، كتاب الايمان، فی الايمان بالقدر، الجزء: ١، ج ١، ص ١٧٨، حديث: ٥٤٣ ملتقطاً.

www.dawateislami.net

वैसा हम को करना पड़ता है, बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया। ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था, अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता वोह उस के लिये भलाई लिखता तो उस के इ़ल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया। तक़्दीर के इन्कार करने वालों को नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस उम्मत का मजूस बताया।"

क़ज़ा की तीन अक़्साम बयान करने के बा'द जि. 1, स. 15 पर फ़रमाते हैं : "क़ज़ा व क़द्र के मसाइल आ़म अ़क़्लों में नहीं आ सकते, इन में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करना सबबे हलाकत है, सिद्दीक़ो फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) इस मस्अले में बह़्स करने से मन्अ़ फ़रमाए गए। मा व शुमा (या'नी हम और आप) किस गिनती में ! इतना समझ लो कि अल्लाह तआ़ला ने आदमी को मिस्ले पथ्थर और दीगर जमादात के बे ह़िसो ह़रकत नहीं पैदा किया बल्कि इस को एक नौए़ इख़्तियार दिया है कि एक काम चाहे करे, चाहे न करे और इस के साथ ही अ़क़्ल भी दी है कि भले, बुरे, नफ़्अ़, नुक़्सान को पहचान सके और हर क़िस्म के सामान और अस्बाब मुहय्या कर दिये हैं कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं और इसी बिना पर उस पर मुवाख़ज़ा है। अपने आप को बिल्कुल मजबूर या बिल्कुल मुख़्तार समझना, दोनों गुमराही हैं। बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है, बल्कि हुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे, उसे मिन जानिबिल्लाह कहे और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआनी तावीलात पूछने वाले को सज़ा

एक बार मदीनए मुनव्वरा में सबीग़ नामी एक शख़्स आया जो क़ुरआने पाक की मुतशाबेह आयात के बारे में लोगों से त़रह़ त़रह़ के सुवालात करता था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे बुलाया और दो खजूर की छड़ियां उस के लिये तय्यार कर लीं। जैसे ही वोह आया तो आप ने उस से पूछा : "तुम कौन हो ?" उस ने कहा : "मैं अल्लाह का बन्दा सबीग़ हूं।" आप ने एक छड़ी उठाई और उसे मारना शुरूअ़ किया और फ़रमाया : "मैं अल्लाह का बन्दा उ़मर हूं।" आप उसे मुसलसल मारते रहे यहां तक कि उस का सर फट गया। उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अब बस कर दीजिये ! मेरे ज़ेहन में जो भी फ़ासिद ख़यालात थे वोह सब ज़ाइल हो गए हैं।"(1)

1 ......دارمی، باب من هاب الفتيا۔۔۔الخ، ج ۱، ص ٦٦، حديث: ۱۴۴۔

www.dawateislami.net

बेजा ए'तिराज़ात से एहतिराज़ कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अपने आप को बेजा ए'तिराज़ात से बचाना और सिर्फ़ ज़रूरी गुफ़्त्गू करना ही समझदारी है कि फ़ुज़ूल ए'तिराज़ भी शैतान की त़रफ़ से एक ज़बरदस्त वार है, क्यूंकि येह ख़बीस बा'ज़ औक़ात छोटे छोटे बेजा ए'तिराज़ात का आ़दी बना कर बा'ज़ ऐसे बड़े बड़े ए'तिराज़ात करवाना शुरूअ़ कर देता है जिस से दीनो ईमान ख़त़रे में पड़ जाता है, यक़ीनन समझदार वोही है जो अपने आप को फ़ुज़ूल ए'तिराज़ात से बचाए।

ऐ़बों को ढूंडती है ऐ़ब जू की नज़र
जो ख़ुश नज़र हैं वोह हुनरो कमाल देखते हैं

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौहीने मुस्लिम वाली आरा की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में हिजू (मज़म्मत) करने की मुमानअ़त फ़रमा दी थी क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़दीक एक मुसलमान की इ़ज़्ज़ते नफ़्स की बड़ी ही अहम्मिय्यत थी। येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बा'ज़ हिजू करने वाले शो'रा को सज़ा भी दी। चुनान्चे,

हिजू करने पर क़ैद कर दिया

मश्हूर वाक़िआ़ है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शाइ़र हुत़ीआ को ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िब्रिक़ान बिन बद्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुफ़्या या'नी ऐसे अल्फ़ाज़ों में हिजू करने के सबब क़ैद कर दिया जिन से ब ज़ाहिर हिजू समझ में न आती थी। उस शाइ़र ने यूं हिजू की थी :

دَعِ الْمَكَارِمَ لَا تَرحَلْ لِبُغْيَتِهَا ... وَاقْعُدْ فَإِنَّكَ اَنْتَ الطَّاعِمُ الْكَاسِي

तर्जमा : "अच्छे अख़्लाक़ की तलाश छोड़ दो, इस के लिये सफ़र इख़्तियार करने की कोई ज़रूरत नहीं, बस तुम घर में बैठे रहो, क्यूंकि तुम तो सिर्फ़ खाने वाले हो, कपड़ा पहनाने वाले हो।"

दर अस्ल इस शे'र में शाइ़र ने जिस शख़्स की हिजू की उसे औ़रतों से तशबीह दी है कि तुम्हें अपने घर से बाहर निकलने की कोई ज़रूरत नहीं है, न ही तुम्हें इस बात की ज़रूरत है कि किस पे क्या

www.dawateislami.net

गुज़र रही है जिस त़रह़ औ़रतें अपने घरों में बैठी रहती हैं, खाने खिलाने और पहनने पहनाने के सिवा उन का कोई काम नहीं होता, उन्हें इस बात से कोई ग़रज़ नहीं होती कि उन के घर के बाहर किसी के साथ क्या बीत रही है? (या'नी तुम भी उन औ़रतों की मिस्ल हो।)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह शे'र सुना तो फ़रमाया कि ब ज़ाहिर तो इस में कोई हिजू नहीं है, फिर आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ह़ुज़ूर इस में तो बहुत ही ज़बरदस्त हिजू है। आप ने उस शाइ़र को क़ैद कर दिया। फिर उस शाइ़र ने क़ैदख़ाने से आप से रह़्म की अपील की तो आप ने उसे बुलाया और फ़रमाया कि तुम क्यूं मुसलमानों की हिजू करते हो? उस ने जब अपने मआ़शी ह़ालात बयान किये तो आप की आंखों से आंसू जारी हो गए और उसे बैतुल माल से एक साल का राशन अ़त़ा फ़रमाया और येह भी फ़रमाया कि जब भी येह ख़त्म हो दोबारा लेने के लिये आ जाना।(1)

हर मुसलमान का एह़तिराम कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों की इ़ज़्ज़त व नामूस के बहुत बड़े मुह़ाफ़िज़ थे, आप को कोई भी ऐसा अ़मल गवारा न था जिस से किसी मुसलमान की इ़ज़्ज़त पर ह़र्फ़ आता हो। काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं, मुसलमानों की इ़ज़्ज़तों से खेलने के बजाए उन की ह़िफ़ाज़त करें, एह़तिरामे मुस्लिम का तक़ाज़ा येह है कि हर ह़ाल में हर मुसलमान के तमाम ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शरई़ किसी भी मुसलमान की दिल शिकनी न की जाए। हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी मुसलमान का दिल न दुखाया, न किसी पर त़न्ज़ किया, न किसी का मज़ाक़ उड़ाया, न किसी को धुतकारा, न कभी किसी की बे इ़ज़्ज़ती की बल्कि हर एक को सीने से लगाया।

लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा
जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

1 ......الاصابۃ، الحطیئۃ الشاعر، ج ۲، ص ۱۵۱، الرقم: ۱۹۹۶، ج ۱، ص ۴۷۱، الرقم: ۱۹۹۶، اسد الغابۃ، زبرقان بن بدر، ج ۲، ص ۲۹۲۔

www.dawateislami.net

सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं, आप دامت برکاتہم العالیہ भी मुसलमानों की इ़ज़्ज़त व नामूस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत फ़िक्र मन्द रहते हैं, आप ने अपने रिसाले "एह़तिरामे मुस्लिम" स. 28 पर कमो बेश 52 वोह मीठी मीठी सुन्नतें पेश फ़रमाई हैं जो बिल ख़ुसूस एह़तिरामे मुस्लिम के लिये हमारी बेहतरीन रहनुमा हैं। "**मुसलमान का एह़तिराम करें**" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से 18 सुन्नतें पेशे ख़िदमत हैं, आप भी इन सुन्नतों को पढ़िये और अपने दिल में एह़तिरामे मुस्लिम को बेदार कीजिये :

(1) सुल्त़ाने दो जहान صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم हर वक़्त अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते और सिर्फ़ काम ही की बात करते (2) आने वालों को मह़ब्बत देते, नफ़रत पैदा हो ऐसी कोई चीज़ न करते (3) लोगों को **अल्लाह** عزوجل के ख़ौफ़ की तल्क़ीन फ़रमाते (4) सह़ाबए किराम علیہم الرضوان की ख़बर गीरी फ़रमाते (5) लोगों की अच्छी बातों की अच्छाई बयान करते और उस की तक़्विय्यत फ़रमाते, बुरी चीज़ को बुरी बताते और उस पर अ़मल से रोकते (6) हर मुआ़मले में ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) से काम लेते (7) जहां कहीं तशरीफ़ ले जाते तो जहां जगह मिल जाती वहीं बैठ जाते और दूसरों को भी इस की तल्क़ीन फ़रमाते (8) अपने पास बैठने वालों के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखते (9) आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहने वाले हर फ़र्द को येही मह़सूस होता कि सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم मुझे सब से ज़ियादा चाहते हैं। (10) आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की सख़ावत व ख़ुश ख़ुल्क़ी हर किसी के लिये आ़म थी (11) आप صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم की मजलिस में किसी से भूल हो जाती तो न उस को शोहरत दी जाती न ही उस का मज़ाक़ उड़ाया जाता (12) निगाहें ह़या से झुकी रहतीं (13) अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से बदला न लेते (14) बुराई का बदला बुराई से देने के बजाए मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते (15) न किसी की बात को काटते न ही बीच में बोलते (16) सख़्त गुफ़्त्गू न फ़रमाते (17) किसी का ऐ़ब तलाश न करते (18) बात चीत करते वक़्त मुख़ात़ब के चेहरे पर निगाहें न गाड़ते।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अह़कामे शरइय्या की पाबन्दी कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के अ़ह्दे मुबारका में तमाम लोगों को हर त़रह़ की मुकम्मल आज़ादी थी, इस लिये आप के दौर में मुस्लिम मुआ़शरा तरक़्क़ी व उ़रूज पर रहा, मगर यहां एक बात की वज़ाह़त कर देना निहायत ही ज़रूरी है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हर त़रह़ की आज़ादी देने के साथ साथ लोगों को अह़कामे

www.dawateislami.net

शरइय्या पर अ़मल करने का मौक़अ़ की मुनासबत से सख़्ती के साथ हुक्म देते, क्यूंकि मुसलमानों का अह़कामे शरइय्या पर अ़मल न करना उन के लिये दुन्या व आख़िरत दोनों की तबाही का बाइ़स है, अह़कामे शरइय्या पर अ़मल कीजिये कि येह ह़क़ीक़ी आज़ादी या'नी जहन्नम से आज़ादी का सबब है। ज़िन्दगी का मक़्सद समझने, उसे ह़ासिल करने, मौत की तय्यारी का ज़ेह्न बनाने और शरीअ़त के दाइरे में रहते हुवे दुन्या के साथ साथ अपनी आख़िरत संवारने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ लाखों लोगों ने दा'वते इस्लामी से वाबस्तगी इख़्तियार की तो उन की दुन्या भी संवर गई, आख़िरत भी संवर गई। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

शराबी आया और मुअज़्ज़िन बन गया

महाराष्ट्र (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं मरज़े इस्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा दरजे तक मुब्तला हो चुका था। दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती रात को उसी से مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शराब ख़रीद कर ख़ूब अ़य्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां बकता और वालिदैन व अह्ले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता इस के इ़लावा मैं परले दरजे का जुवारी व बद तरीन बे नमाज़ी भी था। इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ (ضا۔ئع) होते रहे, आख़िरे कार मेरे मुक़द्दर का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरग़ीब दी, उन के मीठे बोल ने कुछ ऐसा रंग जमाया कि मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रसाइल भी सुनने को मिले। जिस की येह बरकत ह़ासिल हुई कि मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जुवारी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने (या'नी फ़ज्र की नमाज़ के लिये मुसलमानों को जगाने) और दूसरों को मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी इनफ़िरादी कोशिश से (ता दमे बयान) तीस इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं और इस वक़्त मैं एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन हूं और मदनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

छोड़ें मे नोशियां मत बकें गालियां
आएं तौबा करें क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ आ जुवारी तू आ
छूटें बद आ़दतें क़ाफ़िले में चलो
होगा लुत्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ़
मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बे नमाज़ी, शराबी, जुवारी, मां बाप का दिल दुखाने और पड़ोसियों को सताने, गाली गलोच करने वाला, अल्लहड़ (اَل ـ لْھڑ) नौजवान मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की "इनफ़िरादी कोशिश" के नतीजे में मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना, वहां आ़शिक़ाने रसूल की सोहबतों में सुन्नतों भरे मदनी रसाइल सुनने और ताइब हो कर सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने वाला, सदाए मदीना लगाने वाला, मस्जिद में अज़ानें दे कर नमाज़ों के लिये बुलाने वाला बना और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर दूसरों को बनाने वाला बन गया। ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! याद रखिये ! नमाज़ हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है, नमाज़ अदा करने वाला जन्नत का मुस्तहिक़ है जब कि बिला उ़ज़्र एक वक़्त की नमाज़ भी जो क़ज़ा करने वाला है, वोह हज़ारों साल अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। शराबी व जुवारी की दोनों जहानों में ज़िल्लतो ख़्वारी और दोज़ख़ की ख़ौफ़नाक सज़ाओं की ह़क़दारी है, मां बाप को बुरा भला कहने वालों को सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज इस ह़ाल में मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि वोह आग की शाख़ों से लटके हुवे थे। पड़ोसी के बहुत सारे ह़ुक़ूक़ हैं ! फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "वोह जन्नत में नहीं जाएगा, जिस का पड़ोसी उस की आफ़तों से अम्न में नहीं है।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....नेकी की दा'वत, स. 48।

www.dawateislami.net

सातवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये...............

....अ़द्लो इन्साफ़ करने पर तीन आयाते मुबारका, अ़द्लो इन्साफ़ न करने पर तीन आयाते मुबारका

....अ़द्लो इन्साफ़ पर तीन अह़ादीसे मुबारका, फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़द्लो इन्साफ़

....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के तीन फ़रामीने मुबारका, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के "निज़ामे अ़द्लिया" की तफ़्सील

....निज़ामे अ़द्लिया के उसूलो ज़वाबित़, निज़ामे अ़द्लिया के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़

....निज़ामे अ़द्लिया के उ़मूमी उसूलो ज़वाबित़, अ़ह्दे फ़ारूक़ी के अ़दालती क़ाज़ी व जज

....अ़दालती जजों की फ़ारूक़ी तरबिय्यत, फ़ारूक़ी क़ाज़ियों के मुख़्तलिफ़ औसाफ़

....क़ाज़ियों के फ़राइज़े मन्सबी, फ़ारूक़े आ'ज़म ने रिश्वत का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिहादी अम्र, अ़दालती जजों का एह़तिसाब और उन की मा'ज़ूली

....निज़ामे अ़द्लिया का अस्ल मक़्सद, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में अ़वाम की क़ानून से वाक़िफ़िय्यत

....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का फ़ैसला करने का अन्दाज़, आप के चन्द तारीख़ी फ़ैसले

....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की जराइम के ख़िलाफ़ क़ानूनी सज़ाएं, आप से मन्सूब ग़लत़ फ़ैसले

.....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म अ़द्लो इन्साफ़ का नमूना थे। फ़ारूक़ी तमग़ए इम्तियाज़ ह़ासिल करने वाले क़ाज़ी

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी के ख़ुसूसी जज, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के मुआ़विने ख़ुसूसी फ़िल क़ज़ा

....

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी इस्लामी हुकूमत का क़ियाम अ़मल में लाया जाता है तो उस के तह्त कई एक अ़ज़ीम मक़ासिद होते हैं, उन अहम मक़ासिद में से एक अ़ज़ीम मक़्सद येह भी है कि उस हुकूमत को ऐसी बुन्यादों पर क़ाइम किया जाए जिस से एक मुकम्मल इस्लामी मुआ़शरा वुजूद में आ सके। हर शख़्स अपने दाइरे में रहते हुवे अपनी जान, माल, आल औलाद वग़ैरा दीगर तमाम चीज़ों के बारे में क़ल्बी तौ़र पर मुत़्मइन हो कर ज़िन्दगी गुज़ार सके। इस्लामी मुआ़शरे के क़ियाम की एक अहम बुन्याद अ़द्लो इन्साफ़ का नफ़ाज़ भी है। जिस हुकूमत में अ़द्लो इन्साफ़ का नफ़ाज़ हो वोही हुकूमत कामयाबी के साथ अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ गामज़न रहती है। जो ह़ाकिम अ़द्लो इन्साफ़ के नफ़ाज़ के लिये कोशिशें करता है वोही अपनी रिआ़या के दिल में जगह बनाता है। तारीख़ गवाह है कि ज़ालिमो जाबिर हुक्मरानों का अन्जाम बहुत ही बुरा हुवा। आ़दिलो मुन्सिफ़ हुक्मरानों को आज भी ख़िराजे अ़क़ीदत पेश किया जाता है, लोग न सिर्फ़ उन को याद करते बल्कि उन के निज़ाम को सराहते और उस की इत्तिबाअ़ की कोशिश करते हैं। जब कि ज़ालिमो जाबिर हुक्मरानों को न तो कोई अच्छे अल्फ़ाज़ों से याद करता है और न ही उन की इत्तिबाअ़ की कोशिश की जाती है।

अ़ह्दे रिसालत से क़ब्ल नाम निहाद अ़द्लिया का निज़ाम

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ह्द और बिअ़्सत से क़ब्ल जज़ीरए अ़रब में बा क़ाइदा और मुनज़्ज़म कोई हुकूमत नहीं थी, अलबत्ता क़बाइली और ख़ानदानी त़र्ज़ की कई बड़ी बड़ी सल्त़नतें क़ाइम थीं, उन में भी एक नाम निहाद अ़द्लिया का निज़ाम क़ाइम था, मुख़्तलिफ़ क़ौमों ने अपने अपने उसूल वज़्अ़ किये हुवे थे, वोह अपने सारे इन्तिज़ामी उमूर अ़लाक़ाई और ख़ानदानी रस्मो रवाज के मुत़ाबिक़ निमटाते थे। उ़मूमन तीन त़रीक़े से किसी मुआ़मले का फ़ैसला किया जाता :

(1) **पंच के ज़रीए :** एक कमेटी मुक़र्रर होती जो किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करती और इस का फ़ैसला ह़तमी समझा जाता।

(2) **काहिन के ज़रीए :** शैत़ानी मुआ़वनत से मज़हबी लोग किसी मुआ़मले का फ़ैसला कर देते और उसे चेलेन्ज करना मुमकिन न होता।

(3) **तह़कीम के ज़रीए :** बा'ज़ मो'तबर लोग ख़ानदानी व मुआ़शरती झगड़ों में सालिसी का किरदार अदा करते और फ़रीक़ैन उन ही के फ़ैसले को ह़तमी समझते। अलबत्ता तमाम त़रीक़ों में

www.dawateislami.net

तक़रीबन एक बात मुश्तरक थी कि उन में अ़वामो ख़वास और अमीरो ग़रीब के दरमियान मुसावात का दूर दूर तक कोई नामो निशान नहीं था। दौलत मन्दों के लिये अ़द्लिया का निज़ाम कुछ और था, जब कि ग़रीब अ़वाम के लिये निज़ाम कुछ और। किसी रईस ज़ादे के मुआ़मले में जब फ़ैसला किया जाता तो उस के मन्सब को मल्हूज़े ख़ातिर रखते हुवे इस अन्दाज़ में फ़ैसला किया जाता जिस से उस की शख़्सिय्यत किसी त़रह़ मजरूह़ न होती, जब कि किसी ग़ुलाम ज़ादे के मुआ़मले में फ़ैसला किया जाता तो इस अन्दाज़ में किया जाता कि ख़ुद इन्सानिय्यत भी उस फ़ैसले से शर्मा जाती। कहने को तो वोह **"निज़ामे अ़द्लिया"** था लेकिन दर ह़क़ीक़त **"ज़ुल्मो सितम"** का एक घिनावना बाज़ार गर्म था। ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी ख़ानदानी व मुआ़शरती अ़द्लो इन्साफ़ की आड़ में किये जाने वाले ज़ुल्मो सितम के ख़िलाफ़ पैग़ामे अ़द्लो इन्साफ़ ले कर मबऊ़स हुवे और सिसकती हुई इन्सानिय्यत को ज़ुल्मो सितम से आज़ाद करवा कर पूरे आ़लम में अ़द्लो इन्साफ़ का डंका बजाया। क़ुरआनो अह़ादीस में अ़द्लो इन्साफ़ का बिल्कुल वाज़ेह़ बयान मौजूद है। चुनान्चे,

अ़द्लो इन्साफ़ करने पर तीन आयाते मुबारका

......(1) ﴿اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ
تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾﴾ (پ۵، النساء:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो बेशक अल्लाह तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीह़त फ़रमाता है बेशक अल्लाह सुनता देखता है।"

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "ह़ाकिम को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे : (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे दूसरे को भी दे। (2) निशस्त दोनों को एक सी दे। (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे। (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे। (5) फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए।"

......(2) ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ
قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸﴾﴾ (پ۶، المائدۃ:۸)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो अल्लाह के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ गवाही देते और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करो वोह परहेज़गारी से ज़ियादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।"

(3)......﴿اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰى وَ یَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ وَ الْبَغْیِ ۚ یَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝۹۰﴾ (پ۱۴، النحل:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सर्कशी से तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो।"

अ़द्लो इन्साफ़ न करने पर तीन आयाते मुबारका

तीन आयात के बा'द फ़रीक़ैन में फ़ैसला

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : مَارَاَیْتُ مَنْ قَضٰى بَیْنَ اِثْنَیْنِ بَعْدَ هٰؤُلَاءِ الثَّلَاثَةِ "या'नी इन (दर्जे ज़ैल) तीन आयाते मुबारका के नुज़ूल के बा'द मैं ने किसी को न देखा कि उस ने दो आदमियों के दरमियान फ़ैसला किया हो।"

(1)......﴿وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝۴۴﴾ (پ۶، المائدہ:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे वोही लोग काफ़िर हैं।"

(2)......﴿وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝۴۵﴾ (پ۶، المائدہ:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं।"

(3)......﴿وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝۴۷﴾ (پ۶، المائدہ:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं।"[1]

अ़द्लो इन्साफ़ पर तीन अह़ादीसे मुबारका

(1)......"रोज़ाना सूरज निकलते ही इन्सान के हर जोड़ पर सदक़ा है और लोगों के माबैन इन्साफ़ करना भी सदक़ा है।"[2]

1 ......سنن سعید بن منصور، تفسیر سورۃ المائدۃ، ج۴، ص۱۴۸۸، حدیث:۷۵۲۔

2 ......بخاری، کتاب الصلح، باب فضل الاصلاح ---الخ، ج۲، ص۲۱۵، حدیث:۲۷۰۷ مختصراً۔

www.dawateislami.net

(2)......''जिस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इलावा कोई साया न होगा उस दिन चार अश्ख़ास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे : ''(1) वोह जवान जिस ने अपनी जवानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये वक़्फ़ कर दी। (2) वोह शख़्स जो अपने दाएं हाथ से इस त़रह़ छुपा कर सदक़ा करे कि बाएं हाथ को ख़बर न हो। (3) वोह ताजिर जो ख़रीदो फ़रोख़्त में ह़क़ का मुआ़मला करता हो और (4) वोह शख़्स जो लोगों पर ह़ाकिम हो और मरते दम तक अ़द्लो इन्साफ़ से काम ले।''[1]

(3)......''इन्साफ़ करने वाले बादशाह बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में अ़र्श के दाईं जानिब नूर के मिम्बरों पर होंगे और येह वोह होंगे जो अपनी रिआ़या और अहलो इयाल के दरमियान फ़ैसला करते वक़्त अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते थे।''[2]

अ़द्लो इन्साफ़ के वुजूब पर इजमाअ़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़दीक ''अ़द्ल'' से मुराद इस्लाम का वोह आ़दिलाना निज़ाम था जो किसी इस्लामी मुआ़शरे और इस्लामी हुकूमत के क़ाइम करने में बुन्यादी सुतून की ह़ैसिय्यत रखता हो। ऐसा मुआ़शरा जिस की क़ियादत ज़ालिम हाथों में हो और वोह अ़द्ल से ना आश्ना हो उसे इस्लामी मुआ़शरा क़त़अ़न नहीं कहा जा सकता। क्यूंकि रिआ़या के दरमियान इनफ़िरादी या इजतिमाई और मुल्की सत़ह़ पर आ़दिलाना निज़ाम क़ाइम करना कोई नफ़्ली काम नहीं है जिसे ह़ाकिमे वक़्त या अमीरे वक़्त के मिज़ाज और ख़्वाहिश पर छोड़ दिया जाए बल्कि लोगों में इस का क़ियाम इस्लामी नुक़्तए नज़र से इस्लाम के मुक़द्दस और अहम तरीन फ़राइज़ में से है और उम्मते मुस्लिमा का इस बात पर इजमाअ़ है कि ''अ़द्लो इन्साफ़'' वाजिब है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : اَجْمَعُوْا عَلٰی اَنَّ مَنْ كَانَ حَاكِمًا وَجَبَ عَلَيْهِ اَنْ يَحْكُمَ بِالْعَدْلِ قَالَ تَعَالٰی وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ''या'नी ह़ाकिमे वक़्त पर वाजिब है कि वोह लोगों के माबैन इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करे और इस बात पर उम्मते मुस्लिमा का इजमाअ़ है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया कि जब तुम लोगों के दरमियान फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो।''[3]

---

1 ......الکامل فی ضعفاء الرجال، ج۸، ص۲۰۸، حدیث:۲۰۲۴۔

2 ......مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضیلۃ الامیر العادل۔۔۔الخ، ص۱۰۱۵، حدیث:۱۸۔

3 ......تفسیر کبیر، پ۵، النساء، تحت الآیۃ:۵۸، ج۴، ص۱۱۰۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म का अ़द्लो इन्साफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में कुरआनो सुन्नत के इसी निज़ामे अ़द्लो इन्साफ़ को पूरी सल्त़नत में इस त़रह़ राइज फ़रमाया कि हर छोटा बड़ा, अमीर व ग़रीब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी जान, माल, आल औलाद सब का मुह़ाफ़िज़ समझने पर मजबूर हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निज़ामे अ़द्लो इन्साफ़ की पुख़्तगी का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द आप ने जो पहला ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया वोह भी आप के अ़द्लो इन्साफ़ की भरपूर अ़क्कासी करता है। चुनान्चे,

फ़ारूके़ आ'ज़म का पहला ख़ुत़बा उसूले अ़द्ल पर मुश्तमिल था

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया :

✿......اِنَّهٗ لَمْ يَبْلُغْ مَنْزِلَةَ ذِيْ حَقٍّ اَنْ يُطَاعَ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ "कोई भी शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त कर के ह़क़दार के ह़क़ तक नहीं पहुंच सकता।"

✿......اَلَا وَاِنِّيْ اَنْزَلْتُ نَفْسِيْ مِنْ مَالِ اللّٰهِ بِمَنْزِلَةِ وَلِيِّ الْيَتِيْمِ "और ग़ौर से सुन लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल में मेरी हैसिय्यत यतीम के सर परस्त की त़रह़ है।"

✿......اِنِ اسْتَغْنَيْتُ عَفَفْتُ وَاِنِ افْتَقَرْتُ اَكَلْتُ بِالْمَعْرُوْفِ "अगर मैं मालदार हुवा तो अपने दामन को बैतुल माल से बचाए रखूंगा और अगर मुझे ह़ाजत हुई तो जाइज़ त़रीक़े से खाऊंगा।"[1]

"अ़द्ल" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से अ़द्ल पर फ़ारूके़ आ'ज़म के तीन फ़रामीने मुबारका

अ़द्लो इन्साफ़ न करूं तो मर जाना बेहतर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ फ़रमाया करते थे :

---

1 ......کنز العمال، کتاب المواعظ ۔۔۔ الخ، خطب عمر ومواعظه، الجزء: ١٦، ج ٨، ص ٦٤، حديث: ٤٤٢٠٧ مختصرا۔

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنِّي اُبَالِيْ اِذَا قَعَدَ الْخَصْمَانِ بَيْنَ يَدَيَّ عَلَيَّ مِنْ حَالِ الْحَقِّ مِنْ قَرِيْبٍ اَوْ بَعِيْدٍ فَلَا تُمْهِلْنِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जब दो शख़्स अपना झगड़ा ले कर अ़द्लो इन्साफ़ के लिये मेरे सामने ह़ाज़िर हों, अगर मैं उस वक़्त ह़क़ से अ़दूल करने वाले की कुछ परवाह करूं ख़्वाह वोह मेरा कोई अपना क़रीबी अ़ज़ीज़ रिश्तेदार हो या कोई ग़ैर हो तो फिर मुझे इस दुन्या में इतनी देर भी न रखना जितनी देर आंख झपकने में लगती है।"(1)

मैं कितना बुरा ह़ाकिम होऊं अगर .....!

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

بِئْسَ الْوَالِيْ اَنَا اِنْ اَكَلْتُ طَيِّبَهَا وَاَطْعَمْتُ النَّاسَ كَرَادِيْسَهَا

"या'नी मैं कितना बुरा ह़ाकिम होऊं अगर मैं ख़ुद तो अच्छा खाऊं और अपनी रिआ़या को रूखा सूखा खिलाऊं।"(2)

बकरी का बच्चा भूक से मर जाए तो मुझ से सुवाल होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे :

لَوْ مَاتَ جِدْيٌ بِطَفِّ الْفُرَاتِ لَخَشِيْتُ اَنْ يُطَالِبَ بِهِ اللّٰهُ عُمَرَ

"या'नी अगर दरयाए फ़ुरात के किनारे बकरी का एक छोटा बच्चा भी (भूक से) मर जाए तो मुझे डर है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से उस के मुतअ़ल्लिक़ भी बाज़पुर्स फ़रमाएगा।"(3)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी के "निज़ामे अ़द्लिया" की तफ़्सील

फ़ारूके़ आ'ज़म ने "अ़द्लिया" को "इन्तिज़ामिया" से अलग किया

समाजी और मुआ़शरती ज़िन्दगी के लिये बेह़द ज़रूरी है कि अ़द्लिया के निज़ाम को दीगर इन्तिज़ामी उमूर से जुदा रखा जाए। साबिक़ा क़ौमों और अ़ह्दे फ़ारूक़ी के बा'द के अ़दालती निज़ामों में एक ख़राबी येह भी थी कि वोह दीगर इन्तिज़ामी उमूर से जुदा न थे, एक अ़र्से तक येही मुआ़मला

(1) شعب الایمان، باب فی طاعة اولی الامر، فصل فی نصیحة الولاة ووعظهم، ج ٦، ص ٣٤، حدیث: ٧٤٢١۔

(2) طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ٣، ص ٢٣٧ ملتقطاً۔

(3) صفة الصفوة، ذکر خوفه وبکائه۔۔۔الخ، ج ١، ص ١٤٨۔

www.dawateislami.net

चलता रहा और सालों बा'द उन्हें येह बात समझ में आई कि इन दोनों को अ़लाहि़दा किया जाए तो ही अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम मुमकिन है वरना नहीं। अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी और अ़ह्दे फ़ारूक़ी के इब्तिदाई दौर में भी येह दोनों जुदा न थे इस की सब से अहम वज्ह येह थी कि उस वक़्त मुआ़शरती व हु़कूमती शो'बाजात निहायत ही सादा ह़ालत में थे और मुख़्तलिफ़ फ़ुतूह़ात का सिलसिला जारी होने की वज्ह से मुल्की तक़्सीम और मोह़कमों का क़ियाम बा क़ाइदगी से अ़मल में नहीं आया था। लेकिन जब अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ात का दाइरा वसीअ़ हुवा और सल्त़नते इस्लामिया दूर दराज़ अ़लाक़ों तक फैल गई तो उसे मुख़्तलिफ़ सूबों और इज़्लाअ़ में तक़्सीम कर दिया गया, गवर्नरों के इख़्तियारात को वुस्अ़त दे दी गई, इन्तिज़ामिया की साख़्त मज़बूत़ हो गई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से येह बात जान ली कि अब अ़द्लिया और इन्तिज़ामिया दोनों को अ़लाहि़दा करना निहायत ज़रूरी है लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ अ़र्से बा'द ही इन दोनों को जुदा कर दिया।

फ़ारूके़ आ'ज़म ने निज़ामे अ़द्लिया को बिल्कुल वाज़ेह़ कर दिया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह खुसूसिय्यत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के बा'द लोगों के सामने निज़ामे अ़द्लिया को इस अन्दाज़ में नाफ़िज़ फ़रमाया जिस से लोगों के दिलों में अपनी जान, माल आल औलाद वग़ैरा का तह़फ़्फ़ुज़ यक़ीनी हो गया। विसाल से क़ब्ल भी इसी का दर्स इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنِّي قَدْ تَرَكْتُ فِيْكُمْ اِثْنَيْنِ لَنْ تَبْرَحُوْا بِخَيْرٍ مَّا لَزِمْتُمُوْهَا الْعَدْلُ فِي الْحُكْمِ

وَالْعَدْلُ فِي الْقِسْمِ وَاِنِّيْ قَدْ تَرَكْتُكُمْ عَلٰى مِثْلِ مَخْرَفَةِ النَّعَمِ اِلَّا اَنْ يَتَعَوَّجَ قَوْمٌ فَيُعَوَّجُ بِهِمْ

''या'नी मैं तुम्हारे दरमियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं जब तक तुम इन को ख़ुद पर लाज़िम न कर लो हरगिज़ भलाई न पाओगे : (1) फ़ैसला करने में अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेना (2) और तक़्सीम करने में अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेना और बेशक मैं तुम्हें एक वाज़ेह़ और सीधे रास्ते पर छोड़ कर जा रहा हूं, मगर येह कि क़ौम टेढ़ी हुई तो वोह रास्ता भी उन के सबब टेढ़ा हो जाएगा।''(1)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، ماجاء فی خلافۃ عمر بن الخطاب، ج۸، ص ۵۷۹، حدیث: ۱۱۔

سنن کبری، کتاب آداب القضاء، باب انصاف القاضی فی الحکم---الخ، ج ۱۰، ص ۲۲۷، حدیث: ۲۰۴۵۳۔

www.dawateislami.net

निज़ामे अ़द्लिया के उसूलो ज़वाबित़

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां एक बात की वज़ाहत बहुत ज़रूरी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम करने के लिये कोई नया क़ानून नहीं बनाया था बल्कि कुरआनो सुन्नत के बयान कर्दा पहले से मौजूद क़ानून को मुस्तह्कम फ़रमाया था। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने अ़दालती जजों को इसी बात की सख़्ती से हिदायत फ़रमाया करते थे कि वोह अव्वलन कुरआनो सुन्नत से ही फ़ैसला करें, ब सूरते दीगर इजमाअ़ और क़ियास से फ़ैसला करें। चुनान्चे,

निज़ामे अ़द्लिया के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़

अ़ह्दे फ़ारूक़ी के एक मश्हूर अ़दालती जज ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

❀......اِذَا جَاءَکَ شَيْءٌ فِي كِتَابِ اللّٰهِ فَاقْضِ بِهِ وَلَا يَلْفِتَنَّكَ عَنْهُ الرِّجَالُ "या'नी जब तुम्हारे पास कोई ऐसा मुआ़मला आए जिस का फ़ैसला तुम्हें कुरआन में मिल जाए तो फिर कुरआन ही से फ़ैसला करो और एह़तियात़ से काम लो कि लोग कहीं तुम्हें इस से हटा न दें।"

❀......فَاِنْ جَاءَکَ اَمْرٌ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللّٰهِ فَانْظُرْ سُنَّةَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاقْضِ بِهَا "और अगर तुम्हें कुरआन में इस का फ़ैसला न मिले तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत या'नी अह़ादीसे मुबारका के ज़रीए़ इस का फ़ैसला करो।"

❀......فَاِنْ جَاءَکَ مَا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللّٰهِ وَلَيْسَ فِيهِ سُنَّةٌ مِنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَانْظُرْ مَا اجْتَمَعَ النَّاسُ عَلَيْهِ فَخُذْ بِهِ "और अगर ऐसा मुआ़मला हो जिस का फ़ैसला न तो कुरआन में मिले और न ही अह़ादीस में तो फिर लोगों के इजमाअ़ पर नज़र करो और इसी के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो।"

❀......فَاِنْ جَاءَکَ مَا لَيْسَ فِي كِتَابِ اللّٰهِ وَلَمْ يَكُنْ فِيهِ سُنَّةٌ مِنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَمْ يَتَكَلَّمْ فِيهِ اَحَدٌ قَبْلَكَ فَاخْتَرْ اَيَّ الْاَمْرَيْنِ شِئْتَ "और अगर ऐसा मुआ़मला हो कि जिस का

www.dawateislami.net

फ़ैसला न तो कुरआन में मिले न ही अहादीस में मिले, न ही तुम से पहले किसी ने कलाम किया हो तो फिर दो मुआमलों में से जिसे चाहे इख़्तियार कर लो।"

اِنْ شِئْتَ اَنْ تَجْتَهِدَ بِرَاْیِکَ وَتُقَدِّمَ فَتَقَدَّمْ وَاِنْ شِئْتَ اَنْ تَتَاَخَّرَ فَتَاَخَّرْ وَلَا اَرَی التَّاَخُّرَ اِلَّا خَیْرًا لَّکَ......

"अगर अपनी राए के साथ इजतिहाद करना चाहो और इसे मुक़द्दम करना चाहो तो मुक़द्दम कर दो और अगर इसे मुअख़्ख़र करना चाहो तो मुअख़्ख़र कर दो मैं येह समझता हूं कि मुअख़्ख़र करना तुम्हारे लिये ज़ियादा बेहतर है।"(1)

निज़ामे अ़द्लिया के उ़मूमी उसूलो ज़वाबित़

सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब

अ़द्लिया के निज़ाम को जुदा करने के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़द्लो इन्साफ़ के उ़मूमी उसूलो ज़वाबित़ भी मुक़र्रर फ़रमाए। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना किया जिस में अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम के उ़मूमी उसूलों को निहायत ही ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान फ़रमाया, जिस का मज़मून कुछ यूं है :

اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّ الْقَضَاءَ فَرِیْضَةٌ مُحْكَمَةٌ وَسُنَّةٌ مُتَّبَعَةٌ...... "या'नी ह़म्दो सलात के बा'द (मैं येह कहता हूं कि) लोगों के दरमियान किसी मुआ़मले में फ़ैसला करना एक अहम व पुख़्ता फ़र्ज़ और क़ाबिले अ़मल त़रीक़ा है।"

فَافْهَمْ اِذَا اُدْلِیَ اِلَیْکَ بِحُجَّةٍ وَانْفُذِ الْحَقَّ اِذَا وَضَحَ فَاِنَّهٗ لَا یَنْفَعُ تَكَلُّمٌ بِحَقٍّ لَا نَفَاذَ لَهٗ...... "पस इस बात को भी अच्छी त़रह़ समझ लो कि जब तुम्हारे पास कोई ऐसी वाज़ेह़ दलील आ जाए जिस के ज़रीए़ फ़ैसला करना मुमकिन हो तो फ़िलफ़ौर उसे नाफ़िज़ कर दो कि अ़मली नफ़ाज़ के बिग़ैर फ़क़त़ ह़क़ बात कहने का कोई फ़ाइदा नहीं।"

وَاٰسِ بَیْنَ النَّاسِ فِیْ وَجْهِکَ وَمَجْلِسِکَ وَعَدْلِکَ حَتّٰی لَا یَیْاَسَ الضَّعِیْفُ مِنْ عَدْلِکَ......

وَلَا یَطْمَعُ الشَّرِیْفُ فِیْ حَیْفِکَ "अपने चेहरे, बैठने की जगह और अपने फ़ैसले से लोगों (या'नी फ़रीक़ैन) के माबैन मुसावात क़ाइम रखो ताकि कोई कमज़ोर शख़्स तुम्हारे अ़द्ल से मायूस न हो और कोई मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत तुम्हारे ज़ुल्म की त़म्अ़ न करे।

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب البیوع والاقضیہ، باب فی القاضی۔۔۔الخ، ج۵، ص۵۸۳، حدیث: ۳۔

www.dawateislami.net

اَلْبَيِّنَةُ عَلَى مَنِ ادَّعٰى وَالْيَمِيْنُ عَلٰى مَنْ اَنْكَرَ...... "गवाह लाना **मुद्दई** या'नी दा'वा करने वाले की ज़िम्मेदारी है और क़सम उठाना **मुन्किर** या'नी इन्कार करने वाले की ज़िम्मेदारी है।"

وَالصُّلْحُ جَائِزٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ اِلَّا صُلْحًا اَحَلَّ حَرَامًا اَوْ حَرَّمَ حَلَالًا...... "और मुसलमानों के माबैन वोह सुल्ह़ कराना जाइज़ है जो शरई हो या'नी जिस के ज़रीए़ न तो ह़राम को ह़लाल करना पाया जाए और न ही ह़लाल को ह़राम करना पाया जाए।"

لَا يَمْنَعُكَ قَضَاءٌ قَضَيْتَهُ بِالْاَمْسِ رَاجَعْتَ فِيْهِ نَفْسَكَ وَهُدِيْتَ فِيْهِ لِرُشْدِكَ اَنْ تُرَاجِعَ الْحَقَّ...... "ह़क़ बात को क़बूल करने में तेरा कल का वोह फ़ैसला आड़े न आए जिस में तेरा नफ़्स रुजूअ़ कर चुका हो और तुझे दुरुस्त रहनुमाई मिल चुकी हो।"

فَاِنَّ الْحَقَّ قَدِيْمٌ وَمُرَاجَعَةُ الْحَقِّ خَيْرٌ مِنَ التَّمَادِيْ فِي الْبَاطِلِ...... "क्यूंकि ह़क़ क़दीम है और ह़क़ बात की त़रफ़ रुजूअ़ करना बात़िल में सर्कशी दिखाने से बेहतर है।"

اَلْفَهْمَ اَلْفَهْمَ فِيْمَا يَخْتَلِجُ فِيْ صَدْرِكَ مِمَّا لَمْ يَبْلُغْكَ فِي الْكِتَابِ اَوِ السُّنَّةِ اِعْرِفِ...... الْاَمْثَالَ وَالْاَشْبَاهَ ثُمَّ قِسِ الْاُمُوْرَ عِنْدَ ذٰلِكَ فَاعْمَدْ اِلٰى اَحَبِّهَا عِنْدَ اللهِ وَاَشْبَهِهَا بِالْحَقِّ فِيْمَا تَرٰى "इस बात को ख़ूब अच्छी त़रह़ समझ लो कि ऐसी बात जो तुम्हारे दिल में खटके और उस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन या सुन्नत से कोई राहनुमाई न मिल सके तो उस वक़्त उस मुआ़मले की मुख़्तलिफ़ मिसालों और नज़ीरों की पहचान करो फिर उस मुआ़मले को मुख़्तलिफ़ उमूर पर क़ियास करो, पस तुम्हें जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज्दीक ज़ियादा पसन्दीदा मा'लूम हो और ह़क़ के साथ ज़ियादा मुशाबेह लगे उसी के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करो।"

وَاجْعَلْ لِمَنِ ادَّعٰى بَيِّنَةً اَمَدًا يَنْتَهِيْ اِلَيْهِ فَاِنْ اَحْضَرَ بَيِّنَةً اَخَذَ بِحَقِّهِ وَاِلَّا وَجَّهْتَ الْقَضَاءَ...... عَلَيْهِ فَاِنَّ ذٰلِكَ اَجْلٰى لِلْعَمٰى وَاَبْلَغُ فِي الْعُذْرِ "या'नी गवाह का दा'वा करने वाले को गवाह पेश करने की मोहलत दो, पस अगर वोह गवाह पेश कर दे तो उस के ह़क़ में फ़ैसला कर दो वरना उस के ख़िलाफ़ फ़ैसला दे दो क्यूंकि येही त़रीक़ा अन्धे के लिये मुआ़मले को ज़ियादा रौशन और उ़ज़्र बयान करने के लिये ज़ियादा वाज़ेह़ है।"

اَلْمُسْلِمُوْنَ عُدُوْلٌ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا مَجْلُوْدٌ فِيْ حَدٍّ اَوْ مُجَرَّبٌ فِيْ شَهَادَةِ زُوْرٍ اَوْ ظَنِيْنٌ فِيْ وَلَاءٍ اَوْ قَرَابَةٍ...... "या'नी तमाम मुसलमान एक दूसरे के ह़क़ में गवाही देने के लिये आ़दिल हैं सिवाए उस शख़्स के जिस पर ह़द जारी हुई, या कोई ऐसा शख़्स हो जिस के बारे में तजरिबा हो कि येह झूटी गवाही देता है, या ऐसा शख़्स जो अपने मौला की विला या क़राबत दारों के मुआ़मले में ना क़ाबिले ए'तिबार और मुत्तहम व मश्कूक हो।"

www.dawateislami.net

اِنَّ اللّٰهَ تَوَلّٰى مِنْكُمُ السَّرَائِرَ وَدَرَاَعَنْكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ...... "या'नी बेशक तुम्हारे पोशीदा उमूर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द हैं और वोह गवाहों के सबब तुम से दर गुज़र फ़रमाता है।"

وَاِيَّاكَ وَالْقَلَقَ وَالضَّجَرَ وَالتَّاَذِّىْ بِالنَّاسِ وَالتَّنَكُّرَ لِلْخُصُوْمِ فِىْ مَوَاطِنِ الْحَقِّ الَّتِىْ يُوْجِبُ اللّٰهُ بِهَا الْاَجْرَ وَيُحْسِنُ بِهَا الذُّخْرَ....... "या'नी फ़ैसला करने में परेशानी, तंग दिली, लोगों को अज़िय्यत देने और ह़क़ के उन मवाके़अ़ पर फ़रीक़ैन से अपनाइय्यत बरतने से बचो जिन के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज्र को वाजिब कर देता है और उसे उख़रवी ज़ख़ीरा बना देता है।"

فَاِنَّهُ مَنْ يُصْلِحْ نِيَّتَهُ فِيْمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللّٰهِ وَلَوْ عَلٰى نَفْسِهِ يَكْفِهِ اللّٰهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّاسِ....... "क्यूंकि जो शख़्स अपने और रब عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में अपनी निय्यत को दुरुस्त रखता है अगर्चे वोह इस की अपनी ज़ात ही के ख़िलाफ़ हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने और लोगों के मुआ़मले में उस के लिये काफ़ी होता है।"

وَمَنْ تَزَيَّنَ لِلنَّاسِ بِمَا يَعْلَمُ اللّٰهُ مِنْهُ غَيْرَ ذٰلِكَ يَشِنْهُ اللّٰهُ...... "और जो शख़्स लोगों के लिये ऐसी चीज़ मुज़य्यन और ज़ाहिर करता है जो उस के दिल में नहीं है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को ऐबदार फ़रमा देता है।"(1)

इस मक्तूब से ह़ासिल होने वाले उसूले अ़द्ल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब ज़ाहिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक मक्तूब रवाना किया जिस में पन्दो नसाएह़ थे लेकिन दर ह़क़ीक़त येह मक्तूब अ़द्लिया के उसूलो ज़वाबित़ पर मुश्तमिल एक नायाब दस्तावेज़ है, जो पूरी दुन्या के एक आ़म जज से ले कर हाईकोर्ट के सब से बड़े जज (Chief justice) के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह है, सेंकड़ों साल गुज़र जाने के बा'द भी आज तक मुह़क़्क़िक़ीन व शारेह़ीन उ़लमाए किराम इन अ़दालती उसूलो ज़वाबित़ की तशरीह़ व ता'लीक़ में मसरूफ़ हैं, अगर इस ख़त़ के इलावा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आ़जिज़ी व इन्किसारी और फ़िक्रे आख़िरत पर मुश्तमिल दीगर ह़कीमाना अक़्वाल न भी होते तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का शुमार दुन्या के अ़ज़ीम तरीन मुफ़क्किरीन और क़ानून दानों में होता। इस मक्तूब से दर्जे ज़ैल उसूले अ़द्ल ह़ासिल हुवे :

(1) ......دارقطنی، کتاب فی الاقضیة والاحکام، کتاب عمر رضی اللہ عنه۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۴۳، حدیث: ۴۴۲۵۔

www.dawateislami.net

(1)......"मन्सबे क़ज़ा कोई आ़म ओ़ह्दा नहीं बल्कि तमाम इदारों की दुरुस्ती इसी पर मौक़ूफ़ है, चूंकि क़ाज़ी का फ़ैसला पूरे मुआ़शरे पर असर अन्दाज़ होता है इस लिये इस ओ़ह्दे की नौइय्यत मज़ीद ह़स्सास हो जाती है।"

(2)......"क़ाज़ी के लिये ज़रूरी है कि ह़क़ वाज़ेह़ हो जाने के बा'द फ़ैसले में ताख़ीर न करे।"

(3)......"मह़्ज़ फ़ैसला सुना देना ही क़ाज़ी का काम नहीं बल्कि इस के नफ़ाज़ को यक़ीनी बनाना भी उसी की ज़िम्मेदारी है"

(4)......"क़ाज़ी को चाहिये कि तमाम लोगों के साथ बिला तफ़रीक़ यक्सां बरताव करे।"

(5)......"क़ाज़ी को चाहिये कि अपने चेहरे के तअस्सुरात, अपने बैठने की निशस्त और लोगों के दरमियान फ़ैसला करने में मुसावात का ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करे कि लोग हमेशा उस से इन्साफ़ की उम्मीद रखें।"

(6)......"मुद्दई या'नी दा'वा करने वाला अपने मुआ़मले में सुबूत या गवाह लाएगा।"

(7)......"मुद्दआ़ अ़लय या'नी जिस के ख़िलाफ़ दा'वा किया गया है उस से क़सम ली जाएगी।"

(8)......"फ़रीक़ैन हर मुआ़मले में सुल्ह़ कर सकते हैं लेकिन ग़ैर शरई मुआ़मले में सुल्ह़ नहीं कर सकते।"

(9)......"क़ाज़ी किसी मुआ़मले में फ़ैसला करने के बा'द उस में नज़्रे सानी कर सकता है।"

(10).....''क़ाज़ी हमेशा क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ ही फ़ैसला करे और उ़लमा से मुशावरत करे।"

(11)......"मुद्दई को गवाह या सुबूत पेश करने की मोहलत दी जाएगी।"

(12)......"तमाम मुसलमान एक दूसरे के गवाह बन सकते हैं अलबत्ता मह़्दूद फ़िल क़ज़्फ़ या जिस का झूटी गवाही देना मश्हूर हो या जो किसी शख़्स के बारे में फ़क़त़ बद गुमानी का शिकार हो उस की शहादत क़बूल नहीं की जाएगी।"

(13)......"क़ाज़ी को चाहिये कि ऐसे तमाम औसाफ़ से अपने आप को मह़फ़ूज़ रखे जो दुरुस्त फ़ैसला करने में रुकावट बन सकते हों।"

(14)......"क़ाज़ी को चाहिये कि ख़ालिसतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को सामने रखते हुवे फ़ैसला करे अगर्चे उसे अपनी ज़ात के ख़िलाफ़ ही फ़ैसला देना पड़े।"

(15)......"दुरुस्त फ़ैसला करने के बा'द रब عَزَّوَجَلَّ से ही उस के अज्रो सवाब की उम्मीद रखे, ग़ैरुल्लाह से उस की क़त़अ़न कोई उम्मीद न रखे।"

www.dawateislami.net

अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूब का मज़्मून कुछ यूं था :

"ह़म्दो सलात के बा'द मैं तुम्हें येह मक्तूब लिख रहा हूं, इस में अपनी और तुम्हारी भलाई की मैं ने ह़त्तल इमकान कोशिश की है। पांच उसूलों पर सख़्ती से अ़मल करो तुम्हारा दीन सलामत रहेगा और ख़ुश बख़्ती तुम्हारे क़दम चूमेगी : (1) जब दो आदमी अपना मुआ़मला ले कर तुम्हारे पास आएं तो मुद्दई से आ़दिल गवाह त़लब करो। (2) मुद्दआ़ अ़लय से क़त़ई ह़लफ़ लो। (3) ग़रीबों के साथ निहायत ही हमदर्दी से पेश आओ ताकि वोह बा आसानी अपना मुआ़मला पेश कर सकें और उन की हिम्मत बढ़े। (4) बाहर से आए हुवे शख़्स का ख़ास ख़याल रखो क्यूंकि अगर बहुत दिन तक उसे रुकना पड़ा तो वोह अपना ह़क़ छोड़ कर अपने घर लौट जाएगा और कोई उस की त़रफ़ तवज्जोह नहीं करेगा। (5) जब तक तुम्हें सह़ीह़ फ़ैसला समझ न आए फ़रीक़ैन में समझोता कराने की हर मुमकिन कोशिश करो।"[1]

अमीरे मुआ़विया को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो मक्तूब सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना किया उस का मज़्मून भी बिऐनिही तक़रीबन वोही था जो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना किये गए मक्तूब का था :

ह़म्दो सलात के बा'द फ़रीक़ैन में फ़ैसला करने से मुतअ़ल्लिक़ मैं तुम्हें येह मक्तूब भेज रहा हूं, इस में अपनी और तुम्हारी भलाई की मैं ने पूरी कोशिश की है, पांच उसूलों पर कारबन्द रहो तुम्हारा दीन सलामत रहेगा और इस में तुम्हें ख़ुश नसीबी ह़ासिल होगी। (1) जब तुम्हारे पास फ़रीक़ैन अपना मुआ़मला ले कर आएं तो मुद्दई से सच्चे गवाह और मुद्दआ़ अ़लय से मज़्बूत़ ह़लफ़ लो। (2) कमज़ोरों के साथ बहुत हमदर्दी से पेश आओ ताकि उन की हिम्मत बंधे और अपना मुआ़मला तुम्हारे सामने बयान करने में ज़बान खुले। (3) जो शख़्स बाहर से आया हो उस के साथ ख़ुसूसी तआ़वुन करो क्यूंकि ज़ियादा दिन इन्तिज़ार कर के अगर वोह बिग़ैर ह़क़ ह़ासिल किये चला गया तो उस का वबाल ह़क़ मारने वाले पर होगा। (4) मुद्दई व मुद्दआ़ अ़लय के साथ यक्सां सुलूक करो। (5) फ़रीक़ैन में जब तक तुम्हें सह़ीह़ फ़ैसला समझ में न आए उस वक़्त तक कोई फ़ैसला न करो, ब सूरते दीगर फ़रीक़ैन में सुल्ह़ कराने की ह़त्तल मक्दूर कोशिश करो।"[2]

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۷۹۔

2 ......البیان والتبیین، باب من اللغز فی الجواب، ج ۲، ص ۱۵۰۔

www.dawateislami.net

कामिल अ़द्लो इन्साफ़ का इन्हिसार चार बातों पर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम दर्जे ज़ैल चार बातों पर है :

❁......अ़द्लो इन्साफ़ का क़ानून अपनी तमाम तर जुज़इय्यात के साथ मुकम्मल हो।

❁......अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम करने वाले क़ाबिल और ज़हीन अफ़राद को क़ाज़ी व जज मुक़र्रर किया जाए।

❁......अ़द्लो इन्साफ़ के हुसूल के लिये क़ज़ा और जजिज़ की ता'दाद में किफ़ायत शिआ़री से काम लिया जाए।

❁......ऐसे तमाम वसाइल ब रूएकार लाए जाएं जिन से रिश्वत और दीगर नाजाइज़ ज़राएअ़ का मुकम्मल सद्दे बाब हो सके।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन चारों बातों पर कमाह़क़्क़ुहू अ़मल किया जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में हर त़रफ़ अ़द्लो इन्साफ़ का दौर दौरा हो गया, इन चारों उमूर की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुकम्मल क़ानून का नफ़ाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्द में मुकम्मल क़ानून का नफ़ाज़ फ़रमाया, नीज़ अपने मुक़र्ररा क़ाज़ियों और जजों को भी ख़ुसूसी ताकीद फ़रमाई कि जब भी किसी मुआ़मले में फ़ैसला करना हो तो अव्वलन क़ुरआने मजीद, फिर सुन्नते नबवी, फिर इजमाए़ उम्मत और फिर क़ियास व इजतिहाद से फ़ैसला किया जाए। जैसा कि पिछले सफ़ह़ात में अ़ह्दे फ़ारूक़ी के क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہ की रिवायत गुज़री जिस में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक मक्तूब में इस बात की ताकीद फ़रमाई। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ज़रूरी अम्र के बा वुजूद अपने मुक़र्ररा क़ाज़ियों की वक़्तन फ़ वक़्तन मुश्किल मसाइल में फ़तावा के ज़रीए़ भी मुआ़वनत फ़रमाते रहते थे, जिस की तफ़्सील कुतुबे सियर व तारीख़ में मौजूद है। यूं अ़द्लिया का निज़ाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में अपनी तमाम तर जुज़इय्यात के साथ कामिल व अकमल क़ानून की ह़ैसिय्यत से राइज हो गया।

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ क़ाज़ियों का तक़र्रुर

वाज़ेह़ रहे कि क़ाज़ी की तक़र्रुरी का इख़्तियार बुन्यादी त़ौर पर ख़लीफ़ए वक़्त को होता है कि अव्वलन वोही क़ाज़ी का तक़र्रुर करेगा या रियासत का गवर्नर भी क़ाज़ी मुक़र्रर कर सकता है जब कि उसे ख़लीफ़ए वक़्त ने इख़्तियार दिया हो । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ शहरों में मुख़्तलिफ़ क़ाज़ियों का तक़र्रुर फ़रमाया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ाज़ियों के तक़र्रुर में इस बात का ख़याल रखा कि जो लोग अ़द्लो इन्साफ़ के मुआ़मले में बेहतर ख़िदमात सर अन्जाम दे सकते हैं सिर्फ़ उन्ही लोगों को सूबाई अ़दालतों की ज़िम्मेदारी सोंपी जाए । नीज़ अपने गवर्नरों को भी इस बात की ख़ुसूसी हिदायत दी कि मन्सबे क़ज़ा के लिये सालेह़ अफ़राद का इन्तिख़ाब करें और उन की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ तनख़्वाहें दें ।(1)

क़ाज़ियों की तक़र्रुरी में फ़ारूक़े आ'ज़म की दो ख़ुसूसिय्यात

क़ाज़ियों की तक़र्रुरी के मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दो ख़ुसूसिय्यात ह़ासिल थीं : (1) पहली ख़ुसूसिय्यत तो येह थी कि आप अ़हदे रिसालत में भी मुख़्तलिफ़ उमूर के फ़ैसले फ़रमाया करते थे और अ़हदे सिद्दीक़ी में तो ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया था और ज़ाहिर है जो शख़्स एक काम पहले ही कर चुका हो और फिर दोबारा उसे वोही काम करना हो तो यक़ीनन वोह बेहतर त़रीक़े से कर पाएगा क्यूंकि वोह उस काम की ऊंच नीच, तमाम बारीकियों से पहले ही अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ है । (2) दूसरी ख़ुसूसिय्यत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बा कमाल फ़िरासत थी जिस ने कभी धोका न खाया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्सबे क़ज़ा के लिये ज़हीन, तजरिबा कार और सालेह़ अफ़राद का इन्तिख़ाब फ़रमाया ।

अ़हदे फ़ारूक़ी के अ़दालती क़ाज़ी व जज

कुतुबे तारीख़ व सियर के मुत़ालए से अ़हदे फ़ारूक़ी के क़ाज़ियों की जो तफ़्सील सामने आती है इस से मा'लूम होता है कि अ़हदे फ़ारूक़ी के क़ाज़ी दो त़रह़ के थे, बा'ज़ वोह जो सिर्फ़ क़ाज़ी थे, बा'ज़ वोह जो रियासत के गवर्नर और क़ाज़ी दोनों थे ।

उन अफ़राद के अस्मा जो फ़क़त़ क़ाज़ी थे

۞......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दारुल

---

(1) ......سیر اعلام النبلاء، شھداء اجنادین والیرموک، ج ۳، ص ۲۸۵، الرقم: ۹۱۔

www.dawateislami.net

ख़ुलाफ़ा या'नी मदीनए मुनव्वरा का क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कई सिफ़ात के ह़ामिल थे : एक तो येह सह़ाबिये रसूल थे, दूसरा कातिबे वह़्य भी रह चुके थे, तीसरा सुरयानी व इ़बरानी ज़बानों पर भी उ़बूर ह़ासिल था। इ़ल्मुल फ़राइज़ में पूरे अ़रब में कोई आप का हम पल्ला न था।

......सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार अल अज़्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बसरा का क़ाज़ी मुन्तख़ब फ़रमाया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत मुआ़मला फ़ह्म और नुक्ता शनास थे, किसी मस्अले की बारीकियों पर आप बड़ी मज़बूती से गिरिफ़्त फ़रमा लिया करते थे, आप के फ़ैसले बड़े मश्हूर हैं, मश्हूर ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सिरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप के बहुत से फ़ैसले और अह़काम नक़्ल फ़रमाए हैं।

......सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िलिस्त़ीन में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ फ़रमाया, सह़ाबिये रसूल होने के साथ साथ उन की जलालते शान इस बात से भी ज़ाहिर होती है कि अ़हदे रिसालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुकम्मल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ था, येही वज्ह थी कि ख़ुद ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा का क़ारी या'नी क़ुरआने पाक की ता'लीम देने के लिये मुक़र्रर फ़रमाया था।

......कूफ़ा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआनो सुन्नत के बेहतरीन आ़लिम थे नीज़ आप मुज्तहिद भी थे और ख़ुद क़ुरआनो सुन्नत से मसाइल अख़्ज़ फ़रमाया करते थे।[1]

......बा'दे अज़ां सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन की जगह ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़हानत और मुआ़मला फ़ह्मी भी बड़ी ही मश्हूर थी, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को "अक़्ज़ल अ़रब" या'नी अ़रब का सब से बड़ा क़ाज़ी फ़रमाया करते थे।[2]

......ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहले बसरा और फिर क़ादिसिया का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया।

---

1 ......اخبار القضاۃ، عبد اللہ بن مسعود، ج ۲، ص ۱۸۸ ماخوذا۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۲۳، ص ۲۱۔

۞......हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबुल आ़स क़रशी को मिस्र के मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ फ़रमाया।

۞......इन क़ाज़ियों के इलावा जिन को सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया उन में से हज़रते सय्यिदुना अबू मरयम हनफ़ी, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन रबीआ़, हज़रते सय्यिदुना अबू कु़र्रा किन्दी, हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم) के अस्माए मुबारका कुतुब में मौजूद हैं।

उन अफ़राद के अस्मा जो क़ाज़ी व गवर्नर दोनों ओ़हदों पर फ़ाइज़ थे

चन्द अफ़राद ऐसे भी थे जिन्हें रियासत की गवर्नरी के साथ मन्सबे क़ज़ा भी सिपुर्द किया गया था, उन के नाम येह हैं :

۞......हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ ख़ुज़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ।

हाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने लिखा है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर मुक़र्रर किया था, उस वक़्त मक्कए मुकर्रमा में कु़रैश के अकाबिरीन मौजूद थे, फिर इन को मा'ज़ूल कर के हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया।

۞......हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सन्आ़ के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ताइफ़ के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूफ़ा के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मुल्के शाम के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स सक़फ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहरैन व उ़मान के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिम्स के गवर्नर थे।

۞......हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुख़्तलिफ़ जंगों के दौरान पेश आने वाले मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के फ़ैसले करने पर मामूर किया गया था नीज़ आप एक अ़र्से तक जंगी कमान्डर भी मुक़र्रर रहे।(1)

1......الاستیعاب، ج۲، ص۱۹۰، ج۳، ص۱۵۳، ۲۹۰، ۴۷۰، ج۴، ص۶، ۵۴، ۲۷۲، ۳۲۷۔

www.dawateislami.net

उन अफ़राद में से बा'ज़ को सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रियासत की गवर्नरी के साथ मन्सबे क़ज़ा पर भी फ़ाइज़ रखा जैसा कि सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बा'ज़ को सिर्फ़ गवर्नरी के ओ़ह्दे पर रखा ओ़ह्दए क़ज़ा उन से ले लिया जैसे सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । इन तमाम के फ़ज़ाइलो मनाक़िब "**कुतुबे अस्माउर्रिजाल**" में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

क़ाज़ियों का तक़र्रुर अ़मली इम्तिह़ान के बा'द होता था

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में क़ाज़ी सूबा या ज़िल्अ़ के ह़ाकिम के मा तह़्त होता था और उस को क़ाज़ी मुक़र्रर करने के मुकम्मल इख़्तियारात थे लेकिन एह़तियातन अक्सरो बेशतर क़ाज़ियों की तक़र्रुरी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद ही फ़रमाया करते थे । जिन को क़ाज़ी मुक़र्रर करना होता अव्वलन उन के ज़ाती किरदार (Self Character) और शोहरत (Celebrity) देखते, फिर इसी पर इक्तिफ़ा करने के बजाए उन का अ़मली इम्तिह़ान लेते कि आया येह इस मन्सब को बत़रीके़ अह़सन चला सकेंगे या नहीं । फिर उन का तक़र्रुर किया जाता । कूफ़ा के क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वाक़िआ़ बहुत मश्हूर है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का ख़ुद अ़मली इम्तिह़ान लेने के बा'द ही उन को मन्सबे क़ज़ा पर मुक़र्रर फ़रमाया । सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से घोड़ा ख़रीदने का इरादा फ़रमाया और शर्त़ येह रखी कि पसन्द आएगा तो ख़रीदेंगे वरना नहीं । उस घोड़े की सलाह़िय्यत को परखने के लिये एक घुड़ सुवार को दिया गया, इत्तिफ़ाक़ से सुवारी के दौरान घोड़े को चोट लग गई जिस से वोह दाग़ी हो गया । सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घोड़ा उस के मालिक को वापस करना चाहा तो उस ने इन्कार कर दिया । मुआ़मला ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने रखा गया कि वोह फ़ैसला करें । आप ने यूं फ़ैसला फ़रमाया कि "अगर घोड़े के मालिक से इजाज़त ले कर सुवारी की गई थी तब तो घोड़ा वापस किया जा सकता है वरना नहीं ।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आप का येह फ़ैसला बहुत पसन्द आया और आप को कूफ़ा का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमा दिया ।[1]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाती क़ाबिलिय्यत, ज़िहानत और मुआ़मला फ़ह्मी के इलावा क़ाज़ी के लिये रो'ब व दबदबे को भी ज़रूरी समझते थे,

1 ......الاوائل للعسکری، الباب السابع، ذکر القضاۃ، ص ۲۶۰۔

www.dawateislami.net

क़ाज़ियों की तक़र्रुरी के वक़्त भी इस बात का ख़याल रखते और वालियों व ज़िल्अ़ के हाकिमों को भी इस की हिदायत देते रहते। नीज़ आप ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी लिखा कि जो शख़्स बा असर और साहिबे अ़ज़मत न हो उस को क़ाज़ी न बनाया जाए।[1]

अ़दालती जजों की फ़ारूक़ी तरबिय्यत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़दालतों के क़ियाम के बा'द फ़क़त़ बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़ बयान करने पर इक्तिफ़ा न फ़रमाया बल्कि अपने मुख़्तलिफ़ फ़तावा और मन्सबे क़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ एह्तियाती तदाबीर, अपने तजरिबात की रौशनी में जजों की मुख़्तलिफ़ ह़वाले से ऐसी तरबिय्यत फ़रमाते रहते जिस से उन्हें मुख़्तलिफ़ उमूर के माबैन फ़ैसला करने में आसानी हो और लोगों के दिलों में भी अ़दालत की क़द्रो मन्ज़िलत बाक़ी रहे। नीज़ इस से अ़ह्दे फ़ारूक़ी के क़ाज़ियों के औसाफ़ और उन के फ़राइज़ की तफ़्सीलात भी काफ़ी ह़द तक वाज़ेह़ हो जाती हैं।

फ़ारूक़ी क़ाज़ियों के मुख़्तलिफ़ औसाफ़

(1) क़ाज़ी अह़कामे शरइय्या का आ़लिम हो

अह़कामे शरइय्या का आ़लिम होना क़ाज़ी के लिये निहायत ज़रूरी है क्यूंकि जब तक उसे शरीअ़त का इल्म न होगा तो किसी मुआ़मले में सह़ीह़ फ़ैसला न कर सकेगा। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी क़ाज़ियों के तक़र्रुर में इस बात का ख़ुसूसी ख़याल रखा।

(2) क़ाज़ी मुत्तक़ी व परहेज़गार हो

क़ाज़ी का मुत्तक़ी व परहेज़गार होना भी लाज़िमी शर्त़ है, क्यूंकि जब तक क़ाज़ी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला न होगा तो वोह रिज़ाए इलाही के साथ फ़रीक़ैन के माबैन क़त़्अ़न फ़ैसला न कर सकेगा। इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि : اُنْظُرُوْا رِجَالًا صَالِحِیْنَ فَاسْتَعْمِلُوْھُمْ عَلَی الْقَضَاءِ "या'नी अपने यहां के नेक लोगों को नज़र में रखो और उन्हें मन्सबे क़ज़ा पर मुक़र्रर करो।"[2]

1 ......اخبار القضاۃ، کتاب عمر الی۔۔۔الخ، ج۱، ص۷۱ ملخصاً۔

2 ......سیر اعلام النبلاء، شھداء اجنادین والیرموک، معاذ بن جبل۔۔۔الخ، ج۳، ص۲۸۵، الرقم:۱۹۔

www.dawateislami.net

(3) लालची और हरीस न हो

क़ाज़ी को चाहिये कि लोगों के अमवाल से बे परवाह हो जाए क्यूंकि ऐसा शख़्स ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अम्र को दुरुस्त त़रीके़ से नाफ़िज़ कर सकता है। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : لَا یُقِیْمُ اَمْرَ اللّٰہِ اِلَّا مَنْ لَا یُصَانِعُ وَلَا یُضَارِعُ وَلَا یَتَّبِعُ الْمَطَامِعَ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म वोही नाफ़िज़ कर सकता है जो न तो धोकेबाज़ हो न ही बिला वज्ह ख़ौफ़ज़दा हो और न ही ख़्वाहिशे नफ़्स का पैरूकार हो।[1]

(4) क़ाज़ी ज़हीनो फ़तीन और दूरअन्देश हो

क़ाज़ी का ज़हीनो फ़त़ीन और दूरअन्देश होना भी निहायत ज़रूरी है क्यूंकि बा'ज़ औक़ात ऐसे मुआ़मलात होते हैं जो उन्ही औसाफ़ पर मुन्ह़सिर होते हैं, अगर क़ाज़ी में येह औसाफ़ नहीं होंगे तो हो सकता है वोह दुरुस्त त़रीके़ से फ़ैसला न कर सके, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ऐसे ही लोगों को मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ फ़रमाया करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में मौजूद थे कि एक औ़रत ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ करने लगी : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं ने अपने शौहर से बेहतर कोई आदमी न पाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह पूरी रात नमाज़ें पढ़ता है और दिन को रोज़े रखता है, सख़्त गर्मी में भी वोह रोज़ा नहीं तोड़ता।" आप ने उस औ़रत के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाई तो वोह औ़रत शर्माते हुवे चली गई। मगर सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! दर अस्ल इस औ़रत ने अपने शौहर की ता'रीफ़ में शिकायत की है कि वोह उस के हुक़ूक़ अदा नहीं करता है।" जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस औ़रत को बुला कर पूछा तो मुआ़मला ऐसा ही निकला। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि तुम ने उस के मुआ़मले को पहचाना अब तुम ही उस का फ़ैसला करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! इस्लाम में मर्दों के बयक वक़्त चार निकाह़ की इजाज़त है अगर बिलफ़र्ज़ इस के शौहर की तीन अज़्वाज और होतीं तो यक़ीनन इस औ़रत का ह़क़ चौथे दिन लौटता लिहाज़ा इस के शौहर को चाहिये कि तीन दिन रात ख़ूब

1 ......مصنف عبد الرزاق، باب عدل القاضی فی مجلسه، ج۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۶۸ ـ

www.dawateislami.net

इबादत करे और चौथे दिन इस के हुक़ूक़ पूरे करे।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की दूरअन्देशी और ज़िहानत देख कर इरशाद फ़रमाया : مَا الْحَقُّ اِلَّا هٰذَا اِذْهَبْ فَاَنْتَ قَاضٍ عَلَى الْبَصْرَةِ "या'नी येह तो तुम ने बिल्कुल दुरुस्त फ़ैसला किया है। जाओ आज से तुम बसरा के क़ाज़ी हो।"(1)

(5) क़ाज़ी ए'तिदाल पसन्द हो

क़ाज़ी का ए'तिदाल पसन्द होना निहायत ज़रूरी है, क्यूंकि अगर वोह फ़क़त् सख़्त त़बीअ़त का मालिक हो तो ज़ुल्मो तशद्दुद का सख़्त अन्देशा है और अगर फ़क़त् नर्म त़बीअ़त का मालिक हो तो हुदूदो क़िसास वग़ैरा के मुआ़मलात दुरुस्ती से अदा न होंगे। चुनान्चे,

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

لَا يَنْبَغِي اَنْ يَلِيَ هٰذَا الْاَمْرَ يَعْنِي اَمْرَ النَّاسِ اِلَّا رَجُلٌ فِيْهِ اَرْبَعُ خِصَالٍ اَللِّيْنُ فِيْ غَيْرِ ضُعْفٍ وَالشِّدَّةُ فِيْ غَيْرِ عُنْفٍ وَالْاِمْسَاكُ فِيْ غَيْرِ بُخْلٍ وَالسَّمَاحَةُ فِيْ غَيْرِ سَرْفٍ فَاِنْ سَقَطَتْ وَاحِدَةٌ مِّنْهُنَّ فَسَدَتِ الثَّلَاثُ

"या'नी मन्सबे क़ज़ा सिर्फ़ ऐसे लोगों के लिये है जिन में चार ख़ूबियां हों : (1) नर्मी हो मगर ऐसी नर्मी नहीं जो कमज़ोरी पर मुश्तमिल हो। (2) सख़्ती हो मगर ऐसी नहीं कि जिस में शिद्दत हो। (3) किफ़ायत शिआ़र हो लेकिन ऐसा नहीं कि उस में बुख़्ल हो। (4) लिह़ाज़ करने वाला हो लेकिन ऐसा नहीं कि ह़द से तजावुज़ कर जाए। क्यूंकि इन में से एक भी सिफ़त ख़त्म होगी तो बक़िय्या तीनों ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएंगी।"(2)

(6) क़ाज़ी शख़्सिय्यत व रो'ब व दबदबे वाला हो

फ़रीक़ैन के माबैन फ़ैसला करने और हुदूदो क़िसास नाफ़िज़ करने में इस सिफ़त का बहुत दख़्ल है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस सिफ़त को भी मद्दे नज़र रखा करते थे, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَاَسْتَعْمِلَنَّ عَلَى الْقَضَاءِ رَجُلًا اِذَا رَآهُ الْفَاجِرُ فَرِقَهُ "या'नी मैं ऐसे शख़्स को क़ाज़ी बनाऊंगा जिसे मुजरिम देखते ही डर जाएगा।" फिर आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मरयम ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मा'ज़ूल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बसरा का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया।(3)

---

1 ......كنز العمال، كتاب النكاح، حقوق متفرقة، الجزء: ١٦، ج٨، ص ٢٢٢، حديث: ٤٥٩١٥۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، كتاب البيوع، باب كيف ينبغي للقاضي ان يكون، ج٨، ص ٢٣٢، حديث: ١٥٣٧٤۔

3 ......سنن كبرى، كتاب آداب القاضي، باب القاضي اذا بان له، ج١٠، ص١٨٦، حديث: ٢٠٢٩٩ مختصراً۔

www.dawateislami.net

एक अहम वज़ाहत

यहां एक बात की वज़ाहत करना निहायत ज़रूरी है कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़्कूरए बाला फ़रमान इस वज्ह से था कि उस वक़्त बसरा के क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मरयम ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ थे जो बहुत बड़े शाइ़र भी थे, उ़मूमन शो'रा का मिज़ाज बहुत लत़ीफ़ होता है उन की त़बीअ़त में वोह सख़्ती नहीं होती जो दीगर लोगों की त़बीअ़त में होती है, ग़ालिबन इसी वज्ह से उन के फ़ैसलों के मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास शुकूक शुब्हात व शिकायात जैसे मुआ़मलात पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन्हें मा'ज़ूल कर के सय्यिदुना का'ब बिन सव्वार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर करना पड़ा।[1]

(7) क़ाज़ी साहि़बे सरवत और आ'ला नसब वाला हो

क़ाज़ी का साहि़बे सरवत या'नी माली त़ौर पर ख़ुद कफ़ील और अच्छे नसब वाला होना बहुत ज़रूरी है कि येह दोनों सिफ़ात उसे रिश्वत वग़ैरा के लैन दैन से बचने और फ़ैसला करने में ए'तिमाद और लोगों की मलामत से बचने जैसे उमूर ह़ासिल करने में मुआ़विन होंगी। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया :

لَا تَسْتَقْضِيَنَّ إِلَّا ذَا مَالٍ وَذَا حَسَبٍ فَإِنَّ ذَا الْمَالِ لَا يَرْغَبُ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ وَإِنَّ ذَا الْحَسَبِ لَا يَخْشَى الْعَوَاقِبَ بَيْنَ النَّاسِ

"या'नी साहि़बे सरवत और अच्छे ख़ानदान वाले को क़ाज़ी बनाओ क्यूंकि जो ख़ुद मालदार होगा उसे लोगों के माल में रग़बत न होगी और अच्छे ख़ानदान वाले को लोगों में (फ़ैसला करते हुवे) अन्जाम का ख़ौफ़ न होगा।[2]

फ़ारूके आ'ज़म ने ग़नी को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया

येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह अमीर मुक़र्रर फ़रमाया तो उस की सब से बुन्यादी वज्ह येही लिखी कि वोह उन से दुन्यावी ए'तिबार से ज़ियादा मालदार थे, ह़ालांकि मक़ामो मर्तबे में वोह उन से ज़ियादा थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अल्फ़ाज़ येह हैं :

---

1 ......اخبار القضاۃ، خبر ابی مریم الحنفی، ج ۱، ص ۲۷۰ ملخصا۔

2 ......اخبار القضاۃ، کتاب عمر الی معاویۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۷۶۔

www.dawateislami.net

فَقَدْ وَلَّيْتُكَ عَمَلَهُ وَاعْلَمْ اَنَّكَ تَقَدَّمَ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْمُهَاجِرِيْنَ الْاَوَّلِيْنَ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ الْحُسْنٰى لَمْ اَعْزِلْهُ اَلَّا يَكُوْنَ عَفِيْفًا صَلِيْبًا شَدِيْدَ الْبَاْسِ وَلٰكِنِّي ظَنَنْتُ اَنَّكَ اَغْنٰى عَنِ الْمُسْلِمِيْنَ فِي تِلْكَ النَّاحِيَةِ مِنْهُ فَاعْرِفْ لَهُ حَقَّهُ

"या'नी ऐ अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैं ने तुम्हें उ़त्बा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह अमीर मुक़र्रर किया है लेकिन याद रखना कि वोह मक़ामो मर्तबे में तुम से ज़ियादा हैं कि वोह मुहाजिरीने अव्वलीन में से हैं जिन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से भलाई का वा'दा हो चुका, मैं ने उन्हें इस लिये मा'ज़ूल नहीं किया है कि वोह अ़फ़ीफ़ या'नी पाक दामन नहीं, या दीनी मुआ़मले में सख़्त नहीं, या जंगजू नहीं हैं बल्कि उन्हें मा'ज़ूल करने की वज्ह येह है कि मेरे नज़्दीक मुसलमानों में माली ए'तिबार से तुम उन से ज़ियादा ग़नी हो लिहाज़ा उन के हुक़ूक़ का अच्छी त़रह़ ख़याल रखना।(1)

(8) क़ाज़ी इख़्लास व लिल्लाहिय्यत के साथ फ़ैसला करे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में उन औसाफ़ को बड़े वाज़ेह़ अन्दाज़ में बयान फ़रमाया। इस मक्तूब का मज़्मून कुछ यूं था : "अ़द्लो इन्साफ़ के साथ दुरुस्त फ़ैसला करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बाइ़से अज्र है और नेक नामी का ज़रीआ़ भी है, जिस ह़ाकिम की निय्यत ख़ालिस ह़क़ की हो अगर्चे फ़ैसला उस के नफ़्स के ख़िलाफ़ हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रिआ़या के साथ उस के मुआ़मलात को ख़ुद ही सुलझा देता है, जो लोगों की ख़ातिर ख़ुद को उन चीज़ों से आरास्ता करता है जिस की ताईद उसे क़ल्ब से ह़ासिल नहीं होती तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बदनुमा बना देता है।"(2)

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक इन औसाफ़ के मरातिब में भी कुछ फ़र्क़ था, बा'ज़ अफ़राद ऐसे होते थे जिन में चन्द एक औसाफ़ जम्अ़ हो जाते थे, उन अफ़राद को दीगर ऐसे अफ़राद पर तरजीह़ दी जाती थी जिन में उन के मुक़ाबले में औसाफ़ की कमी होती। येही वज्ह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह अमीर मुक़र्रर फ़रमाया क्यूंकि वोह उन से दुन्यावी ए'तिबार से ज़ियादा मालदार थे।(3)

---

1 ......طبقات کبری، ومن الحضارمة وھم من الیمن، ج ۴، ص ۲۶۸۔

2 ......سنن کبری، کتاب الشھادات، باب لا یحیل حکم القاضی، ج ۱۰، ص ۲۵۳، حدیث: ۲۰۵۳۷ مختصرا۔

3 ......طبقات کبری، ومن الحضارمة وھم من الیمن، ج ۴، ص ۲۶۸۔

www.dawateislami.net

क़ाज़ियों के फ़राइज़े मन्सबी

(1) पेचीदा व मुश्किल मुआ़मलात में मुशावरत का हुक्म

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़ाज़ियों को ख़ास तौर पर येह हिदायत दे रखी थी कि किसी भी पेचीदा मुआ़मले में फ़ैसला करने से क़ब्ल मुशावरत ज़रूर करें कि इस त़रह़ अ़द्लो इन्साफ़ के ह़ुसूल और दुरुस्त फ़ैसला करने में मुआ़वनत होगी। चुनान्चे, आप ने एक क़ाज़ी को मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया : وَاسْتَشِرْ فِي اَمْرِکَ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ اللّٰه "या'नी अपने मुआ़मलात में उन लोगों से मश्वरा कर लिया करो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं।"(1)

सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नाम मक्तूब रवाना किया कि :

اِنْ شِئْتَ اَنْ تُؤَامِرَنِي وَلَا اَرٰی مُؤَامَرَتَکَ اِيَّایَ اِلَّا اَسْلَمَ لَکَ

"या'नी अगर मुनासिब समझो तो मुझ से मश्वरा भी कर लिया करो क्यूंकि मेरे ख़याल में तुम्हारा मुझ से मश्वरा करना तुम्हारे लिये बहुत मुफ़ीद है।"(2)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी मुख़्तलिफ़ फ़ैसलों के बारे में मुशावरत किया करते थे। चुनान्चे, इमाम शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی का बयान है :

مَنْ سَرَّهُ اَنْ يَاْخُذَ بِالْوَثِيقَةِ مِنَ الْقَضَاءِ فَلْيَاْخُذْ بِقَضَاءِ عُمَرَ فَاِنَّهُ كَانَ يَسْتَشِيرُ

"या'नी जो शख़्स दुरुस्त फ़ैसले करना चाहता है उसे चाहिये कि वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसलों को देखा करे क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने फ़ैसलों में मश्वरा फ़रमाया करते थे।"(3)

(2) बिग़ैर जुर्म के कारवाई की मुमानअ़त

क़ाज़ी के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह किसी को बिग़ैर सुबूत के मुत्तहम न करे और न ही उस के ख़िलाफ़ कोई कारवाई करे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़दीक ऐसा करना जाइज़ नहीं था। चुनान्चे,

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزهد، کلام عمر بن الخطاب، ج۸، ص۱۴۷، حدیث: ۹ مختصراً۔

2 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب موضع المشاورة، ج۱۰، ص۱۸۹، حدیث: ۲۰۳۱۳۔

3 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب مشاورة الوالی ـــ الخ، ج۱۰، ص۱۸۷، حدیث: ۲۰۳۰۵۔

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं एक क़ाफ़िले के साथ सफ़र पर निकला, जब हम वादिये ज़ल मरवा पहुंचे तो मेरे कपड़ों का सन्दूक़ ग़ाइब हो गया। हमारे साथ एक मश्कूक आदमी भी था। उस से मेरे साथियों ने कहा : "ऐ फ़ुलां ! इन का सन्दूक़ इन्हें वापस कर दे।" उस ने कहा कि मैं ने नहीं लिया। मैं लौट कर जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गया और वाक़िए की इत्तिलाअ़ दी। आप ने पूछा कि तुम्हारे साथ कौन लोग थे ? मैं ने सब का बताया तो आप ने भी उसी फ़र्दे मुत्तहम के बारे में ख़दशा ज़ाहिर किया। मैं ने अ़र्ज़ किया : لَقَدْ اَرَدْتُّ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْ آتِيَ بِهٖ مَصْفُوْدًا "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप चाहें तो मैं उस को बांध कर ले आऊं ? फ़रमाया : اَتَاتِيْ بِهٖ مَصْفُوْدًا بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ "क्या बिग़ैर सुबूत के तुम उसे बांध कर लाओगे ?"(1)

(3) क़ाज़ियों को तह़ाइफ़ लेने की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़दालती जजों को तह़ाइफ़ लेने से मन्अ़ फ़रमा दिया था बल्कि आप इसे रिश्वत क़रार दिया करते थे क्यूंकि बा'ज़ औक़ात तह़ाइफ़ देने वाला शख़्स उस के इवज़ अपने मुक़द्दमे में तख़्फ़ीफ़ भी त़लब कर सकता है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ चूंकि ऐसा ही वाक़िआ़ पेश आया तो आप ने तह़ाइफ़ लेने पर पाबन्दी लगा दी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर अज्दी رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक शख़्स हर साल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ऊंट की रान बत़ौरे तोह़्फ़ा भेजा करता था। फिर एक दफ़्आ़ वोह अपना कोई मुक़द्दमा ले कर बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِقْضِ بَيْنَنَا قَضَاءً فَصْلًا كَمَا يُفْصَلُ الْفَخِذُ مِنَ الْجَزُوْرِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हमारे दरमियान ऐसे फ़ैसला फ़रमाइये जैसे रान ऊंट के जिस्म से जुदा हो जाती है।" येह सुन कर आप ने अपने गवर्नरों व क़ाज़ियों को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया : لَا تَقْبَلُوا الْهَدِيَّةَ فَاِنَّهَا رِشْوَةٌ "या'नी तोह़्फ़ा क़बूल न करो क्यूंकि येह रिश्वत है।"(2)

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب العقول، باب التہمۃ، ج ۹، ص ۵۰۷، حدیث: ۱۹۱۲۵۔

2 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، الرشوۃ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۲۷، حدیث: ۱۴۴۸۴۔

www.dawateislami.net

(4) फ़ैसला करने में रिश्वत लेने की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ैसला करने में रिश्वत लेने को सख़्त नाजाइज़ व ह़राम समझते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : اَرَاَيْتَ الرِّشْوَةَ فِي الْحُكْمِ مِنَ السُّحْتِ هِيَ؟ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या आप फ़ैसला करने में रिश्वत लेने को ह़राम समझते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं बल्कि ह़राम से भी ज़ियादा बुरा समझता हूं।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क्यूंकि ह़राम तो उस शख़्स के लिये है जिस का बादशाह के हां कोई मक़ामो मर्तबा हो और दूसरे शख़्स को उस बादशाह से कोई ह़ाजत पेश आए तो वोह उस से हदया लिये बिग़ैर उस की ह़ाजत पूरी न करे।"(1)

ह़राम ख़ोरी के दो दरवाज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : بَابَانِ مِنَ السُّحْتِ يَاْكُلُهُمَا النَّاسُ اَلرِّشَاءُ وَمَهْرُ الزَّانِيَةِ "या'नी ह़राम ख़ोरी के दो ही दरवाज़े हैं जिन से लोग ह़राम खाते हैं : रिश्वत और ज़ानिया की कमाई।"(2)

(5) मुक़द्दमे की उजरत लेने की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ाज़ी के लिये किसी मुक़द्दमे की उजरत लेना भी पसन्द नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَا يَنْبَغِي لِقَاضِي الْمُسْلِمِينَ اَنْ يَاْخُذَ اَجْرًا وَلَا صَاحِبِ مَغْنَمِهِمْ "या'नी मुसलमानों के क़ाज़ी और माले ग़नीमत तक़्सीम करने वाले को उस की उजरत नहीं लेनी चाहिये।"(3)

(6) मुआ़मले की मुकम्मल तह़क़ीक़ करने का हुक्म

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़ाज़ियों को हुक्म फ़रमा दिया था कि जब तक मुआ़मले की मुकम्मल तह़क़ीक़ न कर लें उस वक़्त तक फ़रीक़ैन में फ़ैसला न करें।

---

1 ......كنز العمال، كتاب الخلافة مع الامارة، الرشوة، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۲۲۷، حديث: ۱۴۴۸۶۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، كتاب البيوع والاقضية، فی الوالی والقاضی یهدی الیه، ج ۵، ص ۲۲۸، حديث: ۵۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، كتاب البيوع والاقضيه، فی القاضی یاخذ الرزق، ج ۵، ص ۲۱۱، حديث: ۴۔

www.dawateislami.net

क्यूंकि मुआमले की तह़क़ीक़ के बिग़ैर किसी के ह़क़ में या उस के ख़िलाफ़ फ़ैसला देना क़त़अ़न जाइज़ नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार फ़रमाया : لَا يَنْبَغِي لِقَاضٍ اَنْ يَّقْضِيَ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُ الْحَقُّ كَمَا يَتَبَيَّنُ اللَّيْلُ عَنِ النَّهَارِ "या'नी क़ाज़ी को चाहिये कि उस वक़्त तक फ़ैसला न करे जब तक ह़क़ इस त़रह़ वाज़ेह़ न हो जाए जिस त़रह़ रात दिन से जुदा हो कर बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाती है।" जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : صَدَقَ اَبُوْمُوْسٰى "या'नी अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सच कहा।"(1)

(7) फ़रीक़ैन को सुल्ह़ के लिये छोड़ देने का हुक्म

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जजों को येह इरशाद फ़रमा दिया था कि अगर कोई ऐसा मुआ़मला हो जो फ़रीक़ैन आपस में सुल्ह़ सफ़ाई कर के ह़ल कर सकते हों तो उन्हें उन के ह़ाल ही पर छोड़ दिया जाए, कोई अ़दालती फ़ैसला न किया जाए क्यूंकि जब वोह आपस में इस मस्अले को ख़ुद ही ह़ल करेंगे तो उन के दिल एक दूसरे के लिये साफ़ हो जाएंगे नीज़ येह अ़मल बाहमी उल्फ़त व मह़ब्बत का भी सबब होगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़ारिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : رُدُّوا الْخُصُومَ حَتّٰى يَصْطَلِحُوْا فَاِنَّ فَصْلَ الْقَضَاءِ يُحْدِثُ بَيْنَ الْقَوْمِ الضَّغَائِنَ "या'नी मुक़द्दमे के फ़रीक़ैन को वापस लौटा दिया करो ताकि वोह आपस में सुल्ह़ कर लें क्यूंकि (जल्दी में किये गए) अ़दालती फ़ैसले बा'ज़ औक़ात लोगों के दरमियान बुग़्ज़ो कीना और दुश्मनी को पैदा करते हैं।"(2)

एक और रिवायत में है इरशाद फ़रमाया : رُدُّوا الْخُصُوْمَ لَعَلَّهُمْ يَصْطَلِحُوْا فَاِنَّهُ اَبَرُّ لِلصَّدْرِ وَاَقَلُّ لِلْحِنَاتِ "या'नी मुक़द्दमात के फ़रीक़ैन को वापस लौटा दिया करो ताकि वोह आपस में सुल्ह़ कर लें क्यूंकि येह अ़मल सीनों को बुग़्ज़ो ह़सद से पाक करने वाला और कीना व दुश्मनी को ख़त्म करने वाला है।"(3)

कौन सी सुल्ह़ कराई जाए.....?

एक बार सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रीक़ैन में की जाने वाली सुल्ह़ की वज़ाह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَلصُّلْحُ جَائِزٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ اِلَّا صُلْحًا اَحَلَّ حَرَامًا اَوْحَرَّمَ حَلَالًا

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب البیوع والاقضیه، فی الحکم یکون هواه لاحد الخصمین، ج۵، ص۳۵۵، حدیث:۲۔

2 ......سنن کبری، کتاب الصلح، باب ماجاء فی التحلل، ج۶، ص۱۰۹، حدیث:۱۱۳۶۰۔

3 ......سنن کبری، کتاب الصلح، باب ماجاء فی التحلل، ج۶، ص۱۰۹، حدیث:۱۱۳۶۱۔

www.dawateislami.net

''या'नी मुसलमानों के दरमियान सिर्फ़ वोही सुल्ह़ कराना जाइज़ है जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो या'नी न ह़राम को ह़लाल करे और न ह़लाल को ह़राम करे।[1]

(8) ख़रीदो फ़रोख़्त की मुमानअ़त

(1)......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना शुरैह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया तो इरशाद फ़रमाया : لَا تُشَارَّ وَلَا تُضَارَّ وَلَا تَشْتَرِ وَلَا تَبِعْ وَلَا تَرْتَشِ ''या'नी तुम न तो किसी के साथ बुराई से पेश आना, न ही किसी को नुक़्सान पहुंचाना, न ही ख़रीदो फ़रोख़्त करना और न ही रिश्वत लेना।[2]

(2)......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब लिखा जिस में इरशाद फ़रमाया :

لَا تَبِيْعَنَّ وَلَا تَبْتَاعَنَّ وَلَا تُسَارَنَّ وَلَا تُضَارَنَّ وَلَا تَرْتَشِ فِي الْحُكْمِ وَلَا تَحْكُمْ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَاَنْتَ غَضْبَانُ

''या'नी न तो ख़ुद बैअ़ करो, न ही कोई दूसरा तुम से बैअ़ करे और फ़ैसला करने में किसी के साथ बुराई से पेश न आओ, न ही किसी को नुक़्सान पहुंचाओ और न ही रिश्वत लो, दो आदमियों के माबैन गुस्से की ह़ालत में फ़ैसला न करो।''[3]

(9) मुजरिम को सज़ा देने से क़ब्ल सफ़ाई का मौक़अ़

अगर किसी मुजरिम के ख़िलाफ़ जुर्म साबित हो जाता और उस पर ह़द जारी करने का वक़्त आता तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि उसे सफ़ाई का मौक़अ़ ज़रूर दिया करते ताकि मुजरिम के ख़िलाफ़ इतमामे ह़ुज्जत हो जाए और किसी को बात करने का मौक़अ़ न मिले, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात की ताकीद अपने उमरा को भी फ़रमाई थी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने लश्करों के अमीरों को सज़ा के नफ़ाज़ से मुतअ़ल्लिक़ एक मक्तूब रवाना किया जिस में इरशाद फ़रमाया :

اَلَا لَا يَجْلِدَنَّ اَمِيرُ جَيْشٍ وَلَا سَرِيَّةٍ اَحَدًا الْحَدَّ حَتّٰى يَطْلُعَ الدَّرْبُ لِئَلَّا تَحْمِلَهُ حَمِيَّةُ الشَّيْطَانِ اَنْ يَلْحَقَ بِالْكُفَّارِ

---

1 ......دارقطنی، کتاب الاقضية والاحکام۔۔۔الخ، کتاب عمر الی ابی موسی الاشعری، ج ۴، ص ۴ ۴ ۲، حدیث: ۴۴۲۶ ملتقطا۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۲۳، ص ۲۱۔

3 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، باب کیف ینبغی للقاضی ان یکون، ج ۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۶۹۔

www.dawateislami.net

''या'नी ख़बरदार ! किसी भी लश्कर या सरिया का अमीर उस वक़्त तक किसी पर ह़द जारी न करे जब तक मुआ़मला बिल्कुल वाज़ेह़ न हो जाए (या'नी फ़रीक़ैन को सफ़ाई का मौक़अ़ देने के बा'द ह़द जारी की जाए) इस लिये कि कहीं शैत़ानी ग़ैरत उसे कुफ़्फ़ार से जा मिलने पर न उभारे।[1]

(10) फ़रीक़ैन के साथ यक्सां बरताव का हुक्म

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया :

وَآسِ بَيْنَ النَّاسِ فِي وَجْهِكَ وَمَجْلِسِكَ وَعَدْلِكَ حَتّٰى لَا يَيْأَسَ الضَّعِيفُ مِنْ عَدْلِكَ وَلَا يَطْمَعَ الشَّرِيفُ فِي حَيْفِكَ

''अपने चेहरे, बैठने की जगह और अपने फ़ैसले से लोगों (या'नी फ़रीक़ैन) के दरमियान मुसावात का सुलूक रखो ताकि कोई कमज़ोर शख़्स तुम्हारे अ़द्ल से मायूस न हो और कोई मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत तुम्हारे ज़ुल्म की त़म्अ़ न करे।''[2]

(11) क़ाज़ी कमज़ोरों की हिम्मत अफ़्ज़ाई करे

क़ाज़ी को चाहिये कि अगर उस के पास कोई ऐसा शख़्स आए जो किसी भी वज्ह से फ़रीक़े सानी से कमज़ोर हो तो उस के साथ ऐसा सुलूक करे जिस से उस की हिम्मत व ह़ौसले में इज़ाफ़ा हो और वोह अपना मौक़िफ़ खुल कर पेश कर सके ताकि अ़द्लो इन्साफ़ के ह़ुसूल में आसानी हो। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो मक्तूब रवाना किया उस में इरशाद फ़रमाया : ''कमज़ोरों के साथ निहायत हमदर्दी से पेश आओ ताकि उन की हिम्मत बंधे और अपना मुआ़मला तुम्हारे सामने खुल कर बयान कर सके।[3]

(12) ग़ैर शहरी या ग़ैर मुल्की के साथ बेहतर सुलूक करे

क़ाज़ी के फ़राइज़ में से येह भी है कि अगर उस के पास दूसरे शहर या किसी और मुल्क का शख़्स इन्साफ़ के लिये आए तो दीगर लोगों के मुक़ाबले में उस का ख़याल ज़ियादा रखे और हो सके तो उस के मुआ़मले को जल्दी निमटा कर उसे फ़ारिग़ करे क्यूंकि वोह अपने घर से दूर है , हो सकता है

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الحدود، باب فی اقامة الحد، ج ٦، ص ٥٦٥، حدیث: ١-

2 ......دارقطنی، کتاب الاقضية والاحكام، کتاب عمر الی ابی موسی الاشعری، ج ۴، ص ۲۴۳، حدیث: ۴۴۲۵ مختصرا-

3 ......البیان والتبیین، باب من اللغز فی الجواب، ج ۲، ص ۱۵۰-

www.dawateislami.net

वोह उन की फ़िक्र में हक़ हासिल किये बिग़ैर ही चला जाए, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो मक्तूब रवाना फ़रमाया उस में इस बात को वाज़ेह़ फ़रमाया।

(13) क़ाज़ी वुस्अ़ते क़ल्बी और तह़म्मुल मिज़ाजी से काम ले

क़ाज़ी वुस्अ़ते क़ल्बी और तह़म्मुल मिज़ाजी से काम ले, फ़ैसला करने में उन तमाम कैफ़िय्यात से अपने आप को बचाए जिन से किसी नफ़्सियाती असर की बिना पर ग़लत़ फ़ैसला होने का ख़दशा हो। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया : اِيَّاكَ وَالضَّجَرَ وَالْقَلَقَ وَالتَّاَذِّيْ بِالنَّاسِ وَالتَّنَكُّرَ بِالْخُصُوْمِ فِيْ مَوَاطِنِ الْحَقِّ "या'नी अपने आप को डांटने, झिड़कने, ग़ुस्सा होने, चिड़चिड़ा पन और तक्लीफ़ देने से बचाओ, ह़क़ बयान करने की जगह पर झगड़ा करने वालों के सामने भेस बदलने से बचो।"(1)

(14) क़ाज़ी ग़ुस्से में फ़ैसला न करे

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब रवाना फ़रमाया कि : وَلَا تَحْكُمْ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَاَنْتَ غَضْبَانُ "या'नी दो शख़्सों के माबैन ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला न करो।"(2)

हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि :

شَرَطَ عَلَيَّ عُمَرُ حِيْنَ وَلَّانِي الْقَضَاءَ اَنْ لَا اَبِيْعَ وَلَا اَبْتَاعَ وَلَا اَرْتَشِيَ وَلَا اَقْضِيَ وَاَنَا غَضْبَانُ

"या'नी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे मन्सबे क़ज़ा इन शराइत़ के साथ अ़त़ा फ़रमाया कि न तो मैं खुद ख़रीदो फ़रोख़्त करूंगा, न ही कोई मुझ से ख़रीदो फ़रोख़्त करेगा, न ही रिश्वत लूंगा और न ही कभी ग़ुस्से की ह़ालत में फ़ैसला करूंगा।"(3)

(15) क़ाज़ी भूक प्यास में फ़ैसला न करे

चूंकि भूक प्यास का भी त़बीअ़त में तग़य्युर व तबद्दुल से गहरा तअ़ल्लुक़ है इसी लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भूक में फ़ैसला करने से मन्अ़ फ़रमाया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب لا یقضی القاضی۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۱۸۱، حدیث: ۲۰۲۸۳۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، باب کیف ینبغی للقاضی ان یکون۔۔۔الخ، ج ۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۶۹ مختصرا۔

3 ......المجموع شرح المهذب، کتاب الاقضیة، باب ولایة القضاء وادب القاضی، ج ۲۰، ص ۱۳۱۔

www.dawateislami.net

का फ़रमान है : لَا يَقْضِي الْقَاضِي اِلَّا وَهُوَ شَبْعَانُ "या'नी कोई क़ाज़ी उस वक़्त तक फ़ैसला न करे जब तक वोह सैर न हो।"(1)

(16) फ़ैसला करने में ज़ाहिरी दलाइल का ए'तिबार

क़ाज़ी को चाहिये कि ज़ाहिरी दलाइल का ए'तिबार करते हुवे फ़ैसला करे क्यूंकि निय्यतों का मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार खुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! हम तुम्हें उस वक़्त से पहचानते हैं जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान मौजूद थे और तुम्हारी बातें हमें मा'लूम हो जाती थीं लेकिन आज हम तुम्हें सिर्फ़ तुम्हारी बातों से पहचान सकते हैं लिहाज़ा जिस ने हमारे सामने भलाई की हम उसे अच्छा समझेंगे और जिस ने बुराई की उसे बुरा जानेंगे और उस से नफ़रत करेंगे क्यूंकि तुम्हारी निय्यतों का मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास है।"(2)

(17) तौबा के बा'द हुस्ने सुलूक की ताकीद

मुजरिम अगर अपने गुनाह से तौबा कर ले तो अब उस के साथ मुसलमानों को मेल जोल रखने की इजाज़त है, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से भी क़ाज़ियों को येही हिदायत थी कि अगर किसी मुजरिम के साथ उस के गुनाह के सबब मुसलमानों को मेल जोल से मन्अ़ कर दिया हो तो उस मुजरिम की तौबा के बा'द लोगों को उस से मेल जोल की इजाज़त दे दी जाए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस हुक्म में बे शुमार हिक्मतें आप के पेशे नज़र थीं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ हज या उ़मरह के सफ़र में थे कि एक सुवार को देखा। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं उस सुवार को देख रहा हूं उसे हम से ही कोई काम है।" फिर वाक़ेई वोह सुवार सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और रोने लगा। आप ने उस से हमदर्दी करते हुवे इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या बात है ? तुम क्यूं रो रहे हो ? अगर तुम्हें किसी मदद की ज़रूरत है तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, तुम्हें किसी का ख़ौफ़

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب لا یقضی القاضی ــــ الخ، ج۱۰، ص۱۸۱، حدیث:۲۰۲۸۲۔

2 ......مستدرک حاکم، کتاب الفتن والملاحم، خطبۃ عمر رضی اللہ عنہ فی الفتنۃ، ج۵، ص۲۲۶، حدیث:۸۴۰۵ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

है तो उस से अम्न दिलाएंगे, हां अगर तुम ने किसी को क़त्ल किया है तो बतौ़रे क़िसास तुम्हें क़त्ल किया जाएगा, अगर तुम अपने पड़ोसियों से तंग हो तो तुम्हें किसी और जगह मुन्तक़िल कर देंगे।"

उस ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं बनी तैम से तअ़ल्लुक़ रखता हूं, मैं ने शराब पी ली थी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़द जारी करते हुवे मुझे कोड़े लगाए, फिर मुझे गंजा किया, मेरा मुंह काला किया और मुझे लोगों के दरमियान घुमा फिरा कर ज़लीलो रुस्वा किया और लोगों को मुझ से मिलने, खाने पीने से भी मन्अ़ कर दिया। हुज़ूर ! उस वक़्त मेरे ज़ेहन में तीन बातें आईं : (1) या तो मैं तल्वार ले कर उन का सर क़लम कर दूं। (2) या आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाऊं और आप मुझे शाम भेज दें क्यूंकि वोह लोग मुझे नहीं जानते। (3) या येह कि मैं दुश्मनों के साथ मिल जाऊं और उन के साथ ही खाऊं पियूं।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोने लगे और इरशाद फ़रमाया : مَا يَسُرُّنِي اَنَّكَ فَعَلْتَ "या'नी मुझे कोई ख़ुशी नहीं है कि तुम येह काम करो। फिर आप ने चन्द बातें उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के लिये फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून कुछ यूं था : "ऐ अबू मूसा अश्अ़री ! तुम पर सलाम हो, ह़म्दो सलात के बा'द ! मुझे फ़ुलां बिन फ़ुलां तैमी ने इस इस त़रह़ का मुआ़मला बयान किया है। अगर तुम ने मेरी हुक्म अ़दूली की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हारा चेहरा काला कर के लोगों में घुमाऊंगा, जो मैं ह़क़ बात तुम से कह रहा हूं अगर वोह तुम जान चुके हो तो फ़ौरन लोगों को हुक्म दो कि इस शख़्स के साथ उठें बैठें और खाएं पियें और अगर येह तौबा कर चुका है तो इस की शहादत भी क़बूल करो और इसे दो सौ दिरहम दो।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म ने रिश्वत का दरवाज़ा बन्द कर दिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ाज़ी व जज नीज़ हर वोह शख़्स जिसे किसी न किसी मुआ़मले में फ़ैसल (या'नी फ़ैसला करने वाला) बनना पड़े उस के लिये शैत़ान की त़रफ़ से सब से बड़ी आज़्माइश "रिश्वत" जैसा मोहलिक नासूर है, आज कल मुआ़शरे में येह कितना फैला हुवा है हर शख़्स इस से आगाह है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस नासूर पर बहुत कड़ी नज़र रखी और दीगर नाजाइज़ त़रीक़ों का सद्दे बाब करने के साथ साथ रिश्वत के दरवाज़ों को भी बिल्कुल बन्द कर दिया, इस के लिये आप ने दो त़रीक़े इख़्तियार फ़रमाए :

1......سنن کبری، کتاب الشھادات، باب شھادۃ اھل الاشربۃ، ج۱۰، ص۳۶۱، حدیث:۲۰۹۴۸۔

www.dawateislami.net

(1)......अ़दालतों के क़ाज़ियों व जजों की ऐसी मा'क़ूल तनख़्वाहें मुक़र्रर कीं जिस से उन्हें किसी बैरूनी आमदनी की ह़ाजत न रहे और रिश्वत के तमाम चोर दरवाज़े बन्द हो जाएं। मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन रबीअ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰی عَلَيْهِما) की माहाना तनख़्वाह पांच पांच सौ दिरहम थी और यक़ीनन येह तनख़्वाह उस ज़माने के लिहाज़ से एक मा'क़ूल तनख़्वाह थी।[1]

(2)......जो शख़्स मालदार या मुअ़ज़्ज़ज़ न होता उसे क़ाज़ी मुक़र्रर नहीं किया जाता था नीज़ किसी क़ाज़ी को तिजारत और अपना ज़ाती कारोबार वग़ैरा करने की क़त्अ़न इजाज़त न थी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जो आप ने मक्तूब रवाना किया उस में इस बात की वज्ह भी तह़रीर फ़रमाई। इरशाद फ़रमाया :

لَا تَسْتَقْضِيَنَّ اِلَّا ذَا مَالٍ وَذَا حَسَبٍ فَاِنَّ ذَا الْمَالِ لَا يَرْغَبُ فِيْ اَمْوَالِ النَّاسِ وَاِنَّ ذَا الْحَسَبِ لَا يَخْشَى الْعَوَاقِبَ بَيْنَ النَّاسِ

"या'नी साहि़बे सरवत और अच्छे ख़ानदान वाले को क़ाज़ी बनाओ क्यूंकि जो मालदार होगा वोह लोगों के मालो दौलत से बे परवाह होगा और अच्छे ख़ानदान वाले को लोगों में (फ़ैसला करते हुवे) अन्जाम का ख़ौफ़ न होगा।"[2]

फ़ारूक़े आ'ज़म का एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिहादी अम्र

अ़द्ल के क़ियाम में माहिरीने फ़न की शहादत

अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इजतिहादात में से एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिहादी अम्र येह भी है कि आप ने क़ानून बनाया कि ऐसा मुक़द्दमा जो किसी मख़्सूस फ़न से तअ़ल्लुक़ रखता हो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उस मुक़द्दमे में उस फ़न के माहिरीन की शहादत और राए लेते फिर उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला फ़रमाते।

चुनान्चे, आप ने अपने ज़माने में अश्आ़र में हिजू करने से मन्अ़ फ़रमा दिया था, लेकिन उस वक़्त के एक शाइ़र ह़ुत़िय्या ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िब्रिक़ान बिन बद्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की हिजू में एक ऐसा शे'र कहा जिस से वाज़ेह़ त़ौर पर हिजू मा'लूम नहीं होती थी। अलबत्ता सय्यिदुना ज़िब्रिक़ान बिन बद्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मा'लूम था कि ह़ुत़िय्या ने येह शे'र मेरी हिजू में ही लिखा है, लिहाज़ा उन्हों ने फ़ौरन

1 ......فتح القدير، كتاب ادب القاضى، ج٦، ص ٢٦١۔

2 ......اخبار القضاة، كتاب عمر الى معاوية---الخ، ج١، ص٧٦۔

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में हुतै़य्या के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा कर दिया । चूंकि येह मुक़द्दमा फ़न्ने शाइ़री से तअ़ल्लुक़ रखता था इसी लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़न्ने शाइ़री में महारत रखने वाले सना ख़्वाने रसूल सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और इस मुक़द्दमे में उन की मुशावरत के बा'द उन की राए के मुत़ाबिक़ फ़ैसला फ़रमाया ।[1]

अ़दालती जजों का एह़तिसाब और उन की मा'ज़ूली

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निज़ामे अ़द्लिया के क़ियाम से मुतअ़ल्लिक़ इक़्दामात में से एक निहायत अहम क़दम येह भी है कि आप ने मुख़्तलिफ़ अ़दालतों में क़ाज़ियों व जजों के तक़र्रुर और उन की ता'लीमो तरबिय्यत के बा'द उन के एह़तिसाबी अ़मल को भी जारी व सारी रखा । वक़्तन फ़ वक़्तन आप उन से इम्तिह़ान लेते रहते और अगर किसी क़ाज़ी व जज से कोई बड़ी ग़लत़ी सादिर हो जाती तो उसे फ़िलफ़ौर मा'ज़ूल भी फ़रमा देते थे । चुनान्चे,

दिमश्क़ के क़ाज़ी की मा'ज़ूली

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़ारिब बिन दिसार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स से पूछा : **مَنْ اَنْتَ؟** ''या'नी तुम कौन हो ?'' उस ने अ़र्ज़ किया : **اَنَا قَاضِيْ دِمِشْق** ''या'नी मैं दिमश्क़ का क़ाज़ी हूं ।'' फ़रमाया : **كَيْفَ تَقْضِيْ** ''या'नी तुम फ़ैसला किस त़रह़ करते हो ?'' उस ने कहा : ''मैं **किताबुल्लाह** से फ़ैसला करता हूं ।'' फ़रमाया : **فَاِذَا جَاءَ مَا لَيْسَ فِيْ كِتَابِ اللّٰهِ** ''या'नी अगर तुम्हें **किताबुल्लाह** में न मिले तो ?'' अ़र्ज़ किया : ''**सुन्नते रसूलुल्लाह** से फ़ैसला करता हूं ।'' फ़रमाया : ''अगर तुम्हें **सुन्नते रसूलुल्लाह** में भी इस का ह़ल न मिले तो कैसे फ़ैसला करते हो ?'' उस ने अ़र्ज़ किया : **اَجْتَهِدُ بِرَاْيِيْ وَاُؤَامِرُ جُلَسَائِيْ** ''या'नी मैं इस मुआ़मले में अपनी राए से इजतिहाद करता हूं और अपने हम नशीनों से मुशावरत करता हूं ।'' येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और उसे शाबाश देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि तुम यूं दुआ़ मांगा करो : **اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ اَنْ اَقْضِيَ بِعِلْمٍ وَاَنْ اُفْتِيَ بِحِكَمٍ وَاَسْاَلُكَ الْعَدْلَ فِي الْغَضَبِ وَالرِّضٰى** ''या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस बात की तौफ़ीक़ दे कि मैं इ़ल्म के साथ फ़ैसला करूं, ह़िक्मत व दानाई के साथ फ़तवा दूं और ग़ुस्से व नर्मी दोनों ह़ालतों में अ़द्लो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करूं ।'' येह सुन

1 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الشعر المذموم، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٣٣٩، حديث: ٨٩١٥ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

कर वोह क़ाज़ी भी बहुत खुश हुवा और चला गया । लेकिन थोड़ी देर बा'द वोह दोबारा आप की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ करने लगा : "हुज़ूर ! इस ख़्वाब के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने देखा कि सूरज और चांद दोनों आपस में इस त़रह़ जंग कर रहे हैं कि दोनों के साथ सितारों की एक एक फ़ौज है ।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम इन दोनों में से किस के साथ हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "चांद के साथ" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! तुम येह कहते हो ह़ालांकि कुरआने पाक में तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ جَعَلْنَا الَّیْلَ وَ النَّهَارَ اٰیَتَیْنِ فَمَحَوْنَاۤ اٰیَةَ الَّیْلِ وَ جَعَلْنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً﴾(پ۱۵،بنی اسرائیل:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ("और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया तो रात की निशानी मिटी हुई रखी और दिन की निशानी दिखाने वाली की ।") फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मा'ज़ूल करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "وَاللّٰهِ لَا تَلِيْ عَمَلًا اَبَدًا" "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तू आइन्दा कभी भी फ़ैसला नहीं करेगा ।"(1)

सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित की मा'ज़ूली

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा का क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया था । एक दफ़्आ़ अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान किसी मुआ़मले में तनाज़ोअ़ हो गया और फ़ैसले के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए, वहां सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़ैसला करने में दो ख़त़ाएं सरज़द हो गईं । एक तो आप ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बैठने के लिये जगह कुशादा की और दूसरा उन से क़सम लेने के मुआ़मले में नर्मी से काम लिया । लिहाज़ा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को मा'ज़ूल कर दिया ।(2)

क़ाज़ियों के फ़ैसलों पर कड़ी नज़र

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने अ़दालती जजों के फ़ैसलों पर कड़ी नज़र रखते थे, अगर किसी के फ़ैसले में ज़रा सा भी कोई शुबा होता या कोई

1 ......كنز العمال، كتاب الخلافة مع الامارة، ادب القضاء، الجزء: ۵، ج۳، ص ۳۲۲، حديث: ۱۴۴۴۴۔

2 ......سنن كبرى، كتاب آداب القاضى، باب انصاف الخصمين۔۔۔الخ، ج۱۰، ص ۲۲۹، حديث: ۲۰۴۶۳۔

www.dawateislami.net

कमज़ोरी दिखाई देती तो फ़ौरन उस की पकड़ फ़रमाते। या अगर किसी क़ाज़ी के फ़ैसलों के मुतअ़ल्लिक़ शिकायात मौसूल होतीं तो भी आप उस के ख़िलाफ़ तफ़्तीश फ़रमाते। बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता कि आप एक तजरिबा कार क़ाज़ी (Senior Judge) को किसी दूसरे आ़म क़ाज़ी (Junior judge) के फ़ैसलों पर नज़र रखने का हुक्म भी देते। चुनान्चे, आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मरयम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़ैसलों पर नज़र रखने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, लेकिन इन के मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत ज़ियादा शिकायात मौसूल हुईं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मा'ज़ूल फ़रमा दिया।[1]

निज़ामे अ़द्लिया का अस्ल मक़्सद

फ़ारूके़ आ'ज़म ने इन्साफ़ का ह़ुसूल आसान बना दिया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अ़द्लिया का निज़ाम क़ाइम फ़रमाया, क़ाज़ियों का तक़र्रुर फ़रमाया, फ़ैसला करने के उसूलो ज़वाबित़ बयान फ़रमाए इन तमाम का मक़्सद दर अस्ल अ़द्लो इन्साफ़ के ह़ुसूल को आसान बनाना था ताकि हर ख़ासो आ़म तक अ़द्लो इन्साफ़ की रसाई हो, कोई शख़्स ज़ुल्मो सितम का शिकार न हो। अ़ह्दे फ़ारूक़ी का येह निज़ामे अ़द्लिया आज दुन्या के उन तमाम मुमालिक के लिये एक बेहतरीन नमूना है जिन में अ़द्लिया के नाम पर ऐसा ज़ालिमाना निज़ाम राइज है जिस तक पहुंचने के लिये अ़वामुन्नास कोशिश करने के बजाए उस को देख कर ही ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं। अक्सर औक़ात वोह अपने निजी मुआ़मलात को तो वैसे ही दबा लेते हैं जब कि माली लैन दैन के मुआ़मले में सुल्ह़ सफ़ाई कर लेते हैं लेकिन कोर्ट के चक्कर नहीं लगाते क्यूंकि इन्हें वहां से इन्साफ़ मिलने की उम्मीद नहीं होती। आज भी अगर "इन्साफ़ के ह़ुसूल में आसानी" जैसे अ़ज़ीम नुक्ते को सामने रखते हुवे अ़द्लिया का निज़ाम क़ाइम किया जाए तो मुआ़शरे से कई बुराइयों का ख़ातिमा हो सकता है।

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की अ़दालत गाहें

इसी अ़ज़ीम मक़्सद के पेशे नज़र सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़दालत के क़ियाम के लिये मख़्सूस इमारतें ता'मीर नहीं फ़रमाई थीं, बल्कि आप के अ़ह्द में अ़दालतें मस्जिदों में ही क़ाइम की जाती थीं ताकि अमीर व ग़रीब हर ख़ासो आ़म वहां पहुंच कर अपना मुद्दआ़ पेश कर सके

---

1 .....كنز العمال، كتاب الخلافة، ادب القضاء، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۲۳، حديث: ۱۴۴۵۰، اخبار القضاة، خبر ابى ـــ الخ، ج ۱، ص ۲۷۲-

www.dawateislami.net

और बिग़ैर रक़म ख़र्च किये इन्साफ़ ह़ासिल कर सके। नीज़ अ़दालती क़ाज़ियों और जजों को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से येह भी हिदायत थी कि कोई कितना ही ग़रीब और मुफ़्लिस शख़्स मुक़द्दमे का फ़रीक़ बन कर आए उस से नर्मी और कुशादगी से पेश आएं ताकि उसे अपना मुद्दआ़ बयान करने में किसी क़िस्म की कोई हिचकिचाहट मह़सूस न हो। नीज़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़दालत लोगों के लिये सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) की ह़ैसिय्यत रखती थी। येही वज्ह थी कि अगर लोगों को आप के मुक़र्रर कर्दा क़ाज़ियों व जजों के फ़ैसलों से इत्तिफ़ाक़ न होता तो वोह अपने मुआ़मलात में अ़द्लो इन्साफ़ के ह़ुसूल के लिये बराहे रास्त आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाते। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'ज़ क़ाज़ी जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आता है कि आप दोनों अपने घर में लोगों के फ़ैसले करते नीज़ ह़ुदूद भी जारी फ़रमाते थे।

कोई ज़िल्अ़ क़ाज़ी से ख़ाली न था

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में कोई ज़िल्अ़ क़ाज़ी से ख़ाली न था, इस्लामी अ़दालतों में अक्सरो बेशतर मुसलमानों ही के मुक़द्दमात आते थे जिन्हें सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़दालती क़ाज़ी व जज ह़ज़रात के ज़रीए़ बत़रीक़े अह़सन निमटाने का इन्तिज़ाम फ़रमा दिया।

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में अ़वाम की क़ानून से वाक़िफ़िय्यत

मुजरिम के ह़क़ में ला इल्मी ह़ुज्जत नहीं

जब किसी मुजरिम का मुक़द्दमा अ़दालत में पेश हो और उस के ख़िलाफ़ फ़ैसला हो तो उस की अपने जुर्म से ला इ़ल्मी उस के ह़क़ में ह़ुज्जत नहीं बन सकती। आज भी दुन्या के तक़रीबन सब ही मुमालिक में येही उसूल राइज है लेकिन इस उ़ज़्र को दूर करने की कोई इ़ल्मी सूरत नहीं है, बा'ज़ मुमालिक में क़ानून की ता'लीम तो दी जाती है लेकिन वोह इतने मह़दूद पैमाने पर होती है या इस के अख़राजात इतने होते हैं कि हर ख़ासो आ़म की वहां तक रसाई नहीं होती। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस उ़ज़्र को दूर करने के लिये इस का अ़मली तदारुक भी फ़रमाया। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी के माहिर क़ानून दान

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ उ़लूम के माहिर फ़ुक़हा सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व दीगर अश्ख़ास को लोगों की मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में क़ानूनी व शरई रहनुमाई करने की ज़िम्मेदारी सोंपी ताकि जब कोई शख़्स उन से मस्अला दरयाफ़्त करे तो वोह उसे मुकम्मल मस्अला बताएं। इस सूरत में गोया हर शख़्स जब चाहे क़ानूनी और शरई मसाइल से वाक़िफ़िय्यत ह़ासिल कर सकता था लिहाज़ा कोई शख़्स ला इल्मी का भी उ़ज़्र नहीं कर सकता था। इस मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो त़रीक़े से पेश रफ़्त फ़रमाई :

(1)......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शरई व क़ानूनी रहनुमाई की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ मख़्सूस अफ़राद को अ़त़ा फ़रमाई, हर ख़ासो आ़म को इस की इजाज़त न दी ताकि ग़लत़ मसाइल की तरवीज से बचा जा सके। आप ने जिन लोगों को येह इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई उन में बड़े बड़े नामवर मुह़द्दिसीन व फ़ुक़हा और मुफ़्तियाने किराम भी शामिल थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें इ़ल्म की नश्रो इशाअ़त के लिये मुख़्तलिफ़ बड़े बड़े शहरों में मुक़र्रर फ़रमाया। इन में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्मा सरे फ़ेहरिस्त हैं।[1]

(2)......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तमाम नामवर शख़्सिय्यात के अस्माए मुबारका अ़वामुन्नास के सामने ज़िक्र कर दिये जिन से क़ानूनी व शरई रहनुमाई की इजाज़त थी, एक बार नहीं बल्कि बारहा मक़ामात पर आप ने इस बात का ज़िक्र किया मुल्के शाम के सफ़र में जाबिया के मक़ाम पर जो आप ने ख़ुत़बा दिया उस के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं :

مَنْ اَرَادَ الْقُرْآنَ فَلْیَاْتِ اُبَیًّا...... "या'नी जो क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करना चाहता हो वोह ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाए।"

1...अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मुख़्तलिफ़ मुफ़्तियाने किराम की इ़ल्मी ख़िदमात की तफ़्सील के लिये इसी किताब का सफ़ह़ा 483 मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

وَمَنْ اَحَبَّ اَنْ يَّسْاَلَ عَنِ الْفَرَائِضِ فَلْيَاْتِ زَيْداً...... "और जिसे इल्मुल फ़राइज़ या'नी मीरास से मुतअ़ल्लिक़ कोई मस्अला पूछना हो तो वोह ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाए।

وَمَنْ اَحَبَّ اَنْ يَّسْاَلَ عَنِ الْفِقْهِ فَلْيَاْتِ مُعَاذاً...... "और जिसे कोई फ़िक़्ही मस्अला पूछना हो तो वोह ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाए।"

وَمَنْ اَحَبَّ اَنْ يَّسْاَلَ عَنِ الْمَالِ فَلْيَاْتِنِيْ فَاِنَّ اللّٰهَ جَعَلَنِيْ لَهٗ خَازِناً وَّقَاسِماً...... "और जिसे कोई माली मस्अला मा'लूम करना हो तो वोह मेरे पास ही आए क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस का "ख़ाज़िन" या'नी जम्अ़ करने वाला और "क़ासिम" या'नी तक़्सीम करने वाला बनाया है।"(1)

क़ानून दानों से पूछगछ

वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़्कूरए बाला उ़लमा व फ़ुक़हा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को क़ानूनी व शरई रहनुमाई के लिये न सिर्फ़ मुक़र्रर फ़रमाया था बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से मसाइल के मुतअ़ल्लिक़ पूछगछ भी फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दौराने गुफ़्त्गू एक मस्अला दरयाफ़्त किया कि "अगर तुम क़ाज़ी या किसी शहर के वाली होते, फिर तुम किसी शख़्स को इस ह़ालत में देखते कि उस पर ह़द जारी की जाए तो क्या तुम उस पर ह़द जारी कर देते?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया: "मैं उस वक़्त तक ह़द जारी न करता जब तक मेरे इलावा भी कोई उस के ख़िलाफ़ गवाही न दे देता।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह जवाब सुन कर इरशाद फ़रमाया: اَصَبْتَ وَلَوْ قُلْتَ غَيْرَ ذٰلِكَ لَمْ تَجِدْ "तुम ने सह़ीह़ कहा अगर इस के इलावा कोई और जवाब देते तो ग़लती पर होते।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले

अ़ह्दे रिसालत में फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझ से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया:

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، ماقالوافیمن یبدافی الاعطیة، ج۷، ص ۶۲۰، حدیث:۲۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الحدود، باب فی الوالی یری الرجل، ج۶، ص ۵۶۸، حدیث:۱۔

www.dawateislami.net

مَا یَمْنَعُکَ مِنَ الْقَضَاءِ وَقَدْ کَانَ اَبُوْکَ یَقْضِیْ عَلٰی عَھْدِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

"या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ! तुम्हें लोगों के फ़ैसले करने से क्या चीज़ रोकती है ? तुम्हारे वालिद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में फ़ैसले किया करते थे।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! न मैं अपने वालिदे गिरामी की त़रह़ हूं और न ही आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ हैं।" मेरे वालिदे गिरामी पर जब किसी बात का फ़ैसला करना मुश्किल हो जाता तो वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछ लेते थे और हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई इश्काल होता तो वोह सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام के वासित़े से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पूछ लेते थे। और मुझे ओ़ह्दए क़ज़ा की बिल्कुल तमन्ना नहीं है। क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि :

مَنْ کَانَ قَاضِیاً فَقَضٰی بِالْجَھْلِ کَانَ مِنْ اَھْلِ
النَّارِ وَمَنْ کَانَ قَاضِیاً فَقَضٰی بِالْجَوْرِ کَانَ مِنْ اَھْلِ النَّارِ وَمَنْ کَانَ قَاضِیاً عَالِماً یَقْضِیْ بِحَقٍّ اَوْ بِعَدْلٍ سَاَلَ التَّفَلُّتَ کَفَافاً

"या'नी जहालत के साथ फ़ैसला करने वाला क़ाज़ी जहन्नमी है और ज़ुल्म के साथ फ़ैसला करने वाला क़ाज़ी भी जहन्नमी है और जो साह़िबे इ़ल्म क़ाज़ी ह़क़ या अ़द्ल के साथ फ़ैसला करे तो उस ने बराबरी की बुन्याद पर जां बख़्शी का सुवाल किया।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : مَا اُحِبُّ اَنْ تُحَدِّثَ قُضَاتَنَا فَتُفْسِدُھُمْ عَلَیْنَا "या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह ! येह ह़दीस हमारे क़ाज़ियों को न सुनाना, नहीं तो वोह मन्सबे क़ज़ा छोड़ देंगे और हमारे काम के न रहेंगे।"(1)

अ़ह्दे रिसालत में फ़ारूक़े आ'ज़म का तारीख़ी फ़ैसला

अ़हदे रिसालत में एक यहूदी मुनाफ़िक़ ने बारगाहे रिसालत से अपना फ़ैसला करवाया जिसे मुनाफ़िक़ ने तस्लीम न किया और दोनों सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में आए। जब आप को मा'लूम हुवा कि मुनाफ़िक़ ने बारगाहे रिसालत का फ़ैसला तस्लीम नहीं किया तो तल्वार से उस मुनाफ़िक़ का सर तन से जुदा कर दिया फिर इरशाद फ़रमाया :

(1)..... صحیح ابن حبان، کتاب القضاء، ذکر الزجر ـــ الخ، الجزء: ۷، ج۵، ص ۲۵۷، حدیث: ۵۰۳۴، ریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۳۵۔

www.dawateislami.net

هٰكَذَا اَقْضِیۡ بَیۡنَ مَنۡ لَمۡ یَرۡضَ بِقَضَاءِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "या'नी जो रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से राज़ी नहीं मैं उस का फ़ैसला यूं करूंगा।"(1)

अ़ह्दे सिद्दीक़ी में फ़ारूक़े आ'ज़म के फ़ैसले

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ुद क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया था और आप को इस्लाम के सब से पहले क़ाज़ी होने का शरफ़ ह़ासिल हुवा लेकिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास अ़ह्दे सिद्दीक़ी में कोई भी मुक़द्दमा नहीं आया जिस का आप ने फ़ैसला फ़रमाया हो, कुतुबे सियर व तारीख़ के मुत़ालए़ से इस की दर्जे ज़ैल वुजूहात सामने आती हैं :

(1)......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जैसे ही ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों ने सर उठाया, ख़लीफ़ए वक़्त समेत तमाम मुसलमान उन्ही फ़ित्नों की सरकोबी में मसरूफ़ हो गए। येह एक नफ़्सियाती अम्र है कि जब कोई शख़्स किसी दूसरे की ज़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो उ़मूमन उस की तवज्जोह अपनी ज़ात की त़रफ़ बहुत कम होती है, येही वज्ह है कि मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों की त़रफ़ मुतवज्जेह होने की वज्ह से लोगों के दरमियान ऐसे मुआ़मलात ही बहुत कम पेश आए जिन के फ़ैसले के लिये किसी क़ाज़ी के पास जाना पड़ता।

(2)......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه निहायत ही शफ़ीक़ और नर्म दिल थे, जब कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जलाली और रो'ब व दबदबे वाले थे, लोग आप से बहुत डरते थे। येह एक फ़ित़री बात है कि जब दो ऐसे शख़्सों में से किसी के पास जाना पड़े जिन में से एक जलाली त़बीअ़त का हो और दूसरा जमाली त़बीअ़त का तो जमाली त़बीअ़त वाले की त़रफ़ मैलान ज़ियादा होता है। येही वज्ह है कि लोगों के दरमियान कभी कोई ऐसा मुआ़मला हो भी जाता तो वोह सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में चले जाते और वहीं से फ़ैसला करवा लेते।

(3)......अ़ह्दे सिद्दीक़ी में जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه क़ाज़ी मुक़र्रर हुवे तो आप का कोई अ़लाहि़दा से मक्तब (Office) वग़ैरा न था जहां लोग अपने मुआ़मलात के ह़ल के लिये

---

(1)......درمنثور، پ۵، النساء، تحت الآیۃ: ۶۰، ج۲، ص۵۸۲۔

www.dawateislami.net

आते । आप सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ साथ होते, इसी वज्ह से बिलफ़र्ज़ कोई अपने मुआ़मले का फ़ैसला करवाने आता भी तो सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौजूदगी में उन्ही से फ़ैसला करवा लेता, या सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ैसला करते भी तो सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नफ़ाज़ के सबब वोह फ़ैसला उन्ही की त़रफ़ मन्सूब हो जाता ।

फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले दूसरों के लिये नज़ीर हैं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़द्लिया के निज़ाम को ऐसा मज़्बूत़ फ़रमाया, ऐसे ऐसे उसूलो ज़वाबित़ मुक़र्रर फ़रमाए, क़ाज़ियों की ऐसी तरबिय्यत फ़रमाई कि आप के तमाम फ़ैसले उस वक़्त की तमाम हुकूमतों और उस के बा'द की तमाम हुकूमतों के लिये नज़ाइर की ह़ैसिय्यत इख़्तियार कर गए । यक़ीनन जो फ़ैसला बा क़ाइदा उसूलो ज़वाबित़ और अ़द्लो इन्साफ़ के तक़ाज़ों को सामने रखते हुवे किया गया हो उस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा दीगर फ़ैसलों के मुक़ाबले में ब ख़ूबी लगाया जा सकता है । इसी वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाया करते थे : مَنْ سَرَّہٗ اَنْ یَّاْخُذَ بِالْوَثِیْقَۃِ مِنَ الْقَضَاءِ فَلْیَاْخُذْ بِقَضَاءِ عُمَرَ فَاِنَّہٗ کَانَ یَسْتَشِیْرُ ''या'नी जो शख़्स दुरुस्त फ़ैसले करना चाहता हो उसे चाहिये कि वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसलों को देखा करे क्यूंकि आप अपने फ़ैसलों में मश्वरा फ़रमाया करते थे ।''(1)

बा'द के ख़ुलफ़ा ने भी फ़ारूक़ी फ़ैसलों को बर क़रार रखा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसले क़ुरआनो सुन्नत के बिल्कुल ऐन मुत़ाबिक़ होते थे, इस की पुख़्तगी का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो फ़ैसले अपने अ़ह्द में किये बा'द वाले ख़ुलफ़ा ने भी इन को बर क़रार रखा । चुनान्चे,

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी की इत्तिबाए़ फ़ारूक़ी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, तदफ़ीन के मौक़अ़ पर वहां ख़ैमा नस्ब किया गया । लोगों ने उस ख़ैमे पर ए'तिराज़ करना शुरूअ़ कर दिया, जब बातें ह़द से ज़ियादा बढ़ गईं तो सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से इरशाद फ़रमाया : ''क्या तुम में से कोई इस बात को जानता है कि अमीरुल

(1) ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب مشاورۃ الوالی والقاضی فی الامر، ج ۱۰، ص ۱۸۷، حدیث: ۲۰۳۰۵۔

www.dawateislami.net

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तदफ़ीन के मौक़अ़ पर इसी त़रह़ ख़ैमा नस्ब फ़रमाया था ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "जी हां, हम जानते हैं।" फ़रमाया : "क्या उस वक़्त किसी ने फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कलाम किया था ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "नहीं।"(1) (या'नी जब फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ैमे लगाने पर कोई ए'तिराज़ नहीं किया तो मुझ पर क्यूं ए'तिराज़ करते हो ? मैं ने भी उन्हीं की इत्तिबाअ़ में ख़ैमा लगाया है !)

मौला अ़ली शेरे ख़ुदा की इत्तिबाए फ़ारूक़ी

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में नजरान के नसारा की आबादी बढ़ गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन लोगों के बारे में ख़त़रा मह़सूस किया और उन में बाहम इख़्तिलाफ़ भी पैदा हो गया। चुनान्चे, उन का एक वफ़्द सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और आप से किये गए मुआ़हदे में तब्दीली का मुत़ालबा किया। आप ने उन की बात मान ली और मुआ़हदे में तब्दीली कर दी। बा'दे अज़ां वोह लोग बहुत शरमिन्दा हुवे और उन्हों ने कुछ और सोचा, फिर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और तब्दीली का मुत़ालबा किया कि उसी पहले वाले हुक्म को बह़ाल कर दें, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने इस बात की सिफ़ारिश भी की लेकिन आप ने इन्कार फ़रमा दिया बहर ह़ाल वोह मायूस हो गए। बा'दे अज़ां सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में भी आप का किया हुवा मुआ़हदा बर क़रार रहा। जब सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) का अ़ह्दे ख़िलाफ़त आया तो उन्हों ने आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि आप ही इस मुआ़हदे को बह़ाल कर दें क्यूंकि अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आप ने ही इस की सिफ़ारिश की थी और इस मुआ़हदे को तह़रीर किया था। लेकिन मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाफ़िज़ किया हुवा फ़ैसला तब्दील न फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : **وَيْحَكُمْ اَنَّ عُمَرَ كَانَ رَشِيْدَ الْاَمْرِ** "या'नी तुम्हारी बरबादी हो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल सह़ीह़ फ़ैसला फ़रमाया था।"(2)

---

1 ......طبقات کبری، زینب بنت جحش، ج۸، ص ۸۹۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی فضل عمر، ج۷، ص ۴۸۳، حدیث: ۲۷ مختصرا۔

سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب من اجتهد۔۔۔الخ، ج۱۰، ص۲۰۵، حدیث: ۲۰۳۷۶ مختصرا۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म के फ़ैसलों की ता'दाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अ़ह्दे मुबारका में फ़ुतूह़ात की बहुत कसरत हुई, जिस की वज्ह से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों की ता'दाद में ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हुवा, जूं जूं मुसलमानों की आबादी में इज़ाफ़ा हुवा उन के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में लैन दैन और मुआ़शरती मेल जोल की वज्ह से बेशुमार मसाइल भी सामने आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन तमाम मसाइल को अपनी फ़िरासते कामिला से बत़रीक़े अह़सन ह़ल फ़रमाया। कुतुबे सियर व तारीख़ में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में जिन फ़ैसलों का तज़किरा मिलता है दर ह़क़ीक़त वोह उन फ़ैसलों का अ़शरे अ़शीर भी नहीं है जो आप ने अपनी मुकम्मल ह़याते त़य्यिबा में फ़रमाए। बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हज़ारों फ़ैसले ऐसे भी हैं जिन्हें तारीख़ के औराक़ में मह़फ़ूज़ न किया जा सका लिहाज़ा आप के तमाम फ़ैसलों को बयान करना मुश्किल ही नहीं बल्कि तक़रीबन नामुमकिन है।

फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला करने का अन्दाज़

फ़ैसला करने से क़ब्ल दुआ़ मांगते

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास जब दो फ़रीक़ फ़ैसले के लिये आते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घुटनों के बल बैठ जाते और यूं दुआ़ फ़रमाते : اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلَیْھِمَا فَاِنَّ کُلَّ وَاحِدٍ مِّنْھُمَا یُرِیْدُنِیْ عَنْ دِیْنِیْ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इन दोनों के मुआ़मले में मेरी मदद फ़रमा क्यूंकि इन दोनों में से हर एक मुझे मेरे दीन के मुआ़मले में आज़माइश में मुब्तला करना चाहता है।"(1)

फ़क़त़ ह़क़ बात का ही फ़ैसला फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़क़त़ ह़क़ बात का ही फ़ैसला फ़रमाया करते थे अगर्चे वोह किसी भी जानिब होता। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : مَا اُبَالِیْ اِذَا اخْتَصَمَ اِلَیَّ الرَّجُلَانِ لِاَیِّھِمَا کَانَ الْحَقُّ "या'नी जब मेरे पास कोई दो शख़्स अपना मुक़द्दमा ले कर आते हैं तो मुझे इस बात की क़त़्अ़न परवाह नहीं होती कि ह़क़ किस की त़रफ़ होगा।"(2)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۱۹-

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۰-

www.dawateislami.net

फै़सला दुरुस्त ! तो अल्लाह की त़रफ़ से, ग़लत़ ! तो उ़मर की त़रफ़ से

हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब ने किसी फै़सले या मक्तूब के आखि़र में येह लिख दिया : هٰذَا مَا اَرَى اللّٰهُ اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عُمَرَ "या'नी येह वोह फै़सला है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ज़ाहिर फ़रमाया।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे डांट कर इरशाद फ़रमाया बल्कि यूं लिखो : مَا رَاٰى عُمَرُ فَاِنْ كَانَ صَوَابًا فَمِنَ اللّٰهِ وَاِنْ كَانَ خَطَاءً فَمِنْ عُمَرَ "या'नी उ़मर ने जो फै़सला किया अगर वोह दुरुस्त है तो यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और अगर ग़लत़ है तो येह उ़मर की त़रफ़ से है।"[1]

दिल में नर्म गोशा होता तो फै़सला न फ़रमाते

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फै़सला करने में ह़द दरजा एह़तियातें फ़रमाते थे ताकि कोई शख़्स भी अ़द्लो इन्साफ़ से मह़रूम न रहे, इन एह़तियातों में से एक एह़तियात येह भी थी कि अगर फ़रीक़ैन में से किसी के बारे में आप के दिल में कोई नर्म गोशा होता तो उस मुक़द्दमे का क़त्अ़न फै़सला न फ़रमाते। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना लैस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में दो शख़्स अपना मुक़द्दमा ले कर आए तो आप ने उन के मुआ़मले का फै़सला न फ़रमाया। वोह दूसरी मरतबा ह़ाज़िर हुवे तो भी आप ने ऐसा ही किया कि फै़सला न फ़रमाया। अलबत्ता जब तीसरी बार ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के माबैन फै़सला फ़रमा दिया। जब इस की वज्ह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : "जब येह दोनों पहली मरतबा मेरे पास आए थे तो उस वक़्त उन दोनों में से एक के बारे में मेरे दिल में नर्म गोशा था, इस लिये मैं ने मुनासिब न समझा कि इन के माबैन कोई फै़सला करूं, इसी त़रह़ दूसरी मरतबा में मेरे दिल की वोही कैफ़िय्यत थी, अलबत्ता जब तीसरी मरतबा येह दोनों आए तो मेरी वोह कैफ़िय्यत न थी इस लिये फै़सला कर दिया।"[2]

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب مایقضی بہ۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۱۹۷، حدیث: ۲۰۳۴۸۔

2 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، الاقضیۃ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۳۳، حدیث: ۱۴۵۲۰۔

www.dawateislami.net

यहूदी ने दुरुस्त फ़ैसले की गवाही दी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़द्लो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करना इतना मश्हूर था कि अपने तो अपने ग़ैर भी इस की गवाही देते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक काफ़िर और मुसलमान का मुक़द्दमा पेश हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहूदी के ह़क़ में फ़ैसला दे दिया। यहूदी ने अ़र्ज़ किया : وَاللّٰہِ لَقَدْ قَضَیْتَ بِالْحَقِّ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने मेरे लिये बिल्कुल इन्साफ़ के साथ फ़ैसला फ़रमाया है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे एक दुर्रा मारा और फ़रमाया : وَمَا یُدْرِیْکَ؟ "या'नी तुम येह कैसे जानते हो कि मैं ने इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया है ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हम ने येह बात तौरैत शरीफ़ में पढ़ी है कि इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करने वाले क़ाज़ी के साथ दाएं बाएं दो फ़िरिश्ते होते हैं जो उस की रहनुमाई करते और ह़क़ बात करने में उस की मुवाफ़िक़त करते रहते हैं, लेकिन जैसे ही वोह ह़क़गोई को तर्क करता है तो फ़िरिश्ते भी उस का साथ छोड़ देते हैं और वापस लौट जाते हैं।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ए'तिदाल के साथ फ़ैसला फ़रमाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के माबैन अ़द्लो इन्साफ़ करते हुवे निहायत ही ए'तिदाल से काम लेते थे, न तो बहुत ज़ियादा सख़्ती फ़रमाते थे और न ही नर्मी से काम लेते थे, बल्कि मियाना रवी से काम लेते थे। यक़ीनन एक क़ाज़ी के लिये येह अम्र निहायत ही ज़रूरी है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि एक बार चन्द अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इकठ्ठे हुवे जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

1 ......مؤطا امام مالک، کتاب الاقضیہ، الترغیب فی القضاء بالحق، ج ۲، ص ۲۴۳، حدیث : ۱۴۶۳۔

www.dawateislami.net

इन तमाम में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बात करने की ज़ियादा जुरअत रखते थे, लिहाज़ा सब ने उन से दरख़्वास्त की, कि हुज़ूर आप अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में अ़र्ज़ कीजिये कि जब कोई ज़रूरत मन्द आप की बारगाह में आता है तो आप के रो'ब व दबदबे और हैबत व जलाल की वज्ह से अपनी ज़रूरत बयान नहीं कर पाता और अपनी ह़ाजत ले कर वापस चला जाता है।

चुनान्चे, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे फ़ारूक़ी में जा कर बिऐ़निही येही अ़र्ज़ किया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से जान लिया कि येह किन ह़ज़रात की त़रफ़ से आए हैं, फ़रमाया : يَا عَبْدَ الرَّحْمٰنِ اَنْشُدُکَ اللّٰہَ اَعَلِیٌّ وَعُثْمَانُ وَطَلْحَۃُ وَالزُّبَیْرُ وَسَعْدٌ اَمَرُوْکَ بِھٰذَا "या'नी ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं कि क्या तुम्हें मेरे पास अ़ली, उ़स्मान, त़लह़ा, ज़ुबैर, सा'द ने येह कह कर भेजा है ?"

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि जी हुज़ूर इन्हीं ह़ज़रात ने मुझे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा है। इरशाद फ़रमाया : يَا عَبْدَ الرَّحْمٰنِ وَاللّٰہِ لَقَدْ لِنْتُ لِلنَّاسِ حَتّٰی خَشِیْتُ اللّٰہَ فِي اللِّیْنِ ثُمَّ اشْتَدَدْتُّ عَلَیْھِمْ حَتّٰی خَشِیْتُ اللّٰہَ فِي الشِّدَّۃِ فَاَیْنَ الْمَخْرَجُ "या'नी ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने लोगों के लिये इस क़दर नर्मी की, कि मैं इस नर्मी में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर गया। (कि कहीं वोह मेरी पकड़ न फ़रमा ले) फिर मैं ने उन पर सख़्ती की और इतनी सख़्ती की, कि इस सख़्ती में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर गया। (कि कहीं वोह मेरी पकड़ न फ़रमा ले) तो ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! अब तुम ही बताओ मैं कहां जाऊं ?" (या'नी न मैं बिल्कुल सख़्त हूं और न ही बिल्कुल नर्म हूं) येह सुन कर सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे उठ खड़े हुवे इस त़रह़ कि आप अपनी चादर को खींच रहे थे और साथ ही फ़रमा रहे थे : اُفٍّ لَھُمْ بَعْدَکَ اُفٍّ لَھُمْ بَعْدَکَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप के बा'द लोगों के लिये अफ़्सोस के सिवा कुछ नहीं, अफ़्सोस के सिवा कुछ नहीं।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म के चन्द तारीख़ी फ़ैसले

(1) अल्लाह का ख़लीफ़ा तुम से हरगिज़ नहीं डरता

ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۸۔

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास कुछ माल आया, आप ने उसे लोगों में तक़्सीम फ़रमाना शुरूअ़ किया, लोगों का बहुत ज़ियादा हुजूम लग गया। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के हुजूम में दाख़िल हुवे और आगे बढ़ते हुवे सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंच गए। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक दुर्रा लगाया और फ़रमाया : اِنَّکَ اَقْبَلْتَ لَا تَهَابُ سُلْطَانَ اللّٰهِ فِي الْاَرْضِ فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعَلِّمَکَ اَنَّ سُلْطَانَ اللّٰهِ لَنْ يَهَابَکَ "या'नी तुम यहां तक पहुंच गए हो, तुम ज़मीन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लीफ़ा से नहीं डरते हो लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम्हें येह बात अच्छी त़रह़ समझा दूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़लीफ़ा तुम से हरगिज़ नहीं डरता।"[1]

(2) अमीरुल मोमिनीन के बेटे का ऊंट

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने एक ऊंट ख़रीद कर चरागाह में छोड़ दिया। जब वोह मोटा ताज़ा हो गया तो उसे बेचने के लिये बाज़ार ले गया। बाज़ार में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र मेरे ऊंट पर पड़ गई। आप ने पूछा : لِمَنْ هٰذِهِ الْاِبِلُ "या'नी येह ऊंट किस का है?" तो बताया गया कि येह अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है।" तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ! हां हां ! अमीरुल मोमिनीन का बेटा" मैं जल्दी जल्दी अमीरुल मोमिनीन के पास ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "जी अमीरुल मोमिनीन।" फ़रमाया : "येह ऊंट कैसा है?" मैं ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर मैं ने इसे ख़रीदा और चरागाह में छोड़ दिया, मैं ने वैसा ही किया जैसे मुसलमान करते हैं।"

येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तन्ज़िया अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाया : اَرْعَوْا اِبِلَ ابْنِ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ اِسْقُوا اِبِلَ ابْنِ اَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ "या'नी अमीरुल मोमिनीन के बेटे के ऊंट को चराओ, अमीरुल मोमिनीन के बेटे के ऊंट को पानी पिलाओ।" फिर इरशाद फ़रमाया : يَا عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ اُغْدُ عَلٰى رَاْسِ مَالِکَ وَاجْعَلْ بَاقِيَهُ فِى بَيْتِ مَالِ الْمُسْلِمِينَ "या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ! इसे बेच कर जिस क़ीमत में तुम ने ख़रीदा था वोह अपने पास रख लो और मनाफ़ेअ़ बैतुल माल में जम्अ़ करवा दो।"[2]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۷۔

2 ......سنن کبری، کتاب احیاء الموات، باب ماجاء فی الحمی، ج ٦، ص ۲۴۳، حدیث: ۱۱۸۱۱۔

www.dawateislami.net

(3) अमीरुल मोमिनीन की ज़ौजा का तोह़फ़ा

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में शाहे रूम का क़ासिद आया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने बैतुल माल से एक दिरहम क़र्ज़ ले कर उस की खु़श्बू ख़रीदी और उसे बोतल में डाल कर क़ासिद के हाथ शाहे रूम की ज़ौजा के लिये तोह़फ़ा भेज दिया। बादशाह की बीवी ने उसी बोतल को इ़त्र से ख़ाली कर के उस में जवाहिरात डाल कर वापस सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा के लिये तोह़फ़ा भेज दिया।

जब वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा के पास पहुंचे तो उन्हों ने उन तमाम जवाहिरात को बोतल से निकाल कर अभी फ़र्श पर बिछाया ही था कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें देखा तो फ़रमाया : "येह क्या है ?" उन्हों ने सारा माजरा बयान किया तो आप ने उन तमाम जवाहिरात को बाज़ार में फ़रोख़्त कर दिया और उन की क़ीमत में से सिर्फ़ एक दीनार ज़ौजा को दे कर बाक़ी सारी रक़म बैतुल माल में जम्अ़ करवा दी।[1]

फ़ारूके़ आ'ज़म की जराइम के ख़िलाफ़ क़ानूनी सज़ाएं

जा'ली मोहर बनवाने वाले को सज़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक ऐसा ख़त़रनाक वाक़िआ़ पेश आया जो इस से पहले न आया था वोह येह था कि एक शख़्स ने हुकूमती मोहर की त़रह़ जा'ली मोहर बनवा ली और इस की तस्दीक़ से इस्लामी बैतुल माल से माल निकलवा लिया। बहर ह़ाल मुआ़मला मुन्कशिफ़ हो कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा तो आप ने उसे 100 कोड़े लगवाए और क़ैद कर दिया। उस ने अपनी सफ़ाई में कुछ कहना चाहा तो आप ने फिर सौ कोड़े लगवाए, फिर कुछ कहना चाहा तो तीसरी मरतबा फिर सौ कोड़े लगवाए और फिर जिला वत़न फ़रमा दिया।[2]

ज़िना पर मजबूर करने वालों को सज़ा

अ़हदे फ़ारूक़ी में चन्द बांदियां लाई गईं, उन्हें कुछ ग़ुलामों ने ज़िना करने पर मजबूर किया

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۲۶، تاریخ طبری، ج ۲، ص ۶۰۱۔

2 ......مرقاۃ المفاتیح، کتاب الحدود، باب التعزیر، الفصل الاول، ج ۷، ص ۲۲۳، تحت الحدیث: ۳۶۳۱۔

www.dawateislami.net

था । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन गुलामों को कोड़े लगवाए और लौंडियों को छोड़ दिया ।[1]

शराब नोशी की ह़द 80 कोड़े मुक़र्रर करना

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला और इस्लामी फ़ुतूह़ात की कसरत हुई, आबादियां दूर दूर तक फैल गईं, लोगों की इक्तिसादी ह़ालत बेहतर हो गई और ऐसे नौ मुस्लिमों की कसरत हो गई जो मुकम्मल त़रीक़े से इस्लामी तरबिय्यत और दीनी मा'लूमात से ना आश्ना थे तो इन में बहुत ज़ियादा शराब नोशी होने लगी । येह एक बहुत बड़ी आफ़त थी अगर इस को न रोका जाता तो मुमकिन था कि मुसलमानों की अक्सरिय्यत इस में मुब्तला हो जाती चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के मुशावरत की । सब ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि शराब नोशी की सज़ा अस्सी 80 कोड़े मुक़र्रर होनी चाहिये, लिहाज़ा तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इजमाअ़ से येही सज़ा नाफ़िज़ हो गई । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ासिद को मुल्के शाम से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा, आप मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ फ़रमा थे और ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) भी आप के साथ बैठे हुवे थे । क़ासिद ने आ कर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद का सलाम पेश किया और येह पैग़ाम भी दिया कि "लोग कसरत से शराब नोशी करने लगे हैं और सज़ा का भी मज़ाक़ उड़ाते हैं लिहाज़ा आप इस के बारे में कोई हुक्म इरशाद फ़रमाइये ।" सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने फ़रमाया : "शराब पीने वाला जब शराब पियेगा तो नशे में बद मस्त हो जाएगा, फिर बकवास व बे हूदा बातें करेगा, जब बे हूदगी बकेगा तो दूसरों पर तोहमत भी लगाएगा और किसी पर तोहमत लगाने की सज़ा इस्लाम में अस्सी कोड़े है लिहाज़ा शराबी को अस्सी कोड़े लगाए जाएं ।" चुनान्चे, वहां मौजूद तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इस पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया । येह हुक्म तमाम क़ाज़ियों और गवर्नरों तक पहुंचा दिया गया बा'दे अज़ां सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी 80 कोड़े ही लगवाते थे ।[2]

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الحدود، باب فی المستکرهة، ج۶، ص۵۰۵، حدیث: ۲۔

2 ......سنن کبری، کتاب السرقة، باب ماجاء فی عدد۔۔۔الخ، ج۸، ص۵۵۵، حدیث: ۱۷۵۳۹۔

www.dawateislami.net

शराब वाला घर नज़्रे आतश कर दिया

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़बीलए सक़ीफ़ के एक आदमी के घर में काफ़ी मिक़्दार में शराब मिली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मालिके मकान को कोड़े लगाने और उस घर को नज़्रे आतश करने का हुक्म दिया, चुनान्चे, उस घर को जला दिया गया । मालिके मकान का नाम "**रुवैशद**" था (येह "**राशिद**" की तसग़ीर है जिस का मत़लब है हिदायत देने वाला) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "तुम "**फुवैसक़**" हो ।"(1) ("**फुवैसक़**" येह "**फ़ासिक़**" की तसग़ीर है जिस का मत़लब है बुराई करने वाला)

फ़ारूके़ आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ फ़ैसले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्द में अह़कामे शरइय्या पर इस सख़्ती से अ़मल किया और दीगर लोगों पर भी सख़्ती फ़रमाई कि आप के बा'ज़ फ़ैसलों को लोगों ने येह समझा कि शायद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में ऐसा नहीं था आप ने अपने इजतिहाद से इन को नाफ़िज़ फ़रमाया है । ह़ालांकि येह बात अज़्हर मिनश्शम्स "या'नी सूरज से भी ज़ियादा रौशन है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में भी कुरआनो सुन्नत से माख़ूज़ अह़कामे शरइय्या का सख़्ती के साथ नफ़ाज़ फ़रमाया । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मन्सूब दो मस्अलों के ग़लत़ फ़ैसलों की मुख़्तसर वज़ाह़त पेशे ख़िदमत है :

फ़ारूके़ आ'ज़म और एक मजलिस की तीन त़लाक़ों का हुक्म

अगर कोई शख़्स अपनी ज़ौजा को एक ही मजलिस में तीन त़लाक़ें दे मसलन कोई अपनी ज़ौजा से यूं कहे : तुझे तीन त़लाक़, या यूं कहे : तुझे त़लाक़ है, त़लाक़ है, त़लाक़ है । इन सूरतों में तीन त़लाक़ें वाक़ेअ़ हो जाती हैं, अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में भी तीन ही त़लाक़ें वाक़ेअ़ होती थीं सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में भी तीन ही त़लाक़ें वाक़ेअ़ होती थीं । तीन त़लाक़ें एक साथ वाक़ेअ़ होने पर चन्द अह़ादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत है :

(1) ......مصنف عبد الرزاق، کتاب اھل الکتاب، بیع الخمر، ج۶، ص۶۲، حدیث:۱۰۰۸۵۔

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह ने इकट्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया

(1)......ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन लबीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दी गई जिस ने अपनी ज़ौजा को एक साथ तीन त़लाक़ें दीं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में खड़े हो गए और फ़रमाया : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब से मज़ाक़ किया जा रहा है, ह़ालांकि मैं तुम्हारे दरमियान मौजूद हूं।" एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं उस को क़त्ल न कर दूं ?"(1)

इस ह़दीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि एक साथ तीन त़लाक़ दे दी जाएं तो वाक़ेअ़ हो जाती हैं, अगर वाक़ेअ़ न होतीं तो फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाल में क्यूं आए और क्यूं फ़रमाया कि मेरे होते हुवे किताबुल्लाह के हुक्म या'नी हर तुहर में एक त़लाक़ दी जाए के ख़िलाफ़ क्यूं ग़लत़ त़रीक़ा इख़्तियार किया गया ? बल्कि फ़रमाते कोई बात नहीं एक साथ तीन त़लाक़ देने से एक ही वाक़ेअ़ होती है, जाओ रुजूअ़ कर लो। चुनान्चे, इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में अ़ल्लामा सिन्धी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : وَالْجُمْهُوْرُ عَلٰى اَنَّهٗ اِذَا جَمَعَ بَيْنَ الثَّلَاثِ يَقَعُ الثَّلَاثُ "या'नी जमहूर उ़लमा इसी पर मुत्तफ़िक़ हैं कि जब इकठ्ठी तीन त़लाक़ें दी जाएं तो तीनों वाक़ेअ़ हो जाती हैं।(2)

(2)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बिन ह़फ़्स बिन मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक जुम्ले में तीन त़लाक़ें दीं तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उन के शौहर से जुदा कर दिया और हमें येह बात नहीं पहुंची कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन पर कोई ऐ़ब लगाया हो।(3)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म ने यक मुश्त तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरा के एक शख़्स ने अपनी ज़ौजा को एक हज़ार त़लाक़ें दे दीं, जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़

1......نسائی، کتاب الطلاق، الثلاث المجموعۃ ومافیہ من التغلیظ، ص ۵۵۴، حدیث: ۳۳۹۸۔

2......حاشیۃ الامام سندھی علی النسائی، کتاب الطلاق، الثلاث المجموعۃ مافیہ من التغلیظ، ج ۳، ص ۱۴۳۔

3......دارقطنی، کتاب الطلاق والخلع والایلاء وغیرہ، ج ۴، ص ۱۴، حدیث: ۳۸۷۷۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उस की मुलाक़ात हुई तो आप ने उस से फ़रमाया : ''तू ने अपनी ज़ौजा को एक हज़ार त़लाक़ें दी हैं ? उस ने कहा : ''मैं ने तो मज़ाक़ किया था।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को एक दुर्रा मारा और फ़रमाया : ''इन में से तुझे तीन ही काफ़ी हैं।''(1)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस वाक़िए से दो मस्अले मा'लूम हुवे कि मज़ाक़ में त़लाक़ देने से भी त़लाक़ वाके़अ़ हो जाती है, दूसरा मस्अला येह मा'लूम हुवा कि तीन त़लाक़ें एक साथ देने से वाके़अ़ हो जाती हैं।

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने इकट्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफे़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हाइज़ा की त़लाक़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने इस को वोही बताया जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया था। फ़रमाते हैं : ''अगर तू ने अपनी औ़रत को एक या दो त़लाक़ें यकमुश्त दी हैं तो बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे रजअ़त का हुक्म फ़रमाया और अगर तू ने एक दम तीन त़लाक़ें दी हैं तो बेशक तेरी औ़रत तुझ पर ह़राम हो गई जब तक वोह किसी दूसरे ख़ावन्द से निकाह़ न करे लेकिन बिलाशुबा तू ने एक दम तीन त़लाक़ें दे कर अपने रब के उस हुक्म में ना फ़रमानी की जो उस ने त़लाक़ के बारे में तुझे दिया था।''(2)

सय्यिदुना मौला अ़ली ने इकट्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अबी साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''मैं ने अपनी ज़ौजा को यकमुश्त एक हज़ार त़लाक़ें दे दी हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने फ़रमाया : ''तीन त़लाक़ ने उसे तुझ पर ह़राम कर दिया और बाक़ी तू अपनी और बीवियों के दरमियान तक़्सीम कर दे।''(3) (या'नी वोह लग़्व हैं।)

---

1 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب الطلاق، باب المطلق ثلاثا، ج۶، ص۳۰۶، حدیث: ۱۱۳۸۴۔
سنن کبری، کتاب الخلع والطلاق، باب ماجاء فی امضاء الطلاق الثلاث۔۔۔الخ، ج۷، ص۵۴۷، حدیث: ۱۴۹۵۷ ملخصا۔

2 ......دارقطنی، کتاب الطلاق والخلاء والایلاء وغیرہ، ج۴، ص۳۳، حدیث: ۳۹۲۴۔

3 ......سنن کبری، کتاب الخلع والطلاق، باب ماجاء فی امضاء الطلاق۔۔۔الخ، ج۷، ص۵۴۷، حدیث: ۱۴۹۶۱۔

www.dawateislami.net

(2) फ़ारूक़े आ'ज़म और निकाहे मुतआ़ की हुरमत

वाज़ेह़ रहे कि मुअ़य्यिना मुद्दत के लिये किये गए निकाह़ को **"निकाहे मुतआ़"** कहते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वलन इस की इजाज़त दी थी लेकिन फिर ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर इस से मन्अ़ फ़रमा दिया। फिर फ़त्हे मक्का से क़ब्ल चन्द दिनों के लिये इस की इजाज़त दी और फ़त्हे मक्का के मौक़अ़ पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के लिये इसे ह़राम फ़रमा दिया चन्द अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم) ने फ़रमाया : "बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर के ज़माने में मुतआ़ से और पालतू गधों का गोश्त खाने से मन्अ़ फ़रमा दिया था।"(1)

(2)......ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें औत़ास के साल तीन दिन निकाहे मुतआ़ की रुख़्सत अ़ता फ़रमाई और फिर मन्अ़ फ़रमा दिया।"(2)

(3)......ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सबरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं ने तुम्हें औ़रतों से मुतआ़ करने की इजाज़त दी थी, लेकिन अब बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे क़ियामत तक के लिये ह़राम फ़रमा दिया है, पस जिस के पास कोई औ़रत हो उसे छोड़ दे और उसे जो दे दिया है वापस न ले।"(3)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़राम कर्दा निकाहे मुतआ़ की मुमानअ़त पर इस शिद्दत के साथ अ़मल करवाया कि कई लोगों को येह मुग़ालत़ा हो गया कि शायद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में येह ह़राम न था बल्कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे ह़राम फ़रमाया। ह़ालांकि सय्यिदुना फ़ारूक़े

1 ......بخاری، کتاب النکاح، باب نهی رسول الله۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۴۳۷، حدیث: ۵۱۱۵۔
2 ......مسلم، کتاب النکاح، باب نکاح المتعة۔۔۔الخ، ص ۷۲۸، حدیث: ۱۸۔
3 ......مسلم، کتاب النکاح، باب نکاح المتعة۔۔۔الخ، ص ۷۲۹، حدیث: ۲۱۔

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसे ज़िना क़रार देते थे और यक़ीनन येह इसी बिना पर था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मन्अ़ फ़रमा दिया था तो अब इस पर अ़मल करना ज़िना ही है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू नज़रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज्जे तमत्तोअ़ का हुक्म देते थे, जब कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस से मन्अ़ फ़रमाते थे। मैं ने इस बात को हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने ज़िक्र किया तो उन्हों ने फ़रमाया कि हमारे सामने येह बात हुई थी कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हज्जे तमत्तोअ़ किया था, फिर जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल के लिये जो चाहता था, जिस तरह चाहता था हलाल फ़रमाता था, लेकिन अब क़ुरआने पाक का नुज़ूल मुकम्मल हो चुका है, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस तरह हज व उ़मरह पूरा करने का हुक्म दिया है उसे पूरा करो और औ़रतों से निकाहे मुतआ़ करने से दूर रहते हुवे हमेशगी की शादी करो। अगर किसी आदमी ने किसी औ़रत से मुअ़य्यना मुद्दत के लिये निकाहे मुतआ़ किया और पकड़ा गया तो मैं उसे ज़रूर बिज़्ज़रूर संगसार करूंगा।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म अ़द्लो इन्साफ़ का नमूना थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़द्लो इन्साफ़ का बेहतरीन नमूना थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़द्लो इन्साफ़ की ऐसी मिसालें क़ाइम कीं जो क़ियामत तक आने वाले लोगों के लिये मश्अ़ले राह हैं, आप ने अ़द्लो इन्साफ़ के ज़रीए़ लोगों के क़ुलूबो अज़्हान को अपनी उल्फ़तो महब्बत में ऐसा वारफ़्ता किया कि अ़क़्लें हैरत ज़दा रह गईं, आप ने अ़द्लो इन्साफ़ की इस अ़मली दा'वत के ज़रीए़ ग़ैर मुस्लिमों के क़ुलूब को ईमान व यक़ीन के लिये वसीअ़ फ़रमा दिया, आप के अ़द्लो इन्साफ़ का दाइरा ऐसा वसीअ़ था कि जिस से न सिर्फ़ इन्सान बल्कि जानदार भी मुस्तफ़ीद हो रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम को इतनी गहराई और सन्जीदगी से अपनी हयाते तय्यिबा व अ़हदे ख़िलाफ़त में नाफ़िज़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका और "अ़द्लो इन्साफ़ और मुसावात" दोनों लाज़िम व मल्ज़ूम बन गए। इस की सब से बड़ी दलील येह है कि आज किसी मा'मूली शख़्स के सामने भी सय्यिदुना

(1) ......مسلم، کتاب المتعۃ، باب فی المتعۃ بالحج والعمرۃ، ص ۶۳۴، حدیث: ۱۴۵۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम लिया जाता है तो उस की ज़बान से अव्वलन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्लो इन्साफ़ का ज़िक्र आता है। ज़मीन भी आप के अ़द्ल की गवाही देती है, आप के अ़द्ल का वसीला पेश किया जाता है। चुनान्चे,

अ़द्ले फ़ारूक़ी पर ज़मीन की गवाही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्लो इन्साफ़ को खुद ज़मीन भी तस्लीम करती थी। चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा तक़िय्युद्दीन सुब्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی अपनी किताब **"त़बक़ातुश्शाफ़िइय्या"** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मदीना शरीफ़ में शदीद ज़लज़ला आया और ज़मीन हिलने लगी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ देर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करते रहे मगर ज़लज़ला ख़त्म न हुवा। फ़ौरन जलाल में आ गए और अपना दुर्रा ज़मीन पर मार कर फ़रमाया : **اِقِرِّیْ اَلَمْ اَعْدِلْ عَلَیْکِ** "या'नी ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा क्या मैं ने तेरे ऊपर इन्साफ़ नहीं किया है ?" येह फ़रमाते ही फ़ौरन ज़लज़ला ख़त्म हो गया और ज़मीन ठहर गई।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म के अ़द्ल का वसीला

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुश्किल वक़्त में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्लो इन्साफ़ का वसीला पेश किया तो दरयाए दिजला ने भी आप को जगह दे दी।

चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसरा के दारुल हुकूमत "मदाइन" को फ़त्ह़ करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सर परस्ती में एक लश्कर भेजा और क़ियादत ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिपुर्द की। मदाइन पहुंचने के लिये **"दरयाए दिजला"** उ़बूर करना पड़ता था जब येह लश्कर दरया के किनारे पहुंचा तो वहां किसी कश्ती का नामो निशान भी न था। इधर लश्करे इस्लाम मदाइन पर परचमे इस्लाम लहराने के लिये बेताब था और दिजला को अपने मक़्सूद के हुसूल में रुकावट समझ रहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लश्करे इस्लाम की बेताबी से आगाह थे लिहाज़ा उन्हों ने दरया को मुख़ात़ब करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

---

1 ...... الطبقات الشافعية الكبرى، ومنها على يد ـــ الخ، ج ٢، ص ٣٢٤ ـ

www.dawateislami.net

يَا بَحْرُ اِنَّکَ تَجْرِيْ بِاَمْرِ اللّٰهِ فَبِحُرْمَةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِعَدْلِ عُمَرَ خَلِيْفَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اِلَّا خَلَّيْتَنَا وَ الْعُبُوْرَ
"या'नी ऐ दिजला ! तू यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर चलता है। तुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हुरमत और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अ़द्ल का वासित़ा ! हमारे मक़्सद के हुसूल में रुकावट न बन।

येह इरशाद फ़रमा कर लश्कर को दरया में घोड़े दौड़ाने का हुक्म दिया, लश्कर ने हुक्म की ता'मील की और इस शान से दरयाए दिजला उ़बूर किया कि किसी का पाउं तक न भीगा।"[1]

अ़द्ले फ़ारूक़ी पर अहले बैत की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मदीनए मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) से मुलाक़ात हो गई, उन के साथ ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी थे। मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सलाम किया और आप का हाथ थाम लिया, ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) दोनों अपने वालिदे माजिद मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दाएं बाएं खड़े हो गए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ब वक़्ते मुलाक़ात रोते नहीं थे। मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अ़र्ज़ किया : مَا يُبْكِيْکَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कौन सी बात रुला रही है ?" फ़रमाया : مَنْ اَحَقُّ مِنِّيْ بِالْبُكَاءِ يَا عَلِيُّ وَقَدْ وُلِّيْتُ اَمْرَ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَحْكُمُ فِيْهَا وَلَا اَدْرِيْ اَمُسِيْءٌ اَنَا اَمْ مُحْسِنٌ "या'नी ऐ अ़ली ! मुझ से ज़ियादा कौन इस बात का ह़क़दार है कि वोह रोए क्यूंकि मुझे इस उम्मत के मुआ़मलात का ह़ाकिम बनाया गया है, मैं उन के दरमियान मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के फ़ैसले करता हूं और मुझे नहीं मा'लूम कि मैं बुरा करता हूं या अच्छा।" येह सुन कर मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अ़र्ज़ किया : وَاللّٰهِ اِنَّکَ لَتَعْدِلُ فِيْ كَذَا وَتَعْدِلُ فِيْ كَذَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस मुआ़मले में, उस मुआ़मले में ज़रूर अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेते हैं। येह सुन कर भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तसल्ली न हुई और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुसलसल रोते रहे, फिर सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मशिय्यते इलाही के साथ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की विलायत और अ़द्लो इन्साफ़ को बयान किया, येह सुन कर भी सय्यिदुना फ़ारूक़े

1 ......رياض النضرة، ج۱، ص۳۳۱، ازالة الخفاء، ج۴، ص۹۴۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तसल्ली न हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलसल रोते रहे, फिर सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मशिय्यते इलाही के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलायत और अ़द्लो इन्साफ़ को बयान किया। पस जैसे ही इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात मुकम्मल हुई सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चुप हो गए। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मुख़ात़िब हुवे और फ़रमाया : اَتَشْهَدَانِّ بِذٰلِکَ يَا اِبْنَيَّ اَخِي "या'नी ऐ मेरे भतीजो ! क्या तुम दोनों इस बात की गवाही देते हो ?" येह सुन कर दोनों शहज़ादों ने ख़ामोशी से अपने वालिदे माजिद मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की त़रफ़ देखा, तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने दोनों शहज़ादों से फ़रमाया : اِشْهَدَا وَاَنَا مَعَكُمَا شَهِيْدٌ "या'नी ऐ मेरे दोनों बेटो ! तुम दोनों इस बात के गवाह बन जाओ और साथ ही मैं भी तुम्हारे साथ इस का गवाह हूं।"(1)

इ़श्क़ो मह़ब्बत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ज़रा तसव्वुर तो कीजिये ! वोह कैसा रूह़ परवर मन्ज़र होगा जब मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों के चेहरे एक दूसरे की त़रफ़ हैं, उन दोनों के दाएं बाएं ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इस प्यारे अन्दाज़ में खड़े हैं कि दोनों के चेहरे एक दूसरे की त़रफ़ हैं। यक़ीनन येह मुबारक अन्दाज़ इ़श्क़ो मह़ब्बत का है, न कि बुग़्ज़ो अ़दावत का, मज़्कूरए बाला रिवायत ख़ानदाने फ़ारूके़ आ'ज़म और ख़ानदाने अह्ले बैत के माबैन इ़श्क़ो मह़ब्बत की बेहतरीन अ़क्कासी करती है। بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی ख़ानदाने अह्ले बैत व ख़ानदाने फ़ारूके़ आ'ज़म के उ़श्शाक़ आज भी इन दोनों मुबारक घरानों के इ़श्क़ो मह़ब्बत ही को बयान करते आए हैं और क़ियामत तक करते रहेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अह्ले बैत से इ़श्क़ो मह़ब्बत को देखिये कि अगर्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से इसाबत या'नी दुरुस्ती की सनद मिल चुकी है लेकिन फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चाहते हैं कि अह्ले बैत के इन शहज़ादों से भी अ़द्ले फ़ारूक़ी की सनद मिल जाए, येह सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वालिहाना इ़श्क़ था कि जब तक मौला अ़ली शेरे ख़ुदा, व ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) तीनों ने गवाही न दे दी तब तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें अश्कबारी करती रहीं, जैसे ही तीनों की बात मुकम्मल हुई फ़ौरन आंखें ठन्डी हो गईं।

(1)......رياض النضرة، ج ٢، ص ٣٧٤۔

www.dawateislami.net

मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से उल्फ़त व महब्बत के क्या कहने कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इत्मीनाने क़ल्ब के लिये अपने दोनों शहज़ादों के साथ अ़द्ले फ़ारूक़ी पर शहादत की मोहर सब्त फ़रमा दी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم), ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पर रह़मत हो और इन तमाम के सदके़ हम सब की मग़फ़िरत हो। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़ारूक़ी तमग़ए इम्तियाज़ ह़ासिल करने वाले क़ाज़ी

औ़रतें मुआ़ज़ जैसा बेटा पैदा करने से आ़जिज़ हैं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बे शुमार क़ाज़ियों को मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ फ़रमाया, बा'ज़ को उन की कारकर्दगी में कमज़ोरी पर मा'ज़ूल भी फ़रमाया मगर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वोह क़ाज़ी व गवर्नर थे जिन के फ़ैसलों पर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को काफ़ी ह़द तक इत्मीनान था। नीज़ आप को बारगाहे फ़ारूक़ी से तमग़ए इम्तियाज़ भी मिला। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने शुयूख़ से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं अपनी ज़ौजा से दो साल तक दूर रहा, फिर जब उस के पास आया तो वोह ह़ामिला थी।" (या'नी उस शख़्स ने अपनी ज़ौजा के ज़ानिय्या होने की शिकायत की।) सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों से उस के रजम करने के बारे में मश्वरा किया तो सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنْ كَانَ لَكَ عَلَيْهَا سَبِيْلٌ فَلَيْسَ لَكَ عَلٰى مَا فِيْ بَطْنِهَا سَبِيْلٌ فَاتْرُكْهَا حَتّٰى تَضَعَ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! उस औ़रत को रजम करने का तो ह़क़ बनता है लेकिन जो उस के पेट में बच्चा है उस का क्या कुसूर है ?" आप उस औ़रत को वज़्ए ह़म्ल तक छोड़ दें। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस औ़रत को छोड़ दिया। बा'दे अज़ां उस औ़रत ने एक बच्चा जना जिस के अगले दो दांत भी निकले हुवे थे, वोह बच्चा अपने बाप के बिल्कुल मुशाबेह था, उस के बाप ने उसे फ़ौरन

www.dawateislami.net

पहचान लिया और कहने लगा : اِبْنِیْ وَرَبِّ الْکَعْبَۃِ "या'नी रब्बे का'बा की क़सम ! येह तो मेरा ही बेटा है।" (लिहाज़ा उस औ़रत को छोड़ दिया गया।)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तमग़ए इम्तियाज़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : عَجَزَتِ النِّسَاءُ اَنْ یَلِدْنَ مِثْلَ مُعَاذٍ لَوْ لَا مُعَاذٌ لَهَلَکَ عُمَرُ "या'नी वाक़ेई औ़रतें मुआ़ज़ जैसा बेटा पैदा करने से आ़जिज़ हैं, आज अगर मुआ़ज़ न होते तो उ़मर हलाक हो जाता।"(1)

शानदार कारकर्दगी की तीन लत़ीफ़ वुजूहात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस शानदार कारकर्दगी की तीन लत़ीफ़ वुजूहात हैं :

(1)......पहली वज्ह येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल होने के साथ साथ वोह क़ाज़ी थे जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ैसला करने की खुद तरबिय्यत दी थी मशहूर ह़दीसे पाक है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को जब यमन का गवर्नर बना कर भेजा तो आप से फ़ैसला करने का त़रीक़ा पूछा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि अव्वलन **किताबुल्लाह** से, फिर **सुन्नते रसूलुल्लाह** से और बसूरते दीगर अपने इजतिहाद से फ़ैसला करूंगा।(2)

(2)......दूसरी वज्ह येह है कि बारगाहे रिसालत से आप को ज़ियादा इ़ल्म वाला होने का सर्टीफ़िकेट अ़त़ा हुवा चुनान्चे, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : "ह़लाल व ह़राम का ज़ियादा इ़ल्म रखने वाले मुआ़ज़ बिन जबल हैं।"(3)

(3)......तीसरी वज्ह येह है कि तमाम क़ाज़ियों में ज़ियादा अ़र्से तक अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ेरे तरबिय्यत रहने वाले भी आप ही हैं, कुतुबे सियर व तारीख़ में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बे शुमार तरबिय्यती ख़ुतूत़ हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ लिखे।

وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ......سنن کبری، کتاب العدد، باب ماجاء فی أکثر الحمل، ج۷، ص ۷۲۹، حدیث: ۱۵۵۵۸۔

2 ......ابوداود، کتاب الاقضیۃ، باب اجتهاد الرای فی القضاء، ج۳، ص ۴۲۴، حدیث: ۳۵۹۲۔

ترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء۔۔۔الخ، ج۳، ص ۶۲، حدیث: ۱۳۳۲ مفهوما۔

3 ......ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب معاذ بن جبل۔۔۔الخ، ج۵، ص ۴۳۵، حدیث: ۳۸۱۵ مختصرا۔

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी के ख़ुसूसी जज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ शहरों में तरबिय्यत याफ़्ता क़ाज़ियों व जजों को लोगों के मुक़द्दमात का फ़ैसला करने के लिये मुक़र्रर फ़रमाया, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वक़्तन फ़ वक़्तन उन की मुख़्तलिफ़ मसाइल में तरबिय्यत के साथ साथ बसा औक़ात बा'ज़ मुक़द्दमात के फ़ैसले भी लिख कर भेजा करते थे। उन क़ाज़ियों के पास आने वाले मुक़द्दमात की दर्जे ज़ैल मुख़्तलिफ़ नौइय्यतें थीं :

۞......ऐसे उ़मूमी मुक़द्दमात जिन के ह़ल में किसी क़िस्म की कोई दुश्वारी पेश न आती, येह क़ाज़ी साहि़बान बज़ाते ख़ुद ह़ल कर लिया करते थे।

۞......ऐसे मुक़द्दमात जिन में मुशावरत की ह़ाजत होती तो क़ाज़ी ह़ज़रात ऐसे मसाइल को बारगाहे फ़ारूक़ी में मुशावरत के लिये भेज देते, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम और मश्वरे लिख कर भेज देते।

۞......बा'ज़ औक़ात ऐसे पेचीदा और मख़्सूस मुक़द्दमात भी पेश आते थे जो मख़्सूस मुशावरत के बा'द भी उन मुन्तख़ब क़ाज़ियों से ह़ल न होते, ऐसे मुक़द्दमात क़ाज़ी साहि़बान बज़ाते ख़ुद बारगाहे फ़ारूक़ी में ले कर ह़ाज़िर हो जाते।

۞......ऐसे मसाइल की भी दो सूरतें थीं, बा'ज़ औक़ात तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुशावरत से ऐसे पेचीदा मसाइल को ख़ुद ही ह़ल फ़रमा लेते। लेकिन बसा औक़ात ऐसा भी होता था कि हर त़रह़ की कोशिश के बा वुजूद भी कोई मस्अला ह़ल न हो पाता। ऐसी मुश्किल सूरते ह़ाल के लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दरबार का एक ख़ुसूसी जज (Special judge) भी मुक़र्रर फ़रमाया हुवा था जिन्हें आज हम अमीरुल मोमिनीन, मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के मुबारक नाम से याद करते हैं, जब भी कोई ऐसा मस्अला पेश आता सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को बुलाते और मस्अला आप के सामने रखते फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे ह़ल फ़रमाते। कुतुबे सियर व तारीख़ में ऐसे कई मुक़द्दमात दर्ज हैं जिन्हें अ़हदे फ़ारूक़ी में अमीरुल मोमिनीन मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने ह़ल फ़रमाया, ह़ुसूले बरकत के लिये सिर्फ़ दो ईमान अफ़रोज़ मुक़द्दमात पेशे ख़िदमत हैं :

www.dawateislami.net

(1) दो औ़रत के दरमियान फ़ैसला

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि अ़ह्दे फ़ारूक़ी में अ़दालती जज हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक अ़जीबो ग़रीब मुक़द्दमा लाया गया, जिस के ह़ल के लिये आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और इस मस्अले को सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म की बारगाह में पेश कर दिया जिसे सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बड़े ह़ैरान व परेशान हुवे। आप ने इस के ह़ल के लिये सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ फ़रमाया और उन के सामने इसे रखा और इरशाद फ़रमाया : اَشِيْرُوْا عَلَيَّ "या'नी आप लोग मश्वरा दें कि इस का क्या किया जाए?" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْتَ الْمَفْزَعُ وَاَنْتَ الْمَنْزَعُ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप तो हमारी जाए पनाह हैं, आप ही तो हैं जिन की त़रफ़ मसाइल के ह़ल के लिये हम रुजूअ़ करते हैं। बहर ह़ाल जब इस का कोई ह़ल न निकला तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَمَا وَاللّٰهِ اِنِّي لَاَعْرِفُ اَبَاً بَجْدَتِهَا وَابْنَ بَجْدَتِهَا وَاَيْنَ مَفْزَعُهَا وَاَيْنَ مَنْزَعُهَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मैं एक ह़क़ीक़त शनास बाप और बेटे को जानता हूं, कहां है वोह जो हमारी जाए पनाह है, कहां है वोह जिस की त़रफ़ हम रुजूअ़ करते हैं?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर शायद आप अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार फ़रमा रहे हैं?"

फ़रमाया : لِلّٰهِ هُوَ وَهَلْ طَفَحَتْ حُرَّةٌ بِمِثْلِهِ وَاَبْرَعَتْهُ اِنْهَضُوْا بِنَا اِلَيْهِ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! वोही हैं जिन के बारे में मैं पूछ रहा हूं और किसी आज़ाद औ़रत ने उन जैसा बेटा पैदा नहीं किया चलो हम सब उन के पास चलें।" येह सुन कर लोगों ने अ़र्ज़ किया कि "हुज़ूर आप अमीरुल मोमिनीन हैं हुक्म फ़रमाएं वोह ख़ुद आप के पास आ जाएंगे।"

फ़रमाया : هَيْهَاتَ هُنَاكَ شِجْنَةٌ مِّنْ بَنِيْ هَاشِمٍ وَشِجْنَةٌ مِّنَ الرَّسُوْلِ وَاَثْرَةٌ مِّنْ عِلْمٍ يُؤْتٰى لَهَا وَلَا يَاْتِيْ فِيْ بَيْتِهٖ يُؤْتِي الْحَكَمُ فَاعْطَفُوْا نَحْوَهُ "या'नी हाए अफ़्सोस! तुम्हें क्या मा'लूम कि वोह कौन सी हस्ती है? वोह तो ख़ानदाने बनी हाशिम और ख़ानदाने रसूलुल्लाह का चश्मो चराग़ है वोह तो इ़ल्म का ऐसा निशान है जिसे बुलाया नहीं जाता बल्कि उस के पास चल कर जाया जाता है, उन के घर में तो बड़े बड़े हुक्काम ह़ाज़िरी देते हैं, चलो उन की त़रफ़ चलो।"

www.dawateislami.net

बहर हाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और क़ाज़ी शुरैह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ मुक़द्दमे के फ़रीक़ैन समेत मौला अ़ली की तलाश में निकले और एक बाग़ में उन्हें पा लिया। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इस आयते मुबारका की तिलावत फ़रमा रहे थे और साथ ही रोते जा रहे थे :

﴿اَیَحۡسَبُ الۡاِنۡسَانُ اَنۡ یُّتۡرَکَ سُدًی ﴾ (پ۲۹، القیامۃ:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्या आदमी इस घमन्ड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा ?"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ शुरैह़ ! इन के सामने मुकम्मल मुक़द्दमा बयान करो।" आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने मुक़द्दमे की तफ़्सीलात बताते हुवे अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! मेरे पास येह शख़्स आया और इस ने कहा कि किसी शख़्स ने इसे दो औ़रतें दीं कि मेरे वापस आने तक उन के रिहाइश व आराम वग़ैरा का ख़याल रखना। उन औ़रतों में से एक आज़ाद और दूसरी उम्मे वलद या'नी बांदी थी। गुज़श्ता रात दोनों औ़रतों ने एक एक बच्चे को जनम दिया, एक ने लड़की और एक ने लड़का जना। लेकिन दोनों दुगनी विरासत ह़ासिल करने के लिये बेटे ही का दा'वा कर रही हैं, बेटी को कोई भी क़बूल करने के लिये तय्यार नहीं।"

मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि "तुम ने इन दोनों के दरमियान क्या फ़ैसला किया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर अगर मेरे पास ऐसा इ़ल्म होता जिस के ज़रीए़ इन के माबैन फ़ैसला कर पाता तो इन्हें आप के पास हरगिज़ न लाता।"

येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने एक तिन्का उठाया और इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الْقَضَاءَ فِيْ هٰذَا اَيْسَرُ مِنْ هٰذِهٖ "या'नी इस मुक़द्दमे का फ़ैसला करना तो इस तिन्का उठाने से भी ज़ियादा आसान है।" फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक बरतन मंगवाया, एक औ़रत को बुला कर फ़रमाया कि तुम अपना सारा दूध इस बरतन में डाल कर लाओ। वोह दूध डाल कर लाई तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उस का वज़्न कर लिया। फिर दूसरी को भी इसी त़रह़ इरशाद फ़रमाया और उस के दूध का भी वज़्न कर लिया। दूसरी औ़रत का दूध पहली औ़रत के दूध से दुगना था। लिहाज़ा आप ने पहली औ़रत से फ़रमाया : خُذِيْ اَنْتِ اِبْنَتَکِ "या'नी बेटी तुम्हारी है तुम अपनी बेटी ले लो।" और दूसरी औ़रत से फ़रमाया : خُذِيْ اَنْتِ اِبْنَکِ "या'नी बेटा तुम्हारा है तुम अपना बेटा ले लो।" यूं उन दोनों औ़रतों के दरमियान फ़ैसला हो गया।

www.dawateislami.net

फिर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि लड़की का दूध लड़के के दूध से निस्फ़ होता है, लड़की की मीरास लड़के की मीरास से निस्फ़ होती है, लड़की की अ़क़्ल लड़के की अ़क़्ल से निस्फ़ होती है, लड़की की शहादत लड़के की शहादत से निस्फ़ होती है, लड़की की दियत लड़के की दियत से निस्फ़ होती है, बल्कि लड़की हर मुआ़मले में लड़के से निस्फ़ होती है।

रावी कहते हैं : فَاَعْجَبَ بِهٖ عُمَرُ اِعْجَاباً شَدِيْداً "या'नी येह फ़ैसला देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बहुत ही ज़ियादा मुतअ़ज्जिब हुवे।" फिर इरशाद फ़रमाया : اَبَا حَسَنٍ لَا اَبْقَانِيَ اللّٰهُ لِشِدَّةٍ لَسْتَ لَهَا وَلَا فِيْ بَلَدٍ لَسْتَ فِيْهِ "या'नी ऐ अबुल ह़सन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे किसी ऐसी मुश्किल में और ऐसे शहर में तन्हा न छोड़े जिस में आप मेरे साथ न हों।"[1]

(2) अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चे की विरासत का मस्अला

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में एक ऐसी औ़रत पेश की गई जिस के यहां एक निहायत ही अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चे की पैदाइश हुई थी। उस बच्चे के बालाई जिस्म में दो बदन, दो पेट, चार हाथ, दो सर और दो ही शर्मगाहें थीं। जब कि निचले ह़िस्से में दो रानें, दो टांगें और दो पाउं आ़म इन्सानों की त़रह़ थे, गोया ऊपरी ह़िस्से के ए'तिबार से वोह दो जिस्म थे और निचले ह़िस्से के ए'तिबार से एक ही जिस्म था। उस औ़रत ने अपने शौहर से मीरास त़लब की जो इस अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चे का बाप था।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस मुक़द्दमे के फ़ैसले के लिये सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के मुशावरत की लेकिन इस का कोई ह़ल न निकल सका। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ुसूसी जज या'नी अमीरुल मोमिनीन मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) को इस मस्अले के ह़ल के लिये बुलाया। जब उन के सामने इस मस्अले को बयान किया तो वोह भी बड़े ह़ैरान हुवे अलबत्ता मुख़्तलिफ़ मराह़िल में इस मस्अले को ह़ल फ़रमा दिया। इस मस्अले के ह़ल के लिये आप ने जो मराह़िल इख़्तियार किये उन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الخلافة مع الامارة، الاقضية، الجزء: ٥، ج ٣، ص ٠ ٣٣، حديث: ١٤٥٠٤ ـ

www.dawateislami.net

......आप رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ से अ़र्ज़ की, कि आप इस औ़रत को, इस के बच्चे को यहीं रोक लें और जो इन की ज़रूरिय्यात का सामान वग़ैरा है उसे भी मंगवा लें, एक ख़ादिम भी इन के लिये मुक़र्रर फ़रमा दें और इन के अख़राजात वग़ैरा की तरकीब भी बना दें। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने ऐसा ही किया।

......बा'दे अज़ां उस औ़रत का इन्तिक़ाल हो गया और उस का वोह अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चा जवान हो गया तो उस ने भी अपनी मीरास त़लब की। सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने उस के लिये एक ऐसा ख़ादिम मुक़र्रर कर दिया जो उन दोनों के इस्तिन्जा वग़ैरा की तरकीब बनाएगा और उन की मां की त़रह़ ख़िदमत करता रहेगा, कोई और उस काम को न कर सकेगा।

......फिर कुछ अ़र्से के बा'द उस लड़के के उन दोनों जिस्मों में से एक में निकाह़ की ख़्वाहिश पैदा हुई तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) को पैग़ाम भेजा कि अब क्या करें ? क्यूंकि दोनों जिस्मों की मुख़्तलिफ़ ख़्वाहिशात हैं। मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने फ़रमाया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बहुत ह़लीम और निहायत ही इ़ज़्ज़त वाला है इस बात से कि वोह दो भाइयों में ऐसा मुआ़मला पैदा कर दे कि एक भाई जिमाअ़ करे तो दूसरा उसे देखे। यक़ीनन निकाह़ की ख़्वाहिश करने वाले जिस्म के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब आ चुका है, लिहाज़ा तीन दिन तक उसे किसी त़रह़ बहलाया जाए। अ़न क़रीब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन दोनों के माबैन कोई न कोई फ़ैसला फ़रमा देगा।"

......और वाक़ेई ऐसा हुवा कि तीन दिन बा'द उस का इन्तिक़ाल हो गया। अब तो मज़ीद परेशानी बढ़ गई बा'ज़ लोगों ने इस मुर्दा जिस्म को काटने का मश्वरा दिया लेकिन अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ ने इसे मुस्तरद कर दिया। मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) ने फ़रमाया कि "अब तो मुआ़मला बहुत ही आसान हो गया। मुर्दा जिस्म को ग़ुस्ल व कफ़न दे दिया जाए, मुर्दा जिस्म को ख़ादिम उठाता रहे और दूसरा भाई उस की मदद करता रहे, जब तीन दिन बा'द मुर्दा जिस्म ख़ुश्क हो जाए उस ख़ुश्क हिस्से को काट दिया जाए इस त़रह़ ज़िन्दा जिस्म को भी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ नहीं होगी, हो सकता है मुर्दा लाश की तक्लीफ़ ज़िन्दा को तक्लीफ़ दे लेकिन मैं जानता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी तीन दिन से ज़ियादा ज़िन्दा न रखेगा।" लोगों ने इस के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और वाक़ेई फिर दूसरे लड़के का भी तीन दिन के बा'द इन्तिक़ाल हो गया।

www.dawateislami.net

इस अ़जीबो ग़रीब मस्अले के अनोखे फ़ैसले के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को ख़िराजे तह़सीन पेश करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

يَا ابْنَ اَبِيْ طَالِبٍ فَمَا زِلْتَ كَاشِفَ كُلِّ شُبْهَةٍ وَمُوْضِحَ كُلِّ حُكْمٍ

"या'नी ऐ अबू त़ालिब के बेटे ! आप की क्या बात है ! आप तो हर इब्हाम को खोल के रख देते हो और हर हुक्म को बिल्कुल वाज़ेह़ कर देते हो।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म के मुआ़विने ख़ुसूसी फ़िल क़ज़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ज़ा या'नी मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में फ़ैसला करने में मुआ़विने ख़ुसूसी होने की सआ़दत भी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को ह़ासिल थी, कई मुक़द्दमात में आप ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ैसला करने में मुआ़वनत फ़रमाई। बा'ज़ मुआ़मलात तो ऐसे भी आए जिन में सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुआ़वनत के बा'द सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों के सामने उन्हें इन अल्फ़ाज़ में ख़िराजे तह़सीन पेश किया : لَوْلَا عَلِيٌّ لَهَلَكَ عُمَرُ "या'नी अगर अ़ली न होते तो उ़मर हलाक हो जाता।"[2]

इ़श्क़ो मह़ब्बत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क्या कहने ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ए सानी, तमाम अहले ईमान के अमीर, फ़ातेह़े ईरान व रूम, जिन के नाम की हैबत से सारा कुफ़्र लर्ज़ां बर अन्दाम है, जिन के साए से भी इब्लीसे लईन भागता है, जिन को बारगाहे रिसालत से "**मुह़द्दस**" या'नी इल्हामी बातें करने वाले का ख़ित़ाब मिला, जिन को बारगाहे रिसालत से "**फ़ारूक़**" का लक़ब अ़त़ा हुवा, जिन की ताईद में क़ुरआने पाक की कई आयात नाज़िल हुईं, जिन को सब से पहले मुसलमानों ने "**अमीरुल मोमिनीन**" पुकारा, ऐसी जलीलुल मर्तबत हस्ती के दिल में अपने हादिये बर ह़क़, ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत की अ़ज़मतो मह़ब्बत का क्या आ़लम था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसलों की ताईद तो क़ुरआन करता है लेकिन आप ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को

1 ......كنز العمال، كتاب الخلافة مع الامارة، الاقضية، الجزء: ٥، ج ٣، ص ٣٣١، حديث: ١٤٥٠٥۔

2 ......الاستيعاب، على بن ابى طالب، ج ٣، ص ٢٠٥۔

www.dawateislami.net

अपनी अ़दालतों का खु़सूसी जज और अपना मुआ़विने खु़सूसी बनाया था, कैसा लत़ीफ़ तअ़ल्लुक़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं, सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने खु़द सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुआ़मलाते क़ज़ा में मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपना मुआ़विन और खु़सूसी जज मुक़र्रर फ़रमाया। यक़ीनन फ़ारूके़ आ'ज़म जानते थे, येह वोह मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इल्म का दरवाज़ा फ़रमाया, येह वोह मौलाए काइनात हैं जिन के निकाह़ में ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर और नूरे नज़र, ख़ातूने जन्नत सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا हैं, येह वोह शेरे खु़दा हैं जिन्हों ने क़ल्अ़ए ख़ैबर का दरवाज़ा उखाड़ फेंका। यक़ीनन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मौला अ़ली को खु़सूसी जज बनाना और उन को अपना मुआ़विने खु़सूसी बनाना अह्ले बैत की इस हस्ती से वालिहाना उल्फ़तो मह़ब्बत पर दलालत करता है। इस से वाजे़ह़ होता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अह्ले बैत का कितना अदबो एह़तिराम फ़रमाया करते थे। यक़ीनन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और अह्ले बैत के माबैन खु़सूसी मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के साथ आप की गहरी उल्फ़तो मह़ब्बत थी, **بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰى** आज भी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के उ़श्शाक़ इन की आपस में उल्फ़तो मह़ब्बत ही का ज़िक्रे ख़ैर करते हैं, हर जगह इन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब की धूमें मचाते हैं और क़ियामत तक धूमें मचाते रहेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की भी ह़क़ीक़ी मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा, सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खु़दा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की भी सच्ची मह़ब्बत अ़त़ा फ़रमा, इन दोनों हस्तियों की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा, हमारी ज़बानें हर वक़्त इन के औसाफ़े ह़मीदा से तर बतर रहें, हमें इन हस्तियों के उ़यूबो नक़ाइस तलाश करने वाले लोगों से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमा, जन्नतुल फ़िरदौस में भी इन हस्तियों का पड़ोस नसीब फ़रमा, इन अ़ज़ीम हस्तियों का वासित़ा हमें मदीनए मुनव्वरा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने मुबारका में शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ सूबों और शहरों पर मुक़र्रर फ़ारूक़ी क़ाज़ियों का चार्ट

नम्बर शुमार	क़ाज़ी का नाम	सूबा या शहर	दीगर तफ़्सील
1	सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	मदीनए मुनव्वरा	--------
2	सय्यिदुना नाफ़ेअ़ ख़ुज़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	मक्कए मुकर्रमा	--------
3	सय्यिदुना ख़ालिद बिन आ़स मख़ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	मक्कए मुकर्रमा	सय्यिदुना नाफ़ेअ़ ख़ुज़ाई के बा'द
4	सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	ताइफ़	क़ाज़ी व गवर्नर
5	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बह्रैन	क़ाज़ी व गवर्नर
6	सय्यिदुना का'ब बिन सवार अज़्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बसरा	--------
7	सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बसरा	क़ाज़ी व गवर्नर
8	सय्यिदुना सलमान बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बसरा	--------
9	सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बसरा	--------
10	सय्यिदुना अबू मरयम हनफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	बसरा	सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन के बा'द
11	सय्यिदुना अबू क़ुर्रह किन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	कूफ़ा	--------

www.dawateislami.net

नम्बर शुमार	क़ाज़ी का नाम	सूबा या शहर	दीगर तफ़्सील
12	सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رضی اللہ تعالٰی عنہ	कूफ़ा	क़ाज़ी व गवर्नर
13	सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ	कूफ़ा	---------
14	सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	कूफ़ा	सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द के बा'द
15	सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رضی اللہ تعالٰی عنہ	फ़िलिस्त़ीन	---------
16	सय्यिदुना क़ैस बिन अबुल आ़स क़रशी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	मिस्र	---------
17	सय्यिदुना सलमान बिन रबीअ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ	क़ादिसिय्या	बसरा के बा'द मुक़र्रर हुवे
18	सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन रबीआ़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	क़ादिसिय्या	मख़्सूस उमूर के क़ाज़ी
19	सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رضی اللہ تعالٰی عنہ	सन्आ़	क़ाज़ी व गवर्नर
20	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	उ़मान	क़ाज़ी व गवर्नर
21	सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رضی اللہ تعالٰی عنہ	ह़िम्स	क़ाज़ी व गवर्नर
22	सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ	शाम	क़ाज़ी व कमान्डर
23	सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ	शाम	क़ाज़ी व गवर्नर

www.dawateislami.net

आठवां बाब

निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये......................

......मुसावात के क़ियाम के लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कोशिशें

......निज़ामे अ़द्ल हाकिम व महकूम सब के लिये

......क़ाज़ियों व गवर्नरों को मुसावात की हिदायत

......जुल्म के ख़िलाफ़ सालाना इजतिमाई मश्वरा

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अपनी ही अ़दालतों में हाज़िरी

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुसावात की चन्द मिसालें

......फ़ैसला करने के मुख़्तलिफ़ मदनी फूल

......दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करने का मश्वरा

......अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं।

....

www.dawateislami.net

निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निज़ामे अ़द्लिया के क़ियाम के साथ साथ इस के जुज़ व लाज़िमी "मुसावात" या'नी बराबरी का भी बहुत ख़याल रखा ताकि शाहो गदा, अमीरो ग़रीब, सब को एक जैसा ही अ़द्लो इन्साफ़ मिले। मुसावात के क़ियाम के लिये आप ने दर्जे ज़ैल इक़्दामात फ़रमाए :

......क़ाज़ियों और जजों को इस बात की ताकीद थी कि अ़दालत में चाहे कोई भी शख़्स आए उसे बात करने और अपना मौक़िफ़ पेश करने की मुकम्मल आज़ादी दी जाए किसी पर ज़ोर ज़बर दस्ती और धोंस जमाने की क़त़अ़न कोशिश न की जाए।

......फ़रीक़ैन में अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम के लिये उन के मरातिब को क़त़अ़न ख़ात़िर में न लाया जाए बल्कि जिस त़रफ़ ह़क़ हो उसी पर फ़ैसला किया जाए।

......अगर कोई शख़्स येह समझता हो कि उसे इन्साफ़ नहीं मिला तो वोह उस से ऊपर वाली अ़दालत (High Court) से रुजूअ़ कर सकता है, ख़ुसूसन ख़ुद जज से मुतअ़ल्लिक़ कोई मुक़द्दमा हो तो उसे बिला वासित़ा बारगाहे फ़ारूक़ी में पेश किया जाए।

......निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात और मुक़र्रर कर्दा जजों को जांचने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ज़ात को भी अ़दालत में पेश किया और बा'ज़ मुक़द्दमात ख़ुद देखे कि आया मुक़र्ररा क़ाज़ी या जज दुरुस्त फ़ैसला करते हैं या नहीं !

जराइम के ख़ातिमे में मुआ़विन सुन्हरी उसूल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अ़ह्दे फ़ारूक़ी में एक लड़का धोके से क़त्ल कर दिया गया और मा'लूम न था कि इस का क़ातिल कौन है ? अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर इस लड़के के क़त्ल में अहले सन्आ़ का हाथ हुवा तो मैं उन से भी जंग करूंगा।" यूंही हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि चार आदमियों ने मिल कर एक बच्चे को क़त्ल कर दिया मगर मा'लूम न था कि वोह कौन हैं ? उस वक़्त भी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येही फ़रमाया था।(1)

1 ......بخاری، کتاب الدیات، اذا اصاب قوم من رجل۔۔۔الخ، ج۴، ص۳۶۷، حدیث:۶۸۹۶۔

www.dawateislami.net

निज़ामे अ़द्ल हाकिमो महकूम सब के लिये

हज़रते सय्यिदुना अबुन्नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर वा'ज़ फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स खड़ा हुवा और कहने लगा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप के आ़मिल ने मुझे मारा और मुझ पर ज़ियादती की है।" आप ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें उस से बदला दिलवाऊंगा।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ करने लगे : "क्या गवर्नर से भी बदला लिया जाएगा ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां, रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं गवर्नर से भी बदला लूंगा। क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद अपने आप को बदला लेने के लिये पेश किया था और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपने आप को बदला लेने के लिये पेश किया था, तो क्या मैं गवर्नर से बदला नहीं दिलवा सकता ?" हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! बदला लेने के इ़लावा भी तो एक सूरत है ?" फ़रमाया : "वोह क्या ?" अ़र्ज़ किया : "गवर्नर उस शख़्स को राज़ी कर ले।" फ़रमाया : "हां ! राज़ी कर ले तो ठीक है।"(1)

गवर्नर के बेटे पर भी कोड़े बरसाए गए

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में हाज़िर थे कि इतने में एक मिस्री शख़्स आया और अ़र्ज़ करने लगा : "मैं अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पनाह चाहता हूं।" आप ने फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें पनाह दी, कहो क्या बात है ?"

उस ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे के साथ दौड़ लगाई तो मैं उन से सबक़त ले गया उन के बेटे ने मुझ पर कोड़े बरसाए और येह भी कहा है कि तुम मेरा मुक़ाबला करते हो ? हालांकि मैं दो करीमों का बेटा हूं।"

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में उन्हें अपने बेटे समेत मदीनए मुनव्वरा में हाज़िर होने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

---

(1)......سنن کبری، کتاب الجراح، جماع ابواب القصاص۔۔۔الخ، ج۸، ص۱۱۱، حدیث: ۱۶۰۹۳۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बेटे को ले कर बारगाहे फ़ारूक़ी में जैसे ही पहुंचे तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "वोह मिस्री शख़्स कहां है ?" वोह शख़्स हाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **خُذِ السُّوْطَ فَاضْرِبْ** "या'नी येह कोड़ा पकड़ो और इसे मारना शुरूअ़ करो।" उस मिस्री ने कोड़े बरसाना शुरूअ़ किये, वोह मारता जाता और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते : **اِضْرِبْ اِبْنَ الْاَكْرَمِيْنِ** "या'नी दो करीमों के बेटे को और मारो।"

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "जब उस मिस्री ने कोड़े मारना शुरूअ़ किये थे तो हम सब भी येही चाहते थे कि वोह कोड़े मारे लेकिन उस ने इतने कोड़े बरसाए कि बा'द में हम येह कहने लगे कि काश अब येह कोड़े बरसाना छोड़ दे।" फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस मिस्री से फ़रमाया : "येह कोड़ा अम्र बिन आस के सर पर लगाओ।" उस ने अ़र्ज़ किया कि "हुज़ूर इन के बेटे ने मुझे मारा था और मैं ने उस से बदला ले लिया है।" फिर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : **مُذْ كَمْ تَعَبَّدْتُمُ النَّاسَ وَقَدْ وَلَدَتْهُمْ اُمَّهَاتُهُمْ اَحْرَارًا؟** "या'नी तुम ने कब से इन्सानों को गुलाम बनाना शुरूअ़ कर दिया है हालांकि इन की माओं ने तो इन्हें आज़ाद जना है।" अ़र्ज़ किया : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَمْ اَعْلَمْ وَلَمْ يَاْتِنِيْ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे इस वाक़िए का इल्म नहीं था और न ही येह शख़्स मेरे पास आया।"(1)

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी के ख़िलाफ़ फ़ैसला

हज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुछ रक़म क़र्ज़ ली। बा'दे अज़ां दोनों में इस रक़म पर इख़्तिलाफ़ हो गया, सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह दा'वा था कि उन्हों ने चार हज़ार दिरहम लिये हैं जब कि सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस के मुन्किर थे कि चार हज़ार नहीं बल्कि सात हज़ार लिये हैं। दोनों का मुक़द्दमा बारगाहे फ़ारूक़ी में पहुंचा।

सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि मुद्दई थे इस लिये गवाह पेश करना या दलील लाना उन के ज़िम्मे था और सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुन्किर थे इस लिये उन के ज़िम्मे क़सम थी। सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की, कि आप

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الفاروق، عدله، الجزء : ١٢، ج٦، ص٢٩٣، حديث : ٣٦٠٠٥ـ

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़सम ले लें। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : اَنْصِفُکَ "या'नी ऐ उ़स्मान ! अगर आप क़सम उठा लें तो मैं आप को पूरा पूरा ह़क़ दिलाऊंगा।" लेकिन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम उठाने से इन्कार कर दिया। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ फ़ैसला देते हुवे इरशाद फ़रमाया : خُذْ مَا اَعْطَاکَ "या'नी अगर आप क़सम नहीं उठाते तो फिर फ़ैसला आप के ख़िलाफ़ है और जो मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को दे रहे हैं वोही ले लीजिये।"(1)

क़ाज़ियों व गवर्नरों को मुसावात की हिदायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रवाह़ा यज़ीद बिन ऐहम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़ाज़ियों, जजों, गवर्नरों और उ़म्मालों को मुसावात की हिदायात से भरपूर एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

✿......اِجْعَلُوا النَّاسَ عِنْدَکُمْ فِی الْحَقِّ سَوَاءً قَرِیْبُھُمْ کَبَعِیْدِھِمْ وَبَعِیْدُھُمْ کَقَرِیْبِھِمْ

"या'नी तमाम लोगों को ह़क़ बात व अ़द्लो इन्साफ़ के हु़सूल में बराबर कर दो कि उन के क़रीब वाले उन के दूर वालों की त़रह़ और उन के दूर वाले उन के क़रीब वालों की त़रह़ हों।"

✿......وَاِیَّاکُمْ وَالرِّشَا وَالْحُکْمَ بِالْھَوٰی وَاَنْ تَاْخُذُوا النَّاسَ عِنْدَ الْغَضَبِ "अपने आप को रिश्वत, ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करने और गुस्से के वक़्त लोगों की पकड़ करने से बचाओ।"

✿......فَقُوْمُوا بِالْحَقِّ وَلَوْ سَاعَۃً مِنْ نَھَارٍ "हमेशा ह़क़ बात को क़ाइमो दाइम रखो अगर्चे दिन की एक घड़ी ही क्यूं न हो।"(2)

इन्साफ़ दिलाना मेरी ज़िम्मेदारी है

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

---

1 ......سنن کبری، کتاب الشھادات، باب النکول ورد الیمین، ج۱۰، ص۳۱۰، حدیث: ۲۰۷۴۰۔

2 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب انصاف الخصمین۔۔۔الخ، ج۱۰، ص۲۲۹، حدیث: ۲۰۴۶۲۔

www.dawateislami.net

اَيُّمَا عَامِلٍ لِيْ ظَلَمَ اَحَداً فَبَلَغَتْنِيْ مَظْلِمَتُهٗ فَلَمْ اُغَيِّرْهَا فَاَنَا ظَلَمْتُهٗ

"या'नी अगर मेरे किसी आ़मिल ने किसी शख़्स पर ज़ुल्म किया तो उसे इन्साफ़ दिलाना मेरी ज़िम्मेदारी है क्यूंकि अगर मुझ तक उस के ज़ुल्म की इत्तिलाअ़ पहुंची और मैं ने उसे इन्साफ़ न दिलाया तो येह ऐसे होगा जैसे मैं ने ख़ुद उस पर ज़ुल्म किया।"(1)

सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स को सख़्त सरज़निश

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मुसावात का येह आ़लम था कि एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो बेटे मिस्र गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां के गवर्नर हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बेटों के साथ ख़ुसूसी रवय्ये की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमा दी। बा'दे अज़ां सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इत्तिफ़ाक़न आप के बेटों से मुलाक़ात हो गई और किसी मुआ़मले में उन को सज़ा देने की तरकीब बनी। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर पहुंची कि सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सज़ा के मुआ़मले में उन के बेटे के साथ नर्मी की है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में निहायत ही सख़्त अल्फ़ाज़ में उन की सरज़निश की। इस मक्तूब का मज़्मून कुछ यूं था :

"ऐ आ़सी इब्ने आ़सी ! मुझे तुम्हारी जुरअत और मेरे अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पर सख़्त तअ़ज्जुब हुवा है, मैं ने गवर्नरी के लिये तुम्हारा इन्तिख़ाब किया हालांकि अब मुझे शायद तुम्हें मा'ज़ूल करना पड़े, क्यूंकि तुम ने मेरे बेटे के साथ अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम में नर्म रवय्या रखा, हालांकि उस वक़्त वोह अमीरुल मोमिनीन का बेटा नहीं बल्कि तुम्हारी रिआ़या का एक आ़म शख़्स था, जो सुलूक तुम दीगर लोगों के साथ करते थे उस के साथ भी वोही करना चाहिये था, लेकिन तुम ने सोचा कि येह अमीरुल मोमिनीन का बेटा है हालांकि तुम्हें मा'लूम है कि मेरे नज़्दीक मुजरिमों के साथ किसी क़िस्म की कोई नर्मी नहीं की जाती, जब मेरा मक्तूब तुम्हारे पास पहुंचे तो फ़ौरन मेरे बेटे को मेरे पास भेज दो।"

बा'दे अज़ां सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे फ़ारूक़ी में अपने फ़ैसले पर वज़ाहती मा'ज़िरत नामा भी लिखना पड़ा। लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۲۲۔

www.dawateislami.net

के बा'द जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस वाक़िए को याद किया करते थे तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन अल्फ़ाज़ में ख़िराजे अ़क़ीदत पेश फ़रमाते थे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रह़्म फ़रमाए, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा रब عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला किसी को नहीं देखा। आप सिर्फ़ दुरुस्त फ़ैसला करते थे और इस बात की क़त़्अ़न परवाह न करते थे कि येह फ़ैसला बाप के ख़िलाफ़ है या बेटे के ख़िलाफ़।"(1)

ज़ुल्म के ख़िलाफ़ सालाना इजतिमाई मश्वरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हर साल ह़ज के मुबारक मौसिम में अपने उ़म्माल और गवर्नरों के साथ आ़म मदनी मश्वरा किया करते थे, जब तमाम लोग जम्अ़ हो जाते तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते : **يَا اَيُّهَا النَّاسُ! اِنِّي لَمْ اَبْعَثْ عُمَّالِي عَلَيْكُمْ لِيُصِيْبُوْا مِنْ اَبْشَارِكُمْ وَلَا مِنْ اَمْوَالِكُمْ اِنَّمَا بَعَثْتُهُمْ لِيَحْجِزُوْا بَيْنَكُمْ وَلِيَقْسِمُوْا فَيْئَكُمْ بَيْنَكُمْ، فَمَنْ فُعِلَ بِهٖ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلْيَقُمْ** "या'नी ऐ लोगो ! मैं ने अपने उ़म्माल और गवर्नरों को तुम लोगों पर इस लिये मुक़र्रर नहीं किया कि येह लोग तुम पर ज़ुल्मो सितम कर के तुम्हारी खालें उधेड़ें, तुम्हारे मालों पर क़ब्ज़ा कर लें, तुम से मुंह फेर लें, बल्कि मैं ने तो इन्हें इस लिये भेजा है कि तुम्हारे और ज़ुल्मो सितम के दरमियान रुकावट बन जाएं, अ़द्लो इन्साफ़ के साथ तुम्हारे दरमियान माल तक़्सीम करें, अगर इन तमाम मुआ़मलात के इ़लावा किसी के साथ कोई मुआ़मला पेश आया तो वोह मेरे सामने बयान कर सकता है।"

येह सुन कर लोगों में से कोई भी खड़ा न हुवा सिवाए एक शख़्स के जिस ने अ़र्ज़ की : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! اِنَّ عَامِلَكَ فُلَانًا ضَرَبَنِيْ مِئَةَ سَوْطٍ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप के फुलां आ़मिल ने मुझे बिला वज्ह सौ कोड़े मारे हैं।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस आ़मिल से इरशाद फ़रमाया : **فِيْمَ ضَرَبْتَهٗ؟ قُمْ** "या'नी तुम ने इस को क्यूं मारा है ? खड़े हो जाओ।" फिर आप ने उस शख़्स से इरशाद फ़रमाया : **فَاقْتَصِّ مِنْهُ** "या'नी इस से अपना बदला ले लो।"

येह सुन कर एक फ़ारूक़ी गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स खड़े हुवे और अ़र्ज़ किया : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ! اِنَّكَ اِنْ فَعَلْتَ هٰذَا يَكْثُرُ عَلَيْكَ وَيَكُوْنُ سُنَّةً يَاْخُذُ بِهَا مَنْ بَعْدَكَ** "या'नी ऐ अमीरुल

---

(1) ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۷۳۔

www.dawateislami.net

मोमिनीन ! ऐसे सरे आ़म गवर्नरों का एह़तिसाब न फ़रमाइये, वरना गवर्नरों के ख़िलाफ़ शिकायात का अम्बार लग जाएगा और अगर आप ऐसा करेंगे तो बा'द वाले लोग भी इस त़रीक़े की इत्तिबाअ़ करेंगे।"

येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आ़दिलाना व मुन्सिफ़ाना जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَنَا لَا اُقِيدُ مِنْهُ وَقَدْ رَاَيْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقِيدُ مِنْ نَفْسِهِ "अच्छा मैं बदला न दिलाऊं ? ह़ालांकि मैं ने खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप अपनी ज़ात से बदला दिलाया करते थे।" सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : دَعْنَا فَلْنُرْضِهِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस की दूसरी सूरत भी तो हो सकती है कि हम उस शख़्स को बदला दे कर राज़ी कर लें। फिर उस शख़्स को दो सौ दीनार दे कर राज़ी किया गया या'नी हर कोड़े के बदले दो दीनार।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की अपनी ही अ़दालतों में ह़ाज़िरी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात की एक ऐसी मिसाल क़ाइम की जो रहती दुन्या तक तारीख़ के औराक़ में सुन्हरी हुरूफ़ से लिखी जाती रहेगी और वोह येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़ाती मुक़द्दमात भी अपनी ही बनाई गई अ़दालतों और क़ाज़ियों के सामने पेश फ़रमाए। तारीख़ में न तो आप के अ़ह्द से पहले और न ही बा'द वाले अदवार में इस की मिसाल मिलती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर, पूरी दुन्या पर इस बात को रौशन फ़रमा दिया कि निज़ामे अ़द्लिया में हर छोटा बड़ा सब बराबर हैं अगर्चे वोह ख़लीफ़ए वक़्त ही क्यूं न हो। उस के मुक़द्दमे का भी फ़ैसला वैसे ही किया जाएगा जैसे एक आ़म आदमी का फ़ैसला किया जाता है। दो वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

फ़ारूक़ी जज और फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के अ़ह्द के क़ानून दान बुज़ुर्ग सह़ाबी, कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद के बहुत बड़े क़ारी ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान किसी चीज़ पर निज़ाअ़ हो गया। इस मुआ़मले में ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ٣، ص ٢٢٣ـ

www.dawateislami.net

मुद्दई और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुद्दआ अ़लय थे। बहर ह़ाल दोनों में येह तै हुवा कि मदीनए मुनव्वरा के अ़दालती जज ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चलते हैं वोह जो फ़ैसला करेंगे दोनों उसे तस्लीम कर लेंगे। दोनों ह़ज़रात उन के घर तशरीफ़ ले गए क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दत थी कि वोह उ़मूमी मुक़द्दमात के फ़ैसले अपने घर में ही कर दिया करते थे। जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के घर में दाख़िल हुवे तो इरशाद फ़रमाया : اَتَيْنَاكَ لِتَحْكُمَ بَيْنَنَا "या'नी ऐ ज़ैद बिन साबित ! हम तुम्हारे पास अपने मुआ़मले का फ़ैसला करवाने के लिये आए हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बिछौने का एक हिस्सा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये पेश करते हुवे अ़र्ज़ किया : هٰهُنَا يَا اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप यहां तशरीफ़ रखिये।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَقَدْ جُرْتَ فِي الْفُتْيَا وَلٰكِنْ اَجْلِسُ مَعَ خَصْمِي "या'नी ऐ ज़ैद बिन साबित ! येह पहला ज़ुल्म है जो तुम ने अपने फ़ैसले में किया मैं (तुम्हारे साथ क्यूं बैठूंगा ? मैं तो अपने मुआ़मले का फ़ैसला करवाने आया हूं लिहाज़ा) अपने फ़रीक़ के साथ ही बैठूंगा। बहर ह़ाल दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने बैठ गए, सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दा'वा किया और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार कर दिया। चूंकि दा'वा करने वाले पर दलील और इन्कार करने वाले पर क़सम होती है लिहाज़ा सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : اَعْفِ اَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ مِنَ الْيَمِينِ وَمَا كُنْتُ لِاَسْاَلَهَا لِاَحَدٍ غَيْرِهِ "या'नी आप अमीरुल मोमिनीन को क़सम उठाने से मुआ़फ़ रखिये, आज तक मैं ने किसी के लिये येह दरख़्वास्त नहीं की।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम उठा ली और फ़ैसला आप के ह़क़ में हो गया। लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ैसला करने में दो ग़लतियों या'नी "अमीरुल मोमिनीन को बैठने के लिये जगह देना" और "उन को क़सम उठाने की ज़ह़मत न देना" के सबब इस बात पर भी क़सम उठाई कि उ़मर के होते हुवे अब कभी ज़ैद बिन साबित फ़ैसला नहीं कर पाएंगे ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और एक आ़म मुसलमान इन के नज़्दीक बराबर हो जाएं।(1)

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب انصاف الخصمین۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۲۲۹، حدیث: ۲۰۴۶۳۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उबय बिन का'ब ने फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला किया

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान किसी बात पर तनाज़ोअ़ हो गया तो उन दोनों ने हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सालिस मुक़र्रर किया। दोनों सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर पहुंचे तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِلٰی بَیْتِہٖ یُؤْتَی الْحَکَمُ "या'नी येह वोह हैं कि हाकिम भी इन के घर फ़ैसला करवाने आते हैं।" बहर हाल हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रीक़ैन का मुक़द्दमा सुनने के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हक़ में क़सम के साथ फ़ैसला दे दिया।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की मुसावात की चन्द मिसालें

रिआ़या की मुसीबत में बराबर की शिर्कत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मदीनए मुनव्वरा और इस के क़ुर्बो जवार के लोग जब क़ह़त़ साली का शिकार हुवे तो आप ने क़सम उठा ली कि पनीर, दूध और गोश्त वग़ैरा उस वक़्त तक नहीं खाऊंगा जब तक लोग पहले जैसी ज़िन्दगी न गुज़ारने लग जाएं। आप के एक ग़ुलाम ने चालीस दिरहम में घी का डब्बा और दूध की एक मशक ख़रीद कर आप की ख़िदमत में पेश की तो फ़रमाया : "तुम ने येह दोनों ख़रीद कर ह़द से तजावुज़ किया है, इन दोनों को सदक़ा कर दो, मुझे येह बात सख़्त ना पसन्द है कि किसी चीज़ के खाने में इसराफ़ करूं, मुझे रिआ़या पर आने वाली मुसीबत का कैसे एहसास होगा जब तक मैं भी उस मुसीबत से न गुज़रूं जिस से वोह गुज़र रहे हैं।(2)

ख़ुद्दाम को साथ खाना न खिलाने पर जलाले फ़ारूक़ी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज करने गए। हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के लिये खाना तय्यार किया। उस खाने को एक बड़े बरतन में चार लोग

1 ......مصنف عبدالرزاق، کتاب الایمان والنذور، باب الحلف بغیر اللہ ــــ الخ، ج۸، ص۴۱۰، حدیث:۱۶۲۲۴۔

2 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۰۸۔

www.dawateislami.net

उठा कर लाए, खाना सब के सामने रखा गया, सब खाने लगे और ख़ादिम खड़े रहे। येह देख कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : اَتَرْغَبُوْنَہ عَنْھُمْ؟ ''या'नी क्या तुम इन्हें अपने से दूर रखते हो ?'' हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : لَا وَاللّٰہِ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ، وَلٰکِنَّا نَسْتَاْثِرُ عَلَیْھِمْ ''नहीं हुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा नहीं है, अलबत्ता खुद को इन पर तरजीह़ देते हैं।'' (या'नी पहले खुद खाते हैं फिर इन को खिलाते हैं।) येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जलाल में आ गए और इरशाद फ़रमाया : مَا لِقَوْمٍ یَسْتَاْثِرُوْنَ عَلٰی خُدَّامِھِمْ فَعَلَ اللّٰہُ بِھِمْ ''या'नी लोगों को क्या हो गया है ? अपने ख़ादिमों पर खुद को तरजीह़ देते हैं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उन के साथ ऐसा ही करे।'' फिर आप ख़ादिमों से मुख़ातिब हुवे और फ़रमाया : اِجْلِسُوْا فَکُلُوْا ''या'नी तुम लोग भी हमारे साथ बैठो और खाओ।'' चुनान्चे, ख़ुद्दाम भी बैठ गए और खाना खाने लगे।(1)

मख़्सूस खाने पर गवर्नर की सरज़निश

हज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन फ़रक़द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब आज़र बाईजान गए तो उन्हें ज़ियाफ़त में ''ह़बीस'' (एक क़िस्म की मिठाई) पेश की गई, आप ने उसे खाया तो वोह बहुत ही मीठी थी, कहने लगे : ''येह मिठाई अमीरुल मोमिनीन के लिये भी बनाई जाती तो कितना अच्छा होता !'' चुनान्चे, आप ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये दो टोकरे उसी मिठाई के तय्यार करवाए, फिर उसे दो आदमियों के साथ ऊंट पर लाद कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास भेज दिया गया, जब वोह दोनों उसे ले कर आप के पास पहुंचे और खोला तो आप ने पूछा : ''येह क्या चीज़ है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर येह मिठाई है। आप ने उसे चखा तो वाके़ई वोह बहुत मीठी थी। आप ने पूछा : ''क्या सारे मुसलमान इसी से शिकम सैर होते हैं ?'' उन्हों ने कहा : ''ऐसा तो नहीं है।'' फ़रमाया : ''अगर ऐसा है तो इन दोनों टोकरों को वापस ले जाओ।'' फिर आप ने सय्यिदुना उ़तबा बिन फ़रक़द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया :

اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّہٗ لَیْسَ مِنْ کَدِّکَ وَلَا مِنْ کَدِّ اَبِیْکَ وَلَا مِنْ کَدِّ اُمِّکَ اَشْبِعِ الْمُسْلِمِیْنَ مِمَّا تَشْبَعُ مِنْہُ فِیْ رَحْلِکَ

''या'नी ह़म्दो सलात के बा'द मैं येह कहता हूं कि येह मिठाई न तेरी कोशिश से है, न तेरे बाप की

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثامن والثلاثون، ص ۹۵۔

www.dawateislami.net

कोशिश से है, न तेरी मां की कोशिश से, तुम अपने घर में जिस चीज़ से शिकम सैर होते हो उसी से तमाम मुसलमानों को शिकम सैर करो।[1]

ग़स्सानी हाकिम फ़ारूक़ी अ़दालत में

जबला बिन ऐहम ग़स्सानी, हरक़िल की जानिब से बनू ग़स्सान का आख़िरी हुक्मरान था, ग़स्सानी क़ौम रूमी सल्त़नत की मा तह़ती में शाम में रहती थी और शाहे रूम ग़स्सानियों को हमेशा जज़ीरए अ़रब के बाशिन्दों ख़ुसूसन मुसलमानों से जंग करने पर उभारता रहता था। लेकिन जब रूमियों ने मुसलमानों के हाथों पै दर पै हज़ीमतें उठाईं और फ़ुतूहात के सबब इस्लामी सरह़दें वसीअ़ हो गईं तो शाम में बसने वाले अ़रब क़बाइल ने अपने मुसलमान होने का ए'लान शुरूअ़ कर दिया, जबला बिन ऐहम ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया, नीज़ उस के दूसरे साथी भी इस्लाम ले आए। फिर उस ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मदीनए मुनव्वरा आने की इजाज़त त़लब की। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस के क़बूले इस्लाम और मदीनए मुनव्वरा आने की ख़बर मिली तो आप बहुत ख़ुश हुवे, वोह मदीनए मुनव्वरा आया और लम्बी मुद्दत तक वहां मुक़ीम रहा, फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की हर त़रह़ की ज़रूरतों का ख़याल रखते रहे और उस के इन्क़िलाब पर उसे मुबारक बाद भी देते रहे।

एक मरतबा वोह ह़ज के लिये गया, इत्तिफ़ाक़ से त़वाफ़े का'बा के दौरान बनू फ़ज़ारा के एक शख़्स का पाउं ग़लत़ी से उस जबला बिन ऐहम ग़स्सानी के इज़ार पर पड़ गया जिस से वोह खुल कर नीचे गिर गया। जबला आग बगूला हो गया और उस शख़्स को इतना ज़ोर दार थप्पड़ रसीद किया कि उस की नाक ही टूट गई। वोह इन्साफ़ के हुसूल के लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंच गया और फ़रयाद की। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जबला को बुलाया और उस से पूछा कि क्या वाक़ेई उस ने ऐसा किया है ? उस ने इक़रार किया तो आप ने फ़रमाया : اَقَدْتُّہٗ مِنْکَ "या'नी मैं इस शख़्स को तुझ से बदला दिलाऊंगा।"

जबला येह देख कर बहुत ख़ौफ़ज़दा हो गया और ह़ैरानगी से कहने लगा : کَیْفَ وَاَنَا مَلِکٌ وَھُوَ سُوْقَۃٌ؟ "या'नी येह कैसे हो सकता है ? मैं एक बादशाह हूं और वोह एक आ़म आदमी।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ الْاِسْلَامَ جَمَعَکَ وَاِیَّاہُ فَلَسْتَ تَفْضُلُہٗ اِلَّا بِالتَّقْوٰی "या'नी इस्लाम

[1] ......مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم استعمال اوانی الذھب۔۔۔الخ، ص۱۱۴۸، حدیث:۱۲ ملخصاً۔

مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجھاد، ماقالوافی عدل الوالی۔۔۔الخ، ج۷، ص۲۲۴، حدیث:۱۸۔

www.dawateislami.net

ने तुम दोनों को मक़ामो मर्तबे में जम्अ़ कर दिया है, तुम सिर्फ़ तक़्वा व परहेज़गारी के सबब ही इस पर फ़ज़ीलत ह़ासिल कर सकते हो।"

जबला ने कहा : قَدْ كُنْتُ اَظُنُّ اَنْ اَكُونَ فِي الْاِسْلَامِ اَعَزَّ مِنِّي فِي الْجَاهِلِيَّةِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं तो येह समझता था कि जाहिलिय्यत के मुक़ाबिल इस्लाम में ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ हो कर रहूंगा।"

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : دَعْ عَنْكَ هٰذَا فَاِنَّكَ اِنْ لَمْ تَرْضِ الرَّجُلَ اَقَدْتُهُ مِنْكَ "या'नी इस सोच को ख़ुद से दूर कर लो क्यूंकि अगर तुम इस आदमी को राज़ी कर लेते हो तो ठीक वरना मैं इस को तुम से बदला दिलवाऊंगा।"

जबला ने कहा : "तब तो मैं नसरानी ही हो जाता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنْ تَنَصَّرْتَ ضَرَبْتُ عُنُقَكَ "या'नी अगर तुम नसरानी हो गए तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा।"

जबला बड़ा हैरान व परेशान हो गया, उसे यक़ीन हो गया कि दलाइल देने का कोई फ़ाइदा नहीं है, उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक रात की मोहलत मांगी ताकि इस मुआ़मले में ग़ौरो ख़ौज़ के बा'द कोई फ़ैसला कर सके। बा'दे अज़ां वोह ग़ुस्सानी ह़ाकिम जबला बिन ऐहम अपने साथियों के साथ मक्कए मुकर्रमा छोड़ कर क़ुस्तुनत़ीनिय्या भाग गया और वहां जा कर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नसरानी हो गया।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ैसला करने के मदनी फूल

शकर रन्जियां और इन के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ औक़ात चन्द इस्लामी भाइयों के माबैन कुछ ग़लत़ फ़हमियों वग़ैरा की बिना पर शकर रन्जियां पैदा हो जाती हैं और बात बढ़ते बढ़ते शदीद अ़दावत तक पहुंच कर क़त़ए तअ़ल्लुक़ी पर ख़त्म होती है। फिर ऐ़ब जूई, ग़ीबत, चुग़ली, ग़लत़ बयानी और बोहतान तराशी की गर्म बाज़ारी के सबब गुनाहों की सियाही और अनानिय्यत और ज़िद की वज्ह से त़रफ़ैन की तबाही का इन्तिज़ाम होने लगता है। यक़ीनन येह शैत़ाने लईन के कारनामे हैं कि येह मुसलमानों बिल ख़ुसूस नेकी की दा'वत देने वालों को आपस में लड़वा कर इन के मक़्सदे अस्ली (मदनी काम) से तवज्जोह हटाने की कोशिश करता है। शैत़ान के इन फ़ितनों से शायद ही कोई घर, इदारा या तन्ज़ीम मह़फ़ूज़ हो। चुनान्चे,

1 ......البداية والنهاية، ج۵، ص۵۵۸۔

www.dawateislami.net

शैतान आपस में लड़वाता है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 40 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''नाचाक़ियों का इलाज'' सफ़्ह़ा 5 ता 6 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! शैत़ान मर्दूद मुसलमानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारत गिरी करवाता है, नीज़ उन्हें सुल्ह़ पर आमादा होने ही नहीं देता। बल्कि बारहा ऐसा भी होता है कि कोई नेक दिल इस्लामी भाई बीच में पड़ कर उन में सुल्ह़ करवा भी दे तब भी त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर भड़काता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब इस त़रह़ की सूरते ह़ाल पैदा होती है तो उस वक़्त लोग उ़मूमन किसी अहम फ़र्द (ख़्वाह वोह किसी घर या क़बीले का सर बराह हो या किसी इदारे या तन्ज़ीम का बड़ा ज़िम्मेदार) की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं और फिर उस फ़र्द को फ़ैसला करने की अहम ज़िम्मेदारी अदा करना पड़ती है। येह ज़िम्मेदारी उस वक़्त मज़ीद बढ़ जाती है जब ऐसा मुआ़मला किसी दीनी तन्ज़ीम के ज़िम्मेदार के हां पेश होता है कि उस से अगर कोई ग़लत़ फ़ैसला सरज़द हो गया तो त़रफ़ैन में से दोनों या एक बदज़न हो कर उस ज़िम्मेदार....और ह़माक़त की रफ़ाक़त हुई तो तन्ज़ीम...बल्कि शक़ावत की नुहूसत भी साथ हुई तो दीन से दूर हो कर फिर से गुनाहों भरे गन्दे माह़ोल में पड़ सकता है। लिहाज़ा ह़कम (या'नी फ़ैसला करने वाले) के लिये निहायत ज़रूरी है कि वोह फ़ैसला करने के लिये ज़रूरी शरई आदाब जानता हो, जिन्हें पेशे नज़र रख कर इन्तिहाई ह़िक्मते अ़मली से फ़ैसला करे। चुनान्चे, ज़ैल में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 64 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''**फ़ैसला करने के मदनी फूल**'' से फ़ैसला करने के कुछ आदाब बयान किये जाते हैं :

(1) उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों

दो इस्लामी भाइयों में किसी क़िस्म का निज़ाअ़ वाक़ेअ़ हो तो उन्हें चाहिये कि निज़ाअ़ का शरई ह़ल तलाश करने के लिये उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِی الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِیْنَ یَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ﴾ (پ۵، النساء:۸۳)

''**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और अगर उस में रसूल और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों की त़रफ़ रुजूअ़ लाते तो ज़रूर उन से इस की ह़क़ीक़त जान लेते येह जो बात में काविश करते हैं।''

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि कुरआनो सुन्नत से मसाइल का ह़ल तलाश करना सिर्फ़ उन्ही लोगों का काम है जो इस के अहल हैं। और जब ह़ल मिल जाए तो "**क़ीलो क़ाल**" न कीजिये बल्कि सरे तस्लीम ख़म कर दीजिये। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴾اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾﴿(پ۱۸، النور: ۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "मुसलमानों की बात तो येही है जब **अल्लाह** और रसूल की त़रफ़ बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग मुराद को पहुंचे।" वाज़ेह़ रहे कि जब कुरआने अ़ज़ीम और सुन्नते रसूले करीम से झगड़े का ह़ल मिल जाए तो उसे मान लेना ह़क़ीक़ी मुसलमान होने की अ़लामत है और जो लोग कुरआनो सुन्नत के फ़ैसलों से इन्ह़िराफ़ करते हैं उन के दिलों में निफ़ाक़ पाया जाता है। क्यूंकि कुफ़्रो निफ़ाक़ की तारीक वादियों में भटकने वाले लोग कभी पसन्द नहीं करते कि उन का फ़ैसला कुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ किया जाए। उन्हें येह फ़िक्र दामनगीर होती है कि अगर कुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ फ़ैसला हुवा तो यक़ीनन सच पर मबनी होगा और ह़क़ीक़त रोज़े रौशन की त़रह़ इयां हो जाएगी और इस त़रह़ झूट का पर्दा फ़ाश होने से उन की जग हंसाई होगी।

(2) जो अह्ल हो वोही फ़ैसला करे

अगर दो इस्लामी भाइयों के दरमियान किसी बात पर शदीद इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाए और उन्हें इस का कोई ह़ल नज़र न आता हो तो वोह किसी ऐसे ज़िम्मेदार इस्लामी भाई की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों जो उन के दरमियान फ़ैसला करने की अहलिय्यत रखता हो। चुनान्चे, जिस इस्लामी भाई की ख़िदमत में फ़रीक़ैन ह़ाज़िर हों, अगर सिर्फ़ वोही इस झगड़े का फ़ैसला कर सकता हो किसी दूसरे में सलाह़िय्यत ही न हो कि इन्साफ़ करे तो इस सूरत में उस इस्लामी भाई पर वाजिब है कि वोह उन के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म करे। और अगर कोई दूसरा इस्लामी भाई भी इस क़ाबिल हो मगर येह ज़ियादा सलाह़िय्यत रखता है तो अब इस को क़बूल कर लेना मुस्तह़ब है और अगर दूसरे भी इसी क़ाबिलिय्यत के हैं तो इख़्तियार है क़बूल करे या न करे और अगर सलाह़िय्यत रखता है मगर दूसरा इस से बेहतर है तो इस को क़बूल करना मकरूह है और येह शख़्स अगर खुद जानता है कि येह काम मुझ से अन्जाम न पा सकेगा तो क़बूल करना ह़राम है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स दुरुस्त बात का फ़ैसला करने की अहलिय्यत न पाता हो तो वोह फ़रीक़ैन को बता दे कि वोह इस मुआ़मले को किसी अह्ल (या'नी बड़े ज़िम्मेदार) के पास

www.dawateislami.net

ले जाएं और इस सूरत में इ़ज़्ज़तो मर्तबे के ज़ो'म में ख़ुद को बत़ौरे ह़कम पेश कर के हरगिज़ हलाकत में न पड़े और न ही दिल में ऐसी त़लब व तमन्ना रखे क्यूंकि येह मुआ़मला हमारे अन्दाज़े से कहीं बढ़ कर नज़ाकत का ह़ामिल और एह़तियात़ का तक़ाज़ा करने वाला है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ وَلِیَ الْقَضَاءَ فَقَدْ ذُبِحَ بِغَیْرِ سِکِّیْنٍ "या'नी जो लोगों के दरमियान क़ाज़ी बनाया गया गोया बिग़ैर छुरी के ज़ब्ह़ कर दिया गया।"(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि "छुरी से ज़ब्ह़ कर देने में जान आसानी से और जल्द निकल जाती है, बिग़ैर छुरी मारने में जैसे गला घोंट कर, डुबो कर, जला कर, खाना पानी बन्द कर के, इन में जान बड़ी मुसीबत से और बहुत देर में निकलती है। ऐसा क़ाज़ी बदन में मोटा हो जाता है मगर दीन इस त़रह़ बरबाद कर लेता है कि इस की सज़ा दुन्या में भी पाता है और आख़िरत में भी बहुत दराज़, क्यूंकि ऐसा क़ाज़ी ज़ुल्म, रिश्वत, ह़क़ तलफ़ी वग़ैरा ज़रूर करता है जिस से दुन्या उस पर ला'नत करती है, रसूल नाराज़ हैं। फ़िरऔ़न, ह़ज्जाज, यज़ीद वग़ैरा की मिसालें मौजूद हैं, इस ह़दीस की बिना पर ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जेल में जान देना क़ुबूल फ़रमा लिया मगर क़ज़ा क़ुबूल न फ़रमाई।(2)

(3) "ह़कम" बनने की ख़्वाहिश नहीं करनी चाहिये

अगर कोई इस्लामी भाई ख़ुद इस ख़्वाहिश का इज़्हार करे कि उसे ह़कम (या'नी फ़ैसला करने वाला) बना दिया जाए तो ऐसा हरगिज़ न किया जाए। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं और मेरी क़ौम के दो शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे, उन में से एक ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे अमीर (लोगों के मुआ़मलात की देख भाल करने वाला) बना दीजिये।" और दूसरे ने भी येही अ़र्ज़ की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हम उस को वाली नहीं बनाते जो इस का सुवाल करे और न उसे जो इस की ह़िर्स करे।"(3)

ज़िम्मेदारी मांग कर लेने की सूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोशिश की जाए कि ज़िम्मेदारी मांग कर न ली जाए, अगर्चे ऐसा करना जाइज़ है जब कि अहलिय्यत हो और इस जैसा कोई न हो जैसा कि ह़ज़रते

---

1 ......ابوداود، کتاب الاقضیۃ، باب في طلب القضاء، ج ۳، ص ۴۱۷، حدیث: ۳۵۷۱۔

2 ....मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 377।

3 ......بخاری، کتاب الاحکام، باب مایکرہ من الحرص علی الامارۃ، ج ۴، ص ۴۵۶، حدیث: ۷۱۴۹۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि उन्हों ने ज़िम्मेदारी मांग कर ली थी। चुनान्चे, सूरए यूसुफ़ में है : (پ۱۳، یوسف:۵۵) ﴿قَالَ اجْعَلْنِیْ عَلٰی خَزَآىٕنِ الْاَرْضِۚ اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ۝۵۵﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "यूसुफ़ ने कहा मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं।"

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "अह़ादीस में त़लबे इमारत की मुमानअ़त आई है, इस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अह्ल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मकरूह है लेकिन जब एक ही शख़्स अह्ल हो तो उस को अह़कामे इलाहिया की इक़ामत के लिये इमारत का त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे, आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़त़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़तो आसाइश पहुंचाने की येही सबील है कि उनाने हुकूमत को आप अपने हाथ में लें इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई।"

पस जो इस्लामी भाई अच्छी त़रह़ किसी मुआ़मले की नज़ाकत व ह़क़ीक़त से आगाह हो न उस ने पहले कभी कोई ऐसा काम किया हो तो उस से ग़लती का इमकान होता है और अगर वोह इस्लामी भाई इस मुआ़मले को खुश उस्लूबी से पायए तक्मील तक पहुंचाने की सलाह़िय्यत रखता हो तो उसे ज़िम्मेदार बनाने में कोई ह़रज नहीं चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुसलमानों के बाहमी उमूर का फ़ैसला करने का ओ़ह्दा मांगा यहां तक कि उसे पा लिया फिर उस का अ़द्ल उस के ज़ुल्म पर ग़ालिब रहा (या'नी अ़द्ल ने ज़ुल्म करने से रोका) तो उस के लिये जन्नत है और जिस का ज़ुल्म अ़द्ल पर ग़ालिब आया उस के लिये जहन्नम है।"(1)

(4) फ़रीक़ैन में सुल्ह़ करा दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कभी दो इस्लामी भाइयों के दरमियान किसी मुआ़मले में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई को कोशिश करनी चाहिये कि फ़रीक़ैन आपस में बाहमी बात चीत के ज़रीए़ किसी सूदमन्द नतीजे पर पहुंच कर सुल्ह़ कर लें। चुनान्चे,

1 ......ابوداود، کتاب الاقضیة، باب فی القاضی یخطیٔ، ج۳، ص۴۱۸، حدیث:۳۵۷۵۔

www.dawateislami.net

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَ اِنْ طَآىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَاۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِیْ تَبْغِیْ حَتّٰى تَفِیْٓءَ اِلٰۤى اَمْرِ اللّٰهِۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَ اَقْسِطُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ(۹) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَ اَخَوَیْكُمْ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۠(۱۰)﴾ (پ۲۶، الحجرات: ۹، ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अगर मुसलमानों के दो गुरौह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़ कराओ फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहां तक कि वोह **अल्लाह** के हुक्म की त़रफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उन में इस्लाह़ कर दो और अ़द्ल करो बेशक अ़द्ल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं। मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करो और **अल्लाह** से डरो कि तुम पर रह़मत हो।"

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इन आयाते मुबारका की तफ़्सीर करते हुवे फ़रमाते हैं कि "नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दराज़ गोश पर सुवार तशरीफ़ ले जाते थे, अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुवा, वहां थोड़ा सा तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो अ़ब्दुल्लाह इब्ने उबय मुनाफ़िक़ ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि हुज़ूर के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है, हुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए, उन दोनों में बात बढ़ गई और उन दोनों की क़ौमें लड़ गईं और हाथापाई तक नौबत पहुंची तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और उन में सुल्ह़ करा दी। इस मुआ़मले में येह आयात नाज़िल हुई।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ था इस के सबब मुसलमानों के दो गुरौहों में लड़ाई हुई जिन में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुल्ह़ करवा दी। इस से मा'लूम हुवा कि अगर दो इस्लामी भाइयों में किसी मस्अले पर इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उन में सुल्ह़ करा देना प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है।

मियां बीवी में सुल्ह़ करा दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर ऐसी नाचाक़ियां ज़ौजैन में पैदा हों कि जिन का ह़ल वोह आपस में तै़ न कर सकें तो मर्द को न तो त़लाक़ में जल्दबाज़ी से काम लेना चाहिये और न ही औ़रत को

www.dawateislami.net

ख़ल्अ़ में और इन्हें कोशिश करनी चाहिये कि झगड़े के ह़ल के लिये न तो कोर्ट कचहेरी जाना पड़े न ही किसी आ़म मजलिस में। बल्कि अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब में से ऐसे दो अफ़राद का इन्तिख़ाब करें कि जो शरीअ़त की सूझ बूझ भी रखते हों और उन के झगड़े को खुश उस्लूबी से ह़ल कर के उन के दरमियान सुल्ह़ करा दें। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَ اِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَیْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ یُّرِیْدَاۤ اِصْلَاحًا یُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَیْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیْمًا خَبِیْرًا ۝﴾ (پ۵، النساء:۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अगर तुम को मियां बीबी के झगड़े का ख़ौफ़ हो तो एक पंच मर्द वालों की त़रफ़ से भेजो और एक पंच औ़रत वालों की त़रफ़ से येह दोनों अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन में मैल कर देगा बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है।"

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "नूरुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि शौहर और बीवी में सुल्ह़ करा देना बेहतरीन इबादत है। ऐसे ही मुसलमानों में सुल्ह़ कराना बहुत अच्छा है।"

(5) फ़रीक़ैन से बराबरी का सुलूक कीजिये

जो अहलिय्यत रखते हुवे फ़ैसला करे, अ़द्लो इन्साफ़ के तक़ाज़े ज़रूर पूरे करे जैसा कि कुरआने पाक का हुक्म है : ﴿وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَیْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ﴾ (پ۵، النساء:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के साथ करो।"

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی तफ़्सीरे "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "ह़ाकिम (और फ़ैसला करने वाले) को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर का सुलूक करे : (1) अपने पास आने के लिये जैसे एक को मौक़अ़ दे वैसे दूसरे को भी दे। (2) निशस्त (या'नी बैठने की जगह) दोनों को एक जैसी दे। (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे। (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे। (5) फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे, जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए।"

(6) हर फ़रीक़ की बात तवज्जोह से सुनिये

फ़ैसला करने के आदाब में से येह भी है कि फ़रीक़ैन में से जिस त़रह़ एक की बात सुनी जाए उसी त़रह़ बड़ी तवज्जोह से दूसरे की बात भी सुनी जाए। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) फ़रमाते हैं : "मुझे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यमन की त़रफ़ क़ाज़ी बना कर भेजा तो मैं ने अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मुझे भेज तो रहे हैं मगर मैं कम उ़म्र हूं और मुझे फ़ैसला करने का इ़ल्म भी नहीं है। (लिहाज़ा इस अम्र में मेरी इआ़नत भी फ़रमाइये !) तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे दिल को हिदायत देगा और तुम्हारी ज़बान को साबित रखेगा। (ध्यान रखना कि) जब फ़रीक़ैन तुम्हारे सामने बैठ जाएं तो उस वक़्त तक फ़ैसला न करना जब तक दोनों की बात मुकम्मल न सुन लो कि येह त़रीक़ए कार तुम्हारे लिये फ़ैसले को वाज़ेह़ कर देगा।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم) फ़रमाते हैं : فَمَا زِلْتُ قَاضِیًا اَوْ مَا شَکَکْتُ فِی قَضَاءٍ بَعْدُ "या'नी इस के बा'द कभी मुझे किसी फ़ैसले में तरद्दुद न हुवा।"(1)

(7) फ़ैसला करने में जल्दबाज़ी न कीजिये

फ़ैसला करने के आदाब में से एक अहम तरीन अदब येह भी है कि फ़ैसला करने में जल्दबाज़ी से काम न लिया जाए। क्यूंकि जल्दबाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से होती है और इस का अन्जाम बुरा होता है। चुनान्चे, सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : اَلْاَنَاۃُ مِنَ اللّٰهِ وَالْعَجَلَۃُ مِنَ الشَّیْطَانِ "या'नी किसी काम में तवक़्क़ुफ़ करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और जल्दबाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है।"(2)

सहाबिये रसूल की हिकायत

मरवी है कि दो शख़्स शहर "किन्दा" के एक दरवाज़े से दाख़िल हुवे। उस वक़्त कुछ अन्सार दाइरे की सूरत में तशरीफ़ फ़रमा थे, जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी शामिल थे। चुनान्चे, उन दोनों में से एक ने अन्सार की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि क्या कोई शख़्स हमारे झगड़े का फ़ैसला कर देगा ? तो एक शख़्स फ़ौरन बोला : हां इधर मेरे पास आओ। तो उस की येह बात सुन कर सय्यिदुना अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कंकरियों की मुठ्ठी भर कर

---

1 ......ابوداود، کتاب الاقضیۃ، باب کیف القضاء، ج۳، ص۴۲۱، حدیث: ۳۵۸۲۔

2 ......ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی التانی والعجلۃ، ج۳، ص۴۰۷، حدیث: ۲۰۱۹۔

www.dawateislami.net

उसे मारी और फ़रमाया : مَهْ إِنَّهُ كَانَ يَكْرَهُ التَّسَرُّعَ إِلَى الْحُكْمِ "या'नी ठहर जाओ, फ़ैसले में जल्दी न करो क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ैसले में जल्दबाज़ी को ना पसन्द फ़रमाते थे।[1]

(8) ख़ूब तह्क़ीक़ से काम लीजिये

फ़ैसला करने वाले को चाहिये कि पहले ख़ूब तह्क़ीक़ कर ले, फिर जो ह़क़ ज़ाहिर हो उसी पर फ़ैसला करे। चुनान्चे, रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ "या'नी जब ह़ाकिम इजतिहाद के साथ फ़ैसला करे और वोह फ़ैसला दुरुस्त हो तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर वोह इजतिहाद के साथ फ़ैसला करे और उस में ग़लती कर जाए तो भी उस के लिये एक अज्र है।"[2]

दोस्त के क़ातिल

एक शख़्स अपने चन्द दोस्तों के साथ किसी सफ़र पर गया, उस के दोस्त तो वापस लौट आए मगर वोह वापस न आया तो उस के घरवालों ने उस के दोस्तों पर इल्ज़ाम लगाया कि उन्हों ने उसे क़त्ल कर दिया है। जब मुआ़मला ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास गया तो आप ने पूछा : "क्या क़त्ल का कोई गवाह है ?" चूंकि क़त्ल का कोई गवाह न था लिहाज़ा वोह इस मुआ़मले को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की बारगाह में ले गए और सारी बात अ़र्ज़ कर दी कि सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से येह कहा है। उन की सारी बातें सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के त़र्ज़े अ़मल पर पहले बत़ौरे कहावत येह शे'र पढ़ा :

أَوْرَدَهَا سَعْدٌ وَسَعْدٌ مُشْتَمِلْ

يَاسَعْدُ لَا تُرْوَى بِهَا ذَاكَ الْإِبِلْ

तर्जमा : "सा'द चादर में ऊंटों को कुंवें पर लाया और ख़ुद चादर तान कर सो गया (ऐ काश ! कोई सा'द को बताए कि) ऐ सा'द ! ऊंटों को इस त़रह़ पानी नहीं पिलाया जाता।"

इस के बा'द आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक और अ़रबी कहावत कही : إِنَّ أَهْوَنَ السَّقْيِ التَّشْرِيْعُ "या'नी जानवरों को पानी पिलाना हो तो सब से आसान त़रीक़ा येह है कि उन्हें किसी घाट वग़ैरा से

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب کراھیة طلب الامارة والقضاء۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۱۷۳، حدیث: ۲۰۲۵۲۔

2 ......مسلم، کتاب الاقضیة، باب بیان اجر الحاکم اذا اجتھد فاصاب او اخطا، ص ۹۴۴، حدیث: ۱۵۔

www.dawateislami.net

पानी पिलाया जाए।" फिर आप ने उस शख़्स के तमाम दोस्तों को जुदा जुदा कर के बुलाया और उन से मुख़्तलिफ़ सुवालात किये तो उन के जवाबात में पहले तो इख़्तिलाफ़ पाया गया और बिल आख़िर उन्हों ने तस्लीम कर लिया कि हां वाक़ेई इन्हों ने उस शख़्स को क़त्ल कर दिया है। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ैसला फ़रमाया कि बतौरे क़िसास उन सब को भी क़त्ल कर दिया जाए।(1)

(9) गुस्से में फ़ैसला न कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी सबब से तबीअ़त बे चैन और मुज़्तरिब होने या गुस्सा वग़ैरा की किसी भी ऐसी हालत में फ़ैसले से गुरेज़ करना चाहिये जो हक़ व नाहक़ के दरमियान रुकावट बन सकती हो। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे हज़रते अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इरशाद फ़रमाया कि सिजिस्तान के क़ाज़ी उ़बैदुल्लाह बिन अबी बकरह को मक्तूब लिखो कि कभी भी गुस्से की हालत में फ़ैसला न करना क्यूंकि मैं ने साहिबे हिल्मो हिकम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : لَا يَحْكُمْ اَحَدٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ "कोई शख़्स दो बन्दों के दरमियान गुस्से की हालत में फ़ैसला न करे।"(2)

(10) किसी फ़रीक़ का हक़ ज़ाएअ़ न हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैसला करते हुवे हमेशा याद रखिये कि किसी फ़रीक़ का हक़ ज़ाएअ़ न हो। हमेशा अ़द्ल का दामन थामे रहें कि अ़द्ल से काम लेना जन्नत में ले जाने वाला और फ़ैसले में ना इन्साफ़ी करना जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़ाज़ी (या'नी फ़ैसला करने वाले) तीन तरह के होते हैं : एक जन्नती और दो दोज़ख़ी। पस जन्नती वोह है जो हक़ पहचान कर उस के मुताबिक़ फ़ैसला करे और जो क़ाज़ी हक़ जान ले मगर फ़ैसले में ज़ुल्म करे वोह दोज़ख़ी है और जो जहालत पर (या'नी हक़ व नाहक़ की तहक़ीक़ के बिग़ैर) लोगों के फ़ैसले करे वोह भी दोज़ख़ी है।"(3)

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، باب التثبت فی الحکم، ج ۱۰، ص ۱۷۹، حدیث: ۲۰۲۷۴۔

2 ......مسلم، کتاب الاقضیۃ، باب کراھۃ قضاء القاضی وھو غضبان، ص ۹۴۵، حدیث: ۱۲۔

3 ......ابوداود، کتاب الاقضیۃ، باب فی القاضی یخطیء، ج ۳، ص ۴۱۸، حدیث: ۳۵۷۳۔

www.dawateislami.net

एक रिवायत में यूं है कि रोज़े क़ियामत तमाम हाकिमों को लाया जाएगा, उन में आदिल भी होंगे और ज़ालिम भी यहां तक कि जब वोह सब पुल सिरात़ पर खड़े हो जाएंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "तुम में से बा'ज़ मेरे महबूब हैं।" (वोही ब हिफ़ाज़त पुल सिरात़ से गुज़र पाएंगे) और जो हाकिम अपने फ़ैसले में ज़ुल्म करने वाला, रिश्वत लेने वाला या मुक़द्दमे के फ़रीक़ैन में से किसी एक की बात ज़ियादा तवज्जोह और ध्यान से सुनने वाला होगा वोह सत्तर साल तक दोज़ख़ की गहराई में गिरता चला जाएगा। इस के बा'द ऐसे हाकिम को लाया जाएगा जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुक़र्रर कर्दा सज़ाओं से ज़ियादा किसी को सज़ा दी होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा : لِمَ ضَرَبْتَ فَوْقَ مَا اَمَرْتُکَ؟ "तू ने मेरे हुक्म से ज़ाइद क्यूं सज़ा दी ?" अ़र्ज़ करेगा : غَضِبْتُ لَکَ "ऐ बारी तआ़ला ! मुझे तेरी ख़ातिर ग़ुस्सा आ गया था।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "क्या तेरा ग़ुस्सा मेरे ग़ज़ब से ज़ियादा सख़्त था ?" इस के बा'द एक ऐसे शख़्स को लाया जाएगा जिस ने हुदूद के नफ़ाज़ में कमी की होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से पूछेगा : لِمَ قَصَّرْتَ؟ "या'नी ऐ मेरे बन्दे ! तू ने सज़ा में कमी क्यूं की ?" अ़र्ज़ करेगा : "ऐ परवर दगार ! मुझे उस पर रह़्म आ गया था।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "क्या तेरी रह़मत मेरी रह़मत से बढ़ कर थी ?"[1]

दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करने का मश्वरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुछ मुआ़मलात निजी नौइय्यत के भी होते हैं अगर आप के पास ऐसे पेचीदा मुआ़मलात आएं जिन का तअ़ल्लुक़ घरेलू उमूर, त़लाक़, जाइदाद या कारोबार वग़ैरा से हो तो ऐसी सूरत में उन फ़रीक़ैन की उ़लमाए अह्ले सुन्नत की त़रफ़ राहनुमाई फ़रमा दें कि येह उन फ़ैसलों की नज़ाकत और अन्दाज़ को बेहतर समझते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का **अ़ज़्मे मुसम्मम** रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन के तह़्त बहुत से शो'बाजात ख़िदमते दीन के लिये कोशां हैं। इन में से एक शो'बा **"दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत"** भी है, येह दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है और इस का काम मसाइल में अ़वामुन्नास की शरई रहनुमाई करना है।

---

1 ......جامع الاحادیث، ج۹، ص ۲۳۴، حدیث: ۲۸۲۱۷-

www.dawateislami.net

हां ! अगर आप के पास इस्लामी भाइयों के आपस के तनाज़ोआत व इख़्तिलाफ़ात के मुआमलात आएं जिन का तअल्लुक़ तन्ज़ीमी उमूर से हो तो हत्तल मक्दूर तरफ़ैन के मौक़िफ़ सुन कर सुल्ह करवा दें बशर्ते कि सुल्ह में किसी की ऐसी हक़ तलफ़ी न हो कि जिस का अदा करना ज़रूरी हो वरना अहलिय्यत हो तो हक़ बात पर फ़ैसले की तरकीब बना दीजिये ।

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी अद्लो इन्साफ़ क़ाइम करने में सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, जिस त़रह़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में मुसलमानों के माबैन होने वाले मुख़्तलिफ़ मुआमलात में कई फ़ैसले करवाए इसी त़रह़ आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी इस्लामी भाइयों के दरमियान पैदा होने वाली शकर रन्जियों में कई बार फ़ैसले कराए हैं ।

अमीरे अह्ले सुन्नत का फ़ैसला करने का अन्दाज़

इस सिलसिले में आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुबारक अन्दाज़ यूं देखा गया है : "सुल्ह व फ़ैसले से पहले आप दुआ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से फ़रेबे नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ इस्तिआनत करते हैं । फिर कमाले ज़ब्त़ से फ़रीक़ैन का मौक़िफ़ समाअ़त करते हैं । आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की आ़दते मुबारका है कि हरगिज़ किसी एक की त़रफ़ झुकाव इख़्तियार नहीं फ़रमाते । सामने कैसा ही ज़िम्मेदार या क़रीबी इस्लामी भाई हो इन्साफ़ के दामन को हाथ से नहीं जाने देते और जो हक़ हो उसी पर फ़ैसला सादिर फ़रमाते हैं । आप की हत्तल इमकान येही कोशिश होती है कि मुआमला सुल्ह व सफ़ाई से तै पा जाए चुनान्चे, बारहा ऐसा हुवा कि दो फ़रीक़ आपस में ग़म व ग़ुस्सा लिये बारगाहे अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ में हाज़िर हुवे और अपने अपने मौक़िफ़ व मुद्दआ पर ज़िद और सख़्ती का मुज़ाहरा किया मगर जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने दिलकश अन्दाज़, हिक्मते अ़मली और हुस्ने तदबीर से सुल्ह की बरकतें, ग़ुस्से और इस के सबब पैदा होने वाले बुग़्ज़ो कीना वग़ैरा के नुक़्सानात, क़त़ए तअल्लुक़ी की नुहूसतें, मुआफ़ करने और मुसलमानों के ऐ़ब छुपाने के फ़ज़ाइल, ग़ीबत व तोहमत की तबाह कारियां और इन से बचने के त़रीके़, ज़ुल्म पर सब्र के फ़वाइद, आपस की महब्बत और हुक़ूक़ुल इबाद की बजा आवरी की तरग़ीबात इरशाद फ़रमाईं तो इन्हें सुन कर फ़रीक़ैन अपने मौक़िफ़ से दस्तबरदार हो कर सुल्ह पर आमादा हो गए और जज़्बात व तअस्सुर से रो रो कर एक दूसरे से मुआफ़ी मांगते हुवे गले मिल गए । चुनान्चे,

www.dawateislami.net

यूरोपियन मुमालिक के एक शहर के तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों में शकर रन्जियां चल रही थीं। सुल्ह़ की कोई मज़्बूत़ सूरत नहीं बन पाती थी और दा'वते इस्लामी का मदनी काम बहुत मुतअस्सिर था। अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई तो आप ने एक मक्तूब दिया। चुनान्चे, मजलिसे बैरूने मुल्क के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई वोह मक्तूब ले कर बाबुल मदीना कराची से सफ़र कर के रजबुल मुरज्जब सिने 1427 हिजरी में मत़लूबा शहर पहुंचे। इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के "मक्तूबे अ़त्तार" पढ़ कर सुनाया गया, सुन कर सारे बे क़रार व अश्कबार हो गए, रो रो कर एक दूसरे से मुआ़फ़ियां मांग लीं और सब ने सुल्ह़नामा पर दस्तख़त़ कर दिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل वहां अब अम्न है, दा'वते इस्लामी के मदनी कामों और मदनी क़ाफ़िलों में तरक़्क़ी की इत्त़िलाआ़त हैं। येह मक्तूब आख़िरत की याद दिलाने वाला, ख़ौफ़े ख़ुदा में तड़पाने वाला और सुल्ह़ सफ़ाई पर उभारने वाला है। मदनी आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم की दुख्यारी उम्मत के अ़ज़ीम तर मफ़ाद की ख़ात़िर मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या की जानिब से इस इन्क़िलाबी मक्तूबे अ़त्तार को ज़रूरतन तरमीम के साथ "**नाचाक़ियों का इलाज**" के नाम से एक रिसाला मक्तबतुल मदीना ने पेश किया है। जहां भी ज़ाती नाराज़ियों के बाइस मुसलमानों में दो फ़रीक़ बन गए हों येह रिसाला पढ़ कर सुना दिया जाए, اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل ख़ाइफ़ीन के जिगर पाश पाश हो जाएंगे और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर कर सुल्ह़ कर लेंगे।

इस रिसाले में आयात व रिवायात और ह़िकायात की रौशनी में चपक़लिश और ज़ाती रन्जिशों के नुक़्सानात का वोह इ़ब्रतनाक बयान है जो कि नर्म दिलों के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل मर्हमे जुराह़त और सख़्त दिलों के लिये ताज़ियानए इ़ब्रत साबित होगा। जो इ़ब्रत ह़ासिल करे करे और जो न करे न करे, नसीब अपना अपना.....! रिसाला "नाचाक़ियों का इलाज" स. 3 ता 5 की चन्द इब्तिदाई सुत़ूर येह हैं :

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْہُ की त़रफ़ से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी....(जगह का नाम ह़ज़्फ़ कर दिया है).....की मजलिसे मुशावरत के निगरान, अराकीन और ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में नफ़रतें मिटाने वाले और मह़ब्बतें फैलाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के इमामए पुर अन्वार के बोसे लेता हुवा, गेसूए ख़मदार को चूमता हुवा, मदीने की गलियों में घूमता हुवा, झूमता हुवा मुश्कबार सलाम ! (दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं :) "बाहमी शकर रन्जियों, बार

www.dawateislami.net

बार सुल्ह़ कर लेने के बा वुजूद एक दूसरे पर की जाने वाली नुक्ता चीनियों के बाइस उठने वाले नित नए फ़ितनों और इस के सबब दीन के अ़ज़ीम मदनी कामों को नुक़्सानों से बचाने, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप ह़ज़रात की ख़िदमात में तह़रीरी ह़ाज़िरी की सआ़दत पा रहा हूं। अगर मेरी मदनी इल्तिजाओं को ह़िर्ज़े जान बना लेंगे और कम अज़ कम 12 माह तक हर महीने फ़र्दन फ़र्दन या ज़िम्मेदारान को इकट्ठा कर के इजतिमाई त़ौर पर इसी "मक्तूबे अ़त्तार" का मुत़ालआ़ फ़रमा लेंगे तो आप सब गुल्ज़ारे अ़त्तार के गुलहाए मुश्कबार बन कर इस्लामी मुआ़शरे को सदा महकाते रहने में اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कामयाबी पाते रहेंगे। अगर मेरी मा'रूज़ात को ख़ात़िर में नहीं लाएंगे और ग़लत़ी करने वाले की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ इस्लाह़ करने के बजाए बिला मस्लह़ते शरई एक दूसरे को बताते फिरेंगे और आपस में लड़ते लड़ाते रहेंगे तो अ़दावतों, कीनों, ग़ीबतों, चुग़लियों, दिल आज़ारियों, ऐ़ब दरयों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा हलाकत सामानियों के ज़रीए़ अपने आप को مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम का ह़क़दार बनाते रहेंगे। काश! प्यारे प्यारे रह़मान عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस कुरआन और सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा फ़रमान के फ़ैज़ान से किया जाने वाला मुझ सरापा गुनाह व इस्यान का मुल्तजियाना बयान आप सब के कुलूबो अज़्हान पर चोट लगने का बाइस बन कर इस्लाह़ का सामान हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा समझाना राइगां नहीं जाएगा। पारह 27 सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 55 में इरशादे रब्बे ज़ुल्मिनन है :

﴿وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ (پ۲۷، الذریات:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अब आइये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इस दिलनशीन अन्दाज़े बयान के इख़्तितामी जुम्ले पढ़ते हैं और येह भी देखते हैं कि इस पुर असर तह़रीर का इस्लामी भाइयों पर क्या असर हुवा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बराए करम! मुझ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ का मान रख लीजिये। मेरा दिल न तोड़िये, अब ग़ुस्सा थूक दीजिये और सआ़दत मन्दी का सुबूत देते हुवे आपस के इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कर दीजिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रो रो कर तौबा कीजिये और एक दूसरे की साबिक़ा लग़्ज़िशें मुआ़फ़ कर दीजिये। एक दूसरे से मुआ़फ़ी

www.dawateislami.net

तलाफ़ी कर लेने के बा'द मेहरबानी फ़रमा कर नीचे दी हुई तहरीर को पढ़ / सुन कर और अच्छी तरह समझ कर अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये नीचे दस्तख़त कर के इस की Copy मुझे इरसाल फ़रमा कर मुझ पापी व बदकार गुनहगारों के सरदार का दिल ख़ुश कर दीजिये ।

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के जब मक्तूबे अ़त्तार पढ़ कर सुनाया गया तो उन्हों ने बा चश्मे नम इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कर दिये और आपस में सुल्ह़ कर के तह़रीर पर दस्तख़त़ कर दिये ।)

सुन्नत को फैलाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने ...... बिदअ़त को मिटाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
हज़ारों गुम रहों को वा'ज़ और तह़रीर से अपनी ...... रहे जन्नत दिखाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
करा कर बहुत से कुफ़्फ़ार और फुज्जार से तौबा ...... जहन्नम से बचाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
हज़ारों आ़शिक़ाने लंदनो पेरिस को दीवाना ...... मदीने का बनाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
लाखों फ़ेशनी चेहरों को दाढ़ी और सरों को भी ...... इमामे से सजाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
वोह फ़ैज़ाने मदीना रात दिन तक़्सीम करता है ...... जिसे मर्कज़ बनाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
बहुत मेहनत लगन से अपने प्यारे दीन का डंका ...... दुन्या में बजाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
इलाही फूलता फलता रहे रोज़े ह़श्र तक येह ...... गुलिस्तां जो लगाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने
इस नाकारा आ़इज़ को ख़ुलूस अपने की शम्अ़ का ...... परवाना बनाया है अमीरे अह्ले सुन्नत ने

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे प्यारे मुर्शिदे करीम, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ और तमाम उ़लमाए अह्ले सुन्नत का साया हमारे सरों पर तादेर क़ाइम फ़रमा, मदीनए मुनव्वरा में शहदत की मौत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये.........

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने घरवालों का एह़तिसाब करना

......दा'वते इस्लामी और फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बा'ज़ मुख़्तलिफ़ शख़्सिय्यात का एह़तिसाब

......नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग

......वक़्फ़ के पैसों में एह़तियात़ कीजिये।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बा'ज़ बेजा तसर्रुफ़ाती उमूर का एह़तिसाब

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्सूब ग़लत़ इस्तिद्लालात

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर ख़ुसूसी तवज्जोह

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपने नफ़्स का मुह़ासबा

......रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

....

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब

फ़ारूक़े आ'ज़म का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमारे प्यारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात क़ुरआने पाक में बयान फ़रमाई, जिन में से नमाज़ की अदाएगी, ज़कात की अदाएगी, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना सरे फ़ेहरिस्त हैं। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَلَّذِیْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ(۴۱)﴾ (پ۱۷، الحج: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें और अल्लाह ही के लिये सब कामों का अन्जाम।"

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی तफ़्सीरे "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं : "इस में ख़बर दी गई है कि आइन्दा मुहाजिरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़ता फ़रमाने के बा'द उन की सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वोह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे इस में ख़ुलफ़ाए राशिदीन मेहदिय्यीन के अ़द्ल और उन के तक़्वा व परहेज़गारी की दलील है जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमकीन व ह़ुकूमत अ़ता फ़रमाई और सीरते आ़दिला अ़ता की।"

वाक़ेई तारीख़ गवाह है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ भी इस बात पर शाहिद है कि इस आयते मुबारका में जिन सिफ़ात की पेशन गोई फ़रमाई गई थी दीगर ख़ुलफ़ा के साथ साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी उन्हें ब ह़ुस्नो ख़ूबी अन्जाम दिया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह पूरी कोशिश रही कि जिन उमूर से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया उन से लोगों को दूर रखें, आप ने बुराई के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग फ़रमाया और अच्छे उमूर पर अ़मल करने में लोगों की हिम्मत अफ़्ज़ाई फ़रमाई।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एह़तिसाबी अम्र दूसरे लोगों के साथ ख़ास नहीं था बल्कि आप अपने घरवालों ख़ुसूसन अपने बेटों का भी एह़तिसाब फ़रमाया करते थे, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ उमूर की पकड़ के साथ साथ उन तमाम उमूर की भी गिरिफ़्त

www.dawateislami.net

फ़रमाई जिन का तअ़ल्लुक़ अ़वामी या मुआ़शरती मस्लह़तों के साथ था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निज़ामे एह़तिसाब के चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

दौरे जाहिलिय्यत की रस्म को ख़त्म फ़रमा दिया

क़दीम दौर में मिस्र की तमाम तर पैदावार का दारोमदार दरयाए नील पर था इसी लिये मिस्र अपनी ख़ुशह़ाली और ज़रख़ेज़ी के लिये हमेशा "दरयाए नील" का मरहूने मन्नत रहा है। जब दरयाए नील सूख जाता तो दोबारा उसे रवां दवां करने के लिये कई सदियों से एक "बेहूदा रस्म" पर अ़मल जारी था। रस्म येह थी कि एक ह़सीनो जमील दोशीज़ा को ख़ूब सूरत लिबास और आ'ला ज़ेवरात से आरास्ता कर के दरया के सिपुर्द कर दिया जाता इस त़रह़ दरयाए नील दोबारा जारी हो जाता। इस रस्म का नाम "अ़रूसुन्नील" था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां का गवर्नर मुक़र्रर किया गया तो अह्ले मिस्र ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की और उन्हों ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में इस मस्अले को पेश कर दिया। आप ने दरया के नाम एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस के सबब दरयाए नील हमेशा के लिये जारी हो गया और इस त़रह़ ज़मानए जाहिलिय्यत की रस्म को आप ने बिल्कुल ख़त्म फ़रमा दिया।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से मा'लूम हुवा कि ज़मानए जाहिलिय्यत की तमाम ग़ैर शरई रस्मों की कोई वुक़्अ़त व अहम्मिय्यत नहीं है, बल्कि ऐसी रस्मों को फ़ौरन ख़त्म कर देना चाहिये, आज कल हमारे यहां भी मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में जाहिलाना रस्मों का रवाज है, ख़ुसूसन शादी बियाह के मौक़अ़ पर बिल्कुल फ़ुज़ूल और ख़िलाफ़े शरअ़ रस्मों की अदाएगी की जाती है, जो यक़ीनन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ख़ुद भी इन से बचिये और अपने घरवालों को भी इन बेहूदा रस्मों से बचाइये नीज़ सुन्नत के मुत़ाबिक़ इस प्यारी प्यारी "सुन्नते निकाह़" को अपनाइये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी।(2)

1....تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۰، حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات۔۔۔الخ، المطلب الثالث، ص ۶۱۲ तफ़्सीली वाक़िए़ के लिये "फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म" (जिल्द अव्वल) बाब "करामाते फ़ारूके़ आ'ज़म" सफ़ह़ा 632 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2....शादी बियाह की जाइज़ व नाजाइज़ रस्मों की तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 158 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" सफ़ह़ा 35 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने घरवालों का एह्तिसाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब में इरशाद फ़रमाया : "या'नी ह़ाकिम जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक़ूक़ अदा करता है रिआ़या उस के ह़ुक़ूक़ अदा करती है और जब ह़ाकिम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक़ूक़ पामाल करना शुरूअ़ कर देता है तो रिआ़या उस के ह़ुक़ूक़ पामाल करने लगती है।"(1)

येही वज्ह है कि आप अपना और अपने घरवालों का सख़्ती से मुह़ासबा फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जानते थे कि पूरी रिआ़या की निगाहें ह़ाकिम और उस के क़रीबी लोगों की त़रफ़ होती हैं, फ़क़त़ अपनी ज़ात पर सख़्ती की जाए और अपने घरवालों को खुली छूट दे दी जाए येह भी रिआ़या के लिये सख़्त नुक़्सान देह है, नीज़ क़ियामत के दिन हर शख़्स से उस के घरवालों के बारे में भी बाज़ पुर्स होगी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब कोई मुमानअ़त का ह़ुक्म जारी करना चाहते तो सब से पहले अपने घरवालों के पास आते और फ़रमाते : "मैं ने लोगों को फ़ुलां फ़ुलां काम से रोक दिया है लोग तुम पर इसी त़रह़ निगाह रखते हैं जिस त़रह़ गोश्त खाने वाले परन्दे गोश्त पर, पस अगर तुम ने ह़ुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की तो वोह भी करेंगे और अगर तुम दूर रहे तो वोह भी दूर रहेंगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मेरे पास कोई फ़र्द लाया गया जो मेरा क़रीबी है और मेरे ह़ुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है तो मैं उस को दुगनी (Double) सज़ा दूंगा।"(2)

क़ुर्ब के सबब अह्ले ख़ाना की सज़ा भी दुगनी

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मदीनए त़य्यिबा के लोगों को किसी अम्र से रोकना चाहते तो उन्हें बुला कर एक जगह जम्अ़ फ़रमा लेते, फिर इरशाद फ़रमाते : "मैं ने अपनी सारी रिआ़या को फ़ुलां फ़ुलां काम से मन्अ़ कर रखा है (और तुम मदीनए मुनव्वरा के लोग दीगर लोगों के लिये मे'यार हो जभी तो) वोह लोग तुम्हारी त़रफ़ यूं देख रहे हैं जैसे परन्दा गोश्त पर नज़रें जमा लेता है। याद रखो ! अगर तुम किसी बात पर अ़मल करोगे तो दीगर लोग भी तुम्हें देख कर

---

1 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، انصاف الخصمین ۔۔۔ الخ، ج ۱۰، ص ۲۲۹، حدیث: ۲۰۳۶۱۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۶۸۔

www.dawateislami.net

उस पर अ़मल करने लगेंगे, इसी त़रह़ तुम किसी काम पर अ़मल करने से अपने आप को रोकोगे तो तुम्हें देख कर वोह लोग भी रुक जाएंगे। और हां याद रखो ! रब عَزَّوَجَلَّ की कसम ! जिस काम से मैं ने सब लोगों को रोक रखा है अगर तुम उस में मुब्तला हुवे तो तुम्हें दोहरी सज़ा मिलेगी क्यूंकि मेरे क़ुर्ब की वज्ह से तुम्हारा मक़ाम भी ऊंचा है।"(1)

(1) कंघी करने और अच्छा लिबास पहनने पर बेटे का एहतिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बेटा आप के पास इस ह़ाल में आया कि उस ने बालों में कंघी की हुई थी और अच्छा लिबास भी पहना हुवा था। आप ने उसे एक दुर्रा मारा। आप की बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मारने का सबब पूछा तो फ़रमाया : رَاَیْتُہٗ قَدْ اَعْجَبَتْہُ نَفْسُہٗ فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُصَغِّرَھَا اِلَیْہِ "या'नी मैं ने देखा कि इसे इस के नफ़्स ने खुद पसन्दी में मुब्तला कर दिया है तो मैं ने चाहा कि इस के नफ़्स को छोटा कर दूं।"(2)

वाज़ेह़ रहे कि येह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बा कमाल फ़िरासत थी कि आप ने अपने बेटे के अ़मल को पहचान कर उन का एह़तिसाब फ़रमाया। वरना सर में कंघी करना या नया लिबास पहनना या इस जैसे दीगर उमूर ज़रूरी नहीं कि उ़ज्ब पसन्दी का सबब हों, नीज़ किसी को ऐसे उमूर पर अ़मल करता देख कर बद गुमानी का भी शिकार नहीं होना चाहिये। अलबत्ता करने वाला अपनी निय्यत पर ग़ौर कर ले और अगर रियाकारी की निय्यत से है तो यक़ीनन येह क़ाबिले मज़म्मत है और अगर अच्छी निय्यतों के साथ है तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब का ह़क़दार होगा।

(2) एक ऊंट के सबब बेटे का एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात को ना पसन्द फ़रमाते थे कि आप के घरवाले रिफ़ाहे आ़म्मा या'नी अ़वामुन्नास और रिआ़या की फ़लाह़ो बहबूद व आसानी के लिये जो ता'मीरात की गई हैं उन्हें इस्ति'माल करें ताकि लोगों के दिलों से ख़लीफ़ए वक़्त की घरवालों की त़रफ़दारी का ज़ेहन ख़त्म हो जाए। चुनान्चे, एक बार आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ऊंट खरीद कर चरागाह में चरने के लिये छोड़ दिया जब वोह

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب العلم، باب لزوم الجماعۃ، ج ۱۰، ص ۲۹۸، حدیث: ۲۰۸۷۹۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب الکبر، ج ۱۰، ص ۳۲، حدیث: ۱۹۷۱۷۔

www.dawateislami.net

ख़ूब मोटा ताज़ा हो गया तो उसे बाज़ार भेज दिया, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप ने उस को बेच कर अस्ल क़ीमत उन्हें लौटा दी और इज़ाफ़ी क़ीमत बैतुल माल में जम्अ़ करवा दी।(1)

(3) तिजारत में बेटे की रिआ़यत पर एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मक़ामे "जलूला" में एक मा'रिका पेश आया मैं भी उस में ह़ाज़िर हुवा और चालीस हज़ार दिरहम में माले ग़नीमत ख़रीदा और जब वहां से लौट कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया तो आप ने फ़रमाया : "अगर मैं जहन्नम में डाला जाऊं तो इस के अ़ज़ाब से बचाने के लिये तुम क्या फ़िदया दोगे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "कोई भी चीज़ जो आप के लिये बाइसे तक्लीफ़ हो मैं उस से बचाने के लिये सब कुछ फ़िदया देने को तय्यार हूं।" आप ने फ़रमाया : "गोया कि मैं मक़ामे जलूला में लोगों को देख रहा था जब वोह तुम से ख़रीदो फ़रोख़्त कर रहे थे तो कह रहे थे : अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर सहाबिये रसूल हैं, अमीरुल मोमिनीन के बेटे हैं, उन के चहीते हैं और ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम वाक़ेई में ऐसे ही हो। पस तुम्हें मेहंगा देने के बजाए उन्हें येह अच्छा लगा कि वोह तुम्हें माल सस्ता दें, मैं तक़्सीम करने वाला ज़िम्मेदार हूं। एक क़ुरैशी ताजिर जितना नफ़्अ़ पाता है मैं तुम को उस से ज़ियादा देता हूं। तुम्हारे लिये एक दिरहम पर एक दिरहम (या'नी दो गुना) नफ़्अ़ है।" फिर आप ने ताजिरों को बुलाया और उन्हों ने उस को चार लाख दिरहम में ख़रीद लिया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस में से 80,000 (अस्सी हज़ार) दिरहम मुझे दे दिये और बक़िय्या दराहिम ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेज दिये ताकि वोह इस रक़म को ज़रूरत मन्दों में तक़्सीम कर दें।(2)

(4) तिजारत में नफ़्अ़ पर दो बेटों का एहतिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो बेटे या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक लश्कर

1 ......سنن کبری، کتاب احیاء الموات، باب ماجاء فی الحمی، ج۶، ص ۲۴۳، حدیث: ۱۱۸۱۱ ملخصاً۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب التاریخ، فی امر القادسیۃ وجلولاء، ج۸، ص۱۸، حدیث: ۳۷۔

www.dawateislami.net

के साथ इराक़ की मुहिम पर निकले, जब उन्हों ने वापसी का इरादा किया वोह बसरा के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गए तो उन्हों ने इन दोनों का इस्तिक़्बाल करते हुवे खुश आमदीद कहा। फिर कहा : لَوْ اَقْدِرُ لَکُمَا عَلٰی اَمْرٍ اَنْفَعُکُمَا بِہٖ لَفَعَلْتُ "या'नी अगर मैं किसी त़रह़ आप दोनों को कोई फ़ाइदा पहुंचा सका तो ज़रूर पहुंचाऊंगा।" फिर कहने लगे : "यहां मेरे पास सदक़े की कुछ रक़म है और मैं इसे अमीरुल मोमिनीन के पास भेजना चाहता हूं, मैं येह आप दोनों को बत़ौरे क़र्ज़ दे रहा हूं ताकि आप दोनों इराक़ से कुछ सामान वग़ैरा ख़रीद कर उसे मदीनए मुनव्वरा में बेच कर अस्ल रक़म अमीरुल मोमिनीन को दे देना और नफ़्अ़ आप लोग रख लेना।" चुनान्चे, इन दोनों ने ऐसा ही किया और सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास इस मुआ़मले की तफ़्सील का एक मक्तूब भी रवाना कर दिया। जब येह दोनों सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : اَکُلَّ الْجَیْشِ اَسْلَفَہٗ کَمَا اَسْلَفَکُمَا؟ "या'नी क्या जिस त़रह़ तुम दोनों को अबू मूसा अश्अ़री ने क़र्ज़ दिया है इसी त़रह़ लश्कर के दीगर मुजाहिदीन को भी दिया था?" उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَدِّیَا الْمَالَ وَرِبْحَہٗ "या'नी रक़म और इस के ज़रीए से ह़ासिल किया हुवा नफ़्अ़ दोनों वापस करो।" चुनान्चे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो ख़ामोश रहे, लेकिन सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर रक़म ज़ाएअ़ हो जाती या इस में कुछ कमी हो जाती तो हम ही इस के ज़ामिन होते।" लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोही मुत़ालबा फ़रमाते रहे। बहर हाल दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुदाख़लत के सबब आप ने अस्ल रक़म और आधा नफ़्अ़ ले लिया और आधा नफ़्अ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लिया।(1)

(5) वज़ीफ़ा देने में बेटे को तम्बीह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वज़ाइफ़ तक़्सीम करने में साबिक़ुल इस्लाम सिफ़त को मद्दे नज़र रखते हुवे बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत देते थे, चुनान्चे, आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़ीफ़ा चार हज़ार मुक़र्रर किया और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तीन हज़ार। उन्हों ने अ़र्ज़ किया :

(1)......سنن کبری، کتاب القراض، ج۶، ص ۱۸۳، حدیث: ۱۱۶۰۵ ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

يَا اَبَةِ فَرَضْتَ لِاُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ اَرْبَعَةَ آلَافٍ وَفَرَضْتَ لِي ثَلَاثَةَ آلَافٍ؟ فَمَا كَانَ لِاَبِيهِ مِنَ الْفَضْلِ مَالَمْ يَكُنْ لَكَ، وَمَا كَانَ لَهُ مِنَ الْفَضْلِ مَالَمْ يَكُنْ لِي "या'नी ऐ अब्बाजान ! आप ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चार हज़ार और मुझे तीन हज़ार दिरहम क्यूं अ़त़ा फ़रमाए ? इन के वालिद साह़िब में वोह कौन सी ख़ूबी है जो आप में नहीं ? और ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ में वोह कौन सी ख़ूबी है जो मुझ में नहीं ? सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اَبَاهُ كَانَ اَحَبَّ اِلَى رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ اَبِيكَ وَهُوَ كَانَ اَحَبَّ اِلَى رَسُولِ اللّٰهِ مِنْكَ "सुनो ! उन के वालिद तुम्हारे वालिद के मुक़ाबले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ियादा मह़बूब थे और ख़ुद उसामा बिन ज़ैद भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुम से ज़ियादा मह़बूब थे ।"(1)

वाज़ेह़ रहे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़रमान रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़र्रबीन सह़ाबा की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत उजागर करने के लिये था वरना उम्मते मुस्लिमा का इस बात पर इजमाअ़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के बा'द सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।

(6) बेटे से बैतुल माल के माल की वापसी का मुत़ालबा

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बुलाया, मैं आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द मुझे इरशाद फ़रमाया : "जब तक मैं बैतुल माल का निगरान नहीं था तब तक मुझे उस में से सिर्फ़ जाइज़ त़रीक़े से कुछ माल लेना ह़लाल था, लेकिन जब से मैं उस का निगरान बनाया गया हूं अब मुझ पर उस से माल लेना ह़राम हो गया है, लिहाज़ा पहले जो माल भी मैं तुम्हें दे चुका हूं उसे तुम वापस कर दो, मैं ने तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल में से एक महीना ख़र्च किया है, अब मैं मज़ीद तुम पर ख़र्च नहीं कर सकता, जो मैं ने तुम्हें फल दिये थे उन्हें बेच कर क़ीमत ले लो और ताजिरों के साथ मिल कर उस से तिजारत करो, जो नफ़्अ़ ह़ासिल हो उसे अपने ऊपर भी ख़र्च करो और अपने घरवालों पर भी ख़र्च करो । पस मैं चला गया और मैं ने वैसा ही किया ।(2)

---

1 ......مسند بزار، مسند عمر بن الخطاب، اسلم مولی عمر عن عمر، ج ۱، ص ۴۰۹، حدیث: ۲۸۶ ملتقطا۔

2 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، الورع، باب فی الورعین، ج ۱، ص ۱۱۳، الرقم: ۱۸۸۔

www.dawateislami.net

(7) बिग़ैर त़लब के माल लेने पर बेटे का मुह़ासबा

हज़रते सय्यिदुना मुऐ़क़िब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे अपनी बारगाह में त़लब फ़रमाया, मैं जैसे ही पहुंचा तो देखा कि आप अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला रहे थे। सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : اَتَدْرِيْ مَاصَنَعَ هٰذَا ''या'नी क्या तुम जानते हो कि इस ने क्या किया है ?'' फिर खुद ही इरशाद फ़रमाने लगे कि : ''येह इराक़ गया तो वहां के लोगों को इस ने येह बताया कि मैं अमीरुल मोमिनीन का बेटा हूं।'' उन से ख़र्चा मांगा, उन्हों ने मह़्ज़ अमीरुल मोमिनीन का बेटा होने की वज्ह से इसे बरतन, चांदी, मुख़्तलिफ़ सामान और ज़ेवर से आरास्ता तल्वार भी दी है।'' सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी सफ़ाई में अ़र्ज़ किया : مَا فَعَلْتُ اِنَّمَا قَدِمْتُ عَلٰى اُنَاسٍ مِنْ قَوْمِيْ فَاَعْطَوْنِيْ هٰذَا ''या'नी मैं ने ऐसा नहीं किया बल्कि मैं तो उन के पास गया और उन्हों ने बिग़ैर त़लब के मुझे येह माल दे दिया।'' फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे हुक्म दिया : خُذْهُ يَا مُعَيْقِبُ فَاجْعَلْهُ فِيْ بَيْتِ الْمَالِ ''या'नी ऐ मुऐ़क़िब ! येह सारा माल बैतुल माल में जम्अ़ करा दो।'' चुनान्चे, मैं ने ऐसा ही किया।[1]

(8) फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ौजा और ख़ुश्बू का वज़्न

एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बह़रैन से कस्तूरी और अम्बर आया, आप ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी ख़्वाहिश है कि मुझे कोई बेहतरीन वज़्न करने वाली औ़रत मिल जाए जो इस का सह़ीह़ वज़्न कर दे और मैं इसे मुसलमानों में तक़्सीम कर दूं।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : ''मैं भी बहुत अच्छा वज़्न कर लेती हूं, आप मुझे दीजिये मैं वज़्न कर देती हूं।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्अ़ फ़रमा दिया, जब इस की वज्ह पूछी तो इरशाद फ़रमाया :

اِنِّيْ اَخْشٰى اَنْ تَاْخُذِيْهِ فَتَجْعَلِيْنَهُ هٰكَذَا اَدْخَلَ اَصَابِعَهُ فِيْ صَدْغَيْهِ وَتَمْسَحِيْنَ بِهِ عُنُقَكَ فَاُصِيْبَ فَضْلًا عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ

[1] ......تاریخ مدینۃ منورہ، ج ۱، ص ۷۰۰ ملتقطاً

www.dawateislami.net

''या'नी मुझे इस बात का डर है कि जब तुम इस का वज़्न करोगी तो येह कस्तूरी व अ़म्बर तुम्हारे हाथ पर भी लग जाएगा और तुम इसे अपने सर और गर्दन पर मलोगी तो इस त़रह़ मुझे मुसलमानों के ह़िस्से से ज़ियादा मिल जाएगा।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह है अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बे मिसाल तक़्वा और दीनी उमूर में सख़्त एह्तियात़ की रौशन मिसाल कि अपनी ज़ौजा को ख़ुश्बू तक़्सीम करने की ज़िम्मेदारी मह़्ज़ इस डर से न दी कि कहीं हाथ में लगी हुई ख़ुश्बू वोह अपने सर या गर्दन वग़ैरा पर न मल ले और मुसलमानों का माल हमारे तसर्रुफ़ में न आ जाए, फ़क़त़ शुब्हे की बुन्याद पर ऐसी एह्तियात़ सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को ही ह़ासिल होती है जो भलाइयों में सबक़त और ह़लालो ह़राम में तमीज़ करने वाले होते हैं। मगर अफ़्सोस ! एक हम लोग हैं कि ह़लालो ह़राम की तमीज़ बिल्कुल ख़त्म हो चुकी है, अपनी रोज़ी को पाक साफ़ करने की कोई फ़िक्र नहीं, हमें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं कि आज अगर हम अपनी औलाद को ह़लाल रोज़ी खिलाएंगे, ह़राम से बचाएंगे तो ही येह औलाद नेक और सालेह़ बनेगी, हमारी आख़िरत की भलाई का ज़रीआ़ बनेगी, ब सूरते दीगर हो सकता है हमारी आख़िरत को बरबाद करने का सबब बन जाए।

दा'वते इस्लामी और ''फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स''

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल मुआ़शरे में जो ह़लालो ह़राम की तमीज़ उठती जा रही है इस का एक बुन्यादी सबब इ़ल्मे दीन से दूरी भी है, याद रखिये ! जब मुसलमान बालिग़ हो जाता है तो बहुत से अह़कामे शरइय्या से इस का तअ़ल्लुक़ जुड़ जाता है इन तमाम का सीखना इस के लिये ज़रूरी है, मसलन बालिग़ होते ही पाकी नापाकी और त़हारत के मसाइल और नमाज़, रोज़े के अह़काम सीखना फ़र्ज़ है, जिस पर ह़ज फ़र्ज़ हो चुका उस के लिये ह़ज के अह़काम सीखना, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो चुकी है उस पर ज़कात के अह़काम सीखना फ़र्ज़ है। शादीशुदा शख़्स या जिस का निकाह़ अ़न क़रीब होने वाला है उसे निकाह़, त़लाक़ वग़ैरा के अह़काम सीखना ज़रूरी है, अल ग़रज़ जो शख़्स जिस शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखता है उस पर इस के अह़कामे शरइय्या सीखना बहुत ज़रूरी है। वोह तमाम उ़लूम जिन का सीखना हर मुसलमान आ़क़िल, बालिग़ पर फ़र्ज़ है उन्हें ''**फ़र्ज़ उ़लूम**'' कहा जाता है।

1 ......الزهد للامام احمد، زهد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۷، حديث: ۶۲۳۔

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त 63 रोज़ा "**तरबिय्यती कोर्स**" करवाया जाता है जिस में फ़र्ज़ उ़लूम भी सिखाए जाते हैं, नीज़ इन्हीं फ़र्ज़ उ़लूम को दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने 45 बयानात पर मुश्तमिल 6 DVD's (वीडियो बयानात) और 4 GB मेमोरी कार्ड (ऑडियो बयानात) बनाम "**फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स**" की सूरत में भी जारी किया है। तमाम इस्लामी भाई मक्तबतुल मदीना से इसे ह़ासिल फ़रमाएं, ख़ुद भी सुनें, अपने घरवालों, रिश्तेदारों और दोस्त अह़बाब सब को सुनाएं और इस पर अ़मल की भरपूर कोशिश करें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी।"

इल्म की रौशनी, क़ब्र चमकाएगी
सीखने फ़र्ज़ उ़लूम क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) अ़वामी तोह़्फ़े पर घरवालों का एह़तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को तक़रीबन डेढ़ गज़ का क़ालीन बतौरे तोह़्फ़ा भेजा। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह देखी तो फ़रमाया : اَنّٰی لَکِ ھٰذِہٖ "या'नी येह क़ालीन तुम्हारे पास कहां से आया ?" अ़र्ज़ किया : نَعَمْ اَھْدَاھَا اِلَیَّ اَبُوْ مُوْسٰی الْاَشْعَرِیُّ "या'नी येह मुझे अबू मूसा अश्अ़री ने तोह़्फ़ा दिया है।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह चटाई ले कर उन के सर पर इतनी ज़ोर से मारी कि उन का सर हिल गया। फिर आप ने सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़लब फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि उन्हें पैदल लाया जाए। उन्हें पैदल लाया गया। आते ही उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरे मुआ़मले में जल्दी न कीजिये।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَا یَحْمِلُکَ عَلٰی اَنْ تَھْدِیَ لِنِسَائِیْ

www.dawateislami.net

"या'नी तुम्हें किस चीज़ ने उभारा कि तुम हमारी ज़ौजा को हदया दो ?" फिर आप ने वोह क़ालीन उन के सर पर ज़ोर से मारा और इरशाद फ़रमाया : خُذْهَا فَلَا حَاجَةَ لَنَا فِيْهَا "या'नी ले जाओ इसे, हमें इस की कोई ज़रूरत नहीं है।"(1)

(10) ज़ौजा को दख़्ल अन्दाज़ी की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ औ़रतों को मुल्की मुआ़मलात में दख़्ल अन्दाज़ी से सख़्ती से मन्अ़ फ़रमाया करते थे। एक बार आप ने अपने एक आ़मिल को मा'ज़ूल कर के मुख़्तलिफ़ सज़ाएं दीं और उन्हें त़वील अ़र्से तक मा'ज़ूल किये रखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप उस आ़मिल पर क्यूं इतना सख़्त नाराज़ हैं ?" फ़रमाया : يَا عَدُوَّةَ اللّٰهِ وَفِيْمَ اَنْتِ وَهٰذَا وَمَتٰى كُنْتِ تَدْخُلِيْنَ بَيْنِيْ وَبَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दुश्मन ! तुझे उस से क्या मत़लब ? तुम औ़रतें कब से मेरे और मुसलमानों के माबैन दख़्ल अन्दाज़ी करने लगीं ?" (या'नी तुम अपने काम से काम रखो, दख़्ल अन्दाज़ी की कोशिश न करो।) एक रिवायत में है फ़रमाया : لَا تَعْرِضِيْ فِيْمَا لَيْسَ مِنْ شَانِكَ "या'नी जिस चीज़ का तुम से तअ़ल्लुक़ नहीं उस में दख़्ल अन्दाज़ी मत करो।"(2)

(11) ज़ौजा का तोह़फ़ा बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया

बादशाहे रूम ने जब जंगबन्दी का ए'लान किया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़ासिदों के ज़रीए़ एक मक्तूब बादशाह को भेजा, साथ ही आप की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मलिकए रूम की ज़ौजा के लिये ख़ुश्बू, पीने के बरतन और कुछ ज़ेवरात बत़ौरे हदया भेजे। चुनान्चे, बादशाह ने वोह अ़तिय्यात अपनी मलिका को दे दिये और फिर उस ने भी एक मक्तूब रवाना किया और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा के लिये एक क़ीमती हार बत़ौरे तोह़फ़ा भेजा। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास क़ासिद ले कर पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस हार के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा किया। लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा का ह़क़ है, क्यूंकि उन के हदये के बदले में येह हदया आया है, मलिकए रूम कोई ज़िम्मिया औ़रत नहीं है कि हदया भेज कर आप से कुछ उस की ज़ाती ग़रज़ हो और न वोह

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۲۶، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۴۔

2 ......تاریخ مدینۂ منورہ، ج ۲، ص ۸۱۸، انساب الاشراف، عمر بن الخطاب، ج ۱۰، ص ۳۲۰۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ममलूका है कि उस ने आप को ख़ुश करने के लिये येह तोहफ़ा भेजा हो, लिहाज़ा इस के लेने में कोई क़बाहत नहीं है। मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لٰكِنِ الرَّسُوْلَ رَسُوْلُ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْبَرِيْدُ بَرِيْدُهُمْ، وَالْمُسْلِمُوْنَ عَظَمُوْهَا فِيْ صَدْرِهَا

"या'नी आप लोगों की बात अपनी जगह ठीक है लेकिन येह क़ासिद तो तमाम मुसलमानों का क़ासिद था और येह उन्ही का मक्तूब ले कर गया था और मुसलमान इस बात को अपने दिलों में बहुत बड़ा समझेंगे। (या'नी ना पसन्द करेंगे।) फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे बैतुल माल में जम्अ़ करवाने का हुक्म दे दिया और अपनी ज़ौजा की ख़र्च की हुई रक़म के इवज़ इतनी ही रक़म अ़ता फ़रमा दी।"(1)

(12) अच्छी चादर अपनी ज़ौजा को न दी

हज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा की ख़्वातीन में चादरें तक़्सीम कीं, एक बहुत अच्छी चादर बच गई तो आप के पास बैठे हुवे लोगों में से किसी ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! येह चादर आप अपनी ज़ौजा उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को दे दें।" तो इरशाद फ़रमाया :

أُمُّ سَلِيْطٍ أَحَقُّ بِهِ وَأُمُّ سَلِيْطٍ مِنْ نِسَاءِ الْأَنْصَارِ مِمَّنْ بَايَعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ عُمَرُ فَإِنَّهَا كَانَتْ تُزْفِرُ لَنَا الْقِرَبَ يَوْمَ أُحُدٍ

"या'नी उम्मे सलीत़ इस की ज़ियादा ह़क़दार हैं, क्यूंकि वोह उन अन्सारी ख़्वातीन में से हैं जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की थी और उन को येह मर्तबा भी ह़ासिल है कि वोह ग़ज़्वए उहुद के मौक़अ़ पर हमारे लिये पानी के मश्कीज़े लाया करती थीं।"(2)

(13) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपनी सगी बेटी का एहतिसाब

एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास कुछ माल आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी, उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया : يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ حَقُّ أَقْرِبَائِكَ مِنْ هٰذَا الْمَالِ قَدْ أَوْصَى اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ بِالْأَقْرَبِيْنَ مِنْ هٰذَا الْمَالِ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस माल में आप के रिश्तेदारों का भी ह़क़ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस

1 ......الكامل فى التاريخ، ذكر فتح قبرس، ج ۲، ص ۳۸۸۔

2 ......بخارى، كتاب المغازى، ذكر ام سليط، ج ۳، ص ۱۴، حديث: ۴۰۷۱۔

www.dawateislami.net

माल में से रिश्तेदारों को भी देने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : يَا بِنْتَهُ حَقُّ اَقْرِبَائِيْ فِيْ مَالِيْ وَاَمَّا هٰذَا فَفِيْ سَدَدِ الْمُسْلِمِيْنَ غَشَشْتِ اَبَاکَ وَنَصَحْتِ اَقْرِبَاءَکَ قُوْمِيْ "या'नी ऐ बेटी ! मेरे रिश्तेदारों का ह़क़ मेरे माल में है और येह मेरा माल नहीं बल्कि मुसलमानों का माल है, तुम अपने बाप को ग़लत़ फ़ेह्मी में डाल रही हो और अपने रिश्तेदारों की ख़ैरख़्वाह बन रही हो। उठो और यहां से चली जाओ।"(1)

(14) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने दामाद का एह़तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में आप के दामाद आए और बैतुल माल से कुछ माल का मुत़ालबा किया, आप ने इरशाद फ़रमाया : اَرَدْتَّ اَنْ اَلْقَى اللّٰهَ مَلِكًا خَائِنًا؟ "या'नी तुम येह चाहते हो कि मैं रब عَزَّوَجَلَّ से ख़ाइन बादशाह की ह़ैसिय्यत से मुलाक़ात करूं।" बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़ाती माल में से उन्हें दस हज़ार दिरहम अ़त़ा फ़रमाए।(2)

ज़िम्मेदारान के लिये मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ात के एह़तिसाब के साथ साथ अपने घरवालों का भी सख़्ती के साथ एह़तिसाब फ़रमाया करते थे, आप का येह फ़े'ल एह़तियात़ पर मब्नी था कि बा'ज़ औक़ात जाइज़ कामों से भी अपनी औलाद को रोकते थे ताकि दीगर लोगों के लिये ए'तिराज़ का दरवाज़ा बन्द हो जाए। वाक़ेई हुक्मरानों बल्कि हर साह़िबे मन्सब या वोह ज़िम्मेदार शख़्स जिस के तह़त चन्द इस्लामी भाई हों इस मुआ़मले में उसे एह़तियात़ करनी चाहिये कि मा तह़त लोगों की उस की ज़ात पर कड़ी नज़र होती है, अगर उस की ज़ात में कोई छोटी सी भी ख़ामी होगी तो उस के मा तह़त लोगों के लिये तनफ़्फ़ुर का बाइ़स होगी। अगर वोह अपनी ज़ात, घरवालों के साथ भी दीगर मुआ़मलात में वोही रवय्या रखेगा जो दीगर लोगों के साथ रखता है तो उस की रिआ़या उस के मा तह़त लोग उस के किरदार में शक न करेंगे बल्कि क़ल्बी त़ौर पर मुत़मइन रहेंगे। अगर वोह अपनी ज़ात, अपने घरवालों, अपने मुतअ़ल्लिक़ीन

1 ......الزهد للامام احمد، زهد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۴، الرقم: ۶۰۴۔

2 ......تهذیب الآثار، ج ۱، ص ۱۶۹، تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۳۳۱۔

www.dawateislami.net

और मुहिब्बीन की ज़ात को अ़मली तौ़र पर निखार कर दीगर लोगों के सामने पेश करेगा तो उन के क़ल्बी वसाविस दूर होने के साथ साथ उन में भी अ़मल का जज़्बा बेदार होगा, और येह बात अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज से ज़ियादा रौशन) है कि जब कोई शख़्स ख़ुद अ़मल कर के किसी को कोई बात कहता है तो उस के क़ौल में तासीर ज़ियादा होती है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़मल का जज़्बा पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाआ़त में शिर्कत फ़रमाइये, रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कीजिये और हर माह जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से बचने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बा'ज़ मुख़्तलिफ़ शख़्सिय्यात का एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एह़तिसाबी अ़मल हर ख़ासो आ़म के साथ था, आप किसी की भी रिआ़यत न फ़रमाते थे। इस सिलसिले की सब से बेहतरीन मिसाल आप का अपनी ख़िलाफ़त के ओ़हदे दारान को मा'ज़ूल करना है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का भी एह़तिसाब फ़रमाया, उन्हें मा'ज़ूल किया ताकि लोगों पर येह बात वाज़ेह़ हो जाए कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एह़तिसाबी अ़मल सब के साथ यक्सां है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान का एह़तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए तो अह्ले मक्का ने आप को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शिकायत की, कि उन्हों ने हमारे घरों से निकलने वाले पानी की नालियों को बन्द कर दिया है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां आए तो फ़रमाया : "इस पथ्थर को उखाड़ो।" उन्हों ने उखाड़ दिया। फिर फ़रमाया : "इसे भी उखाड़ो।" उन्हों ने उखाड़ दिया। आप फ़रमाते रहे वोह उखाड़ते रहे

www.dawateislami.net

यहां तक कि कई पथ्थर उखाड़ डाले। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह देख कर फ़रमाने लगे : "शुक्र है उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जिस ने उ़मर को ऐसा बनाया कि अबू सुफ़्यान को मक्का में हुक्म दे और वोह उ़मर की इता़अ़त करे।"(1)

मुसलमानों को तकालीफ़ से बचाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पथ्थर अपने किसी ज़ाती मफ़ाद के लिये रखे होंगे लेकिन वोह दीगर लोगों की अज़िय्यत का बाइ़स बन रहे थे इस लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह पथ्थर हटवा दिये। मा'लूम हुवा कि कोई भी ऐसा काम करना जो अ़वामुन्नास की राह में रुकावट बनता हो उस से बचना चाहिये, आज कल लोग अ़वामी रास्तों को बन्द कर देते हैं और इन पर अपना कोई न कोई काम शुरूअ़ कर देते हैं यक़ीनन येह अ़मल मुसलमानों को तक्लीफ़ में मुब्तला करने वाला है जिस की शरअ़न इजाज़त नहीं है लिहाज़ा ऐसे हर काम से बचना चाहिये जिस से मुसलमानों को तक्लीफ़ होती हो। खुसूसन वोह लोग जिन का मुआ़शरे में एक ख़ास मक़ाम है उन्हें तो ज़ियादा एह्तियात़ की ह़ाजत है कि ऐसे अफ़राद का अ़मल दीगर लोगों के लिये दलील बनता है। नीज़ अगर वोह ऐसे काम करेंगे तो उन की शख़्सिय्यत मुतअस्सिर होने के साथ साथ दीनी व दुन्यवी नुक़्सान भी ज़ियादा होगा। जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस काम से मन्अ़ फ़रमाया कि वोह एक मुक़्तदर शख़्सिय्यत थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन

फ़ारूके़ आ'ज़म का सय्यिदुना जारूद का एह्तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों के दिलों की ह़िफ़ाज़त का भी एहतिमाम फ़रमाया करते थे ताकि उन के दिल ग़ुरूर व तकब्बुर से पाक रहें। चुनान्चे, एक मरतबा आप लोगों के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे, आप के पास आप का दुर्रा भी था। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना जारूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो एक शख़्स ने कहा : "येह क़बीलए रबीआ़ के सरदार हैं।" इस बात को सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बैठे हुवे लोगों और खुद सय्यिदुना जारूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी सुना। जब वोह सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक दुर्रा लगाया।

---

(1) ......كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ١٢، ج٦، ص٢٩٦، حديث: ٣٦٠١٢۔

www.dawateislami.net

उन्हों ने अ़र्ज़ किया : مَالِيْ وَلَکَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! ऐसी क्या बात हो गई है कि आप ने मुझे इस त़रह़ एक दुर्रा लगाया ?" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जो बात है वोह तो तुम ने यक़ीनन सुन ली है।" अ़र्ज़ किया : "मैं ने तो इस के मुंह से फ़क़त़ वोही बात सुनी है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : خَشِيْتُ اَنْ يُخَالِطَ قَلْبَکَ مِنْهَا شَيْءٌ فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُطَاطِيَءَ مِنْکَ "या'नी मुझे इस बात का डर हुवा कि कहीं तुम्हारे दिल में कोई (ग़ुरूर या तकब्बुर जैसी) शै शामिल न हो जाए तो मैं ने चाहा कि इसे पहले ही दूर कर दूं।(1)

जहां तआ़रुफ़ की ह़ाजत हो वहीं करवाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से येह दर्स मिलता है कि किसी भी साह़िबे मन्सब के मन्सब का सिर्फ़ वहीं तआ़रुफ़ करवाना चाहिये जहां इस की ह़ाजत हो, या वहां करवाया जाए, जहां तआ़रुफ़ के बिग़ैर वोह फ़ाइदा ह़ासिल न हो जो तआ़रुफ़ के ज़रीए़ होगा, बिला वज्ह हर जगह किसी के मन्सब को बयान करना बा'ज़ औक़ात दीगर लोगों के साथ साथ उस साह़िबे मन्सब को भी आज़्माइश में डाल सकता है, यक़ीनन समझदार वोही है जो फ़क़त़ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से इ़ज़्ज़त व मर्तबे का त़लबगार हो। अपने मक़ामो मर्तबे का केश करवाने के बजाए ख़ैरख़्वाही के जज़्बे के तह़त अपनी ज़िम्मेदारी को ब त़रीक़े अह़सन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये पूरा कीजिये और आख़िरत का सामान कीजिये।

सय्यिदुना उबय बिन का'ब का एह्तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद के बड़े क़ारी थे, बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता कि आप जब मस्जिद से निकलते तो आप के गिर्द लोगों का हुजूम लग जाता और लोग इक्तिसाबे फ़ैज़ करते। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से इरशाद फ़रमाया : اَمَا تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الَّذِيْ تَصْنَعُ فِتْنَةٌ لِّلْمَتْبُوْعِ مَذِلَّةٌ لِّلتَّابِعِ؟ "या'नी क्या तुम्हें मा'लूम नहीं येह अ़मल (या'नी लोगों का तुम्हारे गिर्द इकठ्ठा हो जाना) तुम्हारे लिये बाइ़से फ़ित्ना और पैरवी करने वालों के लिये गुमराही का सबब बन सकता है ?"(2)

---

1 ......موسوعه ابن ابی الدنیا، الصمت وآداب اللسان، ذم المداحین، ج۷، ص۳۲۸، الرقم: ۲۰۵، تاریخ مدینۂ منوره، ج ا، ص ۲۹۰۔

2 ......تاریخ مدینۂ منوره، ج ا، ص ۲۹۱ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस त़रह़ तम्बीह फ़रमाना बहुत बड़ी ह़िक्मते अ़मली पर मब्नी था कि जिस शख़्स के गिर्द मुरीदीन, मो'तक़िदीन, मुह़िब्बीन व मुतअ़ल्लिक़ीन का ह़ल्क़ा बन जाए तो उ़मूमन शैत़ान भी उस को गुमराह करने में ज़ियादा ज़ोर सर्फ़ करता है, क्यूंकि उसे येह बात मा'लूम है कि उस के मुत्तबिईन बहुत ज़ियादा हैं अगर मैं सिर्फ़ इस एक शख़्स को गुमराही के रास्ते पर धकेल दूं तो बक़िय्या सब ख़ुद ब ख़ुद गुमराही के अन्धे कुंवें में जा गिरेंगे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस मुबारक तम्बीह में ऐसे तमाम ज़िम्मेदारान के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं जिन का कई लोगों से बिला वासित़ा तअ़ल्लुक़ है, जिन के गिर्द लोगों की भीड़ लगी रहती है, लोग जिन के हाथ चूमते हैं ऐसे तमाम लोग शैत़ान के गुमराह कुन, हथकन्डों से हर वक़्त होशयार रहें कही ऐसा न हो कि शैत़ानी वार हम पर कामयाब हो जाएं और दुन्या व आख़िरत में तबाही व बरबादी हमारा मुक़द्दर बन जाए। नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग पर कमर बस्ता होने के लिये दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, हर माह जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और नफ़्सो शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग............... जारी रहेगी
नफ़्स के ख़िलाफ़ जंग............... जारी रहेगी
ग़ीबत के ख़िलाफ़ जंग .... जारी रहेगी
मह़ब्बतों के चोर............... चुग़ुल ख़ोर चुग़ुल ख़ोर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री का एह़तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन ह़स्सान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल को साफ़ किया तो उस में से एक दिरहम निकला। उस वक़्त सामने से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का

www.dawateislami.net

गुज़र हुवा तो आप ने वोह दिरहम उसे दे दिया। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह एक दिरहम देखा तो उस से पूछा कि "येह कहां से आया है ?" उस ने बताया कि "मुझे येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दिया है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया :

اَمَا كَانَ لَكَ فِى الْمَدِيْنَةِ اَهْلُ بَيْتٍ اَهْوَنُ عَلَيْكَ مِنْ آلِ عُمَرَ

اَرَدْتَّ اَنْ لَا تَبْقٰى اَحَدٌ مِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلَّا طَالَبْنَا بِمَظْلِمَةٍ فِىْ هٰذَا الدِّرْهَمِ

"या'नी क्या तुम्हें मदीनए मुनव्वरा में उ़मर के बेटे के सिवा कोई नज़र नहीं आया ? तुम येह चाहते हो कि उम्मते मुह़म्मदिय्या का हर शख़्स इस दिरहम के बदले मुझ से ज़ुल्म का मुत़ालबा करे ? फिर आप ने वोह एक दिरहम बैतुल माल में डाल दिया।"(1)

वक़्फ़ के पैसों में एह़तियात़ कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तक़्वा व परहेज़गारी मरह़बा ! बैतुल माल का एक दिरहम भी अपने और अपने घरवालों पर ख़र्च करना गवारा न फ़रमाया। वाज़ेह़ रहे कि सरकारी ख़ज़ाने या'नी "बैतुल माल" का पैसा वक़्फ़ का होता है जिसे अ़वाम की फ़लाहो बहबूद के लिये इस्ति'माल किया जाता है और क़ाज़ी को इख़्तियार होता है कि वोह उ़र्फ़ के मुत़ाबिक़ जिस ज़रूरत मन्द पर चाहे इसे ख़र्च करे। वक़्फ़ के पैसों में निहायत ही एह़तियात़ की ह़ाजत है। मज़हबी व फ़लाही़ काम अक्सर चन्दे ही से चलते हैं, जूं तूं कर के चन्दा तो कर ही लिया जाता है मगर इल्मे दीन की कमी के बाइ़स एक ता'दाद है जो इस के इस्ति'माल में शरई ग़लत़ियां कर के गुनाहों में जा पड़ती है। इस नेक काम में गुनाहों से बचने और चन्दा वुसूल करने वालों के लिये चन्दे के ज़रूरी मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है। लिहाज़ा चन्दे के मुख़्तलिफ़ मसाइल सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 109 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**चन्दे के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

बा'ज़ बेजा तसर्रुफ़ाती उमूर का एह़तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुआ़शरे के ऐसे बेजा तसर्रुफ़ात का भी एह़तिसाब फ़रमाया जिस से बुराइयां पैदा हों, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें क़त़्अ़न

1 ......كنز العمال، كتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ١٢، ج٦، ص ٢٩٨، حديث: ٣٦٠١٩ـ

www.dawateislami.net

बरदाश्त न करते थे, यक़ीनन मुआ़शरती बुराइयों या ऐसे बेजा तसर्रुफ़ात को ख़त्म करना जिन से मुसलमान मह़रूमी का शिकार होते हों ख़लीफ़ए वक़्त की एक अहम तरीन ज़िम्मेदारी है, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ज़िम्मेदारी को बत़रीके़ अह़सन अन्जाम दिया। चुनान्चे,

(1) मुसलसल दो दिन गोश्त ख़रीदने पर एह्तिसाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार बक़ीअ़ में सिर्फ़ एक ही मज़्बह़ ख़ाना था जो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मिल्किय्यत में था जिस से लोग गोश्त ख़रीदते थे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर वहां तशरीफ़ लाते थे, अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी शख़्स को मुसलसल दो दिन तक गोश्त ख़रीदते हुवे देखते तो उसे दुर्रे लगाते और इस्तिफ़्सार फ़रमाते : "क्या तुम अपने पड़ोसी और चचाज़ाद भाई की ख़ातिर भूके नहीं रह सकते ?"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर्चे रोज़ाना गोश्त का इस्ति'माल एक जाइज़ अम्र है लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस तरह़ तम्बीह करना भी हि़क्मते अ़मली पर मब्नी था कि गोश्त का मुसलसल इस्ति'माल भी नुक़्सान देह है, बल्कि किसी भी चीज़ का कसरत से इस्ति'माल नुक़्सान का सबब होता है, हर चीज़ अगर उस की मुक़र्ररा ह़द में इस्ति'माल की जाए तो उस के फ़वाइद ज़ियादा होते हैं और बसा औक़ात मुफ़ीद चीज़ भी ह़द से ज़ियादा इस्ति'माल करने पर नुक़्सान का बाइ़स बन जाती है।

(2) एक मांगने वाले साइल का एह्तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक भिकारी को मांगते हुवे देखा, ह़ालांकि उस की पीठ पर खाने से भरा हुवा थैला लदा हुवा था। आप ने उस से थैला छीन कर सदके़ के ऊंटों के आगे डाल दिया और फ़रमाया : **اَلْآنَ سَلْ مَابَدَالَکَ** "या'नी अब तुम्हें जो मांगना हो मांगो।"[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल येह एक आ़म वबा फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है। मेह़नत मशक़्क़त से जान चुराते हैं और नाजाइज़ त़ौर पर भीक मांग कर पेट भरते हैं और बहुत से लोगों

---

1 ......الطبقات الکبری للشعرانی، ومنهم عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۲۹، مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۹۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثامن والثلاثون، ص ۹۵۔

www.dawateislami.net

ने तो सुवाल करना और भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है। घर में हज़ारों रूपे हैं, दीगर वसाइल भी हैं, मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते। उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह तो हमारा पेशा है वाह साहिब वाह ! क्या हम अपना पेशा छोड़ दें हालांकि ऐसे लोगों को सुवाल करना और भीक मांगना बिल्कुल ह़राम है। अह़ादीसे मुबारका में इस की सख़्त वईदें भी आई हैं। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है :

(1) "जो फ़क़्र के बिग़ैर सुवाल करे गोया वोह अंगारा खा रहा है।"[1]

(2) "जो शख़्स ह़ाजत के बिग़ैर लोगों से सुवाल करता है वोह मुंह में अंगारे डालने वाले की त़रह़ है।"[2]

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 500 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नमाज़ के अह़काम**" सफ़ह़ा 353 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं : "**फ़क़ीर वोह है** कि **(الف)** जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए **(ب)** या निसाब की क़दर तो हो मगर इस की ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी) में मुस्तग़्रक़ (घिरा हुवा) हो। मसलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या स्कूटर या कार) कारीगरों के औज़ार, पहनने के कपड़े, ख़िदमत के लिये लौंडी, ग़ुलाम, इल्मी शग़्ल रखने वाले के लिये इस्लामी किताबें जो उस की ज़रूरत से ज़ाइद न हो **(ج)** इसी त़रह़ अगर मदयून (या'नी मक़रूज़) है और दैन (या'नी क़र्ज़) निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे तो फ़क़ीर है अगर्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों।" **मिस्कीन वोह है** जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह़ताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल ह़लाल है।[3]

फ़क़ीर को (या'नी जिस के पास कम अज़ कम एक दिन का खाने के लिये और पहनने के लिये मौजूद है) बिग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है और ऐसों के सुवाल पर देना भी नाजाइज़ है, देने वाला गुनहगार होगा।

---

1 ......مسند امام احمد، حدیث حبشی بن جنادۃ السلولی، ج۶، ص ۱۲۲، حدیث: ۱۷۵۱۶۔

2 ......شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی الاستعفاف عن المسئلۃ، ج۳، ص ۲۷۱، حدیث: ۳۵۱۷۔

3 ......رد المحتار، ج۳، ص ۳۳۳، فتاوی ھندیہ، ج۱، ص ۱۸۷۔۱۸۸۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जो भिकारी कमाने पर क़ादिर होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बतौरे पेशा भीक मांगते हैं गुनहगार हैं और ऐसों के ह़ाल से बा ख़बर होने के बा वुजूद इन को देने वाले अपनी ज़कात व ख़ैरात बरबाद करने के साथ साथ मज़ीद गुनहगार भी होते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) सर झुका कर चलने वाले का एह्तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को देखा जिस ने (सुस्ती व नातुवानी से) अपने सर को झुकाया हुवा था तो आप ने उस से इरशाद फ़रमाया : اِرْفَعْ رَاْسَکَ فَاِنَّ الْاِسْلَامَ لَیْسَ بِمَرِیْضٍ "या'नी अपने सर को ऊपर उठा क्यूंकि इस्लाम बीमार नहीं है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह हुक्म सुस्ती व काहिली के ख़िलाफ़ था वरना निगाहें झुकाना या निगाहें झुका कर चलना बहुत अच्छी बात है कि इस में शर्मो ह़या का पहलू वाज़ेह़ है नीज़ येह बद निगाही से मह़फ़ूज़ रहने में बेहतरीन मुआ़विन या'नी मददगार है। लेकिन सर झुका कर नहीं चलना चाहिये कि सामने से आने वाले शख़्स या किसी चीज़ का पता ही न चले कि कौन आ रहा है ? और आप उस से टकरा जाएं, बा'ज़ लोग बतौरे आ़जिज़ी भी सर झुका कर चलते हैं ऐसों के लिये भी येह एह्तियात़ ज़रूरी है। नीज़ बतौरे आ़जिज़ी नज़रें झुका कर चलने वाले अपने दिल पर भी ग़ौर फ़रमा लें कि क्या इन का येह फ़े'ल वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये है या लोगों को दिखाना मक़्सूद है ? अगर पहली सूरत है तो यक़ीनन येह मह़मूद या'नी क़ाबिले ता'रीफ़ है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से इस पर अज्र की उम्मीद है और अगर दूसरी सूरत है तो येह शरअ़न मज़्मूम या'नी क़ाबिले मज़म्मत है बल्कि हो सकता है कि येह दुन्या व आख़िरत की तबाही व बरबादी का सबब बन जाए।

दिल से ग़ुरूर निकले, बहरे हुज़ूर निकले
या रब मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का
आक़ा की ह़या से झुकी रहती थीं निगाहें
आंखों का मेरे भाई लगा क़ुफ़्ले मदीना

1 النہایۃ فی غریب الاثر، باب المیم والواو، ج۴، ص۳۱۵، تاج العروس، الموت، ج۱، ص۱۱۸۲۔

www.dawateislami.net

(4) मुतकब्बिराना चाल वाले शख़्स का एह़तिसाब

एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक शख़्स इस त़रह़ ह़ाज़िर हुवा कि वोह अपने हाथों को हिला रहा था और पाउं भी पटख़ रहा था। "या'नी मुतकब्बिराना चाल के साथ आया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "येह चाल छोड़ दो।" उस ने कहा : "ऐसा नहीं हो सकता।" आप ने उसे कोड़े लगाए। उस ने फिर ग़ुरूरो तकब्बुर का मुज़ाहरा किया तो आप ने उसे दूसरी मरतबा कोड़े लगाए। इस बार वोह अपनी ह़रकत से बाज़ आ गया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर इस त़रह़ की ह़रकतों पर मैं कोड़े नहीं मारूंगा तो और किस चीज़ पर मारूंगा ?" कुछ दिनों के बा'द वोह शख़्स दोबारा आया और अ़र्ज़ करने लगा :

جَزَاکَ اللّٰہُ خَیراً یَا اَمِیرَ الْمُؤْمِنِینَ خَیراًاِنْ کَانَ اِلَّا شَیطَاناً سَلَّطَ عَلَیَّ فَاَذْھَبَہُ اللّٰہُ بِکَ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, उस वक़्त मेरे साथ शैत़ान ही था मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए उसे मुझ से भगा दिया।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मुतकब्बिराना चाल चलना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, अपने आप को इस से बचाइये कि अह़ादीसे मुबारका में भी इस की मज़म्मत आई है, चुनान्चे, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो अपने आप को बड़ा जाने या मुतकब्बिराना चाल चले वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर नाराज़ होगा।"[2]

(5) एक मरयल शख़्स का एह़तिसाब

एक मरतबा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ऐसे शख़्स को जो जान बूझ कर अपनी कमज़ोरी ज़ाहिर कर रहा था और मरयल अन्दाज़ में चल रहा था, उस के सर पर दुर्रा मार कर इरशाद फ़रमाया : لَا تُمِت عَلَیْنَا دِیْنَنَا اَمَاتَکَ اللّٰہُ "या'नी तुम मर जाओ लेकिन हमारे दीन का गला न घोंटो।"[3]

---

1 ......ربیع الابرار، ج ۱، ص ۳۴۷، التذکرۃ الحمدونیۃ، ج ۱، ص ۳۱۴۔

2 ......مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمر بن خطاب، ج ۲، ص ۴۶۱، حدیث: ۶۰۰۲۔

3 ......النھایۃ فی غریب الاثر، باب المیم والواو، ج ۴، ص ۳۱۵۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तन्दुरुस्ती हज़ार ने'मत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस ने'मत पर शुक्र अदा करते रहा करें न कि जान बूझ कर बीमार बनने की कोशिश करें कि लोगों की हमदर्दियां ह़ासिल हों, सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती के बा वुजूद अपने आप को बीमार ज़ाहिर करना, हर वक़्त शिक्वा शिकायत करते रहना यक़ीनन रब عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती की नाशुक्री है।

(6) नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करने वाले का एह्तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन सय्याफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को देखा कि वोह नमाज़ पढ़ रहा है और एक और शख़्स उस की त़रफ़ मुंह कर के खड़ा है, आप ने नमाज़ी को एक दुर्रा लगाया और फ़रमाया : تُصَلِّي وَهٰذَا مُسْتَقْبِلُكَ "या'नी तुम नमाज़ पढ़ रहे हो ह़ालांकि येह शख़्स तुम्हारे सामने मुंह कर के खड़ा है।" फिर आप ने उस शख़्स को दुर्रा लगाया और फ़रमाया : اَتَسْتَقْبِلُهُ وَهُوَ يُصَلِّي "तुम सामने मुंह कर के खड़े हो ह़ालांकि येह शख़्स नमाज़ पढ़ रहा है।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना और दूसरे शख़्स को नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करना दोनों अ़मल नाजाइज़ व गुनाह हैं, चुनान्चे, सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्त़रीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त जि, 1. स. 626 पर दुर्रे मुख़्तार के ह़वाले से फ़रमाते हैं : किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना, मकरूहे तह़रीमी है। यूंही दूसरे शख़्स को मुसल्ली (नमाज़ी) की त़रफ़ मुंह करना भी नाजाइज़ व गुनाह है, "या'नी अगर मुसल्ली (नमाज़ी) की जानिब से हो तो कराहत मुसल्ली (नमाज़ी) पर है, वरना इस (या'नी नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करने वाले) पर।"[2]

(7) एक ऊंट वाले का एह्तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसय्यब बिन दारिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऊंट वाले को मार रहे थे और फ़रमा रहे थे :

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الرجل یصلی۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۳، حدیث: ۲۳۹۹۔

2 ......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ۔۔۔إلخ، مطلب إذا تردد الحکم۔۔۔إلخ، ج ۲، ص ۴۹۶۔۴۹۷۔

www.dawateislami.net

حَمَلتَ جَمَلَکَ مَا لَا یُطِیقُ "या'नी तू अपने ऊंट पर उस की त़ाक़त से ज़ियादा बोझ लादता है।"[1]

इस रिवायत में ऐसे लोगों के लिये इ़ब्रत के मदनी फूल हैं जो माल बरदारी के जानवर रखते हैं, मगर उन पर उन की इस्तित़ाअ़त से ज़ियादा बोझ लाद देते हैं, एह़तियात़ कीजिये कि जानवर अगर्चे बे ज़बान हैं अपना दुख बयान नहीं कर सकते लेकिन उन पर ज़ुल्म के सबब हो सकता है कि बारगाहे ख़ुदावन्दी में पकड़ हो जाए और हमारी आख़िरत तबाह हो जाए।

(8) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपनी ता'रीफ़ पर एह़तिसाब

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन इलाक़ा رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा जो आप की ता'रीफ़ करते हुवे कह रहा था : اِنَّ ھٰذَا لَخَیْرُ الْاُمَّۃِ بَعْدَ نَبِیِّھَا "या'नी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत में सब से बेहतर हैं।" येह सुन कर आप ने उसे एक दुर्रा लगाया और इरशाद फ़रमाया :

کَذَبَ الْاٰخَرُ لَاَبُوْبَکْرٍ خَیْرٌ مِنِّیْ وَمِنْ اَبِیْ وَمِنْکَ وَمِنْ اَبِیْکَ "या'नी दूसरी शख़्सिय्यत को झुटलाया गया है, यक़ीनन अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझ से अफ़्ज़ल हैं, मेरे बाप से अफ़्ज़ल हैं, तुझ से अफ़्ज़ल हैं तेरे बाप से अफ़्ज़ल हैं।"[2]

मेरी भी हलाकत तेरी भी हलाकत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی علیہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की किसी ने ता'रीफ़ की तो आप ने उस से इरशाद फ़रमाया : تُھْلِکُنِیْ وَتُھْلِکُ نَفْسَکَ "या'नी तू मुझे और अपने आप को भी हलाक करने की कोशिश कर रहा है।"[3]

अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना कैसा......?

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क्या कहने ! अपनी ता'रीफ़ सुन कर कौन ख़ुश नहीं होता ? आज कल कई

---

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثامن والثلاثون، ص ۹۵۔

2 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الفاروق، الجزء: ۱۲، ج۶، ص ۲۲۳، حدیث: ۳۵۶۱۸۔

3 ......موسوعہ ابن ابی الدنیا، الصمت وآداب اللسان، باب ذم المداحین، ج۷، ص ۳۳۰، الرقم: ۲۱۰۔

www.dawateislami.net

लोगों में येह मरज़ देखा गया है कि अपनी झूटी ता'रीफ़ पर भी खुश हो जाते हैं और सामने वाले को मन्अ़ भी नहीं करते। अगर किसी के नेक अ़मल पर उस की ता'रीफ़ की जाए तो उस का खुश होना फ़ित्री बात है। लेकिन याद रखिये कि अपनी सच्ची ता'रीफ़ पर खुश होने की भी सूरतें हैं : "येह खुशी कभी मह़मूद या'नी पसन्दीदा होती है और कभी मज़मूम या'नी ना पसन्दीदा।" लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब कोई हमारी सच्ची ता'रीफ़ करे तो उसे नर्मी से मन्अ़ कर दें। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **اَلْمَدْحُ ذِبْحٌ** "या'नी किसी की ता'रीफ़ करना गोया उसे ज़ब्ह़ करना है।"(1)

......फिर भी कोई हमारी ता'रीफ़ करने से बाज़ न आए तो फूलने के बजाए दिल में दाख़िल होने वाली खुशी के बारे में अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिये।

मह़मूद खुशी की 4 सूरतें हैं :

......अपना यूं ज़ेह्न बनाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मह़ज़ अपने करम से गुनाहों पर पर्दा डाल कर उस की इ़बादत को ज़ाहिर फ़रमा दिया और इस से बड़ा एह़सान क्या होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे के गुनाहों को छुपा दे और इ़बादत को ज़ाहिर कर दे लिहाज़ा बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस पर नज़रे रह़मत की वज्ह से खुश हो।

......या खुशी का क़ाबिले ता'रीफ़ होना इस वज्ह से है कि बन्दा येह सोच कर खुश हो जाता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब दुन्या में उस के गुनाहों को छुपाया और उस की नेकियों को ज़ाहिर फ़रमाया तो आख़िरत में भी उस के साथ येही सुलूक फ़रमाएगा, चुनान्चे, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे के गुनाह की दुन्या में पर्दापोशी फ़रमाता है आख़िरत में भी उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा।"(2)

......या फिर बन्दा येह ख़याल करे कि मेरे नेक आ'माल पर मुत्तलअ़ होने वालों को मेरी इक़्तिदा में रग़बत मिलेगी और इस त़रह़ मुझे दुगना सवाब मिलेगा एक सवाब तो इस बात का होगा कि उस का मक़्सूद इब्तिदा में अ़मल को पोशीदा रखना था और दूसरा सवाब इस के ज़ाहिर होने और लोगों की इक़्तिदा की वज्ह से होगा क्यूंकि इ़बादत व त़ाअ़त में जिस की पैरवी की जाती है उसे उन पैरवी करने वालों का सवाब भी मिलता है और उन के सवाब में भी कमी नहीं होती लिहाज़ा इस

---

1 ......موسوعه ابن ابی الدنیا، الصمت وآداب اللسان، باب ذم المداحین، ج۷، ص ۳۲۹، الرقم: ۲۰۶۔

2 ......مسلم، کتاب البر والصلة، بشارة من ستر اللہ ــــ الخ، ص ۱۳۹۷، حدیث: ۷۱۔

www.dawateislami.net

ख़याल से ख़ुशी ह़ासिल होना बिल्कुल दुरुस्त है क्यूंकि नफ़्अ़ के आसार का ज़ुहूर लज़्ज़त बख़्शता है और ख़ुशी का सबब बनता है। सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : "येह उस सूरत में है कि इ़बादत इस लिये नहीं की, कि लोगों पर ज़ाहिर हो और लोग आ़बिद समझें, इ़बादत ख़ालिसन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है, इ़बादत के बा'द अगर लोगों पर ज़ाहिर हो गई और त़बअ़न येह बात अच्छी मा'लूम होती है कि दूसरे ने अच्छी ह़ालत पर पाया, इस त़बई मसर्रत से रिया नहीं।"(1)

......इसी त़रह़ कभी बन्दा इस वज्ह से ख़ुश होता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे ऐसे अ़मल की तौफ़ीक़ दी है जिस की वज्ह से लोग उस की ता'रीफ़ कर रहे हैं और इस की वज्ह से उस से मह़ब्बत करते हैं और उन फ़ासिक़ लोगों से नहीं बनाया जो इ़बादत गुज़ार लोगों को देख कर उन का मज़ाक़ उड़ाते और उन्हें ईज़ा देते हैं, इस सूरत में इख़्लास की अ़लामत येह है कि जिस त़रह़ उसे अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुशी ह़ासिल होती है इसी त़रह़ दूसरों की ता'रीफ़ भी उस के लिये बाइ़से मसर्रत हो। "क़ाबिले मज़म्मत ख़ुशी येह है कि आदमी लोगों के नज़दीक अपने मक़ामो मर्तबे पर ख़ुश हो और येह ख़्वाहिश करे कि वोह उस की ता'रीफ़ व ता'ज़ीम करें, उस की ह़ाजतें पूरी करें, आमदो रफ़्त में उसे अपने आगे करें।(2)

......अपने अ़मल की ता'रीफ़ सुन कर उस में ज़ियादती करना और मज़म्मत पर कमी करना रियाकारी की अ़लामत है। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "रियाकार की तीन अ़लामतें हैं : (1) तन्हाई में हो तो अ़मल में सुस्ती करे और लोगों के सामने हो तो चुस्ती दिखाए। (2) ता'रीफ़ की जाए तो अ़मल में इज़ाफ़ा कर दे और (3) मज़म्मत की जाए तो अ़मल में कमी कर दे।"(3)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो ...... कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही
अ़त़ा कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत ......न नज़दीक आए रिया या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1...बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा. 16 स. 636

2......الزواجر، الکبیرۃ الثانیۃ، الشرک الاصغر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۹۴۔

3......الزواجر، الکبیرۃ الثانیۃ، الشرک الاصغر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۸۶۔

www.dawateislami.net

(9) मक़ामे तोहमत पर खड़े होने वाले का एहतिसाब

हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहीं से गुज़र रहे थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र एक ऐसे शख़्स पर पड़ी जो एक औ़रत से बातें कर रहा था, आप ने उसे एक दुर्रा लगाया तो उस शख़्स ने वज़ाह़त करते हुवे अ़र्ज़ किया : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنَّمَاهِيَ اِمْرَاتِيْ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येह मेरी ज़ौजा है।" बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई तो उन के सामने सारा माजरा बयान किया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِنَّمَا اَنْتَ مُؤَدِّبٌ وَلَيْسَ عَلَيْكَ شَيْءٌ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ने तो उसे तादीबन या'नी अदब सिखाने के लिये कोड़ा मारा है लिहाज़ा आप पर कोई कलाम नहीं।" फिर उन्हों ने इस की ताईद में ह़दीसे मुबारका सुनाई कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : **اِذَا كَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ نَادٰى مُنَادٍ لَا يَرْفَعَنَّ اَحَدٌ مِّنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ كِتَابَهٗ قَبْلَ اَبِيْ بَكْرٍ وَعُمَرَ** "या'नी क़ियामत के दिन एक मुनादी निदा करेगा कि इस उम्मत में से अबू बक्र व उ़मर से पहले कोई भी अपना नामए आ'माल नहीं उठाएगा।"[1]

तोहमत की जगहों से बचिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां इस रिवायत से शैख़ैन "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की बुलन्दो बाला शान ज़ाहिर होती है वहीं येह भी पता चलता है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ल्क़े ख़ुदा को ज़िन्दगी के आदाब सिखाते रहते थे। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि अपने आप को तोहमत की जगहों से बचाना चाहिये ताकि दीगर लोग ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी जैसे गुनाहों में मुब्तला न हों। चुनान्चे, आ'ला हज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** में एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : "इल्ज़ाम, ता'न और तोहमत से बचना ज़रूरी है ब सूरते दीगर येह इक़्दाम अपने दीनी भाइयों को कबीरा गुनाहों ग़ीबत, बोहतान, कीना और बुरे अल्क़ाब के इस्ति'माल में मुब्तला कर देगा। ह़दीसे

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۱۵۹۔

www.dawateislami.net

मुबारक है : "(लोगो !) जिन कामों को कान ना पसन्द करते हैं उन से बचो।" और दूसरी ह़दीसे पाक में है : "और ऐसे कामों से परहेज़ करो जिन के इरतिकाब पर मा'ज़िरत करनी पड़े।" और बिग़ैर शरई मजबूरी के मुसलमानों को मुतनफ़्फ़िर करना (या'नी मुसलमानों को नफ़रत दिलाना) ममनूअ़ है।" चुनान्चे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا "या'नी मुसलमानों को खुश ख़बरी दो और नफ़रत न दिलाओ।" शरीअ़त का मक़्सद जोड़ना, इत्तिहाद पैदा करना है न कि तोड़ना। अ़क़्ले सलीम का तक़ाज़ा भी येही है कि लोगों को बे क़रारी में डाल कर नाराज़ न किया जाए और कराहत व इलज़ाम वाली जगह खड़े होने से परहेज़ किया जाए।(1)

बचूं ग़ीबतों से बचूं चुग़लियों से......हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

ज़बां पर लगाम मेरी लग जाए मौला.......सदा तोहमतों से बचा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ इस्तिदलालात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ नाम निहाद मुअर्रिख़ीन, मुतर्जिमीन और सीरत निगारों ने आप के चन्द वाक़िआ़त बयान कर के अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ बा'ज़ ग़लत़ बातें भी मन्सूब की हैं, यक़ीनन ऐसे लोग सीरते फ़ारूक़ी की आड़ में मुसलमानों के माबैन इन्तिशार फैलाने का सबब बनना चाहते हैं, लिहाज़ा ज़रूरी है कि ऐसे वाक़िआ़त को बयान कर के इन की दुरुस्त वज़ाह़त की जाए। चन्द वाक़िआ़त मअ़ वज़ाह़त पेशे ख़िदमत हैं :

(1) फ़ारूक़े आ'ज़म और बैअ़ते रिज़वान वाला दरख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि लोग उस दरख़्त के पास जाते थे जिसे बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त कहा जाता था, और उस के पास नमाज़ भी पढ़ा करते थे। जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस की ख़बर मिली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दरख़्त के मुआ़मले में डराया धमकाया और उस दरख़्त को काटने का हुक्म दिया लिहाज़ा वोह दरख़्त काट दिया गया।(2)

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 613।

2......طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ الحدیبیۃ، ج ۲، ص ۷۶-

www.dawateislami.net

चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल

बा'ज़ लोगों ने मज़्कूरा रिवायत को ज़िक्र करने के बा'द येह नतीजा निकाला कि "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बैअ़ते रिज़्वान वाले उस दरख़्त को इस लिये कटवा दिया था ताकि लोग उसे मुबारक मक़ाम न समझें और वहां नमाज़ की अदाएगी के ज़रीए शिर्क व बिदअ़त में मुब्तला न हो जाएं कि पिछली क़ौमें इसी वज्ह से बरबाद हुई थीं।" येह नतीजा कई वुजूहात से दुरुस्त नहीं है, चन्द वुजूहात दर्जे ज़ैल हैं :

(1)......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस दरख़्त को इस लिये कटवाया था कि वोह ह़क़ीक़तन बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त नहीं था बल्कि कोई और दरख़्त था जो बैअ़ते रिज़्वान से मन्सूब हो गया था, येही वज्ह है कि "त़बक़ाते कुब्रा" की मज़्कूरा रिवायत में उस दरख़्त के लिये يُقَالُ لَهَا شَجَرَةُ الرِّضْوَانِ के अल्फ़ाज़ आए हैं या'नी उसे बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त कहा जाता था वोह ह़क़ीक़तन बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त नहीं था।

(2)......बैअ़ते रिज़्वान वाले ह़क़ीक़ी दरख़्त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों के ह़ाफ़िज़े से भुला दिया था। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया : "मैं ने इस दरख़्त को देखा था फिर बा'द में मैं उस के पास आया तो उस को पहचान न सका।" ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "फिर बा'द में मुझे वोह दरख़्त भुला दिया गया।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं ह़ज करने के लिये गया तो कुछ लोगों के पास से गुज़रा जो एक दरख़्त के पास नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं ने पूछा : "येह कैसी मस्जिद है ?" उन्हों ने बताया कि येह वोह दरख़्त है जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बैअ़ते रिज़्वान की थी। येह सुन कर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास गया और उन्हें येह बात बताई। सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुझे मेरे वालिद ने बताया कि वोह उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से थे जिन्हों ने उस दरख़्त के नीचे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की थी, फिर हम अगले साल गए तो उस दरख़्त को भूल गए और उस

1......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ حدیبیۃ، ج۳، ص۷۱، حدیث: ۴۱۶۲۔

www.dawateislami.net

की ता'यीन पर क़ादिर न हुवे।" येह बयान करने के बा'द सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ اَصْحَابَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَعْلَمُوْهَا وَعَلِمْتُمُوْهَا اَنْتُمْ فَاَنْتُمْ اَعْلَمُ "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तो उस दरख़्त को नहीं पहचानते थे और तुम लोगों ने पहचान लिया तो क्या तुम उन से ज़ियादा जानते हो ?"[1]

(3)......हमारी इस तौजीह की ताईद इस बात से भी होती है कि "त़बक़ाते कुब्रा" की मज़्कूरए बाला रिवायत से चन्द सफ़ह़ात आगे इस बैअ़ते रिज़्वान वाले दरख़्त से मुतअ़ल्लिक़ एक और रिवायत मौजूद है इस के रावी भी ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, वोह फ़रमाते हैं : خَرَجَ قَوْمٌ مِنْ اَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذٰلِكَ بِاَعْوَامٍ فَمَا عَرَفَ اَحَدٌ مِّنْهُمُ الشَّجَرَةَ وَاخْتَلَفُوْا فِيْهَا "या'नी बैअ़ते रिज़्वान के चन्द साल के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उस दरख़्त को देखने के लिये गए लेकिन कोई भी उस दरख़्त को पहचानता न था बल्कि उन में इख़्तिलाफ़ था।"[2] पता चला सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी उस दरख़्त को न पहचानते थे तो फिर दीगर लोगों को कैसे उस दरख़्त का इ़ल्म हो गया था ? लिहाज़ा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस दरख़्त को कटवाया था वोह ह़क़ीक़तन बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त था ही नहीं बल्कि वोह बैअ़ते रिज़्वान से मन्सूब था।

(4)......इसी रिवायत के आख़िरी हिस्से में है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे और जलीलुल क़द्र सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दरख़्त के बारे में इरशाद फ़रमाया : كَانَتْ رَحْمَةً مِّنَ اللّٰهِ "या'नी येह बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से एक रह़मत था।" येह कैसे हो सकता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत क़रार दें और आप के वालिदे माजिद या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे कटवा दें ? यक़ीनन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस दरख़्त को कटवाया था वोह बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त नहीं था बल्कि फ़क़त़ मन्सूब था।

(5)......अगर वोह ह़क़ीक़तन बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त होता तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी भी उस दरख़्त को न कटवाते क्यूंकि आप तो इस्लामी तबर्रुकात के मुह़ाफ़िज़ थे न कि

1 ......بخاری، کتاب المغازی، غزوۃ حدیبیۃ، ج ۳، ص ۱۷، حدیث: ۴۱۶۳۔

2 ......طبقات کبری، غزوۃ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الحدیبیۃ، ج ۲، ص ۸۱۔

www.dawateislami.net

उन को ख़त्म करने वाले । अगर येह बात दुरुस्त होती कि आप ने लोगों के वहां नमाज़ पढ़ने और उस को मुबारक जगह समझने की वज्ह से कटवाया तो आप कभी भी मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला (जाए नमाज़) बनाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर न फ़रमाते जिस की आप को क़ुरआन से मुवाफ़िक़त भी ह़ासिल हुई और क़ियामत तक के मुसलमानों के लिये इस मुबारक जगह पर नमाज़ पढ़ना बाइसे सआ़दत हो गया । इसी त़रह़ अगर लोगों को उस का अदबो एह़तिराम से रोकना मक़्सूद होता तो आप सब से पहले ह़जरे अस्वद को अपनी जगह से हटवाते कि लोग ख़ास उस की ता'ज़ीम करते हुवे उसे चूमते हैं ।

(6)......अगर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस दरख़्त को इस लिये कटवाया होता कि लोग उस की ता'ज़ीम न करें तो आप सब से पहले इस की ता'लीम अपनी औलाद को देते ह़ालांकि आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और पोते ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बारे में आता है कि येह दोनों उन मुबारक जगहों पर नमाज़ अदा करते जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई ।[1]

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام की क़ब्र मुबारक

जब "तुस्तर" के मक़ाम पर मुसलमान लश्कर को ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام का जसदे अत़हर मिला, उन के जसदे मुबारक के साथ बहुत सा माल भी रखा हुवा था और साथ ही येह लिखा हुवा था कि जो भी अपनी ह़ाजात के लिये मख़्सूस वक़्त के लिये इसे लेना चाहे ले ले मगर वक़्त पर वापस कर दे वरना उसे बरस की बीमारी लग जाएगी । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से मुआ़नक़ा किया और जसदे अत़हर को बोसा दिया । फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के मुतअ़ल्लिक़ एक मक्तूब रवाना किया । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया कि उन को ग़ुस्ल व कफ़न दे कर उन की नमाज़े जनाज़ा भी अदा करो और उन्हें वैसे दफ़्नाओ जैसे अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को दफ़्नाया जाता है । उन के क़रीब से जो माल मिला है उसे बैतुल माल में जम्अ़ करा दो । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वैसा ही किया ।[2]

बा'ज़ ह़ज़रात ने येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द लिखा है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام को दफ़्न करने का

---

1 ......بخاری، کتاب الصلاۃ، باب المساجد التی علی طرق المدینۃ، ج ۱، ص ۱۸۲، حدیث: ۴۸۳ ملتقطا۔

2 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الانبیاء، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۱۷، حدیث: ۳۵۵۷۸۔

www.dawateislami.net

हुक्म इस लिये इरशाद फ़रमाया ताकि शिर्क व बिदआ़त का क़ल्अ़ क़म्अ़ फ़रमाएं ह़ालांकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फे़'ल क़त़्अ़न इस लिये नहीं था बल्कि इस की दर्जे ज़ैल वुजूहात थीं :

सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام की मुबारक दुआ़ क़बूल हुई

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ मांगी थी कि उन के माल के वारिस मुसलमान हों।" येह दुआ़ यूं क़बूल हुई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ السَّلَام के जसदे अत़्हर को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने ज़ाहिर कर दिया, जिन्हों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام के जसदे अत़्हर को गु़स्ल व कफ़न दिया और मुसलमान आप के माल के वारिस बन गए।[1]

जसदे मुबारक की बे हुर्मती का अन्देशा था

ह़ज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام से तक़रीबन सात सौ साल पहले के हैं और तक़रीबन चौदह सौ (1400) साल बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में आप का जिस्मे अत़्हर ज़ाहिर हुवा। या'नी इतने अ़र्से तक आप عَلَیْہِ السَّلَام का जसदे अत़्हर बिल्कुल सह़ीह़ सलामत रहा, यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरते कामिला और आप عَلَیْہِ السَّلَام का मो'जिज़ा है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के जसदे अत़्हर को गु़स्ल व कफ़न दे कर दफ़नाने का हुक्म इस लिये इरशाद फ़रमाया था कि पहले के लोग सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام के जसदे अत़्हर को सामने रख कर उन के वसीले से बारिश के लिये दुआ़ मांगते थे, यक़ीनन सय्यिदुना दानियाल عَلَیْہِ السَّلَام के वसीले से दुआ़ मांगना सआ़दत मन्दी है लेकिन आप के जसदे मुबारक की बे हुर्मती का भी अन्देशा था, लिहाज़ा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसी अन्देशे के पेशे नज़र तदफ़ीन का हुक्म दिया।

फ़ारूके़ आ'ज़म ने हुक्मे शरई पर अ़मल किया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्मे शरई पर अ़मल किया कि अगर किसी मुसलमान की मय्यित मिले तो हुक्म येह है कि उसे गु़स्ल व कफ़न दे कर तदफ़ीन कर देंगे।[2]

---

1 ......کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الانبیاء، الجزء:۱۲، ج۶، ص۲۱۶، حدیث:۳۵۵۷۶۔

2 ....बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा, 4 स. 815 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

(3) लोगों को नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया

हज़रते सय्यिदुना मा'रूर बिन सुवैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक बार मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सफ़र में था, हम मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के दरमियान में थे कि नमाज़ का वक़्त हो गया हम सब ने नमाज़े फ़ज्र अदा की, आप ने पहली रक्अ़त में सूरतुल फ़ील और दूसरी रक्अ़त में सूरए कु़रैश पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द हम ने देखा कि कुछ लोग उतरे और उस जगह नमाज़ अदा करने लगे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा तो बताया गया कि येह वोह जगह है जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी। इस लिये लोग भी नमाज़ अदा कर रहे हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

هَكَذَا هَلَكَ اَهْلُ الْكِتَابِ اتَّخَذُوا آثَارَ اَنْبِيَائِهِمْ بِيَعًا مَنْ عَرَضَتْ لَهُ مِنْكُمْ فِيهِ الصَّلَاةُ فَلْيُصَلِّ وَمَنْ لَمْ تَعْرِضْ لَهُ مِنْكُمْ فِيهِ الصَّلَاةُ فَلَا يُصَلِّ

"या'नी तुम से पहले की क़ौमें इसी वज्ह से हलाक हुई कि उन्हों ने अपने अम्बिया के आसार को इबादत ख़ाना बना दिया। पस जो कोई यहां से गुज़रे और नमाज़ का वक़्त हो जाए तो नमाज़ अदा कर ले वरना नमाज़ न पढ़े।"[1]

चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल

......बा'ज़ लोग इस रिवायत को बयान करने के बा'द कहते हैं कि "देखें अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस जगह पर नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई थी, मा'लूम हुवा कि किसी जगह नमाज़ पढ़ने से वोह मुबारक नहीं हो जाती, न ही उस को इ़ज़्ज़तो शरफ़ मिलता है।" येह तौजीह ग़लत़ है और इसे सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मन्सूब करना भी ग़लत़ है। इस की चन्द वुजूहात हैं।

......वाज़ेह रहे कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को नमाज़ पढ़ने से इस लिये मन्अ़ फ़रमाया ताकि दीगर लोग यहां नमाज़ पढ़ना कोई फ़र्ज़ व वाजिब न समझ लें। क्यूंकि आप के अ़ह्दे मुबारका में बे शुमार फ़ुतूह़ात हुईं और लाखों लोग मुसलमान हुवे जिन की कसीर ता'दाद अह़कामे शरइय्या की तफ़्सील नहीं जानती थी, ऐसे लोग दीगर मुसलमानों के अ़मल को देख कर उन की इत्तिबाअ़ करते थे, अगर वोह दीगर लोगों को मुसलसल इस मक़ाम पर नमाज़ पढ़ते हुवे देखते तो

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الصلاۃ، فی الصلاۃ عند قبر النبی، ج ۲، ص ۲۷۰، حدیث: ۹۔

www.dawateislami.net

हो सकता था कि वोह इस जगह नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ व वाजिब समझ लेते हालांकि इस जगह नमाज़ पढ़ना कोई फ़र्ज़ व वाजिब नहीं था। चुनान्चे, शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

قُلْتُ اِنَّ عُمَرَ اِنَّمَا خَشِيَ اَنْ يَلْتَزِمَ النَّاسُ الصَّلَاةَ فِيْ تِلْكَ الْمَوَاضِعَ
حَتّٰى يُشْكِلَ عَلٰى مَنْ يَّاْتِيْ بَعْدَهُمْ فَيَرٰى ذٰلِكَ وَاجِباً وَعَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ كَانَ مَاْمُوْناً مِنْ ذٰلِكَ وَكَانَ يَتَبَرَّكُ بِتِلْكَ الْاَمَاكِنِ
وَتَشَدُّدُهُ فِي الْاِتِّبَاعِ مَشْهُوْرٌ وَغَيْرُهُ لَيْسَ فِيْ هٰذَا الْمَقَامِ

"या'नी मैं येह कहता हूं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों को उस जगह पर नमाज़ पढ़ने से इस लिये रोका था कि कहीं लोग उन जगहों पर नमाज़ पढ़ने को इस त़रह़ लाज़िम न कर लें कि बा'द वाले वहां नमाज़ पढ़ने को वाजिब समझने लगें। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस ख़दशे से मह़फ़ूज़ थे लिहाज़ा आप उन जगहों से तबर्रुक ह़ासिल करने के लिये नमाज़ अदा करते थे और सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ में उन की सख़्ती बड़ी मश्हूर है जब कि दीगर लोगों में ऐसा नहीं।"[1]

......अगर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के नज़्दीक ऐसी मुबारक जगहों पर नमाज़ पढ़ना बिल्कुल मन्अ़ होता तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस की वज़ाह़त ज़रूर फ़रमाते हालांकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस बात की तसरीह़ फ़रमा दी कि अगर उस मक़ाम पर नमाज़ का वक़्त हो जाए तो नमाज़ पढ़ ली जाए। येह इस बात पर दलालत करता है कि ऐसे मुक़द्दस मक़ामात पर मुत़लक़न नमाज़ पढ़ने को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नाजाइज़ नहीं फ़रमाया बल्कि इस जगह को मुस्तक़िल मुसल्ला या'नी नमाज़ पढ़ने की जगह बना लेने के ख़दशे की वज्ह से मन्अ़ फ़रमाया।

......अगर ऐसी मुबारक जगहों पर नमाज़ अदा करना मुत़लक़न मन्अ़ होता तो सब से पहले अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस से मन्अ़ फ़रमाते हालांकि आप के बारे में मन्क़ूल है कि आप तो ऐसी जगहों के बारे में जानते और फिर उन जगहों पर बरकत ह़ासिल करने के लिये नमाज़ अदा फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बग़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

1 ......عمدة القاری، کتاب الصلاة، باب المساجد علی طرق المدینة، ج ۳، ص ۵٦۰، حدیث: ۴۸۳۔

www.dawateislami.net

बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इसी ह़दीसे मुबारका से इस्तिद्लाल करते हुवे फ़रमाते हैं : ''मा'लूम हुवा कि जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमाई है उन मक़ामात पर नमाज़ अदा करना मुस्तह़ब है।''(1)

(4) ऐ ह़जरे अस्वद ! तू नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं दे सकता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सरजिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज करते हुवे ह़जरे अस्वद को चूमा और इरशाद फ़रमाया : **وَاللّٰهِ اِنِّي لَاُقَبِّلُكَ وَاِنِّي اَعْلَمُ اَنَّكَ حَجَرٌ وَاَنَّكَ لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ وَلَوْلَا اَنِّي رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَكَ مَا قَبَّلْتُكَ** ''या'नी ख़ुदा की क़सम ! मैं तुझे चूम रहा हूं ह़ालांकि मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है, न तू किसी को नफ़्अ़ दे सकता है और न ही नुक़्सान। अगर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे चूमते हुवे न देखा होता तो मैं भी तुझे कभी न चूमता।(2)

चन्द अहम वज़ाह़ती मदनी फूल

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो येह इरशाद फ़रमाया कि ''ऐ ह़जरे अस्वद ! न तू किसी को नफ़्अ़ दे सकता है और न ही नुक़्सान।'' इस से ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों के इस अ़क़ीदे की काट करना मक़्सूद थी जो उन्हों ने बुतों के बारे में बना रखा था कि वोह बुत नफ़्अ़ व नुक़्सान देते हैं। चूंकि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में फ़ुतूह़ात की कसरत की वज्ह से मुसलमानों की भी कसरत हुई और उन की अक्सरिय्यत ऐसी थी जो अह़कामे शरइय्या की तफ़्सीलात से आगाह न थी और सिर्फ़ क़दीम मुसलमानों को जो करता देखती वैसा ही करती, इस लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात को वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि कुफ़्फ़ार का बुतों को चूमना और उन की इबादत करना इस बात़िल अ़क़ीदे की बुन्याद पर था कि वोह बुत नफ़्अ़ व नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, जब कि मुसलमानों का ह़जरे अस्वद को चूमना इस अ़क़ीदे की बुन्याद पर है कि एक तो येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है और दूसरा येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर कोई पथ्थर चाहे वोह ह़जरे अस्वद ही क्यूं न हो किसी भी त़रह़ का नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़जरे अस्वद को चूमने के बा'द येह

---

1 ......شرح السنۃ للبغوی، کتاب الصلاۃ، المساجد فی البیوت وتنظیفھا، ج۲، ص۱۳۹، حدیث: ۴۹۹۔

2 ......مسلم، کتاب الحج، استحباب تقبیل الحجر الاسود، ص۲۲۲، حدیث: ۲۵۰۔

www.dawateislami.net

इस लिये फ़रमाया ताकि लोगों के दिलों से ज़मानए जाहिलिय्यत में बुतों के बारे में पाया जाने वाला येह वह्म दूर हो जाए कि जैसे वोह नफ़्अ़ नुक़्सान देते थे बिऐ़निही येह पथ्थर भी बज़ाते ख़ुद वैसा ही नफ़्अ़ नुक़्सान दे सकता है।(1)

✿......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो येह फ़रमाया कि **"ऐ ह़जरे अस्वद तू नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं दे सकता"** इस से मुराद येह है कि तू ज़ाती तौ़र पर नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं दे सकता अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के इज़्न से देना चाहे तो दे सकता है। चुनान्चे, अ़ल्लामा क़स्त़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **(اِنِّي اَعْلَمُ اَنَّکَ حَجَرٌ لَا تَضُرُّ وَلَا تَنْفَعُ) اَيْ بِذَاتِکَ** "या'नी बेशक मैं जानता हूं कि तू एक पथ्थर है जो न तो नुक़्सान दे सकता है और न ही नफ़्अ़ दे सकता है या'नी ज़ाती तौ़र पर।"(2)

✿......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़जरे अस्वद के नफ़्अ़ व नुक़्सान की जो नफ़ी की है वोह ज़ाती नफ़्अ़ व नुक़्सान की है, या'नी ह़जरे अस्वद बिज़्ज़ात बिग़ैर रब عَزَّوَجَلَّ की त़ाक़त व इज़्न के नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता, इस बात की नफ़ी न फ़रमाई कि रब عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से भी वोह नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। इस की एक दलील येह भी है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह कलाम ह़जरे अस्वद को मुख़ात़ब कर के ही फ़रमाया है। गोया सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़जरे अस्वद को मुख़ात़ब कर के येह वाज़ेह़ किया कि ऐ ह़जरे अस्वद ! जिस त़रह़ तू मेरा कलाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाकर्दा त़ाक़त व क़ुव्वत से सुन रहा है अपनी मरज़ी से नहीं सुन सकता इसी त़रह़ तू किसी को नफ़्अ़ व नुक़्सान भी अपनी मरज़ी से नहीं दे सकता अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाकर्दा त़ाक़त से दे सकता है।

✿......ह़जरे अस्वद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से नफ़्अ़ व नुक़्सान दे सकता है। चुनान्चे, शुअ़बुल ईमान में इस ह़दीसे मुबारका का बक़िय्या ह़िस्सा कुछ यूं है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़जरे अस्वद को चूमने के बा'द मज़्कूरए बाला कलाम फ़रमाया तो येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने आप से अ़र्ज़ किया : **بَلٰی یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِنَّہٗ یَضُرُّ وَیَنْفَعُ** "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्यूं नहीं, येह ह़जरे अस्वद नफ़्अ़ भी देता है और नुक़्सान भी देता है।" आप ने फ़रमाया : "वोह कैसे ?" अ़र्ज़ किया : "किताबुल्लाह में है।" फ़रमाया : "किताबुल्लाह में कहां है ?" अ़र्ज़ किया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

1......ارشاد الساری، کتاب الحج، ماذکر فی حجر الاسود، ج۴، ص۱۳۶، تحت الحدیث: ۱۵۹۷۔

2......ارشاد الساری، کتاب الحج، ماذکر فی حجر الاسود، ج۴، ص۱۳۶، تحت الحدیث: ۱۵۹۷۔

www.dawateislami.net

﴿وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْؕ قَالُوْا بَلٰىۚۛ﴾(پ۹،الاعراف:۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यूं नहीं ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया फिर आप की पीठ पर अपने दस्ते क़ुदरत से मस्ह़ फ़रमाया और तमाम औलादे आदम से अपनी रबूबिय्यत का येह इक़रार लिया कि "मैं तुम्हारा रब हूं" और उ़बूदिय्यत का भी इक़रार लिया कि "तुम सब मेरे बन्दे हो।" और फिर उन से अ़ह्दो मीसाक़ लिया और उन का येह मीसाक़ व अ़ह्द एक वरक़ में लिख दिया। उस वक़्त ह़जरे अस्वद की दो आंखें और एक ज़बान थी रब عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया : "अपना मुंह खोल।" उस ने अपना मुंह खोला तो वोह वरक़ उस के मुंह में डाल दिया।" फिर फ़रमाया : "ऐ ह़जरे अस्वद ! क़ियामत तक जो अपने अ़ह्द की पासदारी करे तू उस की गवाही देना।" मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : "मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि क़ियामत के दिन ह़जरे अस्वद को इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस की एक तेज़ और फ़सीह़ ज़बान होगी जिस से वोह उस शख़्स की गवाही देगा जिस ने ईमान की ह़ालत में उस का इस्तीलाम किया होगा। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! येही तो ह़जरे अस्वद का नफ़्अ़ व नुक़्सान देना है।"

सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) का येह कलाम सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَعِيْشَ فِيْ قَوْمٍ لَسْتَ فِيْهِمْ يَا اَبَا الْحَسَن** "या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस बात से पनाह मांगता हूं कि मैं ऐसी क़ौम में ज़िन्दगी गुज़ारूं जहां ऐ अबुल ह़सन तुम न हो।"(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर तवज्जोह

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह देते थे, आप मोटापे के नुक़्सानात और इस की हलाकत ख़ैज़ियों से अ़वामुन्नास को आगाह फ़रमाते, उन्हें ख़फ़ीफ़ जिस्म रखने की तरग़ीब दिलाते थे। क्यूंकि

1 ......شعب الایمان، باب المناسک، فضیلۃ الحجر الاسود، ج۳، ص۴۵۱، حدیث: ۴۰۴۰۔

www.dawateislami.net

बदन हल्का होने की सूरत में फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी पर क़ुदरत और दीगर दीनी व दुन्यवी कामों में क़ुव्वत व निशात़ पैदा होती है। चुनान्चे,

तोंद वाले शख़्स का एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक तोंद वाले शख़्स को देखा तो पूछा : مَاھٰذَا "या'नी येह क्या है ?" उस ने कहा : بَرَکَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ "या'नी येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बरकत है।" आप ने फ़रमाया : بَلْ عَذَابٌ مِّنَ اللّٰہِ "या'नी येह बरकत नहीं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़ज़ाब है।"(1)

अपने आप को तोंद वाला होने से बचाओ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : اِیَّاکُمْ وَالْبِطْنَۃَ فِی الطَّعَامِ وَ الشَّرَابِ فَاِنَّھَا مُفْسِدَۃٌ لِلْجَسَدِ مُوْرِثَۃٌ لِلْفَشَلِ مُکْسِلَۃٌ عَنِ الصَّلَاۃِ وَعَلَیْکُمْ بِالْقَصْدِ فِیْھِمَا، فَاِنَّہٗ اَصْلَحُ لِلْجَسَدِ وَاَبْعَدُ مِنَ السَّرَفِ "या'नी ऐ लोगो ! अपने आप को तोंद वाला होने से बचाओ या'नी खाने पीने के सबब अपना पेट बड़ा होने से बचाओ क्यूंकि मोटापा तुम्हारे वुजूद को ख़राब करने वाला, बुज़दिली को पैदा करने वाला, नमाज़ में सुस्ती दिलाने वाला है और तुम पर ज़रूरी है कि खाने पीने में एह़तियात़ से काम लो क्यूंकि खाने पीने में मियाना रवी जिस्म को दुरुस्त रखती है, इसराफ़ से बचाती है।"(2)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ठूंस ठूंस कर खाना, बदन मोटा होना और उभरी हुई तोंद लिये लिये फिरना देखने वाले पर बहुत बुरा तअस्सुर छोड़ता है, अपने वज़्न का ख़याल रखिये कि इ़बादत पर मदद ह़ासिल करने की निय्यत से सिह़्ह़त अच्छी और वज़्न मो'तदिल (Normal) रखना कारे सवाब और ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स दुब्ला पतला होना बाइ़से सआ़दत है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को तुम में सब से ज़ियादा वोह पसन्द है जो कम खाने वाला और हल्के बदन वाला है।"(3)

---

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الستون، ص ۱۹۴۔

2 ......المقاصد الحسنۃ، حرف الھمزۃ، ص ۱۳۲۔

3 ......جامع صغیر، حرف الھمزۃ، ص ۲۰، حدیث: ۲۲۱۔

www.dawateislami.net

......मोटापा बज़ाते खुद एक मरज़ बल्कि बे शुमार अमराज़ का मजमूआ है, मोटापा नेक कामों में रुकावट बनता है, मोटापे की सब से बड़ी और तश्वीशनाक आफ़त बयान करते हुवे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : اِنَّ اللّٰہَ یَبْغُضُ الْحِبْرَ السَّمِیْنَ "या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोटे ज़ी इ़ल्म शख़्स को ना पसन्द फ़रमाता है।"(1) क्यूंकि मोटापा ग़फ़्लत और ज़ियादा खाने पर दलालत करता है और येह बुरी बात है ख़ास तौर पर ज़ी इ़ल्म के लिये।(2) याद रहे ! उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि वोह फ़रबा (या'नी मोटापा) मज़्मूम है जो (बहुत खाने पीने और ऐ़शो इ़शरत के ज़रीए़) क़स्दन पैदा किया जाए, क़ुदरती मोटापा यहां मुराद नहीं है।(3)

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मोटे पेट वाले शख़्स को तम्बीह की और उस की इस्लाह़ का सामान किया, लेकिन येह बात हमेशा याद रखिये कि अगर कोई ज़ियादा खाता हो, बेशक खूब मोटा ताज़ा हो मगर उस का मज़ाक़ उड़ाना बल्कि उस की त़रफ़ देख कर ईज़ा देने वाले अन्दाज़ में मुस्कुराना या इशारे करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, नीज़ येह भी याद रखिये कि हर एक को मोटापे का सबब ज़ियादा खाना ही हो येह भी ज़रूरी नहीं, मुशाहदा येह है कि बा'ज़ इस्लामी भाई कम खाने के बा वुजूद वज़्न कम करने में नाकाम रहते हैं, जिस का मा'ना साफ़ ज़ाहिर है कि किसी बीमारी या दवाओं के मन्फ़ी असरात की वज्ह से बेचारों का बदन फूल जाता होगा। बहर ह़ाल मोटापे का कोई भी सबब हो दिल आज़ारी की इजाज़त नहीं। खुद बा'ज़ अकाबिर رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ऐसे गुज़रे हैं जो भारी जसामत वाले थे। चुनान्चे, फ़िक़्हे शाफ़ेई के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने इदरीस शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़िक़्हे ह़नफ़ी के अ़ज़ीम इमाम और सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में फ़रमाते हैं : مَا اَفْلَحَ سَمِیْنٌ قَطُّ اِلَّا اَنْ یَکُوْنَ مُحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ "या'नी कभी किसी मोटे शख़्स ने फ़लाह़ या'नी कामयाबी नहीं ह़ासिल की सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के।"(4)

---

1 ......موسوعه ابن ابی الدنیا، الجوع، ج ۴، ص ۹۳، الرقم: ۱۸ ملتقطا۔

2 ......اتحاف السادة المتقین، کتاب کسرة الشهوتین، فضیلة الجوع ـــ الخ، ج ۹، ص ۱۲۔

3 ......مرقاة المفاتیح، کتاب المناقب والفضائل، باب مناقب الصحابة، ج ۱۰، ص ۳۶۲، تحت الحدیث: ۶۰۱۰۔

4 ......فیض القدیر، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۲۲۷، تحت الحدیث: ۲۲۱، المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، ص ۱۳۲۔

www.dawateislami.net

……याद रहे ! मोटा होना, लज़्ज़त के लिये कोई ग़िज़ा इस्ति'माल करना या पेट भर कर खाना गुनाह नहीं, अलबत्ता इन चीज़ों से बचना मुनासिब है, जैसा कि सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "भूक से कम खाना चाहिये और पूरी भूक भर कर खा लेना मुबाह़ है या'नी न सवाब है न गुनाह, क्यूंकि उस का भी सह़ीह़ मक़्सद हो सकता है कि त़ाक़त ज़ियादा होगी और भूक से ज़ियादा खा लेना ह़राम है, ज़ियादा का येह मत़लब है कि इतना खा लिया जिस से पेट ख़राब होने का गुमान है, मसलन दस्त आएंगे और त़बीअ़त बद मज़ा हो जाएगी।"(1)

……हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی इरशाद फ़रमाते हैं : "ज़ियादा खाने से आ'ज़ा में फ़ितना पैदा होता और फ़साद बरपा करने और बेहूदा काम कर गुज़रने की रग़बत जनम लेती है, क्यूंकि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाता है तो उस के जिस्म में तकब्बुर और आंखों में बद निगाही की हवस चुटकियां लेती है, कान बुरी बातें सुनने के मुश्ताक़ रहते हैं, ज़बान फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बातों) पर आमादा होती है, शर्मगाह शहवत रानी का तक़ाज़ा करती है, पाउं नाजाइज़ मक़ामात की त़रफ़ चलने के लिये बेक़रार होते हैं। इस के बर अ़क्स अगर इन्सान भूका हो तो तमाम आ'ज़ाए बदन पुर सुकून रहेंगे, न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न ही बुराई देख कर ख़ुश होंगे। ह़ज़रते उस्ताज़ अबू जा'फ़र عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡبَر का इरशादे गिरामी है : "पेट अगर भूका हो तो उस के बाक़ी आ'ज़ा सैर या'नी पुर सुकून होते हैं, किसी शै का मुत़ालबा नहीं करते और अगर पेट भरा हुवा हो तो दूसरे आ'ज़ा भूके रह जाने के बाइ़स मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।"(2)

……मोटा हो या दुब्ला पतला जो कोई भी ख़ूब डट कर खाने का आ़दी हो उसे किसी भी मोहलिक (مُہۡ۔لِک या'नी हलाकत में डालने वाली) बीमारी के इस्तिक़्बाल के लिये ज़ेह्न बना लेना चाहिये क्यूंकि ज़ियादा खाने से पेट ख़राब होता है और ब क़ौले अत़िब्बा 80 फ़ीसद अमराज़ पेट की ख़राबी से पैदा होते हैं, जिन में 12 क़िस्में येह हैं : (1) दिमाग़ी अमराज़ (2) आंखों की बीमारियां (3) ज़बान और गले की बीमारियां (4) सीने और फेफड़े के अमराज़ (5) फ़ालिज और लक़्वा (6) जिस्म के निचले ह़िस्से का सुन हो जाना (7) शूगर (8) हाई ब्लड प्रेशर (9) दिमाग़ी शिरयान (या'नी मग़्ज़ की नस) फट जाना (10) नफ़्सियाती अमराज़ (या'नी पागल हो जाना वग़ैरा) (11) जिगर और पित्ते के अमराज़ और (12) डिप्रेशन। वग़ैरा वग़ैरा

---

1 ....बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा, 16, स. 374।

2 ......منہاج العابدین، ص ۸۲۔ ۸۳۔

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मोटापे को पसन्द नहीं फ़रमाते, बल्कि मोटापे के शिकार बहुत से इस्लामी भाइयों की ख़ैरख़्वाही के लिये आप ने मोटापे और वज़्न को कम करने के मुख़्तलिफ़ मदनी फूलों पर मुश्तमिल एक ऐसा बेहतरीन रिसाला मुरत्तब फ़रमाया जिसे पढ़ कर कई लोग अपने मोटापे पर कन्ट्रोल करने में कामयाब हो चुके हैं। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ 16 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाला बनाम "वज़्न कम करने का त़रीक़ा" का खुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाइये हो सकता है आप की थोड़ी सी कोशिश से किसी इस्लामी भाई का भला हो जाए और वोह मुख़्तलिफ़ बीमारियों से मह़फ़ूज़ हो कर इबादते इलाही और मदनी कामों के लिये मुतह़र्रिक व चाको चौबन्द हो जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और जुज़ामी बुढ़िया की इस्लाह

जहां तक आ़म शहरियों की सिह़्ह़त पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه की खुसूसी तवज्जोह की बात है तो इस सिलसिले में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का त़रीक़ए कार येह था कि अगर किसी शख़्स को ऐसी बीमारी होती जिस से उ़मूमन लोग घिन खाते हैं तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ऐसे शख़्स को दुरुस्त होने से पहले अपने घर से निकलने से मन्अ़ फ़रमाते। मन्क़ूल है कि आप का दौराने त़वाफ़ एक ऐसी बुढ़िया के पास से गुज़र हुवा जो जुज़ाम या'नी कोढ़ के मरज़ में मुब्तला थी वोह भी ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रही थी, आप ने उस से फ़रमाया : يَا اَمَةَ اللهِ لَا تُؤْذِي النَّاسَ لَوْ جَلَسْتِ فِي بَيْتِكِ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बांदी ! कितना बेहतर होता कि तुम अपने घर में ही रहतीं और लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचातीं।" चुनान्चे, वोह बुढ़िया अपने घर में चली गई और दोबारा कभी ख़ानए का'बा के त़वाफ़ के लिये न आई। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल के बा'द उसे किसी ने कहा : اِنَّ الَّذِيْ كَانَ نَهَاكِ قَدْ مَاتَ فَاخْرُجِيْ "जिन्हों ने तुम्हें मन्अ़ किया था वोह तो अब

www.dawateislami.net

दुन्या से चले गए हैं अब तुम आ जाया करो।'' उस बुढ़िया ने कहा : مَا كُنْتُ لِاَنْ اُطِيْعَهُ حَيًّا وَاَعْصِيَهُ مَيِّتًا ''या'नी मैं ऐसी नहीं हूं कि जब वोह ह़यात थे तो उन की फ़रमां बरदारी करूं और जब वोह विसाल फ़रमा जाएं तो उन की ना फ़रमानी करूं।''(1)

इल्मो हिक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्लाह़ करने का अन्दाज़ कितना प्यारा था, उ़मूमन बुज़ुर्ग ह़ज़रात नाज़ुक मिज़ाज होते हैं और बात को जल्दी मह़सूस (Mind) कर लेते हैं, लिहाज़ा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस बुढ़िया को हुक्म नहीं इरशाद फ़रमाया बल्कि मश्वरा इरशाद फ़रमाया। जिस का फ़ाइदा हाथों हाथ ज़ाहिर हुवा कि वोह बुढ़िया अपने घर चली गई और दोबारा वापस न आई यहां तक कि आप के विसाल के बा'द भी न आई। हमें भी चाहिये कि सामने वाले को देखते हुवे उस की इस्लाह़ की तरकीब बनाएं, अपने से छोटों की इस्लाह़ समझाने वाले अन्दाज़ में की जा सकती है, लेकिन अपने से बड़ों को मश्वरा दिया जाए तो ज़ियादा बेहतर है।

......येह भी मा'लूम हुवा कि अगर आप को कोई ऐसा मरज़ लाह़िक़ हो गया है या आप का लिबास व जिस्म ऐसा गन्दा है जो अ़वामुन्नास के नज़दीक ना पसन्दीदा है तो कोशिश कीजिये कि लोगों के सामने न आएं कि हो सकता है इस के सबब उन के दिल तनफ़्फ़ुर का शिकार हो जाएं। या शैत़ान उन के दिलों में त़रह़ त़रह़ के वस्वसे पैदा करे।

......याद रखिये ! किसी भी मुसलमान की दिल आज़ारी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, लिहाज़ा किसी भी ऐसे शख़्स के मुंह पर उस के मरज़ के मुतअ़ल्लिक़ कोई ऐसा कलाम न करें जिस से दिल आज़ारी का ख़दशा हो, नीज़ उस की पीठ पीछे भी कोई ऐसी बात न करें जो ग़ीबत में शुमार हो बल्कि ऐसे इस्लामी भाइयों के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें जल्द अज़ जल्द सिह़ह़त याबी अ़त़ा फ़रमाए, उन की तमाम बीमारियों को दूर फ़रमाए। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस के ह़क़ में की गई दुआ़ की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को भी उस बीमारी से मह़फ़ूज़ फ़रमाएगा।

......मज़्कूरए बाला रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अ़वामुन्नास के दिलों में कमाह़क़्क़ुहू

(1) ......مصنف عبد الرزاق، کتاب المناسک، الطواف افضل ام الصلاة، ج۵، ص ۵۳، حدیث: ۹۰۹۴۔

www.dawateislami.net

(या'नी जैसी होनी चाहिये थी वैसी) उजागर थी, जो यक़ीनन आप رضی اللہ تعالٰی عنہ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बहुत बड़ा फ़ज़्लो करम है, उस बुढ़िया ने आप की ह़याते त़य्यिबा में भी आप की इत़ाअ़त की और आप के विसाल के बा'द भी आप की इत़ाअ़त की, वाक़ेई जो अपने आप को रब عَزَّوَجَلَّ का मुत़ीअ़ या'नी ह़क़ीक़ी फ़रमांबरदार बना लेता है रब عَزَّوَجَلَّ दुन्या को उस के ताबेअ़ कर देता है, मख़्लूक़ के दिल में उस की इ़ज़्ज़त डाल देता है। फिर मख़्लूक़ येह नहीं देखती कि वोह ज़िन्दा है या उस का विसाल हो चुका है, बहर सूरत उस की इत़ाअ़त की जाती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

एक शराबी को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की नसीह़त

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक मरतबा मुल्के शाम के एक बहादुर शख़्स को तलाश किया लेकिन वोह न मिला, आप को बताया गया कि वोह शख़्स शराब का आ़दी हो गया है। आप ने अपने कातिब से फ़रमाया लिखो : مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ اِلٰی فُلَانٍ سَلَامٌ عَلَیْکَ فَاِنِّیْ اَحْمَدُ اِلَیْکَ اللّٰہَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِیْدِ الْعِقَابِ ذِی الطَّوْلِ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اِلَیْہِ الْمَصِیْرُ "या'नी उ़मर बिन ख़त़्त़ाब की त़रफ़ से फ़ुलां के नाम ! तुम पर सलामती नाज़िल हो, मैं तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जो गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़े इन्आ़म वाला है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।"

फिर आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उस के ह़क़ में दुआ़ की, कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दे, उस के दिल को फेर दे, उस को तौबा की तौफ़ीक़ दे दे। जब क़ासिद वोह मक्तूब ले कर उस के पास पहुंचा, उस शख़्स ने मक्तूब पढ़ा तो कहने लगा : غَافِرِ الذَّنْبِ قَدْ وَعَدَنِیَ اللّٰہُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِیْدُ الْعِقَابِ قَدْ حَذَّرَنِیَ اللّٰہُ عِقَابَہٗ ذِی الطَّوْلِ وَالطَّوْلُ الْخَیْرُ الْکَثِیْرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اِلَیْہِ الْمَصِیْرُ "या'नी मेरा रब عَزَّوَجَلَّ गुनाहों को बख़्शने वाला है, यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत का मुझ से वा'दा फ़रमा लिया है और वोही तौबा को क़बूल करने वाला है, उस की पकड़ बड़ी सख़्त है, यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने अ़ज़ाब से डराया है, वोह बड़े इन्आ़म वाला है और उस का इन्आ़म ख़ैरे कसीर है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।" वोह बार बार येही कहता रहा यहां तक कि ज़ारो क़ित़ार रोने लगा। फिर उस ने शराब नोशी से सच्ची पक्की तौबा की और उसे बिल्कुल तर्क कर दिया।"

www.dawateislami.net

जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर मिली तो आप ने फ़रमाया : هٰكَذَا فَاصْنَعُوْا اِذَا رَاَيْتُمْ اَخَالَكُمْ زَلَّ زِلَّةً فَسَدِّدُوْهُ وَوَفِّقُوْهُ وَادْعُوا اللّٰهَ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِ وَلَا تَكُوْنُوْا اَعْوَانًا لِلشَّيْطَانِ عَلَيْهِ "या'नी तुम लोग भी इसी त़रह़ किया करो, जब तुम देखो कि तुम्हारा कोई भाई फिसल गया है तो उसे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करो और उस की त़रफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह करो, उस के लिये दुआ़ करो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उस के ख़िलाफ़ शैत़ान के मददगार न बन जाया करो।"(1)

मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही कीजिये

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस रिवायत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ लोगों की दीनी तरबिय्यत, लोगों की त़बीअ़त शनासी, और उन के दुरुस्ती के वसाइल व त़रीक़ों के बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ'ला ज़र्फ़ी बिल्कुल वाज़ेह़ नज़र आ रही है। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मदनी तरबिय्यत सब के लिये एक मश्अ़ले राह है, आप ख़लीफ़ए वक़्त होने और बे पनाह मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद अपनी मजलिस में आने वाले एक फ़र्द की ग़ैर ह़ाज़िरी को फ़ौरन मह़सूस कर लेते हैं, फिर उसे नज़र अन्दाज़ नहीं करते बल्कि उस के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाते हैं ताकि अगर उस के साथ कोई मस्अला पेश आ गया हो तो उसे ह़ल किया जा सके। बिलफ़र्ज़ अगर वोह बीमार हो गया है तो उस का इलाज कराया जाए ताकि वोह तन्दुरुस्त हो जाए। मगर आह ! आज हमारी ह़ालत तो येह है कि अगर अपना सगा भाई भी न मिले तो उस की कोई ख़ैर ख़बर नहीं लेते। हमारे साथ उठने बैठने वाले, मकातिब में काम करने वाले, हमारे मकातिब के ख़ुद्दाम वग़ैरा इस्लामी भाइयों में से कोई एक दिन ग़ैर ह़ाज़िर हो जाए तो हमें मा'लूम ही नहीं होता कि वोह कहां है ? और न ही हम कोशिश करते हैं कि उस की कोई ख़ैर ख़बर ही मा'लूम कर लें कि कहीं उस बेचारे के साथ कोई आज़माइशी मुआ़मला तो दरपेश नहीं आ गया ? कहीं वोह बीमार तो नहीं हो गया ? काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं, तमाम मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही करने वाले बन जाएं। अगर हमारे साथ रहने वाला, काम करने वाला, नेकी की दा'वत देने वाला कोई इस्लामी भाई किसी दिन न आ सके तो उस के घर जा कर या कम अज़ कम फ़ोन कर के ही उस की ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त कर लिया करें।

(1) ......حلية الاولياء، يزيد بن الاصم، ج ٤، ص ١٠٢ـ

www.dawateislami.net

......अगर किसी इस्लामी भाई में कोई ग़लत़ आ़दत पैदा हो जाए तो उस इस्लामी भाई से नफ़रत न कीजिये बल्कि उस के बुरे अ़मल से नफ़रत करते हुवे उस के ह़क़ में दुआ़ करते रहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तौबा की तौफ़ीक़ दे। जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स के बारे में जानने के बा'द उस के लिये हिदायत की दुआ़ फ़रमाई।

......अगर हो सके तो ख़ुद इस्लामी भाई से मुलाक़ात करें और उस पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे अपने दुख का इज़्हार करें नीज़ उसे अह़सन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश करें, ब सूरते दीगर किसी ऐसी शख़्सिय्यत से मक्तूब लिखवा कर भेजें जिस की उस के दिल में इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत उजागर हो कि इस त़रह़ मक्तूब ज़ियादा असर करेगा, नीज़ उस की दिलजूई के लिये कोई न कोई ऐसा तोह़फ़ा पेश कीजिये जिस में उस की इस्लाह़ का सामान हो मसलन अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का कोई रिसाला या कोई केसिट या किसी बयान की सीडी पेश कर दीजिये अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमाया तो उस की इस्लाह़ का भी सामान हो जाएगा और आप को भी दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक इस्लाही अन्दाज़ से येह भी सीखने को मिला कि इस्लाह़ करने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ हैं, कोई शख़्स गुनाह में मुब्तला हो जाए तो उस के मन्सब और मौक़अ़ मह़ल को देख कर इस्लाह़ की कोशिश की जाए, अगर इस्लाह़ का यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब है तो इस्लाह़ करना वाजिब है, वरना मौक़अ़ मह़ल देख कर इस अन्दाज़ में इस्लाह़ की जाए कि न तो उस की ज़ात मजरूह़ हो और न ही कोई और मन्फ़ी तअस्सुर सामने आए।

......येह भी मा'लूम हुवा कि जब किसी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा से इस्लाह़ हो जाए तो उस की इस्लाह़ का त़रीक़ए कार या'नी उस की इस्लाह़ कैसे हुई वग़ैरा दीगर उमूर ज़रूरतन इस्लामी भाइयों को तरग़ीब के त़ौर पर बताने में कोई ह़रज नहीं कि हो सकता है कोई दूसरा शख़्स भी इसे सुन कर राहे रास्त पर आ जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी 87 से ज़ाइद शो'बाजात में मदनी कामों को फैलाने में मसरूफ़े अ़मल है, जिन की मुख़्तलिफ़ मजालिस क़ाइम हैं, इन मजालिस में एक मजलिस "**मदनी बहारें**" भी है, मुल्क भर में इस के ज़िम्मेदारान का

www.dawateislami.net

तक़र्रुर है। येह मजलिस मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मदनी बहारें लिखवाती और अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे **"शो'बए मदनी बहारें"** को रवाना करती है, इल्मिय्या का येह शो'बा इसे मुरत्तब करता है। इस शो'बे में दा'वते इस्लामी में आने वाले ऐसे लोग जो पहले गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारते थे, ग़फ़्लत में पड़े थे, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उन की काया पलट गई, कोई सुन्नतों भरा बयान सुन कर मदनी माहोल में आया, कोई हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से नजात पा गया, किसी ने तीस रोज़ा इजतिमाई ए'तिकाफ़ की बरकत से नेकियों पर इस्तिक़ामत ह़ासिल की वग़ैरा वग़ैरा ऐसे तमाम इस्लामी भाइयों के मुख़्तलिफ़ इस्लाही़ वाक़िआ़त को मुरत्तब कर के शाएअ़ किया जाता है कि हो सकता है इन को पढ़ कर किसी और की आख़िरत संवर जाए, कोई शराबी नमाज़ी बन जाए, कोई बे नमाज़ी मुअज़्ज़िन बन जाए, इमाम बन जाए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस शो'बे से कई रसाइल शाएअ़ हो चुके हैं। ख़ुद भी इन का मुत़ालआ़ कीजिये, दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये, दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मख़्सूस अफ़राद पर मुश्तमिल मजालिस के इनइक़ाद का एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मख़्सूस अफ़राद पर मुश्तमिल मजालिस मुन्अ़क़िद करने से मन्अ़ फ़रमाते थे। क्यूंकि ऐसी सूरत में उन की राए आ़म लोगों से मुख़्तलिफ़ हो जाती जिस से आपस में बुग़्ज़ो अ़दावत और नफ़रत जैसे उमूर पैदा होते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़ुरैश के कुछ लोगों से फ़रमाया : "मैं ने सुना है कि आप लोग मख़्सूस अफ़राद को ले कर मजलिस मुन्अ़क़िद करते हैं, मजलिस सिर्फ़ दो आदमियों की न हो कि लोग इस त़रह़ की बातें करें कि येह फ़ुलां के ख़ास लोगों और ख़ास दोस्तों में से हैं और फिर मजलिस का दाइरा तंग कर दिया जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारा येह अ़मल तुम्हारे दीन, तुम्हारी शराफ़त और तुम्हारे आपस के तअ़ल्लुक़ात को बहुत तेज़ी से ख़त्म कर देने वाला है और मुझे ख़ौफ़ है कि तुम्हारे बा'द आइन्दा आने वाले लोग येह न कहें कि फ़ुलां की राए येह थी और फ़ुलां का

www.dawateislami.net

ख़याल येह था। उन्हों ने इस्लाम को टुकड़ों में तक़्सीम कर दिया, लिहाज़ा अपनी मजलिसों को वुस्अ़त दो और सब के साथ उठो बैठो। इस से आपस में मह़ब्बत पैदा होगी और दुश्मन पर रो'ब ग़ालिब रहेगा।"(1)

सब के साथ यक्सां सुलूक रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई चन्द मख़्सूस लोगों से दोस्ती कर के सिर्फ़ उन्ही के साथ उठते बैठते रहना दीगर लोगों के ज़ेह्नों में कई एक वस्वसों को पैदा करता है नीज़ येह अ़मल तन्ज़ीमी कामों में भी बहुत बड़ी रुकावट है, नीज़ इस से बा'ज़ औक़ात ग़ीबत, तोहमत और बद गुमानियों जैसे बात़िनी गुनाहों के अमराज़ भी पैदा हो जाते हैं जो आख़िरत को दाव पर लगा देते हैं यक़ीनन समझदार वोही है जो चन्द लोगों के साथ ग्रुप बन्दी के बजाए सब के साथ यक्सां सुलूक रखे। अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने दुन्या व आख़िरत संवारने के लिये मदनी इन्आ़मात अ़त़ा फ़रमाए हैं इन में से 50 यौमिय्या मदनी इन्आ़मात में से 43 नम्बर मदनी इन्आ़म येही है कि "**आप ने बिला मस्लह़ते शरई किसी एक या चन्द से ज़ाती दोस्ती गांठ रखी है या सब के साथ यक्सां तअ़ल्लुक़ात रखे हैं ?**" ख़ुद भी मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां नसीब होंगी।

फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने नफ़्स का मुह़ासबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर मुख़्तलिफ़ उमूर के एह़तिसाब के साथ साथ अपने नफ़्स के मुह़ासबे की भी तरग़ीब दिलाते रहते थे, नीज़ आप ख़ुद अपने नफ़्स का भी मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर एह़तिसाब फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे,

अपने नफ़्सों का मुह़ासबा करो

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अपने नफ़्स का मुह़ासबा करो क़ब्ल इस के कि तुम्हारा ह़िसाब किताब लिया जाए, बड़े दिन की ह़ाज़िरी के लिये तय्यारी करो और क़ियामत के रोज़ उस शख़्स का ह़िसाब भी कम होगा जो दुन्या में अपने नफ़्स का मुह़ासबा करेगा।"(2)

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۵۷۲۔

2 ......ترمذی، کتاب صفة القیامة، ماجاء فی صفة اوانی، ج ۴، ص ۲۰۸، حدیث: ۲۴۶۷۔

फ़ारूक़े आ'ज़म और मुह़ासबए नफ़्स

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहीं बाहर निकले तो मैं भी आप के पीछे पीछे चल पड़ा, क्या देखता हूं कि आप एक बाग़ में दाख़िल हुवे। मेरे और उन के दरमियान एक दीवार थी, मैं ने सुना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को मुख़ात़ब कर के बत़ौरे आ़जिज़ी इरशाद फ़रमा रहे थे : اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ! وَاللّٰہِ لَتَتَّقِیْنَ اللّٰہَ اَوْ لَیُعَذِّبَنَّکَ "या'नी मुसलमानों का अमीर वाह रे वाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो वरना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह तुम्हें ज़रूर अ़ज़ाब देगा।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह अ़मल आख़िरत की याद दिलाने के लिये निहायत ही मुफ़ीद है, बा'ज़ औक़ात इन्सान को चाहिये कि तन्हाई में बैठ कर अपने नफ़्स को मुख़ात़ब करे और रोज़ मर्रा के मुख़्तलिफ़ कामों के मुतअ़ल्लिक़ इस का मुह़ासबा करे।

नफ़्स को ज़लील करने की ठान ली

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन ह़फ़्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने कन्धे पर मश्कीज़ा उठा लिया। आप से अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर आप मत उठाएं, इरशाद फ़रमाया : اِنَّ نَفْسِیْ اَعْجَبَتْنِیْ فَاَرَدْتُّ اَنْ اُذِلَّھَا "या'नी मेरे नफ़्स ने मुझे ख़ुद पसन्दी में मुब्तला कर दिया तो मैं ने इसे ज़लील करने के लिये ऐसा किया।"(2)

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कैसी मदनी सोच थी, क्या ही प्यारा अन्दाज़ था, क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद अपने नफ़्स को सज़ा देने के लिये अपने कन्धे पर मश्कीज़ा उठा लिया, एक हम हैं कि नफ़्स की शरारतों से वाक़िफ़ नहीं, इस ने हमें धोके में डाल रखा है लेकिन फिर भी हमारा दिल मुत़मइन है। काश ! हम भी फ़िक्रे मदीना करते हुवे अपने नफ़्स को ख़ुद पसन्दी की आफ़त से बचाने में कामयाब हो जाएं।

अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ

(1)......موطاامام مالک، کتاب الکلام، باب ماجاء فی التقی، ج ۲، ص ۴۶۹، حدیث: ۱۹۱۸۔

(2)......تاریخ الاسلام، ج ۳، ص ۲۷۰، البدایۃ والنھایۃ، ج ۵، ص ۲۱۵۔

www.dawateislami.net

सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं, आप ने हमें येह मदनी मक़्सद अ़ता फ़रमाया कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** आप ने इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों और त़लबा को फ़राइज़ो वाजिबात, सुननो मुस्तह़ब्बात और अख़्लाक़िय्यात का पाबन्द बनाने और मोहलिकात (या'नी गुनाहों) से बचाने के लिये **"मदनी इन्आ़मात"** की सूरत में ख़ुद एह़तिसाबी का एक निज़ामे अ़मल अ़ता फ़रमाया है, कसीर इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़लबा मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल **"फ़िक्रे मदीना"** या'नी अपने आ'माल का जाइज़ा ले कर मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करते हैं। इस्लामी भाइयों के लिये बहत्तर72, इस्लामी बहनों के लिये तिरसठ63, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और जामिआ़त के त़लबा के लिये बानवे92, त़ालिबात के लिये तिरासी83 और मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों के लिये चालीस40 मदनी इन्आ़मात हैं। इन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की बरकत से नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। आइये ! मदनी इन्आ़मात की बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना की निय्यत कीजिये। चुनान्चे,

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई का बयान है : اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे मदनी इन्आ़मात से प्यार है और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सूबा बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"जो मदनी क़ाफ़िले में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।"**(1)

शुक्रिया क्यूं कर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा......कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द 1, स. 931।

www.dawateislami.net

दसवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह्‌कमए पोलीस व फ़ौज

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये..................

- ......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह्‌कमए पोलीस
- ......मोह्‌कमए पोलीस के फ़ौजी अफ़्सरान
- ......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जेलख़ानों का क़ियाम
- ......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह्‌कमए फ़ौज
- ......अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ौज की तक़्सीम
- ......मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां
- ......मुख़्तलिफ़ फ़ौजी छावनियां और इन के ज़िम्मेदार
- ......फ़ौजियों की तनख़्वाहें, सालाना इज़ाफ़े ख़ुसूसी वज़ाइफ़ का बयान
- ......मौसिम के लिह़ाज़ से फ़ौज की तक़्सीम
- ......जंग में इस्लामी फ़ौज के ईमान अफ़रोज़ ना'रों का बयान
- ......जंग में फ़ौजियों के साथ रहने वाली ज़रूरी अश्या

......

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोहूकमए पोलीस

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मोहूकमए पोलीस भी मुकम्मल त़ौर पर क़ाइम हो चुका था, जिस के सब से बड़े अफ़्सर आप ख़ुद थे, मुख़्तलिफ़ इब्तिदाई मुक़द्दमात जैसे चोरी, डकेती, ज़िना वग़ैरा के तमाम मुआ़मलात इसी मोहूकमे ही के सिपुर्द थे जिस की निगरानी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद फ़रमाया करते थे। लोगों के मुआ़मलात पर नज़र रखने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ फ़ौजी अफ़्सरों को मुक़र्रर कर रखा था।

मोहूकमए पोलीस के फ़ौजी अफ़्सरान

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में तमाम मुसलमानों के लिये एक बड़ा बाज़ार क़ाइम था जिस में तिजारती व कारोबारी मुआ़मलात तै किये जाते थे, इन बाज़ारों के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के ह़वाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया था। इस बाज़ार में होने वाले तमाम मुआ़मलात इन ही के सिपुर्द थे। चुनान्चे, इमाम ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : اَنَّ عُمَرَبْنَ الْخَطَّابِ اِسْتَعْمَلَ عَبْدَاللّٰہِ بْنَ عُتْبَۃَ عَلَی السُّوْقِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बाज़ार का (तफ़्तीशी अफ़्सर) मुक़र्रर फ़रमाया था।[1] इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुदामा बिन मज़ऊन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़रैन के मुआ़मलात पर मुक़र्रर फ़रमाया था, बह़रैन के दीगर मुआ़मलात आप के ज़िम्मे थे।[2]

जेलख़ाने क़ाइम फ़रमाए

मोहूकमए पोलीस से मुतअ़ल्लिक़ एक अम्र येह भी है अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जेलख़ाने बनाए, जिन में मुख़्तलिफ़ जराइम पेशा लोगों को क़ैद किया जाता था, येह जेलख़ाने किसी भी तादीबी कारवाई के लिये इस्ति'माल होते थे, क्यूंकि क़ैद करना कोई शरई ह़द नहीं है बल्कि येह ह़ाकिमे वक़्त पर मौक़ूफ़ है कि वोह जिस मुजरिम को चाहे इस क़ैदख़ाने में तादीबन क़ैद कर दे। येही वज्ह है कि अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ जराइम वाले अफ़राद के

1 ......تہذیب التہذیب، ج۴، ص۳۹۰۔

2 ......بخاری، کتاب المغازی، باب ۱۲، ج۳، ص۲۱، حدیث: ۴۰۱۱۔

www.dawateislami.net

साथ साथ ऐसे लोगों को भी इन क़ैदख़ानों में क़ैद किया गया जो ब ज़ाहिर किसी जुर्म के मुर्तकिब नहीं थे लेकिन ह़ाकिमे वक़्त या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़क़त़ तादीबन या तरग़ीबन उन्हें क़ैद फ़रमाया, मसलन जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िफ़ाज़ते ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ इक़्दाम शुरूअ़ किये तो बिग़ैर गवाह के किसी ह़दीस को क़बूल न करते थे जो भी बिग़ैर गवाह के ह़दीस बयान करता उसे या तो सज़ा देते या उसे क़ैद कर दिया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन अस्ह़ाब को क़ैद फ़रमाया। (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । इन तीनों से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : قَدْ اَكْثَرْتُمُ الْحَدِيْثَ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी मैं ने तुम्हें इस लिये क़ैद किया है कि तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत ज़ियादा ह़दीसें बयान करते हो।"[1]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह्कमए फ़ौज

वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त से पहले जो बड़ी बड़ी अ़ज़ीम सल्त़नतें गुज़र चुकी थीं उन में भी फ़ौज का मोह्कमा मौजूद था लेकिन वोह एक ग़ैर मुनज़्ज़म और फ़ौजी उसूलों के ख़िलाफ़ था। जब कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो मोह्कमए फ़ौज क़ाइम फ़रमाया था वोह कुरआनो सुन्नत के ऐ़न मुत़ाबिक़ होने के साथ साथ अख़्लाक़ी व शरई तक़ाज़ों के भी मुत़ाबिक़ था। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बज़ाते ख़ुद इस के हर हर मुआ़मले में शामिल हो कर इस को मुनज़्ज़म फ़रमाया, इस मोह्कमे के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कई इक़्दामात फ़रमाए जिस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ौज की तक़्सीम

जंगी फ़ौज दो त़रह़ की थी

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में फ़ौज की दो त़रह़ की तक़्सीम थी, एक तो वोह जो हर वक़्त दुश्मनों के मुक़ाबिल मुहाज़ पर रहती थी, जब कि दूसरे फ़ौजी वोह थे जिन्हें मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में भेजने के बजाए सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा

[1] تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج۱، ص۱۲۔

www.dawateislami.net

में ही ठहराया हुवा था उन को सिर्फ़ उसी वक़्त त़लब किया जाता था जब उन की ज़रूरत होती थी। उन तमाम फ़ौजियों की भी दो क़िस्में थीं, एक तो आ़म फ़ौजी और दूसरे अहम तरीन कमान्डर ह़ज़रात, बड़े बड़े अकाबिरीन सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से अक्सर मदीनए मुनव्वरा में ही रहा करते थे, इन को सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सिर्फ़ मुख़्तलिफ़ मन्सूबों पर फ़ाइज़ फ़रमाया करते थे, क्यूंकि येह वोह अ़ज़ीम तजरिबाकार सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे जो ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में जिहाद की सआ़दत ह़ासिल कर चुके थे, इन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से बिला वासित़ा फ़ैज़ ह़ासिल किया था, येह वोह ह़ज़रात थे जो निज़ाम को क़ाइम फ़रमाने वाले थे जब कि दीगर फ़ौजी निज़ाम को क़ाइम करने के लिये राहें हमवार करने वाले थे।

तमाम फ़ौजियों का इब्तिदाई रेकॉर्ड

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब बह़रैन से कसीर माले ग़नीमत ले कर ह़ाज़िर हुवे तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस वक़्त मुशावरत के बा'द दीवान (रजिस्टर) मुरत्तब करने का हुक्म दिया, जिस में तमाम ह़ज़रात का रेकॉर्ड रखा गया, येह काम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़ज़रते सय्यिदुना मख़रमा बिन नौफ़ल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़इम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सर अन्जाम दिया क्यूंकि येह तीनों ह़ज़रात माहिरे नसब थे। इन्हों ने रजिस्टर में तमाम फ़ौजियों और दीगर लोगों का रेकॉर्ड बिल्कुल तफ़्सील के साथ लिख दिया।(1)

वाज़ेह़ रहे कि फ़ौजियों का येह वोह इब्तिदाई रेकॉर्ड था जो सब से पहले मुरत्तब किया गया था बा'दे अज़ां मुख़्तलिफ़ जगहों की फ़ौजों का रेकॉर्ड उन की छावनियों में उन के सिपह सालारों के पास ही मौजूद होता था।

मुख़्तलिफ़ जगहों पर फ़ौज की तक़र्रुरी

मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में फ़ौज का एक एक मख़्सूस ह़िस्सा तअ़य्युनात कर दिया जाता था जो वहां के इन्तिज़ामात संभालता। इस के इलावा भी जहां कहीं इस बात की ज़रूरत मह़सूस होती उस का इन्तिज़ाम कर दिया जाता जैसा कि हरक़िल बादशाह ने जब बह़री रास्ते से मिस्र पर ह़म्ले शुरूअ़ किये तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन तमाम साह़िली अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां क़ाइम फ़रमा दीं।(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، ماقالوافی الفروض، ج۷، ص۶۱۳، حدیث: ۱، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص۲۲۴۔

2 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۱۶۔

www.dawateislami.net

मफ्तूहा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मफ़्तूहा मुमालिक के शहरों में छावनियां क़ाइम फ़रमाईं जिन्हें "**अजनाद**" कहा जाता था। जिन अ़लाक़ों में आप ने फ़ौजी छावनियां क़ाइम फ़रमाईं उन में फ़ौजियों के लिये रिहाइश का भी इन्तिज़ाम फ़रमाया, जिन्हें आज कल के दौर में "बैरक" कहा जाता है। फ़ौजियों के घोड़ों के लिये ऐसे अस्त़बल बनाए जिन में बयक वक़्त कम अज़् कम चार ह़ज़ार घोड़े मअ़ साज़ो सामान और पूरी जंगी तय्यारी के साथ हर वक़्त तय्यार रहते थे।(1)

ऐसी तय्यारी का मक़्सद दर अस्ल येह था कि अगर अचानक जंग की ज़रूरत पेश आ जाए तो मा'मूली वक़्त में भी तय्यार शुदा हज़ारों शह सुवार मुजाहिदीन का येह दस्ता मैदाने जंग में जाने के लिये फ़ौरन निकल पड़े, हर फ़ौजी छावनी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने घोड़ों के लिये वसीओ़ अ़रीज़ चरागाह भी तय्यार करवाई थी, दर अस्ल इस पूरी जंगी तय्यारी में क़ुरआने पाक की इस आयते मुबारका पर अ़मल करना था, जिस में दुश्मन के साथ मुक़ाबले के लिये तय्यार होने की तरग़ीब दिलाई गई है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿ وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَیْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَ عَدُوَّكُمْ وَ اٰخَرِیْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ یَعْلَمُهُمْ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ یُوَفَّ اِلَیْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۶۰﴾ ﴾ (پ۱۰، الانفال:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े और जितने घोड़े बांध सको कि इन से उन के दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं और इन के सिवा कुछ औरों के दिलों में जिन्हें तुम नहीं जानते अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा दिया जाएगा और किसी त़रह़ घाटे में नहीं रहोगे।"

मुख़्तलिफ़ फ़ौजी छावनियां और इन के ज़िम्मेदार

मिस्र की फ़ौजी छावनियां

(1)......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ुल क़ा'दा के महीने में सिने 16 हिजरी में मिस्र के तमाम साहि़ली मक़ामात पर छावनियां और फ़ौजी

1......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۸۳۔

www.dawateislami.net

मराकिज़ क़ाइम फ़रमाए, इस की वज्ह येह थी कि "हरक़िल" बादशाह मुल्के शाम और मिस्र पर बह़री ह़म्ले किया करता था और अह्ले ह़िम्स की इमदाद के लिये बज़ाते ख़ुद रवाना हो गया था।[1]

(2)......मर्जुल क़लआ़ से निहावन्द तक जो भी मक़ामात आए उन तमाम जगहों पर इस्लामी फ़ौज ने अपने मराकिज़ क़ाइम किये और उन के पुराने नामों को ख़त्म कर के नए नाम रखे, मसलन माह के क़रीब एक घाटी में सुवारियों का अज़्दहाम हो गया तो वोह घाटी "सनिय्यतुर्रिकाब" के नाम से मश्हूर हो गई। एक और घाटी जिस का रास्ता एक चट्टान के ऊपर से जाता था उस का नाम "मलविय्या" रखा गया, इस्लामी लश्कर एक लम्बे और ऊंचे पहाड़ के पास से गुज़रा जो सब पहाड़ों से उभरा हुवा था उस को देख कर किसी ने कहा : गोया कि येह सुमैरा का दांत "सिन्ने सुमैरा" है, सुमैरा क़बीला ज़बी की एक शाख़ बनू मुआ़विया की मुहाजिरा ख़ातून थीं इन का एक दांत बाक़ी दांतों से लम्बा था इस लिये येह पहाड़ भी "सिन्ने सुमैरा" के नाम से मश्हूर हो गया।"[2]

(3)......दिमश्क़ की फ़ौजी छावनी के सब से पहले ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

(4)......ह़िम्स की छावनी के सब से पहले ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

(5)......क़िन्नसिरीन की फ़ौजी छावनी के सब से पहले ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

(6)......फ़िलिस्त़ीन की फ़ौजी छावनी के सब से पहले ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लक़मा बिन मुजज़्ज़िर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

(7)......उर्दन की फ़ौजी छावनी के सब से पहले ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

(8)......बसरा में मनाज़िर के मक़ाम पर एक फ़ौजी छावनी बनाई गई जिस के ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ालिब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ थे, इसी त़रह़ नह्रे तियरी पर भी एक फ़ौजी छावनी बनाई गई जिस का इन्तिज़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना कुलैब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास था।[3]

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۱۶۔

2 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۳۵۔

3 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۹۱۔۴۹۵۔

www.dawateislami.net

फ़ौजी छावनियों की अज़ सरे नौ ता'मीर

बसरा, कूफ़ा और इन जैसे दीगर अ़लाक़ों में जहां पहले से अ़जमियों की फ़ौजी छावनियां मौजूद थीं सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अज़ सरे नौ ता'मीर करवाया ख़ुरैबा और ज़ाबूक़ा में सात छोटी छोटी छावनियां बनी हुई थीं वोह सब सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से पानी और चरागाह के क़रीब नए सिरे से ता'मीर की गईं। सूबा ख़ूज़िस्तान में निहायत कसरत से फ़ौजी छावनियां क़ाइम की गईं, चुनान्चे, नह्रे तियरी, मनाज़िर, सूक़ुल अहवाज़, सुर्रक़, हुरमुज़ान, सूस, बुन्यान, जुन्दय साबूर, महरे जांक़ज़फ़ इन तमाम शहरों में फ़ौजी छावनियां क़ाइम थीं।(1)

हर साल इस्लामी फ़ौज में इज़ाफ़ा

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूहात की वुस्अ़त का एक राज़ येह भी था कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी फ़ौज में कभी कमी न आने दी, क्यूंकि मुख़्तलिफ़ जंगों में इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन की शहादतें भी होती थीं, लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन शहादतों के मुक़ाबले में ज़ियादा फ़ौजियों को भरती कर लिया करते थे, येही वज्ह है कि कुफ़्फ़ार पर इस्लामी लश्कर का ऐसा रो'ब व दबदबा बैठा कि वोह इस्लामी लश्कर के सामने भीगी बिल्ली बन कर रह गए।

इस्लामी फ़ौज की वुस्अ़त

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौज में इतनी वुस्अ़त फ़रमाई कि अ़रबों के इ़लावा दीगर क़ौमों के अफ़राद को भी फ़ौज में दाख़िल कर लिया। यज़्दगिर्द बादशाह का एक मख़्सूस फ़ौजी दस्ता था जो जंगे क़ादिसिया के बा'द ईरानियों से अ़लाह़िदा हो कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तमाम लोगों को फ़ौज में दाख़िल कर लिया और कूफ़ा में उन्हें आबाद कर के उन की तनख़्वाहें भी मुक़र्रर फ़रमा दीं।(2)

......बाज़ान नौसीरवान बादशाह की त़रफ़ से यमन का गवर्नर था, इस की फ़ौज के अक्सर ईरानी मुसलमान हो गए थे, सिन्ध के जाट जिन को अह्ले अ़रब **ज़ुत़** कहते थे, यज़्दगिर्द के लश्कर में शामिल थे, सूस के मा'रिके के बा'द वोह इस्लाम के ह़ल्क़े में दाख़िल हो गए और उन्हें भी फ़ौज में दाख़िल कर के बसरा में बसाया गया।(3)

---

1 ......فتوح البلدان، القسم الرابع، فتوح کوردجلۃ، ص ۳۷۲۔

2 ......فتوح البلدان، القسم الرابع، ذکر تمصیر الکوفۃ، ص ۳۹۳۔

3 ......فتوح البلدان، القسم الرابع، امر الاساورۃ والزط، ص ۵۲۰۔

www.dawateislami.net

जंगी तदाबीर के माहिर फ़ौजी कमान्डर

वाज़ेह रहे कि जंग फ़क़त् हथयारों की ज़ियादती से नहीं लड़ी जाती बल्कि फ़त्ह के लिये मख़्सूस जंगी तदाबीर को भी इख़्तियार करना पड़ता है, इन का दारो मदार ज़ियादा तर फ़ौज के कमान्डर पर होता है अगर फ़ौज का कमान्डर जंगी चालों का माहिर होगा तो वोह थोड़ी सी फ़ौज के साथ भी एक बड़ी फ़ौज से बेहतर त़रीक़े से मुक़ाबला कर सकता है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बा कमाल फ़िरासत थी कि आप फ़क़त् उन्ही अस्ह़ाब को सिपह सालार बनाया करते थे जो जंगी तदाबीर में महारत रखते थे, इस्लामी लश्कर और इस के सिपह सालारों की जंगी तदाबीर से तारीख़ भरी पड़ी है, अगर इस को तफ़्सील से बयान किया जाए तो अ़लाह़िदा से एक जिल्द तय्यार हो सकती है। फ़क़त् दो मिसालें पेशे ख़िदमत हैं :

......जंगे निहावन्द में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में जो इस्लामी लश्कर आया उस के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, जब येह अपने लश्कर को ले कर दुश्मन के सामने पहुंचे तो दुश्मन ने लोहे की तारों से बने कांटे रास्ते में बिछा दिये, इस्लामी लश्कर को उन की इस चाल का इ़ल्म न था, इस्लामी लश्कर के घोड़े जब उस रास्ते पर पहुंचे तो वोह कांटे उन के पाउं में चुभ गए और उन घोड़ों ने पेश क़दमी से इन्कार कर दिया। इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहां एक जंगी चाल चली वोह येह कि आप अपने लश्कर समेत उस जगह से किसी दूसरी जगह मुन्तक़िल हो गए। कुफ़्फ़ार ने येह समझा कि शायद दुश्मन भाग गया है उन्हों ने वोह कांटे फ़ौरन साफ़ किये और इस्लामी लश्कर के तआ़क़ुब में निकल खड़े हुवे, ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूसरे रास्ते से इस्लामी लश्कर को उन कुफ़्फ़ार पर चढ़ाई का हुक्म दे दिया और यूं मुसलमानों को फ़त्ह व नुस्रत ह़ासिल हो गई।(1)

......मुल्के शाम की जंगों में एक अहम तरीन जंग "जंगे यरमूक" भी है। जबला बिन ऐहम ग़स्सानी लश्करे कुफ़्फ़ार का सिपह सालार था, वोह साठ हज़ार सुवारों को ले कर मैदाने जंग में आया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर को जंग का हुक्म दिया, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बेहतरीन जंगी चाल बयान करते हुवे अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! रूमी लश्कर के सिपह सालार ने हमारी ता'दाद से दो गुनी ता'दाद में नसरानी

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۱۸-۵۱۹-

www.dawateislami.net

अ़रबों को इस गुमान से लड़ने भेजा है कि वोह हमारे हम जिन्स होने की वज्ह से हम पर ग़ालिब आ जाएंगे। अगर हम ने पूरे लश्कर के साथ उन से मुक़ाबला किया तो उन की अहम्मिय्यत बर क़रार रहेगी, मैं एक ऐसी जंगी चाल चलना चाहता हूं कि उन के दिमाग़ भी हिल कर रह जाएंगे।" लिहाज़ा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार के साठ हज़ार के लश्कर के मुक़ाबले में फ़क़त़ 30 सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इन्तिख़ाब फ़रमाया या'नी एक सहा़बी 2 हज़ार के मुक़ाबले पर होगा, लेकिन बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुदाख़लत से आप ने उन की ता'दाद में 30 अस्ह़ाब का इज़ाफ़ा फ़रमा दिया, यूं एक सहा़बी एक हज़ार के मुक़ाबले पर हो गया। जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन साठ सहा़बा के साथ लश्करे कुफ़्फ़ार के सामने गए और उन्हें जंग की दा'वत दी तो कुफ़्फ़ार के सिपह सालार ने कहा: "अपने लश्कर को जंग के लिये लाओ।" सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया: "मैं जंगी लश्कर के साथ तुम्हारे सामने खड़ा हूं, और हां येह लश्कर भी ज़ियादा है वरना मैं तो फ़क़त़ 30 अस्ह़ाब के साथ तुम्हारे मुक़ाबले पर आना चाहता था।" येह अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र देख कर लश्करे कुफ़्फ़ार का सिपह सालार अपने साथियों से कहने लगा कि मुसलमानों ने मुझे अ़जीब कश्मकश में डाल दिया है, अगर हमारे साथ हज़ार के लश्कर ने इन साठ मुसलमानों को मार डाला तो दुन्या कहेगी कि येह तुम ने कौन सा बहादुरी का काम किया है? और अगर इन्हों ने हमें शिकस्त दे दी तो हम किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल न रहेंगे, हमारी ह़ालत ऐसी है जैसे सांप के मुंह में छछून्दर, निगले तो अन्धा, उगले तो कोढ़ी। बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस अ़ज़ीम जंगी चाल के सबब वोह ज़ेह्नी त़ौर पर पहले ही कमज़ोर हो गए और बा'दे अज़ां उन्हें सख़्त हज़ीमत का सामना करना पड़ा और वोह शिकस्त से दो चार हुवे।[1]

फ़ौजियों की तनख़्वाहें

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे कि जब एक शख़्स हर वक़्त दुश्मनों के ख़िलाफ़ जंग में मसरूफ़ रहेगा ह़ालांकि उस के ज़ाती अख़राजात के साथ घरेलू अख़राजात भी हैं तो वोह अपनी ज़रूरतों को कैसे पूरा करेगा? येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से फ़ौजियों को कारोबार वग़ैरा करने की क़त़्अ़न इजाज़त न थी, ज़रूरिय्यात को पूरा करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम फ़ौजियों के वज़ाइफ़ मुक़र्रर फ़रमाए थे,

1 .....فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ص ١٥٩ـ ١٦٠ـ

www.dawateislami.net

नीज़ इन के घरेलू अख़राजात की अ़लाहि़दा से तरकीब बनाई थी, येह तमाम तनख़्वाहें मन्सब व मक़ाम और मर्तबे को मल्ह़ूज़ रखते हुवे जारी की जाती थीं, इस की तफ़्सील वज़ाइफ़ के बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये।

इस्लामी लश्करों के लिये रसद या'नी ग़ल्ला वग़ैरा का इन्तिज़ाम

यक़ीनन एक लश्कर अपने साथ फ़क़त़ ज़रूरी सामान ही रखता था, इस के इलावा मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इसे जिस सामान की ज़रूरत होती थी उस का पहुंचाना ह़ाकिमे वक़्त की ज़िम्मेदारी थी, अव्वलन इस का कोई ख़ास इन्तिज़ाम न था, बल्कि लश्कर जिस भी क़ौम के ख़िलाफ़ फ़त्ह़ ह़ासिल करता उस के अ़लाक़े से जो भी मयस्सर आता ह़ासिल कर लेता, गोश्त वग़ैरा का इन्तिज़ाम मदीनए मुनव्वरा में से होता था, बा'द में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों के ज़िम्मियों से जिज़्ये की मद में रसद वुसूल किया जिस से फ़ौजों की मदद की जाती थी। इन से ज़ैतून, शहद और सिरका वग़ैरा भी लिया जाता था लेकिन बा'द में फ़क़त़ नक़्दी पर इक्तिफ़ा किया गया।(1)

रसद या'नी ग़ल्ला वग़ैरा का मुस्तक़िल शो'बा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आहिस्ता आहिस्ता रसद या'नी फ़ौजों के लिये ग़ल्ला फ़राहम करने वाला अ़लाहि़दा से शो'बा क़ाइम फ़रमा दिया जिसे "अहरा" कहा जाता था। "अहरा" जम्अ़ है "हुरयुन" की जिस का मा'ना गोदाम के हैं। इस शो'बे के ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ब्सा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।"(2)

फ़ौजियों की ज़ाती ज़रूरिय्यात का सामान

इस्लामी लश्कर के फ़ौजियों के लिये तनख़्वाह के इलावा दीगर ज़रूरिय्यात का सामान भी फ़राहम किया जाता था, अगर कोई फ़ौजी ऐसा होता जिस की तनख़्वाह कम होती या उस का मर्तबा कम होता उस को हुकूमते फ़ारूक़ी की त़रफ़ से एक घोड़ा अ़त़ा किया जाता था, ख़ास इस ग़रज़ से दारुल ख़िलाफ़ा में चार हज़ार घोड़े हर वक़्त मौजूद रहते थे इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

كَانَ لِعُمَرَ اَرْبَعَةُ آلَافِ فَرَسٍ عَلٰى اَرِيٍّ بِالْكُوْفَةِ مَوْسُوْمَةً عَلٰى اَفْخَاذِهَا فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاِنْ كَانَ فِي عَطَاءِ الرَّجُلِ خِفَّةٌ اَوْ مُحْتَاجًا اَعْطَاهُ الْفَرَسَ

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हर वक़्त चार

1 ......فتوح البلدان، خلافۃ عمر بن الخطاب، یوم القادسیہ، ص ۳۵۷۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۱۶، ص ۲۶۵۔

www.dawateislami.net

हज़ार घोड़े तय्यार रहते थे जिन की रानों पर फ़ी सबीलिल्लाह ''या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह के लिये वक़्फ़'' खुदा हुवा था, अगर किसी फ़ौजी का तनख़्वाह वग़ैरा में कोई ह़क़ होता या वोह ज़रूरत मन्द होता तो उसे एक घोड़ा अ़ता फ़रमा देते।''(1)

तनख़्वाहों की तक़्सीम का त़रीक़ए कार

फ़ौजियों में तनख़्वाहें मौसिमे बहार और मुह़र्रमुल ह़राम के शुरूअ़ में तक़्सीम की जाती थीं, और फ़सलों के कटते वक़्त दीगर अमवाल भी तक़्सीम किये जाते थे। तारीखे़ त़बरी में है :

اَمَرَ لَهُمْ بِمُعَاوَنِهِمْ فِي الرَّبِيْعِ مِنْ كُلِّ سَنَةٍ وَبِاَعْطَائِهِمْ فِي الْمُحَرَّمِ مِنْ كُلِّ سَنَةٍ وَبِفَيْئِهِمْ عِنْدَ طُلُوْعِ الشَّعْرِيْ فِيْ كُلِّ سَنَةٍ

''या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़स्ले बहार में फ़ौजियों की माली इआ़नत करने, हर साल के शुरूअ़ या'नी मुह़र्रमुल ह़राम के महीने में तनख़्वाहें देने और फ़सलों की कटोती के वक़्त माले फ़ै की तक़्सीम का हुक्म दिया।(2)

तनख़्वाहों में सालाना इज़ाफ़ा (Increment)

इस्लामी लश्कर की उ़मूमी तनख़्वाहों के इलावा भी उन की तनख़्वाहों में वक़्तन फ़ वक़्तन इज़ाफ़ा होता रहता था, दर अस्ल फ़ौजियों की तनख़्वाहों की बुन्याद जंग के बा'द ह़ासिल होने वाला माले ग़नीमत था, जब माले ग़नीमत में इज़ाफ़ा होता फ़ौजियों की तनख़्वाहों में इज़ाफ़ा हो जाता था। जलूला की फ़त्ह़ के बा'द जो माले ग़नीमत हाथ आया उस में हर हर सुवार को नौ नौ हज़ार दिरहम मिले और नौ नौ जानवर भी मिले। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को अह्ले अ़जम का तमाम माल और तमाम जानवर बत़ौरे ग़नीमत अ़ता फ़रमा दिये। इस माल के ज़िम्मेदार ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, माल जम्अ़ करना और उसे तक़्सीम करना सब उन के ज़िम्मे था। उस जंग में जो माल तक़्सीम किया गया था वोह तीन करोड़ दिरहम था, उस का ख़ुम्स साठ लाख था।(3)

इज़ाफ़ी सलाहिय्यत पर ख़ुसूसी वज़ाइफ़

तनख़्वाहों के इलावा अगर किसी फ़ौजी में कोई इज़ाफ़ी सलाहिय्यत होती तो उसे ख़ुसूसी इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ा जाता था, जलूला की जंग में अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، ماقالوفی سمنته---الخ، ج ۷، ص ۶۴۴، حدیث: ۱۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۷۸۔

3 ......البدایة والنهایة، ج ۵، ص ۱۴۲۔

www.dawateislami.net

अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुम्स से उन लोगों को ख़ुसूसी इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा जिन्हों ने उस जंग में सब से ज़ियादा और बढ़ चढ़ कर कारनामे अन्जाम दिये थे।(1)

कसरते माल के नुक़्सानात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के फ़ौजियों की तनख़्वाहें जारी फ़रमाईं और उन की तनख़्वाहों में इज़ाफ़ा भी फ़रमाया, बा'ज़ फ़ौजियों को ख़ुसूसी इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ा जाता था, लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़र इस बात पर भी थी कि कहीं माल की ज़ियादती उन फ़ौजियों को ग़ाफ़िल न कर दे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कसरते माल के फ़ितने से ह़िफ़ाज़त के लिये उन फ़ौजियों की तरबिय्यत भी फ़रमाते रहते थे, नीज़ अपने अ़मल से उन की उख़रवी तरबिय्यत फ़रमाते थे, येही वज्ह है कि जंगे जलूला के बा'द माले ग़नीमत से जब उस का ख़ुम्स आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा गया तो उसे देख कर रोने लगे, जब इस की वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मुझे इस बात पर रोना आया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस को येह माल अ़त़ा फ़रमाता है तो उन में बाहमी बुग़्ज़ो ह़सद पैदा हो जाता है और जब उन में येह बुराइयां पैदा हो जाएं उन में ख़ाना जंगी शुरूअ़ हो जाती है।" बा'दे अज़ां आप ने सारा माल तक़्सीम फ़रमा दिया।(2)

मौसिम के लिहाज़ से फ़ौज की तक़्सीम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौजियों की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती के ह़वाले से भी मदनी सोच रखते थे, सर्दी गर्मी के लिह़ाज़ से जंग की जिहतें मुतअ़य्यन कर दी गई थीं, जो ठन्डे अ़लाक़े होते थे उन में गर्मियों में और गर्म अ़लाक़ों में सर्द मौसिम में फ़ौजें भेजी जाती थीं ताकि फ़ौजियों की सिह़्ह़त बर क़रार रहे। इसे "शातिया" और "साफ़िया" से ता'बीर किया जाता था।(3)

फ़ौज को ख़ुशगवार मक़ाम की सैर का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों को हुक्म

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۶۶۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج ۸، ص ۱۴۷، حدیث: ۵ مختصرا۔

3 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۹۰۔

दिया कि "हर मौसिमे बहार में फ़ौजियों को खुशगवार मक़ाम पर ले जाया करें और हर साल मौसिमे बहार में उन की मदद भी किया करें, नीज़ हर साल मुहर्रमुल हराम के महीने में उन्हें अतिय्यात भी दिया करें, हर साल ग़ल्ले की फ़स्ल आने पर उन्हें माले ग़नीमत का हिस्सा भी दिया करें।"(1)

फ़ौजियों को जंग से रुख़्सत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से उ़मूमन छे माह बा'द और बा'ज़ फ़ौजियों को एक साल के बा'द रुख़्सत मिला करती थी, एक दफ़्आ़ एक फ़ौजी की ज़ौजा अपने शौहर के ग़म में रात के वक़्त अश्आ़र पढ़ रही थी जिसे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म ने सुना और सबब येह मा'लूम हुवा कि वोह अपने शौहर से दूर है। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह उ़मूमी फ़रमान जारी कर दिया कि कोई भी फ़ौजी चार माह से ज़ियादा मैदाने जंग में न रहे बल्कि चार माह बा'द रुख़्सत ले कर घर लौट आए।(2)

फ़ौजियों के ना'रे : ना'रए तक्बीर–ना'रए रिसालत

जंग में हथयारों के साथ साथ ईमानी जज़्बे को बेदार भी किया जाता है जिस से जंग की सूरते ह़ाल में काफ़ी तब्दीली पैदा होती है, इस्लामी लश्कर के सिपह सालार व दीगर फ़ौजियों का येह मा'मूल था कि वोह जंग शुरूअ़ करने के लिये, दौराने जंग या किसी भी मुश्किल वक़्त पर ना'रए तक्बीर और ना'रए रिसालत लगाया करते थे, जिस से उन में एक नया जोश व वलवला पैदा हो जाता और उन की मुश्किल भी दूर हो जाती थी। मसलन

......ईरानी कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ जंग में एक बार हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन को क़ुरआने पाक की तिलावत का हुक्म दिया, जब तमाम लोग तिलावत से फ़ारिग़ हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ना'रए तक्बीर बुलन्द किया, इस त़रह तमाम मुसलमान जम्अ़ होना शुरूअ़ हो गए यहां तक कि जब उन्हों ने तीसरी मरतबा ना'रए तक्बीर बुलन्द किया तो इस्लामी लश्कर के फ़ौजी मैदाने जंग में उतर कर लड़ने लगे।(3)

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۸۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص۱۱۰۔

3 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۲۲۔

www.dawateislami.net

......जब इस्लामी लश्कर अहले अबला के साथ जंग करने के लिये दरया पार कर के आया तो इस्लामी लश्कर ने बुलन्द आवाज़ से दो मरतबा ना'रए तक्बीर बुलन्द किया जिस से दुश्मन की सुवारियां डर कर खड़ी हो गईं, जब मुसलमानों ने तीसरी दफ़्आ़ ना'रए तक्बीर बुलन्द किया तो उन की सुवारियों ने उन के सुवारों को गिरा दिया और दुम दबा कर भाग खड़ी हुईं।[1]

......जंगे यरमूक के ग्यारहवें दिन रूमी कुफ़्फ़ार ने इस्लामी लश्कर पर ह़म्ला कर दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन पर जवाबी ह़म्ला किया तो वोह भाग खड़े हुवे और तीरों की बरसात शुरूअ़ कर दी, इस्लामी लश्कर पर येह एक मुश्किल वक़्त था, उस वक़्त तमाम मुसलमानों की ज़बान पर ना'रए रिसालत यूं गूंज रहा था : یَامُحَمَّدُ، یَامَنْصُوْرُ اُمَّتِکَ اُمَّتِکَ "या'नी या रसूलल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ! ऐ अपनी उम्मत के मदद फ़रमाने वाले।"[2]

......जंगे ह़ल्ब में जब लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार यूक़न्ना ने इस्लामी लश्कर पर ह़म्ला किया तो उस वक़्त इस्लामी लश्कर पूरी त़रह़ से तय्यार न था, इस लिये तमाम मुसलमान आज़्माइश में आ गए, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मदद के लिये जो लश्कर भेजा था वोह भी अभी तक न पहुंचा था ब ज़ाहिर बचने की कोई सबील नज़र न आती थी तब सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़मरह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस त़रह़ ना'रए रिसालत लगाया : یَامُحَمَّدُ، یَامُحَمَّدُ نَصْرُ اللّٰہِ اِنْزِلْ "या'नी या रसूलल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ! **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ की मदद व नुसरत के साथ हमारी मदद के लिये तशरीफ़ लाइये।"[3]

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला तमाम वाक़िआ़त से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......ना'रए तक्बीर और ना'रए रिसालत लगाना सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का त़रीक़ा है।

......सह़ाबए किराम علیہم الرضوان मुश्किल वक़्त में **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को मदद के लिये पुकारते थे क्यूंकि येह ना'रे दौराने जंग मुश्किल वक़्त में वोह लगाया करते थे।

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۴۲۔

2 ......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۱۹۷۔

3 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب، ج ۱، ص ۲۴۰۔

www.dawateislami.net

۞......यक़ीनन ह़क़ीक़ी मददगार फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ात है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब बन्दों को येह त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह मुश्किल वक़्त में मुसलमानों की मदद करते हैं, येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जिस त़रह़ मुश्किल वक़्त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से मदद त़लब करते थे इसी त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से भी मदद त़लब करते थे क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस बात की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि आप मुश्किल वक़्त में अपने उम्मतियों की मुश्किलात को ह़ल फ़रमाएं।

फ़रयाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में....मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

۞......येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमा जाने के बा'द भी हमारी मदद कर सकते हैं येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुश्किल वक़्त में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद के लिये पुकारते थे।

۞......शैत़ान जो येह वस्वसा डालता है कि सिर्फ़ "या **अल्लाह** मदद" ही कहना चाहिये "या रसूलल्लाह मदद" नहीं कहना चाहिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इन वाक़िआ़त ने शैत़ान के इस इन्तिहाई ख़त़रनाक वस्वसे को भी जड़ से उखाड़ दिया क्यूंकि अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद के लिये पुकारना जाइज़ न होता तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कभी मदद त़लब न फ़रमाते।

या रसूलल्लाह के ना'रे से हम को प्यार है.......जिस ने येह ना'रा लगाया उस का बेड़ा पार है

ख़ुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से......या रसूलल्लाह का ना'रा लगाते जाएंगे

फ़ौजियों के साथ रहने वाली ज़रूरी अश्या

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अ़हद में इस्लामी फ़ौज के सिपाहियों को अपने जंगी आलात जैसे तल्वार, नेज़ा वग़ैरा के इ़लावा भी चन्द ज़रूरी अश्या अपने साथ रखनी होती थीं ताकि जंग के साथ साथ दीगर मुआ़मलात में इन से इस्तिआ़नत ली जा सके। ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन शिहाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लश्कर के हर सिपाही के पास ढाल, कुर्ता, सूइयां, धागा और दीगर ज़रूरत की अश्या मौजूद थीं।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1)......فتوح البلدان، القسم الرابع، فتح الری و القومس، ص ۴۴۵۔

www.dawateislami.net

ग्यारहवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इ़ल्मी सरगर्मियां

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये..........

...इ़ल्म की अहम्मिय्यत पर फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म, हि़फ़ाज़ते इ़ल्म के लिये फ़ारूक़ी ख़िदमात

...सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और हि़फ़ाज़ते क़ुरआन, हि़फ़ाज़ते क़ुरआन की मुख़्तलिफ़ तदाबीर

...क़ुरआने पाक से मुतअ़ल्लिक़ दीगर फ़ारूक़ी इक़्दामात, मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान

...मुख़्तलिफ़ फ़ितनों का सद्दे बाब, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और ख़िदमते क़ुरआन का सिला

...सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और हि़फ़ाज़ते ह़दीस के उमूर की तफ़्सील

...सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का ख़ुद अह़ादीस बयान न करना, बिग़ैर गवाह अह़ादीस बयान करने की मुमानअ़त

...बिग़ैर गवाह ह़दीस बयान करने पर सरज़निश, उमूरे हि़फ़ाज़ते ह़दीस की हि़क्मतें

...सह़ाबए किराम का कसरते रिवायत से रुकना, फ़ारूक़े आ'ज़म का शौक़े इ़ल्मे ह़दीस, इ़ल्म को फैलाने की तरग़ीब

...मुख़्तलिफ़ सुवालात करने की मुमानअ़त, रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत की कोशिशें

...फ़ारूक़े आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ इस्लाह़ी मल्फ़ूज़ात, फ़ारूक़े आ'ज़म के ज़र्बुल मसल ह़कीमाना अक़्वाल

...अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़, अह़कामे शरइय्या के मराकिज़ व मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के दारुल इफ़्ता

...उ़लमाए किराम, मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम, मुदर्रिसीन से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ उमूर, अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शानदार मुदर्रिस कोर्स

...अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मदारिस का ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब, इस्लामी बहनों का ता'लीमी निसाब

...अ़ह्दे फ़ारूक़ी की इ़ल्मी मुशावरतें, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ और शे'र व शो'रा, आप के इस्लाह़ी अश्आ़र

....

www.dawateislami.net

अह्दे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्म की अहम्मिय्यत से कौन वाक़िफ़ नहीं ? उम्मते मुस्लिमा के ग़लबे व क़ुव्वत का एक अहम सबब इल्म भी है, इल्म ही वोह रौशनी है जिस के ज़रीए पूरी दुन्या में उजाला किया जा सकता है, ख़ुद क़ुरआने पाक की कई आयाते मुबारका में इल्म की अहम्मिय्यत को उजागर किया गया है, यक़ीनन इल्म वाले और जाहिल दोनों बराबर नहीं हो सकते । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾(پ۲۳، الزمر:۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ।'' क़ुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों की सिफ़त इल्म ही बयान की गई है । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾(پ۲۲، فاطر:۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ''**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं ।''

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को जानते थे कि इल्मे दीन से ताईदो नुस्रते इलाही ह़ासिल होती है इस लिये वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से इल्मे दीन के ह़ुसूल की हर वक़्त कोशिश करते रहते थे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़ुद बारगाहे नबवी के तरबिय्यत याफ़्ता थे । आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने क़ुरआने पाक की तफ़्सीर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सीखी, पूरी उम्मते मुस्लिमा आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के उ़लूम की गवाह है, सलफ़े सालिह़ीन उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इल्म, समझ और शरई अह़काम में इस्तिम्बात़, नीज़ आप की मा'रिफ़त की ख़ूब पज़ीराई की है, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आ़दते मुबारका थी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से भी इल्म के ह़ुसूल में पेश पेश रहते थे, बीसियों ऐसे वाक़िआ़त हैं कि जिन में आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई सुवाल किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का जवाब दिया और यूं उम्मते मुस्लिमा को बारगाहे नबुव्वत के इल्मी ख़ज़ाने का फ़ैज़ ह़ासिल हुवा । नीज़ आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के कई अक़्वाल हैं जो इल्म की अहम्मिय्यत को उजागर करते हैं ।

इल्म की अहम्मिय्यत पर फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म

(1)......''ऐ लोगो ! तुम पर इल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है क्यूंकि इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक चादर है जिसे वोह पसन्द फ़रमाता है, पस जो इल्म के अबवाब में से किसी बाब को त़लब करता

www.dawateislami.net

है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चादर ओढ़ा देता है। पस अगर वोह कोई गुनाह कर बैठता है तो (इस इ़ल्म के सबब तौबा व इस्तिग़फ़ार व रुजूअ़ के ज़रीए) अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मनाता है ताकि वोह उस से उस चादरे इ़ल्म को सल्ब न फ़रमा ले। फिर अगर वोह गुनाह करता है तो पहले की त़रह़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मनाता है, फिर अगर वोह गुनाह करता है तो पहले की त़रह़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मनाता है। (यूं वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मनाता रहता है) अगर्चे उस के गुनाहों का सिलसिला त़वील हो जाए ह़त्ता कि यूं ही उस का इन्तिक़ाल हो जाए।"[1]

(2)......"रात भर इ़बादत करने वाले और दिन भर रोज़ा रखने वाले हज़ारहा इ़बादत गुज़ारों की मौत ज़ियादा आसान है उस आ़लिम की मौत से जो ह़लाल व ह़राम की मा'रिफ़त रखने वाला हो।"[2]

(3)......"बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि एक शख़्स जब अपने घर से निकलता है तो उस के सर पर तिहामा पहाड़ के बराबर गुनाहों का बोझ होता है, फिर वोह किसी आ़लिम का बयान सुन लेता है तो उस पर ख़ौफ़े ख़ुदा त़ारी हो जाता है जिस के सबब वोह अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर लेता है। अब जब वोह अपने घर लौटता है तो उस पर एक गुनाह भी नहीं होता। पस ऐ लोगो ! तुम लोग उ़लमा की मजालिस से जुदाई इख़्तियार न करो क्यूंकि रूए ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ़लमा की मजालिस से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ कोई शै पैदा न फ़रमाई।"[3]

(4)......"क़ुरआन के ह़ाफ़िज़ और इ़ल्म का सर चश्मा बन जाओ।"[4]

(5)......"इ़ल्म सीखो और सिखाओ, इ़ल्म के लिये वक़ार और सन्जीदगी सीखो, अपने असातिज़ा और त़लबा के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करो।"[5]

ह़िफ़ाज़ते इ़ल्म के लिये फ़ारूक़ी ख़िदमात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इ़ल्म ही वोह रौशनी है जिस से पूरी दुन्या में इन्क़िलाब बरपा किया जा सकता है, इ़ल्म का उठ जाना क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी है,

---

1 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب جامع فی فضل العلم، ص ۸۳، الرقم: ۲۵۱۔

احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب فی فضل العلم ۔۔۔ الخ، فضیلۃ التعلیم، ج ۱، ص ۲۴۔

2 ......جامع بیان العلم وفضلہ، باب تفضیل العلم والعبادۃ، ص ۴۲، الرقم: ۱۱۵۔

3 ......احیاء العلوم، کتاب ترتیب الاوراد ۔۔۔ الخ، بیان اختلاف الاوراد ۔۔۔ الخ، ج ۱، ص ۴۶۰۔

4 ......الزھد لامام احمد، زھد عمر بن الخطاب، ص ۱۴۸، الرقم: ۶۳۲ ملتقطا۔

5 ......جامع بیان العلم وفضلہ، فصل، ص ۱۸۷، الرقم: ۵۹۹۔

www.dawateislami.net

जिस क़ौम से इ़ल्म उठ जाए हज़ारों सआ़दतें उस से रूठ जाती हैं, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद भी इ़ल्म की क़द्रो मन्ज़िलत से वाक़िफ़ थे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को भी इ़ल्म की अ़ज़मत से रू शनास करवाया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जानते थे कि एक तरबिय्यत याफ़्ता मुस्लिम मुआ़शरे के क़ियाम में इ़ल्म का बहुत बड़ा दख़्ल है, अगर जहालत सौ बुराइयों को पैदा करती है तो इ़ल्म एक सौ एक बुराइयों को ख़त्म करता है, जहालत से जराइम की शर्ह़ में इज़ाफ़ा होता है जब कि इ़ल्म की रौशनी से जराइम के ह़क़ीक़ी ख़ातिमे में मुआ़वनत मिलती है। येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी पूरी ज़िन्दगी में दीगर उ़लूम के साथ साथ ख़ास त़ौर पर क़ुरआनो सुन्नत की ह़िफ़ाज़त का अहम फ़रीज़ा सर अन्जाम दिया कि येही दोनों तमाम उ़लूम की अस्ल हैं। जब अस्ल बर क़रार रहेगी तो उस की फ़ुरूआ़त भी बर क़रार रहेंगी। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इसी ह़िफ़ाज़ते इ़ल्म की कोशिशों से पूरी दुन्या में इ़ल्मी विरसा तक़्सीम हुवा और आज तक अपने और बेगाने, मुस्लिम, ग़ैर मुस्लिम, तमाम लोग किसी न किसी सूरत में "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" से फ़ैज़याब हो रहे हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़िफ़ाज़ते क़ुरआन

एक अहम वज़ाह़ती मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि क़ुरआने पाक का ह़क़ीक़ी मुह़ाफ़िज़ खुद रब عَزَّوَجَلَّ है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ﴾ (پ۱۴، الحجر:۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक हम ने उतारा है येह क़ुरआन और बेशक हम खुद इस के निगहबान हैं।" ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "तमाम जिन्नो इन्स और सारी ख़ल्क़ के मक़्दूर में नहीं है कि इस में एक ह़र्फ़ की कमी बेशी करे या तग़य्युर व तब्दील कर सके और चूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने करीम की ह़िफ़ाज़त का वा'दा फ़रमाया है इस लिये येह ख़ुसूसिय्यत सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ ही की है दूसरी किसी किताब को येह बात मयस्सर नहीं। येह ह़िफ़ाज़त कई त़रह़ पर है एक येह कि क़ुरआने करीम को मो'जिज़ा बनाया कि बशर का कलाम इस में मिल ही न सके, एक येह कि इस को मआ़रिज़े और मुक़ाबले से मह़फ़ूज़ किया कि कोई इस की मिस्ल कलाम बनाने पर क़ादिर न हो, एक येह कि सारी ख़ल्क़ को इस के नेस्तो नाबूद और मा'दूम

www.dawateislami.net

करने से आ़जिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बा वुजूदे कमाले अ़दावत के इस किताबे मुक़द्दस को मा'दूम करने से आ़जिज़ हैं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक का ह़क़ीक़ी मुह़ाफ़िज़ होने के बा वुजूद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को दुन्यावी ए'तिबार से ह़िफ़ाज़ते कुरआन की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़ह्दे रिसालत, अ़ह्दे सिद्दीक़ी और अपने अ़ह्द या'नी अ़ह्दे फ़ारूक़ी में कुरआने पाक की ह़िफ़ाज़त के सिलसिले में अहम किरदार अदा फ़रमाया। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

अ़ह्दे रिसालत के मुहाफ़िज़े कुरआन

अ़ह्दे रिसालत में ब तदरीज (वक़्फ़े वक़्फ़े से) कुरआने पाक का नुज़ूल होता रहा और जब भी कोई आयते मुबारका नाज़िल होती ख़ुद सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को तरतीब से लिखवा देते, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه भी कातिबे वह़्य थे और कुरआने पाक लिखते रहते थे, यूं अ़ह्दे रिसालत में भी कुरआने पाक की ह़िफ़ाज़त में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का बहुत बड़ा ह़िस्सा शामिले ह़ाल रहा, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का शुमार उन मख़्सूस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ुद कुरआने पाक की तफ़्सीर पढ़ी।[1] यक़ीनन येह अम्र भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه के कुरआने पाक की ह़िफ़ाज़त के ज़िम्न में शामिल और क़ाबिले तह़सीन है।

अ़ह्दे सिद्दीक़ी के मुहाफ़िज़े कुरआन

अ़ह्दे रिसालत के बा'द जैसे ही अ़ह्दे सिद्दीक़ी शुरूअ़ हुवा, फ़ितनए ज़कात, फ़ितनए इर्तिदाद और इस जैसे दीगर कई फ़ितने उठ खड़े हुवे, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन तमाम फ़ितनों का डट कर मुक़ाबला किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम व रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ास इनायत से उन का क़ल्अ़ क़म्अ़ कर दिया। इन तमाम फ़ितनों को ख़त्म करने के लिये अ़ह्दे सिद्दीक़ी में कई जंगें लड़ी गईं जिन में से एक बहुत ही मश्हूर जंग, जंगे यमामा भी है जो नबुव्वत का दा'वा करने वाले एक झूटे शख़्स "मुसैलमा कज़्ज़ाब" के ख़िलाफ़ लड़ी गई। इस जंग में मुसलमानों का सब से बड़ा नुक़्सान येह हुवा कि एक कसीर ता'दाद में कुरआने पाक के हुफ़्फ़ाज़ ने शहादत पाई।

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۵۲۰، الرقم: ۳۔

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से येह बात जान ली कि अगर यूंही एक दो जंगों में हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शहादत हुई तो उम्मते मुस्लिमा फ़ैज़ाने क़ुरआन से मह़रूम हो सकती है। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ए वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह मश्वरा दिया कि क़ुरआने पाक के मुख़्तलिफ़ सह़ाइफ़ व औराक़ को एक जगह जम्अ़ कर दिया जाए, अव्वलन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इश्काल रहा मगर बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे को क़बूल फ़रमा लिया और कातिबे वह़्य, ह़ाफ़िज़े क़ुरआन सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए़ उन तमाम क़ुरआनी सह़ाइफ़ को एक जगह जम्अ़ फ़रमा दिया। यूं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे से ह़िफ़ाज़ते क़ुरआन का एक अहम काम पायए तक्मील को पहुंचा।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की ह़िफ़ाज़ते क़ुरआन की तदाबीर

अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी के बा'द जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वक़्त भी क़ुरआने अ़ज़ीम की ह़िफ़ाज़त और उस की सिह़्ह़त पर ख़ास तवज्जोह दी। इस मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इक़्दामात की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

अ़लाक़ाई दर्सो तदरीस की तरकीब

ह़िफ़ाज़त व सिह़्ह़ते क़ुरआन के ह़वाले से एक अम्र येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में क़ुरआने पाक की दर्सो तदरीस का मुआ़मला शुरूअ़ करवाया, इस के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआन सिखाने वाले मुअ़ल्लिमीन को मुक़र्रर फ़रमाया नीज़ उन के मा'क़ूल वज़ाइफ़ भी जारी फ़रमाए ताकि वोह अपनी ज़रूरियात पूरी कर सकें। ख़त़ीबे बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی और अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی दोनों ने इस बात को ज़िक्र फ़रमाया है कि : ''اِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ وَعُثْمَانَ بْنَ الْعَفَّانِ كَانَا يَرْزُقَانِ الْمُؤَذِّنِيْنَ وَالْاَئِمَّةَ وَالْمُعَلِّمِيْنَ وَالْقُضَاةَ'' या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुअज़्ज़िनों, इमामों और मुअ़ल्लिमों या'नी क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम देने वालों और क़ाज़ियों को वज़ाइफ़ दिया करते थे।(2)

1....इस की मुकम्मल तफ़्सील के लिये ''दा'वते इस्लामी'' के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 723 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर'' बाब ''सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए़ क़ुरआन'' सफ़ह़ा 415 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2.....تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ محمد۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۷۹، الرقم: ۴۶۰، مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب التاسع والثلاثون، ص ۱۰۲۔

अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मुअ़ल्लिमीने क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब क़ुरज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से मरवी है कि अ़ह्दे रिसालत में पांच अन्सारी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने क़ुरआने पाक को जम्अ़ किया था। हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित, हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब, हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी और हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) जब अ़ह्दे फ़ारूक़ी आया तो सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा : "शामियों की कसरत के बाइ़स कई शहर आबाद हो गए हैं, यहां ऐसे लोगों की अशद ज़रूरत है जो इन्हें क़ुरआने पाक की ता'लीम दें और इन्हें फ़क़ीह बनाएं। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन तदरीसी सलाहि़य्यत रखने वाले अफ़राद के ज़रीए़ मेरी मदद फ़रमाएं।"

चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन ही पांच सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बुलाया और फ़रमाया : "तुम्हारे शामी मुसलमान भाइयों ने मुझ से मदद मांगी है कि मैं उन को क़ुरआने पाक सिखाने के लिये कुछ अफ़राद मुहय्या करूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप सब पर रह़्म फ़रमाए, आप में से तीन अफ़राद मेरी मदद करें, अगर आप लोग चाहें तो क़ुरआ़ अन्दाज़ी कर लें वरना ख़ुशी से तीन अफ़राद मुन्तख़ब कर लें।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हम में क़ुरआ़ अन्दाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है, क्यूंकि सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ईफ़ हो गए हैं, सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी त़बीअ़त नासाज़ है।"

लिहाज़ा बक़िय्या तीन अफ़राद हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तय्यार हो गए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तीनों से इरशाद फ़रमाया : "हि़म्स शहर से इब्तिदा करो, वहां तुम लोगों की त़बीअ़तें मुख़्तलिफ़ पाओगे, कुछ लोग बहुत जल्द क़ुरआन की ता'लीम ह़ासिल कर लेंगे, जब तुम लोग देखो कि लोग अब आसानी से ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं तो एक फ़र्द उन के पास ठहर जाए और एक फ़र्द आगे दिमश्क़ निकल जाए जब कि तीसरा फ़र्द फ़िलिस्त़ीन चला जाए।" चुनान्चे, येह तीनों ह़ज़रात हि़म्स तशरीफ़ लाए और इतना अ़र्सा वहां रहे कि उन लोगों की ता'लीम पर इत़्मीनान हो गया, फिर सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वहीं ठहर गए और सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिमश्क़ की त़रफ़ चले गए और सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़िलिस्त़ीन तशरीफ़ ले गए।(1)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر من جمع القرآن، ج۲، ص۲۷۲۔

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि अपने शहर से निकल कर दूसरे शहरों में जा कर कु़रआनो सुन्नत की ता'लीम आ़म करना निहायत ही अहम्मिय्यत का हा़मिल है, जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा से कु़रआनो सुन्नत के उ़लमा को दीगर शहरों में रवाना किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं, आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदारान व मुबल्लिग़ीन इस्लामी भाइयों को येह मदनी मक़्सद अ़ता फ़रमाया है कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ**" अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये मदनी मर्कज़ के जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दिये हुवे मदनी ज़ेह्न के मुत़ाबिक़ रोज़ाना सेंकड़ों क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहते हैं, येही वज्ह है कि आज اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर पूरी दुन्या के 175 से ज़ाइद मुमालिक में दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है और मज़ीद काम जारी व सारी है।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मन्सूख़ आयात की अ़लाहि़दगी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िफ़ाज़ते कु़रआन से मुतअ़ल्लिक़ एक अहम काम येह भी किया कि मुख़्तलिफ़ मन्सूख़ आयात को मतलू या'नी तिलावत की जाने वाली आयात से अ़लाहि़दा फ़रमा दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जिस आयते मुबारका के मन्सूख़ होने का मा'लूम होता तो बा'ज़ औक़ात किसी और सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उस की तस्दीक़ भी कर लिया करते थे। चुनान्चे, एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को यूं हुक्म दिया था : وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجٰهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى "या'नी बे

www.dawateislami.net

पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी । तो क्या जाहिलिय्यत की भी कई क़िस्में हैं ? सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि ''हुज़ूर मैं ने कोई चीज़ ऐसी नहीं सुनी कि जो पहली हो मगर उस की दूसरी न हो ।'' फ़रमाया : ''क्या तुम किताबुल्लाह से इस पर तस्दीक़ के लिये कोई आयत पेश कर सकते हो ?'' अ़र्ज़ किया : ''जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें हुक्म इरशाद फ़रमाया है : وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ كَمَا جَاهَدْتُّمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ''या'नी अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा जिहाद करने का हक़ है उसी त़रह़ जैसा तुम ने पहली मरतबा जिहाद किया था ।'' फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहले हमें किस से जिहाद का हुक्म दिया था ?'' अ़र्ज़ किया : ''क़बीलए मख़्ज़ूम और अ़ब्दे शम्स से ।''(1)

इस रिवायत में सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आयते मुबारका के साथ येह अल्फ़ाज़ भी तिलावत किये : ''كَمَا جَاهَدْتُّمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ'' येह अल्फ़ाज़ मन्सूख़ हैं । बा'दे अज़ां सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस की मन्सूख़िय्यत को वाज़ेह़ करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : اَسْقَطَ فِيْمَا اَسْقَطَ مِنَ الْقُرْآنِ ''या'नी येह आयत तो दीगर साक़ित़ होने वाली आयात के साथ साक़ित़ हो गई ।''(2)

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि मन्सूख़ आयात की दो क़िस्में हैं : (1) मतलू ''या'नी वोह मन्सूख़ आयात जिन की तिलावत की जाती है और वोह क़ुरआने पाक में अब भी मौजूद हैं अलबत्ता उन का हुक्म बाक़ी नहीं है ।'' (2) ग़ैरे मतलू या'नी वोह मन्सूख़ आयात जिन की न तो तिलावत की जाती है और न ही क़ुरआने पाक में मौजूद हैं और न ही उन का हुक्म बाक़ी है । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस दूसरी क़िस्म की आयात को क़ुरआने पाक से अ़लाह़िदा करवा दिया था । इन दोनों त़रह़ की आयात की तफ़्सील तफ़्सीर व उसूले तफ़्सीर की कुतुब में मुलाह़ज़ा कीजिये ।

तफ़्सीरी इबारात की अ़लाह़िदगी

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ह़िफ़ाज़ते क़ुरआन के सिलसिले में एक अहम काम येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ुरआने पाक की मतलू या'नी तिलावत की जाने वाली आयात से

1 ......درمنثور، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۳۳، ج ۶، ص ۶۰۱۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الاذکار، باب فی لواحق التفسیر، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۲۴۰، حدیث: ۴۷۳۸۔

www.dawateislami.net

तफ़्सीरी इबारात को अ़लाहि़दा फ़रमा दिया, इस की वज्ह येह थी कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कोई आयते मुबारका नाज़िल होती तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने उस की तफ़्सीर बयान फ़रमाते, फिर वोह उस तफ़्सीर को आगे बयान फ़रमाते तो बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता कि सुनने वाला तफ़्सीरी इबारत को आयत समझ कर याद कर लेता, इसी वज्ह से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अगर किसी इबारत के तफ़्सीर होने में शक होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी हाफ़िज़ सह़ाबी जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा को बुलाते और उन से इस के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाते। खुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कि कुरआने पाक के हाफ़िज़ थे इन को बा'ज़ औक़ात कई आयात या तफ़्सीरी इबारात में इश्तिबाह हो जाता था, जिन्हें येह तिलावत करते ह़ालांकि वोह मन्सूख़ होतीं। कुतुबे अह़ादीस में इस की कई अम्सला मौजूद हैं। मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सूरतुल फ़त्ह़ की आयत नम्बर 26 को कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ की ज़ियादती के साथ तिलावत करते जो तफ़्सीरी इबारत थी, जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़्त नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया और उन्हें अपनी बारगाह में बुलाया। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भी बुलाया जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से सूरतुल फ़त्ह़ सुनी तो उस में भी उन अल्फ़ाज़ को न पा कर जलाल का इज़्हार फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि : فَاِنْ اَحْبَبْتَ اَنْ اُقْرِیءَ النَّاسَ عَلٰی مَا اَقْرَاَنِیْ اَقْرَاْتُ وَاِلَّا لَمْ اُقْرِیءْ حَرْفًا مَا حَیِّیْتُ ''या'नी अगर आप हुक्म फ़रमाएं तो मैं इसी त़रह़ लोगों को कुरआने पाक पढ़ाया करूंगा जिस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे पढ़ाया वरना ज़िन्दगी भर एक लफ़्ज़ भी नहीं पढ़ाऊंगा।[1]

आयतों के साथ तफ़्सीर न लिखने की हिक्मत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुरआने पाक की आयात के साथ तफ़्सीरी इबारात लिखने की जो मुमानअ़त फ़रमाई थी ग़ालिबन इस की सब से अहम वज्ह येही थी कि अगर्चे उस ज़माने में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उन आयात व तफ़्सीरी इबारात में इम्तियाज़ कर लेते थे, लेकिन यक़ीनन बा'द के लोग इल्मे कुरआन व तफ़्सीर में महारत न होने के साथ उन तफ़्सीरी इबारात को भी आयात ही समझने लगते इसी ख़दशे की

1 ......مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، باب ان رسول اللہ یامرکم۔۔۔الخ، ج۲، ص۵۹۸، حدیث:۲۹۴۶۔

www.dawateislami.net

बिना पर आप ने तफ़्सीरी इ़बारात को आयात से जुदा करने का हुक्म दिया था। येह हुक्म आज भी इसी हिक्मत के पेशे नज़र बाक़ी है। चुनान्चे, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में जब तर्जमे में मह़ज़ूफ़ात और मत़ालिब वग़ैरा हिलालैन बना कर लिखने के बारे में इस्तिफ़्सार किया गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ नफ़्से क़ुरआन में अगर्चे येह अम्र मुह़ाल है तमाम जहान अगर इकठ्ठा हो कर इस का एक नुक़्ता कम-बेश करना चाहे हरगिज़ क़ुदरत न पाए मगर तर्जमे से मक़्सूद उन अ़वाम को मआ़निये क़ुरआन समझाना है जो फ़ह्मे अ़रबी (या'नी अ़रबी समझने) से आ़जिज़ हैं, ख़ुत़ूते हिलाली (या'नी गोल ब्रेकेट -()-) नुक़ूल व दर नुक़ूल (एक के बा'द दूसरे के नक़्ल करने) ख़ुसूसन मत़ाबेअ़ (या'नी छपे हुवे नुस्ख़े) में ज़रूर मख़्लूत़ व ना मज़बूत़ हो कर नतीजा येह होगा कि देखने वाली अ़वाम अस्ल इरशादे क़ुरआन को इस मुतर्जिम की ज़ियादत (इज़ाफ़ा) समझेंगे और मुतर्जिम की ज़ियादात (इज़ाफ़े) को रब्बुल इ़ज़्ज़त का इरशाद येह बाइ़से ज़लाल (गुमराही) होगा और जो अम्र मन्जर बेह ज़लाल हो (या'नी गुमराही की त़रफ़ ले जाने वाला हो) उस की इजाज़त नहीं हो सकती इसी लिये उ़लमाए मुतर्जिमीन ने तर्जमे का येही दस्तूर रखा कि बैनुस्सुत़ूर (लाइनों के दरमियान) में सिर्फ़ तर्जमा और जो फ़ाइदए ज़ाइदा ऐज़ाहे मत़लब (मत़लब वाज़ेह़ करने) के लिये हुवा वोह ह़ाशिये पर लिखा उन्हीं की चाल चलनी चाहिये।"(1)

सूरतों की आयात की छान बीन :

हिफ़ाज़ते क़ुरआन से मुतअ़ल्लिक़ एक अम्र सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह भी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ सूरतों की मजमूई आयात की भी ज़िमनन छान बीन की ताकि सूरतों की आयात मुतअ़य्यन हो जाएं, बा'ज़ औक़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस मुआ़मले में भी बात चीत कर लेते थे। चुनान्चे, एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : كَمْ تَعُدُّوْنَ سُوْرَةَ الْاَحْزَابِ؟ "या'नी तुम सूरए अह़ज़ाब की कितनी आयतें शुमार करते हो ?" सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन अ़र्ज़ किया : ثِنْتَيْنِ اَوْثَلَاثًا وَسَبْعِيْنَ "या'नी बहत्तर 72 या

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 23 स. 679

तिहत्तर[73] ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنْ كَانَتْ لَتُقَارِبُ سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ وَاِنْ كَانَ فِيهَا لَآيَةُ الرَّجْمِ ''या'नी अगर्चे येह सूरत पहले सूरए बक़रह के बराबर थी, और इस में पहले आयते रज्म भी थी ।''(1)

दो गवाहों के बिग़ैर अ़द्मे क़बूलिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जम्ए़ कु़रआन के सिलसिले में मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर बैठने और दो गवाहों के साथ आयात को क़बूल करने का हुक्म दिया था । इसी त़रह़ अ़ह्दे फ़ारूक़ी में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब कु़रआने पाक को जम्अ़ करने का इरादा फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी दो गवाहों के बिग़ैर कोई आयते मुबारका या सूरत न लेते थे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ात़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कु़रआने पाक जम्अ़ करने का इरादा फ़रमाया तो लोगों के दरमियान तशरीफ़ लाए और एक ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''जिस शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कु़रआने पाक का कुछ ह़िस्सा सुना हो वोह हमारे पास ले कर आ जाए ।'' लोगों ने कु़रआने पाक मुख़्तलिफ़ तख़्तियों, हड्डियों वग़ैरा पर लिखा हुवा था जिस के पास जो भी था वोह ले कर ह़ाज़िर हुवा । लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी से कोई आयत या सूरत वग़ैरा उस वक़्त तक क़बूल न फ़रमाते थे जब तक वोह उस पर दो गवाह न पेश कर दे, अभी येह काम तक्मील तक न पहुंचा था कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हो गई, बा'दे अज़ां सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी दो गवाहों के साथ कोई आयत या किसी सूरत को क़बूल फ़रमाते थे ।''(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो गई कि अ़ह्दे सिद्दीक़ी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी और अ़ह्दे उ़स्मानी तीनों अदवार में जम्ए़ कु़रआन के मुआ़मले में इन्तिहाई एह़तियात़ से काम लिया गया, यूं بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰى क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों की रहनुमाई के लिये वोही कु़रआने पाक नस्ल दर नस्ल मुन्तक़िल होता रहा और होता रहेगा जो प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा था ।

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الطلاق، باب الرجم والاحصان، ج ۷، ص ۲۶۳، حدیث: ۱۳۴۳۳ ملتقطا۔

2 ......تاریخ مدینة لابن شبه، ماروی عنه۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۷۰۵، تاریخ ابن عساکر، ج ۱۶، ص ۳۶۵۔

www.dawateislami.net

आयाते क़ुरआन में लुग़त का ए'तिबार

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब क़ुरआने पाक लिखने का इरादा फ़रमाया तो चन्द कातिबीन अस्ह़ाब को इस पर मामूर फ़रमाया और उन्हें येह भी हुक्म दिया कि : اِذَا اخْتَلَفْتُمْ فِی اللُّغَةِ فَاكْتُبُوْهَا بِلُغَةِ مُضَرٍ "या'नी जब तुम्हारा लुग़त में इख़्तिलाफ़ हो जाए तो लुग़ते मुज़्र में लिखना।"(1)

अख़्ज़े क़ुरआन में फ़ारूक़ी एह़तियात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन मुह़म्मद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि चन्द अन्सारी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मइय्यत में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और जम्ए क़ुरआन की इजाज़त त़लब की। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّكُمْ اَقْوَامٌ فِی اَلْسِنَتِكُمْ لَحْنٌ وَاَنَا اَكْرَهُ اَنْ تُحَدِّثُوْا فِی الْقُرْآنِ لَحْناً "या'नी तुम्हारी क़ौम की ज़बान में ग़लत़ी है और मुझे येह पसन्द नहीं है कि तुम लोग क़ुरआने पाक में कोई ग़लत़ी कर बैठो।"(2)

क़ुरआने पाक का इम्ला क़ुरशी जवानों से

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआने पाक की किताबत के बा'द इस का इम्ला क़ुरशी नौजवानों से करवाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : لَا يُمْلِيَنَّ فِيْ مَصَاحِفِنَا هٰذِهٖ اِلَّا غِلْمَانُ قُرَيْشٍ وَثَقِيْفٍ "या'नी हमारे इन मुसाह़िफ़ (क़ुरआने पाक) का इम्ला क़ुरैश और सक़ीफ़ के नौजवान करें।"(3)

क़ुरआने पाक की बारीक किताबत की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआने पाक की ह़िफ़ाज़त के साथ साथ इस के अदबो एह़तिराम को भी मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखा करते थे, क़ुरआने पाक के अदबो एह़तिराम की ख़ात़िर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारीक किताबत को ना पसन्द फ़रमाते, जब कि मोटी

---

1 ......فتح الباری، کتاب فضائل القرآن، باب نزل القرآن بلسان قریش والعرب ــ الخ، ج ۱۰، ص ۸، تحت الحدیث: ۴۹۸۵۔

2 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، جمع القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۲۴۵، حدیث: ۴۷۶۵۔

3 ......فتح الباری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، ج ۱۰، ص ۱۷، تحت الحدیث: ۴۹۸۸۔

www.dawateislami.net

और वाज़ेह़ किताबत को पसन्द फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के पास क़ुरआने पाक का एक नुस्ख़ा लाया गया जो बारीक क़लम के साथ लिखा हुवा था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : مَاهٰذَا ''या'नी येह क्या है ?'' बताया गया कि येह मुकम्मल क़ुरआने पाक है। येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उसे ना पसन्द फ़रमाया ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ क़ुरआने पाक को देख कर ख़ुश हो जाया करते थे। बहर ह़ाल जिस ने उसे लिखा था उसे मारा और इरशाद फ़रमाया : عَظِّمُوْا كِتَابَ اللّٰهِ ''या'नी किताबुल्लाह की ता'ज़ीम करो।''(1)

नाशिरीने क़ुरआन एह़तियात़ से काम लें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत में क़ुरआने पाक के ऐसे नाशिरीन के लिये नसीह़त के बे शुमार मदनी फूल हैं जो क़ुरआने पाक की नश्रो इशाअ़त जैसी अ़ज़ीम सआ़दत से मुस्तफ़ीद होते हैं, क़ुरआने पाक की अ़ज़्मत को मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखते हुवे इतने छोटे साइज़ में क़ुरआने पाक की त़बाअ़त से परहेज़ कीजिये जिस के पढ़ने में दुश्वारी हो, बा'ज़ नाशिरीन जेबी साइज़ या ता'वीज़ के त़ौर पर इस्ति'माल करने के लिये बहुत बारीक किताबत वाले क़ुरआने पाक त़ब्अ़ करते हैं जिन्हें पढ़ने के लिये अ़दसा (या'नी ह़ुरूफ़ को मोटा दिखाने वाला शीशा) इस्ति'माल करने की ह़ाजत होती है, यक़ीनन ऐसी बारीक किताबत वाले क़ुरआने पाक की त़बाअ़त अ़ज़्मते क़ुरआन के ख़िलाफ़ है और इस से बचना बहुत ज़रूरी है।

नह़्व (अ़रबी ग्रामर) वज़्अ़ करने का हुक्म दे दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबी मुलैका رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में एक आ'राबी मदीनए मुनव्वरा में आया और कहने लगा : ''कौन है जो मुझे क़ुरआने पाक सिखाएगा ?'' एक शख़्स ने उस आ'राबी को सूरते बराअत सिखाई और उस की एक आयते मुबारका का ए'राब इस त़रह़ पढ़ा कि उस आ'राबी को उस में शुबा हो गया, उस ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की बारगाह में शिकायत की। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उसे दुरुस्त पढ़ाया। इस वाक़िए़ के बा'द आप ने येह हुक्म जारी फ़रमा दिया कि ''जो शख़्स लुग़त का आ़लिम हो सिर्फ़ वोही क़ुरआने

---

(1)..... كنز العمال، كتاب الاذكار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء:٢، ج ١، ص ١٤٤، حديث:٤١٦٢۔

www.dawateislami.net

पाक पढ़ाए।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नह़्व (या'नी अ़रबी ग्रामर) वज़्अ़ करने का हुक्म दे दिया।(1)

ए'राबी ग़लती करने वाले को कोड़ा लगाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इकरिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी शख़्स को ग़लती करते देखते तो उसे लुक़्मा देते, लेकिन जब किसी को ए'राबी ग़लती करते देखते तो उसे कोड़ा लगाते।(2)

कु़रआने पाक से मुतअ़ल्लिक़ दीगर फ़ारूक़ी इक़्दामात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़्कूरए बाला तमाम इक़्दामात के साथ कई दीगर इक़्दामात भी फ़रमाए जो बिल वासित़ा या बिला वासित़ा ह़िफ़ाज़ते कु़रआन से ही तअ़ल्लुक़ रखते हैं, दर अस्ल उन इक़्दामात के पस पर्दा भी तरबिय्यते नबवी काम कर रही थी, जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारगाहे रिसालत से अ़त़ा हुई थी।

कु़रआने पाक के साथ सफ़र की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं: "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुश्मनों की ज़मीन की त़रफ़ कु़रआने पाक के साथ सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमाया कि कहीं वोह लोग कु़रआने पाक की बे हुरमती न करें। येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी तमाम शहरों के गवर्नरों की त़रफ़ येही हुक्म जारी फ़रमा दिया था।"(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! वाके़ई कु़रआने पाक को सफ़र में साथ रखने के लिये बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है, आज कल के सफ़र उ़मूमन तक्लीफ़ देह होते हैं, अगर वुज़ू वग़ैरा क़ाइम न रहे तो बसा औक़ात दोबारा वुज़ू करना भी मुश्किल हो जाता है और यक़ीनन बिग़ैर वुज़ू कु़रआने पाक को छूना भी ह़राम है। बा'ज़ औक़ात सामान रखने की जगह भी ऐसी नहीं होती जहां कु़रआने पाक को अदब के साथ रखा जाए इस लिये एह़तियात़ इसी में है कि कु़रआने पाक को सफ़र में साथ न ले कर जाएं।

---

1 ......كنز العمال، كتاب الاذكار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ٢، ج ١، ص ١٤٣، حديث: ٤١٥٤۔

2 ......كنز العمال، كتاب العلم، آداب العلم متفرقة، الجزء: ١٠، ج ٥، ص ١٣٣، حديث: ٢٩٤٩٧۔

3 ......المصاحف لابن ابی داود، ج ٢، ص ٣٢٢، حديث: ٥٩٦۔

www.dawateislami.net

कुरआन के वसीले से मांगो

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِقْرَؤُوا الْقُرْآنَ وَاسْاَلُوا اللّٰہَ بِہٖ قَبْلَ اَنْ یَقْرَاَہٗ قَوْمٌ یَسْاَلُوْنَ النَّاس "या'नी कुरआन पढ़ो और इस के वसीले से अल्लाह से सुवाल करो क़ब्ल इस के कि कोई क़ौम इस को पढ़ कर इस के वसीले से लोगों से सुवाल करे।"(1)

दिल जमई के साथ तिलावत करो

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : اِقْرَءُوا الْقُرْآنَ مَا اتَّفَقَتْ عَلَیْہِ قُلُوْبُکُمْ فَاِذَا اخْتَلَفْتُمْ فِیْہِ فَقُوْمُوْا عَنْہُ "या'नी जब तक तुम्हारे दिल कुरआने पाक की तिलावत पर जमे रहें तब तक पढ़ते रहो वरना छोड़ कर खड़े हो जाओ।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अगर ज़ेह्नी यक्सूई न हो तो कुरआने पाक की तिलावत न की जाए, एक तो इस से ग़लत़ पढ़े जाने का भी अन्देशा है दूसरा येह अम्र कुरआने पाक की अ़ज़मत के ख़िलाफ़ है। कुरआने पाक की तिलावत निहायत ही एहतिमाम के साथ कीजिये और फ़ैज़ाने कुरआन से अपने क़ल्ब को मुनव्वर कीजिये।

बिग़ैर वुज़ू कुरआन पढ़ना जाइज़ है

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ लोगों के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे जो कुरआने पाक की तिलावत कर रहे थे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये खड़े हुवे, जब वापस लौटे तो कुरआने पाक पढ़ते हुवे लौटे, एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : لَمْ تَوَضَّاْ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَاَنْتَ تَقْرَا "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप बिग़ैर वुज़ू कुरआने पाक की तिलावत फ़रमा रहे हैं ?" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَنْ اَفْتَاکَ بِھٰذِہِ الْمَسْئَلَۃِ؟ "या'नी तुझे येह फ़तवा किस ने दिया है ?"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب فضائل القرآن، من کره ان یتاکل بالقرآن، ج ۷، ص ۱۶۳، حدیث: ۴۔

2 ......سنن کبری للنسائی، کتاب فضائل القرآن، ذکر الاختلاف، ج ۵، ص ۳۴، حدیث: ۸۰۹۹۔
شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ترک المماراة فی القرآن، ج ۲، ص ۴۱۸، حدیث: ۲۲۶۰۔

3 ......سنن کبری، کتاب الطهارة، باب قراءة القرآن بعد الحدث، ج ۱، ص ۱۴۵، حدیث: ۴۲۱۔

www.dawateislami.net

जुनुबी और हाइज़ा को क़ुरआन पढ़ना मनअ़ है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : اَلْجُنُبُ وَالْحَائِضُ لَا یَقْرَاُ الْقُرْآنَ "या'नी जुनुबी और ह़ाइज़ा क़ुरआने पाक की तिलावत नहीं कर सकते।"(1)

क़ुरआने पाक को छूने और पढ़ने के मदनी फूल

(1) जिस को नहाने की ज़रूरत हो उस को मस्जिद में जाना, त़वाफ़ करना, क़ुरआने मजीद छूना अगर्चे उस का सादा ह़ाशिया या जिल्द या चोली छूए या बे छूए देख कर या ज़बानी पढ़ना या किसी आयत का लिखना या आयत का ता'वीज़ लिखना या ऐसा ता'वीज़ छूना या ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जैसे मुक़त्तआ़त की अंगूठी ह़राम है। (2) अगर क़ुरआने अ़ज़ीम जुज़दान में हो तो जुज़दान पर हाथ लगाने में ह़रज नहीं, यूहीं रूमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न क़ुरआने मजीद का तो जाइज़ है। कुर्ते की आस्तीन, दूपट्टे की आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना उस के मूंढे पर है दूसरे कोने से छूना ह़राम है कि येह सब उस के ताबेअ़ हैं जैसे चोली क़ुरआने मजीद के ताबेअ़ थी। (3) अगर क़ुरआन की आयत दुआ़ की निय्यत से या तबर्रुक के लिये जैसे بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم या अदाए शुक्र को या छींक के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن या ख़बरे परेशान पर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن कहा या ब निय्यते सना पूरी सूरए फ़ातिह़ा या आयतुल कुरसी या सूरए ह़श्र की पिछली तीन आयतें هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ से आख़िर सूरत तक पढ़ीं और इन सब सूरतों में क़ुरआन की निय्यत न हो तो कुछ ह़रज नहीं। यूहीं तीनों قُل बिला लफ़्ज़े "قُل" ब निय्यते सना पढ़ सकता है और लफ़्ज़े "قُل" के साथ नहीं पढ़ सकता अगर्चे ब निय्यते सना ही हो कि इस सूरत में इन का क़ुरआन होना मुतअ़य्यन है निय्यत को कुछ दख़्ल नहीं। (4) बे वुज़ू को क़ुरआने मजीद या उस की किसी आयत का छूना ह़राम है। बे छूए ज़बानी या देख कर पढ़े तो कोई ह़रज नहीं। (5) क़ुरआन का तर्जमा फ़ारसी या उर्दू या किसी और ज़बान में हो उस के भी छूने और पढ़ने में क़ुरआने मजीद ही का सा हुक्म है। (6) क़ुरआने मजीद देखने में उन सब पर कुछ ह़रज नहीं अगर्चे हुरूफ़ पर नज़र पड़े और अल्फ़ाज़ समझ में आएं और ख़याल में पढ़ते जाएं। (7) इन सब को फ़िक़्ह व तफ़्सीर व ह़दीस की किताबों का

---

(1) ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الطھارات، من کرہ ان یقرء الجنب القرآن، ج ۱، ص ۱۲۵، حدیث: ۷۔
دارمی، کتاب الطھارۃ، باب الحائض تذکر اللہ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۵۲، حدیث: ۹۹۱۔

www.dawateislami.net

छूना मकरूह है और अगर उन को किसी कपड़े से छुवा अगर्चे उस को पहने या ओढ़े हुवे हो तो ह़रज नहीं मगर मौज़ए आयत (या'नी आयत की जगह) पर उन किताबों में भी हाथ रखना ह़राम है।(1)

صَلُّوْاعَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तफ़्सीर बिर्राए की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन शिहाब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ كَلَامُ اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ فَضَعُوْهُ عَلٰى مَوَاضِعِهٖ وَلَا تَتَّبِعُوْا فِيْهِ اَهْوَاءَكُمْ

"या'नी बेशक येह कुरआन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम है, लिहाज़ा इसे इस की मुक़र्रर कर्दा जगहों पर ही रखो इस के मुआ़मले में अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी न करो।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तफ़्सीर बिर्राए ह़राम है और अपनी अटकल के मुत़ाबिक़ आयत से इस्तिद्लाल करना और ह़दीसे मुबारका की शर्ह़ करना अगर्चे दुरुस्त हो तब भी शरअ़न इस की इजाज़त नहीं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "जिस ने बिग़ैर इल्म कुरआन की तफ़्सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"(3)

कुरआन के बदले ओ़ह्दा देने की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह ख़बर पहुंची कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने यूं कहा है : مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ اَلْحَقْتُهُ فِي الْعَيْنِ "या'नी जो कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करेगा मैं उसे ओ़ह्दा दूंगा। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : اُفٍّ اُفٍّ! اَيُعْطٰى عَلٰى كِتَابِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ "या'नी अफ़्सोस हाए अफ़्सोस ! क्या कुरआने पाक के बदले ओ़ह्दे दिये जाएंगे ?"(4)

1....बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा. 2, स. 326 ता 327

2......الزهد لامام احمد، زهد يونس عليه السلام، ص ٧٢، الرقم: ١٩١۔

3......ترمذى، كتاب تفسير القرآن، باب ماجاء فى الذى يفسر القرآن برايه، ج ٤، ص ٤٣٩، حديث: ٢٩٥٩۔

4......كنز العمال، كتاب الاذكار، فصل فى حقوق القرآن، الجزء: ٢، ج ١، ص ١٤٤، حديث: ٤١٦٠۔

www.dawateislami.net

बिग़ैर तफ़्सीर के क़ुरआने पाक पढ़ना

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तन्हा थे और किसी मस्अले में ग़ौरो फ़िक्र फ़रमा रहे थे। फिर आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया और फ़रमाया : كَيْفَ تَخْتَلِفُ هٰذِهِ الْاُمَّةُ وَكِتَابُهَا وَاحِدٌ وَنَبِيُّهَا وَاحِدٌ وَقِبْلَتُهَا وَاحِدَةٌ "या'नी इस उम्मत में कैसे इख़्तिलाफ़ पैदा हो सकता है हालांकि उन की किताब, नबी और क़िब्ला एक ही है ?" इन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! हम पर क़ुरआन नाज़िल हुवा है, अब हम इस की तिलावत करते हैं, हमें इस का शाने नुज़ूल भी मा'लूम है। लेकिन हमारे बा'द एक ऐसी क़ौम भी आएगी जो क़ुरआने पाक तो पढ़ेगी लेकिन वोह येह नहीं जानती होगी कि फ़ुलां आयत का शाने नुज़ूल क्या है, फिर वोह अपनी त़रफ़ से उसे बयान करेंगे, इस त़रह़ उन की आरा मुख़्तलिफ़ हो जाएंगी और उन में इख़्तिलाफ़ पैदा होगा, जब इख़्तिलाफ़ पैदा होगा तो वोह आपस में क़िताल शुरूअ़ कर देंगे।"

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि शफ़ीक़े उम्मत थे इस लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बात पसन्द न आई और आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को डांटा। उन के जाने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ौर किया तो उन की बात दुरुस्त लगी, उन्हें बुला कर इरशाद फ़रमाया : "अपनी बात दोबारा बयान करो।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि बिग़ैर तर्जमे के फ़क़त़ क़ुरआने पाक के मतन की तिलावत करना यक़ीनन बाइ़से अज्रो सवाब है लेकिन इस से न तो शाने नुज़ूल मा'लूम होगा और न ही अह़कामे शरइय्या से मुकम्मल आगाही ह़ासिल होगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने उम्मते मुस्लिमा की ख़ैरख़्वाही के लिये आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن का तर्जमए क़ुरआन **"कन्ज़ुल ईमान"** सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی के तफ़्सीरी ह़ाशिया **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** के साथ निहायत ही ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ किया है, आप भी मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिये और तिलावते क़ुरआन मअ़ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान की सआ़दत ह़ासिल कीजिये।

---

(1) ......شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ترک التفسیر بالظن، ج ۲، ص ۴۲۵، حدیث: ۲۲۸۳۔

www.dawateislami.net

मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान

क़ुरआन में एक दूसरे से मुराजअ़त

हज़रते सय्यिदुना सलमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ऐसे लोगों के पास गए जो कुरआने पाक की इस त़रह़ तिलावत कर रहे थे कि उस में वोह एक दूसरे की त़रफ़ मुराजअ़त भी कर रहे थे। (या'नी एक दूसरे से पूछ पूछ के पढ़ रहे थे।) सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ''येह क्या है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : نَقْرَاُ الْقُرْآنَ وَنَتَرَاجَعُ ''या'नी हम कुरआने पाक पढ़ रहे हैं और जहां मस्अला पेश आता वहां एक दूसरे से पूछ लेते हैं।'' फ़रमाया : تَرَاجَعُوْا وَلَا تَلْحَنُوْا ''या'नी ठीक है एक दूसरे से पूछ कर सहीह़ पढ़ते रहो ग़लती न करो।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि चन्द लोगों का इकठ्ठे इस त़रह़ कुरआने पाक पढ़ना कि जिसे न आता हो वोह दूसरे जानने वाले से पूछ ले, येह अ़ह्दे फ़ारूक़ी में भी लोगों का मा'मूल था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी ने भी अ़ह्दे फ़ारूक़ी की याद ताज़ा करते हुवे मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों की मसाजिद में मदनी मुन्नों के मदारिस के इ़लावा बालिग़ अफ़राद के लिये मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान क़ाइम किये हैं, जिन में हज़ारों मुसलमान कुरआने पाक दुरुस्त मख़ारिज के साथ पढ़ने की तरबिय्यत ह़ासिल करते हैं, अगर आप भी दुरुस्त कुरआने मजीद पढ़ना चाहते हैं तो मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान में ज़रूर शिर्कत कीजिये और फ़ैज़ाने कुरआन से अपने कुलूब को मुनव्वर करते हुवे दुन्या व आख़िरत की भलाइयां ह़ासिल कीजिये।

मआ़नी को समझ कर कुरआने पाक पढ़ना

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ قَرَاَ الْقُرْآنَ فَاَعْرَبَ كَانَ عِنْدَ اللهِ اَجْرُ شَهِيْدٍ ''या'नी जिस ने कुरआन पढ़ा और उस के मआ़नी को समझ के पढ़ा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां उस के लिये एक शहीद का अज्र है।''(2)

---

1 ......شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی قراءۃ القرآن بالتفخیم، ج۲، ص ۴۲۹، حدیث: ۲۲۹۸۔

2 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۴۶، حدیث: ۴۱۷۴۔

www.dawateislami.net

क़ुरआन पर उजरत लेने की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : يَا اَهْلَ الْعِلْمِ وَالْقُرْآنِ لَا تَاْخُذُوْا لِلْعِلْمِ وَالْقُرْآنِ ثَمَناً فَيَسْبِقُكُمَ الدَّنَاةُ اِلَى الْجَنَّةِ "या'नी ऐ इ़ल्म और क़ुरआन वालो ! इ़ल्म और क़ुरआन पर उजरत न लो वरना कम तरीन लोग तुम से पहले जन्नत में जाएंगे।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं : "त़ाअ़त व इ़बादत के कामों पर इजारा करना जाइज़ नहीं मसलन अज़ान कहने के लिये, इमामत के लिये, क़ुरआन व फ़िक़्ह की ता'लीम के लिये, ह़ज के लिये या'नी इस लिये अजीर किया कि किसी की त़रफ़ से ह़ज करे। मुतक़द्दिमीन फ़ुक़हा का येही मस्लक था मगर मुतअख़्ख़िरीन ने देखा कि दीन के कामों में सुस्ती पैदा हो गई है अगर इस इजारे की सब सूरतों को नाजाइज़ कहा जाए तो दीन के बहुत से कामों में ख़लल वाक़ेअ़ होगा उन्हों ने इस कुल्लिया से बा'ज़ उमूर का इस्तिस्ना फ़रमा दिया और येह फ़तवा दिया कि ता'लीमे क़ुरआन व फ़िक़्ह और अज़ान व इमामत पर इजारा जाइज़ है क्यूंकि ऐसा न किया जाए तो क़ुरआन व फ़िक़्ह के पढ़ाने वाले त़लबे मईशत में मश्ग़ूल हो कर इस काम को छोड़ देंगे और लोग दीन की बातों से नावाक़िफ़ होते जाएंगे। इसी त़रह़ अगर मुअज़्ज़िन व इमाम को नोकर न रखा जाए तो बहुत सी मसाजिद में अज़ान व जमाअ़त का सिलसिला बन्द हो जाएगा और इस शिआ़रे इस्लामी में ज़बरदस्त कमी वाक़ेअ़ हो जाएगी। इसी त़रह़ बा'ज़ उ़लमा ने वा'ज़ पर इजारे को भी जाइज़ कहा है। इस ज़माने में अक्सर मक़ामात ऐसे हैं जहां अह्ले इ़ल्म नहीं हैं, इधर उधर से कभी कोई आ़लिम पहुंच जाता है जो वा'ज़ व तक़रीर के ज़रीए़ उन्हें दीन की ता'लीम दे देता है अगर इस इजारे को नाजाइज़ कर दिया जाए तो अ़वाम को जो इस ज़रीए़ से कुछ इ़ल्म की बातें मा'लूम हो जाती हैं उस का इन्सिदाद हो जाएगा। यहां येह बता देना भी ज़रूरी मा'लूम होता है कि जब अस्ल मज़्हब येही है कि येह इजारा नाजाइज़ है एक दीनी ज़रूरत की बिना पर इस के जवाज़ का फ़तवा दिया जाता है तो जिस बन्दए ख़ुदा से हो सके कि इन उमूर को मह़्ज़ ख़ालिसन लि वजहिल्लाह अन्जाम दे और अज्रे उख़रवी का मुस्तह़िक़ बने तो इस से बेहतर क्या बात है ! फिर अगर लोग उस की ख़िदमत करें बल्कि येह तसव्वुर करते हुवे कि दीन की ख़िदमत येह करते हैं हम इन की ख़िदमत कर के सवाब ह़ासिल करें तो देने वाला मुस्तह़िक़े सवाब

1 ......الجامع لاخلاق الراوي وآداب السامع، باب ذكر ماينبغي للمحدث۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۵۶، الرقم: ۸۲۸۔

www.dawateislami.net

होगा और उस को लेना जाइज़ होगा कि येह उजरत नहीं है बल्कि इआ़नत व इमदाद है। फ़ुक़हाए किराम ने इस कुल्लिया से जिन चीज़ों का इस्तिस्ना फ़रमाया वोह मज़्कूर हुई इस से मा'लूम हुवा कि तिलावते क़ुरआन पर इजारा जिस त़रह़ क़ुदमा के नज़्दीक नाजाइज़ है मुतअख़्ख़िरीन के नज़्दीक भी नाजाइज़ है लिहाज़ा सोयम वग़ैरा के मौक़अ़ पर उजरत पर क़ुरआन पढ़वाना नाजाइज़ है देने वाला लेने वाला दोनों गुनहगार, इसी त़रह़ अक्सर लोग चालीस रोज़ तक क़ब्र के पास या मकान पर क़ुरआन पढ़वा कर ईसाले सवाब कराते हैं अगर उजरत पर हो येह भी नाजाइज़ है बल्कि इस सूरत में ईसाले सवाब बे मा'ना बात है कि जब पढ़ने वाले ने पैसों की ख़ात़िर पढ़ा तो सवाब ही कहां जिस का ईसाल किया जाए ? इस का सवाब या'नी बदला पैसा है जैसा कि ह़दीस में है कि आ'माल जितने हैं निय्यत के साथ हैं जब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये अ़मल न हो तो सवाब की उम्मीद बेकार है। मक़्सद येह है कि ईसाले सवाब जाइज़ बल्कि मुस्तह़सन है मगर उजरत पर तिलावते क़ुरआने मजीद या कलिमए त़य्यिबा पढ़वा कर ईसाले सवाब नहीं हो सकता बल्कि पढ़ने वाला **अल्लाह** तआ़ला के लिये पढ़ें और ईसाले सवाब करें येह जाइज़ है।(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्तलिफ़ फ़ितनों का सद्दे बाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में एक दो ऐसे फ़िर्क़े भी थे जिन्हें क़ुरआनी अह़कामात के बारे में शुकूको शुब्हात थे, नीज़ येह लोग दीगर फ़ासिद अ़क़ाइद भी रखते थे, इन में से एक फ़िर्क़ा ''ह़रूरिय्या'' भी था, जब कि दूसरा फ़िर्क़ा ''ख़ल्क़े क़ुरआन'' या'नी क़ुरआन को मख़्लूक़ कहने जैसा फ़ासिद अ़क़ीदा रखता था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन दोनों फ़ितनों का भी सद्दे बाब फ़रमाया।

फ़िर्क़ा ह़रूरिय्या का सद्दे बाब

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से फ़िर्क़ा ''ह़रूरिय्या'' के लोगों को क़त्ल करने का हुक्म था, इस फ़िर्क़े की एक ख़ास निशानी येह थी कि येह लोग ''मह़लूक़'' या'नी गन्जे होते थे, येही वज्ह है कि अगर किसी शख़्स के बारे में येह शुबा भी होता कि उस का तअ़ल्लुक़ उस गुमराह फ़िर्क़े के साथ है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के ख़िलाफ़ कारवाई फ़रमाते। चुनान्चे,

1....बहारे शरीअ़त, जि. 3, हिस्सा 14, स. 145, 146

www.dawateislami.net

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "सबीग़" नामी शख़्स जो इराक़ का रहने वाला था मुसलमानों के लश्कर में क़ुरआने पाक से मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अ़जीबो ग़रीब सुवालात किया करता था यहां तक कि वोह मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंच गया। जब उन्हें पता चला तो उन्हों ने एक क़ासिद के हाथ मक्तूब के साथ उसे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेज दिया। जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ासिद का मक्तूब पढ़ा तो पूछा : "वोह शख़्स कहां है ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! वोह तो बाहर अपनी सुवारी पर मौजूद है।" फ़रमाया : "देखो, कहीं वोह चला तो नहीं गया ? अगर वोह चला गया तो तुम्हारी ख़ैर नहीं है।" वोह क़ासिद उसे ले कर आया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : تَسْاَلُ مُحْدَثَۃً "या'नी क्या तुम ही हो जो उलटे सीधे सुवालात करते हो ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खजूर की शाखें मंगवाईं और उसे मारना शुरूअ़ किया यहां तक कि उस की पीठ से ख़ून बहने लगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे छोड़ दिया, जब वोह ठीक हो गया तो दोबारा बुलाया और फिर मारा, जब तीसरी बार मारने के लिये बुलाया तो उस ने अ़र्ज़ की : اِنْ كُنْتَ تُرِيْدُ قَتْلِى فَاقْتُلْنِى قَتْلًا جَمِيْلًا وَاِنْ كُنْتَ تُرِيْدُ اَنْ تُدَاوِيَنِى فَقَدْ وَاللّٰهِ بَرَاْتُ "या'नी अगर मुझे क़त्ल करना चाहते हैं तो फिर क़त्ल कर दीजिये यूं तड़पा तड़पा कर तो न मारिये और अगर आप येह चाहते हैं कि मैं अपने इस फ़ासिद अ़मल से रुक जाऊं तो मैं इस से बाज़ आ चुका हूं।"

येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे उस के शहर भेज दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि मुसलमानों को कह दो इस का बाईकाट करें या'नी कोई इस के साथ न बैठे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल उस पर निहायत ही गिरां गुज़रा और उस ने सच्ची तौबा कर ली, सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब लिखा कि "हुज़ूर अब इस की ह़ालत बहुत अच्छी हो गई है।" तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को उस के साथ मैल जोल की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी।[1]

(2) एक रिवायत में यूं है कि जैसे ही वोह शख़्स आया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से पूछा : "तू कौन है ?" उस ने कहा : اَنَا عَبْدُ اللّٰهِ صَبِيْغٌ "या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

1 ......دارمی، باب من هاب الفتیا۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۶۷، حدیث: ۱۴۸۔

www.dawateislami.net

का बन्दा सबीग़ हूं।'' आप ने उस से चन्द सुवालात किये और फिर उसे मारना शुरूअ़ कर दिया।(1)

(3) एक रिवायत में यूं है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : وَجَدْتُکَ مَحْلُوْقًا لَضَرَبْتُ الَّذِيْ فِيْهِ عَيْنَاکَ ''या'नी अगर तू गन्जा होता तो मैं तेरा सर तन से जुदा कर देता।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाईकाट के हुक्म के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : فَلَوْ جَاءَ وَنَحْنُ مِائَةٌ لَتَفَرَّقْنَا عَنْهُ ''उस शख़्स का ह़ाल येह था कि अगर हम सौ आदमी भी जम्अ़ होते और सबीग़ आ जाता तो हम सब वहां से मुन्तशिर हो जाते।''(2)

(4) एक रिवायत में है कि जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मारा और उस का इमामा गिर गया तो फ़रमाया : اَحَرُوْرِيٌّ وَالَّذِيْ نَفْسُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ بِيَدِهٖ لَوْ وَجَدْتُّکَ مَحْلُوْقًا لَاَنْحَيْتُ الْقَمَلَ عَنْ رَّاْسِکَ ''या'नी क्या तू ह़रूरी है ? उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तू गन्जा होता तो मैं तेरा दिमाग़ दुरुस्त कर देता।''(3)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा कि अगर कोई शख़्स फ़ासिद अ़क़ीदे का ह़ामिल हो तो ह़ाकिमे वक़्त को चाहिये कि उस के ख़िलाफ़ तादीबी कारवाई करे और उसे राहे रास्त पर लाए।

......क़ाज़ी जब तक येह इत़्मीनान न कर ले कि अब उस शख़्स से फ़ासिद अ़क़ाइद दूर हो चुके हैं तब तक उस के ख़िलाफ़ तादीबी कारवाई करता रहे जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुतअ़ल्लिक़ा शख़्स को तीन बार सज़ा दी।

......येह भी मा'लूम हुवा कि बद मज़्हबों से किसी भी क़िस्म का तअ़ल्लुक़ न रखा जाए, बल्कि उस वक़्त तक उन का मुकम्मल बाईकाट किया जाए जब तक वोह राहे रास्त पर न आ जाएं। क़ुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ۝۶۸﴾ (پ۷،الانعام:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।''

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب من حالت شفاعته، ج ۱۰، ص ۳۵۳، حدیث: ۲۱۰۷۰۔

2 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۴۶، حدیث: ۴۱۷۰۔

3 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۴۵، حدیث: ۴۱۶۸۔

www.dawateislami.net

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एह़तिराम न किया जाता हो मुसलमान को वहां बैठना जाइज़ नहीं, इस से साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बे दीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक़रीरें करते हैं उन में जाना, सुनने के लिये शिर्कत करना जाइज़ नहीं।"

......अगर कोई शख़्स बद अ़क़ीदा हो, फिर वोह अपने बुरे अ़क़ाइद से तौबा कर ले और उस की तौबा पर इत़्मीनान हो जाए तो अब उस के साथ मुसलमानों को मेल जोल की इजाज़त है। जैसा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सबीग़ की तौबा के बा'द मुसलमानों को उन से मेल जोल की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआन

ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : حَسِّنُوا اَصْوَاتَكُمْ بِالْقُرْآنِ "या'नी ख़ूब सूरत आवाज़ में क़ुरआने पाक की तिलावत करो।"(1)

मेरे पास तुम्हारे जैसी आवाज़ नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्तशिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक शख़्स से फ़रमाया : اِقْرَاْ يَا فُلَانُ الْحِجْرَ "या'नी ऐ फ़ुलां सूरए ह़िज्र पढ़ कर सुनाओ।" उस ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! येह सूरत तो आप को भी आती है।" फ़रमाया : اَمَّا بِمِثْلِ صَوْتِكَ فَلَا "या'नी मेरे पास तुम्हारे जैसी ख़ूब सूरत आवाज़ नहीं है।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन क़ुरआने पाक को ख़ूब सूरत आवाज़ में पढ़ना बाइ़से सवाब है, लेकिन बेहतरीन आवाज़ वाले क़ारी साह़िबान अपनी निय्यत पर भी ग़ौर फ़रमा लें कि क्या

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب فضائل القرآن، فی حسن الصوت بالقرآن، ج ۷، ص ۱۵۴، حدیث: ۶۔

2 ......شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی رفع الصوت بالقرآن، ج ۲، ص ۵۲۷، حدیث: ۲۶۰۹۔

www.dawateislami.net

वाक़ेई हमारी निय्यत ख़ूब सूरत आवाज़ में क़ुरआने पाक की तिलावत कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करना है या येह निय्यत है कि मैं ख़ूब सूरत आवाज़ में पढ़ूंगा तो लोग मेरी वाह वाह करेंगे, मेरी आवाज़ की ता'रीफ़ें करेंगे वग़ैरा वग़ैरा। यक़ीनन पहली सूरत क़ाबिले ता'रीफ़ है कि रिज़ाए इलाही के लिये ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआने पाक की जाए जब कि दूसरी सूरत क़ाबिले मज़म्मत है नीज़ अगर इस में रियाकारी मक़्सूद है तो येह सख़्त ह़राम, गुनाहे कबीरा और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

अगर रियाकारी से बचते हुवे अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावत की जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना भी हाथ आएगा। चन्द निय्यतें पेशे ख़िदमत हैं : (1) रिज़ाए इलाही के लिये ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावत करूंगा। (2) अह़ादीसे मुबारका पर अ़मल करूंगा। (3) ख़ूब सूरत आवाज़ से तिलावत कर के लोगों में ज़ौक़े क़ुरआन पैदा करूंगा। (4) मुसलमानों की दिलजूई करूंगा। (5) अच्छी आवाज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इस ने'मत का इज़्हार करने के लिये अच्छी आवाज़ में तिलावत करता हूं। वग़ैरा वग़ैरा

फ़ारूक़े आ'ज़म का अन्दाज़े तिलावत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा व सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि एक रात हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े तहज्जुद में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पस्त आवाज़ में पढ़ते देखा, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलन्द आवाज़ से और सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि कुछ एक सूरत से लिया कुछ दूसरी सूरत से। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीनों साह़िबों से वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : قَدْ اَسْمَعْتُ مَنْ نَاجَیْتُ یَارَسُوْلَ اللہِ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं जिस से मुनाजात करता हूं वोह इस पस्त आवाज़ को भी सुनता है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : اُوْقِظُ الْوَسْنَانَ وَاَطْرُدُ الشَّیْطَانَ "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं इस लिये इतनी आवाज़ से पढ़ता हूं कि सोने वाला जाग जाए और शैत़ान भाग जाए।" सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : کَلَامٌ طَیِّبٌ یَجْمَعُ اللہُ تَعَالٰی بَعْضَہٗ اِلٰی بَعْضٍ "या'नी या

रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ुरआने मजीद सब पाकीज़ा कलाम है, कुछ यहां से कुछ वहां से मिला लेता हूं।" येह सुन कर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : كُلٌّ قَدْ اَصَابَ "या'नी तुम तीनों ने ठीक बात की, दुरुस्त काम किया।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़िदमते क़ुरआन का सिला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तो वोह ज़ाते गिरामी है जिस की ख़ुद क़ुरआने पाक भी ताईद फ़रमाता है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन से ताईद मिलती है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ताईद तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ताईद आज चौदह सौ साल बा'द तमाम मुसलमान करते हैं और क़ियामत तक करते रहेंगे, यक़ीनन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से क़ुरआने करीम की ख़िदमत का सिला मिला कि क़ियामत तक के तमाम लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़िराजे तह़सीन पेश करते रहेंगे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआने करीम को लोगों के दिलों में उतारा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को क़ुरआने पाक सीखने की तरग़ीब दिलाया करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स ह़ुसूले इ़ल्म के लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर अक्सर आया करता था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआने पाक सीखने की तरग़ीब दिलाते हुवे उस से इरशाद फ़रमाया : اِذْهَبْ فَتَعَلَّمْ كِتَابَ اللّٰهِ "या'नी जाओ और क़ुरआने पाक सीखो।" वोह शख़्स चला गया और एक लम्बे अ़र्से तक सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को न देखा। फिर एक दफ़्आ़ उस शख़्स की सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई तो आप ने इतना लम्बा अ़र्सा ग़ाइब रहने पर उस से पूछगछ की और वज्ह पूछी तो वोह अ़र्ज़ करने लगा : وَجَدْتُّ فِي كِتَابِ اللّٰهِ مَا اَغْنَانِي عَنْ بَابِ عُمَرَ "या'नी मैं ने किताबुल्लाह में ऐसे फ़रामीने इलाहिया पाए हैं जिन्हों ने मुझे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दर से मुस्तग़नी कर दिया है।(2)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ......ابوداود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت ۔۔۔ الخ، ج ۲، ص ۵۵، حدیث: ۱۳۲۹ ۔ ۱۳۳۰، فتاوٰی رضویہ، ج ۷، ص ۴۶۹ ۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، ماقالوافی البکاء من خشیۃ اللہ، ج ۸، ص ۲۱۲، حدیث: ۱۱۸ ۔

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और हि़फ़ाज़ते ह़दीस

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस त़रह़ हि़फ़ाज़ते क़ुरआन के सिलसिले में बेहतरीन ख़िदमात अन्जाम दीं इसी त़रह़ हि़फ़ाज़ते ह़दीस के मुआ़मले में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमात सुन्हरी हुरूफ़ से लिखे जाने के क़ाबिल हैं । क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जानते थे कि आज तो हमारे पास सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की एक ता'दाद मौजूद है जिन्हों ने बज़ाते ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से अह़ादीस सुनी हैं, यक़ीनन कुछ अ़र्से बा'द येह ह़ज़रात दुन्या से तशरीफ़ ले जाएंगे तो उम्मते मुस्लिमा क़ुरआनो सुन्नत के मुआ़मले में किसी इन्तिशार का शिकार न हो, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे इक़्दामात फ़रमाए कि क़ुरआनो ह़दीस के ह़वाले से कोई बात बयान करने में मज़ीद एह़तियात़ बरती जाने लगी । आप ने जब अह़ादीस जम्अ़ करने का इरादा फ़रमाया तो इस मुआ़मले में भी आप को किसी क़िस्म की कोई परेशानी लाहि़क़ नहीं हुई । चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह़ादीसे मुबारका को जम्अ़ करने का इरादा भी फ़रमाया और आप पर येह मुआ़मला ज़ाहिर भी हो गया ।(1)

वाक़ेई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उम्मते मुस्लिमा पर येह एह़साने अ़ज़ीम है कि अह़कामे शरइय्या के बुन्यादी माख़ज़ क़ुरआनो सुन्नत की हि़फ़ाज़त के मुआ़मले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बेहतरीन कारकर्दगी का मुज़ाहरा फ़रमाया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब से मह़ब्बत करने वाले आज भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़ज़ीम कारनामे को ख़िराजे तह़सीन पेश करते हैं और जिन लोगों के दिलों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का बुग़्ज़ है वोह आज भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुबारक हस्तियों में ख़ामियां तलाश करते नज़र आते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ऐसे तमाम लोगों के शर से मह़फ़ूज़ रखे ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हि़फ़ाज़ते ह़दीस के उमूर की तफ़्सील

क़ुतुबे अह़ादीस और सियर व तारीख़ के मुत़ालए़ से येह बात सामने आती है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हि़फ़ाज़ते ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ कई

(1) مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والاربعون، ص ۱۲۳۔

www.dawateislami.net

ऐसे उमूर इख़्तियार फ़रमाए जिन से ह़दीस की ह़िफ़ाज़त मुमकिन हो सके, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन उमूर पर बा'ज़ ह़ज़रात को ग़लत़ फ़ह्मी भी हो गई और उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ बा'ज़ ग़लत़ बातें भी मन्सूब कर दीं, लिहाज़ा इन तमाम उमूर को चार ए'तिबार से बयान किया गया है :

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बज़ाते ख़ुद अह़ादीस बयान करने में एह़तियात़ करना।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बिग़ैर गवाहों के ह़दीस बयान करने की मुमानअ़त।

......बिग़ैर गवाहों के कसरत से अह़ादीस बयान करने वालों की सरज़निश करना।

......ह़िफ़ाज़ते ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ारूक़े आ'ज़म के मुआ़मलात की ह़िक्मते अ़मली।

(1)......फ़ारूक़े आ'ज़म का ख़ुद अह़ादीस बयान न करना

फ़ारूक़े आ'ज़म का माहिराना नफ़्सियाती अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "**ह़िफ़ाज़ते ह़दीस**" का बेड़ा उठाया था यक़ीनन वोह निहायत ही ह़स्सास नौइय्यत का मुआ़मला था, उ़मूमन येह देखने में आया है कि अगर कोई ऐसा मुआ़मला हो जिस में किसी काम को रोकने की सूरत हो तो लोग सब से पहले उस काम से रोकने वाले की ज़ात पर नज़र डालते हैं कि क्या येह शख़्स जिस काम से हमें मन्अ़ कर रहा है, ख़ुद भी इस से बचता है या नहीं ? अगर वोह शख़्स अपनी ज़ात को बचाता है तो लोग उस की बात को क़बूल करने में तअम्मुल नहीं करते। ब सूरते दीगर लोग उस पर ही ए'तिराज़ करने लगते हैं जिस से उस काम के वोह नताइज सामने नहीं आते जिस की तवक़्क़ोअ़ होती है। यक़ीनन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इस बात से ब ख़ूबी आगाह थे, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले अपनी ज़ात को लोगों पर इस मुआ़मले में पेश किया, जिस से तमाम लोगों के ज़ेहनों में येह तअस्सुर बैठ गया कि : "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल हैं, जो अक्सर औक़ात रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में बैठते थे, सफ़र व ह़ज़र के साथी थे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम अक़्वालो अफ़्आ़ल पर नज़र रखने वाले थे, कातिबे वह़्य थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इ़ल्मी सुवालात किया करते

www.dawateislami.net

थे, ज़हानत के ए'तिबार से तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत ही में मश्हूर थे, इन तमाम आ'ला सिफ़ात के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अहादीस के बयान करने में एह्तियात् करते हैं तो फिर हम क्यूं एह्तियात् न करें ?'' सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़े'ल दर अस्ल एक **''माहिराना नफ़्सियाती अ़मल''** था, जिस के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिफ़ाज़ते हदीस पर मुआ़वनत हासिल की । नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बज़ाते ख़ुद अहादीस बयान न करने की वुजूहात भी बयान फ़रमाया करते थे । चुनान्चे,

रिवायते हदीस में फ़ारूक़े आ'ज़म की एह्तियात्

हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़रगोश के मुतअ़ल्लिक़ पूछा । तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **لَوْلَا اَنِّي اَكْرَهُ اَنْ اَزِيدَ فِي الْحَدِيثِ اَوْ اَنْقُصَ مِنْهُ وَسَاُرْسِلُ لَكَ اِلٰى رَجُلٍ** ''या'नी मुझे हदीस में कमी बेशी ना पसन्द है इस लिये मैं तुम्हें एक ऐसे शख़्स के पास भेजता हूं जो इस मुआ़मले में तुम्हारी रहनुमाई करेगा ।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा । जब उस शख़्स ने उन से इस मुआ़मले में बात की तो उन्हों ने फ़रमाया : **كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلْنَا فِي مَوْضِعِ كَذَا وَكَذَا قَالَ فَاَهْدَى اِلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الْاَعْرَابِ اَرْنَبًا فَاَكَلْنَاهَا** ''या'नी हम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ फ़ुलां फ़ुलां जगह पर थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक ख़रगोश बत़ौरे तोह़्फ़ा भेजा गया तो हम ने भी उस का गोश्त तनावुल किया ।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हदीसे मुबारका बयान करने में ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! हालांकि आप चाहते तो वोह हदीसे मुबारका ख़ुद भी बयान फ़रमा सकते थे लेकिन अपने अस्ह़ाब की तरबिय्यत की ख़ात़िर उन्हें दूसरे साहि़बे इल्म सहा़बी के पास भेज दिया । मज़्कूरए बाला रिवायत से जहां येह मा'लूम हुवा कि ख़रगोश का गोश्त खाना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित है वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि अगर आप को किसी बात का सही़ह़ त़रह़ से इल्म न हो या इल्म तो हो मगर उस में शक हो या आप इस कैफ़िय्यत में न हों कि उस सुवाल का सही़ह़ जवाब दे सकें तो साइल या'नी सुवाल करने वाले को

(1) مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الاطعمة، فی اکل الارنب، ج۵، ص ۵۳۵، حدیث: ۳۔

www.dawateislami.net

किसी साहि़बे इल्म की त़रफ़ भेज दें ताकि वोह उन की सह़ीह़ रहनुमाई करें। ख़ुसूसन क़ुरआनो सुन्नत और अह़कामे शरइय्या के मुआ़मले में एह़तियात़ बहुत ज़रूरी है, ख़ुद कोई जवाब देने के बजाए किसी सुन्नी सह़ीहु़ल अ़क़ीदा आ़लिमे दीन या मुफ़्ती साहि़ब के पास भेज दें इसी में दुन्या व आख़िरत की भलाई है, अपने क़ियास और अटकल से किसी को बिग़ैर तस्दीक़ के कोई शरई मस्अला बताने से सख़्त इजतिनाब करें। ख़ुदा न ख़्वास्ता आप ने किसी को ग़लत़ मस्अला बता दिया और उस ने उस पर अ़मल कर लिया नीज़ उस ने आगे भी फैला दिया तो हो सकता है उन तमाम का वबाल भी आप के गले में आ जाए।

फ़ारूके़ आ'ज़म और ह़दीस में कमी बेशी का ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने हौतकिय्या رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से ह़दीस के मुआ़मले में बात की गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : لَوْلَا اَنِّيْ اَكْرَهُ اَنْ اَزِيْدَ فِي الْحَدِيْثِ اَوْ اَنْتَقَصَ مِنْهُ لَحَدَّثْتُكُمْ بِهٖ "या'नी अगर मुझे येह डर न होता कि कहीं ह़दीस में मुझ से कमी बेशी न हो जाए तो मैं तुम्हें ज़रूर अह़ादीसे मुबारका बयान करता।"(1)

इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के इस मुबारक अ़मल से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बेहतरीन फ़िरासत रखने वाले माहिरे नफ़्सियात थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने अ़मल के ज़रीए़ इस ए'तिराज़ का दरवाज़ा पहले ही बन्द कर दिया जिस के अ़वामी रद्दे अ़मल के नतीजे में खुलने का इमकान था।

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के इस मुबारक अ़मल में पूरी दुन्या के हुक्मरानों, ज़िम्मेदारान और हर वोह शख़्स जिस के मा तह़त चन्द अफ़राद हों सब के लिये इस्लाह़ के बेहतरीन मदनी फूल हैं, अगर आप येह चाहते हैं कि लोगों को किसी अ़मल से रोकें तो सब से पहले उसे अपनी ज़ात पर नाफ़िज़ करें कि इस के बिग़ैर अच्छे नताइज की उम्मीद रखना ह़माक़त है।

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के मुबारक अ़मल से येह भी सीखने को मिला कि अपनी ज़ात को अ़मली नमूना बना कर पेश करने से इस्लामी भाइयों का मदनी ज़ेह्न बनाना बहुत

1 ......طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۱۔

www.dawateislami.net

आसान है, नीज़ बार बार कहने के बजाए अपनी ज़ात के ज़रीए़ अ़मली त़ौर पर इस के नफ़ाज़ की तरकीब बनाना ज़ियादा मुफ़ीद है।

......क़त़ई जन्नती सह़ाबी होने के बा वुजूद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़दीस बयान करने के मुआ़मले में ह़द दरजा एह़तियात़ फ़रमाया करते थे, हालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सफ़र व ह़ज़र दोनों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़वील रफ़ाक़त की सआ़दत ह़ासिल की। काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं, बिग़ैर तस्दीक़ और बिग़ैर मुस्तनद ह़वाले के कोई भी ह़दीसे मुबारका बयान करने में एह़तियात़ से काम लें, ख़ुसूसन एस एम एस (SMS) के ज़रीए़ बिग़ैर ह़वाले के कोई भी ह़दीस वाला एस एम एस (SMS) आगे न भेजें जब तक किसी सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा मुफ़्ती साह़िब या किसी आ़लिमे दीन से तस्दीक़ न करवा लें। तश्वीश सख़्त तश्वीश ! कहीं इस त़रह़ का एस एम एस (SMS) बिग़ैर तस्दीक़ के आगे भेजना हमारी आख़िरत की बरबादी का सबब न बन जाए। बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है।

(2)......गवाह के बिग़ैर अह़ादीस बयान करने की मुमानअ़त

ह़दीस के मुआ़मले में एह़तियात़ के सबब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसा औक़ात ह़दीस बयान करने वाले से गवाह भी त़लब फ़रमाते थे। चुनान्चे,

ह़दीस पर गवाह लाओ वरना दर्दनाक सज़ा दूंगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं अन्सार की मजलिस में मदीनए मुनव्वरा में बैठा हुवा था कि हमारे पास ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और वोह बहुत घबराए हुवे थे, हम ने उन से पूछा : مَا شَأْنُكَ "या'नी ऐ अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या हुवा ?" फ़रमाने लगे : "मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने पास बुलाया, जब मैं उन की बारगाह में गया तो दरवाज़े पर खड़े हो कर मैं ने उन्हें तीन बार सलाम किया लेकिन उन्हों ने जवाब न दिया। लिहाज़ा मैं वापस आ गया। बा'द में जब मैं दोबारा उन के पास गया तो उन्हों ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : مَا مَنَعَكَ اَنْ تَاْتِيَنَا "या'नी ऐ अबू मूसा अश्अ़री ! तुम्हें हमारे पास आने से किस चीज़ ने रोका ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मैं आप के पास आया था और दरवाज़े पर खड़े हो कर तीन बार सलाम किया लेकिन आप ने जवाब न दिया इस लिये वापस चला गया क्यूंकि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते

www.dawateislami.net

सुना है : اِذَا اسْتَاْذَنَ اَحَدُکُمْ ثَلَاثًا فَلَمْ یُؤْذَنْ لَہٗ فَلْیَرْجِعْ ''या'नी जब तुम में से कोई दाखि़ल होने की तीन बार इजाज़त मांगे और उसे इजाज़त न मिले तो उसे चाहिये कि वापस लौट जाए।''

मेरी बात सुन कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَقِمْ عَلَیْہِ الْبَیِّنَۃَ وَاِلَّا اَوْجَعْتُکَ ''या'नी अगर वाके़ई तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है तो इस पर गवाह लाओ वरना मैं तुम्हें दर्दनाक सज़ा दूंगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : لَا یَقُوْمُ مَعَکَ اِلَّا اَصْغَرُ الْقَوْمِ ''या'नी तुम्हारे साथ हम क़ौम के सब से कम उ़म्र को गवाही देने के लिये भेजेंगे।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खु़दरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं क़ौम में सब से कम उ़म्र था लिहाज़ा सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे हुक्म दिया कि मैं सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ जाऊं और उन की गवाही दूं।(1)

अगर तुम सच्चे हो तो गवाह ले कर आओ

ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से औ़रत के बच्चे साक़ित़ करने के जुर्म की सज़ा के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : قَضٰی فِیْہِ بِغُرَّۃٍ عَبْدٍ اَوْ اَمَۃٍ ''या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मुआ़मले में एक गु़लाम या लौंडी की सज़ा का फै़सला फ़रमाया।'' येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : اِئْتِنِیْ بِمَنْ یَّشْھَدُ مَعَکَ ''या'नी मेरे पास गवाह ले कर आओ।'' बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की गवाही दी कि वाके़ई रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही फै़सला फ़रमाया था।(2)

ह़दीस के मुआ़मले में एह़तियात़ से काम लेना चाहता हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर मस्जिदे नबवी की एक जानिब था, जब मस्जिदे नबवी नमाज़ियों के लिये तंग हो गई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......بخاری، کتاب الاستئذان، باب التسلیم والاستئذان ثلاثا، ج۴، ص۱۷۰، حدیث:۶۲۴۵۔

مسلم، کتاب الآداب، باب الاستئذان، ص۱۱۸۷، حدیث:۳۵۔

2 ......مسند احمد، مسند الکوفیین، حدیث المغیرۃ بن شعبۃ، ج۶، ص۳۴۳، حدیث:۱۸۲۳۹۔

www.dawateislami.net

ने उस की तौसीअ़ का इरादा फ़रमाया लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया ताकि वोह अपना येह घर बेच दें, लेकिन उन्हों ने इन्कार कर दिया और अपने इन्कार पर उन्हों ने एक ह़दीसे पाक भी बयान की। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : لَتَأْتِيَنِّي عَلٰى مَا تَقُوْلُ بِبَيِّنَةٍ "या'नी आप ने जो मुझे ह़दीस बयान की है उस पर एक गवाह लाइये।" सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्सार के पास तशरीफ़ ले गए और उन के सामने सारा मुआ़मला पेश कर दिया। उन में से कई अफ़राद ने इस बात की गवाही दी कि हम ने येह बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से इरशाद फ़रमाया : اَمَا اِنِّي لَمْ اَتَّهِمْكَ وَلٰكِنِّي اَحْبَبْتُ اَنْ اَتَثَبَّتَ "या'नी बेशक मैं ने आप पर तोहमत नहीं लगाई बल्कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका के मुआ़मले में एह़तियात़ पसन्द है।"(1)

इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!** देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िफ़ाज़ते ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ कितनी सख़्ती फ़रमाया करते थे, ऐसे जय्यिद अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जिन के बारे में येह तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ कोई ग़लत़ बात मन्सूब कर सकते हैं, उन पर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़्ती फ़रमाई ताकि येह लोग दीगर लोगों के लिये मश्अ़ले राह बन जाएं और सब पर वाज़ेह़ हो जाए कि जब ऐसी अ़ज़ीम हस्तियों का भी एह़तिसाब किया जा रहा है तो हम कैसे बच सकते हैं!

......मा'लूम हुवा कि किसी बात के नफ़ाज़ में छोटे बड़े की कोई तख़्सीस नहीं, सब के लिये यक्सां हुक्म होना चाहिये, अगर बा'ज़ लोगों की तख़्सीस कर दी जाए तो यक़ीनन अ़मल की शर्ह़ में बहुत कमी वाक़ेअ़ होगी, नीज़ इस अ़मल से लोगों के ज़ेह्नों में त़रह़ त़रह़ के वस्वसे भी पैदा हो सकते हैं जो नुक़्सान का सबब हैं।

......येह भी मा'लूम हुवा कि किसी भी अहम मुआ़मले में बिग़ैर सुबूत या गवाह के कोई फ़ैसला नहीं करना चाहिये, जो बात जितनी अहम होगी उस के सुबूत के लिये इतने ही अहम गवाहों का होना भी निहायत ज़रूरी है, मश्हूर मक़ूला है कि **"ग़ैर मा'मूली दा'वे के लिये ग़ैर मा'मूली सुबूत की ज़रूरत होती है।"**

---

1 ......تذكرة الحفاظ، الطبقة الاولى، ج ١، ص ١٢-

www.dawateislami.net

……सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़मल में उन लोगों के लिये इब्रत के कई मदनी फूल हैं जो बिग़ैर किसी सुबूत या गवाह के मुख़्तलिफ़ बातों की तश्हीर करते रहते हैं जिस से मुसलमानों में इन्तिशार व इफ़्तिराक़ की फ़ज़ा हमवार होती है, ख़ुसूसन ऐसे लोग जो मीडिया (ख़्वाह वोह प्रिन्ट मीडिया हो या इलेक्ट्रोनिक मीडिया) से तअ़ल्लुक़ रखते हैं ग़ौर फ़रमा लें कि वोह किस ह़द तक इस बात पर अ़मल करते हैं कि उन का काम ही मुख़्तलिफ़ बातों की इशाअ़त और तश्हीर है। इस शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाइयों के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "**अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है।

……वाज़ेह़ रहे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल एह़तियात़ पर मबनी था वरना बिग़ैर गवाहों के ह़दीस बयान करना ममनूअ़ नहीं था, इसी लिये अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अह़ादीसे मुबारका बयान फ़रमाया करते थे।

(3)…… बिग़ैर गवाह ह़दीस बयान करने पर सरज़निश

हि़फ़ाज़ते ह़दीस के मुआ़मले में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल भी रिवायात में मिलता है कि आप ने चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ह़दीसें कसरत से बयान करने के सबब क़ैद फ़रमा दिया। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म ने तीन अस्ह़ाब को क़ैद फ़रमा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन अस्ह़ाब को क़ैद फ़रमाया : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। इन तीनों से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : قَدْ اَكْثَرْتُمُ الْحَدِيْثَ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "या'नी मैं ने तुम्हें इस लिये क़ैद किया है कि तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत ज़ियादा ह़दीसें बयान करते हो।"[1]

1 ……تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج ۱، ص ۱۲۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उबय बिन का'ब को दुर्रा लगाया

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ लोगों का एक गुरौह देखा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक दुर्रा लगाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : اَعْلَمُ مَاتَصْنَعُ یَرْحَمُکَ اللّٰہُ "हुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रह़्म फ़रमाए क्या मैं जान सकता हूं कि आप ऐसा क्यूं कर रहे हैं ?" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اَمَا عَلِمْتَ اَنَّھَا فِتْنَۃٌ لِلْمَتْبُوْعِ مَذِلَّۃٌ لِلتَّابِعِ "या'नी क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि येह अ़मल (या'नी लोगों का तुम्हारे गिर्द इकठ्ठा हो जाना) तुम्हारे लिये बाइ़से फ़ित्ना और पैरवी करने वालों के लिये गुमराही का सबब बन सकता है ?"(1)

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

वाज़ेह़ रहे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को क़ैद फ़रमाना फ़क़त़ तरग़ीब के लिये था ताकि दीगर लोगों को येह मा'लूम हो जाए कि इस मुआ़मले में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो अपने क़रीबी साथियों और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से भी दर गुज़र नहीं फ़रमाते तो हमारा तो वोह मक़ामो मर्तबा भी नहीं है जो उन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का है, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल के बा'द तमाम लोग ह़दीस बयान करने के मुआ़मले में बहुत ही ज़ियादा मोह़तात़ हो गए। नीज़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस फ़े'ल से किसी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका पर भी ह़र्फ़ नहीं आता क्यूंकि येह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़िफ़ाज़ते ह़दीस से मुतअ़ल्लिक़ एक इजतिहादी फ़ैसला था कि बिग़ैर गवाह के ह़दीस बयान करना मन्अ़ है, यक़ीनन इस से मक़्सूद येह था कि लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ कोई बात मन्सूब करते हुवे ग़फ़्लत से काम न लें। येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात का ज़िक्र किया कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान मा'लूम है तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अह़ादीस बयान करने की इजाज़त दे दी। चुनान्चे,

---

1 ......تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج ۱، ص ۱۲۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू हुरैरा को बयाने अह़ादीस की इजाज़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार कसरत से अह़ादीस रिवायत करने वाले सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में होता है। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब कसरत अह़ादीस बयान करना शुरूअ़ कीं तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : كُنْتَ مَعَنَا يَوْمَ كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ بَيْتِ فُلَانٍ "क्या तुम उस दिन हमारे साथ थे जिस दिन हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ फ़ुलां जगह थे ?" येह सुन कर सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : نَعَمْ وَقَدْ عَلِمْتُ لِمَ سَأَلْتَنِيْ عَنْ ذَاكَ "जी हां ! और मुझे येह भी मा'लूम है कि आप ने मुझ से येह सुवाल क्यूं पूछा है ?" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لِمَ سَأَلْتُكَ "या'नी बताओ कि मैं तुम से किस लिये पूछ रहा हूं ?" अ़र्ज़ किया : "इस लिये कि उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि जो शख़्स मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधे तो उसे चाहिये कि वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने मुबारका याद है तो जाओ ह़दीसें बयान करो।"(1)

(4)......उ़मूरे ह़िफ़ाज़ते ह़दीस की ह़िक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो बिग़ैर गवाह के अह़ादीसे बयान करने पर पाबन्दी लगाई थी उस की अस्ल वज्ह तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने मुबारक था कि "जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा उसे चाहिये कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"(2) क्यूंकि अह़ादीसे मुबारका को कसरत से बयान करने में येह ख़दशा लाह़िक़ था कि हो सकता है जो बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान न हो लोग उसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान में शामिल न कर दें और कहीं इस वई़द के ह़क़दार न बन जाएं। नीज़ इस के इ़लावा दीगर भी बे शुमार ह़िक्मतें थीं जिन के सबब आप ने येह क़दम उठाया। चन्द ह़िक्मतें दर्जे ज़ैल हैं :

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۶۷، ص ۳۴۵، البدایہ والنہایہ، ج ۵، ص ۲۰۷۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی، ج ۱، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۸ ملخصاً۔

तिलावते क़ुरआन की रग़्बत बाक़ी रहे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़मल में एक ह़िक्मत येह भी थी कि चूंकि मुसलमानों की कसरत थी और नौ मुस्लिम क़ुरआने पाक की तिलावत किया करते थे, अगर उन्हें अह़ादीसे मुबारका में मश्ग़ूल किया जाता तो हो सकता था कि वोह क़ुरआने पाक की तिलावत छोड़ कर अह़ादीस में मश्ग़ूल हो जाते इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह़ादीस बयान करने से मन्अ़ फ़रमा दिया ताकि लोगों की क़ुरआने पाक की त़रफ़ भी रग़्बत बाक़ी रहे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना क़रज़ा बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें इ़राक़ रवाना किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमें ख़ुद आगे करने के लिये आए और इरशाद फ़रमाया : **اَتَدْرُوْنَ لِمَ شَيَّعْتُكُمْ** "या'नी क्या तुम्हें मा'लूम है कि मैं तुम्हें यूं आगे करने क्यूं आया हूं ?" हम ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! हमारी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिये।" फ़रमाया :

اِنَّكُمْ تَأْتُوْنَ قَوْمًا تَهْتَزُّ اَلْسِنَتُهُمْ بِالْقُرْآنِ اِهْتِزَازَ النَّحْلِ فَلَا تَصُدُّوْهُمْ بِالْحَدِيْثِ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنَا شَرِيْكُكُمْ

"या'नी तुम लोग एक ऐसी क़ौम के पास जा रहे हो जो मख्खियों के भिनभिनाने की त़रह़ कसरत से क़ुरआने पाक की तिलावत करते हैं लिहाज़ा तुम उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका के ज़रीए़ तिलावत से न रोक लेना। (या'नी उन से अह़ादीस बयान न करना) और मैं भी तुम्हारा शरीक हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना क़रज़ा बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **فَمَا حَدَّثْتُ بِشَيْءٍ** "या'नी इस के बा'द मैं ने कोई ह़दीस बयान न की।"(1)

अ़ल्लामा ज़हबी की दो नफ़ीस वुजूहात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को रिवायते ह़दीस की कसरत से मन्अ़ फ़रमाया करते थे, अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस की दो वज्हें लिखी हैं : "एक तो येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से ग़लत़ बात मन्सूब हो जाने का ख़ौफ़ था। दूसरी वज्ह येह थी कि कहीं लोग ह़िफ़्ज़े क़ुरआन को छोड़ कर मह़्ज़ ह़दीस में मश्ग़ूल न हो जाएं।"(2)

---

1 ......دارمی، باب من ھاب الفتیا، ج ۱، ص ۹۷، حدیث: ۲۷۹ مختصراً۔

2 ......تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج ۱، ص ۱۲۔

अहादीस बयान करने में लोग मोह़तात़ हो जाएं

एक ह़िक्मते अ़मली येह भी थी कि लोग अह़ादीस बयान करने में मोह़तात़ हो जाएं जब तक उन्हें इस बात का यक़ीन न हो जाए कि येह वाक़ेई ह़दीसे मुबारका है इसे बत़ौरे ह़दीस हरगिज़ बयान न करें, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ह़िक्मते अ़मली लोगों में ज़ाहिर भी हुई कि उ़मूमन लोगों ने अह़ादीस को बयान करने में एह़तियात़ का दामन थाम लिया। येही वज्ह थी कि अ़ह्दे फ़ारूक़ी के बा'द भी लोग इस का तज़्किरा करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : اَكُنْتَ تُحَدِّثُ فِيْ زَمَانِ عُمَرَ هٰكَذَا؟ ''या'नी ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या आप अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में भी इसी त़रह़ ह़दीसे मुबारका बयान फ़रमाते थे ?'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَوْ كُنْتُ اُحَدِّثُ فِيْ زَمَانِ عُمَرَ مِثْلَ مَا اُحَدِّثُكُمْ لَضَرَبَنِيْ بِمِخْفَقَتِهٖ ''या'नी अगर मैं इसी त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में भी ह़दीसें बयान करता जिस त़रह़ आज करता हूं तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे अपने दुर्रे से मारते।''(1)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म ज़रूर मार से डराते

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़ालाते ज़िन्दगी में लिखा है लोग आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़ल्क़ए ह़दीस में आते तो उन से मुख़ात़ब हो के फ़रमाते : لَوْ اَدْرَكْنَا وَاِيَّاكُمْ عُمَرُ لَاَوْجَعْنَا ضَرْبًا ''या'नी अगर हम अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़माना पा लेते तो वोह ज़रूर हमें सज़ा देते।''(2)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की अह़ादीस बयान करो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल की एक बरकत येह भी ज़ाहिर हुई कि लोगों के दिलों में येह बात बैठ गई कि जो अह़ादीस सय्यिदुना फ़ारूके़

1 ......تذكرة الحفاظ، الطبقة الاولى، ج ١، ص ١٢۔

2 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ذكر من ذم اكثار من حديث ـــ الخ، ص ٣٠٩، الرقم: ١٠٩٩۔

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे मुबारका में बयान की गई वोह बिल्कुल दुरुस्त थीं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के बयान करने में सख़्त शराइत़ का इल्तिज़ाम फ़रमाया था। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन अबी सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं मुझे पता चला है कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे :

عَلَيْكُمْ مِّنَ الْحَدِيْثِ بِمَا كَانَ فِي عَهْدِ عُمَرَ فَإِنَّهُ كَانَ قَدْ أَخَافَ النَّاسَ فِي الْحَدِيْثِ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

''या'नी तुम लोगों पर लाज़िम है कि उन अह़ादीस को बयान करो जो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे मुबारका में बयान की जाती थीं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीस के मुआ़मले में लोगों को डराया करते थे।''(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की रिवायत से रोकने की मस्लह़त

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दलाइल से साबित किया है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कसरते रिवायात से मस्लह़तन रोकते थे ताकि अह़ादीस में झूट की आमेज़िश न हो जाए नीज़ क़ुरआनो ह़दीस की तमीज़ बर क़रार रहे, चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के अल्फ़ाज़ येह हैं :

هٰذَا يَدُلُّ عَلٰى أَنَّ نَهْيَهُ عَنِ الْإِكْثَارِ وَأَمْرَهُ بِالْإِقْلَالِ مِنَ الرِّوَايَةِ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّمَا كَانَ خَوْفَ الْكِذْبِ

عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَوْفًا أَنْ يَكُوْنُوْا مَعَ الْإِكْثَارِ

''मा'लूम हुवा कि आप का कसरते रिवायत से मन्अ़ करना व बयाने ह़दीस में कमी का हुक्म देना उन ख़त़रात के पेशे नज़र था कि कहीं लोग हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर झूट न बांधें और कसरते रिवायत की ख़ात़िर अच्छी त़रह़ याद और पुख़्ता किये बिग़ैर आगे बयान न करें।''(2)

ग़लत़ बात मन्सूब न हो जाए

हज़रते अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस लत़ीफ़ बह़स में येह बात भी बयान फ़रमाई है कि कसरते रिवायत की मुख़ालफ़त और क़िल्लते रिवायत का हुक्म अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस लिये दिया था कि कसरत की सूरत में

1 ......العلل ومعرفة الرجال، ج٣، ص ١٨٣، تذكرة الحفاظ، الطبقة الاولى، ج ١، ص ١٢-

2 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ذكر من ذم الاكثار---الخ، ص ٣٩٨، الرقم: ١٠٦١-

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ ग़लत़ बात मन्सूब हो जाने का अन्देशा था और येह ख़ौफ़ भी था कि जो ह़दीसें लोगों के पास अच्छी त़रह़ मह़फ़ूज़ न हों और ह़ाफ़िज़े पर भी भरोसा न हो तो लोग मह़्ज़ क़ौल बयान करने में जरी हो जाएंगे, उन्हों ने इस्तिद्लाल में येह बात फ़रमाई। चुनान्चे, फ़रमाते हैं :

لِاَنَّ ضَبْطَ مَنْ قَلَّتْ رِوَايَتُهُ اَكْثَرُ مِنْ ضَبْطِ الْمُسْتَكْثِرِ وَهُوَ اَبْعَدُ مِنَ السَّهْوِ وَالْغَلَطِ الَّذِيْ لَا يُؤْمِنُ مَعَ الْاِكْثَارِ

"या'नी क़लील अह़ादीस रिवायत करने वाले का ज़ब्त़, कसीर अह़ादीस रिवायत करने वाले के मुक़ाबले में ज़ियादा होता है क्यूंकि क़लील अह़ादीस रिवायत करने वाला कसीर रिवायत करने वाले के मुक़ाबले में सह्व और ग़लत़ी से काफ़ी ह़द तक मह़फ़ूज़ होता है।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने कसरते रिवायत से मन्अ़ फ़रमाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुत़लक़न अह़ादीस बयान करने से मन्अ़ नहीं फ़रमाया था बल्कि कसरते अह़ादीस से मन्अ़ फ़रमाया था। चुनान्चे, अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **وَلَوْ كَرِهَ الرِّوَايَةَ وَذَمَّهَا لَنَهٰى عَنِ الْاِقْلَالِ مِنْهَا وَالْاِكْثَارِ** "या'नी अगर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मुत़लक़न अह़ादीस की रिवायत पसन्द न होती तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत की क़िल्लत व कसरत दोनों के मुतअ़ल्लिक़ नह्य वारिद फ़रमाते ह़ालांकि ऐसा नहीं है।"(2)

सह़ाबए किराम का कसरते रिवायत से रुकना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने इ़ब्रत निशान के सबब ह़िफ़ाज़ते ह़दीस की वज्ह से अ़दमे रिवायत का येह मदनी ज़ेह्न दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में भी था, या'नी आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुवाफ़िक़त भी ह़ासिल थी। चुनान्चे,

सय्यिदुना अनस बिन मालिक की मुवाफ़िक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया :

---

1 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ذكر من ذم الاكثار، ص ۳۹۸، الرقم: ۱۰۶۱۔

2 ......جامع بيان العلم وفضله، باب ذكر من ذم الاكثار، ص ۳۹۸، الرقم: ۱۰۶۱۔

www.dawateislami.net

اِنَّهٗ لَيَمْنَعُنِي اَنْ اُحَدِّثَكُمْ حَدِيثًا كَثِيرًا اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ تَعَمَّدَ عَلَيَّ كَذِبًا فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ

"या'नी मुझे हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान कसीर अहादीस रिवायत करने से रोकता है कि जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा उसे चाहिये कि वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"(1)

सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम की मुवाफ़िक़त

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि उन्हों ने अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा :

اِنِّي لَا اَسْمَعُكَ تُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَمَا يُحَدِّثُ فُلَانٌ وَفُلَانٌ "या'नी मैं ने फ़ुलां फ़ुलां की त़रह़ आप को कभी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अहादीस बयान करते हुवे नहीं सुना, इस की क्या वज्ह है ?" उन्हों ने फ़रमाया : इस की वज्ह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने मुबारका है कि : مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ "या'नी जिस ने मुझ पर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।"(2)

शैत़ान झूटी बात बयान करवाता है

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الشَّيْطَانَ لَيَتَمَثَّلُ فِي صُورَةِ الرَّجُلِ فَيَاْتِي الْقَوْمَ فَيُحَدِّثُهُمْ بِالْحَدِيثِ مِنَ
الْكَذِبِ فَيَتَفَرَّقُونَ فَيَقُولُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ سَمِعْتُ رَجُلًا اَعْرِفُ وَجْهَهٗ وَلَا اَدْرِي مَا اسْمُهٗ يُحَدِّثُ

"या'नी शैत़ान मर्द की सूरत इख़्तियार कर के एक क़ौम के पास आता है और उन से झूटी बात बयान करता है, फिर लोग मुन्तशिर हो जाते हैं, उन में से एक शख़्स कहता है कि मैं ने येह रिवायत ऐसे शख़्स से सुनी है कि जिस को मैं चेहरे से तो जानता हूं लेकिन मुझे उस का नाम याद नहीं है।(3)

1 ......بخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی، ج ۱، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۸ ـ

2 ......بخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی، ج ۱، ص ۵۷، حدیث: ۱۰۷ ـ

3 ......مسلم، المقدمۃ، باب النھی عن الروایۃ، ص ۹، حدیث: ۷ ـ

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की मुवाफ़क़त

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के पास आया और यूं ह़दीस बयान करने लगा : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم، قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया ।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने न तो उसे ह़दीस बयान करने की इजाज़त दी और न ही उस शख़्स की त़रफ़ नज़र की । उस शख़्स ने तअ़ज्जुब से अ़र्ज़ किया : يَا ابْنَ عَبَّاسٍ مَالِي لَا أَرَاكَ تَسْمَعُ لِحَدِيْثِي أُحَدِّثُكَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا تَسْمَعُ "या'नी ऐ इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ! क्या बात है कि मैं आप को ह़दीसे पाक सुनाता हूं और वोह भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत कर के सुना रहा हूं लेकिन आप सुन ही नहीं रहे ?" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : إِنَّا كُنَّا مَرَّةً إِذَا سَمِعْنَا رَجُلًا يَقُوْلُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ابْتَدَرَتْهُ أَبْصَارُنَا وَأَصْغَيْنَا إِلَيْهِ بِآذَانِنَا فَلَمَّا رَكِبَ النَّاسُ الصَّعْبَ وَالذَّلُوْلَ لَمْ نَأْخُذْ مِنَ النَّاسِ إِلَّا مَا نَعْرِفُ "या'नी एक वक़्त वोह था जब हम किसी से येह सुनते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तो हमारी आंखों से आंसू जारी हो जाते थे और अपने कानों को उसी त़रफ़ लगा लेते थे, लेकिन अब लोग सख़्ती और आसानी दोनों पर सुवार हो गए हैं । (या'नी ज़ईफ़ और ग़ैर मो'तबर रिवायात को बयान करना शुरूअ़ कर दिया है ।) लिहाज़ा अब हम सिर्फ़ उन्ही ह़दीसों को लेते हैं जिन के बारे में हम जानते हैं ।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه व दीगर तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अह़ादीस बयान करने में कितना ख़ौफ़े ख़ुदा रखते थे, काश हम भी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरते त़य्यिबा पर अ़मल करने वाले बन जाएं, अह़ादीस बयान करने में बहुत एह़तियात़ करें, जब तक येह मा'लूम न हो जाए कि येह वाक़ेई ह़दीसे मुबारका है, उस वक़्त तक बयान न करें, इस का सब से बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि आप के पास कोई भी ह़दीसे मुबारका आए तो उसे किसी मुफ़्ती साहि़ब या सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा आ़लिमे दीन से तस्दीक़ करवा लें कि येह वाक़ेई ह़दीसे मुबारका है, अगर वोह तस्दीक़ कर दें तो ही उसे आगे बढ़ाएं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ......مسلم، المقدمة، باب النهي عن الرواية، ص ١٠، حديث: ٧-

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म का शौक़े इल्मे ह़दीस

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी मुआ़मले में कोई ह़दीस मुस्तह़्ज़र न होती तो अपने अस्ह़ाब से उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाते । येह अ़मल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इल्म से अ़ज़ीम निस्बत पर दलालत करती है । कुतुबे अह़ादीस व सियर व तारीख़ में कई ऐसे वाक़िआ़त हैं । चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

बच्चा साक़ित़ करने के जुर्म के बारे में इस्तिफ़्सार

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से मश्वरा करते हुवे इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "है कोई जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बच्चा साक़ित़ करने के जुर्म के बारे में कोई ह़दीस सुनी हो ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "जी ! मैं ने सुनी है वोह येह कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मुआ़मले में एक ग़ुलाम या लौंडी आज़ाद करने का फ़ैसला किया ।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या इस पर तुम कोई गवाह ला सकते हो ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "जी ! मैं गवाही देता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मुआ़मले में येही फ़ैसला फ़रमाया ।"(1)

जिस्म को गुदवाने के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जिस्म को गूदने वाली एक औ़रत लाई गई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई ऐसा शख़्स है जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जिस्म गूदने के मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़दीस सुनी हो ।" सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं खड़ा हुवा और अ़र्ज़ किया : "जी हां ! मैं ने सुनी है ।" फ़रमाया : "तुम ने क्या सुना है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि न ही जिस्म को गूदो और न ही गुदवाओ ।"(2)

---

1 ......بخاری، کتاب الدیات، جنین المراۃ، ج۴، ص ۳۷۲، حدیث: ۶۹۰۷۔

2 ......بخاری، کتاب اللباس، باب المستوشمۃ، ج۴، ص ۸۶، حدیث: ۵۹۴۶۔

www.dawateislami.net

इल्म को फैलाने की तरग़ीब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्म फैलाने की तरग़ीब देते रहते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अ़जलान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

اَوْشَکَ اَنْ یُّقْبَضَ ھٰذَا الْعِلْمُ قَبْضًا سَرِیْعًا، فَمَنْ کَانَ مِنْکُمْ عِنْدَہٗ شَیْءٌ فَلْیَنْشُرْہُ غَیْرَ الْغَالِيْ فِیْہِ وَلَا الْجَافِيْ عَنْہُ

"या'नी अ़न क़रीब येह इल्म बहुत तेज़ी से उठा लिया जाएगा पस तुम में से जिस के पास भी कोई इल्मी बात हो उस पर अ़मल पैरा हो कर ग़ुलू से बचते हुवे उसे फैलाओ।"(1)

मुख़्तलिफ़ सुवालात करने की मुमानअ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी इल्मी सुवालात करते रहते थे और लोगों को भी इस की तरग़ीब दिलाते थे, अलबत्ता बा'ज़ बातों के मुतअ़ल्लिक़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुवाल करना सख़्त ना पसन्द था। चुनान्चे,

मा'दूम अश्या के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल की मुमानअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि : "ऐसी चीज़ों के बारे में सुवाल न करो जिन का वुजूद ही नहीं है क्यूंकि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुना कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे शख़्स पर ला'नत करते थे जो मा'दूम चीज़ों के बारे में सुवाल करता था।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि ख़्वाह म ख़्वाह के फ़ुज़ूल सुवालात अपनी त़रफ़ से बना कर मुख़्तलिफ़ लोगों से पूछते रहते हैं नीज़ अपने गुमान में वोह येह तसव्वुर करते हैं कि शायद हम कोई बहुत बड़ा कारनामा सर अन्जाम दे रहे हैं ह़ालांकि येह सरा सर

---

1 ......کنزالعمال، کتاب العلم، آداب العلم متفرقۃ، الجزء: ۱۰، ج۵، ص ۱۳۳، حدیث: ۲۹۴۹۰۔

2 ......دارمی، باب کراھیۃ الفتیا، ج ۱، ص ۶۲، حدیث: ۱۲۱۔

www.dawateislami.net

जहालत और बे वुक़ूफ़ी वाला काम है। यक़ीनन सुवाल इ़ल्म की चाबी है कि सुवाल करने से इ़ल्म में इज़ाफ़ा होता है लेकिन येह भी याद रखें कि अहले इ़ल्म से फ़ुज़ूल सुवालात कर के उन के क़ीमती वक़्त को बरबाद करने से न सिर्फ़ दुन्या का नुक़्सान है बल्कि उस आ़लिमे दीन का वक़्त बरबाद करने और उस की दिल आज़ारी की सूरत में उख़रवी ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना भी हो सकता है। लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई इस मुआ़मले में बहुत एह़तियात़ फ़रमाएं।

सितारों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल की मुमानअ़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "सितारों के बारे में सुवाल न करो अपनी राए से क़ुरआन की तफ़्सीर न करो मेरे सह़ाबा को गाली न दो क्यूंकि बेशक येही ख़ालिस ईमान है।"(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पहले के लोग रात के वक़्त सितारों की मदद से रास्तों को पहचानते थे, आज कल के जदीद दौर में इस बात की कोई ख़ास ह़ाजत नहीं। ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन का एक फ़ासिद अ़क़ीदा येह भी था कि वोह उन सितारों को मुअस्सिर बिज़्ज़ात (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर ब ज़ाते ख़ुद नफ़्अ़ व नुक़्सान देने वाला) समझते थे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी को मुअस्सिर बिज़्ज़ात समझना कुफ़्र है। मज़्कूरए बाला रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को सब्बो शतम न करना ख़ालिस ईमान है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के उ़श्शाक़ आज चौदह सौ साल के बा'द भी उन की ता'रीफ़ और शान ही बयान करते हैं, जब कि बा'ज़ लोग आज भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बुरा भला कहते नज़र आते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उन तमाम शरीरों के शर और फ़ासिदों के फ़साद से मह़फ़ूज़ फ़रमाए, हमें सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के आ़शिक़ों की सोह़बत अ़त़ा फ़रमाए नीज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के गुस्ताख़ों की सोह़बत से मह़फ़ूज़ फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)......كنزالعمال، كتاب الايمان والاسلام، الباب الثانى فى الاعتصام ـــ الخ، الجزء: ١، ج ١، ص ١٩٩، حديث: ١٦٢٩ مختصراً۔

www.dawateislami.net

रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत की कोशिशें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ मर्रा की उ़मूमी मुलाक़ात और मा'मूलात में अपनी रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत का भी ख़ास एहतिमाम फ़रमाया करते थे। रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत के ह़वाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो त़रह़ के अक़्वाल इन्तिहाई अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं :

(1)......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जुमुअ़तुल मुबारक के बयानात और अह़ादीस व अक़्वाल पर मुश्तमिल वोह बयानात जो आप मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर दिया करते थे।

(2)......वोह इस्लाह़ी अक़्वाल जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या तो किसी मख़्सूस मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाते या किसी मख़्सूस फ़र्द या चन्द अफ़राद के सामने बयान फ़रमाते थे।

फ़ारूक़े आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ इस्लाह़ी मल्फ़ूज़ात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ ख़ुत़बात व अक़्वाल के गुलदस्ते "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" जिल्द अव्वल, बाब "मल्फ़ूज़ाते फ़ारूक़े आ'ज़म" स. 245 पर मुलाह़ज़ा किये जा सकते हैं, अलबत्ता यहां हम सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रिआ़या के लिये चन्द इस्लाह़ी मल्फ़ूज़ात मअ़ तरग़ीब ज़िक्र करते हैं :

(1)......अ़मल में इख़्लास की तरबिय्यत

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इख़्लास के बाब में येह ह़दीसे मुबारका बयान फ़रमाई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है, हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की, पस जिस शख़्स ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ हिजरत की तो उस की हिजरत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ है और जिस ने दुन्या के लिये हिजरत की, कि वोह उसे मिल जाए या किसी औ़रत की त़रफ़ कि उस से निकाह़ कर ले तो उस की हिजरत उसी की त़रफ़ है जिस की त़रफ़ उस ने हिजरत की।"(1)

---

1 ......بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی، ج ۱، ص ۵، حدیث : ۱ ۔

www.dawateislami.net

हर अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इख़्लास की ता'रीफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "सुन लो ! **इख़्लास** उसे कहते हैं कि तेरा हर अ़मल सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये हो, न लोगों की ता'रीफ़ो तौसीफ़ की तुझे ख़्वाहिश हो और न ही मज़म्मत व बुराई की परवाह हो। येह बात अच्छी त़रह़ समझ लो ! कि रियाकारी लोगों की (त़रफ़ से अपनी) ता'ज़ीमो तौक़ीर (की ख़्वाहिश रखने की वज्ह) से पैदा होती है। इस का इ़लाज येह है कि तू तमाम लोगों को **अल्लाह** तआ़ला की त़ाक़त व क़ुदरत के सामने मुसख़्ख़र ख़याल करे और येह गुमान कर ले कि उन्हें जमादात की त़रफ़ नफ़्अ़, नुक़्सान पहुंचाने में कोई इख़्तियार नहीं। और जब तक तू ऐसा नहीं करेगा, तुझे रियाकारी जैसी ख़त़रनाक और बुरी बीमारी से नजात नहीं मिल सकती।"(1)

अ़ल्लामा क़ुशैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "**इख़्लास** येह है कि इरादे के साथ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इ़बादत की जाए या'नी वोह इ़बादत के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करे कोई और मक़्सद न हो, न तो मख़्लूक़ के लिये बनावट हो न लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश हो और न ही लोगों से ता'रीफ़ करवाने की मह़ब्बत हो बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब के इ़लावा कोई दूसरी बात पेशे नज़र न हो। येह कहना भी सह़ीह़ है कि मख़्लूक़ की निगाहों से अपने फ़े'ल को पाक रखने का नाम इख़्लास है। येह कहना भी दुरुस्त है कि लोगों की निगाहों से बचने का नाम इख़्लास है। ह़दीसे क़ुदसी है : "इख़्लास मेरे राज़ों में से एक राज़ है, मैं जिस बन्दे से मह़ब्बत करता हूं इसे उस के दिल में रख देता हूं।"(2)

(2)......हर नेकी की अस्ल या'नी "मुराक़बा" की तरबिय्यत

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की वोह ह़दीसे मुबारका बयान की जब वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और मुख़्तलिफ़ सुवालात किये, एक सुवाल यूं किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! एह़सान क्या है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एह़सान येह है कि तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इ़बादत कर कि गोया तू उसे देख रहा है और अगर तू उसे नहीं देख रहा तो क्या हुवा वोह तो तुझे देख ही रहा है।"(3)

---

1 ......مجموعہ رسائل امام غزالی، ایھاالولد، ص ۲۶۳۔

2 ......رسالۂ قشیریہ، باب الاخلاص، ص ۲۴۲-۲۴۳۔

3 ......بخاری، کتاب الایمان، باب سوال جبریل النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ج ۱، ص ۳۱، حدیث: ۵۰ مختصرا۔

www.dawateislami.net

साहिबे रिसालए कुशैरिया हज़रते अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम हवाज़िन कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान कि **अगर तुम उसे नहीं देखते तो क्या हुवा वोह तो तुम्हें देख रहा है** येह हालते **मुराक़बा** की त़रफ़ इशारा है क्यूंकि **मुराक़बा** बन्दे के उस बात को जानने का नाम है कि रब عَزَّوَجَلَّ उसे देख रहा है इस इल्म की हमेशगी अपने रब के लिये मुराक़बा है और येह हर नेकी की अस्ल है और इस मर्तबे तक उसी वक़्त पहुंच सकता है जब मुहासबे से फ़ारिग़ हो जाए। जब मुहासबा कर ले तो मौजूदा वक़्त में अपनी इस्लाह़ करे, ह़क़ के रास्ते को लाज़िम पकड़ ले अपने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान दिल के मुआ़मले को अच्छा करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम के साथ अपनी सांसों को मह़फ़ूज़ रखे और अपने आ़म हालात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को देखता रहे और येह बात जान ले कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे देख रहा है और वोह उस के दिल के क़रीब है, उस के अह़वाल को जानता, उस के अफ़आ़ल को देखता और उस के अक़्वाल को सुनता है। जो शख़्स इन बातों से ग़ाफ़िल हुवा वोह वस्ले इलाही की इब्तिदा से ही किनारा कश है, वोह कुरबत के ह़क़ाइक़ को कैसे पा सकता है ?"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जिस अ़मल में **मुराक़बा** हो "या'नी अ़मल करते हुवे आदमी येह तसव्वुर करे कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है तो यक़ीनन वोह अ़मल इख़्लास से भरपूर होगा, इस में ग़लती का अन्देशा न होने के बराबर होगा, हर अ़मल की अस्ल ही येही है कि बन्दा येह तसव्वुर करे कि मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है। **मुराक़बा** नेक आ'माल के करने और बुरे आ'माल से बचने में मुआ़वनत करता है। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने पूछा : "आप अपनी औलाद की तरबिय्यत कैसे फ़रमाते हैं ?" क्यूंकि हम देखते हैं वोह बहुत ही नेक और परहेज़गार है।" फ़रमाया : "मैं अपनी औलाद को सिर्फ़ एक ही बात सिखाता हूं कि बेटा जब भी कोई काम करो तो हमेशा येह बात ज़ेहन में रखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुझे देख रहा है**।" बस इस की बरकत से उन्हें नेक आ'माल पर हमेशगी हासिल होती है और बुरे आ'माल से दूरी।"(2)

---

1 ......رسالۂ قشیریہ، باب المراقبۃ، ص ۲۲۵۔

2 ......رسالۂ قشیریہ، باب المراقبۃ، ص ۲۲۶۔۲۲۷۔

www.dawateislami.net

(3)......आ'माल में इस्तिक़ामत की तरबिय्यत

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا﴾(پ۲۴، حم السجدة: ۳۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है फिर उस पर क़ाइम रहे।"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब येह आयते मुबारका तिलावत करते तो इरशाद फ़रमाया करते : "बेशक लोगों ने कहा और फिर उस से फिर गए, तो जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर जमा रहा पोशीदा, ए'लानिय्या, तंगी में, ख़ुशहाली में तो यक़ीनन ऐसा शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरा।" और एक दफ़्आ़ इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ के लिये **इस्तिक़ामत** इख़्तियार की और लोमड़ी के मक्र की त़रह़ मक्र न किया।"(1)

इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्तिक़ामत एक ऐसा दरजा है जिस के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ उमूर की तक्मील होती है, जिस काम में इस्तिक़ामत नहीं होती वोह काम कभी पायए तक्मील तक नहीं पहुंचता, **इस्तिक़ामत** नेकियों के ह़ुसूल का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है, जो शख़्स अपने काम में **इस्तिक़ामत** इख़्तियार नहीं करता उस की कोशिश ज़ाएअ़ हो जाती है और उस की मेह़नत का उसे वोह समरा नहीं मिलता जिस की उसे तवक़्क़ोअ़ होती है। नीज़ जो शख़्स इस्तिक़ामत से मह़रूम होता है वोह कभी भी अपने मौजूदा मक़ाम से आगे नहीं बढ़ सकता। मश्हूर मक़ूला है : اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوْقَ الْكَرَامَةِ "या'नी **इस्तिक़ामत** करामत से बढ़ कर है।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली जौज़जानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**इस्तिक़ामत** इख़्तियार करो, करामत के त़लबगार न बनो क्यूंकि तुम्हारा नफ़्स करामत की त़लब में मुतह़र्रिक है ह़ालांकि तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम से **इस्तिक़ामत** का मुत़ालबा फ़रमाता है।"(2)

इस्तिक़ामत ह़ासिल करने के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कई इस्लामी भाइयों को येह शिकायत होती है कि हम अ़मल शुरूअ़ तो कर लेते हैं लेकिन उस में इस्तिक़ामत ह़ासिल नहीं कर पाते, मसलन कोई शख़्स मुत़ालए पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करना चाहता है, तो वोह चन्द दिन पाबन्दी से मुत़ालआ़ करेगा, बा'द में उस का

---

(1)......رسالۂ قشیریہ، باب الاستقامة، ص ۲۴۰۔

(2)......رسالۂ قشیریہ، باب الاستقامة، ص ۲۴۰۔

www.dawateislami.net

मा'मूल ख़त्म हो जाएगा। वाज़ेह़ रहे कि **अव्वलन** फ़राइज़ो वाजिबात के इ़लावा किसी भी नेक अ़मल पर इस्तिक़ामत पाने के लिये सब से पहले इस्तिक़ामत की निय्यत या'नी दिल में इस्तिक़ामत ह़ासिल करने का पुख़्ता इरादा होना बहुत ज़रूरी है जब तक पुख़्ता इरादा नहीं होगा उस वक़्त तक इस्तिक़ामत का ह़ुसूल बहुत मुश्किल है। **सानिय्यन** किसी भी नेक अ़मल को शुरूअ़ करने से पहले रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस पर इस्तिक़ामत की दुआ़ मांगिये कि दुआ़ मोमिन का हथयार है, यक़ीनन किसी भी नेक अ़मल पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करना शैत़ान के ख़िलाफ़ एक अ़ज़ीम जंग है और जंग बिग़ैर हथयार के लड़ना समझदारी का काम नहीं और जंग भी वोह जो शैत़ान जैसे ख़त़रनाक दुश्मन के ख़िलाफ़ हो। **सालिसन** जिस अ़मल को शुरूअ़ करें उस में इब्तिदाअन जल्दी की कोशिश न करें बल्कि आहिस्ता आहिस्ता शुरूअ़ करें, फिर उस में इज़ाफ़ा करते जाएं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत पाने में कामयाब हो जाएंगे। मसलन कोई इस्लामी भाई मुत़ालआ़ करने में इस्तिक़ामत चाहता है तो उसे चाहिये कि इब्तिदाअन मुत़ालए़ के सफ़ह़ात मुक़र्रर कर ले कि रोज़ाना कम अज़ कम दो सफ़ह़ात मुत़ालआ़ करूंगा। फिर इसी पर अ़मल करता रहे, जब देखे कि अब येह मेरा मा'मूल बन चुका है तो एक सफ़ह़े का इज़ाफ़ा कर दे और रोज़ाना तीन सफ़ह़ात का मुत़ालआ़ करे इस त़रह़ सफ़ह़ात बढ़ाता जाए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत पाने में कामयाबी ह़ासिल हो जाएगी। नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत पाने का एक मदनी नुस्ख़ा येह भी है कि आप दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, अपने अ़लाके़ में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा अ़ज़ीम मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** के तह़्त ख़ुद भी मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये, मदनी मर्कज़ के दिये हुवे जदवल के मुत़ाबिक़ हर माह तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से बचने, नेक आ'माल करने, इन पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करने और आख़िरत के लिये कुढ़ने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ईमां पे रब्बे रह़मत दे दे तू इस्तिक़ामत
देता हूं वासित़ा मैं तुझ को तेरे नबी का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4)……मुसीबतों पर सब्र की तरबिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक मक्तूब रवाना किया जिस में **सब्र** के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : "जान लो कि **सब्र** दो त़रह़ का होता है, उन में से एक दूसरे से अफ़्ज़ल है, मुसीबतों में सब्र करना अच्छा है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों में **सब्र** करना या'नी उन से रुक जाना इस से भी अफ़्ज़ल है, येह भी जान लो कि **सब्र** ईमान का ह़िस्सा है क्यूंकि ईमान वालों की एक अ़ज़ीम सिफ़त तक़्वा सब से अफ़्ज़ल नेकी है और येह **सब्र** ही के साथ ह़ासिल होता है।"(1)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार इरशाद फ़रमाया : **نِعْمَ الْعِدْلَانِ وَنِعْمَ الْعِلَاوَةُ الَّذِيْنَ اِذَا اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ** "या'नी क्या ही बेहतर हैं दोनों बोरियां और उन के दरमियान इज़ाफ़ी सामान उन के लिये जिन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं कि बेशक हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं और हमें उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है, उन लोगों पर उन के रब की त़रफ़ से दुरूद और रह़मत हो और वोही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।" "**इदलैन**" या'नी दोनों बोरियों से मुराद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सलवात या'नी दुरूद और रह़मत जब कि "**इलावा**" से मुराद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिदायत ली।(2)

आज़माइशों पर सब्र बाइसे अज्र है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर त़रह़ की आज़माइशों पर **सब्र** करना बाइ़से अज्र है। खु़सूसन किसी आज़्माइश की इब्तिदा में सब्र करना कि बा'द में तो सब को सब्र आ ही जाता है। मुसीबत पर सब्र करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा और बेहतरीन भलाई है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है **सब्र** जैसी अ़ज़ीम भलाई अ़त़ा फ़रमाता है। रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी बन्दे को सब्र से बेहतर और वुस्अ़त वाली कोई भलाई अ़त़ा नहीं फ़रमाई।"(3)

---

1 ……احیاءعلوم الدین، کتاب الصبر والشکر، بیان فضیلۃ الصبر، ج ۴، ص ۷۷۔

2 ……بخاری، کتاب الجنائز، الصبر عند الصدمۃ الاولی، ج ۱، ص ۴۴۱، تحت الباب: ۴۲۔

3 ……بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الاستعفاف عن المسئلۃ، ج ۱، ص ۴۹۶، حدیث: ۱۴۶۹ مختصراً۔

www.dawateislami.net

किसी मुसीबत पर सब्र करने ही में आ़फ़िय्यत है, मुसीबत पर वावेला मचाना, शोर शराबा करना, नीज़ सब्र का दामन हाथ से छोड़ना बा'ज़ औक़ात दीनो ईमान को ख़त़रे में डाल देता है, कई लोगों को देखा गया है कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ उन पर कोई बड़ी मुसीबत आ जाए तो कुफ़्रिय्यात तक बक देते हैं, ह़ालांकि वोह येह नहीं सोचते कि येह तक्लीफ़ भी उसी रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आई है जिस ने करोड़ों ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं, क्या हम ने रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का शुक्र अदा कर दिया जो अब तकालीफ़ पर बे सब्री का मुज़ाहरा करते हैं ? याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे और मह़बूब बन्दों को आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे इस आज़माइश पर सब्र करते हैं या नहीं ? चुनान्चे, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन आज़माइशों पर सब्र करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का ही ह़िस्सा है। काश ! हम भी आज़माइशों पर सब्र करने वाले और शुक्र कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने वाले बन जाएं। आज़माइशों पर सब्र करने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह भी है जब कोई मुसीबत या आज़माइश आए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर आने वाली आज़माइशें याद करें, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर तमाम बुज़ुर्गाने दीन पर आने वाली आज़माइशों को याद कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दिल को तसल्ली हो ही जाएगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5)......ने'मतों पर शुक्र की तरबिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब आख़िरी ह़ज कर के वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मुतअ़ल्लिक़ीन की शुक्र पर तरबिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह जिसे चाहता है जो चाहता है अ़त़ा फ़रमाता है।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बचपन का वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाया : "एक वक़्त वोह था जब मैं वादिये ज़जनान में अपने वालिद ख़त़्त़ाब के ऊंट चराया करता था काम के दौरान उस की बेजा सख़्तियां मुझे थका देती, वोह मेरी मा'मूली ग़लत़ियों पर तशद्दुद का निशाना बनाता था, लेकिन अब मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी का ख़ौफ़ नहीं।"(2)

1......بخاری، کتاب المرضی، باب ماجاء کفارۃ المرض، ج ۴، ص ۴، حدیث: ۵۶۴۵-

2......الاستیعاب، عمر بن الخطاب، ج ۳، ص ۲۴۳-

www.dawateislami.net

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसीबतों और बलाओं पर शुक्र की तरग़ीब दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जब मैं किसी मुसीबत में मुब्तला होता हूं उस वक़्त भी मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन चार ने'मतों का नुज़ूल होता है : ۞ "ऐन इस मुसीबत के वक़्त मैं गुनाह में मुब्तला नहीं होता।" ۞ "इस मुसीबत के वक़्त मुझ पर इस से बड़ी कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती।" ۞ "इस मुसीबत के वक़्त मैं इस पर राज़ी होता हूं।" ۞ "इस मुसीबत के वक़्त मुझे इस पर सवाब की उम्मीद होती है।"[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़्कूरए बाला दोनों फ़रामीन हमारे लिये मश्अ़ले राह हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ई जन्नती सह़ाबी होने के बा वुजूद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कितना ख़ौफ़ रखते थे, आज हमारी ह़ालत येह है कि रब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानियों में दिन रात मश्ग़ूल हैं लेकिन इस के बा वुजूद हमारी ज़ात में ज़र्रा बराबर ख़ौफ़ नहीं, नीज़ आख़िरत में बख़्शिश के भी त़लबगार हैं, याद रखिये ! क़ियामत में बख़्शिश दुन्या से ईमान पर ख़ातिमे पर मौक़ूफ़ है और ईमान पर ख़ातिमे के अस्बाब में से एक सबब नेक आ'माल भी हैं, लिहाज़ा अपनी इस्लाह़ की कोशिश के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ की कोशिश भी करते रहिये और ढेरों भलाइयां ह़ासिल कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6)......दुन्यवी पकड़ से ख़ौफ़ दिलाना

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी से बाहर निकले तो देखा कि ग़ल्ला बिखरा पड़ा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे तक़्सीम करने की बात की तो मा'लूम हुवा कि वोह एक ग़ुलाम का है, जो उस ने ज़ख़ीरा किया हुवा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस ग़ुलाम को बुला कर दुन्यवी पकड़ का ख़ौफ़ दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि जो मुसलमानों पर उन के अनाज को रोक लेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़ुरबत व इफ़्लास की मुसीबत डाल देगा या जुज़ाम या'नी कोढ़ के मरज़ में मुब्तला फ़रमा देगा।" येह सुन कर उस ग़ुलाम ने दोबारा येह काम न करने का अ़ह्द किया।[2]

---

1 ......فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ج۲، ص۷۹، تحت الحدیث:۱۵۰۶۔

2 ......مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج۱، ص۵۵، حدیث:۱۳۵ ملخصاً

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि कल बरोज़े क़ियामत हर हर अ़मल का हि़साब और इस के मुत़ाबिक़ सज़ा व जज़ा का मुआ़मला होगा लेकिन बा'ज़ आ'माल ऐसे भी हैं जिन की पकड़ रब عَزَّوَجَلَّ दुन्या में ही फ़रमाता है जैसे कि ज़ख़ीरा अन्दोज़ी का दुन्यवी वबाल बयान किया गया। बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़स्सा 16, स. 482 पर है : "एह़तिकार (या'नी ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) ममनूअ़ है। एह़तिकार के येह मा'ना हैं कि खाने की चीज़ को इस लिये रोकना कि गिरां (महंगी) होने पर फ़रोख़्त करेगा।" यक़ीनन समझदार वोही है जो अपने आप को दुन्या व आख़िरत दोनों की पकड़ से बचाने की कोशिश करे, ऐसे आ'माल करे कि न तो दुन्यवी नुक़्सान हो न ही उख़रवी नुक़्सान। अपने आप को दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात से बचाने का एक मदनी नुस्ख़ा येह भी है कि आप दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ होने वाले मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत कीजिये कि इन तमाम मा'मूलात से इल्मे दीन व अह़कामे शरइय्या का ऐसा ख़ज़ाना हासिल होगा जिस से दुन्या व आख़िरत दोनों की बे शुमार भलाइयां हासिल होंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7)......उम्मीद व ख़ौफ़ दोनों को जम्अ़ करने की तरग़ीब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर येह निदा की जाए कि तमाम लोग जहन्नम में जाएंगे सिवाए एक शख़्स के तो मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि वोह एक शख़्स मैं ही हूं, अगर येह निदा की जाए कि तमाम लोग जन्नत में होंगे सिवाए एक शख़्स के तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ के सबब मैं येह समझूंगा कि वोह एक शख़्स मैं ही होऊं।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़ी ईमान वोही है जो उम्मीद व ख़ौफ़ दोनों के दरमियान हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से कोई वाक़िफ़ नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर भरोसा

---

1 ......حلیۃ الاولیاء، عمر بن الخطاب، ج۱، ص ۸۹۔

www.dawateislami.net

भी हो और उस के साथ साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हो कर बन्दा गुनाहों में भी मुस्तग्रक़ हो तो येह गुनाहे कबीरा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾﴾ (پ۹، الاعراف:۹۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो अल्लाह की ख़ुफ़ी तदबीर से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना सब से बड़ा गुनाह है। चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कि "कबीरा गुनाह कौन से हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना और येह सब से बड़ा गुनाह है।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से हमेशा डरते रहिये कि बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि कोई शख़्स पूरी ज़िन्दगी बुरे आ'माल करता रहता है और मरने से पहले तौबा कर लेता है और उस का ख़ातिमा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान पर होता है, और ऐसा भी होता है कि कोई शख़्स पूरी ज़िन्दगी अच्छे आ'माल करता रहता है मगर तक़्दीर उस पर ग़ालिब आती है और वोह मरने से पहले कलिमए कुफ़्र बक देता है जिस के सबब مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का ईमान सल्ब हो जाता है, और तबाही व बरबादी उस का मुक़द्दर बन जाती है। चुनान्चे, सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से कोई जन्नतियों वाले अ़मल करता है यहां तक कि उस के और जन्नत के दरमियान एक गज़ का फ़ासिला रह जाता है फिर तक़्दीर का लिखा उस पर ग़ालिब आ जाता है तो वोह जहन्नमियों के काम करते हुवे जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।"(2)

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा जहन्नमियों के काम करता है ह़ालांकि वोह जन्नती होता है और कोई शख़्स जन्नतियों के अ़मल करता है ह़ालांकि वोह जहन्नमियों में से होता है, क्यूंकि आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर ही होता है।"(3)

---

(1) ......معجم كبير، عبد الله بن مسعود الهذلى، ج ۹، ص ۱۵٦، حديث: ۸۷۸۴۔

(2) ......مسلم، كتاب القدر، باب كيفية الخلق الآدمى۔۔۔الخ، ص ۱۴۲۱، حديث: ۱۔

(3) ......بخارى، كتاب الرقاق، باب الاعمال۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۴۴، حديث: ٦۴۹۳ مختصرا۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से फ़िरिश्ते भी डरते हैं। मरवी है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इब्लीसे लईन के साथ खुफ़्या तदबीर फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन और ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल (عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) रोने लगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया (ह़ालांकि वोह ब ख़ूबी जानता है) : "तुम दोनों को किस चीज़ ने रुलाया है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसे ही रहो मेरी खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ मत होना।"(1)

क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा कर लें ?

सिर्फ़ तक़्दीर ही पर भरोसा कर लेना दुरुस्त नहीं क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब मज़्कूरा बात सुनी तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर अ़मल किस लिये करें ? क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा न कर लें ?" तो ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि अ़मल करो, क्यूंकि जिसे जिस काम के लिये पैदा किया गया है उस के लिये वोह काम आसान कर दिया जाता है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयात तिलावत फ़रमाई :

﴿فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَ اتَّقٰى ۙ۝۵ وَ صَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ۝۶ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْیُسْرٰى ؕ۝۷
وَ اَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَ اسْتَغْنٰى ۙ۝۸ وَ كَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ۝۹ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ۝۱۰﴾ (پ۳۰، اللیل:۵تا۱۰)

"**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह जिस ने दिया और परहेज़गारी की और सब से अच्छी को सच माना तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे और वोह जिस ने बुख़्ल किया और बे परवाह बना और सब से अच्छी को झुटलाया तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बनी इसराईल के आ़लिम बलअ़म बिन बाऊ़रा का जो वाक़िआ़ बयान फ़रमाया है, उस पर भी ग़ौर करना चाहिये कि वोह किस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ हुवा और जन्नत की अबदी ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्या के फ़ानी माल पर क़नाअ़त कर के अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी में लग गया। मन्क़ूल है कि "जब उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़िलाफ़ दुआ़ का पुख़्ता इरादा कर लिया तो उस की ज़बान सीने तक लटक गई, वोह कुत्ते की त़रह़ हांपने लगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस से ईमान, इल्म और मा'रिफ़त सल्ब कर ली।"(2)

1 ......احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ج۴، ص ۲۲۳۔

2 ......الزواجر، الکبیرۃ التاسعۃ والثلاثون ۔۔۔ الخ، ج۱، ص ۱۸۷۔

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न हों

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर का मुआ़मला पढ़ कर हरगिज़ रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न हों, रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है । चुनान्चे, रह़मते खुदावन्दी पर तीन अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सौ रह़मतें हैं उन में से हर रह़मत ज़मीनो आस्मान के दरमियान की हर चीज़ को ढांप सकती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन में से एक रह़मत नाज़िल फ़रमा कर जिन्नो इन्स और जानवरों में तक़्सीम फ़रमा दिया, इसी वज्ह से वोह एक दूसरे पर मेहरबानी और रह़्म करते हैं, इसी वज्ह से परन्दे और वह़शी जानवर अपनी औलाद पर मेहरबानी करते हैं और बाक़ी 99 रह़मतों के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर रह़्म फ़रमाएगा ।"[1]

(2)......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ फ़रज़न्दे आदम ! तू जब तक मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से उम्मीद रखेगा मैं तुझ से सरज़द होने वाले गुनाहों को मिटाता रहूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं, ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान की बुलन्दियों को पहुंच जाएं फिर तू मुझ से मग़्फ़िरत त़लब करे तो मैं तुझे बख़्श दूं, ऐ इब्ने आदम ! अगर तू मेरे पास ज़मीन के बराबर भी गुनाह ले कर आए और मुझ से इस ह़ाल में मिले कि तू ने किसी को मेरा शरीक न ठहराया हो तो मैं तुझे ज़मीन के बराबर मग़्फ़िरत अ़त़ा फ़रमाऊंगा ।"[2]

(3)......मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक नौजवान के पास तशरीफ़ ले गए जिस पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "कैसा मह़सूस कर रहे हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता हूं और अपने गुनाहों पर ख़ौफ़ज़दा हूं ।" तो साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसे वक़्त में जब बन्दे के दिल में येह दो चीज़ें जम्अ़ हो जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की उम्मीद पूरी फ़रमा देता है और इस के ख़ौफ़ से उसे अम्न अ़त़ा फ़रमाता है ।"[3]

---

1 ......مسلم، کتاب التوبة، باب فی سعة رحمة اللہ تعالی وانها سبقت غضبه، ص ۱۴۷۲، حدیث: ۱۹ ملخصا۔

2 ......ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبة ۔۔۔ الخ، ج۵، ص ۳۱۷، حدیث: ۳۵۵۱۔

3 ......ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی تشدید عند الموت، ج۲، ص ۲۹۶، حدیث: ۹۸۵۔

www.dawateislami.net

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8)......ख़ौफ़े ख़ुदा की पहचान का त़रीक़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता है वोह अपने ग़ुस्से पर अ़मल नहीं करता, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये तक़्वा इख़्तियार करता है वोह अपनी मनमानी नहीं करता कि जो चाहे कर डाले और अगर क़ियामत का दिन न होता तो जो ह़ाल तुम अब देखते हो उस से बदला हुवा ह़ाल होता।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़क़ीक़त से किसी मुसलमान को इन्कार नहीं हो सकता कि मुख़्तसर सी ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारने के बा'द हर एक को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तमाम आ'माल का ह़िसाब देना है। जिस के बा'द रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह होने की सूरत में जन्नत की आ'ला ने'मतें हमारा मुक़द्दर बनेंगी या फिर गुनाहों की शामत के सबब مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम की हौलनाक सज़ाएं हमारा नसीब होंगी। लिहाज़ा इस दुन्यावी ज़िन्दगी की रौनक़ों, मसर्रतों, और रा'नाइयों में खो कर ह़िसाबे आख़िरत के बारे में ग़फ़्लत का शिकार हो जाना यक़ीनन नादानी है। याद रखिये ! हमारी नजात इसी में है कि हम रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करते हुवे अपने लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करें और गुनाहों के इरतिकाब से परहेज़ करें। इस मक़्सदे अ़ज़ीम में कामयाबी ह़ासिल करने के लिये दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा का होना भी बेह़द ज़रूरी है। क्यूंकि जब तक येह ने'मत ह़ासिल न हो गुनाहों से फ़रार और नेकियों से प्यार तक़रीबन ना मुमकिन है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ौफ़े ख़ुदा पर मुश्तमिल येह फ़रमान हमारे लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह है। ख़ौफ़े इलाही की भी चन्द अ़लामात हैं, जिन के सबब हमें अपनी क़ल्बी कैफ़िय्यत का अन्दाज़ा करने में दिक़्क़त पेश नहीं आएगी, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ की अ़लामत आठ चीज़ों में ज़ाहिर होती है :

---

1 ......كتاب الزهد لابی داود، من زهد عمر---الخ، ص ١٠٩، الرقم: ١٠٥۔

www.dawateislami.net

(1)......"इन्सान की ज़बान में, वोह इस त़रह़ कि रब तआ़ला का ख़ौफ़ उस की ज़बान को झूट, ग़ीबत फ़ुज़ूल गोई से रोकेगा और उसे ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ, तिलावते क़ुरआन और इल्मी गुफ़्तगू में मश्ग़ूल रखेगा।" (2)......"उस के शिकम में, वोह इस त़रह़ कि वोह अपने पेट में ह़राम को दाख़िल न करेगा और ह़लाल चीज़ भी ब क़दरे ज़रूरत खाएगा।" (3)......"उस की आंख में, वोह इस त़रह़ कि वोह उसे ह़राम देखने से बचाएगा और दुन्या की त़रफ़ रग़बत से नहीं बल्कि ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये देखेगा।" (4)......"उस के हाथ में, वोह इस त़रह़ कि वोह कभी भी अपने हाथ को ह़राम की जानिब नहीं बढ़ाएगा बल्कि हमेशा इत़ाअ़ते इलाही में इस्ति'माल करेगा।" (5)......"उस के क़दमों में, वोह इस त़रह़ कि वोह उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी में नहीं उठाएगा बल्कि उस के ह़ुक्म की इत़ाअ़त के लिये उठाएगा।" (6)......"उस के दिल में, वोह इस त़रह़ कि वोह अपने दिल से बुग़्ज़, कीना और मुसलमान भाइयों से ह़सद करने को दूर कर दे और इस में ख़ैरख़्वाही और मुसलमानों से नर्मी का सुलूक करने का जज़्बा बेदार करे।" (7)......"उस की इत़ाअ़त व फ़रमांबरदारी में, इस त़रह़ कि वोह फ़क़त़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये इ़बादत करे और रिया व निफ़ाक़ से ख़ाइफ़ रहे।" (8)......"उस की समाअ़त में, इस त़रह़ कि वोह जाइज़ बात के इ़लावा कुछ न सुने।"(1)

इस तफ़्सील से ब ख़ूबी मा'लूम हो गया कि क़ब्रो ह़श्र और ह़िसाब व मीज़ान वग़ैरा के ह़ालात सुन कर या पढ़ कर मह़ज़ चन्द आहें भर लेना....या...अपने सर को चन्द मरतबा इधर उधर फिरा लेना....या...कफ़े अफ़्सोस मल लेना...या फिर....चन्द आंसू बहा लेना ही काफ़ी नहीं, बल्कि इस के साथ साथ ख़ौफ़े ख़ुदा के अ़मली तक़ाज़ों को पूरा करते हुवे गुनाहों का तर्क कर देना और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हो जाना भी उख़रवी नजात के लिये बेह़द ज़रूरी है। इस का एक बेहतरीन ज़रीआ़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात भी हैं, इन पर अ़मल करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होने के साथ साथ नेकियां करने और गुनाहों से बचने का मदनी ज़ेह्न बनेगा। रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे मदनी इन्आ़मात का रिसाला हर माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से दीनो दुन्या की बेशुमार भलाइयां हाथ आएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......درة الناصحين، المجلس الثلاثون...الخ، ص ۱۰۹ ـ

www.dawateislami.net

(9)......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर तवक्कुल की तरबिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ऐसे तवक्कुल करो जैसा तवक्कुल करने का ह़क़ है तो वोह तुम्हें वैसे ही रिज़्क़ देगा जैसे परन्दों को देता है कि वोह सुब्ह़ ख़ाली पेट जाते हैं और वापस सैर हो कर आते हैं।"(1)

कुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ
وَ مَنْ یَّتَّقِ اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ یَرْزُقْهُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ
قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾﴾ (پ۲۸، الطلاق:۲تا۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जो अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है।"

अस्बाब पर नज़र तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अस्बाब पर नज़र रखना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अपनी ऊंटनी को बांध कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करूं या खोल कर ?" फ़रमाया : "उसे बांधो और फिर तवक्कुल करो।"(2)

ह़क़ीक़ी मुतवक्किल कौन है ?

यक़ीनन ह़क़ीक़ी मुतवक्किल वोही है जो अस्बाब के बजाए ख़ालिके़ अस्बाब पर नज़र रखे। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि "तवक्कुल क्या है ?" फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा तमाम झूटे ख़ुदाओं से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करना और अस्बाब से भी

---

1 ......ترمذی، کتاب الزھد عن رسول اللہ، باب فی التوکل علی اللہ، ج۴، ص۱۵۴، حدیث:۲۳۵۱۔

2 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ج۴، ص۲۳۲، حدیث:۲۵۲۵۔

www.dawateislami.net

तअ़ल्लुक़ ख़त्म कर देना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान हियरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद करते हुवे (बिग़ैर अस्बाब के फ़क़त़) उसी पर इक्तिफ़ा करना तवक्कुल है।"(1)

वाक़ेई जो इस दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुवे थोड़े से रिज़्क़ पर राज़ी होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कल बरोज़े क़ियामत उस के थोड़े से अ़मल पर राज़ी हो जाएगा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के थोड़े अ़मल पर राज़ी होगा।"(2)

मुतवक्किल की तीन अ़लामतें

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : "मुतवक्किल या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करने वाले की तीन अ़लामतें हैं : (1) वोह किसी से सुवाल नहीं करता। (2) अगर कोई दे दे तो उसे रद नहीं करता। (3) और जो ले ले उसे अपने पास जम्अ़ नहीं करता।"(3)

मन्क़ूल है कि सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی इन्ही तीन अ़लामतों को निहायत ही ख़ूब सूरत अन्दाज़ में यूं बयान फ़रमाया करते थे : "त़म्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं, जम्अ़ नहीं।"(4)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10)......सख़ावत व बुर्दबारी की तरबिय्यत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : اِنِّیْ لَاَعْلَمُ اَجْوَدَ النَّاسِ وَاَحْلَمَ النَّاسِ "या'नी मैं जानता हूं कि लोगों में सब से ज़ियादा सख़ी और सब से ज़ियादा ह़लीम या'नी बुर्दबार कौन है ?" फिर इरशाद फ़रमाया : اَجْوَدُ النَّاسِ مَنْ اَعْطٰی مَنْ حَرَمَهٗ وَاَحْلَمُ النَّاسِ مَنْ عُفِیَ عَمَّنْ ظَلَمَهٗ "या'नी लोगों में सब से ज़ियादा सख़ी वोह है जो मह़रूम करने वाले को अ़त़ा करे और सब से ज़ियादा बुर्दबार वोह है जो अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ करे।"(5)

---

1 ......رسالۃ قشیریہ، باب التوکل، ص ۲۰۲۔ ۲۰۳۔

2 ......شعب الایمان، باب فی تعدید نعم اللہ۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۳۹، حدیث: ۴۵۸۵۔

3 ......رسالۃ قشیریہ، باب التوکل، ص ۲۰۰۔

4 .... सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना, स. 12

5 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ۱۷۳۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ह़क़ीक़ी सख़ावत और सिलए रेह़्मी तो येही है कि जो हमें मह़रूम करे हम उसे अ़त़ा करें, जो हम पर ज़ुल्म करे हम उसे मुआ़फ़ कर दें क्यूंकि जो हमें अ़त़ा करे और फिर हम उसे अ़त़ा करें तो येह ह़क़ीक़ी सिलए रेह़्मी नहीं बल्कि येह तो उस की अ़त़ा का बदला है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सिलए रेह़्मी इस का नाम नहीं कि बदला दिया जाए या'नी उस ने इस के साथ एह़सान किया इस ने उस के साथ कर दिया, बल्कि सिलए रेह़्मी करने वाला वोह है कि उधर से काटा जाता है और येह जोड़ता है ।"(1)

सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्त़रीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "सिलए रेह़्मी इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए । ह़क़ीक़तन सिलए रेह़्मी येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तिनाई करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के ह़ुक़ूक़ की मुराआ़त करो ।"(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11)......नसीह़त करने वाले की बात मानने की तरबिय्यत

मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास कुछ माल भेजा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मुसलमानों में तक़्सीम कर दिया । कुछ माल बच गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के मुतअ़ल्लिक़ मुशावरत करने के लिये लोगों को बुलाया और उन से मश्वरा त़लब किया तो एक नौजवान लड़का खड़ा हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : "मुशावरत तो उस मुआ़मले में की जाती है जिस के बारे में क़ुरआन का कोई ह़ुक्म मौजूद न हो, इस माल के बारे में तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़ुक्म मौजूद है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस माल को उन्ही मसारिफ़ में ख़र्च कर दें जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़र्च करने का ह़ुक्म दिया है ।"(3)

---

1 ......بخاری، کتاب الادب، باب لیس الواصل بالمکافیئ، ج ۴، ص ۹۸، حدیث: ۵۹۹۱۔

2 .....बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा 16, स. 560 ।

3 ......الاستیعاب، صعصعۃ بن صوحان العبدی، ج ۲، ص ۲۷۳۔

www.dawateislami.net

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस उम्मत के मुह़द्दस या'नी इल्हामी कलाम करने वाले थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को कु़रआनो सुन्नत की ताईद ह़ासिल थी, खु़द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए को दुरुस्त क़रार दिया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़र व ह़ज़र दोनों में अक्सर औक़ात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहने वाले थे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के बारे में फ़रमाया था कि ह़क़ मेरे बा'द उ़मर के साथ होगा चाहे वोह जहां भी हो, क़त़ई जन्नती सह़ाबी होने के बा वुजूद आप का येह अ़ज़ीम ज़र्फ़ था कि आप ने दौराने मश्वरा एक नौजवान की राए फ़राख़ दिली से सुनी।

......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़मल में हमारे लिये नसीह़त के बे शुमार मदनी फूल हैं, वाक़ेई नसीह़त की बात कोई भी करे, चाहे वोह बच्चा हो, जवान हो या बूढ़ा इसे सुनने और क़बूल करने में कोई ह़रज नहीं। खु़सूसन उस वक़्त जब उस के ज़ाहिरी फ़वाइदो समरात भी बिल्कुल वाज़ेह़ नज़र आ रहे हों। अपने से छोटों की बात को क़बूल कर लेना निहायत ही आ'ला ज़र्फ़ी की अ़लामत है। मगर अफ़्सोस ! अगर आज हमारी ग़लत़ियों पर कोई हमें वा'ज़ो नसीह़त करने की कोशिश करता है तो हम अव्वलन उस की नसीह़त को सुनते ही नहीं और अगर बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो उस पर अ़मल करने की कोशिश नहीं करते, बल्कि बसा औक़ात उस के मुतअ़ल्लिक़ अपने दिल में त़रह़ त़रह़ के शैत़ानी वस्वसों को जगह देते हैं, नीज़ उसे अपना ख़ैरख़्वाह समझने के बजाए अपना दुश्मन समझने लगते हैं, ह़ालांकि हमारा ह़क़ीक़ी रहनुमा, दोस्त और ख़ैरख़्वाह वोही शख़्स है जो हमारी ग़लत़ियों पर हमें ख़बरदार करे, नेकियों की तरग़ीब दिलाए, गुनाहों से बचने की नसीह़त करे, हमारे उ़यूबो नक़ाइस को बयान करे, हमारी दुन्या व आख़िरत को संवारने की कोशिश करे। मगर अफ़्सोस ! बे अ़मल होने के बा वुजूद हमारा सरापा गोया येह ए'लान करता है :

नासेह़ा मत कर नसीह़त दिल मेरा घबराए है

उस को दुश्मन जानता हूं जो मुझे समझाए है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नसीह़त की बात कोई भी करे उसे क़बूल कर लीजिये, अपने दिल में जगह दीजिये, उस पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां ह़ासिल होंगी। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

www.dawateislami.net

अ़लाके़ का बद मुआ़श मुबल्लिग़ बन गया

एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी का बयान है कि जुमादल उख़्रा 1429 हिजरी, जून 2008 ईसवी में हमारा मदनी क़ाफ़िला औकाड़ा (पंजाब–पाकिस्तान) पहुंचा। वहां पर एक बा रीश (या'नी दाढ़ी वाले) उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हुई। उन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ अपने जल्वे लुटा रहा था। दौराने गुफ़्तगू उन्हों ने इन्किशाफ़ किया कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में आने से पहले मैं अपने अ़लाक़े का नामी गिरामी बद मुआ़श था। मैं शराब का ऐसा रसिया था कि जब कहीं जाता तो शराब के कनस्तर मेरी गाड़ी में धरे होते। मैं अपने साथ मुहाफ़िज़ रखता और खुद भी मुसल्लह़ रहता था। मेरे काले करतूतों की वज्ह से लोग मुझ से इस क़दर नफ़रत करते कि मेरे क़रीब से गुज़रना पसन्द न करते थे।

मेरे राहे रास्त पर आने की तफ़्सील कुछ यूं है कि हमारे अ़लाक़े में नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाले दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन मुझे भी नेकी की दा'वत देने के लिये आया करते, मगर मैं ग़फ़्लत की गहरी वादियों में गुम था इस लिये उन की दा'वत तवज्जोह से सुनने के बजाए उन का हाथ पकड़ कर बोलता : "मेरे साथ बैठ कर शराब पियो।" उन को कभी डांटता तो कभी झाड़ता मगर वोह मौक़अ़ पा कर फिर इनफ़िरादी कोशिश के लिये आ जाया करते। यूं एक त़वील अ़र्सा वोह मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते रहे और मैं सुनी अनसुनी करता रहा। एक रोज़ मेरे दिल में ख़याल आया कि येह बेचारे इतने अ़र्से से मुझ पर कोशिशें कर रहे हैं क्यूं न आज इन की बात तवज्जोह से सुन ली जाए, देखूं तो सही आख़िर येह कहते क्या हैं ! अब की बार इस्लामी भाई "नेकी की दा'वत" देने आए तो मैं ने बड़ी तवज्जोह से उन की दा'वत सुनी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान कि उन की दा'वत मेरे दिल में उतर गई और लब्बैक (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) कहते हुवे उन के साथ मस्जिद की त़रफ़ चल दिया, ग़ालिबन होश संभालने के बा'द ज़िन्दगी में पहली बार मैं मस्जिद के अन्दर दाख़िल हुवा। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और मस्जिद में होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने मेरे दिल की कैफ़िय्यत को बदल कर रख दिया। मैं ने इस्लामी भाइयों के पास आना जाना शुरूअ़ कर दिया और फिर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के सिलसिले में मुरीद बन गया। मुरीद तो क्या हुवा मेरे अन्दाज़ बदलते चले गए, मैं ने तमाम गुनाहों से तौबा कर ली, शराब पीना छोड़ दी, नमाज़ी बन गया और चेहरा सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी और सर इमामा शरीफ़ से "सर सब्ज़" हो गया। लोग इस तब्दीली पर ह़ैरान थे। बा'ज़ों को तो यक़ीन ही नहीं

www.dawateislami.net

आ रहा था कि इस क़दर बिगड़ा हुवा इन्सान भला कैसे सुधर सकता है ! एक रोज़ अ़जीब चुटकुला हुवा कि दो अख़्बारी नुमाइन्दे मेरे क़रीब से गुज़रे तो एक ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के दूसरे को बताया येह वोही शख़्स है, मेरा तब्दील शुदा हुल्या देख कर दूसरे को यक़ीन न आया और उस ने मुझ से बा क़ाइदा तस्दीक़ की, कि क्या आप वाक़ेई "वोही" हैं ? मेरे "हां" करने पर वोह दम ब ख़ुद रह गया और कहने लगा कि अपनी तब्दीली का राज़ बताइये हम अख़्बार में आप की ख़बर छापेंगे । मगर मैं ने मन्अ़ कर दिया । येह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतें हैं कि मुझ जैसा रुस्वाए ज़माना इन्सान भी सलातो सुन्नत की राह पर चलने लगा और मुआ़शरे का एक बा इ़ज़्ज़त फ़र्द बन गया ।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि मह़ल्ले के एक नामी गिरामी बद मुआ़श शख़्स ने जब वा'ज़ो नसीह़त को क़बूल किया तो सुन्नतों का मुबल्लिग़ बन गया, जो शराबो कबाब का दिलदादह था वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का दिलदादह हो गया । अगर हम भी वा'ज़ो नसीह़त को क़बूल करने वाले बन जाएं तो कसीर भलाइयां हमारा मुक़द्दर बन जाएंगी । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म के ज़र्बुल मसल ह़कीमाना अक़्वाल

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रिआ़या व अ़वामुन्नास की ता'लीमो तरबिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ा कई ऐसे ह़कीमाना अक़्वाल हैं जो ज़र्बुल मसल बन गए या'नी उन्हें बत़ौरे मिसाल के बयान किया जाता है, मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून व लुग़ात के माहिरीन आज तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के उन अक़्वाल को ह़ैरत व इस्ति'जाब की निगाहों से देखते हैं और येह गुमान करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में इन अक़्वाल के ज़रीए़ एक कामिल ह़यात का बेहतरीन नमूना व ख़ुलासा पेश कर दिया है । इस की सब से बड़ी वज्ह येह है आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह अक़्वाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा की अ़मली तस्वीर हैं, जब कि दीगर लोगों के ऐसे अक़्वाल इन के तजरिबात व मुशाहदात का नतीजा होते हैं, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ऐसे अक़्वाल तनज़्ज़ुली की त़रफ़ गामज़न क़ौमों के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह हैं जो तरक़्क़ी की राहों की त़रफ़ सई करने में मगन हैं । दीगर लोगों के ह़कीमाना अक़्वाल फ़क़त़ सफ़्ह़ात पर लिखे हुवे हैं जब कि

www.dawateislami.net

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के अक़्वाल तारीख़ के औराक़ के साथ साथ लोगों के दिलों पर भी नक़्श हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के 12 ज़र्बुल मसल व ह़कीमाना अक़्वाल पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......مَنْ اَكْثَرَ مِنْ شَيْءٍ عُرِفَ بِهٖ "या'नी जो किसी काम को ज़ियादा करता है वोह उस की पहचान बन जाती है।"(1)

(2)......"उस (या'नी क़ज़ा के) मुआ़मले में नर्मी ही मुनासिब है मगर वोह जिस में किसी क़िस्म की कमज़ोरी न हो, और सख़्ती मुनासिब है मगर वोह जिस में ज़ुल्मो जब्र नहीं।"(2)

(3)......مَنْ كَثُرَ مَزَاحُهٗ اُسْتُخِفَّ بِهٖ "या'नी जो ज़ियादा मुज़ाह़ करता है उस की इ़ज़्ज़त कम हो जाती है।"(3)

(4)......"तुम ने कब से उन को ग़ुलाम बना लिया है ह़ालांकि उन की माओं ने तो उन्हें आज़ाद जना था ?"(4)

(5)......حَاسِبُوا اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُحَاسَبُوا "या'नी अपना मुह़ासबा ख़ुद ही कर लो क़ब्ल इस के कि तुम्हारा मुह़ासबा किया जाए।"(5)

(6)......"जो ज़ियादा बोलता है उस का वक़ार ख़त्म हो जाता है, जिस का वक़ार ख़त्म हो जाता है उस की ह़या कम हो जाती है, जिस की ह़या कम हो जाती है उस का तक़्वा व परहेज़गारी कम हो जाती है जिस का तक़्वा कम हो जाए उस का दिल मुर्दा हो जाता है।"(6)

(7)......اِنَّ كُلَّ صَانِعٍ اَعْلَمُ بِصَنَاعَتِهٖ "या'नी हर कारीगर अपनी कारीगरी को बेहतर जानता है।"(7)

(8)......"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी चीज़ को करने का हुक्म दिया तो उस पर मदद भी फ़रमाई और अगर किसी चीज़ से मन्अ़ किया तो उस से दूर रहने की त़ाक़त भी अ़त़ा फ़रमाई।"(8)

---

1 ......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۵۷، حدیث: ۴۹۹۴ مختصرا۔

2 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ۔۔۔الخ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۲۹۱، حدیث: ۱۴۲۵۱ مختصرا۔

3 ......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۵۷، حدیث: ۴۹۹۴ مختصرا۔

4 ......کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، عدلہ۔۔۔الخ، الجزء: ۱۲، ج ۶، ص ۲۹۴، حدیث: ۳۶۰۰۶۔

5 ......ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ج ۴، ص ۲۰۸، حدیث: ۲۴۶۷۔

6 ......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۵۷، حدیث: ۴۹۹۴ مختصرا۔

7 ......الاستیعاب، باب طلیحۃ، ج ۲، ص ۳۲۴۔

8 ......ادب الدنیا والدین للماوردی، الفصل السابع فی المروءۃ، ص ۳۰۸۔

www.dawateislami.net

(9)......"जिस ने अपने आप को मक़ामे तोहमत पर खड़ा किया उसे अगर लोग बुरा भला कहें तो उन्हें मलामत न करे।"(1)

(10)......مَنْ كَتَمَ سِرَّهٗ كَانَتِ الْخِيَرَةُ فِيْ يَدَيْهِ "या'नी जिस ने अपना राज़ छुपाया तो इ़ज़्ज़त व भलाई उस के हाथ में है।"(2)

(11)......مَنْ كَثُرَ ضِحْكُهٗ قَلَّتْ هَيْبَتُهٗ "या'नी जो ज़ियादा हंसता है उस की हैबत कम हो जाती है।"(3)

(12)......"अहमक़ों के पीछे जूते चटख़ाना बहुत कम उस के दीन को बाक़ी रखता है।"(4)

"या'नी किसी अहमक़ शख़्स के गिर्द लोगों का हुजूम लगाना, उस के पीछे पीछे चलना और उसे ख़्वाह म ख़्वाह की इ़ज़्ज़त देना उ़मूमन उसे हुब्बे जाह "शोहरत की ख़्वाहिश" में मुब्तला कर देता है जो बसा औक़ात उस के दीनो ईमान के ज़ाएअ़ होने का सबब बन जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़हदे फ़ारूक़ी का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़

मुसलमानों का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया, उस वक़्त मदीनए मुनव्वरा इस्लामी रियासत का दारुल ख़िलाफ़ा और ख़िलाफ़ते इस्लामिया का आ़लमी और ह़क़ीक़ी "**मदनी मर्कज़**" था। अ़हदे सिद्दीक़ी में तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अहकामे शरइय्या के इस्तिख़राज व इस्तिम्बात़ के लिये यहीं जम्अ़ होते और कोशिशें फ़रमाते। अ़हदे फ़ारूक़ी में जब फ़ुतूहात की कसरत हुई और इस्लामी हुकूमत का दाइरा वसीअ़ हुवा, नीज़ नए नए मुसलमानों की ता'लीमो तरबिय्यत के ह़वाले से नित नए मसाइल का सामना करना पड़ा तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वक़्त की ज़रूरत के पेशे नज़र इसी मदनी मर्कज़ को पेशे नज़र रखा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी यहीं अपने मदनी मश्वरे फ़रमाते रहे नीज़ अहकामे शरइय्या के इस्तिख़राज के लिये कोशिशें भी जारी रहीं। अ़हदे रिसालत व अ़हदे सिद्दीक़ी की वज्ह से दीगर शहरों के मुक़ाबले में

---

(1)......موسوعه ابن ابی الدنیا، الصمت وآداب اللسان، ج۷، ص ۳۸۱، الرقم: ۴۵۲۔

(2)......موسوعه ابن ابی الدنیا، الصمت وآداب اللسان، ج۷، ص ۳۸۱، الرقم: ۴۵۲۔

(3)......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔الخ، ج۴، ص ۲۵۷، حدیث: ۴۹۹۴ مختصرا۔

(4)......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ۱۷۸۔

www.dawateislami.net

मदीनए मुनव्वरा को एक इम्तियाज़ी हैसिय्यत ह़ासिल थी । क्यूंकि खुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यहां दस साल क़ियाम फ़रमाया । यहां के दरो दीवार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक अदाओं से मुनव्वर थे, यहां के लोगों ने नबवी तरबिय्यत ह़ासिल की थी, उम्मते मुस्लिमा के सब से बेहतरीन लोग यहीं के मुक़ीम थे, इन तमाम खुसूसिय्यात की बिना पर कोई भी दूसरा मुआ़शरा इस नबवी व मदनी मुआ़शरे के क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकता था । अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका और इन की मुद्दते ख़िलाफ़त के इब्तिदाई दस सालों तक इनफ़िरादी व ज़ाती खुसूसिय्यात की बिना पर सब से बड़ा असर येह ज़ाहिर हुवा कि इब्तिदाई दो सौ 200 सालों में मदीनए मुनव्वरा "क़ुरआनो सुन्नत व अह़कामे शरइय्या की ता'लीमो तरबिय्यत" का सब से पहला मद्रसा और मुसलमानों का ह़क़ीक़ी "**मदनी मर्कज़**" बना रहा । इस की चन्द ज़ाहिरी वुजूहात भी हैं, जिन की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ए'लाने नबुव्वत के बा'द कुछ अ़र्से मक्कए मुकर्रमा में तशरीफ़ फ़रमा रहे थे कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम के सबब मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ ले आए, क़ुरआने पाक का ज़ियादा तर नुज़ूल यहीं हुवा नीज़ तसलसुल के साथ आख़िरी वह्य के नुज़ूल की सआ़दत भी इसी ख़ित्ते को ह़ासिल हुई, ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मुबारक दौर तक कोई शहर इस का मद्दे मुक़ाबिल न था, इन के दौर में मदीनए मुनव्वरा ही फ़ुक़हा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मदनी मर्कज़ था और इन में सब से बड़े फ़क़ीह खुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे, उस वक़्त भी मदीनए मुनव्वरा को वोही मक़ाम ह़ासिल रहा जो अ़ह्दे फ़ारूक़ी में था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) कूफ़ा मुन्तक़िल हो गए लेकिन उ़लमा व मुफ़्ती सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मदनी मर्कज़ मदीनए मुनव्वरा ही रहा, वहां मुक़ीम फ़क़ीह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ काफ़ी अ़र्से तक अपना फ़ैज़ान लुटाते रहे उन में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्माए गिरामी बिल्कुल नुमायां हैं ।

www.dawateislami.net

......मदीनए मुनव्वरा में ही किबार ताबेईने किराम की तरबिय्यत गाह भी वुजूद में आई, ताबेईन में से सात ऐसे जलीलुल क़द्र फ़ुक़हा थे जिन की नज़ीर न थी, किसी शाइ़र ने उन का ज़िक्र यूं किया है :

اَلَا كُلُّ مَنْ لَا يَقْتَدِىْ بِاَئِمَّةٍ
فَقِسْمَتُهٗ ضِيْزٰى عَنِ الْحَقِّ خَارِجَةٌ

तर्जमा : "या'नी सुन लो ! जो शख़्स अपने अइम्मा की पैरवी नहीं करता, उस की तक़्सीम बड़ी ना इन्साफ़ी पर मब्नी और ह़क़ से ख़ारिज है।"

فَخُذْهُمْ عُبَيْدُ اللّٰهِ عُرْوَةُ قَاسِمٌ
سَعِيْدٌ اَبُوْبَكْرٍ سُلَيْمَانُ خَارِجَةٌ

तर्जमा : "पस इन अइम्मए किराम सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह, सय्यिदुना उ़र्वा, सय्यिदुना क़ासिम, सय्यिदुना सई़द, सय्यिदुना अबू बक्र, सय्यिदुना सुलैमान और सय्यिदुना ख़ारिजा (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) का दामन थाम लो।"(1)

......इन ताबेईन के बा'द तबए़ ताबेईन में से भी बड़े बड़े उ़लमा व फ़ुक़हाए किराम मदीनए मुनव्वरा में मुक़ीम रहे, इन में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी, ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अस्लम, ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सई़द अन्सारी (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के अस्माए गिरामी नुमायां हैं। फिर इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मुबारक दौर आया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुफ़्तिये मदीना थे, आप के फ़ैज़ान से भी लोग एक अ़र्से तक फ़ैज़याब होते रहे।

......अहले मदीना के इ़ल्म की फ़ौक़िय्यत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि दीगर शहरों के लोग इ़ल्मी ह़वाले से मदीनए मुनव्वरा ही की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे, उस वक़्त मदीनए मुनव्वरा के इ़लावा कोई शहर ऐसा न था जिस की त़रफ़ उ़मूमी त़ौर पर इ़ल्मी ह़वाले से रुजूअ़ करते। दीगर इस्लामी शहरों के उ़लमा ने ह़ुसूले इ़ल्म के लिये इसी मदीनए मुनव्वरा ही का रुख़ किया और अपनी इ़ल्मी सलाह़िय्यतों को अपने असातिज़ा व उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के सामने पेश किया यूं उन शहरों में भी मदीनए मुनव्वरा के तरबिय्यत याफ़्ता उ़लमा ही इ़ल्मी फ़ैज़ान तक़्सीम करते रहे।

......मदीनए मुनव्वरा के उ़लमाए किराम ही दीगर शहरों में क़ाज़ी, गवर्नर और मुअ़ल्लिम बना कर भेजे गए, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुल्के शाम और इ़राक़ की फ़त्ह़ के बा'द

1 ......تغليق التعليق للعسقلانى، من كتاب الطهارة، باب الماء۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۱۹۔

चन्द उ़लमा को वहां कु़रआनो सुन्नत की ता'लीम देने के लिये रवाना फ़रमाया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना इ़मरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़राक़ तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रिबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम तशरीफ़ ले गए जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह तमाम ह़ज़रात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ही रहे।

......अह्ले मदीना के इ़लावा जिस ने जितना मदीनए मुनव्वरा वालों से इ़ल्म ह़ासिल किया उसी तनासुब से वोह एक दूसरे पर फ़ज़ीलत रखते थे, येह लोग अह्ले मदीना ही को बरतरी का मे'यार समझते थे चुनान्चे, अह्ले मक्का में से ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा फ़रमाते हैं कि "हमारा इ़ल्मी व फ़िक़्ही मक़ाम तक़रीबन बराबर था। लेकिन जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन रिबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मदीनए मुनव्वरा गए, फिर वहां से लौटे तो उन की फ़ज़ीलत हम पर वाज़ेह़ हुई।"(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मुफ़्तियाने किराम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अक्सर अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मुख़्तलिफ़ फ़ितनों से ह़िफ़ाज़त और अहम मुआ़मलात में मुशावरत के पेशे नज़र मदीनए मुनव्वरा में ही मुक़ीम रखा। येही वज्ह है कि उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का फ़ैज़ान "मदीनए मुनव्वरा" ही में रहा और मुख़्तलिफ़ मसाइल बताने वाले फ़क़ीह और मुफ़्ती सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'दाद तक़रीबन 130 तक पहुंच गई, उन में कसरत से फ़तावा देने वाले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۴۰، ص۳۸۴۔

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्माए गिरामी नुमायां हैं। इन तमाम हस्तियों के मुबारक फ़तावा के अगर मजमूए़ तय्यार किये जाएं तो शायद कई ज़ख़ीम जिल्दें तय्यार हो सकती हैं।(1)

वोह सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जिन के फ़तावा व मसाइल मुतवस्सित़ ता'दाद में थे उन में सरे फ़ेहरिस्त अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़हदे ख़िलाफ़त शुरूअ़ होते ही मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी में सरगर्म हो गए, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द बहुत ही क़लील अ़र्से तक ह़यात रहे इस लिये आप के फ़तावा की ता'दाद ज़ियादा नहीं है। इन के इलावा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्माए गिरामी नुमायां हैं। अगर इन तमाम हस्तियों के मुख़्तलिफ़ मसाइल व फ़तावा को भी जम्अ़ किया जाए तो मुतवस्सित़ दर्जे की कई जिल्दें तय्यार हो सकती हैं। इन मज़्कूरा अफ़राद में से अक्सर लोग अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मदीनए मुनव्वरा ही में मुक़ीम रहे, अलबत्ता जिन्हें खुद अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कोई ओ़हदा दे कर या क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम की ख़ात़िर किसी दूसरे अ़लाक़े में भेजा हो तो वोह वहां तशरीफ़ ले गए।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की अ़ज़ीम कोशिशें

वाज़ेह़ रहे कि मदीनए मुनव्वरा को "क़ुरआनो सुन्नत व अह़कामे शरइय्या की ता'लीमो तरबिय्यत" का सब से पहला मद्रसा और मुसलमानों का "मदनी मर्कज़" बनाने में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कोशिशों ही को दख़्ल है। इस पर

1 ......الاستیعاب، المکثرین من الصحابۃ روایۃ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۰۱۔

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह वाक़िआ़ शाहिद है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं चन्द मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कु़रआन पढ़ाया करता था जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे[1] एक मरतबा जब मैं मिना में उन की क़ियाम गाह पर था और उस वक़्त वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ उन के आख़िरी ह़ज में शरीक थे। जब वोह वहां से तशरीफ़ लाए तो कहने लगे : "अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस आदमी को देखते जो आज अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और अ़र्ज़ करने लगा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या आप फ़ुलां आदमी की ख़बर लेंगे ? वोह कहता है कि अगर उ़मर फ़ौत हो जाते तो मैं फ़ुलां से बैअ़त कर लेता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त अचानक हुई थी और पूरी हुई।" जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुना तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और फ़रमाया : "मैं اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज शाम को लोगों के दरमियान एक तक़रीर करूंगा और सब को उन लोगों से ख़बरदार करूंगा जो मुसलमानों की हुकूमत को उन से ग़सब करना चाहते हैं।" सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "नहीं अमीरुल मोमिनीन आप ऐसा न कीजिये क्यूंकि येह ह़ज का मौसिम है इस में हर त़रह़ के लोग इकठ्ठे होते हैं, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों के सामने बयान करेंगे तो येही लोग आप के सामने होंगे, मुझे डर है कि आप कोई बात करें उस का एक ख़ास मक़्सद हो और वोह उस बात को ले कर किसी और मा'ना में ले लें, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़िलह़ाल ठहर जाइये, जब आप मदीनए मुनव्वरा पहुंचें तो वहां येह बात कीजिये, क्यूंकि वोह दारुल हिजरत और दारुस्सुन्नह है, वहां आप शुरफ़ा और समझ बूझ वाले

---

1 ....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सगे चचा के बेटे थे, अगर्चे आप को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही क़लील सोह़बत मिली लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर खु़सूसी शफ़्क़त फ़रमाया करते थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार उन के सर पर हाथ फेरा, सीने से लगाया और यूं दुआ़ दी : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे कु़रआन का इल्म अ़त़ा फ़रमा।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उन्ही शफ़्क़तों व खु़सूसी दुआ़ओं का नतीजा था कि आप "ह़िबरुल उम्मत" व "सय्यिदुल मुस्लिमीन" कहलाए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे बड़े बड़े जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप से कु़रआने पाक पढ़ा करते थे। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इल्म अगर्चे छोटी उ़म्र वाले के पास से मिले ले लेना चाहिये।

(فتح الباری، کتاب الحدود، باب رجم الحبلی من۔۔۔الخ، ج ۱۳، ص ۱۲۳، تحت الحدیث: ۶۸۳۰، نزہۃ القاری، ج ۵، ص ۷۶۷)

www.dawateislami.net

लोगों को बुलाएं जो कहना हो पूरे ए'तिमाद के साथ कहें, ताकि अह्ले इल्म आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात को अच्छी त़रह़ समझ लें और उस को सह़ीह़ मा'ना व मुराद पर मह़मूल करें।"

येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَمَا وَاللّٰهِ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَاَقُوْمَنَّ بِذٰلِكَ اَوَّلَ مَقَامٍ اَقُوْمُهُ بِالْمَدِيْنَةِ "या'नी क़सम ब ख़ुदा ! रब ने चाहा तो मदीना पहुंच कर सब से पहले इसी बारे में ख़ुत़बा दूंगा।"(1)

इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : "इस ह़दीसे मुबारका से येह इस्तिद्लाल किया गया है कि अह्ले मदीना ही इल्मो फ़ह्म और दानाई के मालिक हैं, क्यूंकि इस ह़दीसे मुबारका से येह साबित होता है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा वालों की इस ख़ुसूसिय्यत पर मुत्तफ़िक़ थे।"

मज़ीद फ़रमाते हैं : "येह इस्तिद्लाल सिर्फ़ उन लोगों के ह़क़ में सह़ीह़ है जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मौजूद थे, अलबत्ता जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अह्ले मदीना के हम पल्ला थे उन का भी येही हुक्म है और उस से येह लाज़िम नहीं आता कि हर दौर में मदीनए मुनव्वरा के हर फ़र्द की येही ख़ुसूसिय्यत बाक़ी रहे।"(2)

बहर ह़ाल मुआ़शरती तरक़्क़ी और फ़ुतूह़ात की वुस्अ़त के साथ साथ जिन इल्मी मराकिज़ व मदारिस का क़ियाम अ़मल में आया उन की ता'मीर व तरक़्क़ी में अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ज़बरदस्त असर रहा। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तरबिय्यत याफ़्ता शागिर्द मदीनए मुनव्वरा में रहे और मदीने में अपने इल्म की नश्रो इशाअ़त की, फिर उन शागिर्दों के शागिर्द तय्यार हुवे जो सर चश्मए इल्मे नबुव्वत से क़रीब होने और मदनी माह़ोल में ज़िन्दगी गुज़ारने की वज्ह से अ़ज़ीम तरीन शख़्सिय्यतों के मालिक हुवे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'ज़ शागिर्दों को नौ मुस्लिमों की दीनी ता'लीमो तरबिय्यत के लिये दूर दराज़ के मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में भेज दिया गया इस त़रह़ मदीनतुर्रसूल ने इल्मो फ़िक़्ह में एक ऊंचा मक़ाम पाया और इस के मुदर्रिसीन ने मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों और नए ता'मीर शुदा मद्रसों, दारुल इफ़्ता मसलन बसरा और कूफ़ा के मदारिस व दारुल इफ़्ता की ता'मीर व तरक़्क़ी में नुमायां किरदार अदा किया।

---

1 ......بخاری، کتاب المحاربین۔۔۔الخ، باب رجم الحبلی۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۴۳، حدیث: ۶۸۳۰۔

2 ......فتح الباری، کتاب الحدود، باب رجم الحبلی۔۔۔الخ، ج ۱۳، ص ۱۳۱، تحت الحدیث: ۶۸۳۰ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

बहर ह़ाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्मी ह़वाले से अ़ज़ीम कोशिशों और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कसीर ता'दाद में फ़ुक़हा व मुफ़्तियाने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام शागिर्दों की बदौलत येह कहना बजा है कि उस वक़्त पूरे जज़ीरए अ़रब में "**फ़ारूके़ आ'ज़म के इ़ल्मी फ़ैज़ान**" ही का चर्चा था।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अह़कामे शरइय्या के मराकिज़ व दारुल इफ़्ता

मदीनए मुनव्वरा के इ़लावा मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भेजे हुवे मुफ़्तियाने किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ता'लीमो तरबिय्यत व फ़तवों को देखा जाए तो हमारे सामने अह़कामे शरइय्या के चन्द मराकिज़ और तरबिय्यती दारुल इफ़्ता सामने आते हैं, चूंकि उन तमाम मराकिज़ में सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नाम ज़द मुफ़्तियाने किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को भेजा था, नीज़ वोह मुफ़्तियाने किराम वहां अपने शागिर्दों और दीगर लोगों की इ़ल्मी ह़वाले से तरबिय्यत भी फ़रमाते थे, चूंकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह तमाम मुफ़्तियाने किराम बहुत पाए के मुफ़्ती थे, इसी वज्ह से हम ने ता'लीमो तरबिय्यत के इन मराकिज़ को "**तरबिय्यती दारुल इफ़्ता**" का नाम दिया है। तफ़्सील कुछ इस त़रह़ है :

(1)......अ़हदे फ़ारूक़ी का मक्की तरबिय्यती दारुल इफ़्ता

तमाम मुसलमान मक्कए मुकर्रमा के इस दारुल इफ़्ता का बहुत ही अदबो एह़तिराम किया करते थे ख़्वाह मक्कए मुकर्रमा ही के रहने वाले हों या दीगर शहरों के मुक़ीम वोह लोग हों जो बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत के लिये आते हों या ह़ज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत ह़ासिल करने आते हों। अ़हदे फ़ारूक़ी के इस मक्की दारुल इफ़्ता की सब से बड़ी ख़ुसूसिय्यत येह थी कि इस के सब से बड़े मुफ़्ती व मुसद्दिक़ सह़ाबिये रसूल, तर्जुमानुल क़ुरआन, ह़िबरुल उम्मत, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जय्यिद शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। वाज़ेह़ रहे कि किसी भी मद्रसे, जामिआ़, दारुल इफ़्ता इ़ल्मी इदारे या इन्स्टीट्यूट की तरक़्क़ी का दारो मदार नीज़ उस की कारकर्दगी की बेहतरी इस बात पर मुन्ह़सिर है कि उस की बाग दौड़ किस के हाथ में है ? येही वज्ह है कि अरबाबे इ़ल्मो दानिश, अस्ह़ाबे सियर व तारीख़, मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन तमाम ह़ज़रात ने इस मक्की तरबिय्यती दारुल इफ़्ता और इस के मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अह़सन अन्दाज़ में ख़िराजे तह़सीन पेश किया है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

(1)......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर इतना अ़र्से ज़िन्दगी गुज़ारते जितनी हम ने गुज़ारी तो हम में से कोई भी शख़्स उन के दस्वें हिस्से को भी न पहुंचता।" एक बार इरशाद फ़रमाया : "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या ही बेहतरीन तर्जुमानुल कुरआन हैं।"(1)

(2)......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में फ़रमाते हैं : "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मते मुह़म्मदिया के सब से बड़े आ़लिमे कुरआन हैं।"(2)

(3)......हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा ह़ाज़िर जवाब, दाना व बीना, साहिबे इल्म और बुर्द बार किसी को नहीं देखा, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुश्किल औक़ात में उन को बुलाते और फ़रमाते कि एक पेचीदा मस्अला आ गया है, फिर वोह जो राए देते उसी पर अ़मल फ़रमाते ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गिर्द बदरी अन्सार व मुहाजिरीन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी मौजूद होते थे।"(3)

(4)......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम में कुरआने करीम के सब से बड़े फ़क़ीह थे, बल्कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को उन से कुरआने पाक पढ़ने की तरग़ीब दिलाते थे और येह भी फ़रमाया करते थे कि जिसे कुरआने करीम के मुतअ़ल्लिक़ कोई सुवाल करना हो वोह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछे।"(4)

मक्की दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती पर शफ़्क़ते फ़ारूक़ी

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा के दारुल इफ़्ता के उस मुफ़्ती व मुसद्दिक़ "या'नी सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर खुसूसी शफ़्क़त फ़रमाया करते थे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के अन्दर शराफ़त, ज़हानत व फ़त़ानत की अ़लामात देखीं तो उन पर खुसूसी तवज्जोह देना शुरूअ़ कर दी, आप उन्हें अपने इल्मी ह़ल्क़ों में

1......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ما ذکر فی ابن عباس، ج۷، ص ۵۱۹، حدیث: ۵۔

2......الاصابة، عبد اللہ بن العباس، ج۴، ص ۱۲۷، الرقم: ۴۷۹۹۔

3......طبقات کبری، ابن عباس، ج۲، ص ۲۸۱۔

4......طبقات کبری، ابن عباس، ج۲، ص ۲۸۴۔

www.dawateislami.net

बिठाते, उन से मश्वरे भी करते, कुरआनी आयात में इश्काल होता तो उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाते। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि अभी नौजवान थे इस लिये सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शफ़्क़तों से आप को आगे बढ़ने और इ़ल्म ह़ासिल करने का हौ़सला और जज़्बा मिलता।

......इन्ही हौ़सला अफ़्ज़ा इक़्दाम को देखते हुवे एक बार आप के वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मैं देख रहा हूं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तुम्हें बुला लेते हैं, तुम्हें तन्हाई में भी अपना कु़र्ब देते हैं, दीगर अस्ह़ाब की मौजूदगी में तुम से मश्वरा लेते हैं, लिहाज़ा मेरी तीन बातें हमेशा याद रखना : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना, अमीरुल मोमिनीन का कोई राज़ फ़ाश न करना, वोह कभी तुम को झूटा न पाएं, उन के सामने किसी की ग़ीबत न करना।"(1)

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان की इ़ल्मी मजालिस में भी ले जाया करते थे और इस की वज्ह येही थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की ज़ाते मुबारका में मौजूद "फ़ह्म" या'नी बात को जल्दी समझने की सलाहि़य्यत, उसे याद रखने की कु़व्वत, इस्तिम्बात़ की बारीकियों को पहचानने की क़ाबिलिय्यत जैसे औसाफ़ को जांच लिया था। सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खु़द फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर अस्ह़ाब पर मेरी राए को मुक़द्दम रखते थे और मुझ से फ़रमाया करते थे : لَا تَكَلَّمْ حَتّٰى يَتَكَلَّمُوْا "तुम उस वक़्त तक कोई राए न दिया करो जब तक येह लोग अपनी कोई राए न दे दें।" मैं इस पर अ़मल करता और जब अपनी राए देता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : اَعَجَزْتُمْ اَنْ تَقُوْلُوْا كَمَا قَالَ هٰذَا الْغُلَامُ الَّذِيْ لَمْ تَجْتَمِعْ شُؤُوْنَ رَاْسِهٖ "या'नी तुम सब मिल कर भी वोह राए न दे सके जो इस कम उ़म्र लड़के ने दी है।"(2)

......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि कम उ़म्र थे इस लिये अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان की मजालिस में शिर्कत के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाया करते थे, उन की इजाज़त के बिग़ैर एक लफ़्ज़ भी न बोलते, येही

---

1 ......معجم کبیر، من مناقب عبد اللہ بن عباس۔۔۔الخ، ج ۱۰، ص ۲۶۵، حدیث: ۱۰۶۱۹۔

2 ......صحیح ابن خزیمۃ، جماع ابواب ذکر الایام۔۔۔الخ، باب الامر بالتماس لیلۃ القدر۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۲۲، حدیث: ۲۱۷۲۔

www.dawateislami.net

वज्ह है कि जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان से सूरतुन्नस्र की तफ़्सीर के बारे में इस्तिफ़्सार किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल ख़ामोश बैठे रहे। जब सब ने अपना मौक़िफ़ बयान कर दिया तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आप से इस्तिफ़्सार फ़रमाने पर ही जवाब दिया।(1)

......सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक इ़ल्मी मजलिस थी जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नौजवानों की इ़ल्मी बातें सुनते और उन की इस्लाह़ फ़रमाते थे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस में पेश पेश रहते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाजे़ इश्राक़ से फ़ारिग़ हो कर खजूरें खुश्क करने के लिये अपने बाग़ में जाते और कु़रआने पाक पढ़ने वाले नौजवानों को बुलवाते, उन में सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी होते थे, एक मरतबा दौराने तिलावत सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कु़रआने पाक की तफ़्सीर बयान की तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की हौसला अफ़्ज़ाई करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **لِلّٰہِ بِلَادُکَ یَا ابۡنَ عَبَّاسٍ** "या'नी ऐ इब्ने अ़ब्बास ! तुम्हारे इ़ल्म की क्या बात है ?"(2)

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से तफ़्सीरे कु़रआन के मुतअ़ल्लिक़ कुछ पूछते तो इरशाद फ़रमाते : **غُصۡ غَوَّاصٍ** "या'नी ऐ गहराई में ग़ोत़ा लगाने वाले ! ग़ोत़ा लगाओ।"(3)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की खुसूसी शफ़्क़तों, मह़ब्बतों और इनायतों ही का नतीजा था कि मक्कए मुकर्रमा के मुफ़्ती व मुसद्दिक़ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई खुसूसिय्यतें व सआ़दतें नसीब हुईं, नीज़ इ़ल्मी मैदान खुसूसन तफ़्सीरे कु़रआन में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हौसला अफ़्ज़ाई से वोह तरक़्क़ियां मिलीं कि आज सब लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**मुफ़स्सिरे कु़रआन**", "**तर्जुमानुल कु़रआन**", "**ह़िब्रुल उम्मत**" के नाम से याद करते हैं।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......بخاری، کتاب التفسیر، باب قولہ فسبح۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۳۹۱، حدیث: ۴۹۷۰۔

2 ......تفسیر طبری، البقرۃ، ج ۲، ص ۳۳۲، حدیث: ۴۰۰۲ مختصراً۔

3 ......فضائل الصحابہ للامام احمد، ج ۲، ص ۱۲۴۵، الرقم: ۱۹۴۰۔

www.dawateislami.net

(2)......अ़हदे फ़ारूक़ी का मदनी दारुल इफ़्ता

मदीनए मुनव्वरा को ख़ुसूसी हैसिय्यत देने, इसे फ़िक़्ह व फ़तावा और उ़लूमे शरइय्या का मर्कज़ बनाने में सब से बड़ा दख़्ल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका का है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जानते थे कि काइनात की सब से अ़ज़ीम हस्ती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यहां आराम फ़रमा हैं, नीज़ उन के ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आराम फ़रमा हैं, इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी अस्ल इक़ामत गाह मदीनए मुनव्वरा ही को बनाए रखा। मदनी दारुल इफ़्ता को कई ए'तिबार से इनफ़िरादी अहम्मिय्यत भी ह़ासिल थी, एक तो येह कि **मुफ़्तिये आ'ज़म** या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यहीं तशरीफ़ फ़रमा थे, दूसरा येह कि दीगर दारुल इफ़्ता के मुफ़्तियों को भी दरपेश मसाइल का ह़ल यहीं से भेजा जाता था, गोया इस मदनी दारुल इफ़्ता को मर्कज़ और इस के इ़लावा दीगर दारुल इफ़्ता को शाख़ों की हैसिय्यत ह़ासिल थी।

मदनी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़

......इस मदनी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, येह ज़िम्मेदारी आप को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद ही अ़ता फ़रमाई थी, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्दों की ता'दाद भी दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ज़ियादा है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

فَرَّقَ عُمَرُ الصَّحَابَةَ فِي الْبُلْدَانِ، وَحَبَسَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ بِالْمَدِيْنَةِ يُفْتِي اَهْلَهَا "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मुख़्तलिफ़ शहरों में फैला दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा में ही रोक लिया, वोह अहले मदीना को फ़तवे दिया करते थे।[1]

......मदनी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीगर उ़लूमो फ़ुनून के साथ साथ इ़ल्मुल फ़राइज़ और इ़ल्मुल क़ुरआन में एक ख़ास मक़ाम ह़ासिल था, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहतरीन ह़ाफ़िज़े क़ुरआन भी थे। आप को इ़ल्मुल फ़राइज़ में महारत की सनद तो ख़ुद बारगाहे रिसालत से अ़ता हुई थी। चुनान्चे, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......تاريخ الاسلام، ج۴، ص۵۶۔

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : اَفْرَضُھُمْ زَیْدُ بْنُ ثَابِتٍ "या'नी ज़ैद बिन साबित इल्मुल फ़राइज़ के सब से ज़ियादा जानने वाले हैं।"(1)

येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाते बल्कि लोगों को उन का मक़ामो मर्तबा ज़ेह्न नशीन कराते। चुनान्चे, एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बज़ाते ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुवारी की रिकाब थाम कर उन्हें उस पर सुवार कराया और वहां मौजूद लोगों से इरशाद फ़रमाया : ھٰکَذَا فَافْعَلُوْا بِزَیْدٍ "या'नी (ह़ज़रत) ज़ैद बिन साबित (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) से इसी त़रह़ पेश आया करो।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीगर लोगों पर दो उ़लूम में बरतरी और फ़ौक़िय्यत ह़ासिल थी : एक इल्मुल फ़राइज़ और दूसरा इल्मुल कुरआन।"(3)

......ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام ने इस्तिफ़ादा किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्दों में ह़ज़रते सय्यिदुना कुबैसा बिन ज़ुऐब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्मा नुमायां हैं।(4)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3)......अ़ह्दे फ़ारूक़ी का बसरी दारुल इफ़्ता

उ़लूमो फ़ुनून में बसरा शहर की ह़ैसिय्यत कूफ़ा शहर से कुछ कम न थी, यहां बहुत से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तशरीफ़ लाए और इ़ल्म की इशाअ़त में नुमायां किरदार अदा किया। बसरी दारुल इफ़्ता के निगरान व मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, इसी बसरा दारुल इफ़्ता के एक मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे जो तमाम अस्ह़ाब में सब से आख़िर में यहां तशरीफ़ लाए और बसरा में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाले आख़िरी सह़ाबी आप ही हैं।(5)

1......ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب معاذ۔۔۔الخ، ج۵، ص ۴۳۵، حدیث: ۳۸۱۵ مختصراً۔

2......اتحاف السادۃ المتقین، کتاب آداب الالفۃ۔۔۔الخ، الباب الثالث فی حق المسلم۔۔۔الخ، ج۷، ص ۲۲۶۔

3......تھذیب التھذیب، حرف الزای، من اسمہ زید، ج ۳، ص ۲۱۶، الرقم: ۲۱۹۱۔

4......العلل للمدینی، من روی عن زید بن ثابت، ج ۱، ص ۴۷۔

5......طبقات کبری، تسمیۃ من نزل البصرۃ۔۔۔الخ، ج۷، ص ۱۹۔

www.dawateislami.net

बसरी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़

......बसरा के दो ही मुफ़्ती साहिबान ज़ियादा मश्हूरो मा'रूफ़ हैं, एक तो सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो इब्तिदा ही से बसरा तशरीफ़ लाए थे, जब कि दूसरे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो सब से आख़िर में तशरीफ़ लाए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यहां के मुफ़्ती व मुसद्दिक़ की ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्कए मुकर्रमा में ही क़बूले इस्लाम किया था, जुल हिजरतैन हैं या'नी हिजरते ह़बशा भी की और हिजरते मदीना भी।

......सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इल्मी ह़ैसिय्यत सब पर ज़ाहिर थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ज़ीम शागिर्दों में होता है, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत कसरत से मक्तूब रवाना फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्म, इ़बादत, तक़्वा व परहेज़गारी, ह़या, इ़ज़्ज़ते नफ़्स व ख़ुद्दारी, दुन्या से बे रग़बती और इस्लाम पर साबित क़दमी जैसे अ़ज़ीम औसाफ़ से मुत्तसिफ़ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार बुज़ुर्ग उ़लमा, फ़ुक़हा और मुफ़्तियाने किराम में होता है।(1)

......अ़ल्लामा ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने त़बक़ाए ऊला के हुफ़्फ़ाज़ का तज़्किरा करते हुवे लिखा है कि : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़लिमे बा अ़मल, मुत्तक़ी व परहेज़गार और क़ुरआने मजीद की कसरत से तिलावत करने वाले थे। ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावत करने में आप का कोई सानी न था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इल्मो फ़ुनून के जवाहिर बिखेरे, बसरा वालों में सब से ज़ियादा क़ुरआने पाक पढ़ने और समझने वाले थे।"(2)

......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कसरत से सोह़बत ह़ासिल की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शागिर्दी की सआ़दत ह़ासिल हुई। लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से ज़ियादा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से

1 ......سیر اعلام النبلاء، ابوموسی الاشعری، ج۴، ص۴۵، الرقم: ۱۷۸۔

2 ......تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج۱، ص۲۲۔

www.dawateislami.net

मुतअस्सिर थे, अक्सर मसाइल में उन ही की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार बड़े क़ाज़ियों में होता है। अ़ल्लामा शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उम्मत के चार मश्हूर क़ाज़ियों में से एक क़ाज़ी शुमार किया है। चार क़ाज़ी येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم), ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।[1]

......सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाते तो आप की येह पूरी कोशिश होती कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहें किसी इ़ल्मी ह़ल्क़े से मह़रूम न हों। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी मूसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े इ़शा के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : **مَاجَاءَ بِکَ** "या'नी कैसे आना हुवा ?" अ़र्ज़ किया : "इस लिये ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि कुछ इ़ल्मी गुफ़्त्गू हो जाए।" फ़रमाया : "इस वक़्त ?" अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! येह तो समझने समझाने वाली बात है इस में वक़्त की क़ैद कोई नहीं।" फिर रात गए तक दोनों गुफ़्त्गू करते रहे।[2]

......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ख़ुद ता'लीमो तअ़ल्लुम के दिलदादह थे इसी त़रह़ इ़ल्म की नश्रो इशाअ़त और लोगों को ता'लीमो तब्लीग़ के भी बहुत ह़रीस थे, अपने मुख़्तलिफ़ ख़ुत़बात में लोगों को ह़ुसूले इ़ल्मे दीन की तरग़ीब दिलाते रहते थे। चुनान्चे, एक दफ़्अ़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिम्बर पर ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जो साह़िबे इ़ल्म है उसे चाहिये कि दूसरों को भी इस की ता'लीम दे और जिस चीज़ का इ़ल्म न हो उस के बारे में ख़ामोशी इख़्तियार करे क्यूंकि इस से वोह तकल्लुफ़ करने वालों और दीन से निकल जाने वालों में से हो जाएगा।"[3]

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، فصل فی بقیۃ کبراء الصحابۃ، ابوموسی الاشعری، ج ۴، ص ۹ ۴، الرقم: ۸ ۷ ۱ ـ

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من رخص فی ذلک۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۸۲، حدیث: ۵ ملخصا۔

3 ......طبقات کبری، ابوموسی الاشعری، ج ۴، ص ۸۲۔

www.dawateislami.net

......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बसरा की मस्जिद को अपने इ़ल्मी निशात़ का मर्कज़ बनाया था और अपने वक़्त का एक बड़ा ह़िस्सा इ़ल्मी मजालिस के लिये ख़ास कर दिया था। जब सलाम फेर कर नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते और उन्हें मसाइल सिखाते और क़ुरआने पाक पढ़ने का त़रीक़ा बताते। सय्यिदुना इब्ने शौज़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब सुब्ह़ की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो सफ़ों में मौजूद एक एक आदमी को क़ुरआन पढ़ाते।"(1)

......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के माबैन निहायत ही ख़ुश इल्ह़ान क़ारी मश्हूर थे, जब लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ुरआन पढ़ते हुवे देखते तो आप के पास जम्अ़ हो जाते। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आते तो वोह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाते कि : "हमें भी क़ुरआने पाक का कोई ह़िस्सा पढ़ कर सुनाओ।"(2)

मुफ़्तिये बसरा की इ़ल्मी ख़िदमात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस सआ़दत से नवाज़ा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों को क़ुरआनी ता'लीम के ज़ेवर से आरास्ता करें, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी भी शहर जाते तो क़ुरआने पाक की ता'लीम देने और इसे आ़म करने में किसी क़िस्म की कोई कसर न उठाते। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे किसी काम से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेजा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि : "जब तुम अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से आए तो वोह क्या कर रहे थे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "वोह लोगों को क़ुरआने पाक की ता'लीम दे रहे थे।" फ़रमाया : اِنَّہٗ کَیِّسٌ وَلَا تُسْمِعْھَا اِیَّاہُ "या'नी येह बहुत ही अ़क़्ल मन्द और समझदार हैं लेकिन येह बात तुम उन्हें न बताना।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह़ादीसे मुबारका की ता'लीम आ़म करने में भी बेहतरीन किरदार अदा किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कई अह़ादीस

1 ......سیر اعلام النبلاء، ابوموسی الاشعری، ج۴، ص۵۰، الرقم:۱۷۸۔
2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب حسن الصوت، ج۲، ص۳۲۱، حدیث:۴۱۹۲۔
3 ......طبقات کبری، ابوموسی الاشعری، ج۲، ص۲۶۳۔

www.dawateislami.net

रिवायत की हैं, नीज़ दीगर अकाबिर सहा़बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से भी अहा़दीस रिवायत की हैं, अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा बिन ह़ुसैब, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब, ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वाइल बिन शक़ीक़ बिन सलमा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) ने अहा़दीस रिवायत की हैं।"[1]

मुफ़्तिये बसरा सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

......ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ा़दिम थे, सब लोग उन्हें ख़ा़दिमे रसूलुल्लाह ही कहते हैं और उन्हें अपने इस मन्सब पर फ़ख़्र भी था। सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दस साल तक ख़िदमत की।" नीज़ फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मैं उस वक़्त दस साल का लड़का था और जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाले ज़ाहिरी हुवा, उस वक़्त मैं बीस साल का नौजवान था।"[2]

......सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह भी सआ़दत ह़ासिल है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद आप को दुआ़ दी। चुनान्चे, फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अनस आप का ख़ा़दिम है इस के लिये दुआ़ कर दीजिये।" ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे ह़क़ में यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اَكْثِرْ مَالَهٗ وَوَلَدَهٗ وَبَارِكْ لَهٗ فِيْمَا اَعْطَيْتَهٗ "या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अनस बिन मालिक के माल, औलाद और जो कुछ तू उसे अ़त़ा करे उस में बरकत अ़त़ा फ़रमा।[3]

......अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करने वाले रावियों की ता'दाद तक़रीबन दो सौ(200) बताई जाती है।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ब ज़ाते ख़ुद दो हज़ार दो सौ छियासी(2286) अहा़दीस रिवायत की हैं, एक सौ

1 ......سیر اعلام النبلاء، ابوموسی الاشعری، ج۴، ص۴۴، الرقم: ۱۷۸۔
2 ......بخاری، کتاب النکاح، الولیمۃ حق، ج۳، ص۴۵۲، حدیث: ۵۱۶۶ ملتقطا۔
3 ......بخاری، کتاب الدعوات، باب قول اللہ تعالی۔۔۔الخ، ج۴، ص۱۹۹، حدیث: ۶۳۳۴۔

www.dawateislami.net

अस्सी[180] अहादीस मुत्तफ़क़ अ़लय या'नी इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम दोनों ने रिवायत की है, जब कि अस्सी[80] अहादीस इमाम बुख़ारी ने और नव्वे[90] अहादीस इमाम मुस्लिम ने रिवायत फ़रमाई हैं।[1]

नीज़ अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का ज़िक्र इमाम, **मुफ़्ती** (फ़तवा देने वाले), **मुक़री** (क़ुरआने पाक पढ़ाने वाले), **मुहद्दिस** (ह़दीस के बहुत बड़े इमाम), **रावियतुल इस्लाम** (इस्लाम के रावी), अबू ह़म्ज़ा अन्सारी, ख़ज़रजी, नज्जारी, मदनी, **ख़ादिमे रसूलुल्लाह, तिल्मीज़ुहु** (रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शागिर्द), **तबउ़हु** (रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने वाले), **व आख़िरु अस्ह़ाबिही मौता** (सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में आख़िर में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाले) जैसे अल्क़ाबात से किया है।[2]

......आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अहादीस रिवायत की है, जिन में से "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर, सय्यिदुना अबू त़लह़ा, सय्यिदतुना उम्मे सुलैम बिन्ते मिल्ह़ान, सय्यिदतुना उम्मे ह़राम, सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित, सय्यिदुना अबू ज़र, सय्यिदुना मालिक बिन सअ़्सआ़, सय्यिदुना अबू हुरैरा और शहज़ादिये कौनैन सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़ह्रा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के अस्माए गिरामी नुमायां हैं।"

......आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करने वालों में : "सय्यिदुना इमामे ह़सन, सय्यिदुना इब्ने सीरीन, सय्यिदुना इमाम शबई, सय्यिदुना अबू क़िलाबा, सय्यिदुना मक्ह़ूल, सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, सय्यिदुना साबित बुनानी, सय्यिदुना बकर बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी, सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी, सय्यिदुना क़तादा, सय्यिदुना इब्ने मुन्कदिर, सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा, सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब, सय्यिदुना शुऐ़ब बिन ह़ब्ह़ाब, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़मिर कूफ़ी, सय्यिदुना सुलैमान तैमी, सय्यिदुना हु़मैद त़वील, सय्यिदुना यह़्या बिन सई़द अन्सारी, सय्यिदुना कसीर बिन सुलैम, सय्यिदुना ई़सा बिन त़ह्मान, सय्यिदुना उ़मर बिन शाकिर (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के अस्माए गिरामी सरे फ़ेहरिस्त हैं।"[3]

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، انس بن مالک۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۹۰، الرقم: ۲۸۴۔

2 ......سیر اعلام النبلاء، انس بن مالک۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۸۲، الرقم: ۲۸۴۔

3 ......سیر اعلام النبلاء، انس بن مالک۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۸۳، الرقم: ۲۸۴۔

www.dawateislami.net

मुफ़्तिये बसरा सय्यिदुना अनस बिन मालिक के जलीलुल क़द्र शागिर्द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसरी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक जलीलुल क़द्र शागिर्द, पूरी दुन्या के ह़नफ़ियों के इमाम, सब से बड़े फ़क़ीह, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नुऐ़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिने 80 हिजरी में पैदा हुवे और सिने 150 हिजरी में विसाल फ़रमाया, आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सिने 93 हिजरी में ज़ियारत की और उन से अह़ादीसे मुबारका सुनीं।" मश्हूरो मा'रूफ़ ह़दीसे मुबारका : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ "या'नी इल्म का ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।" सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ही रिवायत की है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूफ़ा में पैदा हुवे जो इराक़ का शहर है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे "**कन्ज़ुल ईमान** (ईमान का ख़ज़ाना), **जुम्जुमतुल अ़रब** (अ़रब का दिमाग़), **रुम्ह़ुल्लाह** (**अल्लाह** का नेज़ा)" फ़रमाया।(2)

सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने शागिर्दों को ता'लीम देने में बहुत ह़रीस थे, उन से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते, उन्हें अपने क़रीब रखते और बहुत इ़ज़्ज़त से नवाज़ते, उन से फ़रमाते : "तुम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा के कितने मुशाबेह हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम लोग मुझे मेरी औलाद से भी ज़ियादा मह़बूब हो मगर येह कि वोह फ़ज़्लो तक़्वा में तुम्हारी त़रह़ हो जाएं, मैं तुम्हारे लिये रात के आख़िरी पहर में दुआएं मांगता हूं।"(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......مسند الامام ابی حنیفۃ، ذکر من رای من الصحابۃ، ص ۲۴۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماجاء فی فضل الکوفۃ، ج ۷، ص ۵۵۴، حدیث: ۱۰۔
طبقات کبری، طبقات الکوفیین ـــ الخ، ج ۶، ص ۸۶۔

3 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۵۶، ص ۳۹۸۔

www.dawateislami.net

(4)......अ़ह्दे फ़ारूक़ी का कूफ़ी दारुल इफ़्ता

शहरे कूफ़ा भी इल्मो फ़ज़्ल वाले शहरों में से एक है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुल्हे हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर जो बैअ़ते रिज़्वान फ़रमाई थी उस के तक़रीबन तीन सौ शुरका और बदरी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से तक़रीबन 70 सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इसी शहर में इक़ामत इख़्तियार की।[1]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मक्तूबात में कूफ़ा के लिये येह अल्फ़ाज़ इस्ति'माल फ़रमाते थे : اِلٰی رَأْسِ الْعَرَبِ "या'नी मर्कज़े अ़रब की तरफ़" اِلٰی رَأْسِ الْاِسْلَام "या'नी मर्कज़े इस्लाम की तरफ़।"[2]

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : بِالْكُوْفَةِ وُجُوْهُ النَّاسِ "या'नी कूफ़ा में हमा जहत सलाहिय्यतों वाली शख़्सिय्यात जम्अ़ हैं।"[3]

कूफ़ी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़

......इस कूफ़ी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़, सहाबिये रसूल, इल्मो फ़ज़्ल के शाहकार, क़ुरआनो सुन्नत के माहिर, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा ख़ुद ही भेजा था। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा वालों को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया : "ऐ कूफ़ा के रहने वालो ! तुम लोग अ़रब की जान हो, उस का दिमाग़ हो, मेरा तीर हो जिस के ज़रीए़ मैं अपने ऊपर इधर उधर से होने वाले हम्लों का दिफ़ाअ़ करता हूं, मैं तुम्हारे पास अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेज रहा हूं, मैं ने ख़ुद उन को तुम्हारे लिये पसन्द किया है और ऐसे अ़ज़ीम शख़्स को भेज कर मैं ने तुम लोगों को ख़ुद पर तरजीह़ दी है।"[4]

......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा जा कर ता'लीमो तरबिय्यत के ज़रीए़ एक ऐसी नस्ल तय्यार करने की कोशिश की जो क़ुरआनो सुन्नत की रौशनी में ख़ुद

---

1 ......طبقات کبری، طبقات الکوفیین، ج۶، ص۸۹۔
2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل الکوفة، ج۷، ص۵۵۴، حدیث:۸۔
3 ......طبقات کبری، طبقات الکوفیین۔۔۔الخ، ج۶، ص۸۶۔
4 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل الکوفة، ج۷، ص۵۵۳، حدیث:۵۔

www.dawateislami.net

भी और दीगर लोगों को भी अह़कामे शरइय्या पर अ़मल करने का जज़्बा दे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तमाम शागिर्दों के क़ुलूब में आप का बहुत ही आ'ला मक़ाम था, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मो फ़ज़्ल की शहादत दी है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं कुछ लोगों के साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास बैठा हुवा था, इतने में एक दुबला पतला शख़्स नज़र आया, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की त़रफ़ देखने लगे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर निहायत ही ख़ुशी के आसार नुमूदार हो गए, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं गोया हुवे : كُنَيْفٌ مُلِيْءَ فِقْهاً "या'नी येह शख़्स फ़क़ाहत से भरा हुवा एक वसीअ़ बरतन है ।"(1)

असातिज़ा की इक़्तिदा और पैरवी में इनफ़िरादिय्यत

......कूफ़ी दारुल इफ़्ता के तरबिय्यत याफ़्तगान अपने असातिज़ा की इक़्तिदा व पैरवी करने में दीगर तमाम इल्मी मराकिज़ के मुक़ाबले में मुन्फ़रिद थे, यहां तक कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्द आप की इक़्तिदा पर जमे रहे और एक लम्बे अ़र्से तक कूफ़ा पर आप का इल्मी व अ़मली तअस्सुर क़ाइम रहा । इस की वज्ह येह थी कि यहां के मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद अपने असातिज़ा के अदबो एह़तिराम और उन की इल्मी फ़ौक़िय्यत का पास रखा करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने अगर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान आ जाता तो अपनी राए को छोड़ देते, नीज़ आप फ़रमाया करते थे : "अगर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इल्म एक पलड़े में और पूरी दुन्या वालों का इल्म दूसरे पलड़े में रखा जाए तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इल्म भारी हो जाएगा ।"(2)

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के माबैन एक नुमायां मक़ाम था, इल्मे क़िराअत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ौक़िय्यत ह़ासिल थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से सत्तर सूरतें याद कीं, चुनान्चे,

---

(1) ......معجم کبیر، عبد اللہ بن مسعود، ج ۹، ص ۸۵، حدیث: ۸۴۷۷۔

(2) ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، رویا النبی فی فضیلۃ علم عمر، ج ۴، ص ۹ ۳، حدیث: ۴۵۵۳۔

www.dawateislami.net

खुद ही फ़रमाते हैं : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से 70 से ज़ियादा सूरतें याद कीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस बात को ब ख़ूबी जानते थे कि मैं उन में सब से ज़ियादा क़ुरआन का आ़लिम था, हा़लांकि मैं सब से बेहतर नहीं ।"(1)

......ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र आया तो फ़रमाया : "वोह तो ऐसे शख़्स हैं कि जब से उन के बारे में मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना तब से मह़ब्बत करता हूं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चार आदमियों से क़ुरआन पढ़ना सीखो : अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द से, अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम सालिम, उबय बिन का'ब और मुआ़ज़ बिन जबल से ।"(2) (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

मुफ़्तिये कूफ़ा की बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़ज़मत

......मुफ़्तिये कूफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मी मक़ामो मर्तबे से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ख़ूबी आगाह थे, इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक शख़्स आया और अ़र्ज़ करने लगा : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं कूफ़ा से आ रहा हूं, मैं ने वहां एक ऐसे आदमी को देखा है जो अपने ह़ाफ़िज़े से क़ुरआने पाक लिखवा रहा था ।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत जलाल में आ गए । फ़रमाया : "तेरा बुरा हो वोह कौन है ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "वोह अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ।" येह सुनते ही आहिस्ता आहिस्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जलाल दूर हो गया । फिर इरशाद फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक मुसलमानों में अब कोई ऐसा नहीं है जो इन से ज़ियादा इस बात का ह़क़ दार हो ।"(3)

......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई शागिर्द हैं जिन्हों ने इल्मे फ़िक़्ह और ज़ोह्दो तक़्वा में शोहरत पाई, इन में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन क़ैस, ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......بخاری، کتاب فضائل القرآن، القراء من اصحاب النبی، ج۳، ص ۴۰۳، حدیث: ۵۰۰۰۔
2 ......بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب سالم ـــ الخ، ج۲، ص ۵۴۸، حدیث: ۳۷۵۸۔
3 ......مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج۱، ص ۲۴، حدیث: ۱۷۵۔

www.dawateislami.net

मसरूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदा, ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन ह़ाज़िम, ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शिहाब, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वह्ब رَحِمَهُمُ اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के अस्माए गिरामी सरे फ़ेहरिस्त हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5)......अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शामी दारुल इफ़्ता

शामी दारुल इफ़्ता के तीन मुफ़्तियाने किराम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुल्के शाम में तीन मुफ़्तियाने किराम भेजे जो बेहतरीन क़ारी भी थे, चुनान्चे, मुल्के शाम फ़त्ह़ होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को एक मक्तूब रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

"हुज़ूर ! अहले शाम बहुत ज़ियादा हो गए हैं इन की औलाद भी बहुत कसीर हो गई है और इन के तमाम शहर लोगों से भर गए हैं, यहां ऐसे लोगों की अशद ज़रूरत है जो इन लोगों को क़ुरआने पाक की ता'लीम दें और शरई मसाइल सिखाएं। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इन लोगों की मदद फ़रमाएं और ऐसे लोगों को यहां भेजें जो इन्हें क़ुरआने पाक की ता'लीम दें।" चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पांच सह़ाबए किराम ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) को बुलाया और फ़रमाया : "तुम्हारे शामी भाइयों ने मुझ से मदद मांगी है कि मैं उन को क़ुरआने पाक और शरई मसाइल सिखाने के लिये कुछ अफ़राद मुहय्या करूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप सब पर रह़्म फ़रमाए, आप में से तीन अफ़राद मेरी मदद करें, अगर आप लोग चाहो तो क़ुरआ अन्दाज़ी कर लो वरना ख़ुशी से तीन अफ़राद मुन्तख़ब कर लो।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हम में क़ुरआ अन्दाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है, क्यूंकि सय्यिदुना अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ज़ईफ़ हो गए हैं, सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की भी त़बीअ़त नासाज़ है।" लिहाज़ा बक़िय्या तीन अफ़राद या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه, सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तय्यार हो गए। सय्यिदुना

[1]......سیر اعلام النبلاء، شهداء اجنادين واليرموک، عبد الله بن مسعود۔۔۔الخ، ج۳، ص۲۹۰، الرقم: ۹۲۔

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तीनों से इरशाद फ़रमाया : "**हि़म्स** शहर से इब्तिदा करो, वहां तुम्हें मुख़्तलिफ़ सलाहि़य्यतों वाले लोग मिलेंगे, कुछ लोग बहुत जल्द कु़रआन की ता'लीम ह़ासिल कर लेंगे, जब तुम लोग देखो कि लोग अब आसानी से ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं तो एक फ़र्द उन के पास ठहर जाए और एक फ़र्द दिमश्क़ जाए जब कि तीसरा फ़र्द फ़िलिस्त़ीन चला जाए।"

चुनान्चे, येह तीनों ह़ज़रात हि़म्स तशरीफ़ लाए और इतना अ़र्सा वहां रहे कि उन लोगों की ता'लीम पर इत़मीनान हो गया, फिर सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वहीं ठहर गए और सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिमश्क़ चले गए और सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़िलिस्त़ीन तशरीफ़ ले गए।[1]

मुफ़्तिये दिमश्क़ के इल्मी ह़ल्के़ की वुस्अ़त

दिमश्क़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुक़र्रर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां के लोगों को कु़रआनो सुन्नत की ता'लीमो तरबिय्यत देने में बहुत ही अहम किरदार अदा किया, दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक बहुत ही वसीअ़ इल्मी ह़ल्क़ा लगता था जिस में कमो बेश सोलह सौ[1600] लोग ह़ाजि़र होते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें दस दस आयतें पढ़ाते थे, और वोह लोग एक दूसरे से आगे निकलने की कोशिशें करते थे, सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के दरमियान खड़े हो कर उन्हें कि़राअत और मुख़्तलिफ़ कु़रआनी लहजों के बारे में फ़तावा देते थे।"[2]

शामी दारुल इफ़्ता के मुसद्दिक़

शामी दारुल इफ़्ता में अव्वलन तीन मुफ़्तियाने किराम मौजूद थे, अलबत्ता उन में से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुसद्दिक़ की हैसिय्यत ह़ासिल थी, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां मौजूद सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में सब से ज़ियादा इल्मुल ह़दीस के जानने वाले थे। अ़ल्लामा ज़हबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शाम के सब से बड़े आ़लिम और दिमश्क़ के सब से बड़े मुदर्रिस, फ़क़ीह और क़ाज़ी माने जाते थे।"[3]

---

1 ......طبقات کبری، ذکر من جمع القرآن۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۷۲۔

2 ......غایۃ النہایۃ، باب العین، ج ۱، ص ۲۶۹ ماخوذاً۔

3 ......تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الاولی، ج ۱، ص ۲۳۔

www.dawateislami.net

शामी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती की इ़ल्मी कोशिशें

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को हुसूले इ़ल्म की तरग़ीब भी दिलाते रहते थे इस सिलसिले में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई अक़्वाल कुतुब में मिलते हैं। पांच अक़्वाल पेशे ख़िदमत हैं :

......"मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे उ़लमा फ़ौत हो रहे हैं और तुम्हारे जुहहाल इ़ल्म ह़ासिल नहीं करते, इ़ल्म ह़ासिल करो इस से पहले कि उठा लिया जाए क्यूंकि उ़लमा का उठाया जाना इ़ल्म का उठाया जाना है।"(1)

......"आ़लिम या त़ालिबे इ़ल्म या इ़ल्म की बातें सुनने वाला बन कर ज़िन्दगी गुज़ारो इन के सिवा चौथा न बनना वरना हलाक हो जाओगे।"(2)

......"इ़ल्म ह़ासिल करो अगर तुम इस से आ़जिज़ हो तो इ़ल्म वालों से मह़ब्बत करो, अगर इन से मह़ब्बत नहीं कर सकते तो इन से बुग़्ज़ व नफ़रत भी न करो।"(3)

......"इ़ल्म सीखो इस लिये कि आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म सवाब में बराबर हैं।"(4)

......"तुम उस वक़्त तक आ़लिम नहीं बन सकते जब तक त़ालिबे इ़ल्म न बनो और उस वक़्त तक त़ालिबे इ़ल्म नहीं बन सकते जब तक अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल न करो।"(5)

मुफ़्ती को कैसा होना चाहिये.....?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की येह आ़दते मुबारका थी कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने फ़तावा में साइल की अ़क़ीदा व मसाइले शरइय्या बयान करने के तनाज़ुर में ऐसी नफ़ीस तरबिय्यत फ़रमाते थे कि साइल आप ही का हो के रह जाता।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई कि : "ह़ुज़ूर आप शे'रो शाइरी नहीं करते ? ह़ालांकि अन्सार में से शायद ही किसी का घर ऐसा हो जिस ने कोई शे'र न कहा हो।"

---

1 ......شعب الایمان، باب التوکل والتسلیم۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۷۳، حدیث: ۱۱۹۶۔

2 ......احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الاول فی فضل العلم۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۵۔

3 ......طبقات کبریٰ، ذکر من جمع القرآن۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۷۳۔

4 ......مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الادب، ماجاء فی طلب العلم وتعلیمہ، ج ٦، ص ۱۸۸، حدیث: ۱۰۔

5 ......دارمی، باب من قال العلم۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۱۰۰، حدیث: ۲۹۳۔

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि : "जी हां मैं ने कुछ शे'र कहे हैं।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दो इस्लाही शे'र कहे :

يُرِيدُ الْمَرْءُ اَنْ يُعْطَى مُنَاهُ، وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّا مَا اَرَادَا

तर्जमा : "इन्सान तो येही चाहता है कि उस की तमाम ख़्वाहिशें पूरी हो जाएं लेकिन रब عَزَّوَجَلَّ ने जितना उसे देने का इरादा फ़रमाया है उतना ही देगा।"

يَقُوْلُ الْمَرْءُ فَائِدَتِيْ وَمَالِيْ، وَتَقْوَى اللّٰهِ اَفْضَلُ مَا اسْتَفَادَا

तर्जमा : "आदमी येह कहता है कि मेरा फ़ाइदा मेरे माल के साथ है ह़ालांकि सब से ज़ियादा फ़ाइदा मन्द चीज़ तक़्वा व परहेज़गारी या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ इख़्तियार करना है।"(1)

नसीहत आमोज़ बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्म से ख़ुसूसी दोस्ती और शग़फ़ की वज्ह से मुसलमानों के दिलों में आप का मक़ामो मर्तबा बहुत बुलन्द था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गिर्द त़लबा का हुजूम लगा रहता, कोई फ़राइज़ो वाजिबात से मुतअ़ल्लिक़ा मसाइल पूछता, कोई ह़दीस के बारे में, कोई किसी पेचीदा मुश्किल मस्अले का ह़ल दरयाफ़्त करता, कोई अश्आ़र के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार करता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वा'ज़ो तक़रीर के मैदान में काफ़ी महारत रखते थे, एक दिन मुल्के शाम में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों के सामने बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हें क्या हो गया है, जो तुम ज़रूरत से ज़ाइद ख़ूराक जम्अ़ करते हो, जो घर बनाते हो उन में रहते नहीं, ऐसी ख़्वाहिशात करते हो जो पूरी नहीं होतीं। सुनो ! क़ौमे आ़द और क़ौमे समूद ने दुन्यवी मालो दौलत, आल औलाद जैसी बे शुमार ने'मतें तय्यार की थीं, है कोई जो उन की छोड़ी हुई जाएदाद को मुझ से सिर्फ़ दो दिरहम में ख़रीद ले।"(2)

नसीह़तों के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मालो दौलत की ह़िर्स और लम्बी लम्बी उम्मीदों ने आज हर शख़्स को बे क़रार कर दिया है, लोगों का सुकून तबाहो बरबाद हो चुका है, इसी बे क़रारी में कई लोगों ने इतना मालो दौलत जम्अ़ कर लिया कि उसे इस्ति'माल करने का वक़्त ही नहीं मिलता और

(1) ......الاستیعاب، ابوالدرداء، ج ۴، ص ۲۱۲۔

(2) ......عیون الاخبار، کتاب الزھد، ج ۲، ص ۳۵۷۔

www.dawateislami.net

कई लोग माल की त़लब में ऐसे अन्धे हो गए कि दीनो दुन्या की तमीज़ ही भुला कर रख दी। यक़ीनन मालो दौलत की ह़िर्स दीन की तबाही का बहुत बड़ा सबब है। चुनान्चे, सादिक़ो मस्दूक़ रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सदाक़त निशान है : "दो भूके भेड़िये बकरियों के किसी रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी आदमी की मर्तबे और मालो दौलत की ह़िर्स (या'नी लालच) उस का दीन तबाहो बरबाद कर के रख देती है।"(1)

काश ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा व खुशनूदी का ह़रीस, इख़्लास, आ़जिज़ी और इस्तिक़ामत का पैकर बना कर मन्सब और मालो दौलत की ह़िर्स व मह़ब्बत, दुन्या की झूटी इ़ज़्ज़त की वुक़्अ़त और अपनी ता'रीफ़ करवाने की ख़्वाहिश हमारे दिलों से निकाल दे कि इन बुरी सिफ़तों में हमारे क़ुलूब की ख़राबी और आख़िरत की बरबादी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस फ़रमाने इ़ब्रत निशान में कितने इ़ब्रत के मदनी फूल हैं कि क़ौमे आ़द व समूद जैसी मालदार क़ौमें अपने माल समेत तबाह हो गईं, दुन्या से ख़त्म हो गईं, उन का इतना माल भी बाक़ी न बचा कि कोई उसे दो दिरहम में ही ख़रीद ले तो ऐसी क़ौमों के इ़ब्रत नाक अन्जाम को देखने के बा वुजूद भी अगर कोई मालो दौलत की ह़िर्स रखे यक़ीनन वोह शख़्स कम अ़क़्ल है। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! ज़िन्दगी की मुद्दत कम से कम होती जा रही है, ज़िन्दगी के इस ह़सीन क़ल्ए़ को वक़्त की ज़र्बें लम्ह़ा ब लम्ह़ा कमज़ोर कर रही हैं, जाने वाले जा रहे हैं, नए लोग आ रहे हैं। बेशक दिन और रात बड़ी तेज़ी से गुज़र रहे हैं। यक़ीनन समझदार इन्सान अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरता, अपने आप को नसीह़त करता और अपनी तौबा पर साबित क़दम रहता है। अपनी ख़्वाहिशात के धारे में नहीं बहता बल्कि उन पर ग़ालिब रहता है। बेशक इन्सान की मौत उस से पोशीदा है, लम्बी लम्बी उम्मीदें उसे धोके में रखे हुवे हैं। शैत़ान हर दम इन्सान के साथ रहता है, उसे तौबा की उम्मीद दिला कर मा'सिय्यत में मुब्तला कर देता है। फिर उसे तौबा भी नहीं करने देता और इस त़रह़ टाल मटोल करवाता रहता है कि कल तौबा कर लेना, फ़ुलां वक़्त कर लेना इस त़रह़ की खोखली उम्मीदों में उसे जकड़े रखता है। गुनाह को आरास्ता कर के पेश करता है ताकि इन्सान गुनाहों पर दिलैर हो जाए ह़ालांकि मौत उसे अचानक आ घेरेगी। फिर सिवाए ह़सरत के कुछ न होगा। इन्सान को मौत की त़रफ़ से बे ख़बरी ने ग़ाफ़िल कर रखा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें उन लोगों में

(1) جامع صغیر، ص ۴۸۳، حدیث:۷۹۰۸۔

www.dawateislami.net

से न बनाए जो मालो दौलत की ह़िर्स में मख़्मूर रहते हैं, जिन का उठना-बैठना, चलना-फिरना, बस मालो दौलत है, ऐसे लोग दुन्यवी ने'मतों के बलबूते पर अकड़ जाते और मग़रूर सरकश हो जाते हैं, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें उन लोगों में से बनाए जो उख़रवी ने'मतों के त़ालिब, रिज़ाए इलाही के लिये नेक आ'माल करने वाले, रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र अदा करने वाले हैं कि ऐसे लोग ने'मतों पर मग़रूर नहीं होते, अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करते, उन्हें मौत के बा'द अफ़्सोस नहीं होता । ऐ हमारे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ ! हमें मालो दौलत की ह़िर्स के बजाए नेकियों और अज्रो सवाब की ह़िर्स अ़त़ा फ़रमा, हमारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा, बेशक तू दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाने वाला, बहुत मेहरबान है, हमारी ख़ाली झोलियां गोहरे मुराद से भर दे ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दिला ग़ाफ़िल न हो यक दम येह दुन्या छोड़ जाना है
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अन्दर समाना है
तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान चलने का
ज़मीं की ख़ाक पर सोना है ईंटों का सिरहाना है
जहां के शग़्ल में शाग़िल ख़ुदा के ज़िक्र से ग़ाफ़िल
करे दा'वा कि येह दुन्या मेरा दाइम ठिकाना है
ग़ुलाम इक दम न कर ग़फ़्लत ह़याती पर न हो ग़ुर्रह
ख़ुदा की याद कर हर दम कि जिस ने काम आना है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शामी दारुल इफ़्ता के दूसरे मुफ़्ती

शामी दारुल इफ़्ता के दूसरे मुफ़्ती ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ख़ुसूसिय्यत और कारनामा था कि पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इ़ल्मी फ़ैज़ान यमन वालों में और फिर शाम वालों में तक़्सीम फ़रमाया : आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्मो फ़ज़्ल का इस्बात करते हुवे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "औ़रतें मुआ़ज़ जैसा शख़्स जनने से आ़जिज़ आ गईं ।"[1]

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الحدود، من قال اذا فجرت۔۔۔الخ، ج۶، ص۵۵۸، حدیث: ۵ مختصرا۔

www.dawateislami.net

दो अ़क़्ल मन्दों की बातें सुनाओ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बातें सुनना बहुत पसन्द फ़रमाते थे। आप फ़रमाया करते थे : "मुझे दो अ़क़्ल मन्दों की बातें सुनाओ।" पूछा जाता कि वोह कौन हैं ? तो फ़रमाते : "मुआ़ज़ और अबू दरदा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) येह दोनों अन्सार में से हैं।"(1)

सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल पर शफ़्क़ते फ़ारूक़ी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर खुसूसी शफ़्क़त फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मी फ़ज़्लो कमाल से बहुत अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त के इब्तिदाई दौर में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह राए थी कि मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दारुल ख़िलाफ़ा या'नी मदीनए मुनव्वरा में ही रखा जाए जब सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से तशरीफ़ ले गए तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि इन के चले जाने की वज्ह से अह्ले मदीना का फ़िक़्ह व फ़तावा में काफ़ी नुक़्सान हुवा, मैं ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया था कि ज़रूरत के पेशे नज़र इन्हें मदीनए मुनव्वरा ही में रोक लें लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार फ़रमा दिया और फ़रमाया कि : "वोह ऐसे शख़्स हैं जिन का मक़्सद शहादत है मैं इन्हें नहीं रोक सकता।" तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! शहादत का त़लबगार अपने बिस्तर पर और अपने घर में भी शहादत से सरफ़राज़ हो सकता है।"(2)

अ़ह्दे सिद्दीक़ी में तो सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के मदीनए मुनव्वरा से बाहर जाने के मुख़ालिफ़ थे लेकिन बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्द में ख़ुद ही उन्हें मुल्के शाम रवाना किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुल्के शाम जाने से वहां के इल्मी माह़ोल पर बहुत अच्छा असर पड़ा, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात इल्मे दीन के लिये मुस्तनद ह़वाला बन गई, लोग जूक़ दर जूक़

1 ......طبقات کبری، معاذ بن جبل، ج ۲، ص ۲٦٦۔

2 ......طبقات کبری، معاذ بن جبل، ج ۲، ص ۲٦۵، سیر اعلام النبلاء، معاذ بن جبل، ج ۳، ص ۲۸۴، الرقم: ۹۱۔

www.dawateislami.net

आप की त़रफ़ रुजूअ़ करने लगे । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "मैं ह़िम्स की मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मैं ने देखा कि वहां तीस जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तशरीफ़ फ़रमा हैं, उन में एक ऐसा भी नौजवान था जिस की दोनों आंखें सुर्मगी और दांत बहुत ज़ियादा चमकदार थे, उस के चेहरे पर एक बा वक़ार सन्जीदगी थी, अस्ह़ाबे रसूल में जब किसी मस्अले पर तकरार होती तो उस नौजवान की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर पूछते । मैं येह देख कर बड़ा ह़ैरान हुवा और अपने एक साथी से पूछा : "येह ज़ी इ़ज़्ज़त शख़्स कौन है ?" उस ने बताया कि : "येह सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, बस उस दिन से आप की मह़ब्बत मेरे दिल में घर कर गई ।"(1)

सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल की इ़ल्मी कोशिशें

मुल्के शाम और यमन में फ़ैज़ाने इ़ल्म फैलाने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत कोशिशें फ़रमाईं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुत़बात में लोगों को इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की तरग़ीब दिलाते थे, नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कई ऐसे अक़्वाल भी हैं जो ह़ुसूले इ़ल्म की तरग़ीबात पर मुश्तमिल हैं । इ़ल्म की क़द्रो मन्ज़िलत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "इ़ल्म सीखो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़ल्म सीखना ख़शिय्यत, इस की जुस्तजू इ़बादत, इस की तकरार तस्बीह़, इस के मुतअ़ल्लिक़ बह़स करना जिहाद, जो नहीं जानता उसे इ़ल्म सिखाना सदक़ा और उसे उस के अह्ल पर ख़र्च करना नेकी है । इ़ल्म तन्हाई में मूनिस, ख़ल्वत में रफ़ीक़, दीन पर राहनुमा, ख़ुशी व तंगी में सब्र देने वाला, दोस्तों के हां नाइब, अजनबियों के पास रिश्तेदार और राहनुमा बना देता है । उन की पैरवी की जाती है, उन्हें नेकी की राह दिखाने वाला बना दिया जाता है उन के नक़्शे क़दम पर चला जाता है उन के अफ़्आ़ल को बग़ौर देखा जाता है फ़िरिश्ते उन की दोस्ती में रग़बत रखते और अपने परों से उन्हें छूते हैं, हर ख़ुश्क व तर ह़त्ता कि समन्दर की मछलियां, कीड़े मकोड़े, ख़ुश्की के दरिन्दे, जानवर, आस्मान और उस के सितारे इ़ल्म सीखने वाले के लिये मग़फ़िरत का सुवाल करते हैं, क्यूंकि इ़ल्म दिलों को अन्धेपन से जिला बख़्शता है, आंखों से अन्धेरे को दूर कर के उन्हें रौशनी देता है, बदनों की कमज़ोरी दूर कर के उन्हें त़ाक़तवर बनाता है । इस के ज़रीए बन्दा नेक लोगों की मनाज़िल और बुलन्द

1 ......مسند امام احمد، حدیث معاذ بن جبل، ج۸، ص ۲۵۱، حدیث: ۲۲۱۴۱ مختصراً۔

www.dawateislami.net

दरजात तक पहुंच जाता है, इस में ग़ौरो फ़िक्र करना रोज़ों के बराबर और इस की तकरार रात की इबादत के बराबर है, इसी के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व इबादत की जाती है, इसी से ख़ौफ़े ख़ुदा मिलता है, इसी से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी और वह़्दानिय्यत का शुऊ़र ह़ासिल होता है, इसी से परहेज़गारी मिलती है, इसी से सिलए रेह़्मी का जज़्बा मिलता है, येही ह़लाल व ह़राम की पहचान का ज़रीआ़ है, इल्म इमाम है और अ़मल इस के ताबेअ़। इल्म ख़ुश नसीबों को अ़त़ा होता है जब कि बद बख़्त इस से मह़रूम रहते हैं।(1)

विसाल के वक़्त भी इल्म की तरग़ीब

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पूरी ज़िन्दगी यूं ही इल्मे दीन की ख़िदमत करते रहे, मुल्के शाम में जब त़ाऊ़न की वबा फैली तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस से मुतअस्सिर हुवे और उसी के सबब शहादत पाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के वक़्त आप के शागिर्द रोने लगे, पूछा : "क्यूं रोते हो ?" अ़र्ज़ किया : "उस इल्म पर रोते हैं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जाने के बा'द हम से जुदा हो जाएगा।" फ़रमाया : "बेशक इल्म और ईमान की दौलत क़ियामत तक बाक़ी रहेगी, इन दोनों की पैरवी करने वाला दोनों ने'मतें पा लेगा।"(2)

शामी दारुल इफ़्ता के तीसरे मुफ़्ती

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुल्के शाम का क़ाज़ी और मुअ़ल्लिम बना कर भेजा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ अ़र्से ह़िम्स में मुक़ीम रहे और फिर दिमश्क़ चले गए, वहां मन्सबे क़ज़ा संभाला और वहीं रिहाइश इख़्तियार फ़रमा ली। यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़िलिस्त़ीन के सब से पहले क़ाज़ी होने का भी ए'ज़ाज़ ह़ासिल है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां के लोगों को क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम देते और उन की तरबिय्यत भी फ़रमाते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ोह्दो तक़्वा और निहायत ही सादा ज़िन्दगी गुज़ारने वाले थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मो फ़ज़्ल की क़द्र फ़रमाते थे, येही वज्ह है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी वज्ह से मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना

---

1 ......قوت القلوب، الفصل الحادی، کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۳۳۔
جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، ص ۷۷، الرقم: ۲۴۰۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۱۱، ص ۴۶۳۔

www.dawateislami.net

फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : आप अपनी जगह वापस जाएं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसी ज़मीन का भला न करे जहां आप जैसे लोग न हों, आप पर कोई पाबन्दी नहीं है।"(1)

बहर हाल सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़रमान के मुताबिक़ कुरआनो सुन्नत के मुअ़ल्लिम व मुदर्रिस और मुफ़्ती की हैसिय्यत से दोबारा मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी दीनी ता'लीम देने के लिये मुल्के शाम भेजा था, बहर हाल मुल्के शाम के उस तरबिय्यती दारुल इफ़्ता के तमाम मुफ़्तियाने किराम से सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ल्बी तौर पर बहुत मुत़्मइन थे, येही वज्ह है कि उस दारुल इफ़्ता से भी कई ऐसे अफ़राद तय्यार हुवे जिन्हों ने दीगर शहरों में कुरआनो सुन्नत का फ़ैज़ान आ़म फ़रमाया, उन में ह़ज़रते सय्यिदुना आइज़ बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी, ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह दिमश्क़ी (رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के अस्माए गिरामी नुमायां हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6)......अ़हदे फ़ारूक़ी का मिस्री दारुल इफ़्ता

फ़ातेहे मिस्र ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के लश्कर के बहुत से सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने मिस्र में सुकूनत भी इख़्तियार फ़रमाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक़ामो मर्तबे से कौन वाक़िफ़ नहीं ? बारगाहे रिसालत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात ह़ासिल हुवे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिस्र के क़ाज़ी और गवर्नर भी थे, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की त़रफ़ वक़्तन फ़ वक़्तन मक्तूब भेजा करते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्मी ह़ल्क़ों में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़ामो मर्तबा बहुत ज़ियादा था, मिस्र के मुफ़्ती की हैसिय्यत इन्हें ह़ासिल थी, कुरआनो सुन्नत को बयान करने में कोई इन का सानी न था, मिस्र वालों ने इन की सोह़बत इख़्तियार की और इन से कसीर अह़ादीस रिवायत कीं, मिस्र वालों को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अह़ादीस रिवायत करना इतना ही मह़बूब था जितना कि कूफ़ा वालों को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायात ज़िक्र करना।

---

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۲۶، ص۱۹۶۔

www.dawateislami.net

मुफ़्तिये मिस्र का इ़ल्मी मक़ामो मर्तबा

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआनो सुन्नत के आ़लिम और बेहतरीन क़ारिये क़ुरआन थे, इतनी ख़ूब सूरत आवाज़ और लहजे में क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते थे कि जो भी सुनता दीवाना हो जाता, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ औक़ात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ुरआने पाक सुनाने का फ़रमाते, जब तिलावत करते तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तिलावत सुन कर बहुत रोते। मिस्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इ़ल्म का फ़ैज़ान आ़म किया और कई लोगों को शरफ़े तलम्मुज़ से नवाज़ा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करने वालों में हज़रते सय्यिदुना अबुल ख़ैर मरसद यज़नी, हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन नुफ़ैर, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब, हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी, हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन रबाह़, हज़रते सय्यिदुना अबू इमरान अस्लम तुजीबी, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन शिमासा, हज़रते सय्यिदुना मिशरह़ बिन हाआ़न, हज़रते सय्यिदुना अबू उ़श्शाना ह़य्य बिन युमिन और हज़रते सय्यिदुना अबू क़बील मुग़ाफ़िरी (رَحِمَہُمُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) के अस्माए गिरामी सरे फ़ेहरिस्त हैं।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म की इ़ल्मी मुआ़वनत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ुतूहात का दाइरा वसीअ़ हुवा, मुसलमानों की कसरत हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मफ़्तूहा व ग़ैर मफ़्तूहा तमाम अ़लाक़ों में इस बात की शिद्दत से कमी मह़सूस की, कि उन नए नए मुसलमानों को अह़कामे शरइय्या सिखाने के लिये ऐसे अस्ह़ाब को भेजा जाए जो उन को क़ुरआनो सुन्नत के अह़काम तफ़्सील के साथ समझाएं, उन की तरबिय्यत करें और उन के मुख़्तलिफ़ मसाइल को ह़ल करते हुवे शरई फ़तवे भी जारी करें, इसी वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ शहरों में मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इस अ़ज़ीमुश्शान मक़्सद की तक्मील के लिये भेजा जिस के नतीजे में कई इस्लामी दर्सगाहें, जामिआ़त, मदारिस व तरबिय्यती दारुल इफ़्ता का क़ियाम अ़मल में आया, अगर्चे इन इ़ल्मी मराकिज़ की बज़ाहिर वोह शक्ल न थी जो आज कल के स्कूल, मदारिस, जामिआ़त, दारुल इफ़्ता या दर्सगाहों की होती है, लेकिन इ़ल्मी व अ़मली नताइज के ए'तिबार से वोह तमाम मराकिज़ क़लील वसाइल के बा वुजूद आज के तमाम इ़ल्मी मराकिज़ से कहीं ज़ियादा सूदमन्द थे। अगर

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، فصل فی بقیۃ کبراء الصحابۃ، عقبۃ بن عامر۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۱۰۰، الرقم: ۱۸۶۔

www.dawateislami.net

हक़ीक़त के आईने में झांक कर देखें तो येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ हो जाती है कि आज कल के स्कूल, मदारिस, जामिआ़त, तरबिय्यती दारुल इफ़्ता के बुन्यादी ढांचे अ़ह्दे फ़ारूक़ी के येह इल्मी मराकिज़ ही हैं। अगर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्म की नशरो इशाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ा येह इक़्दामात न फ़रमाते तो हो सकता था कि आज इन तमाम मदारिस व जामिआ़त और दारुल इफ़्ता का भी वुजूद न होता, यक़ीनन येह "**फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म**" ही है।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का अस्ल मक़्सद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल मक़्सद रिज़ाए इलाही के लिये इल्मे दीन को फैलाना था, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तमाम भेजे हुवे मुदर्रिसीन व मुफ़्तियाने किराम पर इस बात को बिल्कुल वाज़ेह़ फ़रमा दिया था। चुनान्चे, एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं मुख़्तलिफ़ शहरों के उमरा पर तुझ को गवाह बनाता हूं कि मैं ने उन को वहां की रिआ़या में अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम करने और लोगों को इल्मे दीन, क़ुरआनो सुन्नत सिखाने के लिये भेजा है और इस लिये भेजा है कि उन के अमवाल उन में अ़द्लो इन्साफ़ के साथ तक़्सीम करें।"(1)

उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की तनख़्वाहें

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जानते थे कि मैं जिन शहरों में अपने मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब को दीनी ता'लीम के लिये भेज रहा हूं यक़ीनन वोह नए आबाद हुवे हैं, उन की आबादी बहुत ज़ियादा है, उन में मुसलमानों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा है, उन लोगों के पास अह़कामे शरइय्या सीखने वालों का बड़ा मजमअ़ लग जाएगा, जिस के सबब उन का अपना ज़ाती कारोबार वग़ैरा करना मुमकिन नहीं, नीज़ उन के भी अहलो इयाल हैं जिन की कफ़ालत उन के ज़िम्मे है, अगर येह लोग मआ़शी ह़वाले से मुस्तह़्कम न होंगे तो अपने फ़राइज़ को सह़ीह़ त़रीक़े से न निभा सकेंगे, येही वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की बैतुल माल से तनख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाईं ताकि क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम और दारुल इफ़्ता की ज़िम्मेदारियों को येह तमाम ह़ज़रात ब त़रीक़े अह़सन अन्जाम दे सकें। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से

1 ......مسلم، کتاب المساجد، باب نهی من اکل ثوما۔۔۔الخ، ص ۲۸۴، حدیث:۸۷ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया तो उन की तनख़्वाह भी मुक़र्रर फ़रमाई।(1)

मदीनए मुनव्वरा के तीन मुदर्रिसीन की तनख़्वाहें

न सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ाज़ी व मुफ़्तियाने किराम की तनख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाईं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने छोटे बच्चों को कु़रआने पाक की ता'लीम देने वाले मुदर्रिसीन की तनख़्वाहें भी मुक़र्रर फ़रमाईं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना वज़ीन बिन अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "मदीनए मुनव्वरा में तीन मुदर्रिसीन जो बच्चों को कु़रआने पाक की ता'लीम देने पर मामूर थे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन में से हर एक को हर माह 15 दिरहम तनख़्वाह दिया करते थे।"(2)

मुदर्रिसीन की तनख़्वाहों में इज़ाफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना किनाना अ़दवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अजनाद के उमरा को एक मक्तूब रवाना किया जिस में इरशाद फ़रमाया कि : "ह़ामिलीने कु़रआन या'नी कु़रआने पाक के क़ारियों को मेरे पास भेजो ताकि मैं उन की इ़ज़्ज़त व मक़ामो मर्तबे में इज़ाफ़ा करूं, नीज़ उन की तनख़्वाहों में भी इज़ाफ़ा करूं और उन्हें दीगर मुख़्तलिफ़ शहरों में कु़रआने पाक की ता'लीम आ़म करने के लिये भेजूं।"(3)

ता'लीमे कु़रआन की रग़बत पर वज़ाइफ़ का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बा'ज़ गवर्नरों को येह लिखा कि लोगों को अ़तिय्यात उन की कु़रआने पाक सीखने की जुस्तजू पर दें। चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा किया और फिर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि अब कु़रआन सीखने में ऐसे लोगों की रग़बत भी बढ़ गई है जिन्हें पहले कभी ऐसी जुस्तजू न थी। फिर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने महब्बत और सहाबिय्यत पर वज़ाइफ़ देने का हुक्म दिया।(4)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر من جمع القرآن۔۔۔الخ، زید بن ثابت، ج ۲، ص ۲۷۴۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب البیوع والاقضیة، فی اجر المعلم، ج ۵، ص ۹۷، حدیث: ۵۔

3 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فضائل القرآن مطلقا، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۲۴، حدیث: ۴۰۱۶ مختصرا۔

4 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۴۶، حدیث: ۴۱۷۵ مختصرا۔

www.dawateislami.net

मुदर्रिसीन का मदनी लिबास

क़ारी को सफे़द लिबास में देखना पसन्द है

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुदर्रिसीन के लिये सफे़द लिबास को पसन्द फ़रमाया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق अपनी सनद से बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنِّی لَاُحِبُّ اَنْ اَنْظُرَ اِلَی الْقَارِیْ اَبْیَضَ الثِّیَابِ "या'नी मुझे येह पसन्द है कि मैं क़ारी (आ़लिम, आ़बिद, ज़ाहिद, त़ालिबे इ़ल्म) को सफे़द लिबास में देखूं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सफे़द लिबास पहनो क्यूंकि येह ज़ियादा साफ़ और पाकीज़ा है और अपने मुर्दों को भी इसी में कफ़नाओ।"(2)

ज़ाहिरी हुल्या दुरुस्त रखने की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस्ताद और त़ालिबे इ़ल्म का बहुत गहरा तअ़ल्लुक़ है, उस्ताद का वुजूद त़ालिबे इ़ल्म के लिये मश्अ़ले राह है, उस्ताद की ज़ात से त़ालिबे इ़ल्म बहुत कुछ सीखता है, वोह येह देखता है कि उस्ताद किस लहजे में बात करता है फिर वोह भी उसी लहजे में बात करना सीख जाता है, उस्ताद के उठने बैठने, चलने फिरने, खाने पीने की पैरवी करता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि उस्ताद का रवय्या त़ालिबे इ़ल्म के साथ ऐसा हो कि वोह मुस्लिम मुआ़शरे का एक मुहज़्ज़ब इन्सान बन सके, इसी त़रह़ अगर उस्ताद अपने ज़ाहिरी हुल्ये को साफ़ सुथरा रखेगा तो त़ालिबे इ़ल्म भी उस के नक़्शे क़दम पर चलेगा, देखने में येह आया है कि जो उस्ताद साफ़ सुथरा रहता है, अपने लिबास वग़ैरा का ख़याल रखता है उस के त़लबा भी साफ़ सुथरे होते हैं, बहर ह़ाल उस्ताद को अपने हर हर मुआ़मले में बहुत एह़तियात़ की ह़ाजत है कि इस के सब त़लबा की अख़्लाक़ी तरबिय्यत का मदार उस की ज़ात पर है।

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शानदार मुदर्रिस कोर्स

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में अपने तरबिय्यत याफ़्ता कुरआने पाक के माहिर कुर्रा ह़ज़रात भेजे

---

1 ......مؤطا امام مالک، کتاب اللباس، باب ماجاء فی لبس ـــ الخ، ج ۲، ص ۴۰۸، حدیث: ۱۷۳۵۔

2 ......ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی لبس البیاض، ج ۴، ص ۳۷۰، حدیث: ۲۸۱۹۔

www.dawateislami.net

थे ताकि वोह वहां के लोगों को कुरआने पाक की ता'लीम दें, उन्हें कुरआने पाक पढ़ना सिखाएं, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक मक़्सद येह भी था कि जब मेरे भेजे हुवे माहिरीन लोगों को कुरआने पाक की ता'लीम देंगे, तो उन में से भी ऐसे क़ारी हज़रात तय्यार होंगे जिन्हें दीगर शहरों में कुरआने पाक सिखाने के लिये भेजा जा सकेगा। गोया सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ शहरों में अपने तरबिय्यत याफ़्ता क़ारी साहिबान को भेज कर न सिर्फ़ उन अ़लाक़ों में मद्रसे क़ाइम फ़रमाए बल्कि एक त़रह़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन अ़लाक़ों में **"मुदर्रिस कोर्स"** शुरूअ़ करवा दिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद में सब से बड़ा "मुदर्रिस कोर्स" जिस से कसीर क़ारियों की एक खेप तय्यार हुई वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है जिस से तीन सौ से ज़ियादा क़ारिये कुरआन तय्यार हुवे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना किनाना अ़दवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अजनाद के उमरा (जंगी लश्करों के अमीरों) की त़रफ़ एक मक्तूब रवाना किया जिस में इरशाद फ़रमाया कि ह़ामिलीने कुरआन "या'नी कुरआने पाक के क़ारियों को मेरे पास भेजो ताकि मैं उन की इ़ज़्ज़त और मक़ामो मर्तबे में इज़ाफ़ा करूं, नीज़ उन की तनख़्वाहों में भी इज़ाफ़ा करूं और उन्हें दीगर मुख़्तलिफ़ शहरों में कुरआने पाक की ता'लीम आ़म करने के लिये भेजूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जवाबन एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में अ़र्ज़ किया : اِنَّہٗ بَلَغَ مِنْ قِبَلِیْ مِمَّنْ حَمَلَ الْقُرْآنَ ثَلٰثُمِائَۃٍ وَبِضْعُ رِجَالٍ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरे पास कुरआने पाक के क़ारियों की ता'दाद तीन सौ से ज़ियादा हो चुकी है।"(1)

ता'लीमे कुरआन की अहम्मिय्यत पर मक्तूब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ज़मते कुरआन पर मुश्तमिल एक त़वील मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस का मज़्मून येह है : "येह मक्तूब है ख़ुदा के बन्दे उ़मर की त़रफ़ से अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अश्अ़री और उन के साथ मौजूद कुरआन के क़ारियों की त़रफ़। اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ येह कुरआन तुम्हारे लिये बाइ़से अज्र है, तुम्हारे मरातिब बुलन्द करने वाला है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत बड़े अज्र का ज़ख़ीरा है, तुम इस की इत्तिबाअ़ करो, न कि येह तुम्हारी इत्तिबाअ़ करे, बेशक कुरआन ने जिस की

(1) ......كنز العمال، كتاب الاذكار، فصل فى فضائل القرآن مطلقا، الجزء: ٢، ج ١، ص ١٢٤، حديث: ٤٠١٦۔

www.dawateislami.net

इत्तिबाअ़ की येह क़ुरआन उसे पकड़ कर जहन्नम में धकेल देगा और जिस ने क़ुरआन की इत्तिबाअ़ की उस के लिये क़ुरआन जन्नत में दाख़िले का सबब बनेगा। पस येह क़ुरआन तुम्हारी सिफ़ारिश करे न कि मुख़ालफ़त, क्यूंकि बिलाशुबा क़ुरआन ने जिस की सिफ़ारिश कर दी वोह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और क़ुरआन ने जिस की मुख़ालफ़त की और उस से झगड़ा किया उस को जहन्नम में डाल देगा, जान लो ! येह क़ुरआन हिदायत का सर चश्मा और इल्म की रौशनी है, येह परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की किताब है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के सबब से अन्धों की आंखें खोल देता है, बहरे कानों और ताला पड़े हुवे दिलों को मुसख़्ख़र फ़रमा देता है, जान लो ! जब बन्दा रात को उठता है, मिस्वाक करता है और वुज़ू करता है, फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर तिलावते क़ुरआन शुरूअ़ कर देता है तो फ़िरिश्ता उस के मुंह पर मुंह रख कर कहता है : तिलावत कर, तिलावत कर, तू ने बहुत अच्छा पढ़ा और तेरे लिये बहुत अच्छा हुवा और अगर सिर्फ़ वुज़ू करता है और मिस्वाक नहीं करता तो फ़िरिश्ता सिर्फ़ उस की हिफ़ाज़त करता है और उस से तजावुज़ नहीं करता। याद रखो ! नमाज़ के साथ क़ुरआन की तिलावत छुपा हुवा ख़ज़ाना है और बेहतरीन मौज़ूअ़ है जिस क़दर हो सके ख़ूब क़ुरआन पढ़ो। बेशक नमाज़ नूर है, ज़कात बुरहान है, सब्र रौशनी है, रोज़ा ढाल है और क़ुरआन तुम्हारे हक़ में हुज्जत है, या तुम्हारे ख़िलाफ़ हुज्जत है, पस क़ुरआन का इकराम करो और इस की इहानत मत करो, बेशक जिस ने क़ुरआन का इकराम किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का इकराम करेगा और जिस ने उस की इहानत की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लीलो रुस्वा फ़रमाएगा। जान लो ! तिलावत करने वाले, क़ुरआन हिफ़्ज़ करने वाले और उस के अह़काम पर अ़मल करने वाले की दुआ़ मक़्बूल है।"(1)

ता'लीम की नश्रो इशाअ़त अहम अहदाफ़ में शामिल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम और उस की नश्रो इशाअ़त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अहम अहदाफ़ में शामिल थी, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहर ब शहर क़रया ब क़रया मुख़्तलिफ़ मुअ़ल्लिमीन को भेजा और इस सिलसिले में फ़क़त़ वहां के गवर्नरों या क़ाज़ियों पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि मदीनए मुनव्वरा में मुक़ीम मुख़्तलिफ़ उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम को भेज कर उन्हें तरबिय्यत के मवाक़ेअ़ फ़राहम किये, मदीनए मुनव्वरा से जाने वाले तमाम मुअ़ल्लिमीन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अह़काम के पाबन्द होते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दस सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मदीनए मुनव्वरा से मुख़्तलिफ़ शहरों में भेजा,

1 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی فضائل القرآن مطلقا، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۲۴۱، حدیث: ۴۰۱۶ـ

www.dawateislami.net

उन्ही में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे जिन्हें सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अह्ले बसरा का मुअ़ल्लिम बना कर भेजा। इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हु़सैन खु़ज़ाई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی जो फु़क़हा सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان में से थे उन्हें भी बसरा वालों की ता'लीमो तरबिय्यत के लिये भेजा।(1)

मुख़्तलिफ़ शहरों में जामेअ़ मस्जिद के क़ियाम का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मुख़्तलिफ़ शहरों को फ़त्ह़ किया तो वालिये बसरा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब लिखा जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया कि ''मुख़्तलिफ़ क़बाइल की मसाजिद के साथ एक जामेअ़ मस्जिद भी क़ाइम की जाए, जब जुमुआ़ का दिन आए तो सब लोग उस में जम्अ़ हो जाएं।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भी येही हुक्म भेज दिया उस वक़्त वोह कूफ़ा के अमीर थे, नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भी भेज दिया वोह मिस्र के गवर्नर थे, येही हुक्म मुल्के शाम के फ़ौजी कमान्डरों के नाम भी लिखा कि ''शहरों को छोड़ कर देहातों की त़रफ़ मत जाओ, हर शहर में सिर्फ़ एक जामेअ़ मस्जिद बना लो, मिस्र, बसरा और कूफ़ा वालों की त़रह़ हर क़बीले की अलग अलग जामेअ़ मसाजिद न हों।''(2)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की मसाजिद की ता'दाद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त तय्यार की और उन्हें बड़े बड़े शहरों में भेजा, फ़ुतूह़ात में जिस क़दर वुस्अ़त होती गई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुक्काम व गवर्नरों को येह हुक्म देते गए कि मफ़्तूह़ा रियासतों में मसाजिद का क़ियाम अ़मल में लाते रहें ताकि वोह मस्जिदें वहां दीने इस्लाम, इल्मो मा'रिफ़त और इस्लामी तहज़ीबो सक़ाफ़त व कु़रआनो सुन्नत की नश्रो इशाअ़त का मर्कज़ बन जाएं। क्यूंकि इस के लिये कोई अ़लाह़िदा से ता'मीरात नहीं की गई थीं इस लिये अव्वलन येही मसाजिद ही मद्रसा व दारुल इफ़्ता की हैसिय्यत

---

1 ......الاستیعاب، عبد اللہ بن مغفل، ج ۳، ص ۱۱۸۔

الاصابۃ، عمران بن حصین، ج ۴، ص ۵۸۵، الرقم: ۲۰۲۴۔

2 ......کنز العمال، کتاب الصلاۃ، فصل فیما یتعلق بالمسجد، الجزء: ۸، ج ۴، ص ۱۴۸، حدیث: ۲۳۰۷۰ ملخصا۔

www.dawateislami.net

से मुतआ़रिफ़ हुईं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के अ़हदे मुबारका में मसाजिद की ता'दाद तक़रीबन चार हज़ार के क़रीब थी।[1]

त़लबा के लिये ए'ज़ाज़ी इक़्दामात

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने क़ुरआनो सुन्नत के त़लबा की बहुत ह़ौसला अफ़्ज़ाई की और उन के लिये ह़ुसूले इ़ल्म के रास्तों को आसान बनाया, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के लिये वज़ाइफ़ भी जारी फ़रमाए, नीज़ आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने बा'ज़ उ़म्मालों को हुक्म दिया कि मुमताज़ त़लबा को ए'ज़ाज़न ख़ुसूसी इन्आ़मात से भी नवाज़ें। हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ के नाम आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जो हुक्म नामा जारी फ़रमाया उस में वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमाया कि "जो माल तक़्सीम के बा'द बच जाए उसे क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करने वालों को दिया जाए।"[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की येह हिम्मत अफ़्ज़ाई दर अस्ल मदारिस के त़लबा के लिये पैग़ामे मुसर्रत है कि अगर उन्हों ने अपनी ज़ात को किताबुल्लाह सीखने और ह़िफ़्ज़ करने के लिये पेश किया है तो यक़ीनन वोही लोग क़ौमी ए'ज़ाज़ और तआ़वुन के मुस्तह़िक़ होंगे, ख़ुसूसन ऐसे मफ़्तूह़ा शहर जहां लोग नए नए मुसलमान होते थे वहां येह ए'ज़ाज़ व इन्आ़म उन त़लबा की पोशीदा सलाह़िय्यतों को निखारने का काम करता है, जिन के ज़रीए से वहां के लोग क़ुरआने मजीद और सुन्नते नबवी को ब ख़ूबी समझ और याद कर सकें।

अ़हदे फ़ारूक़ी के मदारिस का ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब

क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम फैलाने वाले उन तमाम मदारिस में एक बात बहुत अहम्मिय्यत की ह़ामिल थी कि उन मदारिस का निसाब क्या हो ? "या'नी वोह कौन सा ऐसा मवाद हो जिस की त़ालिबे इ़ल्मों को ता'लीम दी जाए ? उन की सलाह़िय्यतों को उजागर किया जाए, जिस से सारे मुआ़शरे में इ़ल्म की रौशनी आ़म हो। अ़हदे फ़ारूक़ी में आज के दौर की त़रह़ कोई मख़्सूस ता'लीमी निसाब नहीं था, और न ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने बा क़ाइदा "निसाब" की सराह़त फ़रमाई अलबत्ता आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के मुख़्तलिफ़ फ़रामीन और मक्तूबात पढ़ कर मा'लूम होता है कि

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 560।

2.....الاصابة، بشر بن ربيعة، ج ۱، ص ۴۶۸، الرقم: ۶۷۰-

www.dawateislami.net

आप ने मुख़्तलिफ़ इल्मी मवाद बत़ौरे निसाब अपने अ़हद के मुदर्रिसीन को अ़त़ा फ़रमाया : येह तमाम निसाबी मवाद अ़हदे फ़ारूक़ी की मुनासबत से बहुत ही ज़बरदस्त था, जिस ता'लीमी मवाद की उस वक़्त ज़रूरत थी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी को सिखाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। वाज़ेह़ रहे कि निसाब में अव्वलीन तरजीह़ क़ुरआनो सुन्नत को थी कि मुसलमानों के दीनी व दुन्यवी ता'लीमी मवाद के ह़वाले से क़ुरआनो सुन्नत को बुन्यादी माख़ज़ की हैसिय्यत ह़ासिल है, इस के बिग़ैर न तो दीनी इल्म फ़ाइदा दे सकता है और न ही दुन्यवी इल्म। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ता'लीमी निसाब से मुतअ़ल्लिक़ा चन्द फ़रामीन पेशे ख़िदमत हैं :

ता'लीमी निसाब

(1)......अ़रबी ज़बान की ता'लीम निसाब में शामिल फ़रमाई। चुनान्चे, अ़रबी ज़बान के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : تَعَلَّمُوا الْعَرَبِيَّةَ فَإِنَّهَا تُثَبِّتُ الْعَقْلَ وَتُزَيِّدُ فِي الْمُرُوْءَةِ "या'नी अ़रबी सीखो क्यूंकि येह अ़क़्ल को पुख़्ता बनाती और मुरुव्वत में ज़ियादती पैदा करती है।"[1]

(2)......इल्मे नह़्व की ता'लीम को भी निसाब में शामिल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوا النَّحْوَ كَمَا تَعَلَّمُوْنَ السُّنَنَ وَالْفَرَائِضَ "या'नी इल्मे नह़्व इस त़रह़ सीखो जिस त़रह़ सुनन व फ़राइज़ को सीखते हो।"[2]

(3)......ए'राबे क़ुरआन की ता'लीम को भी निसाब में शामिल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوْا اِعْرَابَ الْقُرْآنِ كَمَا تَعَلَّمُوْا حِفْظَهُ "या'नी क़ुरआने पाक के ए'राब को इस त़रह़ सीखो जिस त़रह़ क़ुरआने पाक को ह़िफ़्ज़ करते हो।"[3]

(4)......इल्मुल अन्साब को भी निसाबे ता'लीम में शामिल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوْا اَنْسَابَكُمْ لِتَصِلُوْا اَرْحَامَكُمْ "या'नी इल्मुल अन्साब सीखो ताकि तुम सिलए रेह़्मी कर सको।"[4]

(5)......इल्मुश्शे'र की ता'लीम को भी निसाब में दाख़िल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं :

تَعَلَّمُوا الشِّعْرَ فَإِنَّ فِيْهِ مَحَاسِنَ تُبْتَغٰى وَمُسَاوٍى تُتَّقٰى وَحِكْمَةٌ لِلْحُكَمَاءِ وَيَدُلُّ عَلٰى مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ

---

1 ......شعب الایمان، باب فی طلب العلم، ج ۲، ص ۲۵۷، حدیث: ۱۶۷۶۔

2 ......البیان والتبیین، باب من لحن البلغاء، ج ۱، ص ۳۲۳۔

3 ......کنز العمال، کتاب الاذکار، فصل فی حقوق القرآن، الجزء: ۲، ج ۱، ص ۱۴۴، حدیث: ۴۱۶۱۔

4 ......الزھد للھناد، باب صلۃ الرحم، ج ۲، ص ۴۸۷، الرقم: ۹۹۶۔

www.dawateislami.net

"या'नी शे'र कहना सीखो क्यूंकि इस में ऐसी ख़ूबियों का बयान होता है जिन्हें ह़ासिल किया जाता है और ऐसी बुराइयों का बयान होता है जिन से बचा जाता है और अश्आ़र में हुकमा के लिये ह़िक्मत के फूल होते हैं और वोह अच्छे अख़्लाक़ की त़रफ़ रहनुमाई करते हैं।"(1)

(6)......इल्मुल मीरास को भी निसाब में शामिल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ فَإِنَّهَا مِنْ دِيْنِكُم "या'नी इल्मुल फ़राइज़ (या'नी मीरास का इल्म) सीखो क्यूंकि इस का तअ़ल्लुक़ भी तुम्हारे दीन से है।"(2)

(7)......इल्मुल्लह्न (लबो लेहजा और सिह़्ह़ते तलफ़्फ़ुज़) को भी निसाब में शामिल फ़रमाया। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوا السُّنَّةَ وَ الْفَرَائِضَ وَاللَّحْنَ كَمَا تَتَعَلَّمُوْنَ الْقُرْآنَ "या'नी सुन्नत, इल्मुल फ़राइज़ और लह्न का इल्म भी क़ुरआन की त़रह़ ह़ासिल करो।"(3)

अख़्लाक़ी निसाब

(1)......ता'लीमी निसाब के साथ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अख़्लाक़ी निसाब भी बयान फ़रमाया, चुनान्चे, फ़रमाते हैं :
تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ وَتَعَلَّمُوا لَهُ الْوَقَارَ وَالسَّكِيْنَةَ وَتَوَاضَعُوْا لِمَنْ يُعَلِّمُكُمْ عِنْدَ الْعِلْمِ وَتَوَاضَعُوْا لِمَنْ تَعَلِّمُوْهُ الْعِلْمَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنْ جَبَابِرَةِ الْعُلَمَاءِ فَلَا يَقُوْمُ عِلْمُكُمْ بِجَهْلِكُمْ "या'नी इल्म सीखो और लोगों को सिखाओ और इल्म के लिये इ़ज़्ज़तो वक़ार सीखो और जो तुम से इल्म ह़ासिल करते हैं उन के लिये और जिन से तुम इल्म ह़ासिल करते हो उन के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करो मुतकब्बिर आ़लिम न बनो क्यूंकि तुम्हारा इल्म तुम्हारी जहालत के साथ क़ाइम नहीं रह सकता।"(4)

(2)......किताबुल्लाह पर अ़मल की तरग़ीब दिलाई चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوْا كِتَابَ اللّٰهِ تَعَرَّفُوْا بِهِ وَاعْمَلُوْا بِهِ تَكُوْنُوْا مِنْ اَهْلِهِ "या'नी किताबुल्लाह को इस त़रह़ सीखो कि तुम्हें उस की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए और उस पर इस त़रह़ अ़मल करो कि तुम आ़मिले क़ुरआन हो जाओ।"(5)

1 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ۳، ج۲، ص ۳۴۴، حدیث: ۸۹۴۱۔
2 ......دارمی، کتاب الفرائض، باب فی تعلیم الفرائض، ج۲، ص ۴۴۱، حدیث: ۲۸۵۱۔
3 ......شعب الایمان، باب فی طلب العلم، ج۲، ص ۲۵۷، حدیث: ۱۶۷۴۔
4 ......شعب الایمان، باب فی نشر العلم، ج۲، ص ۲۸۷، حدیث: ۱۷۸۹۔
5 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب فضائل القرآن، فی التمسک بالقرآن، ج۷، ص ۱۶۵، حدیث: ۸۔

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों का ता'लीमी निसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब में इस्लामी भाइयों के मुक़ाबले में इस्लामी बहनों के निसाब में एक चीज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया कि उन्हें सूरए नूर की ख़ुसूसी ता'लीम भी दी जाए। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : تَعَلَّمُوْا سُوْرَةَ بَرَاءَةٍ وَعَلِّمُوْا نِسَاءَكُمْ سُوْرَةَ النُّوْرِ وَحَلُّوْهُنَّ الْفِضَّةَ "या'नी सूरए बराअत सीखो और अपनी औ़रतों को सूरए नूर की ता'लीम दो और उन्हें चांदी के ज़ेवरात पहनाओ।"(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म और किताबत (लिखाई)

बेहतरीन लिखाई की निशानी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने क़ुतैबा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : شَرُّ الْكِتَابَةِ الْمُشَقُّ وَشَرُّ الْقِرَاءَةِ الْهَذْرَمَةُ وَاَجْوَدُ الْخَطِّ اَبْيَنُهُ "या'नी सब से ख़राब तह़रीर वोह है जो लम्बी तिरछी हो और सब से ख़राब क़िराअत वोह है जो इतनी तेज़ तेज़ की जाए कि अल्फ़ाज़ ही समझ में न आएं, और सब से बेहतरीन लिखाई वोह है जो बिल्कुल वाज़ेह़ हो।"(2)

ख़राब लिखाई पर कोड़े की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब भेजा, जिस में उस से "بِسْمِ اللّٰہ" का "सीन" रह गया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दोबारा मक्तूब रवाना किया जिस में इरशाद फ़रमाया : "अपने कातिब को कोड़े लगाओ।" चुनान्चे, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे कोड़े लगाए। किसी ने कातिब से पूछा : "तुम्हें क्यूं कोड़े लगाए गए ?" उस ने कहा : "ह़र्फ़े सीन छोड़ने की वज्ह से।"(3)

---

1 ......شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، ذکر سورۃ الاعراف والتوبۃ والنور، ج ۲، ص ۴۷۶، حدیث: ۲۴۳۷۔

2 ......الجامع لاخلاق الراوی، ج ۱، ص ۲۶۲۔

3 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الرابع والاربعون، ص ۱۲۵۔

www.dawateislami.net

एक रिवायत में यूं है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا آتَاکَ کِتَابِیْ ھٰذَا فَاجْلِدْہُ سَوْطًا وَّاعْزِلْہُ مِنْ عَمَلِکَ "या'नी जब तुम्हारे पास मेरा मक्तूब पहुंचे तो अपने कातिब को कोड़ा लगाना और उसे उसकी ज़िम्मेदारी से भी मा'ज़ूल कर देना।"(1)

इल्म को लिख कर क़ैद कर लो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सुफ़्यान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने चचा से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : قَیِّدُوْا الْعِلْمَ بِالْکِتَابِ "या'नी इल्म को लिख कर क़ैद कर लो।"(2)

फ़ारूके़ आ'ज़म और हिजरी तारीख़

सब से पहले हिजरी तारीख़ वज़्अ़ करने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं :

اَوَّلُ مَنْ کَتَبَ التَّارِیْخَ عُمَرُ لِسَنَتَیْنِ وَنِصْفٍ مِنْ خِلَافَتِہٖ فَکَتَبَ لِسِتَّ عَشَرَ مِنَ الْھِجْرَۃِ بِمَشْوَرَۃِ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا

"या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने अपने दौरे ख़िलाफ़त के ढाई साल बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم) के मश्वरे से 16 हिजरी में तारीख़ लिखी।"(3)

तारीख़ वज़्अ़ करने की वुजूहात

ख़ुतूत़ पर तारीख़ नहीं होती थी

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमारे पास मक्तूब आते हैं उन पर तारीख़ नहीं होती, लिहाज़ा आप तारीख़ दर्ज किया करें।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा लिया तो किसी ने कहा : "बिअ़्सते नबवी से तारीख़ की इब्तिदा की जाए।"

1 ......کنز العمال، کتاب العلم، ادب الکتابۃ، الجزء: ۱۰، ج۵، ص۱۲۷، حدیث: ۲۹۵۳۶۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الادب، من رخص فی کتاب العلم، ج۶، ص۲۲۹، حدیث: ۳۔

3 ......تاریخ الاسلام، ج۳، ص۱۶۳، تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۶، تاریخ الخلفاء، ص۱۲۴۔

www.dawateislami.net

किसी ने कहा : "विसाले रसूलुल्लाह से तारीख़ की इब्तिदा की जाए।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَرِّخُ لِمُهَاجِرِ رَسُوْلِ اللّٰهِ فَاِنَّ مُهَاجَرَ رَسُوْلِ اللّٰهِ فَرْقٌ بَيْنَ الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ "या'नी हम हिजरते रसूलुल्लाह से तारीख़ की बुन्याद रखेंगे क्यूंकि रसूलुल्लाह की हिजरत ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ है।"(1)

एक यमनी शख़्स का मश्वरा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक यमनी शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : "हुज़ूर ! मैं ने यमन में देखा है कि लोग अपने ख़ुतूत़ पर तारीख़ लिखते हैं कि फ़ुलां साल और फ़ुलां महीने से।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : اِنَّ هٰذَا لَحَسَنٌ فَاَرِّخُوْا "या'नी येह तो बड़ी अच्छी चीज़ है लिहाज़ा तारीख़ वज़्अ़ करो।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तारीख़ मुक़र्रर करने के लिये एक मश्वरा त़लब किया जिस में मुख़्तलिफ़ लोगों ने मुख़्तलिफ़ आरा दीं, बिल आख़िर मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले से हिजरत का साल और मुह़र्रमुल ह़राम के महीने से हिजरी तारीख़ की इब्तिदा की गई।"(2)

तारीख़ की जगह फ़क़त़ महीना लिखा था

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक मक्तूब आया जिस में तारीख़ की जगह "शा'बान" लिखा था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَیَّ شَعْبَانِ الَّذِیْ یَجِیْءُ اَوِ الَّذِیْ مَضٰی اَوِ الَّذِیْ هُوَ آتٍ "या'नी इस शा'बान से मुराद कौन सा शा'बान है ?" जो आइन्दा आएगा, या जो गुज़र चुका है या जो अभी मौजूदा है। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को तारीख़ वज़्अ़ करने का हुक्म दिया, बा'ज़ लोगों ने तारीख़े रूम से शुरूअ़ करने का मश्वरा दिया, बा'ज़ ने तारीख़े फ़ारिस से, बहर ह़ाल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिजरत से तारीख़ शुरूअ़ कर दी गई।(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب التاریخ، باب الکنی، ج۸، ص۶۴، حدیث: ۱۸۔

2 ......تاریخ ابن عساکر، ج۱، ص۴۱، کنز العمال، کتاب العلم، باب ادب الکتابة، الجزء: ۱۰، ج۵، ص۱۳۸، حدیث: ۲۹۵۴۲۔

3 ......الکامل فی التاریخ، ذکر الوقت الذی ابتدی۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۲۔

www.dawateislami.net

एक अहम वज़ाहती मदनी फूल

अक्सर मुअर्रिख़ीन व सीरत निगारों ने इसी बात को बयान किया है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही सब से पहले हिजरी तारीख़ की बुन्याद डाली और इसे मुरत्तब करने का हुक्म दिया, लेकिन बा'ज़ मो'तबर अस्ह़ाबे सियर ने येह भी बयान फ़रमाया है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर के तशरीफ़ ले गए तो मदीने से बाहर मक़ामे क़ुबा पर क़ियाम फ़रमाया और नई तक़्वीम की वज़्अ़ का हुक्म दिया, चुनान्चे, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इसे हिजरत से शुरूअ़ किया और इस सिन की इब्तिदा मुह़र्रमुल ह़राम से की गई क्यूंकि हुज्जाज इसी साल अपने घरों को लौटते हैं।(1)

इन दोनों में ततबीक़ या'नी मुत़ाबक़त की सूरत येह है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस हिजरी तारीख़ की इब्तिदा कर दी हो जब कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे बा क़ाइदा काग़ज़ी कारवाई के त़ौर पर भी जारी कर दिया हो, इसी वज्ह से अक्सर मुअर्रिख़ीन व अस्ह़ाबे सियर ने इसे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मन्सूब किया।

अ़हदे फ़ारूक़ी की इ़ल्मी मुशावरतें

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ुतूह़ात की कसरत हुई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों की ता'दाद में भी बहुत इज़ाफ़ा हो गया, जब लोगों की कसरत हुई तो उन के माबैन कई ऐसे मसाइल भी पैदा होना शुरूअ़ हो गए जिन में उन्हें शरई रहनुमाई की ज़रूरत होती, वोह तमाम लोग सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास अपने मसाइल को भेजते और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इ़ल्मी मुशावरतें करते, जब उस मस्अले का कोई ह़ल निकलता तो उसे साइल तक पहुंचा दिया जाता।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 245।

2....सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्मी ह़वाले से मुशावरती निज़ाम और उस की मिसालों के लिये इसी किताब के बाब "अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम" सफ़ह़ा 186 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और शे'र व शो'रा

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का शाइराना ज़ौक़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अश्आ़र सुनने और उन की इस्लाह़ करने का भी बहुत आ'ला ज़ौक़ रखते थे, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अश्आ़र के ज़रीए मिसाल देने में भी अपना सानी न रखते थे, बा'ज़ लोगों ने तो यहां तक लिखा है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने शायद ही कोई ऐसा मुआ़मला आता कि जिस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कोई शे'र न पढ़ते।(1)

रफ़ीक़े सफ़र की मौत पर शे'र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार दौराने सफ़र अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के किसी साथी का इन्तिक़ाल हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहीं रुक गए और उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करने के बा'द तदफ़ीन कर दी। इस वाक़िए के बा'द शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बत़ौरे तमसील येह शे'र न पढ़ते हों :

وَ بَالِغٌ اَمْرٍ كَانَ يَاْمُلُ دُوْنَهُ
وَ مُخْتَلِجٌ مِنْ دُوْنِ مَا كَانَ يَاْمُلُ

तर्जमा : ''या'नी वोह (मौत का) मुआ़मला तक्मील को पहुंच गया जिस की आदमी को उम्मीद भी न थी और जिन चीज़ों की उम्मीद है उन के पूरे होने का यक़ीन नहीं।''(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह शे'र आख़िरत की तरग़ीब दिलाने वाले मदनी फूलों से सजा हुवा एक बेहतरीन गुलदस्ता है, यक़ीनन जब कोई शख़्स दुन्या से चला जाता है वोह अपने पीछे रहने वालों को गोया येह पैग़ाम दे कर जाता है कि आज जिस त़रह़ मैं इस दुन्या से ख़ाली हाथ चला गया हूं कल तुम्हें भी मेरे पीछे आना है :

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा राहनुमा मैं हूं

1 ......البیان والتبیین، ج ۱، ص ۲۴۱۔

2 ......موسوعہ ابن ابی الدنیا، قصر الامل، ج ۳، ص ۳۲۶، الرقم: ۹۶۔

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह एक अटल ह़क़ीक़त है कि आदमी को मौत का गुमान भी नहीं होता और वोह उसे आ कर उचक लेती है, और जिन चीज़ों की लम्बी लम्बी उम्मीदें लगा कर बैठा होता है उन के पूरा होने का कुछ पता नहीं होता, मौत आते ही सारी उम्मीदें ख़ाक में मिल जाती हैं, यक़ीनन समझदार वोही है जिसे जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाए, दुन्या को एक मुसाफ़िर ख़ाना समझे कि कई लोग इस में आए और फिर चले गए इसी त़रह़ मुझे भी एक दिन मरना है और अपनी करनी का फल भुगतना है :

है यहां से तुझ को जाना एक दिन.....क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन

मुंह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन......अब न ग़फ़्लत में गंवाना एक दिन

एक दिन मरना है आख़िर मौत है.....कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िन्दगी धोके में न डाल दे

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर बत़ौरे तम्सील येह शे'र पढ़ा करते थे :

لَا يَغُرَّنَّكَ عِشَاءٌ سَاكِنٌ
قَدْ يُوَافِي بِالْمَنِيَّاتِ السَّحَرِ

तर्जमा : "आराम देह ज़िन्दगी तुझे धोके में न रखे कि बसा औक़ात सह़र के पुर सुकून वक़्त में भी मौत आ जाती है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई दुन्या तो निरी आज़्माइश है, दर अस्ल दुन्या एक धोका है जो इस धोके में पड़ जाता है वोह अपनी आख़िरत को तबाहो बरबाद कर बैठता है और जो इस दुन्या के धोके को समझ लेता है वोह अपनी आख़िरत को बचा लेता है, दुन्या की ऐ़श कोशियों में रहने वाला बसा औक़ात येह समझता रहता है कि अभी तो मेरी बहुत त़वील उ़म्र बाक़ी है, कुछ अ़य्याशी कर लूं

(1)......شعب الایمان، باب الزھد وقصر الامل، ج۷، ص۳۶۷، حدیث: ۱۰۶۰۳۔

www.dawateislami.net

बा'द में आख़िरत के लिये कुछ नेकियां भी कर लूंगा, ह़ालांकि मौत तो अचानक आ जाएगी। काश ! हम दुन्या के बजाए आख़िरत पर नज़र रखें, ख़ुद भी नेकियां करें और दूसरों को भी नेकी की तरग़ीब दिलाएं, ख़ुद भी दा'वते इस्लामी के इजतिमाआ़त में शिर्कत करें, दूसरों को भी तरग़ीब दिलाएं, ख़ुद भी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ाकर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करें और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया
ऐ मेरे अल्लाह येह क्या हो गया
कुछ मेरे बचने की सूरत कीजिये
अब तो जो होना था मौला हो गया
ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ दामन से तेरे
सब गुनहगारों का पर्दा हो गया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रात काटने के लिये शे'र पढ़ने की इजाज़त

ह़ज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक दफ़्आ़ हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रात के वक़्त सफ़र कर रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना रबाह़ बिन मुग़्तरिफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुछ अश्आ़र सुनाने के लिये कहा क्यूंकि वोह बहुत ख़ूब सूरत आवाज़ में अश्आ़र पढ़ते थे, वोह शे'र पढ़ रहे थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह क्या है ?" अ़र्ज़ किया गया : "ह़ुज़ूर हम तो वैसे ही ख़ुश त़बई के लिये अश्आ़र पढ़ रहे थे ताकि रात कट जाए।" फ़रमाया : "अगर तुम लोग ऐसा ही करना चाहते हो तो ज़रार बिन ख़त्ताब के अश्आ़र पढ़ो।"(1)

1 ......کنز العمال، کتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۲۴۱، حدیث: ۸۹۲۹۔

www.dawateislami.net

क्या येह क़सीदा तुम ने लिखा है ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन यहूया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना नाबिग़ा बनू जा'दी से फ़रमाया : "हमें कुछ अश्आ़र सुनाओ।" उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक क़सीदा सुनाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुश हो कर फ़रमाया : "क्या येह क़सीदा वाक़ेई तुम्हारा है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी ! मैं ने लिखा है।"(1)

जाहिलिय्यत के अश्आ़र छोड़ने पर वज़ीफ़े में इज़ाफ़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा के गवर्नर हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि "अपने पास शो'रा को बुला कर ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम के अश्आ़र सुनो और उन के बारे में मुझे तफ़्सीलात लिख कर भेजो।" सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो शाइरों को बुलाया, चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना लबीद बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जब अश्आ़र सुनाने का कहा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर मैं ने अश्आ़र के बदले सूरए बक़रह और सूरए आले इमरान इख़्तियार कर ली है।" एक और शाइर अग़्लब इ़ज्ली से जब अश्आ़र सुनाने का कहा तो उन्हों ने येह शे'र सुनाया :

أَ رِجْزًا تُرِيْدُ اَمْ قَصِيْدًا
لَقَدْ سَاَلْتَ هَيِّنًا مَوْجُوْدًا

तर्जमा : "या'नी क्या आप रज्ज़ के अश्आ़र सुनना पसन्द करेंगे या किसी क़सीदे के ? यक़ीनन आप ने मौजूदा बेहतरीन चीज़ का मुतालबा किया है।" सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों की कैफ़िय्यत सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिख कर भेज दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया : "लबीद बिन रबीआ़ के वज़ीफ़े में पांच सौ दिरहम का इज़ाफ़ा कर दो और अग़्लब के वज़ीफ़े से पांच सौ दिरहम कम कर दो।" जब अग़्लब को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने बारगाहे फ़ारूक़ी में जा कर अपनी अ़र्ज़ी पेश की तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पांच सौ दिरहम की कटोती का हुक्म वापस ले लिया।(2)

---

1 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٣٤١، حديث: ٨٩٣٠۔

2 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٣٤٢، حديث: ٨٩٣١۔

www.dawateislami.net

अश्आ़र के ज़रीए शाइ़र की पहचान

बनू ग़त़फ़ान क़बीले का एक वफ़्द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : اَيُّ شُعَرَائِكُمْ اَشْعَرُ ''या'नी तुम में सब से बड़ा शाइ़र कौन है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : اَنْتَ اَعْلَمُ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ''या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप हम से ज़ियादा जानते हैं।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो शे'र पढ़े और पूछा येह किस के अश्आ़र हैं :

حَلَفْتُ فَلَمْ اَتْرُكْ لِنَفْسِكَ رِيْبَةً ... وَلَيْسَ وَرَاءَ اللّٰهِ لِلْمَرْءِ مَذْهَبِ

तर्जमा : ''मैं ने तेरा शक ख़त्म करने की क़सम उठाई है और किसी शख़्स के लिये बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त के सिवा कोई रास्ता नहीं है।''

وَلَسْتَ بِمُسْتَبِقٍ اَخاً لَا تَلَمُّهُ ... عَلٰى شَعْثٍ اَيُّ الرِّجَالِ الْمُهَذَّبِ

तर्जमा : ''तुम अपने भाई की इस्लाह़ किये बिग़ैर आगे नहीं बढ़ सकते, लोगों में कौन तहज़ीब याफ़्ता है ?'' क़बीले के लोगों ने जवाब दिया कि येह दोनों ''नाबिग़ा'' शाइ़र के अश्आ़र हैं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक और शे'र पढ़ा और पूछा कि येह शे'र किस का है ?

اَلَا سُلَيْمَانُ اِذْ قَالَ الْمَلِيْكُ لَهُ ... قُمْ فِي الْبَرِيَّةِ فَازْجَرْهَا عَنِ الْفَنَدِ

तर्जमा : ''ख़बरदार ! सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि लोगों के मज्मअ़ में उन्हें बे वुक़ूफ़ी और जहालत से रोकिये।'' क़बीले के लोगों ने जवाब दिया कि येह भी ''नाबिग़ा'' शाइ़र का शे'र है। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो अश्आ़र पढ़े और पूछा कि येह अश्आ़र किस के हैं ?

اَتَيْتُكَ عَارِياً خَلَقاً ثِيَابِي ... عَلٰى وَجَلٍ تَظُنُّ بِيَ الظُّنُوْنِ

तर्जमा : ''मैं तेरे पास गोया बिग़ैर कपड़ों के आया हूं और जो थोड़े बहुत कपड़े हैं वोह इतने ख़राब हैं कि लोग मुझ पर त़रह़ त़रह़ की बातें बना रहे हैं।''

فَاَلْفَيْتُ الْاَمَانَةَ لَمْ تَخُنْهَا ... كَذٰلِكَ كَانَ نُوْحٌ لَا يَخُوْنِ

www.dawateislami.net

तर्जमा : ''मैं ने देखा कि अमानत में ख़ियानत नहीं होती जिस त़रह़ सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़यानत नहीं करते थे।'' क़बीले के लोगों ने जवाब दिया कि येह भी ''नाबिग़ा'' शाइ़र के अश्आ़र हैं। फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक और शे'र पढ़ा और पूछा कि येह शे'र किस का है ?

وَلَسْتُ بِذَاخِرٍ لِغَدٍ طَعَاماً ... حِذَارَ غَدٍ لِكُلِّ غَدٍ طَعَامٍ

तर्जमा : ''मैं ऐसा शख़्स नहीं हूं कि ख़ौफ़ से कल के लिये खाना ज़ख़ीरा कर लूं क्यूंकि मैं जानता हूं कि कल भी मेरे नसीब में खाना है।'' क़बीले के लोगों ने जवाब दिया कि येह भी ''नाबिग़ा'' शाइ़र का शे'र है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

اَلنَّابِغَةُ اَشْعَرُ شُعَرَائِكُمْ وَاَعْلَمُ النَّاسِ بِالشِّعْرِ ''या'नी नाबिग़ा तुम में सब से बड़ा शाइ़र और सब से ज़ियादा शे'र का इ़ल्म रखने वाला है।''(1)

शरीअ़त के मुत़ाबिक़ अश्आ़र पढ़ने की इजाज़त

अश्आ़र में अच्छाइयों और बुराइयों का बयान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन्ही अश्आ़र को पसन्द करते थे जो शरीअ़त के मुवाफ़िक़ होते, उन में कोई ऐसी बात न होती जो ख़िलाफ़े शरअ़ हो, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमानों को बेहतरीन अश्आ़र याद करने पर उभारते थे। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे : **تَعَلَّمُوا الشِّعْرَ فَاِنَّ فِيْهِ مَحَاسِنَ تُبْتَغٰى وَمُسَاوٰى تُتَّقٰى وَحِكْمَةٌ لِلْحُكَمَاءِ وَيَدُلُّ عَلٰى مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ** ''या'नी शे'र सीखो क्यूंकि अश्आ़र में कई ऐसी अच्छाइयों का बयान होता है जिन्हें ह़ासिल किया जा सकता है, और कई ऐसी बुराइयों का बयान होता है जिन से बचा जा सकता है, अश्आ़र में दानिश्वरों के लिये बड़ी ह़िक्मत की बातें होती हैं और अश्आ़र उ़म्दा अख़्लाक़ पर मुश्तमिल होते हैं।''(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बा'ज़ अश्आ़र ऐसी कई ह़िक्मत भरी बातों पर मुश्तमिल होते हैं जिन्हें पढ़ने से बहुत फ़ाइदा होता है, दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की मदनी सोच नसीब होती है, जैसा कि अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ना'तों, मुनाजातों और मन्क़बतों का मजमूआ़ ''**वसाइले बख़्शिश**'' है कि येह मजमूआ़ भी नसीह़त आमोज़ अश्आ़र से पुर है।

1 ......كنز العمال، كتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٣٤٢، حديث: ٨٩٣٢۔

2 ......ادب الاملاء والاستملاء، ج ١، ص ٧١۔

www.dawateislami.net

पेट पीप से भर जाए तो बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन हुरैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : لَاَنْ يَمْتَلِیَٔ جَوْفُ الرَّجُلِ قَیْحًا خَيْرٌ لَهُ مِنْ اَنْ يَمْتَلِیَٔ شِعْرًا "या'नी किसी शख़्स का पेट (ग़ैर शरई) अश्आ़र से भर जाए, उस से बेहतर तो येह है कि पीप से भर जाए।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अश्आ़र कहना कोई आसान बात नहीं ! ऐसे हज़रात जिन्हें शे'रो शाइ़री, ह़म्द, ना'त या मन्क़बतें लिखने का बहुत शौक़ होता है वोह इस पर ग़ौर फ़रमा लें कि क्या वाक़ेई उन्हों ने इल्मुश्शे'र सीख लिया है ? उस वक़्त तक कोई कलाम आगे न बढ़ाएं जब तक किसी शे'रो शाइरी जानने वाले सुन्नी सही़हुल अ़क़ीदा मुफ़्ती साहि़ब को चेक न करवा लें कि इस में दुन्या व आख़िरत दोनों जहां के फ़ाइदे ही फ़ाइदे हैं।

फ़ुज़ूल अश्आ़र पर गवर्नर की मा'ज़ूली

हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन अ़दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को मैसान का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया, वोह अश्आ़र भी कहा करते थे, उन्हों ने बा'ज़ ऐसे अश्आ़र कहे जिन की सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के नज़्दीक कोई वुक़्अ़त न थी या'नी फ़ुज़ूल थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जो शख़्स नो'मान बिन अ़दी से मिले तो उसे बता दे कि मैं ने उसे मा'ज़ूल कर दिया है।" जब उन्हें मा'लूम हुवा तो बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हो कर अपनी सफ़ाई में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "हुज़ूर ! मैं तो एक शाइर हूं लिहाज़ा मैं ने एक बात को शे'र में कह दिया।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने जो कहना था कह दिया अब जब तक मैं ज़िन्दा हूं तुम किसी मन्सब पर फ़ाइज़ नहीं हो सकते।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ऐसे अश्आ़र जिन का न तो कोई दुन्यवी फ़ाइदा हो न ही कोई उख़रवी फ़ाइदा, न ही वोह कोई नसीह़त आमोज़ अश्आ़र हों तो ऐसे अश्आ़र में अपने आप को

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الادب، من کره الشعر، ج ۱۳، ص ۳۲۳، حدیث: ۲۶۲۱۳۔

2 ......طبقات کبری، عدی بن نضلة، ج ۴، ص ۱۰۴۔

www.dawateislami.net

मश्ग़ूल करना गोया वक़्त को ज़ाएअ़ करने के मुतरादिफ़ है, फ़क़त़ वोही अश्आ़र पढ़ें जो ह़म्द, ना'त, मन्क़बत या नसीह़त पर मुश्तमिल हों।

हिज्व करने पर ज़बान काटने का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में एक शख़्स ने अश्आ़र में किसी क़ौम की हिज्व या'नी मज़म्मत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें उस की ज़बान काटने का हुक्म दे दिया। जब वोह शख़्स चला गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बुला कर फ़रमाया : **اِيَّاكُمْ اَنْ تَعْرِضُوْا لَهُ بِالَّذِيْ قُلْتُ فَاِنِّيْ اِنَّمَا قُلْتُ لَكَ عِنْدَ النَّاسِ كَيْمَا لَا يَعُوْدُ** "या'नी जो मैं ने ज़बान काटने का हुक्म दिया है तुम लोग कहीं काट न देना मैं ने तो सिर्फ़ इस लिये कहा था ताकि वोह दोबारा हिज्व न करे।"[1]

हिज्व करने पर क़ैदख़ाने में डाल दिया

अ़हदे फ़ारूक़ी में एक मश्हूर शाइ़र हुतिय्या ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िब्रिक़ान बिन बद्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ चन्द अश्आ़र कहे जिस में ख़ुफ़्या हिज्व की, उन्हों ने बारगाहे फ़ारूक़ी में शिकायत की, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब अश्आ़र सुने तो फ़रमाया कि मुझे तो येह हिज्व नहीं लगती, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तह़क़ीक़ के लिये सना ख़्वाने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया, जब उन्हों ने हिज्व की तस्दीक़ की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाइ़र को क़ैद कर दिया। बा'दे अज़ां उन्हें छोड़ दिया।[2]

क़ियामे अम्न के लिये एक अहम फ़ारूक़ी क़दम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त से क़ब्ल बल्कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी लोगों में येह रवाज था कि एक क़बीला अश्आ़र की सूरत में किसी दूसरे क़बीले की मज़म्मत बयान किया करता था, मुक़ाबले के लिये फिर वोह भी उस क़बीले की मज़म्मत बयान करते थे, यूं बसा औक़ात उन दोनों क़बीलों में बहुत गहरी दुश्मनियां पैदा हो जातीं और बात क़त्लो ग़ारत गरी तक पहुंच जाती। सय्यिदुना फ़ारूक़े

1 ......شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی حفظ اللسان۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۲۷۷، حدیث: ۵۰۹۳۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الشعر المذموم، الجزء: ۳، ج ۲، ص ۳۳۹، حدیث: ۸۹۱۵ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से येह बात जान ली कि अब चूंकि मुसलमानों की भी कसरत हो चुकी है और अश्आ़र के ज़रीए़ मज़म्मत बयान करने का सिलसिला जारी रहा तो हो सकता है कि मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और क़ौमों में न ख़त्म होने वाला जंगी सिलसिला शुरूअ़ हो जाए लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **क़ियामे अम्न के लिये एक अहम क़दम** उठाते हुवे किसी भी क़बीले या फ़र्द की मज़म्मत बयान करने पर सख़्ती से पाबन्दी लगा दी। जो इस हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करता उसे कड़ी सज़ा दी जाती। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक फे़'ल से येह बात रोजे़ रौशन की त़रह़ वाजे़ह़ है कि मुसलमान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अम्न पसन्द हैं, अगर मुसलमान अम्न के ख़िलाफ़ होते तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी भी अश्आ़र में मज़म्मत से मन्अ़ न फ़रमाते।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूके़ आ'ज़म और इस्लाही अश्आ़र

फ़ारूके़ आ'ज़म अश्आ़र सुन कर रो पड़े

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चन्द लोग आए और उन्हों ने अपने इमाम के बारे में कहा कि वोह नमाज़ पढ़ाने के बा'द उस वक़्त तक नहीं उठता जब तक एक क़सीदा न पढ़ ले। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के पास चले गए और फ़रमाया : "मुझे तुम्हारे बारे में एक ना पसन्दीदा ख़बर मिली है।" उस ने अ़र्ज़ किया : "हु़जू़र ! आप हुक्म फ़रमाएं अगर वोह कोई बुरी बात हुई तो मैं उसे दूर करने की कोशिश करूंगा।" फ़रमाया : "मुझे पता चला है कि तुम नमाज़ के बा'द कोई क़सीदा वग़ैरा पढ़ते हो।" उस ने अ़र्ज़ किया : "हु़जू़र ! वोह तो नसीह़त आमोज़ अश्आ़र हैं जिन के ज़रीए़ मैं अपने आप को नसीह़त करता हूं।" फ़रमाया : "अच्छा ! हमें भी सुनाओ, अगर वोह वाके़ई अच्छे अश्आ़र हुवे तो तुम्हें हमारी ह़िमायत ह़ासिल हो जाएगी नहीं तो हम तुम्हें उस से मन्अ़ कर देंगे।" उस इमाम ने दर्जे ज़ैल नसीह़त आमोज़ अश्आ़र सुनाए :

وَ فُؤَادِيْ كُلَّمَا عَاتَبْتُهُ ... عَادَ فِي اللَّذَّاتِ يَبْغِيْ نَصَبِيْ

तर्जमा : "मैं जब भी अपने दिल को इ़ताब करता हूं तो वोह मेरी मशक़्क़त को तलाश करते हुवे लज़्ज़ात में लौटता है।"

www.dawateislami.net

لَا اَرَاهُ الدَّهْرَ اِلَّا لَاهِياً ... فِيْ تَمَادِيْهِ فَقَدْ بَرِحَ بِیْ

तर्जमा : मैं अपनी उ़म्र को लह्व लइ़ब में मश्ग़ूल देखता हूं, इस ने मुझे थका दिया है।"

يَا قَرِيْنَ السُّوْءِ مَا هٰذَا الصِّبَا ... فَنِيَ الْعُمْرُ كَذَا بِاللَّعَب

तर्जमा : "हाए बुराई के दोस्त ! येह क्या बे वुक़ूफ़ी है, फ़क़त़ खेल कूद में उ़म्र ख़त्म हो गई।"

وَ شَبَابٌ بَانَ مِنِّيْ وَ مَضٰى ... قَبْلَ اَنْ اَقْضِيَ مِنْهُ اَرَبِيْ

तर्जमा : "मेरी जवानी जो मेरे लिये ज़ाहिर हुई, और चली भी गई ह़ालांकि अभी मैं ने ख़्वाहिशात भी पूरी न की।"

مَا اَرْجِيْ بَعْدَهُ اِلَّا الْفَنَا ... طَبَّقَ الشَّيْبِ عَلٰى مَطْلَبِي

तर्जमा : "अब तो इस के बा'द मुझे मौत ही की तमन्ना है, बुढ़ापे ने मेरी ख़्वाहिश को छुपा दिया है।"

وَيْحُ نَفْسِيْ لَا اَرَاهَا اَبَداً ... فِيْ جَمِيْلٍ لَا وَلَا فِيْ اَدَب

तर्जमा : "मेरा नफ़्स हलाक हो मैं ने इस को कभी अच्छाई और अदब में नहीं देखा।"

نَفْسُ لَا كُنْتِ وَ لَا كَانَ الْهَوٰى ... اِتَّقِي اللّٰهَ وَخَافِيْ وَارْهَبِي

तर्जमा : "ऐ मेरे नफ़्स ! न तो तू रहेगा और न ही तेरी ख़्वाहिशात रहेंगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर, ख़ौफ़ खा और दूरअन्देशी इख़्तियार कर।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अश्आ़र सुन कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगे, फिर फ़रमाया : هٰكَذَا فَلْيَغْنِ كُلُّ مَنْ غَنّٰى "या'नी हर शे'र पढ़ने वाले को इसी त़रह़ के इस्लाह़ी अश्आ़र पढ़ने चाहिये, मैं भी येही शे'र पढ़ता हूं :

نَفْسُ لَا كُنْتِ وَ لَا كَانَ الْهَوٰى ... اِتَّقِي اللّٰهَ وَخَافِيْ وَارْهَبِي

तर्जमा : "ऐ मेरे नफ़्स ! न तो तू रहेगा और न ही तेरी ख़्वाहिशात रहेंगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर, ख़ौफ़ खा और दूरअन्देशी इख़्तियार कर।"(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

अच्छे अश्आ़र सुनना बाइ़से सवाब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जाइज़ अश्आ़र मसलन ह़म्द, ना'त और मन्क़बत वग़ैरा जाइज़ त़रीके़ पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सुनना बाइ़से सवाब और बुरे अश्आ़र जैसा कि फ़िल्मों

1 ......كنزالعمال، كتاب الاخلاق، الشعر المحمود، الجزء: ٣، ج ٢، ص ٣٣٤، حديث: ٨٩٤٠ـ

www.dawateislami.net

के फ़ोह़्श गाने वग़ैरा सुनना बाइसे अ़ज़ाब है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है : "जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठ कर गाना सुनता है क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेलेगा।"(1)

मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "(लचके तोड़े के साथ) नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, सितार के तार बजाना, बरबत़, सारंगी, रबाब, बांसरी, क़ानून, झांझन ब्युगल बजाना, मकरूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम) है क्यूंकि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र हैं, नीज़ बांसरी और दीगर साज़ों का सुनना भी ह़राम है अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है और उस पर वाजिब है कि न सुनने की पूरी कोशिश करे।"(2)

मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जूंही मूसीक़ी की आवाज़ आए तो मुमकिना सूरत में फ़ौरन कानों में उंगलियां दाख़िल कर के वहां से दूर हट जाना चाहिये। अगर उंगलियां तो कानों में डाल दीं मगर वहीं खड़े या बैठे रहे या मा'मूली सा परे हट गए तो मूसीक़ी की आवाज़ से बच नहीं सकेंगे। उंगलियां कानों में डाल कर न सही मगर किसी त़रह़ भी मूसीक़ी की आवाज़ से बचने की भरपूर कोशिश करना वाजिब है। अगर कोशिश नहीं करेंगे तो तर्के वाजिब का गुनाह होगा।

आह ! आह ! आह ! अब तो सय्यारों, त़य्यारों, मकानों, दुकानों, होटलों, चौराहों और गलियों बाज़ारों में जिस त़रफ़ भी जाइये मूसीक़ी की धुनें सुनाई देती हैं। गाने जारी होने की सूरत में होटल में खाने पीने की हरगिज़ तरकीब नहीं करनी चाहिये। याद रखिये ! फ़िल्में ड्रामे देखना और गाने बाजे सुनना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अफ़्सोस ! अब तो फ़िल्मी गीत लिखने और गाने वाले इतने बे लगाम हो गए हैं कि उन्हों ने रब्बे काइनात, ख़ालिके़ अर्ज़ो समावात عَزَّوَجَلَّ पर भी ए'तिराज़ात शुरूअ़ कर दिये हैं। अपनी दुकानों और होटलों में गाने बजाने वालों, अपनी बसों और कारों में फ़िल्मी गीत चलाने वालों, शादियों में रेकॉर्डिंग कर के बिस्तरों पर सिसकते पड़ोसी मरीज़ों और नेक हमसायों की आहें लेने वालों और बे सोचे समझे गाने गुनगुनाने वालों के लिये लम्ह़ए

(1) ......كنز العمال، كتاب اللهو واللعب ـــ الخ، اللهو المحظور، الجزء: ١٥، ج ٨، ص ٩٦، حديث: ٤٠٦٦٢ـ

(2) ......رد المحتار، كتاب الحظر والاباحة، فصل في البيع، ج ٩، ص ٦٥١ـ

www.dawateislami.net

फ़िक्रिया है । ज़रा सोचिये तो सही फ़िल्मी गानों में शैत़ान ने क्या क्या ज़हर घोल डाला है ! और लोगों को हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी और नारी बनाने के लिये किस क़दर अ़य्यारी व मक्कारी के साथ साज़ो आवाज़ के जादू का जाल बिछा डाला है । आह ! आज कल तो गानों में ब कसरत कुफ़्रिय्यात बके जाते हैं, याद रखिये ! क़त़ई कुफ़्र पर मब्नी एक भी शे'र जिस ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा, सुना या गाया वोह कुफ़्र में जा पड़ा और इस्लाम से ख़ारिज हो कर काफ़िर व मुर्तद हो गया, उस के तमाम नेक आ'माल अकारत हो गए या'नी पिछली सारी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज वग़ैरा तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो गईं, शादीशुदा था तो निकाह़ भी टूट गया अगर किसी का मुरीद था तो बैअ़त (بَےعَت) भी ख़त्म हो गई । उस पर फ़र्ज़ है कि उस शे'र में जो कुफ़्र है उस से फ़ौरन तौबा करे और कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसलमान हो । मुरीद होना चाहे तो अब नए सिरे से किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हो, अगर साबिक़ा बीवी को रखना चाहे तो दोबारा नए महर के साथ उस से निकाह़ करे । जिस को येह शक हो कि आया मैं ने इस त़रह़ का शे'र दिलचस्पी के साथ गाया, सुना या पढ़ा है या नहीं मुझे तो बस यूं ही फ़िल्मी गाने सुनने और गुनगुनाने की आ़दत है तो ऐसा शख़्स भी एह़तियातन तौबा कर के नए सिरे से मुसलमान हो जाए, नीज़ तजदीदे बैअ़त और तजदीदे निकाह़ कर ले कि इसी में दोनों जहां की भलाई है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने क़ुलूब में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ को फ़रोज़ां करने के लिये आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के ना'तिया कलाम "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" नीज़, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के भाई ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के ना'तिया कलाम "**ज़ौक़े ना'त**", आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शहज़ादे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द **मौलाना मुफ़्ती मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के ना'तिया कलाम "**सामाने बख़्शिश**", मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के ना'तिया कलाम "**क़िबालए बख़्शिश**" का मुत़ालआ़ कीजिये । नीज़ अपने क़ुलूब को सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ का मदीना बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लिखे हुवे ह़म्द, ना'त, मन्क़बत और इस्लाही कलाम पर मुश्तमिल मजमूआ़ "**वसाइले बख़्शिश**" का भी मुत़ालआ़ कीजिये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बारहवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूह़ात

इस बाब में मुलाह़ज़ा कीजिये..............................

....इस्लाम तल्वार से नहीं फैला, फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की तफ़्सील

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात

....जंगे ह़सन अबिल क़ुद्स, जंगे क़िन्नसिरीन, जंगे बा'लबक, जंगे ह़िम्स (बारे अव्वल), फ़त्ह़े रुस्तन

....जंगे शीज़र, जंगे ह़िम्स (बारे दुवुम) जंगे यरमूक, इस्लामी तारीख़ का सुन्हरी बाब

....जंगे बैतुल मुक़द्दस, फ़ारूक़े आ'ज़म की बैतुल मुक़द्दस में तशरीफ़ आवरी, जंगे ह़ल्ब

....जंगे क़ल्अ़ए इ़ज़ाज़, फ़त्ह़े इन्त़ाकिया (दारुस्सल्त़नत) साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात, पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात

....जंगे मर्जुल क़बाइल, जंगे नख़्ल, फ़त्ह़े क़ल्अ़ए त़राबुलुस, फ़त्ह़े क़ल्अ़ए सुव्वर, फ़त्ह़े क़ैसारिया

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते मिस्र, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते इ़राक़, इ़राक़ की अ़ज़ीम जंग "जंगे क़ादिसिया"

....अ़ह्दे ईसवी के एक शख़्स का ज़ुहूर, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते ईरान, फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुस्अ़त

....फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुजूहात, फ़ुतूह़ात में फ़ारूक़े आ'ज़म का इख़्तिसास, फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की आख़िरी ह़द

....

www.dawateislami.net

अह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात

अह्दे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात का पस मन्ज़र

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िलाफ़त का ख़ुसूसन इब्तिदाई ह़िस्सा मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी में गुज़रा। कमो बेश एक साल तक फ़ितनए ज़कात व इर्तिदाद के ख़िलाफ़ जंगें जारी रहीं, इस दौरान आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मुकम्मल तवज्जोह इसी जानिब मब्ज़ूल रही, बा'दे अज़ां आप ने अ़रब से बाहर इस्लामी फ़ुतूह़ात का आग़ाज़ फ़रमाया, जिस से दर्जे ज़ैल मक़ासिद ज़ाहिर होते हैं :

......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के फ़ौरन बा'द मुख़्तलिफ़ मुन्किरीने ज़कात व इर्तिदाद जैसे ख़त़रनाक फ़ितनों से जो फ़ासिद अफ़कारो ख़यालात लोगों के अज़हान में पैदा हुवे थे उन्हें मुकम्मल त़ौर पर ख़त्म किया जाए।

......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़ाइम कर्दा निज़ामे अम्नो अमान को मुख़्तलिफ़ फ़ितनों के ज़रीए़ नुक़्सान पहुंचाने और साज़िशों के ज़रीए़ फ़िक्री इन्तिशार फैलाने की कोशिश नाकाम बनाई जाए।

......जिस त़रह़ अ़रब शरीफ़ में इस्लामी ता'लीमात आ़म हुईं और हर त़रफ़ अम्नो अमान क़ाइम हो गया है बिऐ़निही अ़रब से मुल्ह़िक़ा दीगर सल्त़नतों में भी इन ता'लीमात को आ़म कर के अम्नो अमान को क़ाइम किया जाए।

......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से कई गुरौहों में येह फ़ासिद ख़याल पैदा हो गया था कि अब मुसलमानों के ज़वाल का वक़्त शुरूअ़ हो गया है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'मीर शुदा इस्लाम की मज़बूत़ दीवार आप के विसाले ज़ाहिरी से कमज़ोर हो गई है लिहाज़ा इस कमज़ोर दीवार को एक धक्का दे कर गिराया जा सकता है। लेकिन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी और दीगर फ़ुतूह़ात के ज़रीए़ तमाम लोगों पर येह बात वाज़ेह़ कर दी कि जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा मुसलमानों के लिये बाइ़से रह़मतो बरकत है बि ऐ़निही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते त़य्यिबा भी मुसलमानों के लिये बाइ़से रह़मतो बरकत है कि अम्बियाए किराम को वा'दए इलाहिय्या

www.dawateislami.net

के मुताबिक़ फ़क़त् एक आन के लिये मौत आती है बा'दे अज़ां वोह ज़िन्दा होते हैं, उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है। जिस त़रह वोह अपनी ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा में तमाम मुसलमानों के राहनुमा, मुईनो मददगार होते हैं अपनी वफ़ाते त़य्यिबा के बा'द भी वैसे ही मुसलमानों की मदद व राहनुमाई फ़रमाते हैं। जिस मुबारक हस्ती ने अपनी ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा में कलिमए त़य्यिबा पढ़ाया, मुसलमान किया, ईमान की दौलत अ़त़ा की, क़ुरआन जैसी ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया, कुफ़्रो ज़ुल्मत के अन्धेरों से निकाल कर हिदायत की रौशनियों में दाख़िल किया, पैदाइश से ले कर वफ़ात तक हर हर मुआ़मले में तफ़्सीली रहनुमाई फ़रमाई, बाप से ज़ियादा शफ़्क़त दी, मां से ज़ियादा प्यार दिया, बहन भाइयों से ज़ियादा उन्सिय्यत दी, अपने और पराए की दूरियां ख़त्म कर दीं, सदियों की दुश्मनी को मज़्बूत़ दोस्ती में तब्दील कर दिया, वह़शतो बरबरिय्यत को अम्नो आश्ती में तब्दील कर दिया.....येह कैसे हो सकता है कि जब उस का विसाल हो तो मुसलमान कमज़ोर हो जाएं, उन्हें फ़वाइद के बजाए नुक़्सानात का सामना करना पड़े, उन की फ़त्ह शिकस्त में तब्दील हो जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिहाद के ज़रीए़ कुफ़्फ़ार के तमाम फ़ासिद अ़क़ाइद जड़ से उखाड़ फेंके।

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं येह
इन सा नहीं इन्सान वोह इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
और ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

फ़ितनए ज़कात व इर्तिदाद की सरकोबी के बा'द अ़हदे सिद्दीक़ी में इराक़ व शाम के चन्द अ़लाक़े फ़त्ह हुवे, मुल्के रूम में जब मा'रिका अजनादैन वुक़ूअ़ पज़ीर हो रहा था उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मरज़ुल मौत में मुब्तला हुवे और उस मा'रिके की फ़त्ह की ख़ुश ख़बरी जब क़ासिद आप की बारगाह में लाया उस वक़्त आप पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी थी, आख़िरी वसाया और ख़लीफ़ा नामज़द करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी 22 जुमादल उख़रा 13 हिजरी ब मुताबिक़ 22 अगस्त 634 ईसवी को अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले।[1] اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ

1....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 444

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस दिन अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वफ़ात पाई उसी दिन जुमादल उख़रा 22 हिजरी मंगल के दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी बिऐ़निही उन ही तमाम अ़ज़ीम मक़ासिद के तह़त इराक़ व शाम की फ़ुतूहा़त को जारी रखा जो सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पेशे नज़र थे।

इस्लाम तल्वार से नहीं फैला.....!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर दौर में इस्लाम दुश्मन अ़नासिर इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत को मजरूह़ करने के लिये त़रह़ त़रह़ के ह़रबे इस्ति'माल करते आए हैं, ख़ुसूसन कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन और यहूदो नसारा इस्लाम की आ़लमगीर मक़्बूलिय्यत से क़त़्अ़ नज़र ब नज़रे तअ़स्सुब इनादन येह प्रोपेगन्डा करते हैं कि इस्लाम तल्वार के बलबूते पर फैला है और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ येह कहते हुवे भी शर्मो ह़या मह़सूस नहीं करते कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक हाथ में कु़रआन और दूसरे हाथ में तल्वार थाम कर इस्लाम की नश्रो इशाअ़त की है। किज़्ब और दरोग़ गोई पर मुश्तमिल अपने इस दा'वे के सुबूत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़्वात और सराया को बत़ौरे दलील पेश करते हैं लेकिन येह एक वाजे़ह़ ह़क़ीक़त है कि इस्लाम तल्वार से नहीं बल्कि अपनी ह़क़्क़ानिय्यत से और हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाके़ करीमा, बक़ाए इन्सानिय्यत पर मुश्तमिल ता'लीमात, कु़रआनो सुन्नत के आ'ला उसूल, इस्लामी तहज़ीबो तमद्दुन व दीगर बे शुमार इस्लामी मह़ासिन की बिना पर लोगों के दिलों में रासिख़ हुवा है। इस पर चन्द तारीख़ी क़राइनो दलाइल पेशे ख़िदमत हैं :

(1)......अख़्लाके़ ह़सना के सबब क़बूले ईमान

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तिरसठ सालह ह़याते त़य्यिबा का जाइज़ा लेने से येह बात वाजे़ह़ होती है कि इस में से पचपन साल का अ़र्सा इस त़रह़ गुज़रा कि आप पर ज़ुल्मो सितम किये गए, अज़िय्यतें, तक्लीफ़ें, मसाइब पहुंचाए गए लेकिन आप ने "उफ़" तक न किया। सब्रो तह़म्मुल से दुश्मनों के आज़ार बरदाश्त फ़रमाए, ज़ालिमों की बदगोई करने के बजाए उन्हें दुआ़एं दीं, यहां तक कि तमाम मुसलमानों को भी सब्र की तल्क़ीन करते हुवे ज़ुल्मो सितम बरदाश्त करने की ता'लीमो तरबिय्यत दी, अपनी समाजी, ख़ानदानी, इज़्देवाजी, तिजारती और रवाबिती़ ज़िन्दगी में किसी से झगड़ा फ़साद तो क्या ऊंची आवाज़ से बात तक न की, किसी के साथ बद

www.dawateislami.net

कलामी न फ़रमाई, गाली का जवाब दुआ़ से दिया, आ़जिज़ी व इन्किसारी का पैकर बने रहे, हुस्ने अख़्लाक़ से भरपूर आ'ला किरदार पेश किया यहां तक कि खुद कुफ़्फ़ारे क़ुरैश आप को सादिक़ो अमीन पुकारने लगे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इन्ही तमाम सिफ़ात के सबब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश में इस्लाम की ऐसी शम्अ़ फ़रोज़ां हुई जिस की रौशनी चहार सू फैल गई ।

(2)......ए'लाने नबुव्वत से क़ब्ल ही क़बूले ईमान

कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन के ख़िलाफ़ आयाते जिहाद नाज़िल होने से क़ब्ल ही मुख़्तलिफ़ लोगों के क़बूले इस्लाम के कई ऐसे वाक़िआ़त पेश आए जो इस बात पर दलालत करते हैं कि इस्लाम अपनी ह़क़्क़ानिय्यत और सदाक़त की बिना पर फैला । मसलन :

۞......मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आयते जिहाद के नाज़िल होने से 43 साल क़ब्ल बारह 12 साल की उ़म्र में अपने चचा के हमराह मुल्के शाम का सफ़र फ़रमाया, वहां आस्मानी किताबों के एक बहुत बड़े आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना बुह़ैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने देखा कि बादल आप पर साया किये हुवे हैं और शजरो ह़जर आप को सलाम कर रहे हैं, फिर चन्द सुवालात के तसल्ली बख़्श जवाबात पा कर आप की पीठ पर मोहरे नबुव्वत को देखा उसे बोसा दे कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए ।(1)

۞......इस वाक़िए़ को एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना बासील رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी मुलाह़ज़ा किया, उन्हें यक़ीन था कि बुह़ैरा राहिब ह़क़ बात के सिवा कुछ नहीं कहते, बा'दे अज़ां आप क़ैसारिया चले गए और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत के बा'द आप पर ईमान लाए । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुल्के शाम के शहर क़ल्अ़ए सुव्वर के ह़ाकिम इरयूमल बिन क़ुस्त़ा के चचाज़ाद भाई थे । 19 हिजरी में मुल्के शाम में क़ल्अ़ए सुव्वर की जंग में अपना ईमान ज़ाहिर किया और अ़ज़ीम ख़िदमात अन्जाम दीं ।(2)

۞......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब नज्जार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और अस्ह़ाबे क़रिया भी हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़े जमीला अगली आस्मानी किताबों में पढ़ कर ए'लाने नबुव्वत से क़ब्ल ही आप पर ईमान ले आए थे ।(3)

---

1 ......سیرۃ ابن هشام، قصة بحیری، ج ۱، ص ۱۸۰، مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۲٦۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح صور۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۹۔

3 ......روح البیان، پ ۲۳، یس، تحت الآیة: ۱۹، ج ۷، ص ۳۸۳۔

www.dawateislami.net

(3)......ए'लाने नबुव्वत के बा'द क़बूले ईमान

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत के बा'द भी क़बूले इस्लाम के कई ऐसे वाक़िआ़त पेश आए जो इस बात पर दलालत करते हैं कि इस्लाम अपनी ह़क़्क़ानिय्यत और सदाक़त के सबब फैला। मसलन :

۞......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ए'लाने नबुव्वत से पहले ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़े ह़मीदा से बहुत मुतअस्सिर थे, ए'लाने नबुव्वत के फ़ौरन बा'द ही बिग़ैर किसी तरद्दुद के ईमान ले आए।(1)

۞......सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इनफ़िरादी कोशिश से अ़रब के निहायत ही ज़हीनो फ़त़ीन, शुरफ़ा, साह़िबे इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत बड़े बड़े ताजिर ह़ज़रात ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमा और ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबू अरक़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के अस्माए गिरामी सरे फ़ेहरिस्त हैं।(2)

۞......कुफ़्फ़ारो मुशरिकीने मक्का के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर मुसलमानों ने सब से पहले ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत की, इस हिजरते अव्वल में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी साथ थे। ह़ब्शा के बादशाह नजाशी ने मुसलमानों को पनाह दी और ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्लाम की दा'वत से नजाशी बादशाह ने इस्लाम क़बूल कर लिया।(3)

(4)......ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम के सबब क़बूले इस्लाम

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'लाने नबुव्वत के बा'द कई लोगों ने ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम के सबब क़बूले इस्लाम किया जो इस बात पर दलालत करता है कि इस्लाम अपनी ह़क़्क़ानिय्यत और सदाक़त की बिना पर ही फैला। मसलन :

---

1 ......اسد الغابۃ، عبد اللہ بن عثمان، ج۳، ص۳۱۷۔

2 ......الاصابۃ، عثمان بن عفان، ج۴، ص۳۷۷، الرقم: ۵۴۶۲۔

3 ......سیرۃ ابن ہشام، حدیث آخر عن اسلام عمر، ج۱، ص۳۱۹۔

www.dawateislami.net

۞......ए'लाने नबुव्वत के छटे साल मक्कए मुकर्रमा की क़ौम क़ुरैश के सब से ज़ियादा ग़ैरत मन्द, शहज़ोर और बहादुर शख़्स, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ईमान लाए।(1)

۞......उन के ईमान लाने के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ईमान ले आए, जब वोह अपने बहनोई और बहन के पास पहुंचे उन्हें ख़ूब मारा पीटा, लहू लुहान कर दिया बा'दे अज़ां क़ुरआने पाक की तिलावत करते ही इस्लाम के लिये आप का दिल नर्म हो गया, जिस तल्वार से अपने बहनोई व बहन को मारने गए थे उसी तल्वार से अपने कुफ़्र को काट डाला और बारगाहे रिसालत में पहुंच कर इस्लाम क़बूल कर लिया।(2)

۞......ए'लाने नबुव्वत के ग्यारहवें साल अय्यामे ह़ज में मदीनए त़य्यिबा के क़रीबी अ़लाक़े ख़ज़रज का एक वफ़्द मक्कए मुकर्रमा आया और इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर मदीनए मुनव्वरा लौट गया, मदीनए मुनव्वरा में हर घर और हर मजलिस में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ज़िक्र होने लगा, आइन्दा साल मक्कए मुकर्रमा में एक दूसरा वफ़्द ह़ाज़िर हो कर ईमान से मुशर्रफ़ हुवा, उस वफ़्द की ख़्वाहिश पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुअ़ल्लिम बना कर भेजा ताकि वोह अह्ले मदीना को क़ुरआन की ता'लीम दें और अह़कामे शरइय्या सिखाएं। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बहुत बड़े क़ाफ़िले के साथ आए जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया। यक़ीनन इन तमाम लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने पर किसी ने मजबूर नहीं किया था बल्कि इन्हों ने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत की वज्ह से इस्लाम क़बूल किया।

(5)......हिजरते मदीना के बा'द क़बूले इस्लाम

शजरए इस्लाम को परवान चढ़ता देख कर कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन बोखला गए, लिहाज़ा उन्हों ने आख़िरी ह़र्बे के त़ौर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका के ख़िलाफ़ साज़िशें शुरूअ़ कर दीं लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमा गए, आप की आमद से मदीनए मुनव्वरा में ख़ुशियों की लहर दौड़ गई, आप के

1......طبقات کبری، حمزہ بن عبد المطلب، ج۳، ص۶۔

2......سیرۃ ابن ہشام، اسلام عمر بن الخطاب، ج۱، ص۳۱۹ ملخصا۔

www.dawateislami.net

दस्ते अक़्दस पर इस्लाम लाने के लिये लोगों का तांता बंध गया, अत़राफ़ के अ़लाक़ों और क़ुर्बो जवार के देहातों से मुख़्तलिफ़ क़ाफ़िले आ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। यक़ीनन उन तमाम लोगों को किसी ने भी तल्वार के ज़ोर पर क़बूले इस्लाम के लिये मजबूर नहीं किया बल्कि उन्हों ने ब ज़ाते ख़ुद ख़ुश दिली से ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम की वज्ह से इस्लाम क़बूल किया।

(5)......यहूद के जय्यिद उ़लमा व फ़ुज़ला का क़बूले इस्लाम

वाज़ेह़ रहे कि मदीनए मुनव्वरा में ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने वाले लोगों में मुख़्तलिफ़ क़ौमों के उदबा, फ़ुज़ला, उमरा, उ़लमा, सुलह़ा, रुअसा और हुकमा भी शामिल थे। इन तमाम लोगों ने फ़क़त़ देखा देखी में इस्लाम क़बूल नहीं किया था बल्कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़े ह़मीदा को देखा और इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत की बिना पर इक़रारे तौह़ीदो रिसालत किया। मसलन :

۞......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में से थे, इन का शुमार अकाबिर उ़लमाए यहूद में होता था, फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए, लोग जूक़ दर जूक़ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होने लगे। मैं भी उन के हमराह ह़ाज़िर हुवा, जैसे ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर पर नज़र पड़ी फ़ौरन येह जान लिया कि येह कज़्ज़ाबों या'नी झूटों का चेहरा नहीं है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुफ़्तगू से मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा। दूसरी मरतबा ख़ल्वत या'नी अकेले ही बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और चन्द ऐसे सुवालात किये जिन का जवाब नबी के इ़लावा कोई दूसरा नहीं दे सकता। जब मैं ने अपने सुवालों का शाफ़ी व काफ़ी जवाब सुना तो ब आवाज़े बुलन्द कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर इस्लाम में दाख़िल हो गया।"

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! यहूद ऐसी क़ौम है जो किज़्ब व बोहतान में अपना जवाब नहीं रखती। मेरे इ़ल्म, सयादत और सरदारी के बा वुजूद मुसलमान होने के सबब येह मुझ पर झूट और बोहतान बांधेंगे, मेरी ग़ैर मौजूदगी में आप उन से मेरे मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाइये।" चुनान्चे, ऐसा ही किया गया तो यहूद ने कहा : "अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हमारे सरदार, हमारे सरदार के फ़रज़न्द हम में सब से ज़ियादा आ़लिम, हमारे पेश्वा, हम में सब से बेहतरीन और दाना तरीन शख़्स हैं।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बार

www.dawateislami.net

बार पूछा, हर बार उन्हों ने येही जवाब दिया। बा'दे अज़ां आप ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुलाया तो वोह कलिमए त़य्यिबा पढ़ते हुवे बाहर आए और क़ौमे यहूद से कहा : "तुम भी ईमान ले आओ।" इस पर उन्हों ने कहना शुरूअ़ कर दिया : "अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हम में बदतरीन व जाहिल शख़्स है, येह तो जाहिल शख़्स का बेटा है।"(1)

इस को कहते हैं बुग़्ज़ो इनाद, थोड़ी देर पहले अपनी ज़बानों से एक मरतबा नहीं कई मरतबा जिस की ता'रीफ़ में आस्मानो ज़मीन के क़िलाबे मिला दिये थे, उस के मुसलमान होने का इ़ल्म होते ही त़ा'नो तशनीअ़ के तीर बरसाने लगे। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ौमे यहूद की इस बोहतान व इफ़्तरा बाज़ी की क़त़्अ़न परवाह न की। ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की गर्दन पर तल्वार रख कर ईमान लाने पर मजबूर किया गया था ? हरगिज़ नहीं बल्कि उन को इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये कुफ़्फ़ार ने एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया मगर वोह अपने मज़्मूम इरादों में कामयाब न हो सके। यक़ीनन इस्लाम तल्वार से नहीं फैला, अगर ऐसा होता तो इस्लाम क़बूल करने वाले तल्वार के ख़ौफ़ से इस्लाम से फिर जाते लेकिन तारीख़ इस बात की गवाह है कि तमाम बात़िल क़ुव्वतें भी उन के ए'तिक़ाद व यक़ीन को मुतज़लज़ल न कर सकीं और بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی वोह दीने इस्लाम पर साबित क़दम रहे।

......इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्फ़हान के रहने वाले थे, उन्हों ने दीन की तलाश में दूर दराज़ मक़ामात का सफ़र किया, आस्मानी किताब इन्जील के बहुत ही ज़बरदस्त नसरानी आ़लिम थे। जब उन्हों ने मदीनए मुनव्वरा में सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात में वोही औसाफ़े जमीला पाए जो पिछली किताबों में पढ़े थे लिहाज़ा ईमान ला कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। यक़ीनन इन बड़े बड़े उ़लमा को किसी ने भी तल्वार के ज़ोर पर ईमान लाने पर मजबूर नहीं किया जो इस बात का बय्यिन सुबूत है कि इस्लाम तल्वार से नहीं फैला।

(7)......रसूलुल्लाह ने दफ़्ए़ ज़रर के लिये तल्वार उठाई

......यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस में तल्वार थामी और जिहाद व क़िताल फ़रमाया लेकिन आप ने सिर्फ़ और सिर्फ़ दफ़्ए़ ज़रर (फ़क़त़ नुक़्सान को रोकने) के लिये ऐसा फ़रमाया। आप ने शमशीर का वार ज़ुल्म ढाने के लिये नहीं बल्कि

(1) ......مدارج النبوۃ،ج۲،ص۲۶۔

www.dawateislami.net

ज़ुल्म को मिटाने के लिये किया, जिस का सहीह़ अन्दाज़ा आप की ह़याते त़य्यिबा के ग़ज़्वात व सराया को देख कर लगाया जा सकता है जो मज़्लूमीन के दिफ़ाअ़ और ज़ालिमों के इस्तीसाल के लिये ही थे, तमाम ग़ज़्वात تَوَكُّلْ عَلَى اللّٰهِ وَنَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा और उस की मदद की बुन्याद ही पर थे," क्यूंकि इन तमाम ग़ज़्वात में कहीं भी मसावात और बराबरी का मुक़ाबला न था। मसलन :

......जंगे बद्र (2 हिजरी) में कुफ़्फ़ार के लश्कर की ता'दाद कमो बेश 950 नव सौ पचास थी जिस में 700 ऊंट, 100 घोड़े, 950 तल्वारें और 950 ज़िरहें थीं। खाने पीने का सामान इतना कसीर था कि रोज़ाना ग्यारह ऊंट ज़ब्ह़ कर के खाते थे, ऐशो इ़शरत का सामान काफ़ी ता'दाद में मौजूद था, पड़ाव करते तो ख़ैमे नस्ब करते। जब कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद कमो बेश तीन सौ तेरह 313 थी जिन में 70 ऊंट, 3 घोड़े, 8 तल्वारें और 6 ज़िरहें थीं। ज़ादे राह की येह ह़ालत थी कि किसी के पास एक साअ़ तो किसी के पास दो साअ़ खजूरें थीं। मुसलमानों के पास एक ख़ैमा तक न था, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने खजूर के पत्तों और टहनियों से एक अ़रीश या'नी झोंपड़ी तय्यार कर के सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस में ठहराया।

......जंगे उहुद (3 हिजरी) में कुफ़्फ़ार के लश्कर की ता'दाद कमो बेश तीन हज़ार थी, जिन में से सात सौ ज़िरह पोश, दो सौ घोड़े और तीन हज़ार ऊंट थे, नीज़ काफ़ी ता'दाद में तल्वारें, नेज़े, ख़न्जर, बरछियां, तीर कमान और दीगर आलाते जंग भी थे। जब कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद कमो बेश एक हज़ार थी जिन में से एक के पास भी घोड़ा न था, फ़क़त़ सौ मुजाहिदीन ज़िरह पोश थे, चन्द ह़ज़रात के पास तीर कमान, कुछ लोगों के पास तल्वारें और नेज़े थे।

......जंगे अह़ज़ाब (5 हिजरी) में कुफ़्फ़ार के लश्कर की ता'दाद कमो बेश दस हज़ार थी, जिन में तीन सौ घोड़े और एक हज़ार ऊंट सुवार थे, जब कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद तीन हज़ार थी, जिन में सिर्फ़ छत्तीस[36] ही घोड़े थे।

......जंगे मौता (8 हिजरी) में कुफ़्फ़ार के लश्कर की ता'दाद एक लाख से भी ज़ाइद थी जिन में से अक्सर सिपाही जंगी आलात से लेस और घोड़ों पर सुवार थे, जब कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद फ़क़त़ तीन हज़ार थी और उन में भी क़लील ता'दाद के पास जंगी आलात थे। घोड़े और ऊंट भी निहायत ही क़लील ता'दाद में थे। इन तमाम जंगों के बा वुजूद लोगों के बड़े बड़े क़ाफ़िले दाइरए इस्लाम में दाख़िल होते ही चले गए।

www.dawateislami.net

जानी दुश्मनों को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया

......ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़क़त़ दफ़्ए़ ज़रर के लिये ही तल्वार उठाई इस का एक बहुत बड़ा सुबूत येह भी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने जानी दुश्मनों को भी बद दुआ़ न दी बल्कि उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया। मसलन :

......जंगे उहुद में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रुख़्सारे मुबारक, नीचे का होंट मुबारक ज़ख़्मी हुवे और निचले दनदाने मुबारका का कुछ ह़िस्सा शहीद हो गया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने चाहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन कुफ़्फ़ार के लिये बद दुआ़ फ़रमाएं लेकिन आप ने फ़रमाया : "मुझे ला'नत और बद दुआ़ करने के लिये नहीं भेजा गया बल्कि मख़्लूक़े ख़ुदा को ख़ुदा से मिलाने और उन पर रह़मत व शफ़्क़त करने के लिये भेजा गया है।"(1)

......आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद करने की साज़िश से ख़ैबर के मक़ाम में बकरी की ज़ह्र आलूद रान देने वाली यहूदिय्या ज़ैनब बिन्ते ह़ारिस और आप को नुक़्सान पहुंचाने के इरादे से आप पर जादू करने वाले यहूदी लबीद बिन आ'सम दोनों को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।(2)

......एक मरतबा आप आराम फ़रमा रहे थे, एक आ'राबी बर्हना तल्वार ले कर आया और कहने लगा कि अब आप को मुझ से कौन बचाएगा ? आप ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ।" बा'दे अज़ां उस के हाथ से तल्वार छूट कर गिर गई, वोह शख़्स लरज़ने और कांपने लगा लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

......जंगे उहुद में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो बा'द में इस्लाम ले आए थे आप ने उन्हें भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

......फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर कुफ़्फ़ार के बड़े बड़े सरदार जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा जिन्हों ने क़बूले इस्लाम से क़ब्ल मुसलमानों को तकालीफ़ देने में कोई कसर

1 ......شعب الایمان، باب فی حب النبی، فصل فی حدبه علی امته۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۶۴، حدیث: ۱۴۴۷۔

2 ......طبقات کبری، ذکر ماسمہ بہ رسول۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱۵۵۔

www.dawateislami.net

न उठा रखी थी, इसी त़रह़ दीगर तमाम कुफ़्फ़ार क़ैदी येही सोच रहे थे कि अब हमें क़त्ल कर दिया जाएगा लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम लोगों को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

अगर इस्लाम को तल्वार से फैलाना मक़्सूद होता तो कभी भी इन तमाम लोगों को मुआ़फ़ न किया जाता। इन तमाम लोगों को मुआ़फ़ कर देना इस बात की वाज़ेह़ दलील है कि इस्लाम तल्वार से नहीं बल्कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़सना और ह़क़्क़ानिय्यत के सबब फैला है।

(8)......कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन का मुसलमानों के ख़िलाफ़ बुग़्ज़ो इनाद

इस्लाम की बढ़ती हुई शानो शौकत देख कर कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन के साथ साथ यहूदो नसारा भी ह़सद व इ़नाद की आग में जल उठे। अदयाने बात़िला के सरग़नों के सरों पर ख़ून सुवार हो गया। मदीनए मुनव्वरा के मुनाफ़िक़ीन ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन से राबित़े बढ़ाए और इस्लाम दुश्मनी पर हाथ मिला कर उसे मिटाने के लिये कमरबस्ता हो गए। मक्कए मुकर्रमा, ख़ैबर व दीगर मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों तक फ़ौजें तरतीब दी जाने लगीं जंगी हथयार भारी ता'दाद में जम्अ़ किये जाने लगे। समाजी और मुआ़शरती ज़िन्दगी में मुसलमानों को सख़्त अज़िय्यतें दी जाने लगीं, ज़ुल्मो सितम का बाज़ार एक दफ़्आ़ फिर से गर्म हो गया, कुफ़्फ़ार ने बच्चों, बूढ़ों, ग़ुलामों और औ़रतों को भी अज़िय्यतें देने में कोई कसर न छोड़ी। ह़ालात ऐसे रूनुमा हो गए थे कि कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन की जुरअतें दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही थीं, मगर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिहाद का हुक्म नाज़िल होने तक अपने अस्ह़ाब को सब्र ही की तल्क़ीन फ़रमाते रहे। सिने 2 हिजरी में जिहाद का हुक्म नाज़िल हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वात व सराया का आग़ाज़ फ़रमाया। अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिहाद न फ़रमाते तो ज़ुल्म की रोक थाम न होती और ज़ुल्म को बढ़ने से रोकना इन्सानिय्यत का एक अहम फ़रीज़ा है।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वात व सराया के ज़रीए़ पूरी दुन्या के लोगों को येह पैग़ाम दिया कि जिस त़रह़ जज़ीरए अ़रब में पाए जाने वाले मुआ़शरती नासूर जैसे अपनी ह़क़ीक़ी बेटी को अपने ही हाथों से ज़िन्दा दरगोर करना, शराब के नशे में धुत हो कर शरीफ़ औ़रत की इ़स्मत कुशी करना, औ़रतों के साथ वह़शियाना सुलूक करना, चोरी, डकेती, लूट मार, अमानत में ख़यानत, दग़ा, फ़रेब, धोका देही, जुवा, शराब, ज़िना, किसी का माल नाजाइज़ त़ौर पर दबा लेना, बेह़याई, उ़रयानी, फ़ह़्ह़ाशी, फ़ोह़्श

www.dawateislami.net

कलामी, तोहमत वग़ैरहा अफ़्आ़ले रज़ीला को रुख़्सत कर के मुसलमानों ने दुख़्तर परवरी, पारसाई, दियानत दारी, परहेज़गारी, पाक दामनी, हमदर्दी, रास्त कलामी, ह़यादारी, अमानत दारी, सिद्क़ गोई वग़ैरा अख़्लाक़ी मह़ासिन की बेहतरीन फ़ज़ा को क़ाइम किया है इसी त़रह़ पूरे आ़लम में मदनी इन्क़िलाब बरपा किया जा सकता है।(1)

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़्वात व सराया से मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा में अम्नो अमान क़ाइम हो गया लेकिन कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन ने दीगर सल्त़नतों के कुफ़्फ़ार से रवाबित़ मज़्बूत़ कर लिये और मुसलमानों के ख़िलाफ़ त़रह़ त़रह़ की साज़िशें करने लगे, वोह साज़िशें अन्दर ही अन्दर इस क़दर मज़्बूत़ हो गईं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के फ़ौरन बा'द मुख़्तलिफ़ फ़ितनों का एक सैलाब उमड आया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तमाम फ़ितनों का डट कर मुक़ाबला फ़रमाया और बिल आख़िर अपनी ह़याते त़य्यिबा में ही इन फ़ितनों को नेस्तो नाबूद कर दिया नीज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में अ़द्लो इन्साफ़, अम्नो सुकून का जो बेहतरीन निज़ाम क़ाइम फ़रमाया था उसे बरक़रार रखा। अ़रब से बाहर शाम व इराक़ के कुफ़्फ़ार ने जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िशें तय्यार की थीं उन की सरकोबी के लिये भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ लश्करों को रवाना फ़रमाया लेकिन अभी चन्द अ़लाक़े ही फ़त्ह़ हुवे थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की तफ़्सील

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुल्के शाम व इराक़ की इब्तिदाई फ़ुतूह़ात को आगे बढ़ाते हुवे पूरे मुल्के शाम व इराक़ पर फ़त्ह़ो नुसरत के झन्डे गाड़ दिये। अ़ह्दे फ़ारूक़ी की इन फ़ुतूह़ात को तमाम तर जुज़इय्यात के साथ बित्तफ़्सील पढ़ने के लिये कुतुबे सियर व तारीख़ का मुत़ालआ़ किया जा सकता है। इस बाब में फ़ुतूह़ाते शाम व इराक़ की तमाम जंगों के ख़ाके और अहम वाक़िआ़त या वोह तमाम पहलू जिन का तअ़ल्लुक़ शाने फ़ारूक़े आ'ज़म या अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से होगा उन्हें तफ़्सील से बयान किया जाएगा। मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात का अक्सर मवाद सियर व मग़ाज़ी के इमाम ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुह़म्मद बिन उ़मर वाक़िदी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की किताब "**फ़ुतूहु़श्शाम**" से लिया गया है।

---

1 ......مردان عرب، ص۵۰ماخوذاً۔

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूहात का इजमाली ख़ाका

जज़ीरए अ़रब और इस के मुख़्तलिफ़ शहर

अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में तक़रीबन पूरा अ़रब शरीफ़ फ़त्ह हो चुका था, बल्कि फ़ुतूहाते शाम का भी आग़ाज़ हो चुका था ।

सरज़मीने अ़रब के मुख़्तलिफ़ बड़े बड़े शहर और जज़ीरे

- मदीनए मुनव्वरा
- मक्कए मुकर्रमा
- ताइफ़
- यमन
- उ़मान
- बहरैन
- नज्द

अ़हदे फ़ारूक़ी के मफ़्तूहा शहर व अ़लाक़े

सरज़मीने इराक़	बसरा और कूफ़ा की तमाम आ'ला क़ियादतें शहरे बसरा, शहरे कूफ़ा, सरज़मीने जज़ीरए फ़ुरातिया
सरज़मीने फ़ारिस	ख़ूज़िस्तान, फ़ारिस, अल जबल, सिजिस्तान, मकरान किरमान, त़बरिस्तान, ख़ुरासान, आज़र बाईजान
सरज़मीने शाम	मुल्के शाम की आ'ला क़ियादत, हि़म्स दिमश्क़, उर्दन, त़बरिया, क़िन्नसिरीन
सरज़मीने फ़िलिस्त़ीन	फ़िलिस्त़ीन की आ'ला क़ियादत बैतुल मुक़द्दस, ऐलया, रमला
सरज़मीने मिस्र व लीबिया	मिस्र की तमाम आ'ला व अस्फ़ल क़ियादतें मग़रिबी मिस्र, लीबिया के सह़रा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की सल्त़नत मज़कूरए बाला तमाम अ़लाक़ों पर मुह़ीत़ थी ।

www.dawateislami.net

इस्लामी लश्कर के उसूलो ज़वाबित़

अव्वलन इस्लामी लश्कर के कुल्ली त़ौर पर चन्द उसूलों को बयान किया जाता है, जिस की तफ़्सील कुछ यूं है :

(1)......इस्लामी लश्कर के सर बराह का तअ़य्युन फ़क़त़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही फ़रमाया करते थे, जब कि मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ाई मुह़ाज़ या छोटे छोटे दस्तों के सिपह सालार का तअ़य्युन मर्कज़ी कमान्डर करता था, अलबत्ता इस में सह़ाबिय्यत, तक़्वा व परहेज़गारी के साथ साथ जंगी सलाह़िय्यतों को भी पेशे नज़र रखा जाता था।

(2)......इस्लामी लश्कर की फ़ुतूह़ात का दारो मदार फ़क़त़ अपने अमीर और कमान्डर की इत़ाअ़त पर था, जब कि कमान्डर अमीरुल मोमिनीन के हुक्म का पाबन्द और अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरआनो सुन्नत के सख़्ती से पाबन्द थे।

(3)......सुल्ह़ और जंग में से सुल्ह़ को तरजीह़ थी क्यूंकि मुसलमानों का मक़्सद अम्नो अमान का क़ियाम था न कि ज़ुल्मो जब्र और क़त्लो क़िताल का फ़रोग़, येही वज्ह है कि जहां मुज़ाह़मत का सामना करना पड़ता वहीं जंग की नोबत आती वरना सुल्ह़ ही को तरजीह़ दी जाती।

(4)......हर वोह मुआ़मला जिस का तअ़ल्लुक़ अमीरुल मोमिनीन की ज़ात से होता उस को अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में पेश कर दिया जाता अलबत्ता छोटे छोटे तमाम मुआ़मलात का इख़्तियार इस्लामी लश्कर के कमान्डर के पास होता वोह अपनी ज़ाती राए और मुख़्तलिफ़ माहिरीन के मश्वरे के बा'द मुत्तफ़िक़ा राए पर अ़मल करता।

(5)......किसी भी जंग के बड़े मुआ़मले में अमीरुल मोमिनीन की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता, जब कि छोटे छोटे मुआ़मलात को मौक़अ़ मह़ल के ए'तिबार से खुद ही तै कर लिया जाता।

(6)......हर जंग चाहे वोह छोटी होती या बड़ी उस की मुकम्मल तफ़्सील सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचाई जाती, अगर किसी तब्दीली की ह़ाजत होती तो ठीक वरना आगे बढ़ जाते।

(7)......फ़त्ह़ के बा'द इस की तफ़्सीलात और माले ग़नीमत में से ख़ुमुस को जुदा कर के फ़िलफ़ौर मदीनए मुनव्वरा अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में भेज दिया जाता और बा'द में दीगर माले ग़नीमत को इस्लामी लश्कर में तक़्सीम कर दिया जाता।

(8)......अमीरुल मोमिनीन और इस्लामी लश्कर के दरमियान राबित़ा ब ज़रीअ़ए क़ासिद और मक्तूब हुवा करता था, कोई भी अहम हुक्म ब ज़रीअ़ए मक्तूब ही इस्लामी लश्कर को पहुंचाया जाता था, ऐसे हुक्म पर हर सूरत में अ़मल करना ज़रूरी था।

www.dawateislami.net

(9)......लश्कर के सिपाहियों के मुआ़मलात को कमान्डर खुद ही ह़ल कर लिया करता था, अलबत्ता अगर किसी सिपह सालार वग़ैरा का मुआ़मला होता तो उसे अमीरुल मोमिनीन की बारगाह में पेश कर दिया जाता और जो हुक्म जारी होता उसी पर अ़मल किया जाता।

(10)......मुख़्तलिफ़ जंगों में इस्लामी लश्कर के दो मुख़्तलिफ़ ना'रे हुवा करते थे। ना'रए तक्बीर व ना'रए रिसालत।

(11)......इस्लामी लश्कर में अह़कामे शरइय्या पर पाबन्दी की सख़्ती से हिदायत थी, इसी वज्ह से नमाज़ों और तिलावते कुरआन वग़ैरा का खु़सूसी एहतिमाम किया जाता था।

(12)......इस्लामी लश्कर के हर सिपाही को हुक़ूक़ुल इबाद की खु़सूसी ताकीद की गई थी, नीज़ उस की जंगी उसूलों पर ऐसी तरबिय्यत की गई कि मुसलमान तो मुसलमान ग़ैर मुस्लिम के साथ भी किसी क़िस्म की ज़ियादती का तसव्वुर नहीं था।

(13)......"मुआ़हदे की पासदारी" इस्लामी लश्कर के अव्वलीन उसूलों में से था, बिग़ैर जंग के या जंग के बा'द जब किसी अ़लाके़ वाले सुल्ह़ करते तो उन के साथ होने वाले मुआ़हदे की हर हर शिक़ की पासदारी करना इस्लामी लश्कर के सिपह सालार समेत हर फ़ौजी पर लाज़िम था।

(14)......जब भी किसी शहर को फ़त्ह़ कर लिया जाता तो इस्लामी लश्कर का सिपह सालार फ़ौज में से मुख़्तलिफ़ सलाह़िय्यतों के माहिरीन लोगों पर मुश्तमिल एक जामेअ़ दस्ता तरतीब देता, फिर उसे उस शहर पर मुक़र्रर कर देता। वोह दस्ता उस शहर के तमाम मुआ़मलात पर नज़र रखता। शहर वालों को इस्लामी ता'लीमात भी देता, नीज़ दीगर मुआ़मलात का भी निज़ाम संभालता।[1]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम की फ़ुतूहा़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ निज़ामे शरीअ़त और अह़कामे दीन के मुआ़मले में किसी की भी रिआ़यत नहीं करते थे। आप ने अपनी सल्त़नत में अ़द्लो इन्साफ़ का माहो़ल क़ाइम फ़रमा दिया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तसल्लुब फ़िद्दीन या'नी दीनी मुआ़मलात में सख़्ती से कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन, मुनाफ़िक़ीन व यहूदो नसारा और तमाम इस्लाम दुश्मन अ़नासिर ब खूबी आगाह थे।

1....इस्लामी लश्कर के इन तमाम उसूलो ज़वाबित़ की कुल्ली तफ़्सील के लिये "फ़ुतूहु़श्शाम, त़बक़ाते कुब्रा" और "तारीखे़ त़बरी" का मुत़ालआ़ कीजिये। अलबत्ता इन तमाम उसूलो ज़वाबित़ की जुज़्वी तफ़्सील अगले सफ़्ह़ात पर आ रही है।

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी में इस्लामी लश्कर और उस के क़ाइदीन का इजमाली नक़्शा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ इस्लामी लश्कर के सब से बड़े कमान्डर

- **इराक़ी जंगें**
  - सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ
- **शामी जंगें**
  - सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ
- **मिस्री जंगें**
  - सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ
- **ईरानी जंगें**
  - सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رضی اللہ تعالٰی عنہ

- **दिजला से मौसिल तक**
  - सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मो'तम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ
    - तकरीत की त़रफ़ पेश क़दमी
- **जानिबे फ़ुरात से फ़ुरात तक**
  - सय्यिदुना अ़म्र बिन मालिक رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ
    - मौसिल की त़रफ़ पेश क़दमी
- **दियाली से ह़ुलवान तक**
  - सय्यिदुना हाशिम बिन उ़तबा رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ
- **जुनूबी इराक़ से बसरा तक**
  - सय्यिदुना उ़तबा बिन ग़ज़्वान رضی اللہ تعالٰی عنہ

सय्यिदुना रिबई बिन अफ़्कल رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

www.dawateislami.net

शाहे रूम हरक़िल का फ़ारूके़ आ'ज़म से ख़ौफ़ज़दा होना

इस्लाम का पुर अम्न पैग़ामे तौह़ीदो रिसालत तेज़ी से फैलने और कसीर ता'दाद में लोगों के इस्लाम क़बूल करने से बात़िल त़ाक़तों को अपनी फ़िक्र लाह़िक़ हो चुकी थी इसी वज्ह से वोह मुसलमानों के दारुल हुकूमत मदीनए मुनव्वरा और इस के अत़राफ़ के अ़लाक़ों की मुकम्मल ख़बर रखते थे, शाहे रूम हरक़िल बादशाह को जब मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे हैं तो बहुत मुतफ़क्किर और ख़ौफ़ज़दा हुवा, उस ने अरकाने सल्त़नत, अरबाबे दौलत और तमाम बड़े बड़े मज़हबी पेशवाओं को "कनीसए क़िस्सीसीन" में जम्अ़ किया और जज़्बाती तक़रीर करते हुवे कहने लगा : "ग़ौर से सुनो ! अब वोह शख़्स मुसलमानों का ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवा है जो निहायत सख़्त है, ग़ैर तो ग़ैर अपने भी उस के नाम से कांपते हैं, उस के हाथ में हर वक़्त कोड़ा रहता है जिस का ख़ौफ़ तल्वार से भी ज़ियादा है, येह वोही शख़्स है जिस के बारे में मुलाह़िम में लिखा है कि वोह दराज़ क़द, गन्दुमी रंगत वाला और सियाह आंखों वाला होगा। उस की हैबत से अ़ज़ीम सल्त़नतों के शहनशाह कांप उठेंगे, वोह फ़ातेह़े आ'ज़म की ह़ैसिय्यत से दूर दराज़ के ममालिक को फ़त्ह़ करेगा, सियासत का ऐसा माहिर होगा कि अपने दारुस्सल्त़नत में बैठ कर अपने लश्कर की कमान्ड करेगा, उस के एक इशारे पर उस के फ़रमां बरदार मुजाहिद सर धड़ की बाज़ी लगा देंगे, येह लोग क़ैसरो किस्रा के ऐवानों को उखाड़ फैंकेंगे, वोह मेरे भी तख़्त का मालिक हो जाएगा, मुसलमानों की कामयाबी का राज़ येह है कि वोह अपने दीन पर सख़्ती से पाबन्द हैं, अपने ख़ुदा की इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं, अपने रब और अपने नबी के हर हुक्म की ता'मील करते हैं, ज़ुल्मो सितम और गुनाहों से बाज़ रहते हैं, अ़द्लो इन्साफ़ करते हैं, नेकियों की त़रफ़ राग़िब और बुराइयों से मुन्ह़रिफ़ रहते हैं, इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की नुस्रत व मदद फ़रमाता है, उन्हें हर जगह कामयाबी व कामरानी मिलती है, जब कि हमारा ह़ाल येह है कि हम ज़ुल्मो सितम, ना इन्साफ़ी, ख़ल्के़ ख़ुदा की ह़क़ तलफ़ी, ह़राम कारी, अ़य्याशी, मक्कारी, बेहूदगी, बे ह़याई, गुनहगारी, फ़िस्क़ो फ़ुजूर और दीने मसीह़ की ना फ़रमानी में सर से पाउं तक ग़र्क़ हैं, इसी लिये हम ख़ुदा की मदद और नुस्रत से मह़रूम हैं, अगर हम ने इन अफ़्आ़ल को तर्क न किया तो वोह दिन दूर नहीं जब हम पर ऐसी क़ौम मुसल्लत़ कर दी जाएगी जिस के दिफ़ाअ़ की हम में क़ुव्वत व इस्तित़ाअ़त नहीं, उस क़ौम का दीन तमाम अदयान पर ग़ालिब आ जाएगा। अगर तुम अपनी ह़रकतों से बाज़ आ कर ऐशो इ़शरत को नहीं छोड़ सकते तो तुम्हारे लिये मुनासिब येह है कि मुसलमानों का दीन अपना लो या उन्हें जिज़्या दे कर सुल्ह़ कर लो।"

www.dawateislami.net

हरक़िल के आख़िरी अल्फ़ाज़ सुन कर सब लोग चोंक गए कि बादशाह को क्या हो गया है जो ख़ुद कहता है कि मुसलमानों का दीन इख़्तियार कर लो, लगता है बादशाह के दिल में मुसलमानों का ख़ौफ़ बैठ गया है लिहाज़ा तमाम ह़ज़रात इश्तिआ़ल में आ गए। हरक़िल ने जब देखा कि लोहा गर्म हो गया है तो उस ने ज़र्ब लगाते हुवे कहा : "ऐ मेरी क़ौम के बा ग़ैरत लोगो ! क्या तुम ने येह गुमान कर लिया कि मैं सच मुच तुम्हें मुसलमानों का दीन इख़्तियार करने का कहता हूं, हरगिज़ नहीं, मैं तो येह देखना चाहता था कि तुम में ग़ैरत नाम की भी कोई चीज़ है या नहीं ? लेकिन तुम ने ग़ैरत के मुआ़मले में मेरा सर फ़ख़्र से बुलन्द कर दिया है, अब मैं तुम्हारी मदद से अ़रबों को नैस्तो नाबूद करने में कोई कोताही नहीं करूंगा।" हरक़िल की इस धोकेबाज़ी से तमाम लोग उस के फ़रैब में आ गए, उन्हें उस पर ए'तिमाद हो गया। उन्हों ने उसे ए'तिमाद दिलाया कि वोह ख़ून के आख़िरी क़त़रे तक उस का साथ देंगे।[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म का सिक्यूरिटी गार्ड (Security Guard)

रूम के बादशाह हरक़िल ने अगर्चे जज़्बाती तक़रीर कर के लोगों को अपना हम ख़याल बना लिया था लेकिन अपनी सल्तनत के ज़वाल का ख़ौफ़ उस के दिल में घर कर गया था। चलते फिरते, उठते बैठते हर वक़्त उसे यूं मह़सूस होता जैसे अभी कोई मुझे क़त्ल करने आ जाएगा, इस कैफ़िय्यत से उस का जीना ह़राम हो गया, बिल आख़िर उस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने की नापाक साज़िश तय्यार की। उस ने त़ुलीआ़ बिन मारान नामी एक नसरानी को कसीर मालो दौलत का लालच दे कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये मदीनए मुनव्वरा भेजा। त़ुलीआ़ मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर मौक़अ़ की तलाश में लग गया। एक दिन उस ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यतीमों, ग़रीबों के ह़ाल अह़वाल की ख़बर गीरी और उन के बाग़ों और खेतों की निगरानी फ़रमाते देखा तो एक घने दरख़्त पर चढ़ कर उस के पत्तों में छुप गया, इत्तिफ़ाक़न सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी चलते हुवे उसी दरख़्त के नीचे आए और पथ्थर का तक्या लगा कर आराम फ़रमाने लगे। जैसे ही आप को नींद आई तो उस नसरानी ने नीचे उतर कर आप को शहीद करने का क़स्द किया। उसी वक़्त एक जंगली दरिन्दा आया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इर्द गिर्द घूमने और निगहबानी करने लगा। गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस दरिन्दे को आप का मुह़ाफ़िज़ व निगहबान (Security Guard) बना कर भेजा था। फिर उस दरिन्दे ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दोनों क़दमों को चाटा और वहीं पे मौजूद रहा।

[1] ......فتوح الشام، کتب خالد بالفتح، ج ۱، ص ۸۵۔

www.dawateislami.net

थोड़ी देर बा'द उस नसरानी ने हातिफ़े ग़ैबी से येह आवाज़ सुनी : يَاعُمَرُ عَدَلْتَ فَاَمِنْتَ "या'नी ऐ उ़मर ! तुम ने अ़द्लो इन्साफ़ किया तो बे ख़ौफ़ हो गए।" येह मन्ज़र देख कर वोह नसरानी सहम गया और अपनी जगह बैठा रहा। नीचे उतर कर ह़म्ला करने की उसे हिम्मत न हुई। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेदार होने के बा'द वोह दरिन्दा चला गया। उस दरिन्दे के जाते ही वोह नसरानी दरख़्त से नीचे उतरा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों को बोसा दे कर अ़र्ज़ करने लगा : بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ اَفْدِیْ مِنَ الْكَائِنَاتِ مِنَ السَّبَاعِ تَحْرِسُهُ وَالْمَلَائِكَةُ تَصِفُهُ وَالْجِنُّ تَعْرِفُهُ "या'नी मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान, मैं ख़ुद उस शख़्स पर क़ुरबान जिस की ह़िफ़ाज़त व निगहबानी जंगल के दरिन्दे करते हैं, जिस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़िरिश्ते और जिन्नात करते हैं।" फिर उस ने अपने मदीनए मुनव्वरा आने का क़स्द और हरक़िल बादशाह की तमाम साज़िशों को बयान किया, नीज़ अपनी ग़लती पर शर्मिन्दगी का इज़्हार करते हुवे आप से मा'ज़िरत चाही। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मुआ़फ़ कर दिया। फिर नसरानी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर मुसलमान हो गया।(1)

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

हुक्मरानों व ज़िम्मेदारों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की किस त़रह़ जंगली दरिन्दे ने ह़िफ़ाज़त की और जब तक आप नींद से बेदार न हुवे वोह जंगली दरिन्दा वहीं आप की ह़िफ़ाज़त करता रहा। हातिफ़े ग़ैबी से आने वाली आवाज़ से दरिन्दे की बत़ौरे ह़िफ़ाज़त आमद का सबब भी मा'लूम हो गया कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि अपनी रिआ़या में हमेशा अ़द्लो इन्साफ़ से काम ले कर उन की ज़ुल्मो सितम से ह़िफ़ाज़त फ़रमाया करते थे इसी वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की ज़ुल्मो सितम से ह़िफ़ाज़त फ़रमाता था। इस मुबारक वाक़िए़ में उन तमाम हुक्मरानों व ज़िम्मेदारान के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है जो अपनी रिआ़या व मा तह़्त लोगों पर ज़ुल्मो सितम कर के अपनी ह़िफ़ाज़त के लिये मुह़ाफ़िज़ व निगहबान रखते हैं। यक़ीनन जो ह़ाकिम अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेता है ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और जिस की रब عَزَّوَجَلَّ ह़िफ़ाज़त

1 ......فتوح الشام، کتب خالد بالفتح، ج ۱، ص ۸۵۔

www.dawateislami.net

फ़रमाए उसे कौन नुक़्सान पहुंचा सकता है ? वाज़ेह़ रहे कि अपनी ह़िफ़ाज़त के लिये मुह़ाफ़िज़ व निगहबान वग़ैरा मुक़र्रर करना बिलाशुबा जाइज़ है, लेकिन येह तमाम इक़्दामात उसी सूरत में मुफ़ीद हैं जब कि अह़कामे शरइय्या की पासदारी की जाए। अपनी रिआ़या या मा तह़्त लोगों को अ़द्लो इन्साफ़ फ़राहम किया जाए, उन की जाइज़ ज़रूरियात को शरीअ़त के दाइरे में रहते हुवे पूरा किया जाए, उन के तमाम हुक़ूक़ की पासदारी की जाए, वरना हो सकता है कि हुक़ूक़ुल इबाद में अ़दम अदाएगी के सबब दुन्यवी नुक़्सान के साथ साथ उख़रवी नुक़्सान का भी सामना करना पड़े। काश ! हम अपने मा तह़्त लोगों के साथ अ़द्लो इन्साफ़ से काम लेने वाले और हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी करने वाले बन जाएं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

फ़ारूके आ'ज़म का ला जवाब हुस्ने अख़्लाक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला वाक़िए में आप ने पढ़ा कि किस त़रह़ रूम के बादशाह हरक़िल ने इस्लाम दुश्मनी के सबब सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के शहीद करने की साज़िश की लेकिन بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰی आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मह़फ़ूज़ रहे, इस की बुन्यादी वज्ह येह थी कि उस का मक़्सदे ह़क़ीक़ी फ़क़त़ दुन्यवी बादशाहत और मालो दौलत का ह़ुसूल था लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का मक़्सद रिज़ाए इलाही था, आप ने कभी किसी से अपना ज़ाती इन्तिक़ाम न लिया। हरक़िल ने जो आप के ख़िलाफ़ साज़िश की आप उस से बदला ले सकते थे लेकिन आप ने क़त़अ़न ऐसा न फ़रमाया बल्कि एक मौक़अ़ पर आप ने अपने क़त्ल की साज़िश करने वाले उसी बादशाह के साथ हुस्ने अख़्लाक़ का ऐसा बे मिसाल रवय्या इख़्तियार फ़रमाया कि तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती। चुनान्चे,

दाइमी दर्दे सर दूर करने का फ़ारूक़ी नुस्ख़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" बाब "फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह" सफ़ह़ा 68 पर है। क़ैसरे रूम ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक मक्तूब रवाना किया जिस में लिखा कि : मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस को एक टोपी भेज दी। क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफ़ूर (ख़त्म) हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता,

www.dawateislami.net

उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बर आमद हुवा, जिस पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखा था।(1)

بسم اللہ से इलाज का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हि़कायत से जहां अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बे मिसाल हुस्ने अख़्लाक़ का पता चला वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि जिस को दर्दे सर हो वोह एक काग़ज़ पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख कर या लिखवा कर उस का ता'वीज़ सर पर बांध ले। लिखने का त़रीक़ा येह है कि अनमिट सियाही मसलन बॉल पोइन्ट से लिखिये और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के ہ और तीनों م के दाइरे खुले रखिये। ता'वीज़ लिखने का उसूल येह है कि आयत या इबारत लिखने में हर दाइरे वाले ह़र्फ़ का दाइरा खुला हो या'नी इस त़रह़ मसलन ط،ظ،ہ،ھ،ص،ض،و،م،ف،ق वग़ैरा। ए'राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोम जामा (या'नी मोम में तर किये हुवे कपड़े का टुकड़ा लपेट लें) या प्लास्टिक कोटिंग कर लें फिर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लें और सर पर बांध लें जिन को इमामा शरीफ़ का ताज सजाने की सआ़दत ह़ासिल है वोह चाहें तो इमामा शरीफ़ की टोपी में सी लें। इसी त़रह़ इस्लामी बहनें दूपट्टे या बुर्क़अ़ के उस हिस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए'तिक़ाद कामिल होगा तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना नाजाइज़ व गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये नाजाइज़ है। औ़रत सोने चांदी की डिबया में ता'वीज़ पहन सकती है।(2)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1)......जंगे ह़िस्न अबिल क़ुद्स

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमा दिया। क़ल्अ़ा "अ़रक़ा" और

1......تفسیر کبیر، النکتۃ المستخرجۃ من البسملۃ، ج ۱، ص ۱۵۵، اللباب فی علوم الکتاب، فصل فی فضل البسملۃ، ج ۱، ص ۱۵۸۔

2....फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 68

www.dawateislami.net

मर्जुस्सिलसिला" नामी दो गाऊं के दरमियान एक क़ल्आ़ था जिस का नाम "हिस्ने अबिल क़ुद्स" था, इस क़ल्ए़ के सामने एक गिरजाघर था जहां का पादरी हर साल वहां सालाना तिजारती मेला मुन्अ़क़िद करवाता। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस क़ल्ए़ को फ़त्ह़ करने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पांच सौ सुवार दे कर भेजा ताकि वोह क़ल्आ़ भी फ़त्ह़ करें और मेले का तिजारती सामान भी बत़ौरे ग़नीमत ले आएं। उन्हों ने अपने पांच सौ साथियों के साथ वहां मौजूद पच्चीस सौ रूमी सिपाहियों से मुक़ाबला किया, बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदद के साथ फ़त्ह़ व नुस्रत से सरफ़राज़ हुवे, क़ल्आ़ हिस्ने अबिल क़ुद्स को भी फ़त्ह़ कर लिया और कसीर माले ग़नीमत भी हाथ आया। मुल्के शाम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सर बराही में येह पहली फ़त्ह़ थी।(1)

इस जंग के तीन अहम वाक़िआ़त

(1)......अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार की अपने वालिद की क़ब्र पर ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र त़य्यार बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़क़ीक़ी चचाज़ाद भाई और सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सगे भाई थे, यूं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भतीजे और आप उन के चचा हुवे। आप के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिने 8 हिजरी में जंगे मौता में रूमियों से जिहाद करते हुवे शहीद हुवे, उन की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजिय्यत में आईं और उन्हों ने ही आप की परवरिश की। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इजाज़त ले कर अपने बीस साथियों के साथ मुल्के शाम के इस्लामी लश्कर में पहुंच गए। रास्ते में मक़ामे तबूक पर उन्हों ने अपने दोस्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : يَاابْنَ أُنَيْسٍ أَتَدْرِيْ مَوْضِعَ قَبْرِ أَبِيْ "या'नी ऐ इब्ने उनैस ! क्या आप जानते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम की क़ब्र कहां है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।" फ़रमाया : أَشْتَهِيْ أَنْ أَرَى الْمَوْضِعَ "या'नी मैं उस जगह की ज़ियारत करना

(1)......فتوح الشام، ذکر وقعة ابی القدس، ج ۱، ص ۹۰۔

www.dawateislami.net

चाहता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उन्हें बताया कि वोह तो मौता के मक़ाम पर है। फिर हम उस जगह पहुंचे तो मैं ने उन के वालिद की क़ब्र और जहां वोह जंग हुई थी वोह जगह, उन के वालिद की क़ब्र पर जो पथ्थर वग़ैरा रखे हुवे थे तमाम चीज़ें दिखाईं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब वोह जगह देखी तो वोह और हम सब अपने घोड़ों से उतर गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अश्कबार आंखों के साथ अपने वालिद के लिये दुआ़ए रह़मत की। नीज़ दूसरे दिन सुब्ह़ तक वहां ठहरे रहे। जब हम वहां से रवाना होने लगे तो मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रो रहे हैं और आप का चेहरा ज़ा'फ़रान की मिस्ल हो चुका है। मैं ने इस की वज्ह पूछी तो इरशाद फ़रमाया :

رَاَیْتُ اَبِي الْبَارِحَةَ فِي النَّوْمِ وَعَلَيْهِ حُلَّتَانِ خَضْرَاوَتَانِ وَتَاجٌ وَلَهُ جَنَاحَانِ وَبِيَدِهٖ سَيْفٌ مَسْلُوْلٌ اَخْضَرُ فَسَلَّمَهُ اِلَيَّ وَقَالَ يَابُنَيَّ قَاتِلْ بِهٖ اَعْدَاءَكَ فَمَا وَصَلْتُ اِلٰى مَاتَرٰى اِلَّا بِالْجِهَادِ وَكَاَنِّيْ اُقَاتِلُ بِالسَّيْفِ حَتّٰى تَثَلَّمَ

"या'नी मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम को आज रात ख़्वाब में देखा कि उन्हों ने दो सब्ज़ रंग के हुल्ले और एक ताज भी पहना हुवा है, उन के दो पर भी हैं, उन के हाथ में सब्ज़ रंग की नंगी तल्वार है, उन्हों ने वोह तल्वार मुझे दे दी और इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे इस तल्वार के साथ अपने दुश्मनों को क़त्ल करो क्यूंकि येह जो तुम मेरा मक़ाम देख रहे हो इसी जिहाद की बदौलत है और गोया मैं अब तक तल्वार के साथ जिहाद कर रहा हूं यहां तक कि मेरी तल्वार की धार ख़राब हो चुकी है। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर हमारा क़ाफ़िला दिमश्क़ जा कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर में शामिल हो गया।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला मुबारक वाक़िए़ से दर्जे ज़ैल इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......मदीनए मुनव्वरा से मुल्के शाम जाते हुवे मक़ामे तबूक शाहराह पर वाक़ेअ़ है लेकिन मक़ामे मौता शाहराह से हट कर अन्दरूनी अ़लाक़े में वाक़ेअ़ है। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के हमराह मक़ामे तबूक से मक़ामे मौता फ़क़त़ अपने वालिदे माजिद की क़ब्र की ज़ियारत की निय्यत से गए थे।

1 ......فتوح الشام، ذکر حدیث وقعة ابی القدس، ج ۱، ص ۹۴۔

www.dawateislami.net

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह पथ्थर भी देखा जो उन के वालिद की क़ब्र पर लोगों ने निशान देही के लिये रखा हुवा था।

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ अपने वालिद के मज़ार शरीफ़ पर रात भर ठहरे रहे और क़ब्र के पास ही क़ियाम किया।

......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़्वाब में अपने वालिद की ज़ियारत हुई और उन्हों ने ख़्वाब में ही तल्वार अ़त़ा फ़रमाई।

......मा'लूम हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की क़ब्रों की ज़ियारत को जाना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है। बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भतीजे और क़रीबी रिश्तेदारों की सुन्नत है।

......बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाना और वहां दुआ़ करना भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि मज़ारात के क़रीब क़ियाम करना ख़ुद सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है।

(2)......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार और नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा

इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पांच सौ अस्ह़ाब पर मुश्तमिल लश्कर दे कर रवाना फ़रमाया जिस में अठ्ठारह बदरी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी थे। आप 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की रात या'नी शबे बराअत में रवाना हुवे, माहे कामिल अपनी पूरी आबो ताब से चमक रहा था, रास्ते में आप ने बदरी सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : یَا اِبْنَ الْاَسْقَعِ مَا اَحْسَنَ قَمَرُ ھٰذِہِ اللَّیْلَۃِ وَاَنْوَرَہٗ ''या'नी ऐ इब्ने अस्क़अ़ आज की रात का चांद कितना ह़सीन और नूरानी है।'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भतीजे ! येह पन्दरह शा'बान की रात है, बड़ी ही मुबारक रात है, इस में मुख़्तलिफ़ लोगों का रिज़्क़ और उन की अमवात लिखी जाती हैं, इस में गुनाह मुआ़फ़ किये जाते हैं, मेरा तो इरादा येह था कि इस रात में ख़ूब नवाफ़िल पढ़ूंगा, बहर ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना नवाफ़िल पढ़ने से कहीं अफ़्ज़ल है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम इस का सवाब भी बहुत ज़ियादा है।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तुम ने सच कहा।'' फिर येह मुजाहिदीन सारी रात सफ़र करते रहे और एक गिरजा के क़रीब पहुंचे।

www.dawateislami.net

लश्कर का शोरो गुल सुन कर उस गिरजा का पादरी बाहर निकल कर लश्कर के क़रीब आया और तमाम मुजाहिदों को एक एक कर के बग़ौर देखने लगा। देखते देखते जब वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक पहुंचा तो रुक गया चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सूरत और सीरत दोनों के ए'तिबार से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत ज़ियादा मुशाबेह थे इस लिये वोह राहिब कहने लगा : اَھٰذَا الْفَتٰی اِبْنُ نَبِیِّکُمْ "या'नी क्या येह नौजवान तुम्हारे नबी का बेटा है ?" मुजाहिदीन ने कहा : "नहीं।" उस ने कहा : اِنَّ نُوْرَ النُّبُوَّةِ یَلُوْحُ بَیْنَ عَیْنَیْهِ فَهَلْ یَلْحَقُ بِهٖ "या'नी बेशक नूरे नबुव्वत इस नौजवान की दोनों आंखों के दरमियान जगमगा रहा है, क्या इस की तुम्हारे नबी से कोई रिश्तेदारी है ?" मुजाहिदीन ने बताया कि येह उन के भतीजे हैं। वोह राहिब कहने लगा : هُوَ مِنَ الْوَرَقَةِ وَالْوَرَقَةُ مِنَ الشَّجَرَةِ "या'नी येह पत्ता है और पत्ते में दरख़्त की तासीर होती है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जानते हो ?" उस ने जवाब दिया : "क्यूं नहीं पहचानूंगा, अरे उन के मुबारक नाम और सिफ़ात का ज़िक्र तो तौरैत, इन्जील और ज़बूर में लिखा हुवा है।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "फिर आप मुसलमान क्यूं नहीं हो जाते ?" उस राहिब ने आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर कहा : "जब आस्मान का मालिक चाहेगा हम भी इस्लाम क़बूल कर लेंगे।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला मुबारक वाक़िए़ से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......बड़ी रातों जैसे शबे बराअत (15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की रात) शबे मे'राज (27 रजबुल मुरज्जब की रात) या शबे क़द्र (रमज़ानुल मुबारक की मख़्सूस रात) में इ़बादत करना, नवाफ़िल अदा करना बुज़ुर्गाने दीन से साबित है।

......येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان का इन बड़ी रातों में इ़बादत करने का मा'मूल था और येह कोई नई बात नहीं थी, जभी तो ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने जब इस बात का ज़िक्र किया तो उन्हों ने किसी तअ़ज्जुब का इज़्हार न किया।

......बड़ी रातों में इ़बादत करना, नवाफ़िल अदा करना न सिर्फ़ सह़ाबए किराम से साबित था बल्कि वोह इसे बाइ़से सवाब जानते थे, येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना वासिला

1 ......فتوح الشام، ذکر حدیث وقعة القدس، ج ۱، ص ۲۹۰۔

www.dawateislami.net

बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शबे बराअत में इबादत करने और जिहाद में शिर्कत करने की फ़ज़ीलत का तक़ाबुल किया तो सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार न किया बल्कि तस्दीक़ फ़रमाई।

......येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीगर आस्मानी किताबों में ऐसा ज़िक्रे ख़ैर था कि जो पढ़ता वोह बिग़ैर देखे ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहचान सकता था, जैसे कि उस राहिब ने इसी बात का इज़्हार किया।

......येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका नूर ही नूर है, आप की नूरानिय्यत आप की आल औलाद और दीगर रिश्तेदारों में भी मौजूद है और ऐसी मौजूद है कि दीगर लोग इसे वाज़ेह़ तौर पर देखते और इसे बयान भी करते हैं, जैसा कि उस राहिब ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों के दरमियान नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा को देख लिया और पहचान लिया कि इस नौजवान का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई न कोई तअ़ल्लुक़ ज़रूर है।

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

(3)......अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र की रसूलुल्लाह के वसीले से दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने पांच सौ साथियों के साथ वहां से रवाना हो कर क़ल्अ़ा ह़िस्ने अबिल क़ुदस के क़रीब पहुंच गए। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें येह जंगी ह़िक्मते अ़मली दी थी कि सुब्ह़ जब बाज़ार में गहमा गहमी हो उस वक़्त क़ल्ए़ पर ह़म्ला करें। जब उन्हों ने सुब्ह़ मुख़्बिर को बाज़ार की त़रफ़ भेजा तो वोह काफ़ी देर बा'द आया और कहने लगा कि त़राबुलुस के ह़ाकिम ने किसी रूमी बादशाह के साथ अपनी बेटी का निकाह़ किया है, मज़्हबी रुसूम अदा करने के लिये वोह दुल्हन समेत गिरजा में आया है जहां उस की ह़िफ़ाज़त के लिये तक़रीबन पांच हज़ार 5000 फ़ौजी मौजूद हैं। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया कि क्या करें, क्यूंकि रूमियों की ता'दाद कई गुना ज़ियादा थी। अक्सर ने येही मश्वरा दिया कि हमारी निय्यत जिहाद की थी लेकिन इतनी बड़ी फ़ौज के साथ लड़ना अपने आप को हलाकत में डालने के मुतरादिफ़ है, बिलफ़र्ज़ हम जंग शुरूअ़ कर भी दें तो इस्लामी लश्कर की मदद का पहुंचना बहुत मुश्किल है क्यूंकि वोह एक दिन की मसाफ़त जितना दूर है, लिहाज़ा इस्लामी लश्कर की त़रफ़ दिमश्क़ वापस चलना चाहिये।

www.dawateislami.net

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं जिहाद की निय्यत से आया हूं और बिग़ैर जिहाद के यहां से वापस जाना मेरे नज़दीक पीठ फेरने के मुतरादिफ़ है, मैं यहां से बिग़ैर जिहाद के नहीं जाऊंगा, तुम में हर सिपाही को मेरी त़रफ़ से इजाज़त है जो वापस जाना चाहे जा सकता है।" जब इस्लामी लश्कर के सिपाहियों ने अपने सरदार की हिम्मत और दिलैरी देखी तो उन का जज़्बा भी जाग उठा और सब ने बयक ज़बान हो कर कहा कि "ऐ सरदार अब हम भी वापस नहीं जाएंगे बल्कि दुश्मन से लड़ेंगे और शहादत पाएंगे।"

तमाम मुजाहिदीन ने पांच मुख़्तलिफ़ गुरौहों की शक्ल में बाज़ार पर ह़म्ला कर दिया, रूमी इब्तिदा में बोखला गए लेकिन बा'द में संभल गए, रूमियों की ता'दाद चूंकि मुजाहिदीन से कहीं ज़ियादा थी इस लिये वोह भी ताबड़ तोड़ ह़म्ले कर रहे थे लेकिन मुजाहिदीन के आगे बेबस थे, दोनों त़रफ़ से तल्वारें चल रही थीं, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शेर की त़रह़ रूमियों पर टूट पड़े थे, मुसलसल तेग़ ज़नी और नेज़ा ज़नी करते हुवे आप के बाज़ू शल हो चुके थे। दोपहर का वक़्त हो चुका था, तमाम मुजाहिदीन का येही ह़ाल था, लड़ते लड़ते सब के सब निढाल हो चुके थे, अलबत्ता अब भी बड़ी शुजाअ़त से लड़ रहे थे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीगर मुजाहिदीन की बड़ी फ़िक्र थी ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जो जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल होने के साथ साथ ज़ईफ़ुल उ़म्र भी थे, नीज़ लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से निढाल हो चुके थे। तमाम मुजाहिदीन को अपनी शहादत का यक़ीन हो चुका था। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से यूं दुआ़ मांगी : **یَا مَنْ خَلَقَ خَلْقَهٗ وَ اَبْلٰی بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ وَ جَعَلَ ذٰلِکَ مِحْنَةً لَهُمْ اَسْاَلُکَ بِجَاهِ مُحَمَّدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِلَّا مَا جَعَلْتَ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا فَرَجاً وَّ مَخْرَجاً** "या'नी ऐ वोह पाक ज़ात ! जिस ने अपनी मख़्लूक़ को पैदा किया, बा'ज़ लोगों को दीगर बा'ज़ के सबब परेशानियों में मुब्तला किया और उन्हें आज़माइश बना दिया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से सुवाल करता हूं कि तू हमारे मुआ़मले में कुशादगी फ़रमा और राहे नजात अ़त़ा फ़रमा।" येह दुआ़ मांग कर आप दोबारा नए जज़्बे के साथ जंग में मसरूफ़ हो गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की

www.dawateislami.net

दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत बख़्शा और शाम के वक़्त आप ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ उन की मदद के लिये आ पहुंचे हैं, उन्हों ने क़रीब पहुंच कर ना'रए तक्बीर लगाया, जिस से सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के साथ दीगर मुजाहिदीन में एक बार फिर नया जज़्बा और जोश पैदा हो गया जब कि रूमी लश्कर का हौसला टूट गया, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रूमियों पर टूट पड़े। रूमियों को जब पता चला कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ मुजाहिदीन की मदद के लिये आ गए तो दहशत से उन का सांस सूख गया और सब के सब भाग खड़े हुवे, जो भी रूमी मुक़ाबले पर आता लम्ह़ों में लाश बन कर गिर जाता। यूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को फ़त्ह़ व नुसरत अ़ता फ़रमाई।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला वाक़िए से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करना बिल्कुल जाइज़ और शरीअ़त के मुत़ाबिक़ है।

......कोई भी मुश्किल पेश आ जाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है।

......दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करना दुआ़ की क़बूलिय्यत के अस्बाब में से एक सबब है, जैसा कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की तो आप की दुआ़ क़बूल हो गई।

......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करना कोई नई बात नहीं बल्कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मुबारक त़रीक़ा है क्यूंकि अगर येह कोई नया काम होता तो ज़रूर कोई न कोई सह़ाबी सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस त़रह़ दुआ़ करने से मन्अ़ करता लेकिन किसी ने भी मन्अ़ न किया जो इस बात पर दलालत करता है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के लिये येह कोई नई बात नहीं थी बल्कि वोह ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ मांगा करते थे।[2]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ......فتوح الشام، ذکر حدیث وقعة ابی القدس، ج ۱، ص ۹۰۔

2 ......معجم کبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ج ۹، ص ۳۰، حدیث: ۸۳۱۱۔

www.dawateislami.net

(2)......जंगे क़िन्नसिरीन

हिस्ने अबिल क़ुद्स की फ़त्ह के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्कर को ले कर दिमश्क़ से ह़िम्स की जानिब रवाना हो गए, रास्ते में कई अ़लाक़ों ने इस्लामी लश्कर से जिज़्ये का मुआहदा कर के अमान ह़ासिल की। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िम्स पहुंचने के बा'द अत़राफ़ के छोटे छोटे अ़लाक़ों को फ़त्ह़ करते थे, कोई बड़ी ख़ुश ख़बरी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में न पहुंची थी। इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मक्तूब रवाना किया जिस में इस बात का ख़दशा ज़ाहिर किया कि शायद तुम लोग जिहाद से जी चुरा रहे हो। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरे लश्कर को अमीरुल मोमिनीन का मक्तूब सुनाया बा'दे अज़ां आप ने पूरे लश्कर को ह़ल्ब की जानिब रवाना होने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।[1]

रुस्तन, ह़म्मात और अह्ले शीज़र के साथ सुल्ह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ह़िम्स से रवाना हुवे तो रास्ते में रुस्तन व ह़म्मात और अह्ले शीज़र ने इस्लामी लश्कर का ज़बरदस्त इस्तिक़्बाल किया और अदाए जिज़्ये की शर्त़ पर सब ने सुल्ह़ कर ली। शीज़र के लोगों ने आप को बताया कि हरक़िल ने अ़रब सरदार जबला बिन ऐहम ग़स्सानी को अ़रब मुतनस्सिरा और अ़म्मूरिय्या के रूमियों का दस हज़ार का लश्कर दे कर क़िन्नसिरीन के ह़ाकिम की मदद के लिये भेजा है। जबला बिन ऐहम ग़स्सानी अपने लश्कर के साथ इन्त़ाकिया से रवाना हो कर क़िन्नसिरीन के क़रीब लोहे के पुल पर पड़ाव किये हुवे है। लिहाज़ा आप तमाम लोग इस से होशयार रहें। येह सुन कर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर को शीज़र में ही क़ियाम का हुक्म दिया और अपने चन्द मुख़्बिर क़रीब क़रीब के अ़लाक़ों में लगा दिये ताकि जबला बिन ऐहम की नक़्ल व ह़रकत पर नज़र रख सकें।[2]

सना ख़्वाने रसूल, ह़स्सान बिन साबित की बरकत

इस्लामी लश्कर का खाना वग़ैरा पकाने के लिये ग़ुलाम क़रीबी अ़लाक़ों से गीली लकड़ियां लाते थे, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तम्बीह के बा'द बहुत दूर से ख़ुश्क लकड़ियां लाने लगे। सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम अपने चन्द साथियों के साथ लकड़ियां

---

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح قنسرین، ج ۱، ص ۱۰۶۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح قنسرین، ج ۱، ص ۱۰۷۔

www.dawateislami.net

लेने गए जिन्हें जबला के फ़ौजियों ने पकड़ कर क़ैद कर लिया। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उन की तलाश में गए तो उन्हें भी जबला के फ़ौजियों ने पकड़ लिया और जबला के दरबार में ले गए जहां उस ने आप से काफ़ी त़वील गुफ़्त्गू की और ह़सब नसब वग़ैरा पूछा। दीगर अस्ह़ाब के बारे में पूछा ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में भी पूछा। बा'दे अज़ां उस ने जंग का पैग़ाम दे कर आप को छोड़ दिया। जब आप इस्लामी लश्कर में पहुंचे तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को तमाम सूरते ह़ाल से आगाह किया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप से फ़रमाया : "जबला बिन ऐहम ने आप को सना ख़्वाने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رضی اللہ تعالٰی عنہ के ज़िक्र की बरकत की वज्ह से छोड़ दिया है।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के सनाख़्वां की येह बरकत है कि उस का ज़िक्र करने के सबब एक काफ़िर बादशाह ने सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رضی اللہ تعالٰی عنہ को छोड़ दिया तो प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم का ज़िक्रे ख़ैर करने की किस क़दर बरकतें होंगी, यक़ीनन वोह लोग बहुत ख़ुश नसीब हैं जो अपने घरों को ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم के ज़िक्रे ख़ैर से हर वक़्त मुअ़त्त़र व मुनव्वर रखते हैं।

एक मुजाहिद के मुक़ाबले में एक हज़ार काफ़िर

जबला बिन ऐहम की येह ह़रकत सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ को सख़्त ना गवार गुज़री, आप ने उसे सबक़ सिखाने के लिये सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की इजाज़त से बारह बेहतरीन शह सुवारों को लिया और उस रास्ते में जा कर छुप गए जहां से जबला के लश्कर ने गुज़र कर क़िन्नसिरीन के क़ल्ए़ में दाख़िल होना था। जैसे ही वोह लश्कर गुज़रा येह बारह मुजाहिदीन उस लश्कर में इस त़रह़ शामिल हो गए कि किसी को शक भी न हुवा, फिर आगे बढ़ते बढ़ते सब ने ख़ुफ़्या त़रीक़े से जबला की सुवारी को घेर लिया। क़िन्नसिरीन का ह़ाकिम "लूक़ा" जबला के इस्तिक़्बाल के लिये क़ल्ए़ से निकल कर उस के इस्तिक़्बाल के लिये आगे आ रहा था। जबला का लश्कर जब उस के बिल्कुल क़रीब पहुंचा इतना कि दोनों में फ़क़त़ दस हाथ का फ़ासिला रह गया तो येह बारह मुजाहिदीन तेज़ी के साथ आगे निकले जिन्हें देख कर लूक़ा ने येह समझा कि शायद जबला बिन ऐहम का अव्वलीन दस्ता है जो मेरी ता'ज़ीम की ख़ातिर आया है, उस ने मरह़बा कहते हुवे

(1) فتوح الشام، ذکر فتح قنسرین، ج ۱، ص ۱۰۸۔

www.dawateislami.net

अपने मज़्हबी कुफ़्रिय्यात बकना शुरूअ़ किये। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कलिमए शहादत पढ़ते हुवे शेर की त़रह़ आगे बढ़े और उसे उस के घोड़े पर से दबोच कर अपनी तल्वार उस की गर्दन पर रख दी, तमाम मुजाहिदीन भी क़रीब आ गए और सब ने तल्वारें तान लीं। येह सारा काम एक मुख़्तसर से वक़्फ़े में हुवा। ह़ाकिमे लूक़ा के साथ आने वाले लोग और जबला बिन ऐहम समेत तमाम रूमी लश्कर सक्ते में आ गया। नीज़ उन पर येह वाज़ेह़ हो गया कि अगर हम ने थोड़ी सी भी कोताही की तो ह़ाकिमे लूक़ा की गर्दन मार दी जाएगी। जबला बिन ऐहम मुजाहिदीन के क़रीब आया और गुफ़्त व शुनैद की लेकिन वोह उन बारह मुजाहिदीन की बे बाकी पर ह़ैरान व परेशान था कि किस त़रह़ इन्हों ने दस हज़ार से ज़ाइद लश्कर को परेशान कर के रख दिया था। बहर ह़ाल फ़र्दन फ़र्दन मुक़ाबला हुवा। मुजाहिदीन में से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निकले और अपने मुक़ाबले पर आने वाले रूमियों के पांच शह सुवारों को जहन्नम रसीद कर दिया। फिर जबला से मुक़ाबला हुवा जिस के नतीजे में आप शदीद ज़ख़्मी हो कर वापस मुजाहिदीन के पास आ गए जहां ह़ाकिमे लूक़ा उन की क़ैद में था।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जलाल आ गया, आप ने ह़ाकिमे लूक़ा की गर्दन उड़ा दी, रूमी लश्कर में तहलका मच गया, आप ने एक मुजाहिद को सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़िफ़ाज़त पर मामूर किया। अब फ़क़त़ दस मुजाहिदीन लड़ने के लिये यूं तय्यार थे कि उन के मुक़ाबले में रूमियों का दस हज़ार का लश्कर मौजूद था या'नी एक मुजाहिद पूरे एक हज़ार रूमी काफ़िरों के मुक़ाबले पर था। यक़ीनन येह एक ऐसी ह़क़ीक़त है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने तारीख़ के औराक़ पर सब्त की जिसे क़ियामत तक लोग इश्क़ो मह़ब्बत से पढ़ते रहेंगे और इस बात का इक़रार करते रहेंगे कि वाक़ेई मुसलमानों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के खुसूसी फ़ज़्लो करम, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की अपने अस्ह़ाब की खुसूसी तरबिय्यत का नतीजा है।(1)

मुजाहिदीन और रूमी लश्कर में शदीद जंग

ह़ाकिमे लूक़ा की मौत पर पूरा रूमी लश्कर तिलमिला उठा और उन्हों ने यक लख़्त तमाम मुजाहिदीन पर ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शेर की त़रह़ रूमियों की सफ़ों में दाख़िल होते और उन्हें उलट कर रख देते, जिस त़रफ़ तल्वार चलाते लाशों के अम्बार लगा देते। दीगर तमाम मुजाहिदीन का भी येही ह़ाल था। तमाम मुजाहिदीन सुब्ह़ से दोपहर तक मुसलसल

(1) فتوح الشام، ذکر فتح قنسرین، ج ۱، ص ۱۱۰۔

www.dawateislami.net

रूमी लश्कर के साथ लड़ते रहे, लड़ते लड़ते सारे निढाल हो चुके थे। सब को यक़ीन हो चुका था कि शहादत का वक़्त क़रीब आ चुका है कि अचानक इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्कर के साथ उन की मदद के लिये आ पहुंचे।

इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़ और रूमियों का फ़िरार

इस्लामी लश्कर और रूमी में घुमसान की जंग हुई, 12 मुजाहिदीन की वज्ह से रूमी लश्कर पहले ही परेशान था, अब अचानक उन की मदद के लिये आने वाले कसीर इस्लामी लश्कर ने उन के क़दम बिल्कुल मुतज़ल्ज़ल कर दिये। रूमी लश्कर के सिपाहियों ने भागना शुरूअ़ कर दिया, मुजाहिदीन ने उन का तआ़क़ुब किया और ख़ूब ख़बर ली। सारा मैदान साफ़ हो चुका था, हर त़रफ़ फ़क़त़ इस्लामी लश्कर के सिपाही थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लामी लश्कर को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ो नुस्रत अ़त़ा फ़रमाई।(1)

जंगे क़िन्नसिरीन के दो अहम व मुबारक वाक़िआ़त

(1)......सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मुबारक टोपी

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ाकिमे ''लूक़ा' की गर्दन उड़ाई तो तमाम रूमी लश्कर उन बारह मुजाहिदीन पर टूट पड़ा, येह तमाम मुजाहिदीन भी कुफ़्र के आगे डटे रहे लड़ते लड़ते दोपहर हो गई, तमाम मुजाहिदीन भूक, प्यास से निढाल हो चुके थे, नीज़ तमाम मुजाहिदीन को अपनी शहादत का यक़ीन हो चुका था। ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन उ़मैरा त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : يَا اَبَا سُلَيْمَانَ لَقَدْ نَزَلَ بِنَا الْقَضَاء ''या'नी ऐ अबू सुलैमान ! यक़ीनन हमारी शहादत का वक़्त क़रीब आ चुका है।'' सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَاللّٰهِ لَقَدْ صَدَقْتَ يَا اَبَا عُمَيْرَةَ لِاَنِّيْ نَسِيْتُ الْقَلَنْسُوَةَ الْمُبَارَكَةَ وَلَمْ اَصْحَبْهَا مَعِيْ ''या'नी ऐ अबू उ़मैरा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप ने सच फ़रमाया है कि हमारी शहादत का वक़्त आ चुका है क्यूंकि मैं अपनी मुबारक टोपी साथ लाना भूल गया हूं और उसे अपने साथ नहीं ला सका हूं।''(2)

---

1 ......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ١، ص ١١٥ ـ

2 ......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ١، ص ١١٥ ـ

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की ज़ौजा और मुबारक टोपी

जब इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा कि वोह बारह मुजाहिदीन मुश्किल में हैं तो उन्हों ने फ़ौरन लश्कर को तय्यार कर के उन मुजाहिदीन की त़रफ़ पेश क़दमी की, इस्लामी लश्कर के तमाम सिपाही अन्धा धुन्द घोड़ों को भगाते हुवे मुजाहिदीन की मदद के लिये जा रहे थे। सब से आगे लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। उन्हों ने देखा कि अचानक एक सुवार उन से भी आगे निकल कर तेज़ी के साथ बढ़ रहा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े ह़ैरान हुवे और गुमान किया कि शायद येह कोई फ़िरिश्ता है जो मुजाहिदीन की मदद के लिये आगे आगे जा रहा है, आप ने उस सुवार का तआ़क़ुब किया लेकिन वोह सुवार तो गोया हवा में उड़ रहा था। आप ने उस के क़रीब पहुंच कर उसे आहिस्ता होने को कहा, जब आप उस के बराबर पहुंचे तो येह देख कर ह़ैरान हो गए कि वोह कोई मर्द सुवार नहीं बल्कि बा पर्दा औ़रत है। आप ने उसे पहचान लिया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे तमीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं। आप ने पूछा : مَاحَمَلَكِ عَلَى الْمَسِيْرِ اَمَامَنَا "या'नी ऐ उम्मे तमीम ! तुम्हें किस बात ने हम से आगे बढ़ने पर मजबूर किया ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया :

اَيُّهَا الْاَمِيْرُ اِنِّيْ سَمِعْتُكَ وَاَنْتَ تَصِيْحُ وَتَضِجُّ بِالنِّدَاءِ وَتَقُوْلُ اِنَّ خَالِدًا اَحَاطَتْ بِهِ الْاَعْدَاءُ فَقُلْتُ اِنَّ خَالِدًا مَا يَخْذُلُ اَبَدًا وَّ مَعَهُ ذُؤَابَةُ الْمُصْطَفٰى صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذْ حَانَتْ مِنِّيْ اِلْتِفَاتَةٌ اِلَى الْقَلَنْسُوَةِ الْمُبَارَكَةِ وَقَدْ نَسِيَهَا فَاَخَذْتُهَا وَاَسْرَعْتُ اِلَيْهِ كَمَا تَرٰى

"या'नी ऐ सिपह सालार ! मैं ने जब आप को येह पुकारते हुवे सुना था कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दुश्मनों ने घेर लिया है तो मैं ने सोचा कि वोह कभी भी मग़्लूब नहीं हो सकते क्यूंकि उन के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारका हैं, लेकिन बा'द में मैं ने देखा कि मूए मुबारका वाली वोह मुबारक टोपी तो यहीं भूल गए हैं तो मैं ने फ़ौरन वोह टोपी उठाई और उन्हें देने के लिये निकल खड़ी हुई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया :

لِلّٰهِ دَرُّكِ يَا اُمَّ تَمِيْمٍ سِيْرِيْ عَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ وَعَوْنِهٖ "या'नी ऐ उम्मे तमीम ! तुम्हारा येह काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है, तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बरकत और उस की मदद पर ऐसे ही आगे बढ़ जाओ।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आगे बढ़ गईं।

www.dawateislami.net

जब इस्लामी लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मइय्यत में मुजाहिदीन के पास पहुंचा तो पूरे लश्कर ने एक ज़ोरदार ना'रए तक्बीर लगाया ताकि मुजाहिदीन को मा'लूम हो जाए कि इस्लामी लश्कर उन की मदद के लिये आ चुका है। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन ज़ोरदार ना'रए तक्बीर लगाया ताकि इस्लामी लश्कर को भी मा'लूम हो जाए कि मुजाहिदीन कहां हैं। इस्लामी लश्कर की आमद से रूमियों के दिल बैठ गए और वहां मौजूद मुजाहिदीन में एक नया जोश पैदा हो गया।

जंग के दौरान सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि इस्लामी लश्कर का एक मुजाहिद दुश्मनों की सफ़ों को चीरता हुवा उन की त़रफ़ आ रहा है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े ह़ैरान हुवे। जब वोह शहसुवार उन के क़रीब आया तो उस के मुंह पर निक़ाब होने की वज्ह से आप न पहचान सके लिहाज़ा आप ने उस से पूछा : مَنْ اَنْتَ اَیُّهَا الْفَارِسُ الْهَمَّامُ "या'नी ऐ बहादुर शह सुवार ! तुम कौन हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : اَنَا زَوْجَتُکَ اُمُّ تَمِیْمٍ یَا اَبَا سُلَیْمَانَ وَقَدْ اَتَیْتُکَ بِالْقَلَنْسُوَةِ الْمُبَارَکَةِ الَّتِیْ تُنْصَرُ بِهَا عَلٰی اَعْدَائِکَ فَخُذْهَا اِلَیْکَ فَوَاللّٰهِ مَا نَسِیْتَهَا اِلَّا لِهٰذَا الْاَمْرِ الْمُقَدَّرِ ثُمَّ سَلَّمَتْهَا اِلَیْهِ فَلَمَعَ مِنْ ذُؤَابَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نُوْرٌ کَالْبَرْقِ الْخَاطِفِ "या'नी ऐ अबू सुलैमान ! मैं आप की ज़ौजा उम्मे तमीम हूं और आप के पास आप की वोह मुबारक टोपी लाई हूं जिस के वसीले से आप अपने दुश्मनों पर मदद ह़ासिल करते हैं, आप इसे ले कर पहन लीजिये क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप इस जंग से क़ब्ल कभी इस को नहीं भूले। फिर वोह टोपी उन्हें दे दी, जैसे ही वोह मुबारक टोपी सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ली तो उस में मौजूद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारका से चमकदार बिजली की त़रह़ एक शानदार नूर निकला।" अ़ल्लामा वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा की क़सम ! ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह टोपी अपने सर पर रख कर रूमी लश्कर पर ह़म्ला किया ही था कि उन के लश्कर की अगली पिछली तमाम सफ़ें उलट कर रख दीं, इस्लामी लश्कर ने रूमी लश्कर पर ऐसा ज़ोरदार ह़म्ला किया कि पूरा लश्कर शिकस्त ख़ुर्दा हो कर भाग खड़ा हुवा, जिस का जिधर मुंह आया वहीं को चलता बना, पूरे रूमी लश्कर का ह़ाल येह था कि अक्सर सिपाही क़त्ल हो गए या ज़ख़्मी हो गए जो बचे वोह क़ैदी हो गए। भागने वालों में सब से आगे रूमी लश्कर का सालार जबला बिन ऐहम ग़स्सानी था।"(1)

(1)......فتوح الشام، جبلۃ یحارب خالدا، ج ۱، ص ۱۱۵۔

www.dawateislami.net

इल्मो हिक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला वाक़िए़ से इल्मो हिक्मत के दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपनी क़ज़ा का यक़ीन कर लिया था और इस की वज्ह येह बताई कि मैं अपनी टोपी भूल आया हूं, इस सबब से ही मौत हमारे सरों पर मन्डला रही है, जिस का मत़लब येह हुवा कि टोपी न होने की वज्ह से ही वोह मुसीबत में गिरिफ़्तार हुवे थे, अगर वोह मुबारक टोपी उन के साथ होती तो उन पर बला और मुसीबत न आती।

......मा'लूम हुवा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि वोह मुबारक टोपी हमारे लिये دَافِعُ الْبَلَاءِ وَالْوَبَاءِ وَالْاَلَم "या'नी बलाओं, वबाओं और दुखों को दूर करने वाली है।"

......सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह भी अ़क़ीदा था कि फ़क़त़ आज ही नहीं बल्कि इस से पहले भी इस मुबारक टोपी की बरकत से राह़त और कशाइश ह़ासिल होती चली आई है जभी तो आप ने उस का ज़िक्र किया।

......ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन उ़मैरा त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शहादत के ज़िम्न में मौत का तज़्किरा किया तो उस के जवाब में सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मैं टोपी भूल गया हूं। गोया आप ने इस बात की त़रफ़ इशारा किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारका की बरकत से मेरी टोपी को येह शरफ़ बख़्शा है कि वोह ज़िन्दगी देने और मौत को टालने की त़ाक़त रखती है।

......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस गेसूओं के सदक़े और तुफ़ैल मुझे हर लड़ाई में कामयाबी व कामरानी ह़ासिल होती है और मैं मह़फ़ूज़ व सलामत रहा हूं। इन मुक़द्दस गेसूओं की बरकत से ही मुझ पर हमेशा रह़मते ख़ुदावन्दी की घटा छाया करती है। बक़ौल :

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए
छाए रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू

......मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं को भी येह अ़ज़्मत अ़त़ा फ़रमाई है कि उन के वसीले से दुश्मनों पर फ़त्ह़ ह़ासिल होती है।

www.dawateislami.net

......येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका से जिस चीज़ को निस्बत हो जाए वोह भी अ़ज़ीम हो जाती है बल्कि लोगों को इस से कसीर फ़वाइद ह़ासिल होते हैं यहां तक कि नई ज़िन्दगी मिल सकती है।

......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मुबारक फ़रमान से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने अम्बियाए किराम, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان औलियाए किराम या अपने बरगुज़ीदा बन्दों बल्कि अपनी मख़्लूक़ में से किसी भी चीज़ को तसर्रुफ़ करने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमा सकता है।

......वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की येह तमाम बातें किसी गुमान और क़ियास या बिग़ैर यक़ीन के नहीं थीं बल्कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने यक़ीने कामिल के साथ येह बातें की थीं इसी लिये आप ने अपनी गुफ़्तगू को "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम" के साथ मुअक्कद किया था।

......नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैरुल्लाह के तसर्रुफ़ का अ़क़ीदा रखना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का अ़क़ीदा है। अगर येह अ़क़ीदा ग़ैर शरई होता तो कभी भी सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه यूं न फ़रमाते और न ही ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन उ़मैरा त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस को सुन कर क़बूल फ़रमाते।

......मज़्कूरए बाला मुबारक वाक़िए से येह भी वाज़ेह़ हुवा कि जिस त़रह़ सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं के मुतअ़ल्लिक़ पुख़्ता अ़क़ीदा था वैसे ही आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजए मोह़तरमा का भी येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं के होते हुवे सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कुछ नहीं हो सकता येही वज्ह थी कि जब उन्हों ने येह सुना कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दुश्मनों ने घेर लिया है तो बिल्कुल फ़िक्रमन्द न हुईं बल्कि मुत़्मइन रहीं और कामिल यक़ीन के साथ कहा कि ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कुछ न होगा।

......सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का गेसूए मुबारका वाली मुबारक टोपी से तवस्सुल करना कोई ढका छुपा नहीं था बल्कि आप की ज़ौजा पहले ही से इस बात को जानती थीं कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस मुबारक टोपी के वसीले से अपने दुश्मनों पर फ़त्ह़ व नुस्रत ह़ासिल करते हैं, जभी तो उन्हों ने आप के पास पहुंच कर इस बात का ज़िक्र किया।

www.dawateislami.net

......ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे तमीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह भी अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसू मेरे शौहर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़िन्दगी दे सकते हैं, इन मुक़द्दस गेसूओं के सदक़े में मेरे शौहर की बक़ा है, इन ही मुक़द्दस गेसूओं के तुफ़ैल मेरे शौहर अब तक ज़िन्दा हैं। येही वज्ह है कि जब इन को पता चला कि मुक़द्दस गेसूओं वाली टोपी सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भूल गए हैं तो बेचैनी और इज़्तिराब के आ़लम में टोपी ले कर तेज़ रफ़्तार घोड़े पर उन की त़रफ़ दौड़ पड़ीं। बल्कि यूं कहना बजा होगा कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़िन्दगी पहुंचाने जा रही थीं, गेसूए अक़्दस के तवस्सुल से सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बक़ा और ह़यात के मिशन पर जा रही थीं।

......येह भी मा'लूम हुवा कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात से तवस्सुल करना या'नी इन्हें वसीला बनाना बिल्कुल जाइज़ और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का त़रीक़ा है, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का सबब है क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब येह मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उम्मे तमीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़द्दस गेसूओं वाली टोपी देने जा रही हैं तो उन्हों ने फ़रमाया : "तुम्हारा येह काम अल्लाह के लिये है।" कौन सा काम ? मुबारक टोपी पहुंचाने का काम, टोपी क्यूं पहुंचाई जा रही है ? ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसूओं से तवस्सुल करने के लिये, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर मुजाहिदीन की ज़िन्दगी बचाने के लिये। अगर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आसारे शरीफ़ा व तबर्रुकाते मुबारका से तवस्सुल करना जाइज़ न होता तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हरगिज़ येह न फ़रमाते कि येह काम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये है। बल्कि सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा देते और उन्हें इस्लामी लश्कर के मक्तब में जाने के लिये कहते। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ई जन्नती सह़ाबी हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को "अमीनुल उम्मत" फ़रमाया, यक़ीनन आप ने अमानत दारी से काम लिया बल्कि उन के इस अ़ज़ीम काम पर ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बरकत और उस की मदद पर ऐसे ही आगे बढ़ जाओ।"

......अ़ल्लामा वाक़िदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की तसरीह़ से येह बात भी वाज़ेह़ होती है कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा, इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसूए मुबारका के बारे में येह मुबारक अ़क़ीदा कोई फ़र्ज़ी अ़क़ीदा नहीं था बल्कि ऐसा पुख़्ता अ़क़ीदा था जिस की बरकत हाथों हाथ ज़ाहिर हुई कि जैसे ही सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास वोह मुबारक टोपी पहुंची तो फ़ौरन जंग की काया पलट गई और मुसलमानों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ज़ीम फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाई।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام के आसार व तबर्रुकात का अदब और उन से फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने की सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2)......सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ की ग़ैबी आमद व मदद

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ग्यारह मुजाहिदीन के साथ दुश्मन के लश्कर में घुस गए थे और बा'दे अज़ां क़िन्नसिरीन के ह़ाकिम लूक़ा को क़त्ल करने के बा'द रूमी लश्कर के साथ जंग लड़ रहे थे, इन ग्यारह मुजाहिदीन में से कोई भी न था जो इस्लामी लश्कर को जा कर इस बात की ख़बर देता कि मुजाहिदीन मुश्किल में हैं, इसी त़रह़ इस्लामी लश्कर को भी उन की सूरते ह़ाल का क़त़्अ़न इ़ल्म न था। येही वज्ह थी कि जब मुजाहिदीन दोपहर तक लड़ते लड़ते थक गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन उ़मैरा त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस बात का ज़िक्र किया कि यक़ीनन हमारी शहादत का वक़्त क़रीब आ चुका है, क्यूंकि इस्लामी लश्कर को भी ख़बर देने की कोई सूरत उस वक़्त मौजूद न थी। फिर अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की मदद के लिये कैसे आ गए? उन्हें कैसे मा'लूम हुवा कि मुजाहिदीन सख़्त मुश्किल में हैं उन की मदद की जाए? नीज़ उन की आमद ने वहां मुजाहिदीन को भी ह़ैरानो परेशान कर दिया था। इस के पसेपर्दा क्या ह़क़ाइक़ थे? मुलाह़ज़ा कीजिये :

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन के साथ इस्लामी लश्कर के मक्तब से रवाना हुवे तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें रवाना करने के बा'द अपने ख़ैमे में आ कर सो गए। रात के आख़िरी ह़िस्से में अचानक आप नींद से घबरा कर उठ बैठे। घबराहट के आ़लम में अपने ख़ैमे से बाहर आए और इस्लामी लश्कर को ज़ोर ज़ोर से पुकार कर फ़रमाया : اَلنَّفِیْرُ اَلنَّفِیْرُ یَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِیْنَ لَقَدْ اُحِیْطَ بِفُرْسَانِ الْمُوَحِّدِیْنَ "या'नी चलो, चलो हमारे मुजाहिदीन

www.dawateislami.net

को दुश्मनों ने घेर लिया है। पूरा इस्लामी लश्कर मुज़्त़रिब हो गया, हर सिपाही हैरान व परेशान था कि येह क्या हो गया ? इतनी रात को अचानक सिपह सालार ने येह हुक्म क्यूं जारी फ़रमा दिया ? लश्कर के सिपाही सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : مَانَزَلَ بِکَ اَیُّھَا الْاَمِیْر "या'नी ऐ हमारे सरदार ! क्या बात है, आप के साथ क्या मुआ़मला पेश आया है जो आप ने अभी लश्कर की तय्यारी व रवानगी का हुक्म दिया है ?"

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

كُنْتُ نَائِماً اِذْ طَرَقَنِيْ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَرَّنِيْ وَقَالَ لِيْ مُعْنِفاً يَا ابْنَ الْجَرَاحِ اَتَنَامُ عَنْ نُصْرَةِ الْقَوْمِ الْكِرَامِ فَقُمْ وَاَلْحِقْ بِخَالِدِ بْنِ الْوَلِيْدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَدْ اَحَاطَ بِهِ الْقَوْمُ اللِّئَامُ وَاِنَّكَ تُلْحِقُ بِهِ اِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالٰى رَبُّ الْعَالَمِيْنَ

"या'नी जब मैं रात को सोया हुवा था तो अचानक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे जगा दिया और मुतनब्बेह करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ इब्ने जर्राह़ ! तुम इ़ज़्ज़त वाली क़ौम (या'नी उन बारह 12 मुजाहिदीन) की मदद से बे परवाह हो कर यहां आराम कर रहे हो ? जल्दी से उठो और ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदद के लिये पहुंचो क्यूंकि उन्हें कमीने लोगों ने घेर लिया है और अल्लाह रब्बुल आ़लमीन ने चाहा तो तुम ज़रूर उन की मदद के लिये उन तक पहुंच जाओगे।

जैसे ही इस्लामी लश्कर ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बात सुनी तो फ़ौरन जंगी हथयार वग़ैरा संभाले, अपने घोड़ों पर सुवार हो कर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन की मदद के लिये निकल खड़े हुवे।(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक वाक़िए़ से इ़ल्मो ह़िक्मत के दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन के साथ इस्लामी लश्कर से रात के वक़्त रवाना हो कर रास्ते में छुप गए और सुब्ह़ के वक़्त जबला बिन ऐहम के लश्कर में शामिल हो गए, बा'दे अज़ां क़िन्नसिरीन के ह़ाकिमे लूक़ा को क़त्ल कर के रूमी लश्कर के साथ जंग करने लगे, सुब्ह़ से दोपहर तक जंग होती रही। येह तमाम वाक़िआ़त दिन को वुक़ूअ़ पज़ीर हुवे थे, रात

1 ......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ١، ص ١١٥ ـ

www.dawateislami.net

के वक़्त न तो रूमियों से लड़ाई हुई न ही रूमियों ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के साथियों को नर्ग़े में लिया। लेकिन सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रात के वक़्त इस बात से मुत्तलअ़ फ़रमा दिया कि ख़ालिद बिन वलीद को दुश्मनों ने घेर लिया है तुम उन की मदद के लिये पहुंचो। मा'लूम हुवा :

۞......ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से मदीनए मुनव्वरा में गुम्बदे ख़ज़रा की मुक़द्दस आराम गाह से आइन्दा कल पेश आने वाला वाक़िआ़ रात ही को मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया।

जो हो चुका है जो होगा ह़ुज़ूर जानते हैं
तेरी अ़ता से ख़ुदाया ह़ुज़ूर जानते हैं

۞......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इतनी त़ाक़त व क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी मीलों दूर पेश आने वाले वाक़िआ़त को मुलाह़ज़ा फ़रमा सकते हैं।

۞......वाक़िआ़ अभी पेश आया नहीं पहले ही मुलाह़ज़ा कर लिया, मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी अ़ता से न सिर्फ़ उन की ह़याते ज़ाहिरी में ग़ैबी मुशाहदा अ़ता फ़रमाया बल्कि आप के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी आप को ग़ैबी मुशाहदा अ़ता फ़रमाया है।

۞......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब इस बात को बयान किया तो फ़रमाया : طَرَقَنِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे जगा दिया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी ख़्वाब का ज़िक्र न किया, बल्कि बिला वासित़ा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जगाने की बात की। मा'लूम हुवा :

۞......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा हैं।

۞......न सिर्फ़ ज़िन्दा हैं बल्कि दुन्यावी ज़िन्दगी की त़रह़ तसर्रुफ़ात भी फ़रमाते हैं, मुख़्तलिफ़ जगहों पर आते जाते हैं।

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरी चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

www.dawateislami.net

❁......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से अपने उम्मतियों की राहनुमाई और मदद फ़रमाते हैं।

फ़रयाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

❁......सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे जगा दिया।" आप ने इस बात का ज़िक्र न फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कैसे जगाया ? इस की दो सूरतें हैं : पहली सूरत तो येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मदीनए मुनव्वरा में अपने मज़ारे पुर अन्वार में तशरीफ़ फ़रमा हो कर ब ज़रीअ़ए आवाज़ जगाया। इस से दर्जे ज़ैल उमूर साबित हुवे :

❁......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से येह जानते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ुलां मक़ाम पर अपने लश्कर के साथ मौजूद हैं और आराम कर रहे हैं, नीज़ येह भी मा'लूम था कि इन के लश्कर के ग्यारह मुजाहिदीन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सरबराही में दुश्मनों के पीछे गए हुवे हैं।

❁......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी बिसारत अ़ता फ़रमाई है कि आप मदीनए मुनव्वरा में अपने मज़ारे पुर अन्वार में आराम फ़रमा हो कर हज़ारों मील दूर इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नींद में सोता हुवा मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

❁......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी कुव्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई है कि मदीनए मुनव्वरा में अपने मज़ारे पुर अन्वार में आराम फ़रमा हो कर हज़ारों मील दूर इस्लामी लश्कर के सिपह सालार तक अपनी मुबारक आवाज़ को पहुंचा रहे हैं।

वोह दहन जिस की हर बात वह़्ये ख़ुदा
चश्मए इ़ल्मो ह़िक्मत पे लाखों सलाम
वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुंजी कहें
उस की नाफ़िज़ ह़ुकूमत पे लाखों सलाम

www.dawateislami.net

......दूसरी सूरत येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ारे पुर अन्वार से ब ज़ाते ख़ुद सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास तशरीफ़ ले गए। इस से दर्जे ज़ैल उमूर साबित हुवे :

......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे पुर अन्वार में ज़िन्दा हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को इस बात का इख़्तियार दिया है कि जहां चाहें आ जा सकते हैं।

......जिस वक़्त दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को जगाया उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के ख़ैमे में मौजूद थे, जब ही तो उन्हों ने आप की ज़ियारत की और दीगर अस्ह़ाब के सामने इस का तज़्किरा किया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपने जिस्मे अक़्दस के साथ उन के ख़ैमे में तशरीफ़ लाना "तसर्रुफ़" और "इख़्तियार" की वज्ह से था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम इख़्तियारात व तसर्रुफ़ात अ़ता फ़रमाए और कौनैन का मालिको मुख़्तार बनाया। बक़ौल :

वोही नूरे ह़क़ वोही ज़िल्ले रब, है उन्हीं से सब, है उन्हीं का सब
नहीं उन की मिल्क में आस्मां कि ज़मीं नहीं कि ज़मां नहीं
मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं उन के ख़ाली हाथ में

......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार उ़लूमे ग़ैबिया अ़ता फ़रमाए हैं, उन में से एक ता'यीने वक़्त का भी इ़ल्म है या'नी किस वक़्त क्या मुआ़मला पेश आएगा ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि दोपहर के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और इन के साथ दीगर मुजाहिदीन पर मुसीबत आएगी, रूमी कुफ़्फ़ार उन को घेर लेंगे और वोह लड़ते लड़ते ऐसे बे ह़ाल हो जाएंगे कि उन के लिये मदद का पहुंचना ज़रूरी हो जाएगा, लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रात ही में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को रवाना होने का हुक्म दे दिया। अगर ऐ़न लड़ाई के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुक्म देते तो शीज़र से क़िन्नसिरीन तक की मसाफ़त तै़ करने में वक़्त ज़ाएअ़ होता और वोह ऐ़न वक़्त पर मदद के लिये न पहुंच पाते बल्कि शाम या रात के वक़्त पहुंचते।

www.dawateislami.net

......मज़्कूरए बाला मुबारक वाक़िए़ से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा का अ़क़ीदा रखना, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तसर्रुफ़ात का अ़क़ीदा रखना, येह अ़क़ीदा रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हज़ारों मील की दूरी तक जाने की त़ाक़त व क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाई है, येह अ़क़ीदा रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि आप अपनी आवाज़ को हज़ारों मील दूर तक पहुंचा सकते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुश्किल कुशा, फ़रयाद रस, अपने उम्मतियों की मदद का अ़क़ीदा रखना, येह तमाम अ़क़ाइद क़ुरआनो सुन्नत के बिल्कुल मुवाफ़िक़ हैं।

......अगर मज़्कूरए बाला तमाम अ़क़ाइद क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ होते तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कभी इस पर फ़िलफ़ौर अ़मल न करते। क्यूंकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه क़त़ई जन्नती सह़ाबी हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को अमीनुल उम्मत का ख़ित़ाब दिया। अगर येह तमाम अ़क़ाइद क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ होते तो इस्लामी लश्कर के तमाम सिपाही फ़ौरन उन की इत्तिबाअ़ न करते जिन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जय्यिद अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी मौजूद थे।

......येह भी मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा, तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मत की मदद व ख़ैरख़्वाही करने का अ़क़ीदा रखते थे, क्यूंकि अगर इन का अ़क़ीदा इस के ख़िलाफ़ होता तो कोई एक सह़ाबी तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने इस का इन्कार करता और उन्हें इस बात से मन्अ़ करता। लेकिन किसी सह़ाबी और किसी मुजाहिद ने आप को मन्अ़ न किया बल्कि फ़िलफ़ौर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हुक्म पर अ़मल करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और दीगर मुजाहिदीन की मदद के लिये निकल खड़े हुवे। नीज़ किसी सबब से अगर उस वक़्त न भी इन्कार कर सका तो बा'द में इस का इन्कार करता लेकिन तारीख़ इस बात की गवाह है कि मज़्कूरा वाक़िए़ का इस्लामी लश्कर के किसी सह़ाबी या सिपाही ने इन्कार न किया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(3)......जंगे बा'लबक

जंगे बा'लबक की इजमाली सूरते हाल

फ़त्ह़े क़िन्नसिरीन के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़िम्स का मुह़ासरा करने भेजा और खुद बा'लबक रवाना हो गए। जब वोह क़ल्ए़ में गए तो वहां का ह़ाकिम पूरी तय्यारी के साथ जंग के लिये निकला। इस्लामी लश्कर के साथ जैसे ही जंग हुई थोड़ी ही देर बा'द रूमी भाग कर क़ल्ए़ में घुस गए। दूसरे दिन रूमियों ने क़ल्ए़ के ऊपर से इस्लामी लश्कर पर तीर और पथ्थर बरसा कर उन्हें बहुत परेशान किया। तीसरे दिन इस्लामी लश्कर के खाने के वक़्त तमाम रूमियों ने यकबारगी ह़म्ला कर दिया लेकिन इस्लामी लश्कर की आहनी दीवार को न हिला सके, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्कर को मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में तक़्सीम कर के क़ल्ए़ के हर दरवाज़े पर तअ़य्युनात कर दिया ताकि रूमी सिपाही जिस दरवाज़े से भी निकलें वहीं पे उन को रोका जा सके, चौथे दिन अचानक उस दरवाज़े से रूमी लश्कर ने यकबारगी ह़म्ला किया जहां सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद मौजूद थे, इस्लामी लश्कर के मुन्क़सिम होने के सबब मुजाहिदीन पर बहुत बड़ी आज़्माइश आ पड़ी, बा'दे अज़ां दूसरे दरवाज़े पर मुक़र्रर मुजाहिदीन भी इन की मदद को पहुंच गए जिस से रूमी दो इस्लामी दस्तों के दरमियान फंस गए, उन्हों ने भागने में ही आ़फ़िय्यत जानी। ह़ाकिमे हरबीस हज़ारों फ़ौजियों समेत भाग कर पहाड़ों पर चढ़ गया, वहां किसी घाटी में मह़सूर हो गया। कुछ झड़पों के बा'द उस ने सुल्ह़ करने में ही आ़फ़िय्यत जानी, बिल आख़िर सुल्ह़ कर ली गई। इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ के बाहर ही ठहर गया, वहीं पे एक बाज़ार क़ाइम किया गया जिस में तिजारती मुआ़मलात होते, बा'दे अज़ां ह़ाकिमे हरबीस को क़ल्ए़ वालों ने ही क़त्ल कर दिया और उन ही की ख़्वाहिश पर इस्लामी लश्कर ने क़ल्ए़ में दाख़िल हो कर वहां के तमाम इन्तिज़ामात संभाल लिये, यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जंगे बा'लबक में भी मुसलमानों को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ो नुस्रत अ़ता फ़रमाई।(1)

जंगे बा'लबक के चार अहम वाक़िआ़त

(1)......ज़ख़्मी मुजाहिद की दानिशमन्दी

जंगे बा'लबक के तीसरे रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुशावरत के बा'द येह तै किया कि इस्लामी लश्कर को चन्द ह़िस्सों में तक़्सीम कर के क़ल्ए़ के हर दरवाज़े के

(1)......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ۱، ص ۱۲۲ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

सामने तअ़य्युनात कर दिया जाए ताकि रूमी एक तो अचानक ह़म्ला न कर सकें और दूसरा येह कि उन के ह़म्ले को वहीं पे रोक दिया जाए। चौथे दिन रूमियों ने अचानक उस दरवाजे़ से ह़म्ला कर दिया जिस के आगे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद मौजूद थे, ह़ाकिमे हरबीस ने क़ल्ए़ के अन्दर ही फ़ौजी सफ़ों को तरतीब दे दिया था, इस लिये उन का ह़म्ला बड़ा ही मुनज़्ज़म था। इस्लामी लश्कर बड़ी ही आज़्माइश में आ गया। इस वक़्त सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दिल में कहा : "काश बाबे ह़ब्ली और बाबे शाम पर ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हो जाए कि यहां मुजाहिदीन बड़ी मुसीबत में हैं और वोह यहां उन की मदद के लिये आ जाएं लेकिन उन तक येह ख़बर पहुंचाना कैसे मुमकिन हो ?

चुनान्चे, इस्लामी लश्कर के एक शदीद ज़ख़्मी मुजाहिद ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सब्बाह़ अ़ब्सी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी दानिशमन्दी से दीगर दरवाज़ों पर मौजूद इस्लामी लश्कर को यहां के ह़ालात की ख़बर दे दी, वोह खुद बयान करते हैं कि मुझे दाएं बाज़ू पर शदीद ज़ख़्म लगा था जिस से मेरा हाथ बेकार हो गया, मैं तल्वार भी न पकड़ सकता था। रूमियों के ग़लबे को देख कर मुझे अन्देशा हुवा कि मेरे भाई अ़न क़रीब शहादत पा जाएंगे। क़रीब ही एक टीला था मैं लड़ाई से निकल कर उस टीले की त़रफ़ भाग कर चढ़ गया। जब मैं ने मैदाने जंग में देखा तो तमाम मुजाहिदीन रूमियों के नर्ग़े में थे, नेज़े और तल्वारें ढालों पर पड़ने से चिंगारियां उठती थीं, चिंगारी देख कर अचानक मेरे दिल में एक ख़याल आया, मैं ने क़रीब बिखरी हुई दरख़्तों की सूखी जड़ें और शाख़ें जम्अ़ कीं और उन्हें आग लगा दी, जब अच्छी त़रह़ आग लग गई तो उन पर गीली लकड़ियां डाल दीं जिस से आग बुझ गई और धुवां ही धुवां हो गया। चूंकि इस्लामी लश्कर का येह दस्तूर था कि जब वोह एक जगह इकठ्ठा होना चाहते तो अपने साथियों को अपने पास बुलाने के लिये दिन के वक़्त धुवां बुलन्द करते और रात के वक़्त आग रौशन करते। इस लिये दीगर दरवाज़ों पर जब ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने धुवां देखा तो फ़ौरन समझ गए कि येह धुवां किसी बड़े अम्र पर दलालत कर रहा है। दोनों अपने अपने लश्कर के साथ फ़िलफ़ौर रवाना हुवे और फ़ौरन उस दरवाज़े पर पहुंचे जहां मुजाहिदीन रूमियों से बर सरे पैकार थे और आज़्माइश में मुब्तला थे, वहां पहुंचते ही अपनी आमद की इत्तिलाअ़ देने के लिये उन्हों ने ब आवाज़े बुलन्द ना'रए तक्बीर

www.dawateislami.net

लगाया। इस्लामी दस्ते की आमद ने वहां मुजाहिदीन में एक नई रूह़ फूंक दी। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आते ही रूमियों की गर्दनों पर तल्वारें रखना शुरूअ़ कर दीं। ज़ख़्मी मुजाहिद ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सब्बाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली और दानिशमन्दी के सबब अब रूमी इस्लामी लश्कर के नर्गे में थे, बा'दे अज़ां सब ने भागने में ही आ़फ़िय्यत जानी और ह़ाकिमे हरबीस अपने हज़ारों सिपाहियों समेत भाग कर पहाड़ों में छुप गया।[1]

(2)......ह़ाकिमे हरबीस की अ़जीबो ग़रीब बात

जब ह़ाकिमे हरबीस अपने हज़ारों सिपाहियों के साथ पहाड़ों में जा कर छुपा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथियों के साथ उस का मुह़ासरा कर लिया। उन का जो भी सिपाही पहाड़ से मुंह बाहर निकालता इस्लामी लश्कर के तीरों से उस का सामना होता। ह़ाकिमे हरबीस ने सोचा कि सख़्त सर्दी में हम यहां भूके प्यासे मर जाएंगे, लिहाज़ा उस ने अपने साथियों से मश्वरा कर के सुल्ह़ का इरादा किया। उस ने बाहर आ कर अपने इरादे से सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगाह किया। आप ने फ़रमाया कि सुल्ह़ करने के लिये तुम्हें हमारे लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होना पड़ेगा। बहर ह़ाल उस ने अपने हथयार वग़ैरा उतार कर ऊन का आ़जिज़ाना लिबास पहना और सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में पहुंच गया। सुल्ह़ की गुफ़्तगू का आग़ाज़ करने से पहले ह़ाकिमे हरबीस ने इस्लामी लश्कर का बग़ौर मुआ़इना करने के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक अ़जीबो ग़रीब बात कही। कहने लगा :

لَقَدْ ظَنَنْتُ اَنَّكُمْ اَكْثَرُ عَدَداً مِنَ الْحِصٰى وَاَكْثَرُ مَدَداً وَلَقَدْ كَانَ يَخِيْلُ لَنَا عِنْدَ حَرْبِكُمْ وَشَدَّةٍ مَّا نُلْقِيْ مِنْكُمْ اَنَّكُمْ عَلٰى عَدَدِ الْحِصٰى وَالرَّمْلِ مِنْ كَثْرَتِكُمْ وَلَقَدْ كُنَّا نَرٰى خَيْلًا شُهْباً وَعَلَيْهَا رِجَالٌ وَبِاَيْدِيْهِمْ رَاْيَاتٌ صُفْرٌ وَعَلَيْهِمْ ثِيَابٌ خُضْرٌ فَلَمَّا صِرْتُ بَيْنَكُمْ لَمْ اَرَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئاً وَمَا اَرَاكُمْ اِلَّا فِيْ قِلَّةِ عَدَدٍ وَمَا اَدْرِيْ مَا فُعِلَ

"या'नी अब से पहले मुझे इस बात का यक़ीन था कि आप लोगों की ता'दाद पथ्थरों से भी ज़ियादा है, ताक़त के ए'तिबार से भी आप लोग हम से ज़ियादा हो, ख़ुसूसन जब हम तुम से जंग कर रहे होते थे, जंग की शिद्दत के वक़्त भी हमारा येही ख़याल होता था कि तुम लोग संगरेज़ों या'नी पथ्थरों की ता'दाद

---

1 ......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ١، ص ١٢٢ ـ

www.dawateislami.net

से भी ज़ियादा हो। क्यूंकि हम देखते थे कि तुम्हारे लश्कर में ऐसे कसीर शह सुवार हैं जिन के हाथों में ज़र्द रंग के झन्डे हैं और उन्हों ने सब्ज़ रंग का लिबास पहना हुवा है। लेकिन हैरानगी की बात येह है कि तुम्हारे लश्कर में अब उन लोगों में से कोई भी नज़र नहीं आ रहा और मैं देख रहा हूं कि तुम्हारी ता'दाद भी उस ता'दाद से बहुत कम है जो हमें जंग के वक़्त नज़र आ रही थी, मुझे नहीं मा'लूम कि येह क्या माजरा है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : يَا وَيْلَکَ نَحْنُ مَعَاشِرُ الْمُسْلِمِيْنَ يُكَثِّرُنَا اللّٰهُ تَعَالٰى فِيْ اَعْيُنِ الْمُشْرِكِيْنِ وَيَمُدُّنَا بِالْمَلَائِكَةِ كَمَا فَعَلَ بِنَا يَوْمَ بَدْرٍ وَبِذٰلِكَ فَتَحَ اللّٰهُ تَعَالٰى بِلَادَكُمْ وَحُصُوْنَكُمْ عَلَيْنَا وَاَذَلَّ مُلُوْكَكُمْ "या'नी तेरी हलाकत हो हम मुसलमानों का गुरौह हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुशरिकीन की नज़र में हमारी ता'दाद बहुत ज़ियादा दिखाता है और फ़िरिश्तों के ज़रीए़ मदद फ़रमाता है जैसा कि जंगे बद्र में फ़िरिश्तों के ज़रीए़ हमारी मदद फ़रमाई थी। इसी वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें तुम्हारे शहरों और क़ल्ओं पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाता है और तुम्हारे बादशाहों को ज़िल्लत देता है।"[1]

(3)......बा'लबक क़ल्ए़ की फ़त्ह़ का सबब

मुल्के शाम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर मुहाज़ पर मुसलमानों को अ़ज़ीम फ़त्ह़ व नुसरत अ़ता फ़रमाई थी, इस का सबब येह था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को उस के फ़त्ह़ होने की ग़ैबी ख़बर दी थी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब रूमी लश्कर के सिपह सालार ह़ाकिमे हरबीस को सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास सुल्ह़ के लिये लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना मिरक़ाल बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ल्ए़ वालों की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया :

حَصِّنُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَوْلَادَكُمْ وَاَمْوَالَكُمْ بِالصُّلْحِ فَاِنْ اَبَيْتُمْ ذٰلِكَ فَقَدْ وَعَدَنَا اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنْ يَفْتَحَ لَنَا بِلَادَكُمْ وَاَمْصَارَكُمْ وَغَيْرَهَا وَاَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى مُنْجِزٌ اَمْرَهٗ

"या'नी तुम्हारा सरदार हमारे पास सुल्ह़ के लिये आया है लिहाज़ा तुम भी अपनी जान, औलाद और मालो मताअ़ को हम से सुल्ह़ कर के मह़फ़ूज़ कर लो क्यूंकि अगर तुम सुल्ह़ करने से इन्कार भी कर दोगे तब भी हम तुम पर फ़त्ह़ ज़रूर ह़ासिल कर लेंगे क्यूंकि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान के मुत़ाबिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हम से वा'दा फ़रमाया है कि वोह हमें

[1] ......فتوح الشام، جبلة يحارب خالدا، ج ١، ص ١٢٨۔

www.dawateislami.net

तुम्हारे शहरों और अ़लाक़ों वग़ैरा पर फ़त्ह़ अ़ता फ़रमाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपना वा'दा ज़रूर पूरा फ़रमाएगा।''(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और इस्लामी लश्कर के तमाम मुजाहिदीन का येह अ़क़ीदा था कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो हमें अपनी ह़याते त़य्यिबा में मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात की ग़ैबी ख़बर दी है वोह ज़रूर पूरी हो कर रहेगी, येही वज्ह है कि सय्यिदुना मिरक़ाल बिन उ़तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही ए'तिमाद के साथ इस बात को बा'लबक वालों के सामने बयान किया।

(4)......इस्लामी लश्कर और अ़ह्द की पासदारी

ह़ाकिमे हरबीस ने जिन शराइत़ पर सुल्ह़ की थी उस में से एक शर्त़ येह भी थी कि सुल्ह़ के बा'द इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ में दाख़िल नहीं होगा बल्कि वोह क़ल्ए़ से बाहर रह कर जो भी मुआ़मलात करना चाहे कर सकता है। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस शर्त़ को मन्ज़ूर कर लिया और ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नव सौ मुजाहिदीन दे कर बा'लबक के बाहर ठहरने का हुक्म दिया नीज़ उन्हें इस बात की सख़्ती से ताकीद फ़रमाई कि क़ल्ए़ में दाख़िल होने की क़त़्अ़न कोशिश न करें। सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इस की सख़्ती से पाबन्दी की। ह़ाकिमे हरबीस ने मुसलमानों को जो फ़िदया देने का वा'दा किया था वोह क़ल्ए़ वालों के ए'तिबार से बहुत ज़ियादा था, लेकिन उस ने क़ल्ए़ वालों को इत़्मीनान दिलाया कि इस का एक चौथाई मैं अपने ज़ाती माल से अदा करूंगा। क़ल्ए़ वाले ख़ुश हो गए। कुछ अ़र्से तो उस ने अदाएगी की फिर उस ने क़ल्ए़ वालों से कहा कि अब मैं इस का मुतह़म्मिल नहीं हो सकता लिहाज़ा तुम मुझे अपने माली मुआ़मलात में शरीक कर लो वग़ैरा वग़ैरा। बहर ह़ाल ताजिरों और ह़ाकिमे हरबीस के दरमियान इन्तिशार पैदा हो गया और बढ़ते बढ़ते लड़ाई की नौबत आ गई, इसी दौरान चन्द नौजवानों ने ग़ुस्से में आ कर ह़ाकिमे हरबीस को क़त्ल कर दिया। क़ल्ए़ वाले घबरा कर ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और बताया कि ह़ाकिमे हरबीस क़त्ल हो चुका है लिहाज़ा आप लोग क़ल्ए़ के अन्दर आ कर इस का इन्तिज़ाम संभाल लें। वोह लोग काफ़ी देर तक इस बात पर इसरार करते रहे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़्अ़न आमादा न हुवे और इरशाद फ़रमाया : ''हमारे सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......فتوح الشام، جبلۃ یحارب خالدا، ج ۱، ص ۱۲۸۔

www.dawateislami.net

ने हमें शहर में दाख़िल होने से मन्अ़ फ़रमाया है, उन की इजाज़त के बिग़ैर हम येह काम हरगिज़ नहीं कर सकते और वैसे भी वोह यहां मौजूद नहीं हैं और उन की ग़ैर मौजूदगी में भी हम उन के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं कर सकते।" अह्ले बा'लबक ने बहुत मिन्नत समाजत की लेकिन सय्यिदुना राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ टस से मस न हुवे। येह देख कर अह्ले बा'लबक आप से और तमाम इस्लामी लश्कर से बहुत ही मुतअस्सिर हुवे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब ज़रीअ़ए क़ासिद ख़त़ लिख कर सूरते ह़ाल से आगाह किया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजाज़त दे दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ल्ए़ में दाख़िल हो कर वहां का इन्तिज़ाम संभाल लिया।[1]

अ़ह्द की पासदारी, मुसलमानों का शिआ़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने मुजाहिदीन अपने निगरान व ज़िम्मेदार के हुक्म को किस त़रह़ मानते थे, उन की इजाज़त के बिग़ैर किसी काम को करने का तसव्वुर भी नहीं करते थे। काश हमारे अन्दर भी अपने ज़िम्मेदारान की इत़ाअ़त का ऐसा ही जज़्बा पैदा हो जाए, यक़ीनन निगरान व ज़िम्मेदार की इत़ाअ़त में ही बेहतरी है जब कि वोह शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि जब किसी से कोई अ़ह्द किया जाए तो उसे ज़रूर पूरा करना चाहिये क्यूंकि अ़ह्द की पासदारी करना मुसलमानों का शिआ़र है। एक ह़क़ीक़ी मुसलमान कभी बद अ़ह्दी नहीं करता। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मुबारक अ़मल हमारे लिये मश्अ़ले राह है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4)......जंगे ह़िम्स (बारे अव्वल)

जंगे ह़िम्स का इजमाली हाल

क़िन्नसिरीन की फ़त्ह़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'लबक की त़रफ़ आ गए थे जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िम्स की त़रफ़ चले गए। बा'लबक की फ़त्ह़ के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इस्लामी लश्कर के साथ ह़िम्स पहुंच गए। अव्वलन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िम्स वालों को क़बूलिय्यते इस्लाम या सुल्ह़ और इस के बा'द जंग का मक्तूब रवाना किया जिस के जवाब में उन्हों ने लिखा कि हम जंग करना चाहते हैं। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर को मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में तक़्सीम कर

1 ......فتوح الشام، ذکر حدیث نزول المسلمین علی حمص، ج ۱، ص ۱۳۱ ـ

www.dawateislami.net

के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों पर तअ़य्युनात कर दिया और ह़म्ला करने का हुक्म दिया लेकिन पूरा दिन कोई ख़ातिर ख़्वाह फ़ाइदा न हुवा। दूसरे दिन भी इसी त़रह़ ह़म्ले किये जाते रहे लेकिन ख़ास पेश रफ़्त न हो सकी। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ चूंकि काफ़ी दिनों से यहां मौजूद थे और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ भी त़वील सफ़र कर के यहां पहुंचे थे जिस के नतीजे में इस्लामी लश्कर में ग़ल्ला और राशन की शदीद क़िल्लत हो चुकी थी, दूसरी त़रफ़ ह़िम्स वालों का भी येही ह़ाल था इस्लामी लश्कर के मुह़ासरे के सबब हरक़िल की त़रफ़ से भी कोई इमदाद उन तक न पहुंच पाई थी, उन के हां ग़ल्ला व राशन वग़ैरा की क़िल्लत थी। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ब ज़रीअ़ए क़ासिद ह़ाकिमे ह़िम्स से फ़रमाया कि अगर तुम इस्लामी लश्कर के पांच दिन तक का ग़ल्ला व राशन वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर दो तो हम यहां से चले जाएंगे और फिर किसी और शहर को फ़त्ह़ करने के बा'द आएंगे। ह़ाकिमे ह़िम्स और अह्ले ह़िम्स बहुत ख़ुश हुवे और उन्हों ने राशन का इन्तिज़ाम कर दिया, लिहाज़ा इस्लामी लश्कर वहां से रवाना हो गया। इस्लामी लश्कर की रवानगी के बा'द अह्ले ह़िम्स ने जश्न मनाया क्यूंकि अब उन्हें यक़ीन हो गया था कि इस्लामी लश्कर की वापसी तक हम भरपूर जंगी तय्यारी कर लेंगे।[1]

जंगे ह़िम्स का एक अहम वाक़िआ़

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की जंगी ह़िक्मते अ़मली

अह्ले ह़िम्स ने इस्लामी लश्कर से जो जंग करने का इरादा किया था वोह अज़ राहे तकब्बुर था, इस लिये जंग के दूसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन के ग़ुरूर व तकब्बुर को तोड़ने के लिये एक जंगी ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार की जिस से उन का ग़ुरूर ख़ाक में मिल गया। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस्लामी लश्कर के तमाम ग़ुलामों को जम्अ़ किया जिन की ता'दाद चार हज़ार थी। सब को मुसल्लह़ कर के क़ल्ए़ पर ह़म्ला करने भेजा। जब वोह क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो ह़िम्स के ह़ाकिम ने उन्हें ग़ौर से देखा और अपने क़रीबी लोगों से कहा कि आज क़ल्ए़ का मुह़ासरा करने जो लोग आए हैं येह अ़रब मा'लूम नहीं होते बल्कि येह तो सब ह़बशी हैं।

कुछ ज़ी शुऊ़र लोगों ने उसे कहा कि दर अस्ल मुसलमानों ने हमें ज़लीलो ख़्वार जान कर क़स्दन ग़ुलामों को लड़ने भेजा है। और हमें उन्हों ने त़ा'ना दिया है। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ की इस जंगी ह़िक्मते अ़मली का असर येह हुवा कि रात के वक़्त ह़ाकिमे ह़िम्स ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ को मक्तूब लिखा कि आज दिन को तो हम जंग लड़ने नहीं आए

1 ......فتوح الشام، ذکر نزول المسلمین علی حمص، ج ۱، ص ۱۳۶۔

www.dawateislami.net

लेकिन कल हम क़ल्ए़ से निकल कर तुम से जंग लड़ने के लिये आएंगे। इस्लामी लश्कर भी येही चाहता था कि रूमी क़ल्ए़ से बाहर निकल कर लड़ने के लिये आएं और उन का येह मक़्सद पूरा होने वाला था। लेकिन अगले दिन ग़ल्ले व राशन की कमी के सबब रूमियों से मुआ़हदा कर के इस्लामी लश्कर हि़म्स से रवाना हो गया।

(5)......फ़त्हे रुस्तन

अह्ले रुस्तन का तजदीदे मुआ़हदा से इन्कार

इस्लामी लश्कर हि़म्स से कूच कर के रुस्तन आया। रुस्तन वालों से इस्लामी लश्कर का पहले ही मुआ़हदा था अलबत्ता इस मुआ़हदे की मीआ़द पूरी होने को थी। लिहाज़ा तजदीदे मुआ़हदा के लिये जब सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने क़ासिद को भेजा तो उन्हों ने इस से इन्कार कर दिया।

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ की जंगी तदबीर

रुस्तन शहर का क़ल्आ़ बहुत ही बुलन्द और निहायत मज़बूत़ था, उसे फ़त्ह़ करने के लिये एक त़वील लड़ाई की ह़ाजत थी लेकिन फ़िलफ़ौर इस्लामी लश्कर इस का मुतह़म्मिल नहीं था। इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक जंगी तदबीर अपनाने का फ़ैसला किया। आप ने इस्लामी लश्कर के अहम लोगों से मुशावरत के बा'द रुस्तन के ह़ाकिम नक़ीत़ास को एक मक्तूब रवाना किया जिस में फ़रमाया कि हमारे पास निहायत ही क़ीमती साज़ो सामान की कसरत है और हम कहीं दूर जाने का इरादा रखते हैं यक़ीनन इतना क़ीमती और कसीर सामान हर जगह साथ रखना निहायत ही दुश्वार है, लिहाज़ा हम येह सामान तुम्हारे पास अमानतन रखवाना चाहते हैं जो वापस आ कर ले लेंगे।" ह़ाकिमे रुस्तन ने जैसे ही मक्तूब पढ़ा उस की बाछें खिल गईं और वोह बहुत ख़ुश हुवा कि इस्लामी लश्कर ने मुल्के शाम के दीगर कई अ़लाक़ों से जो क़ीमती हीरे जवाहिरात, सोना चांदी, रेशमी क़ालीन वग़ैरा करोड़ों की मालिय्यत का सामान बत़ौरे माले ग़नीमत लिया है मैं उस पर बा आसानी क़ब्ज़ा कर लूंगा। अपनी बद दियानती को पूरा करने के लिये उस ने जवाबन एक मक्तूब रवाना किया और कहा : "येह तो पुराने ज़माने से दस्तूर चला आ रहा है कि एक बादशाह दूसरे बादशाह पर ए'तिमाद कर के उस के पास सामान वग़ैरा रखवाता है और बा'द में ले लेता है। आप बिला झिजक सामान मेरे पास भेज दें और जब चाहेंगे मैं वापस लौटा दूंगा। मुझे ख़ुशी है कि आप ने ख़िदमत का मौक़अ़ दिया।"

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बीस अ़दद बड़े बड़े सन्दूक़ मंगवाए उन्हें ख़ाली कर के इस त़रह़ कारीगरी करने का हुक्म दिया कि सन्दूक़ की कुन्डी में बाहर से ताला लगा दिया जाए लेकिन सन्दूक़ के फ़र्श को काट कर तख़्ते में ऐसी तरकीब की जाए कि उस के अन्दर जो शख़्स मौजूद हो वोह बाहर का ताला खोल कर बा आसानी बाहर आ जाए। जब सन्दूक़ तय्यार हो गए तो आप ने बीस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इन्तिख़ाब फ़रमाया और इन पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुक़र्रर किया। उन्हें इस बात की हिदायत की, कि तमाम मुजाहिद एक साथ सन्दूक़ से निकलें और ना'रए तक्बीर लगा कर जल्द अज़ जल्द क़ल्ए़ का दरवाज़ा खोल दें जहां ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने साथियों के साथ मौजूद होंगे।

तमाम सन्दूक़ों में मुजाहिदीन को तल्वारों समेत बन्द कर के ह़ाकिमे नक़ीत़ास के पास भेज दिया गया, जब सन्दूक़ उस के पास पहुंचे तो वोह ख़ुशी से फूला नहीं समा रहा था, उस ने वोह तमाम सन्दूक़ अपनी बीवी मारिया के मह़ल में रखवा दिये।

इस्लामी लश्कर वहां से रवाना हो कर सौदिया नामी मक़ाम पर ठहर गया। क़ल्ए़ वालों ने जब इस्लामी लश्कर को रुख़्सत होता देखा तो ख़ुशी से नाचने लगे। रात के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बड़े लश्कर के साथ रुस्तन के क़ल्ए़ की त़रफ़ ख़ामोशी से रवाना हो गए। वहां अह्ले रुस्तन इतनी बड़ी कामयाबी की ख़ुशी में जश्न मनाने में मसरूफ़ हो गए, उस जश्न का मेहमाने ख़ुसूसी ह़ाकिमे नक़ीत़ास था।

जब उन की मह़फ़िल उ़रूज पर थी ऐन उसी वक़्त सारे सन्दूक़ों से मुजाहिदीन निकले और नक़ीत़ास की बीवी से क़ल्ए़ की चाबियां ले लीं। क़ल्ए़ का दरवाज़ा खोल कर तमाम मुजाहिदीन ने ना'रए तक्बीर और सलातो सलाम की सदाएं बुलन्द कीं, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने लश्कर समेत क़ल्ए़ में दाख़िल हो गए और उस जगह को घेर लिया जहां जश्न हो रहा था। फिर इस्लामी लश्कर ने एक ज़ोर दार ना'रए तक्बीर लगाया जिस से तमाम रूमियों के दिल दहल गए, सब के सांस ख़ुश्क हो गए, उन का एक शख़्स भी मुक़ाबले पर न आया क्यूंकि उस वक़्त वोह सब निहत्ते थे। सब लोगों ने अमान अमान पुकारना शुरूअ़ कर दिया। कई लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, बक़िय्या ने जिज़्ये की अदाएगी पर सुल्ह़ कर ली।

ह़ाकिमे नक़ीत़ास ने न तो इस्लाम क़बूल किया और न ही सुल्ह़ की बल्कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया कि मुझे अपने घरवालों समेत यहां से जाने दे,

www.dawateislami.net

जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूल कर लिया। यूं वोह क़ल्आ़ छोड़ कर चला गया। फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेज दी गई और आप ने सजदए शुक्र अदा किया।[1]

(6)......जंगे शीज़र

रुस्तन की फ़त्ह़ के बा'द इस्लामी लश्कर ह़म्मात की त़रफ़ रवाना हुवा, उन से भी पहले ही मुआ़हदा था, वहां थोड़ा अ़र्सा रह कर इस्लामी लश्कर शीज़र आया। रुस्तन और ह़म्मात की त़रह़ येह भी सुल्ह़ में दाख़िल था लेकिन यहां के ह़ाकिम ने सुल्ह़ तोड़ दी। अह्ले शीज़र को ज़बरदस्ती जंग पर आमादा किया। जंग के लिये क़ल्ए़ से बाहर आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के लश्कर पर ऐसा सख़्त ह़म्ला किया कि एक ही झटके में रूमी मग़लूब हो गए और ह़ाकिम समेत तमाम लोग क़ल्ए़ की त़रफ़ भाग खड़े हुवे, मुजाहिदीन ने उन का तआ़क़ुब किया और क़ल्ए़ में दाख़िल हो गए। अह्ले शीज़र ने अदाए जिज़्या की शर्त़ पर अमान ह़ासिल की और उन का ह़ाकिम ख़ुफ़्या रास्ते से भाग गया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शीज़र की फ़त्ह़ के बा'द इस्लामी लश्कर को ह़िम्स की जानिब कूच का हुक्म दिया क्यूंकि शीज़र की फ़त्ह़ के बा'द ह़िम्स से किया गया मुआ़हदा ख़त्म हो गया था।

जंगे शीज़र का एक अहम वाक़िआ़

जब इस्लामी लश्कर ह़िम्स की जानिब वापस आ रहा था तो इन्त़ाकिया से आने वाले रास्ते पर एक बड़ा ग़ुबार उठता हुवा नज़र आया, उस ग़ुबार को तमाम मुजाहिदीन ह़ैरत से देखने लगे, किसी को मा'लूम नहीं था कि येह कैसा ग़ुबार है ? सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ उस त़रफ़ रवाना हो गए और इस्लामी लश्कर ब दस्तूर ह़िम्स की जानिब चलता रहा। जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस ग़ुबार के क़रीब पहुंचे तो देखा कि एक रूमी सरदार अपने घोड़े पर बड़ी शानो शौकत से सुवार है और उस के गिर्द एक सौ सुवार उस के ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से चल रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस क़ाफ़िले को गिरिफ़्तार कर के सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से हरक़िल बादशाह और उस की जंगी तय्यारियों की तफ़्सीलात मा'लूम कीं फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे इस्लाम की दा'वत पेश की तो उस ने अपने ख़ादिमीन के सामने एक अ़जीबो ग़रीब इन्किशाफ़ किया, वोह कहने लगा : اِنِّي الْبَارِحَةَ رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَنَامِ وَقَدْ اَسْلَمْتُ عَلٰى يَدَيْهِ

[1] ......فتوح الشام، ذكر فتح الرستن، ج ۱، ص ۱۳۷۔

www.dawateislami.net

"या'नी आज रात मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है और मैं रात ही को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर इस्लाम क़बूल कर चुका हूं।" बा'दे अज़ां इस्लामी लश्कर फिर ह़िम्स की जानिब चल पड़ा।(1)

(7)......जंगे ह़िम्स (बारे दुवुम)

फ़त्ह़े ह़िम्स का इजमाली ह़ाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब इस्लामी लश्कर को ले कर ह़िम्स पहुंचे तो रूमी भाग कर क़ल्ए़ में घुस गए और अन्दर से दरवाज़े बन्द कर लिये। फिर उन्हों ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को लिखा कि "आप ने अ़ह्द की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है, आप ने कहा था कि हम नहीं आएंगे लेकिन फिर भी आ गए।" आप ने फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान कभी भी बद अ़ह्दी नहीं करते, हम ने भी तुम से कोई बद अ़ह्दी नहीं की, अ़ह्द में येह था कि जब तक कोई और अ़लाक़ा फ़त्ह़ न कर लेंगे तब तक ह़िम्स वापस नहीं आएंगे, हम रुस्तन और शीज़र फ़त्ह़ कर के आ रहे हैं।" जब रूमियों ने मक्तूब पढ़ा तो वोह सोचने लगे कि वाक़ेई मुसलमान अपने अ़ह्द में पक्के हैं। बहर ह़ाल उन्हों ने जंग करने का फ़ैसला किया। ह़िम्स के लोग बड़े जंग जू लम्बे चौड़े और भारी जसामत वाले थे। जंग के पहले दिन उन्हों ने क़ल्ए़ का दरवाज़ा खोला और ज़ोरदार ह़म्ला किया, ह़म्ला इतना शदीद था कि मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, बा'दे अज़ां सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तरग़ीब से मुजाहिदीन ने एक नए जोश के साथ रूमियों पर ह़म्ला किया। लेकिन रूमी अपनी जगह मज़बूती से जमे रहे। दूसरे दिन सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने नमाज़े फ़ज्र के बा'द मुजाहिदीन को नया जोश और जज़्बा दिलाया। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की जंगी ह़िक्मते अ़मली से रूमियों को घेर लिया गया, शदीद लड़ाई के बा'द रूमियों का ह़ाकिम मारा गया और अहले ह़िम्स ने मुसलमानों से मुआ़हदा कर के अमान ह़ासिल कर ली।(2)

जंगे ह़िम्स के अहम वाक़िआ़त

सय्यिदुना इकरिमा बिन अबू जह्ल की शहादत

पहले दिन की जंग में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दिलैरी ने जंग का रुख़ पलट दिया, उन्हें देख कर इस्लामी लश्कर के दीगर शह सुवार भी अपने साथियों के साथ रूमियों

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح الرستن، ج ۱، ص ۱۴۱۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح الرستن، ج ۱، ص ۱۴۱۔

www.dawateislami.net

पर टूट पड़े। ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा बिन अबू जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ौमे मख़्ज़ूम के साथ रूमियों पर ऐसा शदीद ह़म्ला किया कि अह्ले ह़िम्स ने ऐसा ह़म्ला न कभी देखा था और न ही कभी सोचा था। तल्वार से उन का मुक़ाबला करना मुह़ाल था, लिहाज़ा रूमियों ने उन पर तीरों की बोछाड़ कर दी। सय्यिदुना इ़करिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीरों से बे ख़ौफ़ हो कर रूमियों के ख़िलाफ़ क़िताल कर रहे थे। साथियों ने अ़र्ज़ किया : "ऐ इ़करिमा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हुवे अपने आप पर नर्मी कीजिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथियों को ईमान अफ़रोज़ जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ गुरौहे मोमिनीन ! एक वोह ज़माना था कि मैं जहालत की तारीकी में था और बुतों की ह़िमायत में मुसलमानों से लड़ता था, लेकिन आज (जब ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से मुझे ईमान की रौशनी नसीब हुई तो) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त व रिज़ामन्दी में लड़ रहा हूं।"

फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَاِنِّیْ اَرَی الْحُوْرَ مُتَشَوِّقَاتٍ اِلَیَّ وَلَوْ بَدَتْ وَاحِدَۃٌ مِنْھُنَّ لِاَھْلِ الدُّنْیَا لَاَغْنَتْھُمْ عَنِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَلَقَدْ صَدَقَنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فِیْمَا وَعَدَنَا "या'नी मैं इस वक़्त भी जन्नत की ह़ूरों को देख रहा हूं जो मेरी त़रफ़ शौक़ और दिलचस्पी से देख रही हैं। अगर उन में से एक ह़ूर भी दुन्या वालों पर ज़ाहिर हो जाए तो वोह उन्हें सूरज और चांद से ग़नी कर दे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो हम से वा'दा फ़रमाया था वोह बिल्कुल बर ह़क़ है।" येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शेर की त़रह़ रूमियों पर टूट पड़े, तमाम रूमी मह़वे ह़ैरत थे, जो भी उन के क़रीब जाता आन की आन में ख़ाक में मिला दिया जाता। ह़ाकिमे हरबीस दूर बैठा आप की जुरअत व बहादुरी देख रहा था, उस ने अपने क़रीब से ह़र्बा उठाया और सय्यिदुना इ़करिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल का निशाना ले कर फैंका, वोह सीधा निशाने पर लगा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए, आप की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई।[1] اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा वाक़िए़ से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......इस्लामी लश्कर के हर सिपाही का मक़्सद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा होती थी, वोह किसी भी दुन्यवी ख़्वाहिश के बाइ़स जिहाद नहीं किया करते थे।

---

1 ......فتوح الشام، معرکۃ حمص، ج ۱، ص ۱۴۵۔

......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत को लोगों की नज़र से पोशीदा रखा है, लेकिन वोह अपनी रह़मते कामिला से जिसे दुन्या में दिखाना चाहे दिखा सकता है।

......ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा बिन अबू जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही मक़ामो मर्तबे वाले सह़ाबी थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें शहादत से पहले ऐसी क़ुव्वते बीनाई अ़त़ा फ़रमा दी थी कि दुन्या में रहते हुवे जन्नत की हूरों को देख रहे थे।

......येह भी मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों, ख़ास बन्दों की नज़र और आ़म लोगों की नज़र में बहुत फ़र्क़ होता है, आ़म लोग दुन्या में ही बा'ज़ चीज़ें अपनी आंखों से नहीं देख पाते लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दे दुन्या में रहते हुवे भी उस की अ़त़ा और फ़ज़्लो करम से जन्नत को भी मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की जंगी ह़िक्मते अ़मली

जंगे ह़िम्स में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले दिन ही रूमियों के जोश और त़ाक़त को देख लिया था, आप जानते थे कि येह निहायत ही बुज़दिल क़ौम है इसे मारने के लिये कोई जंगी ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार करनी पड़ेगी। चुनान्चे, आप ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक जंगी ह़िक्मते अ़मली पेश की, कि रूमी लश्कर में दो त़रह़ के फ़ौजी होते हैं, घुड़ सुवार और पैदल। जब रूमी लश्कर ह़म्ला आवर हो तो थोड़ी देर तक मुसलमान उन से लड़ें और बा'द में अपनी हज़ीमत ज़ाहिर कर के पीछे हटना शुरूअ़ कर दें। फिर आहिस्ता आहिस्ता भाग खड़े हों। नीज़ अपने केम्प में जाने के बजाए जोसिया वाले रास्ते पर निकल जाएं। यूं पैदल चलने वाले रूमी कुफ़्फ़ार इस्लामी लश्कर को भागता देख कर केम्प में लूटमार शुरूअ़ कर देंगे और दीगर लोग मुजाहिदीन का तआ़क़ुब करेंगे जब वोह काफ़ी दूर निकल जाएं तो अचानक मुजाहिदीन पलटें और रूमियों पर ज़ोरदार ह़म्ला कर दें। उन के ख़ातिमे के बा'द पैदल फ़ौज की त़रफ़ मुतवज्जेह हों और फिर उन्हें आड़े हाथों लें। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया। मुसलमान जब हज़ीमत दिखा कर भागे तो रूमी सुवार उन के तआ़क़ुब में दूर तक निकल आए, पैदल फ़ौज और क़ल्ए़ के अन्दर से भी मज़ीद लोग इस्लामी लश्कर के केम्प में पहुंच कर लूटमार करने लगे। क़ल्ए़ में अब फ़क़त़ बूढ़े, बच्चे और औ़रतें रह गईं थीं, बाक़ी तमाम लोग लूटमार में मसरूफ़ हो गए। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अचानक तमाम मुजाहिदीन को पलटने को कहा, तमाम मुजाहिदीन यकबारगी

www.dawateislami.net

पलटे और तआ़कुब में आने वाले रूमियों पर टूट पड़े। इस्लामी लश्कर ने उन्हें चारों त़रफ़ से घेर लिया, रूमियों ने जवाबी ह़म्ला किया लेकिन ठहर न सके। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रूमियों को गाजर मूली की त़रह़ काट कर रख दिया। उन के ह़ाकिम हरबीस को ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्वार की दो ऐसी शदीद ज़र्बें लगाईं कि उस के दोनों बाज़ू कट गए और वोह ज़मीन पर गिर गया, आप ने उस के दिल में नेज़ा पैवस्त कर के मार डाला।

लड़ाई के दौरान सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने साथियों के साथ क़ल्ए़ की त़रफ़ चले गए और जा कर क़ल्ए़ के दरवाज़े पर क़ब्ज़ा कर लिया, न तो किसी को बाहर आने देते थे और न ही किसी को अन्दर आने देते थे। पैदल रूमी जो लूटमार में मसरूफ़ थे बीच में फंस गए। इतने में सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इस्लामी लश्कर के साथ वहां आ गए। जब रूमियों ने अपने आप को मुजाहिदीन के दरमियान घिरा हुवा देखा तो लूटा हुवा माल व अस्बाब छोड़ छाड़ कर अपने दोनों हाथ ऊपर कर के لَفُوْن لَفُوْن "या'नी अमान अमान पुकारने लगे।" अहले ह़िम्स को अमान दे दी गई, यूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ व नुस्रत से सरफ़राज़ फ़रमाया।(1)

(8)......जंगे यरमूक

जंगे यरमूक का पस मन्ज़र

जब हरक़िल बादशाह को इत्त़िलाअ़ हुई कि मुसलमानों ने रुस्तन, शीज़र और ह़िम्स जैसे अ़ज़ीम क़ल्ए़ भी फ़त्ह़ कर लिये हैं तो वोह आग बगूला हो गया, उस ने दीगर कई अ़लाक़ों से एक अ़ज़ीम फ़ौज को इकठ्ठा किया जिस में जबला बिन ऐहम और माहान अर्मनी जैसे त़ाक़तवर मश्हूरो मा'रूफ़ सरबराह भी मौजूद थे, हरक़िल ने उन के सामने एक त़वील तक़रीर कर के उन में नया जज़्बा और जोश पैदा किया। फिर उस ने लश्कर को तरतीब दे कर मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर रवाना कर दिया। जब कि ह़िम्स का क़ल्आ़ फ़त्ह़ करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जाबिया के मक़ाम पर आ गए। जासूसों ने आप को हरक़िल के जम्अ़ किये हुवे लश्कर के बारे में बताया तो आप बहुत मुतफ़क्किर हुवे और اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن पढ़ा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगी मक़ाम के लिये मश्वरा किया और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे से "यरमूक" के

1 ......فتوح الشام، معرکۃ حمص، ج۱، ص۱۴۵، ۱۴۷۔

www.dawateislami.net

मक़ाम पर पड़ाव किया। जब रूमी लश्कर को इस्लामी लश्कर की यरमूक में आमद का मा'लूम हुवा तो माहान अर्मनी की क़ियादत में वोह भी यरमूक पहुंच गया।

दोनों लश्करों की ता'दाद

दोनों लश्करों की सह़ीह़ ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है। रूमी लश्कर जब इन्त़ाकिया से रवाना हुवा था तब उस की ता'दाद पांच लाख साठ हज़ार (5,60,000) थी, येह लश्कर इक्कीस फ़रसख़ लम्बा था और एक फ़रसख़ कमो बेश तीन मील का होता है। रास्ते में आने वाले मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से भी कई लोग इस लश्कर में शामिल होते गए, इन्त़ाकिया के साहि़ली अ़लाक़ों और बैतुल मुक़द्दस की फ़ौजें भी यरमूक आ पहुंची थी, जबला बिन ऐहम अपने साठ हज़ार अ़रबी साथियों समेत इस लश्कर का हि़स्सा था, इस हि़साब से रूमी लश्कर की कुल ता'दाद दस लाख साठ हज़ार (10,60,000) होती है। इस्लामी लश्कर की ता'दाद बा'ज़ ने तीस हज़ार बताई है लेकिन असह़ और राजेह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ इस्लामी लश्कर की ता'दाद चालीस से पैंतालीस हज़ार थी।

जंगे यरमूक का पहला दिन

माहान अर्मनी ने जबला बिन ऐहम को इस्लामी लश्कर से लड़ने की तरग़ीब दी, उसे कसीर मालो दौलत, इ़ज़्ज़त व शोहरत की लालच दी। चुनान्चे, जबला बिन ऐहम क़ौमे बनू ग़स्सान के साठ हज़ार मुसल्लह़ अ़रब मुतनस्सिरा के साथ सुवार हो कर मैदाने जंग में आ गया।[1]

इस्लामी तारीख़ का सुन्हरी बाब

साठ हज़ार के मुक़ाबले में फ़क़त़ साठ मुजाहिद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अब इस्लामी तारीख़ का एक ऐसा सुन्हरी बाब पेश किया जाता है जिस के बिग़ैर तारीख़ अधूरी है, जिसे पढ़ कर आज भी कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन लरज़ उठते हैं। जबला बिन ऐहम जब क़ौमे ग़स्सान के साठ हज़ार फ़ौजियों के साथ मैदान में आया तो सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर! रूमी लश्कर के सिपह सालार ने उन अ़रबों को हमारे मुक़ाबले पर भेजा है ताकि वोह लोहे को लोहे से काट सके, अगर हमारा पूरा लश्कर उन के मुक़ाबले पर गया तो उन की अहम्मिय्यत बरक़रार रहेगी। मैं उन के साथ एक ऐसी जंगी चाल चलना चाहता हूं जो उन की नस्लें भी याद रखेंगी। मैं पूरे लश्कर नहीं बल्कि थोड़े से शह सुवारों से उन का मुक़ाबला करने जाऊंगा।" सय्यिदुना

1 ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۵۷۔

www.dawateislami.net

जंगे यरमूक का नक़्शा । दोनों लश्कर आमने सामने

जंगे यरमूक में मुसलमानों की अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह इस्लामी तारीख़ का एक ऐसा बाब है
जिसे पढ़ कर आज भी कुफ़्फ़ार पर लरज़ा तारी हो जाता है ।

अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चूंकि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ए'तिमाद था इस लिये उन्हों ने इस बात की इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी कि तुम जितने मुजाहिदीन ले कर जाना चाहो ले जाओ। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "मैं उन साठ हज़ार मुशरिकीन के मुक़ाबले के लिये फ़क़त़ तीस मुजाहिदीन ले कर जाऊंगा।"(1)

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद का नफ़्सियाती ह़रबा

दर अस्ल सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नसरानी अ़रबों के साथ नफ़्सियाती ह़रबा इस्ति'माल कर रहे थे, क्यूंकि अ़रब लड़ाई के मुआ़मले में निहायत ही ग़ैरत मन्द होते हैं, न तो वोह अपने से कमज़ोर से लड़ते हैं और न उन पर कोई बरतरी जताते हैं। बल्कि अपने हम पल्ला लोगों से लड़ने में फ़ख़्र मह़सूस करते हैं। जब साठ हज़ार नसरानी अ़रब तीस मुजाहिदीन को देखेंगे तो फंस जाएंगे क्यूंकि बिलफ़र्ज़ उन्हों ने जंग के ज़रीए़ मुजाहिदीन को शिकस्त दे दी तो भी लोग उन्हें ला'न ता'न करेंगे कि साठ हज़ार ने तीस लोगों को शिकस्त दे कर कौन सा कमाल किया है और अगर वोह हार गए तो भी किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल न रहेंगे कि साठ हज़ार जंगजूओं को फ़क़त़ तीस मुजाहिदीन ने रौंद डाला।

इस्लामी लश्कर के सभी लोग हैरान हो गए

बहर ह़ाल सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात सुन कर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत सब लोग ह़ैरान हो गए और सब ने समझा कि शायद येह मिज़ाह़ फ़रमा रहे हैं। सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ करने लगे : "ऐ ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या आप वाक़ेई तीस आदमी ले जाना चाहते हैं या मिज़ाह़ फ़रमा रहे हैं ?" फ़रमाया : "जी हां मेरा येही इरादा है।" अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया है कि अपने आप को हलाकत में मत डालो। क्या येह अपने आप को हलाकत में डालना नहीं है ? कि 30 आदमी साठ हज़ार लोगों से मुक़ाबला करेंगे।" फ़रमाया : "मैं इस्लामी लश्कर से ऐसे बहादुर मुन्तख़ब करूंगा जिन्हों ने अपनी जानों को राहे ख़ुदा में वक़्फ़ कर दिया है। वोह सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी के लिये लड़ते हैं।" अ़र्ज़ किया : "मैं आप की इस बात से बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ करता हूं वाक़ेई हमारे लश्कर में ऐसे मुजाहिदीन मौजूद हैं लेकिन मैं उन ही

(1) ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۵۹ ـ

www.dawateislami.net

मुजाहिदीन के साथ महब्बत और शफ़्क़त की वज्ह से दरख़्वास्त करता हूं कि आप साठ हज़ार मुशरिकीने अ़रब के मुक़ाबले में तीस के बजाए साठ मुजाहिदीन को ले जाएं।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अबू सुफ़्यान की राए मुनासिब है, मैं भी उन की राए से इत्तिफ़ाक़ करता हूं।"(1)

इस्लामी लश्कर की रवानगी

येह सुन कर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़क़त़ साठ मुजाहिदीन के साथ साठ हज़ार नसरानी अ़रबों के मुक़ाबले के लिये रवाना हुवे। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथ तल्वार के इलावा कोई भी हथयार रखने से मन्अ़ कर दिया, नीज़ तमाम मुजाहिदीन के सामने ऐसी तक़रीर की, कि सभी जज़्बए जिहाद से सरशार हो गए, और इस्लाम की ख़ातिर अपनी जान लुटाने का अ़हद किया। मैदाने जंग में जब येह इस्लामी दस्ता पहुंचा तो जबला बिन ऐहम ने सोचा शायद इस्लामी लश्कर का कोई दस्ता सुल्ह़ की बात चीत करने के लिये आ रहा है। उन मुजाहिदीन में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बड़े बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शामिल थे। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बीच में पहुंच कर सफ़बन्दी शुरूअ़ कर दी। जबला बिन ऐहम बड़ा ह़ैरान हुवा और क़रीब जा कर बोला : "ऐ अ़रबी शह सुवार ! मुझे तुम से येही उम्मीद थी कि तुम जंग का इरादा तर्क कर के सुल्ह़ के लिये ज़रूर आओगे।" सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गरजदार आवाज़ में फ़रमाया : "कौन सी सुल्ह़ ? और कैसी सुल्ह़ ? हम तुम से सुल्ह़ की गुफ़्तगू करने नहीं बल्कि जंग करने आए हैं।" येह सुन कर जबला को गुस्सा आ गया और कहने लगा : "तुम मुझ से मुक़ाबला करने आए हो तो जाओ और अपने लश्कर को कहो कि मैदान में आए क्यूंकि मैं तो पहले से ही अपने लश्कर के साथ मैदान में हूं।" सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या हम साठ आदमी तुझे नज़र नहीं आते ?" उस ने कहा : "तुम तो नज़र आ रहे हो मगर तुम्हारा लश्कर नज़र नहीं आ रहा। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सीना तान कर इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हारे मुक़ाबले के लिये येह लश्कर ही ले कर आया हूं, और हां ग़ौर से सुन ! तेरे साठ हज़ार के लश्कर के

1 ......فتوح الشام، جبلۃ بن الایھم، ج ۱، ص ۵۹ ۔ ملخصاً

www.dawateislami.net

लिये हम साठ मुजाहिद ही काफ़ी हैं बल्कि ज़रूरत से ज़ियादा हैं, तेरे साठ हज़ार के लश्कर के लिये तो हम तीस ही काफ़ी थे लेकिन हमारे लश्कर के रहम दिल सिपह सालार सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इसरार पर मैं ने इन में इज़ाफ़ा किया है और तीस के बजाए साठ मुजाहिद ले आया हूं।'' सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बातें सुन कर जबला का ख़ून ख़ुश्क हो गया और वोह अपने साथियों से कहने लगा : ''इन अ़रबों ने तो मुझे सख़्त आज़माइश में डाल दिया है, अगर हम साठ हज़ार लोगों ने उन्हें मार डाला तो कौन सा बहादुरी का काम किया ? और अगर वोह ग़ालिब आ गए तो हमारी नस्लें भी किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल न रहेंगी।''

दोनों लश्करों में घुमसान की जंग

बहर ह़ाल जबला ने अपने साठ हज़ार के लश्कर को ह़म्ला करने का हुक्म दिया, दोनों त़रफ़ से तल्वारें चलने लगीं। नसरानी उन साठ मुजाहिदीन पर टूट पड़े थे लेकिन तमाम मुजाहिदीन एक आहनी दीवार की त़रह़ रूमी लश्कर के सामने डटे रहे, रूमी लश्कर ने यकबारगी ह़म्ला कर के तमाम मुजाहिदीन को नर्ग़े में ले लिया, लेकिन सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद, सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र, सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) इन छे सहाबा ने अपने घोड़े एक साथ मिला कर ह़िसार बना लिया और जो भी दुश्मन क़रीब आता उसे ज़मीन पर डाल देते। ब ज़ाहिर साठ तल्वारें थीं लेकिन ऐसा लगता था कि हज़ारों तल्वारें चल रही हों, रूमी कट कट कर ज़मीन पर गिर रहे थे।

इस्लामी लश्कर दूर से उन मुजाहिदीन को देख रहे थे, सब से ज़ियादा सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुतफ़क्किर थे, लश्कर के सभी लोग इन साठ मुजाहिदीन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सलामती की दुआएं मांग रहे थे। सुब्ह़ से शाम तक जंग जारी रही, रूमी थक कर चूर हो गए थे जब कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत तमाम मुजाहिदीन ऐसे लड़ रहे थे जैसे अभी अभी मैदान में आए हों। शाम के वक़्त रूमी लश्कर के सिपाही भाग खड़े हुवे।(1)

जंग का इख़्तिताम

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्कर में वापस आए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ फ़क़त़ बीस मुजाहिद थे और अहम तरीन चालीस मुजाहिद लापता थे। आप

1 ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۶۳ ـ

www.dawateislami.net

ज़ारो क़ितार रोने लगे और ख़ुद को यूं सरज़निश करने लगे : "ऐ इब्ने वलीद ! तू ने मुसलमानों को हलाक कर दिया, कल बारगाहे इलाही और अमीरुल मोमिनीन के दरबार में तू क्या उ़ज़्र पेश करेगा ?

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास आए और उन्हें ह़ोसला दिया। फिर मश्अ़लें रौशन कर के मैदाने जंग में गए ताकि लापता अफ़राद को तलाश करें। पूरा मैदान लाशों से भरा पड़ा था। मुजाहिदीन जिस लाश को उठाते वोह रूमी की होती। बड़ी मुश्किल से दस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के जसद मिले। अब भी तीस सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان लापता थे। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्देशा ज़ाहिर किया कि हो सकता है बक़िय्या क़ैद हो गए हों या दुश्मनों के तआ़क़ुब में गए हों। लेकिन आप को दो अफ़राद की बहुत फ़िक्र थी एक तो सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कि येह नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी के बेटे थे और दूसरे सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा के बेटे थे।(1)

गुमशुदा अस्ह़ाब की तलाश

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कौन ख़ुश नसीब है जो अपने भाइयों की तलाश में जाएगा ?" सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसरार किया कि उन की तलाश के लिये मैं ही जाऊंगा। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजाज़त दे दी। अभी तो वोह थोड़ी ही दूर गए थे कि सामने से कुछ सुवार आते दिखाई दिये, जैसे ही वोह क़रीब आए तो उन्हों ने ना'रए तक्बीर बुलन्द किया। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ना'रे से जवाब दिया। देखा तो वोह पच्चीस सह़ाबए किराम थे उन के आगे आगे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) थे। उन की वापसी से तमाम लोग बहुत ख़ुश हुवे। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सजदए शुक्र अदा किया।

साठ मुजाहिदीन में से दस मुजाहिदीन शहीद हुवे, पहले बीस मुजाहिदीन सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मइय्यत में वापस आए और फिर रात के वक़्त पच्चीस मुजाहिदीन वापस आए बाक़ी फ़क़त़ पांच सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان क़ैद हुवे थे। जब कि रूमी लश्कर के साठ हज़ार नसरानियों में से पांच हज़ार नसरानी मक़्तूल हुवे थे।(2)

1 ......فتوح الشام، جبلۃ بن الایھم، ج ۱، ص ۱۶۴۔

2 ......فتوح الشام، جبلۃ بن الایھم، ج ۱، ص ۱۶۵۔

www.dawateislami.net

जंग की तफ़्सील फ़ारूक़े आ'ज़म की बारगाह में

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस तारीख़ी मा'रके की तफ़्सीलात ब ज़रीअ़ए मक्तूब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ अज़्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे कर बारगाहे फ़ारूक़े आ'ज़म में भेजा। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं तेरह ज़िल हि़ज्जा जुमुअ़तुल मुबारक की शाम अ़स्र के बा'द मक़ामे यरमूक से मदीनए मुनव्वरा के लिये रवाना हुवा और अगले जुमुअ़तुल मुबारक मदीनए मुनव्वरा पहुंचा। मस्जिदे नबवी लोगों से भरी हुई थी। मैं ने अपनी ऊंटनी को बाबे जिब्रील पर बांधा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबारका पर ह़ाज़िरी दी, बारगाहे रिसालत व बारगाहे सिद्दीक़ी दोनों में सलाम पेश किया, दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और फिर वोह मक्तूब ले कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। अव्वलन मैं ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दोनों हाथों को चूमा, फिर सलाम किया और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्तूब पेश किया।"(1)

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जब सफ़र से लौटते तो सब से पहले हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी देते, सलातो सलाम पेश करते और दो रक्अ़त नमाज़ भी पढ़ते। लिहाज़ा सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी देना, वहां सलातो सलाम पढ़ना और नवाफ़िल अदा करना न सिर्फ़ जाइज़ व मुस्तह़सन या'नी अच्छा है बल्कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है।

......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़मल से मा'लूम हुवा कि उन का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मज़ारात में ज़िन्दा हैं, वरना वोह कभी भी दोनों की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सलाम पेश न करते।

......हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हो कर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों को चूमा। मा'लूम हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों, औलियाए किराम, पीराने उ़ज़्ज़ाम उ़लमाए किराम वग़ैरहा के हाथ चूमना जाइज़ है, न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित है।

(1)......فتوح الشام، جبلۃ بن الایھم، ج ۱، ص ۱۲۶۔

www.dawateislami.net

✿......अगर बुज़ुर्गों के हाथ चूमना जाइज़ न होता तो सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी भी फ़ारूक़े आ'ज़म के हाथ न चूमते।

✿......नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम का येह मा'मूल था कि वोह अमीरुल मोमिनीन और दीगर बुज़ुर्गों के हाथों को बोसा दिया करते थे, क्यूंकि अगर येह कोई नया अ़मल होता तो वहां मौजूद अस्ह़ाब में से कोई न कोई आप को ज़रूर मन्अ़ करता, लेकिन वहां किसी ने भी मन्अ़ न किया बल्कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी मन्अ़ न किया जो इस बात की वाज़ेह़ दलील है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़दीक भी येह जाइज़ अ़मल था।

फ़ारूक़े आ'ज़म का अकाबिर सहाबा से मदनी मश्वरा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही वोह मक्तूब पढ़ा, आप का रंग तब्दील हो गया और आप बहुत परेशान हो गए। आप ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن पढ़ा। वहां मौजूद अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी परेशान हो गए और सभी पूछने लगे कि हु़ज़ूर क्या मुआ़मला है? इस्लामी लश्कर की त़रफ़ से कौन सी ऐसी बात आई है कि जिस ने आप को परेशान कर दिया है? सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे और वोह मक्तूब पढ़ कर सुनाया, तमाम ह़ाज़िरीन भी परेशान हो गए। सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "अमीरुल मोमिनीन ! अगर्चे आप का शाम जाना मुसलमानों के लिये तक़विय्यत का बाइ़स होगा लेकिन आप हमें भेजें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अपनी जान, माल सब कुछ मुसलमानों पर लुटाने में किसी क़िस्म का बुख़्ल नहीं करूंगा।" फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रूमी लश्कर की तफ़्सीलात मा'लूम की।

रसूलुल्लाह और जंगे यरमूक का ज़िक्र

तफ़्सीलात से आगाही के बा'द आप ने तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया :

اَبْشِرُوْا رَحِمَکُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی فَاِنَّ ھٰذِہِ الْوَقْعَۃَ یَکُوْنُ فِیْھَا اٰیَۃٌ مِنْ آیَاتِ اللّٰہِ تَعَالٰی یَخْتَبِرُ بِھَا عِبَادَہُ الْمُؤْمِنِیْنَ لِیَنْظُرَ اَفْعَالَھُمْ وَصَبْرَھُمْ فَمَنْ صَبَرَ وَاحْتَسَبَ کَانَ عِنْدَ اللّٰہِ مِنَ الصَّابِرِیْنَ وَاعْلَمُوْا اَنَّ ھٰذِہِ الْوَقْعَۃَ ھِیَ الَّتِیْ ذَکَرَھَا لِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ الَّتِیْ یَبْقٰی ذِکْرُھَا اِلَی الْاَبَدِ ھٰذِہِ الدَّائِرَۃُ الْمُھْلِکَۃ

www.dawateislami.net

"या'नी आप तमाम लोगों को खुश ख़बरी हो क्यूंकि जंगे यरमूक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से एक निशानी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस जंग के ज़रीए अपने मोमिनीन बन्दों को आज़्माएगा ताकि वोह उन के अफ़्आ़ल और सब्र को देखे, पस जो उन में से सब्र करेगा और अज्र की उम्मीद रखेगा वोह अल्लाह के हां साबिरीन में से होगा और जान लो कि येह वोही जंग है जिस का ज़िक्र खुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से किया था और इस हलाकत खे़ज़ जंग का ज़िक्र हमेशा बाक़ी रहेगा।" सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्तिफ़्सार किया : "इस जंग में किस की हलाकत होगी ?" फ़रमाया : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ कुफ़्र किया और उस के लिये औलाद साबित की, लिहाज़ा मददे इलाही पर पुख़्ता भरोसा रखें।"(1) (या'नी रूमियों की शिकस्त होगी और मुसलमानों की फ़त्ह)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) की मुबारक तसरीह़ से दर्जे ज़ैल मदनी फूल ह़ासिल हुवे :

......जंगे यरमूक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से एक निशानी है जिस के ज़रीए मुसलमानों को आज़्माया जाएगा। नीज़ इस मुबारक जंग का ज़िक्र हमेशा बाक़ी रहेगा।

......जंगे यरमूक 15 हिजरी में लड़ी गई लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा ही में इस की ग़ैबी ख़बर दे दी थी, मा'लूम हुवा सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से इल्मे ग़ैब रखते हैं।

......येह भी मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को जानते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाया है, जभी तो तमाम अस्ह़ाब ने सुना और किसी ने ए'तिराज़ न किया।

......येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बियाए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम के इल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा रखना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से साबित है, येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुशरिकीन की शिकस्त और मुसलमानों की फ़त्ह़ की ग़ैबी ख़बर दी तो किसी ने भी इन्कार न किया।

(1) ......فتوح الشام، جبلة بن الایهم، ج ۱، ص ۱۶۷۔

www.dawateislami.net

जवाबी मक्तूब और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ की रवानगी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ जवाबी मक्तूब रवाना किया, वोह मक्तूब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमाया और फिर उन के लिये दुआ़ फ़रमाई । सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जवाबी मक्तूब ले कर मैं बाबे ह़बशा से निकला, फिर मैं ने अपने आप से कहा :

لَقَدْ اَخْطَاْتُ فِي الرَّاْيِ اِذْلَمْ اَسْلِمْ عَلٰى قَبْرِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا اَدْرِيْ اَرَاهُ بَعْدَ الْيَوْمِ اَمْ لَا

"या'नी येह मेरी बहुत बड़ी ग़लत़ी होगी अगर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर सलाम पढ़े बिग़ैर चला गया क्यूंकि क्या मा'लूम बा'द में ह़ाज़िरी नसीब हो या न हो ।"

मज़ीद फ़रमाते हैं :

فَقَصَدْتُّ حُجْرَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَائِشَةُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا جَالِسَةٌ عِنْدَ قَبْرِهٖ وَعَلِيُّ بْنُ اَبِيْ طَالِبٍ كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ وَالْعَبَّاسُ جَالِسَانِ عِنْدَ الْقَبْرِ وَالْحُسَيْنُ فِيْ حُجْرِ عَلِيٍّ وَالْحَسَنُ فِيْ حُجْرِ الْعَبَّاسِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ وَهُمْ يَتْلُوْنَ سُوْرَةَ الْاَنْعَامِ وَعَلِيٌّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَتْلُوْ سُوْرَةَ هُوْدٍ فَسَلَّمْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

"या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार का क़स्द कर के चला, जब वहां पहुंचा तो देखा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मज़ारे पुर अन्वार के पास बैठे हैं, सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में और सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में बैठे हैं, सब लोग सूरए अन्आ़म की तिलावत कर रहे हैं जब कि सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सूरए हूद की तिलावत कर रहे हैं । फिर मैं ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में सलातो सलाम पेश किया ।"(1)

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक अ़मल से वाज़ेह़ हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार का क़स्द करना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है ।

1......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ١، ص ١٦٨ ـ

www.dawateislami.net

......हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर सलातो सलाम पेश करना भी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है।

......दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी देना, वहां तिलावते क़ुरआन करना और सलातो सलाम पेश करना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मा'मूल था।

......सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार के क़स्द से चलना, मज़ार पर ह़ाज़िरी देना, वहां तिलावते क़ुरआन करना, सलातो सलाम पेश करना येह तमाम उमूर बिल्कुल जाइज़ और अज्रो सवाब का ज़ख़ीरा हैं।

मौला अ़ली और शाने फ़ारूक़े आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब मैं क़ब्रे अन्वर पर सलातो सलाम पेश कर के रवाना होने लगा तो मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! क्या तुम मुल्के शाम वापस जा रहे हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां ! जा तो रहा हूं लेकिन दिल में एक ख़याल आता है कि जब मैं वहां पहुंचूंगा यक़ीनन दोनों त़रफ़ शदीद जंग जारी होगी, तल्वारें आपस में टकरा रही होंगी, इस्लामी लश्कर जब मुझे बिग़ैर किसी मदद के अकेला देखेगा तो हो सकता है उन के दिल टूट जाएं और वोह हिम्मत हार बैठें, मुझे इस बात की फ़िक्र खाए जा रही है।"

येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ज़ाइलो मनाक़िब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम्हें किस ने मन्अ़ किया है कि तुम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से दुआ़ न करवाओ। (या'नी तुम्हें इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़ व नुस्रत के लिये अमीरुल मोमिनीन से ज़रूर दुआ़ करवानी चाहिये थी) ऐ अ़ब्दुल्लाह ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ❁ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की दुआ़ रद नहीं की जाती। ❁ उन की दुआ़ और क़बूलिय्यत के दरमियान कोई रुकावट नहीं होती। ❁ दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्ही के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया था : अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो वोह उ़मर होते। ❁ क्या येह वोही शख़्सिय्यत नहीं हैं जिन की राए की क़ुरआन ने मुवाफ़िक़त की है। ❁ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्ही के बारे में फ़रमाया था कि अगर आस्मान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हो तो उ़मर बिन ख़त़्त़ाब के सिवा कोई न बचेगा। ❁ क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की शान में वाज़ेह़ आयात

www.dawateislami.net

नाज़िल फ़रमाई हैं। ❁ येह निहायत ही आ़बिदो ज़ाहिद और मुत्तक़ी शख़्स हैं। ❁ येह ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुशाबेह हैं। ❁ अगर वोह तुम्हारे लिये दुआ़ फ़रमा दें तो हाथों हाथ क़बूल हो जाए।"

येह सुन कर सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! आप ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जो भी फ़ज़ाइल बयान किये हैं मैं उन्हें अच्छी त़रह़ जानता हूं, मैं ने उन से तो दुआ़ करवा ली है लेकिन मैं चाहता हूं कि आप और सय्यिदुना अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी दुआ़ फ़रमा दें ख़ुसूसन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब दुआ़ फ़रमाएं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों ने दुआ़ के लिये हाथ बुलन्द किये और यूं दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَتَوَسَّلُ بِهٰذَا النَّبِیِّ الْمُصْطَفٰی وَالرَّسُوْلِ الْمُجْتَبٰی الَّذِیْ تَوَسَّلَ بِهٖ آدَمُ فَاَجَبْتَ دَعْوَتَهٗ وَغَفَرْتَ خَطِیْئَتَهٗ اِلَّا سَهَّلْتَ عَلٰی عَبْدِ اللّٰهِ طَرِیْقَهٗ وَطَوَیْتَ لَهُ الْبَعِیْدَ وَاَیَّدْتَ اَصْحَابَ نَبِیِّکَ بِالنَّصْرِ اِنَّکَ سَمِیْعُ الدُّعَاءِ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी बारगाह में तेरे उस नबिय्ये मुस्त़फ़ा, रसूले मुज्तबा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला पेश करते हुवे दुआ़ करते हैं जिन का सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी वसीला पेश किया था तो तू ने उन की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उन की लग़्ज़िश को मुआ़फ़ फ़रमाया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के रास्ते को इन के लिये आसान फ़रमा दे, इन की मन्ज़िल की दूरी को समेट कर क़रीब कर दे और तू अपने मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की मदद व नुस्रत के ज़रीए़ ताईद फ़रमा। बेशक तू ही दुआ़ओं को सुनने वाला है।" फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया :

سِرْ یَا عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ قُرْطٍ فَاللّٰهُ تَعَالٰی اَکْرَمُ مِنْ اَنْ یَّرُدَّ دُعَاءَ عُمَرَ وَعَبَّاسٍ وَعَلِیٍّ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ وَاَزْوَاجِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ تَوَسَّلُوْا اِلَیْهِ بِاَکْرَمِ الْخَلْقِ عَلَیْهِ "या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ ! अब बे फ़िक्र हो कर जाओ क्यूंकि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अ़ली, ह़सन व ह़ुसैन और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मख़्लूक़ की सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त व मर्तबे वाली हस्ती (या'नी ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का वसीला पेश किया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस बात से करीम तर है कि वोह इस वसीले के होते हुवे उन की दुआ़ को रद फ़रमाए।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : فَخَرَجْتُ مِنَ الْحُجْرَةِ وَاَنَا فَرِحٌ مُسْتَبْشِرٌ وَاسْتَوَيْتُ عَلٰى كَوْرِ الْمَطِيَّةِ وَرَكِبْتُ الْفَلَاةَ وَاَنَا فَرِحٌ بِدُعَاءِ عَلِيٍّ وَالْعَبَّاسِ وَعُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِيْن "या'नी मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार से निकला तो बहुत ही ख़ुश था, मैं ने ऊंटनी का कजावा वग़ैरा दुरुस्त किया और उस पर सुवार हो गया, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली, सय्यिदुना अ़ब्बास व सय्यिदुना उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِین) की दुआ़ से बहुत ही ख़ुश हो रहा था।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से जुमुअ़तुल मुबारक के रोज़ रवाना हुवे और तीसरे दिन अ़स्र के वक़्त मक़ामे यरमूक में पहुंच गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इतना जल्दी पहुंचने पर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही मुतअ़ज्जिब हुवे। सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना उ़मर, सय्यिदुना अ़ली, सय्यिदुना अ़ब्बास, सय्यिदुना इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِین) की दुआ़ का ज़िक्र किया तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : صَدَقْتَ يَا ابْنَ قُرْطٍ وَاِنَّهُمْ لَكِرَامٌ عَلَى اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ وَاِنَّ دُعَاءَهُمْ لَا يُرَدُّ "या'नी ऐ इब्ने क़ुर्त़ ! तुम ने बिल्कुल सच कहा, येह ऐसी इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत वाली हस्तियां हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन की दुआ़ को कभी रद नहीं फ़रमाता।"(1)

इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक भी बड़े मक़ामो मर्तबे वाले थे।

......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने अपनी मुश्किल का ज़िक्र किया, मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद मुश्किल कुशा हैं लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दुआ़ करवाओ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की दुआ़ को रद नहीं फ़रमाता और उन की दुआ़ के ज़रीए़ तुम्हारी मुश्किल दूर हो जाएगी।

......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तरबिय्यत याफ़्ता थे, उन्हें मा'लूम था कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ रद नहीं की

1 ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ١، ص ١٦٨ ـ

www.dawateislami.net

जाती मगर उन की येह मदनी सोच थी कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की दुआ़ के साथ अगर अह्ले बैत की दुआ़ भी हो तो वोह सोने पे सुहागे का काम करेगी, इसी लिये उन्हों ने मौला अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ से भी दुआ़ की दरख़्वास्त की।

......सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की दुआ़ के साथ अह्ले बैत की दुआ़ भी हो और फिर वोह दुआ़ जो रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब हो तो ऐसी दुआ़ कभी भी रद नहीं की जाएगी।

......मा'लूम हुवा येह अ़क़ीदा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब दुआ़एं क़बूल होती हैं, सह़ाबए किराम علیہم الرضوان का मुबारक अ़क़ीदा है।

......येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के वसीलए जलीला से दुआ़ मांगना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), सय्यिदुना अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ, सय्यिदुना इमामे ह़सन व हु़सैन (رضی اللہ تعالٰی عنہما) और अज़्वाजे मुत़ह्हरात की सुन्नते मुबारका है।

......येह भी मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के वसीले से दुआ़ करना दुआ़ की क़बूलिय्यत का अहम सबब है। जैसा कि सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने फ़रमाया कि "अब दुआ़ किसी सूरत भी रद नहीं हो सकती क्यूंकि येह दुआ़ अकरमुल ख़ल्क़ या'नी रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के वसीले से मांगी गई है।"

......जो दुआ़ रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के वसीले से मांगी गई हो उस पर ख़ुश होना भी सह़ाबए किराम علیہم الرضوان की सुन्नते मुबारका है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رضی اللہ تعالٰی عنہ इस दुआ़ के बा'द बहुत ज़ियादा ख़ुश हुवे और बा क़ाइदा इस बात को बयान किया।

......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ, सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللہ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم), सय्यिदुना अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ, सय्यिदुना इमामे ह़सन व हु़सैन (رضی اللہ تعالٰی عنہما) और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنہن इन तमाम ह़ज़रात का मक़ामो मर्तबा बहुत ही बुलन्दो बाला था, येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्त़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन सब की दुआ़ का ज़िक्र किया तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन का बुलन्द मक़ाम ज़िक्र किया।

www.dawateislami.net

मदीनए मुनव्वरा से सात हज़ार के लश्कर की रवानगी

इस्लामी लश्कर और रूमी लश्कर की तफ़्सीलात मदीनए मुनव्वरा और अत़राफ़ के तमाम अ़लाक़ों में फैल गई थीं इस वज्ह से जिस दिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबी मक्तूब रवाना फ़रमाया उस से अगले रोज़ मदीनए मुनव्वरा के अत़राफ़ के अ़लाक़ों से तक़रीबन सात हज़ार मुजाहिदीन का लश्कर मुल्के शाम में मौजूद इस्लामी लश्कर की मदद के लिये तय्यार हो गया। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस लश्कर की सिपह सालारी यमन के ह़ाकिम ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सोंपी और मुख़्तलिफ़ नसीह़तों के बा'द उसे मुल्के शाम की जानिब रवाना कर दिया। वोह लश्कर मुख़्तलिफ़ घाटियों से होता हुवा इस्लामी लश्कर के पास पहुंच गया।(1)

जंगे यरमूक का दूसरा दिन

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद माहान के दरबार में

रूमी लश्कर के सब से बड़े सिपह सालार माहान अर्मनी ने जब पहले दिन की कैफ़िय्यत देखी कि किस त़रह़ मुसलमानों के फ़क़त़ साठ मुजाहिदीन ने हमारे साठ हज़ार रूमियों को भगा दिया तो वोह बड़ा है़रान हुवा, उस ने जबला बिन ऐहम को बुला कर सख़्ती से सरज़निश की तो जबला कहने लगा : "ऐ सरदार ! मुझ पर ग़ुस्से न हों मैं आप के लिये एक तोह़्फ़ा लाया हूं, फिर उस ने उन पांच क़ैदी सह़ाबए किराम को बुलाया और कहा कि मैं ने इन को क़ैद कर लिया है और बक़िय्या को क़त्ल कर डाला है। अलबत्ता इन का एक सिपाही ऐसा है जो पूरे इस्लामी लश्कर की जान है, अगर हम उसे क़त्ल कर दें तो इस्लामी लश्कर की कमर टूट जाएगी।" माहान के पूछने पर उस ने बताया कि उस का नाम ख़ालिद बिन वलीद है। माहान ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुल्ह़ के लिये बुला कर धोके से शहीद करने का प्लान बनाया और क़ासिद को इस्लामी लश्कर की त़रफ़ रवाना किया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सौ(100) मुजाहिदीन के साथ माहान के दरबार में पहुंचे। सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और माहान के दरमियान एक त़वील गुफ़्तगू हुई, जब गुफ़्तगू में शिद्दत हुई तो माहान के तै शुदा मन्सूबे के मुत़ाबिक़ उस के मुहाफ़िज़ों ने तल्वारें तान लीं लेकिन इस से पहले कि वोह कुछ करते

1 .....فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۶۹ ۔

www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साथियों समेत माहान को चारों त़रफ़ से घेर लिया, अपने सर पर मौत देख कर माहान का सांस ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया, उस की हैसिय्यत सर्कस के एक जानवर की त़रह़ हो गई जो अपने मालिक के हुक्म पर चुप चाप अ़मल करता है, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पांच क़ैदी सह़ाबए किराम को लाने का कहा और उन सब को ले कर बड़ी शानो शौकत से इस्लामी लश्कर वापस लौटे जिस पर पूरे इस्लामी लश्कर में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को माहान के साथ होने वाली गुफ़्त्गू और क़ैदी सह़ाबा की आज़ादी की तमाम तफ़्सील बता दी।(1)

दोनों लश्करों में घुमसान की जंग

तीसरे दिन दोनों लश्करों में घुमसान की जंग हुई, चौथे दिन इस्लामी लश्कर जंग के लिये मैदान में आया लेकिन उस दिन रूमी लश्कर लड़ने के लिये न निकला। इसी त़रह़ माहान ने सात दिन तक जंग मौक़ूफ़ रखी। ग्यारहवें दिन माहान ने रात से ही अपने लश्कर को तरतीब दे दिया और सुब्ह़ जब इस्लामी लश्कर नमाज़े फ़ज्र में मसरूफ़ था उस ने ह़म्ला कर दिया। जल्दी जल्दी तमाम मुजाहिदीन ने जंग की तय्यारी की और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रूमी लश्कर को जा कर रोका। ग्यारहवें दिन की इस जंग में इस्लामी लश्कर में मौजूद ख़वातीन ने भी ह़िस्सा लिया। जंग के बारहवें दिन भी ऐसी घुमसान की जंग हुई कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस त़रफ़ जाते लाशों के अम्बार लगा देते। बारहवें दिन रूमी लश्कर के चालीस हज़ार सिपाही मक़्तूल हुवे।(2)

जंगे यरमूक में मुसलमानों का शिआ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं:

كَانَ خَالِدٌ اَمَامَنَا فِيْ حَمْلَتِهٖ وَنَحْنُ مِنْ وَرَائِهٖ وَكَانَ شِعَارُنَا يَا مُحَمَّدُ يَا مَنْصُوْرَ اُمَّتِكَ "या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे आगे आगे और हम सब उन के पीछे पीछे थे और उस दिन हमारा शिआ़र **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, **ऐ अपनी उम्मत की मदद फ़रमाने वाले** था।"(3)

1. ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۷۳-۱۷۹ ملخصا۔
2. ......فتوح الشام، جبلة بن الايهم، ج ۱، ص ۱۷۹ ملخصا۔
3. ......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۱۹۷۔

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह के ना'रे और रसूलुल्लाह से मदद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जंगे यरमूक में मुसलमानों का शिआ़र येह था कि वोह या रसूलल्लाह के ना'रे लगाया करते थे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद त़लब किया करते थे, यक़ीनन उन का येह अ़मल क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ था और उन का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हमारी मदद फ़रमाते हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मदद फ़रमाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का मदद करना है । मा'लूम हुवा या रसूलल्लाह के ना'रे लगाना और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद त़लब करना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और ताबेईने उ़ज़्ज़ाम की सुन्नते मुबारका है येही वज्ह है कि आज भी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से ह़क़ीक़ी मह़ब्बत करने वाले उन के त़रीक़े पर अ़मल करते हुवे या रसूलल्लाह के ना'रे लगाते हैं और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद भी त़लब करते हैं ।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मुबारक टोपी

जंग के बारहवें दिन सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुक़ाबला एक रूमी सरदार बित़्रीक़ निस्तूर से हुवा, दोनों के दरमियान जंग जारी थी कि अचानक सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घोड़ा बिदका और ज़मीन पर गिर गया जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ज़मीन पर गिर गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोह मुबारक टोपी भी गिर गई जिसे आप हर वक़्त अपने साथ रखा करते थे, ह़ैरानी की बात येह है कि जैसे ही वोह टोपी गिरी आप को अपनी जान की नहीं बल्कि उस टोपी की फ़िक्र लग गई और आप ने ब आवाज़े बुलन्द पुकारा : قَلَنْسُوَتِیْ رَحِمَکُمُ اللّٰہ ''या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम लोगों पर रह़्म फ़रमाए, है कोई जो मेरी टोपी मुझे थमा दे ।'' चुनान्चे, आप की क़ौम में से एक शख़्स गया और आप की टोपी आप को तलाश कर के थमा दी, जैसे ही आप ने वोह टोपी पहनी तो ऐसे लगा जैसे आप को नई त़ाक़त मिल गई हो, फिर आप ने उस सरदार पर अपनी तल्वार का ऐसा वार किया कि उस के जिस्म के दो टुकड़े हो गए । रूमियों ने जब उस का येह ह़श्र देखा तो सब का सांस रुक गया और वोह भीगी बिल्ली की त़रह़ भाग खड़े हुवे ।(1)

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद का मुबारक अ़क़ीदा

जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लश्कर में वापस आए तो उन से पूछा गया कि ''ह़ज़रत जब मैदाने जंग में हर त़रफ़ तल्वारें चल रही थीं, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी टोपी

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج۱، ص۲۱۰-

www.dawateislami.net

की फ़िक्र लगी हुई थी, इस की क्या वज्ह थी ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हल्क़ करवाया तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक बालों में से चन्द बाल मुबारक अपने पास रख लिये । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : **مَاتَصْنَعُ بِهٰؤُلَاءِ يَاخَالِدُ** "या'नी ऐ ख़ालिद ! तुम इन बालों का क्या करोगे ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : **اَتَبَرَّكُ بِهَا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَاَسْتَعِيْنُ بِهَا عَلَى الْقِتَالِ قِتَالَ اَعْدَائِي** "या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप के इन मुबारक गेसूओं से तबर्रुक हासिल करूंगा और जंगों में अपने दुश्मनों के क़िताल पर इन से मदद तलब करूंगा ।" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **لَاتَزَالُ مَنْصُوْرًا مَادَامَتْ مَعَكَ** "या'नी ऐ ख़ालिद ! जब तक येह बाल तुम्हारे पास रहेंगे इन के वसीले से हमेशा तुम्हारी मदद की जाती रहेगी ।" सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **فَجَعَلْتُهَا فِيْ مُقَدَّمَةِ قَلَنْسُوَتِيْ فَلَمْ اَلْقَ جَمْعًا قَطُّ اِلَّا انْهَزَمُوْا بِبَرَكَةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم** "या'नी फिर मैं ने इन मुबारक गेसूओं को अपनी टोपी के अगले हिस्से में महफ़ूज़ कर लिया और मैं जब भी अपने दुश्मनों से मुक़ाबले के लिये जाता हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से मेरे दुश्मनों को शिकस्त व ज़िल्लत से दो चार फ़रमाता है ।"(1)

इल्मो हिक्मत के मदनी फूल

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितने वाज़ेह अल्फ़ाज़ में अपना मुबारक अ़क़ीदा बयान कर रहे हैं कि मैं इन मुबारक गेसूओं से तबर्रुक और मदद हासिल करूंगा। मा'लूम हुवा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं से तबर्रुक और मदद हासिल करना दोनों जाइज़ हैं।

......मा'लूम हुवा कि येह फ़क़त सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़क़ीदा ही नहीं था बल्कि आप का येह मुशाहदा था कि मुझे जंगों में इन ही मुबारक गेसूओं की बरकत से फ़त्हो नुस्रत हासिल होती है।

......जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि मैं इन से बरकत और मदद हासिल करूंगा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(1)......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۲۱۰۔

www.dawateislami.net

की ताईद फ़रमाई कि "जब तक तुम्हारे पास येह बाल रहेंगे तुम्हें हमेशा मदद व नुस्रत ही मिलेगी, तुम्हारे दुश्मनों को शिकस्त व ज़िल्लत दी जाएगी।"

......सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं से बरकत और मदद ह़ासिल करने का मुआ़मला आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की न सिर्फ़ ह़याते मुबारका में था बल्कि आप के विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी है। क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया कि ऐ ख़ालिद जब तक येह बाल तुम्हारे पास रहेंगे तब तक तुम्हारी मदद की जाती रहेगी। और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब येह वाक़िआ़ बयान कर रहे हैं, उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हो चुका था। लिहाज़ा साबित हुवा कि आसारे रसूलुल्लाह से तबर्रुक व मदद का मुआ़मला ह़याते त़य्यिबा में भी था और विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी है।

......अगर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं से तबर्रुक ह़ासिल करना और मदद त़लब करना नाजाइज़ या शिर्क होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रोकते और मन्अ़ फ़रमाते कि ऐ ख़ालिद येह अ़क़ीदा रखना दुरुस्त नहीं है, जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ न फ़रमाया बल्कि येह फ़रमा कर उन के अ़क़ीदे को पुख़्ता कर दिया कि ऐ **ख़ालिद जब तक येह बाल तुम्हारे पास रहेंगे तुम हमेशा फ़त्ह़याब होते रहोगे।**

......रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मन्अ़ न फ़रमाना बल्कि उन की ताईद फ़रमाना इस बात पर दलालत करता है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात व आसार से तबर्रुक और मदद ह़ासिल करना न सिर्फ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नज़्दीक जाइज़ है बल्कि ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक भी जाइज़ है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अपने मूए मुबारका ख़ुद अ़त़ा फ़रमाए। चुनान्चे,

......ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़जाम को बुला कर अपने सरे अक़्दस के दाहिनी जानिब के बाल मुन्डवाए और सय्यिदुना अबू त़लह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वोह बाल अ़त़ा फ़रमा दिये, फिर बाईं जानिब के बालों

www.dawateislami.net

को मुन्डवाया और वोह सब बाल भी सय्यिदुना अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमाए नीज़ उन्हें येह हुक्म फ़रमाया कि इन बालों को लोगों में तक़्सीम फ़रमा दें।(1)

......सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब बित़रीक़ निस्तूर के साथ लड़ाई कर रहे थे तो आप की मुबारक टोपी गिर गई और आप उस की तलाश में लग गए, इस पर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आप से सबब पूछा और आप ने मज़्कूरए बाला सारी बात बयान की लेकिन आप के बयान पर किसी ने भी इन्कार न किया मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसूओं से तबर्रुक और मदद ह़ासिल करना जाइज़ है।

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक गेसूओं से यूं इस्तिआ़नत त़लब करते हैं :

हम सियह कारों पे या रब तपिशे मह़शर में
सायाए अफ़्गान हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू
सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए
छाए रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अबुल जईद पर ज़ुल्मो सितम और रूमियों से बदला

जंगे यरमूक के तेरहवें दिन सुब्ह़ के वक़्त अबुल जईद नामी एक रूमी रईस सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिलने के लिये आया और उस ने कहा कि रूमियों का लश्कर इतना बड़ा है कि अगर आप कई दिनों तक उन्हें क़त्ल करते रहें तो भी उसे ख़त्म न कर पाएंगे, हां अगर आप मेरे मन्सूबे पर अ़मल करें तो मैं एक साथ हज़ारों रूमियों को क़त्ल करवा सकता हूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से वज्ह पूछी तो उस ने अपने साथ होने वाली रूमी सरदारों की ज़ुल्मो ज़ियादती की एक त़वील दास्तान सुनाई और कहने लगा कि अब मैं अपने साथ होने वाले ज़ुल्मो सितम का बदला लेना चाहता हूं। बा'दे अज़ां उस ने बिग़ैर जिज़्यए अमान की शराइत़ पर अपना पूरा मन्सूबा बयान किया। इस मन्सूबे की तफ़्सील कुछ इस त़रह़ थी कि रूमी लश्कर के दो केम्प थे, अबुल जईद दूसरे केम्प में था। मन्सूबे का पहला ह़िस्सा येह था कि आज रात पूरे इस्लामी लश्कर के केम्प में आधी रात के बा'द

1......مسلم، کتاب الحج، باب بیان ان السنۃ۔۔۔الخ، ص ۶۷۸، حدیث: ۳۲۵۔

www.dawateislami.net

मश्अ़लें रौशन की जाएं जिस से रूमियों को येह तअस्सुर मिलेगा कि इस्लामी लश्कर वाले शिकस्त खा कर भाग रहे हैं। जब कि पांच सौ मुजाहिदीन रास्ते में छुप जाएंगे। दूसरा हिस्सा येह था कि अबुल जईद अपने केम्प में जा कर येह तअस्सुर दे कि आज रात इस्लामी लश्कर भाग जाएगा और येह भी तवक़्क़ोअ़ है कि इस्लामी लश्कर रूमियों पर ह़म्ला करेगा, फिर जिस वक़्त इस्लामी लश्कर के केम्प में मश्अ़लें रौशन हों तो रास्ते में छुपे हुवे पांच सौ मुजाहिदीन रूमी केम्प पर ह़म्ला कर दें, थोड़ी देर के बा'द वोह हज़ीमत उठा कर भाग खड़े हों। रूमी लश्कर को चूंकि पहले से मा'लूम होगा इस लिये वोह मुजाहिदीन का तआ़क़ुब करेंगे, मुजाहिदीन आगे निकल कर छुप जाएंगे और रूमी लश्कर मुसलसल भागता जाएगा, इस्लामी लश्कर में मश्अ़लें रौशन होने, मुजाहिदीन का तआ़क़ुब करने और इस्लामी लश्कर को लूटने के ज़ो'म में रूमियों के ज़ेह्न से निकल जाएगा कि इसी रास्ते में एक गहरी और तेज़ पानी वाली नदी भी है, इस बे ख़याली में हज़ारों रूमी नदी में गिर कर हलाक हो जाएंगे।

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से जान लिया कि अबुल जईद सह़ीह़ कह रहा है और येह धोका नहीं देगा, चुनान्चे, उस के मन्सूबे पर बि ऐ़निही अ़मल किया गया, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पांच सौ मुजाहिदीन के साथ रास्ते में छुप गए, इस्लामी लश्कर में मश्अ़ले रौशन की गईं, अबुल जईद ने रूमियों को दोनों बातें बता कर लड़ने की पुरज़ोर तरग़ीब दिलाई, मुजाहिदीन रूमी केम्प पर ह़म्ला कर के भाग खड़े हुवे, रूमी उन का पीछा करने लगे, रास्ते में मुजाहिदीन छुप गए लेकिन रूमी ब दस्तूर आगे घोड़े दौड़ाते रहे, रात के अन्धेरे में याक़ूसा नदी में रूमियों की पहली सफ़ गिरी, फिर उस के बा'द दूसरी सफ़ गिरी तो उस ने पहले वालों को रौंद डाला, इसी त़रह़ बा'द में आने वाले अपने से पहले वालों को मार देते, यूं अबुल जईद की जंगी तदबीर से हज़ारों रूमी एक साथ वासिले जहन्नम हो गए।[1]

रूमी बित़रीक़ की मुक़ाबले के लिये त़लबी

जंगे यरमूक के चौदहवें दिन माहान की रही सही हिम्मत भी टूट गई, उस ने खुद मैदाने जंग में जाने का इरादा किया लेकिन फिर उस ने एक रूमी सरदार जरजीर को भेजा जिस के मुक़ाबले पर खुद सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और उसे वासिले जहन्नम किया। इस सरदार के क़त्ल होने के बा'द माहान ने खुद मैदाने जंग में उतरने का इरादा किया लेकिन एक भारी

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۲۱۱-۲۱۲ بتصرف

www.dawateislami.net

डील डोल वाला बित़रीक़ जो जरजीर सरदार का रिश्तेदार था मैदाने जंग में जाने पर मुसिर हुवा। जैसे ही वोह बित़रीक़ मैदाने जंग में आया निहायत ही बद तमीज़ी के साथ अपने मुक़ाबले के लिये किसी मुजाहिद को त़लब करने लगा।

उस के मुक़ाबले के लिये अव्वलन सय्यिदुना ज़िरार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मैदाने जंग में गए और फिर अपना जंगी लिबास उतारने के लिये वापस आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक नख़्ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस बित़रीक़ से मुक़ाबले के लिये मैदाने जंग में चले गए। वोह बित़रीक़ अपनी जसामत और त़ाक़त के घमन्ड में बार बार मद्दे मुक़ाबिल को त़लब कर रहा था, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक नख़्ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब मैदाने जंग में उस के क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िरार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि आप ने पुकार कर फ़रमाया : **تَقَدَّمْ يَا عَدُوَّ اللّٰهِ يَا عَابِدَ الصَّلِيْبِ اِلَى الرَّجُلِ النَّجِيْبِ نَاصِرِ مُحَمَّدِ نِ الْحَبِيْبِ** "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन, ऐ सलीब के पुजारी, अब ऐसे शख़्स से मुक़ाबले के लिये निकल जिस के मददगार हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" जैसे ही उस रूमी बित़रीक़ ने येह सुना तो उस पर लर्ज़ा और ख़ौफ़ त़ारी हो गया एक क़दम भी आगे न बढ़ सका, बिल आख़िर वासिले जहन्नम हो गया।(1)

सय्यिदुना मालिक नख़्ई का मुबारक अ़क़ीदा

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक नख़्ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कितने वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में फ़रमा रहे हैं कि उन के मददगार हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, नीज़ हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना नासिरो मददगार कहना तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मुबारक अ़क़ीदा है क्यूंकि जब आप ने येह मुबारक कलाम फ़रमाया उस को सय्यिदुना ज़िरार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुन रहे थे और इस्लामी लश्कर में मौजूद थे यक़ीनन वहां मौजूद तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने भी इस को सुना था, अगर उन का येह अ़क़ीदा न होता तो वोह ज़रूर सय्यिदुना मालिक नख़्ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को रोकते और इस से मन्अ़ करते। येह भी मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस त़रह़ अपनी ह़याते त़य्यिबा में ह़ामी व मददगार थे वैसे ही अपने विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी उन के ह़ामी व मददगार थे।

उन के सिवा रज़ा कोई ह़ामी नहीं जहां
गुज़रा करें पिसर पे पिदर को ख़बर न हो

---

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج ١، ص ٢١٣ - ٢١٤ ملخصاً

इस्लामी लश्कर की अज़ीमुश्शान फ़त्ह

जब माहान ने अपने अहम सरदारों को क़त्ल होते देखा तो ख़ुद ही मैदाने जंग में आया, सय्यिदुना मालिक नख़्ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस के कन्धे पर ऐसा वार किया जिस ने उस के आहिनी लिबास को फाड़ डाला, उस के ज़ख़्म से ख़ून बहने लगा, अगर्चे ज़ख़्म इतना गहरा नहीं था लेकिन माहान की सारी बहादुरी पानी हो गई, वोह भाग कर दोबारा रूमी लश्कर में वापस आ गया और उस के पूरे बदन पर कपकपी त़ारी थी, आंखें फाड़ फाड़ कर आस्मान की त़रफ़ बार बार देखता था, उस की येह ह़ालत देख कर तमाम रूमियों के दिल उचाट हो गए, दिल उलट पलट होने लगे। उस की कैफ़िय्यत को देख कर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मश्वरे से सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लामी लश्कर को रूमी लश्कर पर ह़म्ला करने का हुक्म दिया। रूमी पहले ही डरे हुवे थे मुजाहिदीन की तल्वारों के सामने थोड़ी देर भी न ठहर सके, सारे भाग खड़े हुवे। एक कसीर ता'दाद में रूमी याक़ूसा नदी में गिर कर हलाक हो गए, हज़ारों रूमी पहाड़ों पर चले गए, मुजाहिदीन ने उन का तआक़ुब किया और जो भी हाथ लगा उसे जहन्नम वासिल कर दिया। बक़िय्या जो बचे उन सब ने "अमान अमान" पुकारना शुरूअ़ कर दिया। बहर ह़ाल जंगे यरमूक के चौदहवें दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ो नुस्रत अ़त़ा फ़रमाई, इस जंग में चार हज़ार मुजाहिदीन शहीद हुवे जब कि रूमी मक़्तूलों की ता'दाद लाखों से तजावुज़ कर गई। रूमी लश्कर के सिपह सालार माहान अर्मनी का सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दिमश्क़ तक पीछा किया और बिल आख़िर उसे भी जहन्नम वासिल कर दिया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रूमी भगोड़ों का पीछा करते गए रास्ते में जो भी मिलता उसे जहन्नम वासिल करते, यूं आप ह़िम्स तक पहुंच गए। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी वहीं पहुंच गए, फिर इस्लामी लश्कर को ले कर दिमश्क़ चले गए। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जंग और माले ग़नीमत की तमाम तफ़्सीलात वग़ैरा लिख कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास भेज दीं। फिर अमीरुल मोमिनीन के हुक्म से मुजाहिदीन में माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमाया, इस जंग में जो माले ग़नीमत हाथ आया उस की कसरत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि हर सुवार के ह़िस्से में चौदह हज़ार मिस्क़ाल सोना और हर पैदल सिपाही के ह़िस्से में आठ हज़ार मिस्क़ाल सोना आया।(1)

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۲۱۷۔

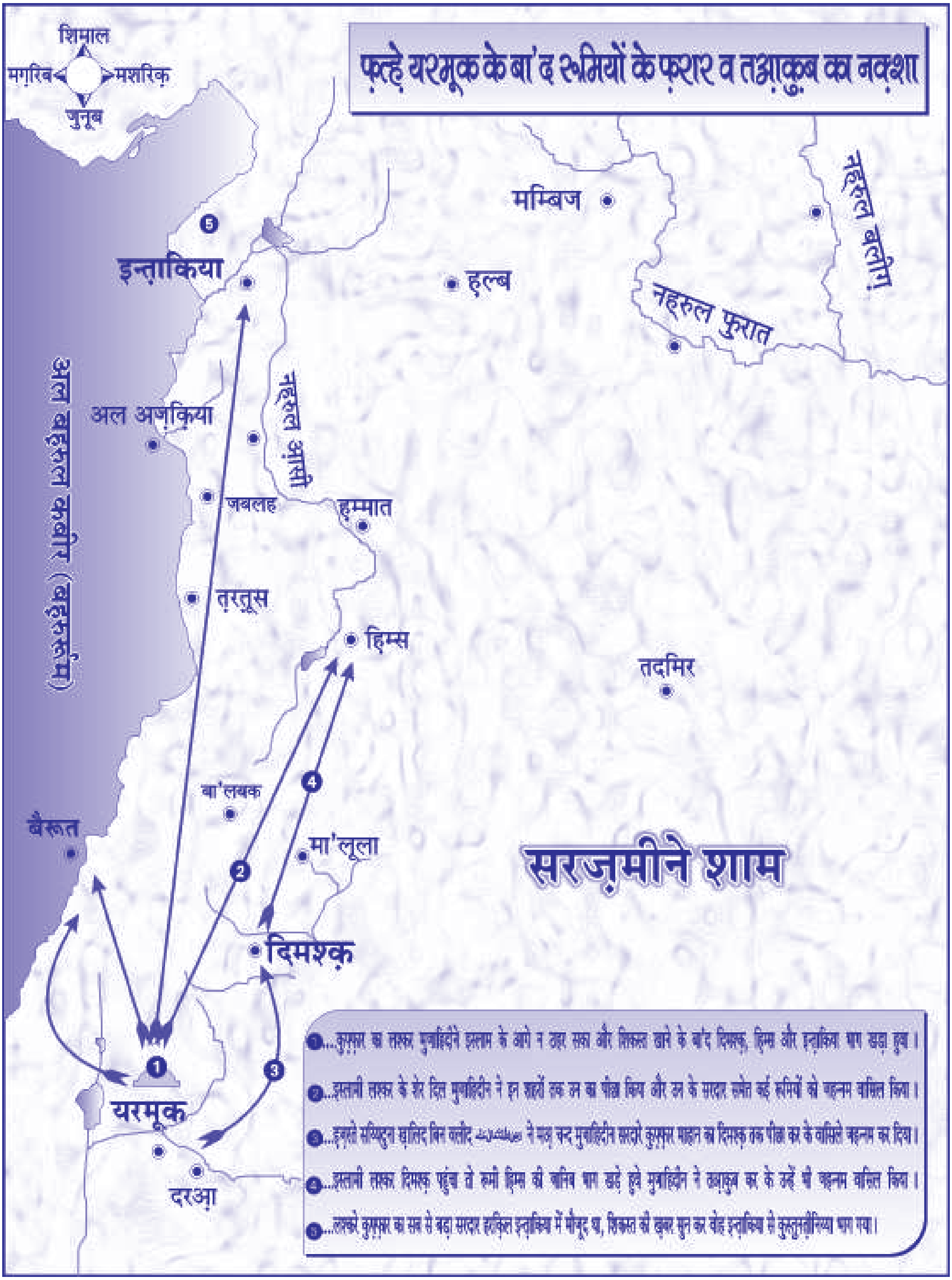

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ का मुबारक मक्तूब

इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंग की तफ़्सीलात से मुतअ़ल्लिक़ जो मक्तूब रवाना किया उस में हर त़रह़ की तफ़्सील लिखी, जो पिछले सफ़ह़ात में गुज़र चुकी है। अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मक्तूब में शामिल ख़ुत़बा पेशे ख़िदमत है जो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक अ़क़ीदे पर मुश्तमिल है :

اَمَّابَعْدُ فَاِنَّااَحْمَدُ اللهَ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَ اَشْكُرُهُ عَلٰى مَا اَوْلَانَا مِنَ النِّعَمِ وَخَصَّنَا بِهٖ مِنْ كَرَمِهٖ بِبَرَكَاتِ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَ شَفِيْعِ الْاُمَّةِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّم

''या'नी ह़म्दो सलात के बा'द मैं कहता हूं कि तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं उस का इस बात पर शुक्र अदा करता हूं कि उस ने हमें अपनी ने'मतों में से एक बेहतरीन ने'मत (या'नी फ़त्हे यरमूक) अ़त़ा फ़रमाई और हमें इस फ़त्ह़ के साथ अपने फ़ज़्लो करम, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकात के तुफ़ैल ख़ास फ़रमाया।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल व रसूलुल्लाह की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस त़रह़ अपने दुआइय्या ख़ुत़बे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मुत्तसिल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत को ज़िक्र कर रहे हैं। मा'लूम हुवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम के साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत को ज़िक्र करना बिल्कुल जाइज़ अम्र है, नीज़ येह मक्तूब सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा तो उन्हों ने भी इसे पढ़ा मगर उन मुबारक अल्फ़ाज़ों पर कोई कलाम न किया जिस से ज़ाहिर होता है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम के साथ साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत और इनायत को भी ज़िक्र किया करते थे।

रसूलुल्लाह की फ़ारूक़े आ'ज़म को फ़त्हे यरमूक की बिशारत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे यरमूक के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी लश्कर के लिये बहुत ज़ियादा फ़िक्रमन्द थे, क्यूंकि आप को मा'लूम था कि इस्लामी

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج ١، ص ٢١٧-

www.dawateislami.net

लश्कर की ता'दाद रूमियों के मुक़ाबले में निहायत ही क़लील है। जिस दिन इस्लामी लश्कर को फ़त्हे अ़ज़ीम हासिल हुई उस रात सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मुबारक ख़्वाब देखा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और साथ ही हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रौज़ए मुबारका में तशरीफ़ फ़रमा हैं। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों को सलाम करने के बा'द अ़र्ज़ किया :

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ قَلْبِيْ مَشْغُوْلٌ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ وَمَا يَصْنَعُ اللّٰهُ بِهِمْ وَقَدْ بَلَغَنِيْ اَنَّ الرُّوْمَ فِيْ اَلْفِ اَلْفٍ وَّسِتِّيْنَ اَلْفاً

"या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा दिल इस्लामी लश्कर के बारे में बड़ा मुतफ़क्किर है कि पता नहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया है क्यूंकि मुझे मा'लूम हुवा है कि उन के मुक़ाबले में रूमी लश्कर की ता'दाद दस लाख साठ हज़ार है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : يَاعُمَرُ اَبْشِرْ فَقَدْ فَتَحَ اللّٰهُ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ وَقَدِ انْهَزَمَ عَدُوُّهُمْ وَقُتِلَ كَذَا وَكَذَا "या'नी ऐ उ़मर ! तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जंगे यरमूक में मुसलमानों को फ़त्ह अ़ता फ़रमा दी है और उन के दुश्मनों ने शिकस्त खाई है और उन्हें इस इस त़रह़ क़त्ल कर दिया गया है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

﴿تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۸۳﴾﴾ (پ۲۰، القصص: ۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद, और आ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।"

दूसरे दिन नमाज़े फ़ज्र पढ़ाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना मुबारक ख़्वाब तमाम लोगों के सामने बयान किया तो सब लोग ख़ुश हो गए और एक दूसरे को फ़त्ह की मुबारक बाद देने लगे क्यूंकि वोह जानते थे कि सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक ख़्वाब बिल्कुल ह़क़ है क्यूंकि शैत़ान रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरत में नहीं आ सकता। तमाम लोग क़ासिद का इन्तिज़ार करने लगे कि कब वोह फ़त्ह की ख़ुश ख़बरी लाता है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ग़ैब का इ़ल्म रखते हैं, न सिर्फ़ इ़ल्म बल्कि अपने उम्मतियों के ख़्वाब में आ कर उन को बिशारतें भी अ़ता फ़रमाते हैं। नीज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब फ़त्ह़ की बिशारत दे दी है तो ज़रूर फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी आएगी, येही वज्ह थी कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी का इन्तिज़ार करने लगे।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9)......जंगे बैतुल मुक़द्दस

फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस व रसूलुल्लाह की ग़ैबी ख़बर

इस्लामी लश्कर के सिपह सालार सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़त्ह़े यरमूक के बा'द इस्लामी लश्कर के साथ दिमश्क़ आ चुके थे। आप ने अस्ह़ाब से मश्वरा किया कि क़ैसारिया रवाना हों या बैतुल मुक़द्दस। फिर सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे पर अ़मल करते हुवे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक मक्तूब रवाना किया कि दोनों शहरों में से किस शहर का इन्तिख़ाब किया जाए ? सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा किया तो मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप इस्लामी लश्कर को बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी का हुक्म दें, वोह पहले बैतुल मुक़द्दस को फ़त्ह़ करें, फिर क़ैसारिया की त़रफ़ जाएं क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले मुझे बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ और बा'द में क़ैसारिया की फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी दी थी।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन ! आप ने सच कहा।" फिर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ पहले बैतुल मुक़द्दस और फिर क़ैसारिया रवानगी का हुक्म लिख कर रवाना फ़रमा दिया।(2)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म व मौला अ़ली का मुबारक अ़क़ीदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) का कैसा पुख़्ता अ़क़ीदा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाया है और आप जमीअ़ मुग़ीबात पर मुत्त़लअ़ हैं और आप को येह मा'लूम था कि पहले बैतुल मुक़द्दस और फिर क़ैसारिया फ़त्ह़ होगा नीज़ इस बात की ख़बर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दी। येह भी मा'लूम हुवा कि

1 ......فتوح الشام، الشعار، ج ۱، ص ۲۱۷۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۱۹۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरह ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब का ऐसा पुख़्ता अ़क़ीदा था कि येह बात सुनते ही फ़ौरन इस के मुत़ाबिक़ इस्लामी लश्कर को हुक्म नामा रवाना फ़रमा दिया कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है तो बिल्कुल वैसा ही होगा।

जंगे बैतुल मुक़द्दस का इजमाली ख़ाका

......सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जैसे ही अमीरुल मोमिनीन का मक्तूब मिला आप ने रोज़ाना पांच पांच हज़ार मुजाहिदीन का लश्कर बैतुल मुक़द्दस रवाना करना शुरूअ़ कर दिया। बैतुल मुक़द्दस का क़ल्आ़ निहायत ही मज़बूत़ था, रूमियों ने यरमूक का ह़ाल सुन कर पूरी पूरी तय्यारी कर रखी थी, इस्लामी लश्कर ने जाते ही क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया, फिर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से रोज़ाना क़ल्ए़ पर ह़म्ला करते, ग्यारह दिन तक ह़म्ले करते रहे लेकिन कोई ख़ास पेश रफ़्त न हुई।

......ग्यारहवें दिन ख़ुद सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तशरीफ़ लाए, मुजाहिदीन ने तक्बीरो तहलील की सदाएं बुलन्द कीं। रूमियों को भी मा'लूम हो गया कि इस्लामी लश्कर का बड़ा सरदार आ गया है, वोह सब परेशान हो कर अपने सब से बड़े राहिब क़ुमामा के पास गए और सारी सूरते ह़ाल बयान की। जब उसे मा'लूम हुवा कि मुसलमानों का सरदार आ गया है तो वोह बहुत परेशान हुवा और कहने लगा कि ''अब तुम्हारी हलाकत नज़्दीक है, क्यूंकि मैं ने पिछली किताबों में पढ़ा है कि मुल्के शाम को मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का एक सुर्ख़ रंग का सह़ाबी फ़त्ह़ करेगा अगर येह वोही सरदार है तो सुल्ह़ के इलावा कोई दूसरी सूरत नहीं।''(1)

नसरानी राहिब का सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को देखना

फिर वोह इस्लामी लश्कर के सिपह सालार को देखने के लिये क़ल्ए़ की दीवार पर आया और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गए और उस से भी वोही बात की, कि या तो तुम इस्लाम क़बूल कर लो, या जिज़्या दे कर अमान ह़ासिल कर लो या फिर हम से जंग करो। लेकिन उस राहिब क़ुमामा ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बात का कोई जवाब न दिया और फ़क़त़ ख़ामोशी से आप को देखता रहा, फिर वापस चला गया। उस ने अपनी क़ौम

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۳۔

1....इस्लामी लश्कर ने दिमश्क़ का चारों त़रफ़ से मुहासरा किया, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ उर्दन से दिमश्क़ तशरीफ़ लाए।

2....इस रास्ते से हरक़िल बादशाह की त़रफ़ से रूमी कुफ़्फ़ार का एक बड़ा लश्कर दिमश्क़ की ह़िफ़ाज़त के लिये पहुंचा।

3....इस्लामी लश्कर ने रूमी लश्कर का ऐसा इस्तिक़्बाल किया कि वोह इसी सह़राई रास्ते से ह़िम्स की जानिब भाग खड़ा हुवा।

4....येह वोह रास्ता है जिस पर सय्यिदुना अस्वद किन्दी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस्लामी लश्कर के साथ मफ़रूर रूमी लश्कर का पीछा किया।

5....येह वोह जगह है जहां ज़ुल किलाअ़ ह़िमयरी अपनी त़ाक़तो क़ुव्वत के साथ इस्लामी लश्कर की मदद के लिये मौजूद थे।

6....येह वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ की क़ियाम गाह थी।

www.dawateislami.net

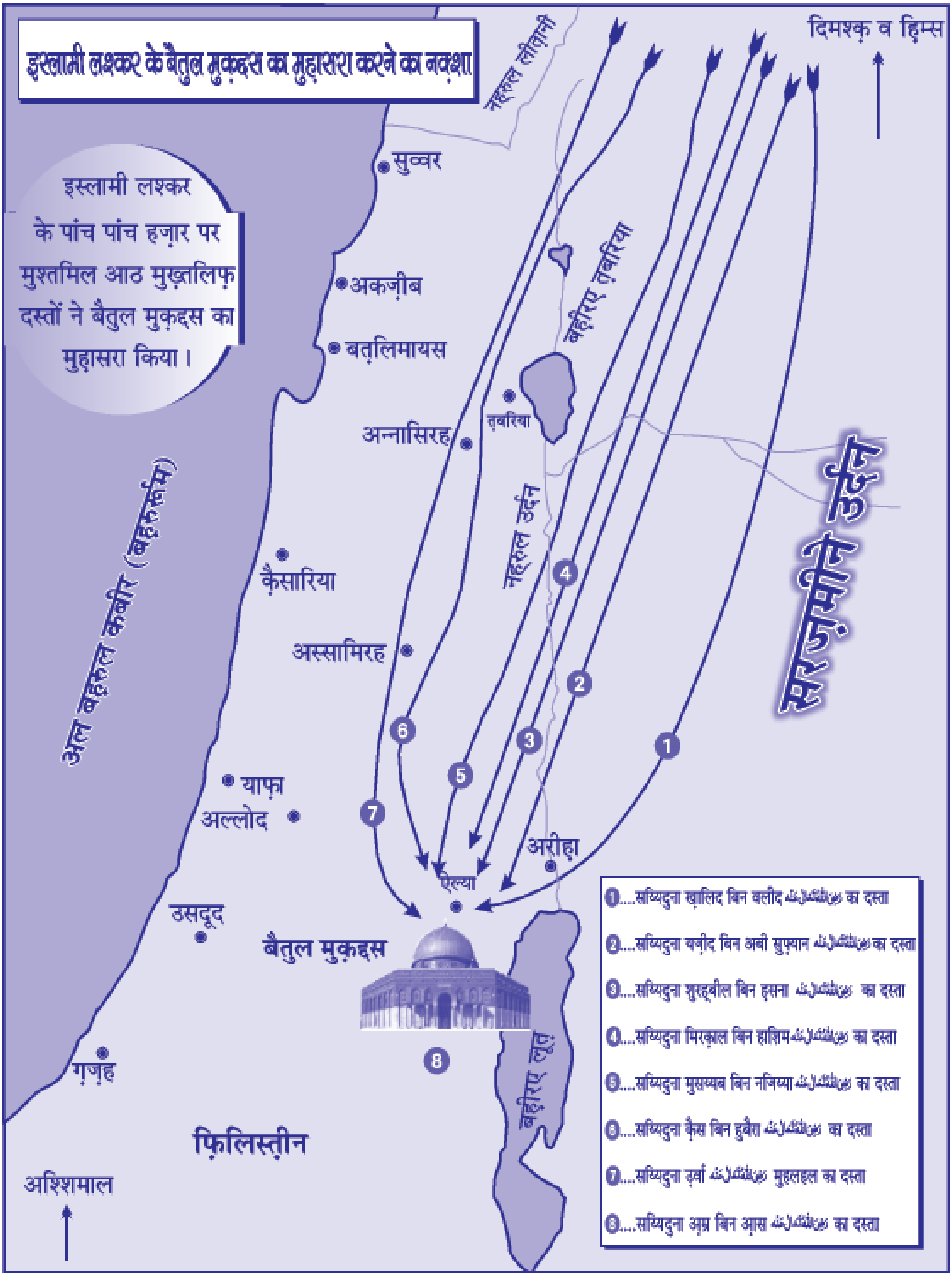

www.dawateislami.net

से कहा कि येह वोह शख़्स नहीं है जिस के बारे में मैं ने कुतुब में पढ़ा है लिहाज़ा तुम उन से जंग करते रहो येह तुम्हारा बाल भी बीका नहीं कर सकते । सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी वहां से वापस आ कर इस्लामी लश्कर को जंग का हुक्म दे दिया । रोज़ाना इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ पर ह़म्ला करता, रूमी तीरों की बरसात करते, दोनों त़रफ़ से जानी नुक़्सान भी होता और सिपाही ज़ख़्मी भी होते । यूं येह लड़ाई चार माह तक जारी रही और अह्ले शहर तंग आ गए । वोह दोबारा बित़रीक़ क़ुमामा के पास गए और सारी सूरते ह़ाल बयान की ।(1)

नसरानी राहिब और फ़ारूक़े आ'ज़म का ज़िक्रे ख़ैर

नसरानी राहिब एक बार दोबारा क़ल्ए़ की दीवार पर आया और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहने लगा कि येह एक मुक़द्दस शहर है, इस शहर के साथ बुराई का इरादा करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब नाज़िल होता है । लिहाज़ा तुम लोग वापस चले जाओ । सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''हमें मा'लूम है कि येह मुक़द्दस शहर है और इसी शहर से हमारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मे'राज पे तशरीफ़ ले गए और अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया, येह शहर मा'दिने अम्बिया (अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की जाए पैदाइश) है, लिहाज़ा तुम से ज़ियादा हम इस शहर के ह़क़दार हैं, तुम्हारे पास तीन ही सूरतें हैं : पहली सूरत येह है कि इस्लाम क़बूल कर लो ।'' बित़रीक़ क़ुमामा ने कहा : ''हम हरगिज़ इस्लाम क़बूल न करेंगे ।'' फ़रमाया : ''फिर जिज़्या दे कर अमान ह़ासिल कर लो ।'' उस ने कहा : ''येह बात तो पहले वाली से भी मुश्किल है ।'' फ़रमाया : ''फिर जंग के लिये तय्यार हो जाओ ।'' उस ने कहा : ''हम हर ह़ाल में तुम से जंग करेंगे । अलबत्ता हमारे शहर को सिर्फ़ एक ही शख़्स फ़त्ह़ करेगा जिस के औसाफ़ हमारी किताबों में लिखे हुवे हैं और वोह तुम नहीं हो ।''

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''तुम्हारी किताबों में उस के क्या औसाफ़ लिखे हुवे हैं ?'' उस ने कहा : ''वोह हम तुम्हें नहीं बताएंगे अलबत्ता उसे देख कर फ़ौरन पहचान लेंगे कि येह वोही शख़्स है और हां ! अगर तुम उस का नाम जानना चाहते हो तो हम उस का नाम बता सकते हैं ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ठीक है तुम उस का नाम ही बता दो ।'' उस नसरानी राहिब ने कहा : ''जो शख़्स हमारे इस शहर को फ़त्ह़ करेगा वोह **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का सह़ाबी होगा और उस का नाम **''उ़मर बिन ख़त़्त़ाब''** है जो फ़ारूक़ के लक़ब से मशहूर होगा और

(1) ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۳۔

www.dawateislami.net

वोह निहायत सख़्त गीर होगा, अल्लाह के कामों में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करेगा।"(1)

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही येह सुना तो मुस्कुरा दिये और ख़ुश हो कर फ़रमाया : فَتَحْنَا الْبَلَدَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ "या'नी रब्बे का'बा की क़सम ! हम ने इस शहर को फ़त्ह़ कर लिया।" फिर आप उस राहिब की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया : "क्या तुम वाक़ेई उस शख़्स को पहचान लोगे ?" उस ने कहा : "जी हां बिल्कुल ! क्यूं नहीं पहचानूंगा, मैं उस की तमाम सिफ़ात जानता हूं।" आप ने फ़रमाया : "तुम जिन का ज़िक्रे ख़ैर कर रहे हो वोह हमारे ख़लीफ़ा हैं, हमारे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जलीलुल क़द्र सह़ाबी हैं।" राहिब ने कहा : "अगर वाक़ेई ऐसी बात है तो तुम जंग मौक़ूफ़ कर दो और उन्हें यहां बुलाओ, हम उन को देखेंगे, अगर उन में तमाम सिफ़ात वोही हुईं जो हमारे इ़ल्म में हैं तो हम उन के लिये शहर के दरवाज़े बिग़ैर जंग के ही खोल देंगे और उन को जिज़्या भी अदा करेंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह बात मन्ज़ूर फ़रमा ली।

नसरानी राहिब से गुफ़्तगू करने के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और तमाम मुजाहिदीन को जंगबन्दी का हुक्म दिया, नीज़ तमाम सरदारों और बड़े बड़े जर्नलों को बुला कर नसरानी राहिब से होने वाली गुफ़्तगू की तफ़्सीलात से आगाह किया जिसे सुन कर तमाम मुजाहिदीन ख़ुश हो गए। फिर एक मक्तूब में तमाम तफ़्सीलात लिख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ भेज दिया।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म की बैतुल मुक़द्दस में तशरीफ़ आवरी

जब ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो रात का वक़्त था और कोई भी ऐसा शख़्स न था जिस के हां आप ठहरते लिहाज़ा आप ने सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ार पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर सलातो सलाम पेश किया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ार पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुवे और वहां भी सलाम पेश किया। मस्जिदे नबवी में आए और एक जगह सो गए। चूंकि काफ़ी दिन से सोए न थे इस लिये फ़ौरन नींद आ गई और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۵۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۵۔

www.dawateislami.net

की अज़ान की आवाज़ पर आप की आंख खुली। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अज़ान दे कर मस्जिद में दाख़िल हुवे और यूं सदाए मदीना लगाने लगे : اَلصَّلٰوۃُ رَحِمَکُمُ اللّٰہ "या'नी नमाज़ का वक़्त हो चुका है (ऐ सोने वालो जाग जाओ) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए। सय्यिदुना मैसरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे, वुज़ू किया और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा में नमाज़े फ़ज्र अदा की। नमाज़ के बा'द बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे और सलाम अ़र्ज़ किया : फ़रमाया : "ख़ुश ख़बरी लाए हो ?" अ़र्ज़ किया : "रब्बे का'बा की क़सम ! ख़ुश ख़बरी है।" फिर वोह मक्तूब बारगाहे फ़ारूक़ी में पेश कर दिया। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्तूब पढ़ कर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा त़लब किया तो सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरी राए येह है कि आप का जल्द अज़ जल्द तशरीफ़ ले जाना ही ज़ियादा बेहतर है क्यूंकि रूमियों ने आप के तशरीफ़ ले जाने की दरख़्वास्त की है और उन की येह दरख़्वास्त दर अस्ल उन की ज़िल्लत का ए'तिराफ़ और इस्लाम की ह़क़्क़ानियत का इक़रार है। दूसरा येह कि लश्कर के मुजाहिदीन अ़र्सए दराज़ से लड़ाई और सख़्त सर्दी की मशक़्क़त बरदाश्त कर रहे हैं, आप के जाने से अगर बिग़ैर जंग के बैतुल मुक़द्दस फ़त्ह़ हो जाए तो इस्लामी लश्कर के लिये येह बात निहायत फ़रह़त व मसर्रत का बाइ़स होगी। ब सूरते दीगर तमाम रूमी बैतुल मुक़द्दस की ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से जम्अ़ हो कर मुजाहिदीन को परेशान कर देंगे।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) के इस मश्वरे को पसन्द फ़रमाया और मुल्के शाम के सफ़र की तय्यारी शुरूअ़ फ़रमा दी।(1)

फ़ारूके़ आ'ज़म का मुबारक सफ़र

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बैतुल मुक़द्दस जाने का फ़ैसला सुन कर पूरे मदीनए मुनव्वरा में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। आप ने अपने सफ़र का आग़ाज़ फ़रमाते हुवे सब से पहले मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आ कर चार रक्अ़त नमाज़ अदा की। हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी दी और सलातो सलाम पेश किया, नीज़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़ार पर भी ह़ाज़िरी दी और वहां भी सलाम पेश किया। आप ने अपने बा'द सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को अपना नाइब मुक़र्रर फ़रमाया और मदीनए मुनव्वरा से चन्द अस्ह़ाब के साथ रवाना हुवे, तमाम

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۷۔

www.dawateislami.net

अह्ले मदीना आप के साथ ही बाहर आए, सब से सलाम व मुसाफ़हा किया और मदीनए मुनव्वरा से बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवाना हुवे, तमाम लोगों ने आप को अलविदाअ़ किया।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की सुवारी और ज़ादे सफ़र

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुवारी आप का ज़ाती सुर्ख़ ऊंट, ज़ादे सफ़र निहायत ही मुख़्तसर था जिस में दो थेलियां थीं एक मैं सत्तू और एक में छूहारे थे, पानी का एक मश्कीज़ा और खाने के लिये एक बड़ा प्याला था। आप के शरीके सफ़र वोह अस्ह़ाब भी थे जो जंगे यरमूक के बा'द मदीनए मुनव्वरा वापस आ गए थे उन में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्माए मुबारका सरे फ़ेहरिस्त हैं।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म के सफ़र की नौइय्यत

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सफ़र की येह नौइय्यत होती थी कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द मसाफ़त त़ै फ़रमाते, ज़ोहर की नमाज़ तक चलते रहते, ज़ोहर के बा'द किसी मक़ाम पर ठहर जाते और अस्ह़ाब को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़, कसरते इबादत, तज़किरए आख़िरत वग़ैरा पर मुश्तमिल पन्दो नसाएह़ से तज़कियए नफ़्स फ़रमाते। जब खाने का वक़्त आता तो अपना ज़ादे राह निकालते, सत्तू और खजूरें अपने बरतन में डालते और अपने हम सफ़र साथियों को खिलाते। जिन जिन रास्तों से गुज़रते वहां के लोग अपने मुक़द्दमात आप की बारगाह में पेश करते, आप क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में उन का फ़ैसला फ़रमाते। आप ने अपना सफ़र मुसलसल जारी रखा यहां तक कि मुल्के शाम की सरह़द में दाख़िल हो गए। आप ने अ़रबी शह सुवारों का एक क़ाफ़िला देखा, सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को पता लगाने भेजा तो मा'लूम हुवा कि वोह मुल्के शाम में मौजूद इस्लामी दस्ता अमीरुल मोमिनीन की तशरीफ़ आवरी की ख़बर लेने आया है। सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़ुश ख़बरी दी कि अमीरुल मोमिनीन मुल्के शाम की सरह़द में तशरीफ़ ला चुके हैं। फिर वोह क़ाफ़िला सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा हदयए सलाम पेश किया, मुसाफ़ह़ा और दस्तबोसी का शरफ़ ह़ासिल किया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "तुम लोग यहां किस लिये आए हो?" अ़र्ज़ किया: "ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप की तशरीफ़ आवरी के इन्तिज़ार में पूरा इस्लामी लश्कर अपनी आंखें बिछाए हुवे हैं और गर्दनें उठा

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۷۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۷۔

www.dawateislami.net

उठा कर मदीनए मुनव्वरा से आने वाले रास्ते पर नज़रें जमाए हुवे है, हर शख़्स आप के दीदार के लिये बेचैन है, लिहाज़ा इस्लामी लश्कर के सिपह सालार, अमीनुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की ख़बर मा'लूम करने भेजा है, अगर आप इजाज़त अ़ता फ़रमाएं तो हम वापस जा कर जैशे इस्लाम को आप की आमद का मुज़दा सुना दें। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इजाज़त अ़ता फ़रमा दी। उस क़ाफ़िले ने लश्करे इस्लाम में पहुंच कर सिपह सालार सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन की आमद की खुश ख़बरी दी, हर सिपाही येह चाहता था कि वोह अमीरुल मोमिनीन के इस्तिक़्बाल के लिये निकले लेकिन सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्अ़ फ़रमा दिया और ब ज़ाते खुद अमीरुल मोमिनीन के इस्तिक़्बाल के लिये रवाना हुवे।(1)

फ़ारूक़ी मदनी क़ाफ़िले का इस्तिक़्बाल

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ाफ़िला अमीरुल मोमिनीन के मदनी क़ाफ़िले से मिला, सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ऊंटनी पर सुवार हो कर आए थे, आप ने अपनी ऊंटनी बिठाई, नीचे उतरे, अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में हदयए सलाम पेश किया, मुसाफ़ह़ा किया और गले मिले, बक़िय्या अस्ह़ाब ने भी इसी त़रह़ मुलाक़ात की। फिर येह क़ाफ़िला इस्लामी लश्कर की त़रफ़ रवाना हुवा और बैतुल मुक़द्दस पहुंचा। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तमाम मुजाहिदीन ने निहायत ही शानदार इस्तिक़्बाल किया, तमाम मुजाहिदीन ने आप से मुलाक़ात व दस्तबोसी की, फिर आप ने निहायत ही फ़सीह़ो बलीग़ ख़ुत़बा दिया जिस में तमाम मुजाहिदीन को आ'माले सालेह़ा, तक़्वा व परहेज़गारी वग़ैरा इख़्तियार करने की नसीह़त व तम्बीह फ़रमाई। ख़ुत़बे से फ़ारिग़ होने के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम की जंगों को बित्तफ़्सील बयान किया, जिन्हें सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी रोते और कभी खुश होते, दोनों में गुफ़्तगू होती रही यहां तक कि ज़ोहर का वक़्त हो गया।(2)

अज़ाने बिलाली से इस्लामी लश्कर पर गिर्या त़ारी

सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े सादिक़, मुअज़्ज़िने रसूल सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी विसाले रसूलुल्लाह के बा'द मदीनए त़य्यिबा से मुल्के शाम चले आए, लश्करे इस्लाम में शामिल हो कर जिहाद में मसरूफ़ हो गए थे। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۲۸ـ ۲۲۹ـ

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۰ـ

www.dawateislami.net

ग़रीबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप ने अज़ान कहना छोड़ दी थी। अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई व फ़ुरक़त के रंजो ग़म में वोह ऐसे शिकस्ता हुवे थे कि अज़ान देते वक़्त उन्हें सख़्त ग़म और क़लक़ लाहिक़ हो जाता था, अपने मह़बूब की याद में इतना रोते कि अज़ान को मुकम्मल करना मुश्किल हो जाता।

जब नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हुवा तो तमाम मुजाहिदीन ने अमीरुल मोमिनीन से दर ख़्वास्त की, कि ह़ज़रते बिलाल यहां मौजूद हैं हम चाहते हैं कि सय्यिदुना बिलाल की अज़ान सुनें, ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका की याद ताज़ा हो जाए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सय्यिदुना बिलाल को बुलाया और मुजाहिदीन की ख़्वाहिश बयान की, सय्यिदुना बिलाल ने अज़ान देना बिल्कुल छोड़ दी थी, किसी के कहने पर भी अज़ान न देते थे लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का ग़ायत दरजा अदबो एह़तिराम करते थे, आप के हुक्म को न टाल सके और अज़ान देने पर राज़ी हो गए।

सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अज़ान शुरूअ़ की, बुलन्द आवाज़ से اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَر कहा, उन की आवाज़ में वोह दर्द था कि लश्करे इस्लाम पर लर्ज़ा त़ारी हो गया, मुजाहिदीन की आंखें अश्कबार हो गईं, मह़बूबे अकरम का ज़माना याद आ गया, आह उस वक़्त तो रसूलुल्लाह के दीदार से अपनी आंखों को ठन्डा कर लिया करते थे, लेकिन आज वोह दीदार कहां नसीब ! तमाम मुजाहिदीन शिद्दते ग़म से कांपने लगे, जब सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" पर पहुंचे तो पूरे लश्कर में एक कोहराम मच गया। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अपने मह़बूब आक़ा की याद में तड़पने लगे, आहो बुका का शोर बुलन्द हो गया, शिद्दते ग़म से मुजाहिदीन ऐसे तड़पते थे कि अभी उन के दिल फट जाएंगे, बा'ज़ पर तो बेहोशी त़ारी हो चुकी थी। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه पर भी गिर्या त़ारी था, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़ालत भी ना क़ाबिले बरदाश्त थी लगता था वोह अज़ान पूरी न कर पाएंगे, इस्लामी लश्कर पर ग़मो इज़्तिराब की वोह कैफ़िय्यत त़ारी थी कि रोने और चीख़ने के सिवा कुछ सुनाई न देता था, ऐसा लगता था कि हज़ारों जानें एक साथ निकल जाएंगी, किसी को भी अपने तन मन का होश न था। ब क़ौल :

याद में जिस की नहीं होश तनो जां हम को
फिर दिखा दे वोह रुख़, ऐ महरे फ़िरोज़ां हम को

www.dawateislami.net

बहर हाल सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़ान पूरी की, बहुत देर तक सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रोते रहे बिल आख़िर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब को तस्कीन अ़ता फ़रमाई और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूरे लश्कर को नमाज़ पढ़ाई। फिर क़ल्अ़ए बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ जाने का इरादा फ़रमाया।(1)

बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी व शाहाना लिबास

जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी का इरादा फ़रमाया तो बकरी के बालों से बना हुवा लिबास पहना, आप का जुब्बा टुकड़े टुकड़े सी कर बनाया हुवा था, इस जुब्बे में चौदह पैवन्द लगे थे जिस में से एक पैवन्द चमड़े का भी था। इस्लामी लश्कर के तमाम सरदारों से आप की बारगाह में मिन्नत समाजत की, कि ह़ज़रत आज आप अच्छे कपड़े ज़ेबे तन फ़रमा कर ऊंट के बजाए घोड़े पर सुवार हों, बहुत इसरार के बा'द आप राज़ी हो गए और मिस्र के आ'ला क़िस्म का सफ़ेद लिबास पहन कर घोड़े पर सुवार हो कर इस्लामी लश्कर से बैतुल मुक़द्दस के क़ल्ए़ की जानिब रवाना हुवे। आप चन्द क़दम ही चले थे कि आप के चेहरे पर घबराहट के आसार नुमूदार हुवे, आप को कोई सख़्त तक्लीफ़ लाहि़क़ हुई, आप के चेहरे का रंग तब्दील हो गया, सुवारी को रुक्वा दिया और फ़ौरन घोड़े से नीचे उतरे और फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमाए, क़रीब था कि मैं हलाक हो जाता क्यूंकि ऐसे पुर तकल्लुफ़ लिबास को पहन कर मेरे दिल में उ़ज्ब व तकब्बुर दाख़िल हो गया था, मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ فِيْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنَ الْكِبْرِ "या'नी जिस के दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा वोह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।" तुम्हारे आ'ला और सफ़ेद लिबास ने तो मुझे हलाकत में डाल दिया है, फिर आप ने वोह लिबास उतार दिया और अपना पुराना चौदह पैवन्द वाला लिबास ज़ेबे तन फ़रमा लिया।(2)

फ़त्हे बैतुल मुक़द्दस और शहर में दाख़िला

जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बैतुल मुक़द्दस क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो वहां मौजूद मुजाहिदीन ने तक्बीरो तहलील की सदाएं बुलन्द कीं, शोर सुन कर अहले बैतुल मुक़द्दस हैरान हुवे कि जंग तो मौक़ूफ़ है कहीं मुसलमानों ने फिर ह़म्ला तो नहीं कर दिया ! नसरानी

---

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۰۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۱۔

www.dawateislami.net

राहिब कु़मामा ने भी वोह आवाज़ें सुनीं और ख़ादिमीन को भेजा ताकि वोह मा'लूम करें कि क्या मुआ़मला है ? पता चला कि इस्लामी लश्कर के सब से बड़े सरदार, अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए हैं ।

नसरानी राहिब क़ल्ए़ की दीवार पर आया और इस्लामी लश्कर में पैग़ाम भेजा कि हम ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत और शनाख़्त करना चाहते हैं उन्हें क़ल्ए़ के क़रीब ले कर आओ । सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म ने बिग़ैर अस्लिहे़ के अकेले क़ल्ए़ के क़रीब जाने का इरादा किया लेकिन बा'द में सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ ले लिया । आप अपने ऊंट पर सुवार थे, हाथ में दुर्रा था, जब दीवार के क़रीब पहुंचे तो उस नसरानी राहिब ने आप को बग़ौर देखना शुरूअ़ कर दिया ।

थोड़ी देर बा'द नसरानी राहिब कु़मामा ने बुलन्द आवाज़ से शोर करते हुवे अपनी क़ौम को पुकार कर कहा : "ख़ुदा की क़सम ! येह वोही शख़्स हैं जिन की सिफ़ात हम ने अपनी किताबों में पढ़ी हैं और इन ही के हाथों पर हमारा शहर फ़त्ह़ होगा ।" फिर बित़रीक़ कु़मामा ने अपनी क़ौम को झिड़कते और डांटते हुवे कहा : "सख़्ती हो तुम पर, येह क्या ताख़ीर है ? क़ल्ए़ से जल्दी उतरो और उन के पास जाओ, उन से अमान और ज़िम्मेदारी ह़ासिल करो, ख़ुदा की क़सम ! येह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सह़ाबी हैं ।"

जब रूमियों ने कु़मामा का फ़रमान सुना तो वोह जल्दी जल्दी क़ल्ए़ की दीवार से उतरे और शहर के दरवाज़े खोल दिये, दौड़ते हुवे फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और सुल्ह़ व अमान की दरख़्वास्त करने लगे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुवे अपने ऊंट पर ही सजदए शुक्र अदा किया और पूरे शहर वालों के लिये अम्नो अमान व अ़ह्दो पैमान का ए'लान किया । दूसरे दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'द नमाज़े फ़ज्र अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ो नुस्रत के साथ बैतुल मुक़द्दस के क़ल्ए़ में दाख़िल हुवे ।[1]

सय्यिदुना का'ब अह़बार का क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुल्के शाम के सूबए फ़िलिस्त़ीन के देहात के सरदारों में से एक सरदार थे, जब आप को इत्तिलाअ़ मिली कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ लाए हुवे हैं तो आप भी बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे और

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۲۔

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दस्ते ह़क़ परस्त पर ईमान लाए। आप के ईमान लाने का सबब दर अस्ल आप के वालिद की वोह ता'लीमात थीं जो उन्हों ने कुतुबे साबिक़ा में पढ़ी थीं, और उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़ पर मुश्तमिल चन्द औराक़ लिख कर नसीह़त की थी कि इन्हें उस वक़्त खोलना जब तुम्हें येह ख़बर मिले कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुवे हैं। चुनान्चे, सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने अपने वालिद के विसाल के बा'द वोह औराक़ खोल कर पढ़े तो उन में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे शुमार सिफ़ात लिखी हुई थीं, फिर मुझे येह मा'लूम हुवा कि वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में तशरीफ़ ला चुके हैं, मैं उन के अह़वाल से बराबर बा ख़बर रहा, फिर मा'लूम हुवा कि वोह हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए हैं। लेकिन मैं अपनी मसरूफ़िय्यात के बाइ़स उन से मुलाक़ात न कर सका, फिर मा'लूम हुवा कि उन का विसाल हो चुका है और अब उन के बा'द उन के ख़लीफ़ा सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, मैं ने सोचा चलो उन से ही मुलाक़ात कर लूंगा, लेकिन उन का भी विसाल हो गया और मैं मुलाक़ात न कर सका। अभी मुझे येह मा'लूम हुवा कि उन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे हैं और वोह बैतुल मुक़द्दस आए हुवे हैं तो मैं ने सोचा आप की बारगाह में ही ह़ाज़िर हो जाता हूं, लिहाज़ा मैं बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हो गया।" फिर सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़े ह़मीदा के मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से चन्द सुवालात किये, जिन के तसल्ली बख़्श जवाबात पा कर कलिमए शहादत पढ़ा और दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म की मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी की दा'वत

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुल्के शाम के एक बा असर शख़्स थे, आप के क़बूले इस्लाम से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ह़ाज़िरी की दा'वत देते हुवे इरशाद फ़रमाया : هَلْ لَّكَ اَنْ تَسِيْرَ مَعِيَ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَنَزُوْرَ قَبْرَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَتَمَتَّعَ بِزِيَارَتِهٖ "या'नी क्या ही अच्छा हो कि आप मेरे साथ मदीनए मुनव्वरा चलें और हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۴۳ ملخصاً

के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत करें और आप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत से नफ़्अ़ हासिल करें। आप ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! मैं ऐसा ही करूंगा।"(1)

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के मुबारक अ़क़ाइद

......**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फ़क़त़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की दा'वत दे रहे हैं। मत़लब येह हुवा कि सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बैतुल मुक़द्दस से मदीनए मुनव्वरा का एक त़वील और लम्बा सफ़र फ़क़त़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये ही करें।

......मा'लूम हुवा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मुबारक अ़क़ीदा था कि फ़क़त़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये एक त़वील और बा मशक़्क़त सफ़र करना बिल्कुल जाइज़ है।

......येह मुबारक अ़क़ीदा फ़क़त़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही का न था बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का था क्यूंकि उस वक़्त बारगाहे फ़ारूक़ी में बड़े बड़े जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे और वोह सब येह मुलाह़ज़ा कर रहे थे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को फ़क़त़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की दा'वत दे रहे हैं और किसी ने भी इस पर ए'तिराज़ वग़ैरा न किया।

......मा'लूम हुवा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह भी मुबारक अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत करने से कसीर फ़ाइदे हासिल होते हैं, जभी तो आप ने सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इस बात की तरग़ीब दिलाई और फ़वाइद का ज़िक्र किया।

......तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मुबारक अ़क़ीदे से मुत्तफ़िक़ थे इसी वज्ह से किसी ने भी इस पर ए'तिराज़ न किया, अगर वोह मुत्तफ़िक़ न होते तो यक़ीनन इस से इख़्तिलाफ़ करते।

......ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी कैसे पुख़्ता अ़क़ीदे वाले थे कि जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की दा'वत दी तो आप ने किसी क़िस्म का कोई सुवाल न किया और फ़ौरन राज़ी हो गए।

---

1 ....فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ بیت المقدس، ج ۱، ص ۲۳۵۔

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल मुक़द्दस में पांच दिन तक क़ियाम किया, अह्ले बैतुल मुक़द्दस को सुल्ह़ और अम्न का अ़ह्द नामा तह़रीर फ़रमाने और दीगर मुख़्तलिफ़ ज़रूरी मुआ़मलात निमटाने के बा'द सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ले कर मदीनए मुनव्वरा रवाना हो गए, अमीरुल मोमिनीन की आमद का सुन कर पूरा मदीनए मुनव्वरा ख़ुशी से झूम उठा, जैसे ही आप वहां पहुंचे लोग जूक़ दर जूक़ आप के पास आ कर बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ व नुसरत की मुबारक बाद देते रहे, फिर सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से अपने क़बूले इस्लाम का तफ़्सीली वाक़िआ़ सुनाया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, सय्यिदुना का'ब अह़बार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर ख़ुसूसी रह़मत नाज़िल फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10)......जंगे ह़ल्ब

जंगे ह़ल्ब का इज्माली ख़ाका

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदीनए मुनव्वरा वापसी के बा'द सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बीस हज़ार के लश्कर के साथ ह़ल्ब का इरादा फ़रमाया बा'द में आप ने तीन हज़ार का लश्कर क़ैसारिया भेज दिया और सतरह हज़ार के लश्कर के साथ ह़ल्ब रवाना हुवे, एक हज़ार का लश्कर बतौरे तलीआ़ आप ने पहले ही ह़ल्ब रवाना कर दिया । शहर ह़ल्ब का क़ल्आ़ निहायत ही मज़बूत़ था, किसी दौर में एक जंगजू बित़रीक़ इस का ह़ाकिम था और उसी ने इस को मज़बूत़ किया, उस के मरने के बा'द उस के दो बेटे यूक़न्ना और यूह़न्ना ने इस को संभाल लिया । दोनों के मिज़ाज में बहुत फ़र्क़ था, यूक़न्ना निहायत जंगजू जब कि यूह़न्ना दुन्या से किनारा कश राहिब था । इस्लामी लश्कर के मुतअ़ल्लिक़ यूह़न्ना सुल्ह़ का क़ाइल और यूक़न्ना जंग का क़ाइल था, अलबत्ता अह्ले ह़ल्ब इस्लामी लश्कर की तमाम फ़ुतूह़ात से वाक़िफ़िय्यत की बिना पर यूह़न्ना के ह़िमायती थे और इस्लामी लश्कर के साथ सुल्ह़ के क़ाइल थे ।[1]

रसूलुल्लाह को मदद के लिये पुकारना

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो एक हज़ार मुजाहिदीन का लश्कर भेजा था उस ने ह़ल्ब से छे मील दूर एक नहर के किनारे पड़ाव किया उस दस्ते के सिपह सालार ह़ज़रते

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعھا، ج ۱، ص ۲۳۷۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना का'ब बिन ज़मरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। जब तमाम मुजाहिदीन अपने मुख़्तलिफ़ कामों में मश्ग़ूल थे तो बे ख़बरी में यूक़न्ना ने पांच हज़ार रूमियों के साथ उन पर ह़म्ला कर दिया, बे ख़बरी की वज्ह से मुजाहिदीन को सख़्त आज़्माइश का सामना करना पड़ा। दोपहर तक लड़ाई होती रही, तमाम मुजाहिदीन को अपनी शहादत का यक़ीन हो गया था, ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़मरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं पुकारा : يَا مُحَمَّدُ يَا مُحَمَّدُ يَا نَصْرَ اللّٰهِ اَنْزِل ''या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद ! तशरीफ़ लाइये।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन ज़मरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल हैं, सख़्त मुसीबत में गिरिफ़्तार हैं, ब ज़ाहिर नुस्रत व नजात की कोई सूरत नज़र नहीं आती और वोह अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मदद के लिये पुकार रहे हैं, मा'लूम हुवा कि मुश्किल और मुसीबत के वक़्त सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है।

ह़ज़रते सय्यिदुना यूह़न्ना की शहादत

अचानक यूक़न्ना अपने लश्कर समेत भाग खड़ा हुवा, तमाम मुजाहिदीन बहुत ह़ैरान थे, इस की वज्ह येह थी कि यूक़न्ना के यहां आने के बा'द अह्ले शहर ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुल्ह़ कर ली थी, जैसे ही उसे ख़बर मिली तो वोह मुजाहिदीन के साथ जंग को मौक़ूफ़ कर के ह़ल्ब रवाना हो गया। ह़ल्ब पहुंच कर उस ने अह्ले शहर पर ज़ुल्मो सितम करना शुरूअ़ कर दिये। उस के भाई यूह़न्ना ने उसे उस ज़ुल्मो सितम से मन्अ़ किया तो वोह उस पर चढ़ दौड़ा और कहने लगा : ''तुम तो पहले ही इस बात की ह़िमायत में थे कि इस्लामी लश्कर से सुल्ह़ की जाए, लगता है तुम ने ही शहर वालों को सुल्ह़ पर उक्साया है लिहाज़ा मैं तुम्हें पहले इस की सज़ा दूंगा फिर वोह यूह़न्ना की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो उस ने बारगाहे इलाही में यूं अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ عَلَيَّ اَنِّيْ مُسْلِمٌ وَاَنِّيْ مُخَالِفٌ لِدِيْنِ هٰؤُلَاءِ الْقَوْمِ وَاَنَا اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ ''या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इस बात पर गवाह रहना कि मैं मुस्लिम होता हूं और मैं इन लोगों के दीन का मुख़ालिफ़ हूं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना यूह़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعھا، ج ۱، ص ۲۳۹۔

www.dawateislami.net

अपने भाई से फ़रमाया : "अब तुझे जो करना है कर ले, अगर तू मुझे क़त्ल कर देगा तो मैं जन्नत की तृरफ़ चला जाऊंगा क्यूंकि मैं ने दीने ह़क़ को क़बूल कर लिया है अब मुझे अपनी जान की कोई परवाह नहीं।" येह सुन कर यूक़न्ना आग बगोला हो गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को शहीद कर दिया। फिर उस ने अहले ह़ल्ब पर ज़ुल्मो सितम ढाने शुरूअ़ कर दिये।[1]

सय्यिदुना दामिस अबुल हौल की आमद

बा'दे अज़ां सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इस्लामी लश्कर के साथ ह़ल्ब पहुंचे और क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया। क़ल्ए़ में मौजूद रूमियों की तृरफ़ से शदीद मुज़ाह़मत का सामना करना पड़ा जिस से जंग तूल पकड़ गई और तक़रीबन चार माह तक जारी रही, इस दौरान ह़ाकिमे ह़ल्ब यूक़न्ना भी मुख़्तलिफ़ तृरीक़ों से इस्लामी लश्कर को परेशान करता रहा, जब कि अहले शहर भी इस मुह़ासरे से तंग आ चुके थे। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के हुक्म पर ह़ल्ब का मुह़ासरा जारी रखा। इसी दौरान मदीनए मुनव्वरा से अमीरुल मोमिनीन का भेजा हुवा पांच सौ अफ़राद पर मुश्तमिल लश्कर ह़ल्ब आ पहुंचा। उस लश्कर में ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मिरदास किन्दी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना दामिस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी मौजूद थे, उन की कुन्यत अबुल हौल थी। येह निहायत ही बहादुर और जंगी दाव पेच पर महारत रखने वाले थे, एक दफ़्आ़ इन्हों ने अकेले सत्तर आदमियों को शिकस्त दे दी थी, इन की बहादुरी के वाक़िआ़त बहुत मश्हूर थे। ह़ाकिम यूक़न्ना ने एक दफ़्आ़ इस्लामी लश्कर के एक कोने पर रात के वक़्त ह़म्ला किया, सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه पहले ही से चौकन्ना थे फ़ौरन उन पर झपट पड़े और रूमियों के दो सिपाहियों को मार गिराया।[2]

सय्यिदुना दामिस अबुल हौल की जंगी ह़िक्मते अ़मली

काफ़ी दिनों से लड़ाई जारी थी लेकिन जंग किसी एक रुख़ बैठ नहीं रही थी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सय्यिदुना दामिस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को बुला कर मश्वरा तृलब किया। आप ने उन के सामने एक ऐसी जंगी ह़िक्मते अ़मली पेश की, कि जिस से मुजाहिदीन क़ल्ए़ में दाख़िल हो सकते थे। जिस की अ़मली सूरत कुछ यूं हुई कि सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة حلب وقلاعها، ج ۱، ص ۲۴۵۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینة حلب وقلاعها، ج ۱، ص ۲۵۴۔۲۵۵

www.dawateislami.net

इस्लामी लश्कर को कूच करने का हुक्म दिया और क़रीब ही किसी ऐसी जगह पड़ाव किया जहां से क़ल्ए़ वाले उन्हें नहीं देख सकते थे और येह तअस्सुर दिया कि इस्लामी लश्कर यहां रह कर किसी और मक़ाम पर जाने का सोच रहा है । इस्लामी लश्कर जब ह़ल्ब से निकला तो सय्यिदुना दामिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक़रीबन तीस मुजाहिदीन को ले कर क़रीब ही पहाड़ के ग़ार में इस त़रह़ छुप गए कि क़ल्ए़ वाले उन्हें न देख सके। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीन दिन उस ग़ार में छुपे रहे इस दौरान क़ल्ए़ के लोगों को यक़ीन हो गया कि पूरा इस्लामी लश्कर यहां से चला गया है, सारे शहर वालों ने ख़ुशियां मनाईं । ह़ाकिम यूक़न्ना ने भी क़ल्ए़ की दीवारों से फ़ौजियों को नीचे उतार लिया और चीदा चीदा जगहों पर एक एक फ़ौजी को पहरा दार मुक़र्रर कर के मुत़्मइन हो गया।

तीन चार दिन के बा'द सय्यिदुना दामिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आधी रात को अपने दो साथियों के हाथ सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह पैग़ाम भेजा कि वोह कल सुब्ह़ क़ल्ए़ के दरवाज़े पर आ जाएं उन्हें दरवाज़ा खुला हुवा मिलेगा। फिर बक़िय्या मुजाहिदीन को ले कर बिल्कुल ख़ामोशी से छुपते छुपाते किसी क़िस्म का शोरो ग़ुल किये बिग़ैर क़ल्ए़ की दीवार के नीचे पहुंच गए। क़ल्ए़ की दीवारों पर मौजूद पहरे दार शराब के नशे में धुत पड़े थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अठ्ठाईस मुजाहिदीन को 7 सफ़ों में खड़ा कर के इस त़रह़ तरतीब दिया कि सब से नीचे वाली सफ़ में सात मज़बूत़ जिस्म वाले अफ़राद को खड़ा किया, फिर उन के कन्धों पर छे अफ़राद को, फिर उन के कन्धों पर पांच, फिर उन के कन्धों पर चार, फिर उन के कन्धों पर तीन, फिर उन के कन्धों पर दो और फिर उन दोनों के कन्धों पर एक कमज़ोर और दुब्ले पतले मुजाहिद को चढ़ा दिया।

क़ल्ए़ की दीवार की बुलन्दी बयालीस[42] फ़िट थी, येह आख़िरी मुजाहिद इस बुलन्दी पर पहुंच गया और क़ल्ए़ की दीवार पर चढ़ गया। फिर उस ने अपने बा'द वाले दोनों मुजाहिदों को भी पकड़ कर ऊपर चढ़ा लिया। येह तीनों मुजाहिदीन आहिस्ता आहिस्ता अपने क़रीबी पहरे दार के पास गए जो नशे में बेहोश पड़ा था, तीनों ने उसे ख़ामोशी से उठा कर क़ल्ए़ की दीवार से नीचे फैंक दिया। फिर येह वापस आए और अपने इमामों को बांध कर नीचे वाले मुजाहिदीन को ऊपर खींच लिया। जब वोह मुजाहिदीन आए तो उन्हों ने अपने इमामों को बांध कर उस से नीचे वाले मुजाहिदीन को ऊपर खींच लिया यूं तमाम मुजाहिदीन क़ल्ए़ के ऊपर चढ़ गए।(1)

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعھا، ج ۱، ص ۲۵۸ - ۲۶۲ ملخصاً۔

www.dawateislami.net

इस्लामी लश्कर का शहर में दाख़िला और फ़त्हे अ़ज़ीम

सय्यिदुना दामिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुजाहिदीन को ख़ामोशी के साथ लेटे रहने का कहा और फिर ख़ुद सरकते हुवे कुछ दूर तक गए और क़ल्ए़ के अन्दर का जाइज़ा लिया। अन्दर से शोरो ग़ुल की आवाज़ें आ रही थीं, दर अस्ल ह़ाकिम यूक़न्ना और शहर वाले इस्लामी लश्कर के जाने की ख़ुशी में जश्न मनाने में मसरूफ़ थे। शराब व कबाब की मह़फ़िल जारी थी। दीगर रूमी सिपाही भी अपनी ड्यूटी छोड़ कर इस जश्न में शरीक हो गए थे। मुजाहिदीन क़ल्ए़ के ऊपर सुब्ह़ तक लेटे रहे। सुब्ह़ होते ही तमाम मुजाहिदीन नीचे आए और दरवाज़े की त़रफ़ लपके, वहां चन्द रूमी सिपाही ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से मौजूद थे। जैसे ही उन्हों ने मुजाहिदीन को देखा तो परेशान हो गए कि मुजाहिदीन क़ल्ए़ के अन्दर कैसे आ गए, इस से पहले कि वोह कुछ करते मुजाहिदीन उन पर शेरों की त़रह़ टूट पड़े, उन का शोरो ग़ुल सुन कर इधर उधर के दीगर रूमी भी मुजाहिदीन से लड़ने के लिये आ गए। चारों त़रफ़ से रूमी मुजाहिदीन पर टूट पड़े थे। सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार बिजली की त़रह़ चल रही थी, एक ही वार में वोह तीन तीन रूमियों के सर उड़ा देते थे। येह लड़ाई जारी थी कि अचानक اَللّٰہُ اَکْبَر के फ़लक शिगाफ़ ना'रों की सदा बुलन्द हुई, एक साथ हज़ारों मुजाहिदीन की सदा से क़ल्ए़ की दीवारें लरज़ गईं, रूमियों ने सोचा शायद क़ल्ए़ के ख़ुफ़्या रास्ते से इस्लामी लश्कर अन्दर आ गया है लिहाज़ा सब दरवाज़े को छोड़ कर ख़ुफ़्या दरवाज़े की त़रफ़ क़ल्ए़ की पीछे की जानिब जाने लगे। यहां मौजूद मुजाहिदीन ने दरवाज़े पर क़ब्ज़ा कर लिया, जो भी क़रीब आता उसे ख़ाक में मिला देते। दर अस्ल इसी दरवाज़े के बाहर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन के साथ मौजूद थे और ना'रए तक्बीर की सदाएं भी वोही बुलन्द कर रहे थे जिस ने रूमियों को मुग़ालत़े में डाल दिया। मुजाहिदीन ने क़ल्ए़ का दरवाज़ा खोल दिया।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुजाहिदीन के साथ क़ल्ए़ में दाख़िल हुवे और शेर की त़रह़ रूमियों पर झपट पड़े। जब रूमियों ने देखा कि इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ में दाख़िल हो गया है तो सब ने हथयार फैंक दिये और हाथों को ऊपर उठा कर अमान अमान पुकारने लगे। इतने में सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी बक़िय्या लश्कर के साथ पहुंच गए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम रूमियों पर इस्लाम पेश किया तो येह देख कर तमाम मुजाहिदीन ह़ैरान हो गए कि सब से पहले ह़ाकिमे ह़ल्ब "यूक़न्ना" ने इस्लाम क़बूल किया। उस की मुताबअ़त में दीगर बड़े बड़े सरदारों ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन तमाम को मुआ़फ़ कर दिया, फिर

www.dawateislami.net

क़ल्ए़ से सोना, चांदी वग़ैरा जो भी ज़ख़ीरा निकला उस में से ख़ुमुस अलग कर के बक़िय्या मुजाहिदीन में तक़्सीम कर दिया। इस अ़ज़ीम कारनामे में सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 73 ज़ख़्म आए और इन में से कई ज़ख़्म बहुत गहरे थे, इस लिये उन के ज़ख़्म ठीक होने तक इस्लामी लश्कर वहीं ह़ल्ब में ठहरा रहा। ह़ाकिमे ह़ल्ब ह़ज़रते सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी इस्लामी लश्कर की ख़िदमत में कोई कसर न छोड़ी, नीज़ वोह रोज़ाना सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और अपनी ख़िदमात व मश्वरे पेश करते। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का नाम तब्दील कर के **अ़ब्दुल्लाह** रख दिया था। उन्ही ह़ाकिमे ह़ल्ब ह़ज़रते सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बा'द में मुल्के शाम की मुख़्तलिफ़ जंगों में मुसलमानों को इतना फ़ाइदा पहुंचाया कि ज़मानए कुफ़्र में मुसलमानों को पहुंचाए गए नुक़्सान की तलाफ़ी हो गई।[1]

ह़ाकिम यूक़न्ना का फ़सीह़ अ़रबी बोलना

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात में एक निहायत ही अ़जीबो ग़रीब बात देखी कि फ़त्ह़ से पहले उन से जब भी बात हुई तो वोह अपनी मक़ामी ज़बान में बात करते थे और दरमियान में तर्जुमान का वासित़ा होता था लेकिन अब सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निहायत ही फ़सीह़ो बलीग़ अ़रबी में कलाम कर रहे हैं, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब इस की वज्ह पूछी तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! वाक़ेई येह आप के लिये निहायत ही तअ़ज्जुब की बात है कि कल तक तो मैं अपनी मक़ामी ज़बान में बात करता था, अ़रबी ज़बान बोलने पर क़ुदरत न रखता था अब येह रातों रात मुझे इतनी फ़सीह़ अ़रबी कैसे आ गई ? बात दर अस्ल येह है कि कल रात सोने से पहले मैं इस्लामी लश्कर के बारे में सोच रहा था कि हमारे नज़्दीक अ़रब सब से कमज़ोर समझे जाते थे फिर उन्हों ने कैसे हमारे अ़लाक़े या'नी मुल्के शाम के अक्सर हिस्सों पर क़ब्ज़ा कर लिया ? हमारे बेहतरीन शहसुवारों को क़त्ल कर दिया और हम पर ग़ालिब आ गए। बस मैं इन्ही ख़यालों में गुम था कि मुझे नींद आ गई। मैं ने ख़्वाब में एक ऐसी नूरानी शख़्सिय्यत को देखा जिन का चेहरा चांद से ज़ियादा चमकदार था, उन की ज़ात मुश्क से ज़ियादा मुअ़त्तर व मुअ़म्बर थी, उन के साथ दीगर लोग भी मौजूद थे, जब मैं ने उन के बारे में दरयाफ़्त किया तो बताया गया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। मैं ने दिल में

---

[1] ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعھا، ج ۱، ص ۲۶۳۔۲۶۴۔

www.dawateislami.net

कहा कि अगर येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं तो मैं इन से अ़र्ज़ करता हूं कि मुझे अ़रबी सिखाएं। अभी मैं येह सोच ही रहा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ यूक़न्ना ! मैं वोही मुह़म्मद हूं जिस की बिशारत मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दी थी, मेरे बा'द कोई नबी नहीं, मैं चाहता हूं कि तुम येह कहो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।" मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक थाम लिया, उसे बोसा दिया और आप के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लिया। जब मैं बेदार हुवा तो मुझे वोही मुश्क की ख़ुश्बू आ रही थी और मैं अ़रबी ज़बान में फ़सीह़ गुफ़्तगू कर रहा था। मैं ने अपने भाई सय्यिदुना यूह़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़फ़ूज़ शुदा कुतुब की त़रफ़ रुजूअ़ किया और उन को देखा तो उन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिऐनिही वोही सिफ़ात लिखी हुई थीं जैसा मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा था।[1]

सय्यिदुना यूक़न्ना के सीरते मुस्त़फ़ा से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात

सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से पूछा कि "मैं ने आस्मानी कुतुब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ एक और बात येह भी पढ़ी है कि आप के साथ सब से ज़ियादा मुनाफ़रत यहूदियों की होगी, क्या वाक़ेई ऐसा है ?" सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "जी हां ! वाक़ेई ऐसा ही है, क़ौमे यहूद के लोग आप से इतनी नफ़रत करते थे कि आप की जान के भी दुश्मन हो गए लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुश्मनों पर फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाई।"

सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दोबारा पूछा : "हुज़ूर ! मैं ने साबिक़ा कुतुब में येह भी पढ़ा है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने अस्ह़ाब, मोमिनीन, यतीमों, मिस्कीनों वग़ैरा के साथ सिलए रेह़्मी की वसिय्यत फ़रमाएगा। क्या येह बात भी बिल्कुल दुरुस्त है ?" सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "जी हां ! येह बात भी बिल्कुल दुरुस्त है, क़ुरआने पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन के अस्ह़ाब के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾﴾ (پ۱۹، الشعراء:۲۱۵)

[1] ......فتوح الشام، ذكر فتح مدينة حلب وقلاعها، ج ۱، ص ۲۴۲۔

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अपनी रह़मत का बाज़ू बिछाओ अपने पैरू मुसलमानों के लिये।"

यतीमों व मिस्कीनों के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَلَمْ یَجِدْكَ یَتِیْمًا فَاٰوٰى۪ ﴿۶﴾ وَ وَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى۪ ﴿۷﴾ وَ وَجَدَكَ عَآىٕلًا فَاَغْنٰىؕ ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْیَتِیْمَ فَلَا تَقْهَرْؕ ﴿۹﴾ وَ اَمَّا السَّآىٕلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿۱۰﴾﴾ (پ۳۰، الضحى:۶تا۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्या उस ने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी, और तुम्हें अपनी मह़ब्बत में ख़ुद रफ़्ता पाया तो अपनी त़रफ़ राह दी, और तुम्हें ह़ाजतमन्द पाया फिर ग़नी कर दिया, तो यतीम पर दबाव न डालो, और मंगता को न झिड़को।"

सह़ाबए किराम और "وَوَجَدَکَ ضَآلًّا فَهَدٰی" की तफ़्सीर

ह़ज़रते सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! इस आयते मुबारका وَوَجَدَکَ ضَآلًّا فَهَدٰی में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को सिफ़त ضَلَال से क्यूं मुत्तसिफ़ फ़रमाया, ह़ालांकि वोह तो बहुत मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम हस्ती हैं।" (क्यूंकि ضَلَال का लफ़्ज़ी मा'ना गुमराही के हैं) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ और बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : وَجَدْنَاکَ ضَالًّا فِيْ تِيْهِ مَحَبَّتِنَا فَهَدَيْنَاکَ اِلٰى مُشَاهَدَتِنَا وَاَيْضاً سَهَلَ لَکَ الْوُصُوْلَ اِلَى سُبُلِ الْمُكَاشَفَةِ وَوَفَقَکَ لِلْوُقُوْفِ فِيْ مَقَامِ الْمُشَاهَدَةِ "या'नी ऐ यूक़न्ना ! इस का वोह ज़ाहिरी मा'ना नहीं जो आप समझ रहे हैं बल्कि इस का मत़लब येह है कि ऐ मह़बूब ! हम ने तुम्हें अपनी मह़ब्बत की वादियों में गुम गश्ता पाया तो अपने दीदार व मुशाहदे की त़रफ़ राह दी, तुम्हारे लिये मुकाशफ़े की रात तक पहुंचना आसान कर दिया और मक़ामे मुशाहदा में ठहरने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। फिर मज़ीद ऐसी वज़ाह़त और तफ़्सीर बयान की, कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ का चेहरए मुबारका ख़ुशी से दमकने लगा।"(1)

कन्ज़ुल ईमान तफ़्सीरे सह़ाबा का तर्जुमान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़रबी ज़बान निहायत ही जामेअ़ है, इस में एक एक लफ़्ज़ के कई कई मआ़नी आते हैं, येही वज्ह है कि अ़रबी ज़बान के मुतर्जिम (तर्जमा करने वाले) के लिये ज़रूरी है कि वोह तर्जमा करते वक़्त अल्फ़ाज़ के मुख़्तलिफ़ मआ़नी को सामने रखते हुवे तर्जमा करे। क़ुरआने पाक तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम है जिस की फ़साह़तो बलाग़त की इन्तिहा को कोई भी नहीं पहुंच

(1) ......فتوح الشام، ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعها، ص ۲۷۱ المخطوطة۔

www.dawateislami.net

सकता लिहाज़ा इस की किसी भी आयते मुबारका का तर्जमा करते वक़्त सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है। याद रहे हर ख़ासो आ़म को क़ुरआने पाक का तर्जमा करने की इजाज़त नहीं है बल्कि इस के लिये कई उ़लूम में महारत होना ज़रूरी है, क्यूंकि हो सकता है किसी लफ़्ज़ का जो तर्जमा मुतर्जिम ने किया वहां उस का कोई दूसरा तर्जमा दुरुस्त हो। जैसे कि मज़्कूरए बाला आयते मुबारका में लफ़्ज़ "ضَآلًّ" का लफ़्ज़ी मा'ना "गुमराह, भटका हुवा" होने के हैं। लेकिन यहां येह लफ़्ज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आया है और येह मा'ना आप के शायाने शान नहीं, बल्कि कोई भी ह़क़ीक़ी मुसलमान आप के लिये येह मा'ना बयान नहीं कर सकता। येही वज्ह है कि कई मुतर्जिमीन ने इस आयते मुबारका का लफ़्ज़ी तर्जमा किया और बहुत बड़ी ग़लती कर गए।

जब कि आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने तर्जमए क़ुरआन "कन्ज़ुल ईमान" में इस आयते मुबारका का तर्जमा वोही किया जो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه या सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बयान किया। आप फ़रमाते हैं : **"और तुम्हें अपनी मह़ब्बत में ख़ुद रफ़्ता पाया तो अपनी त़रफ़ राह दी।"** (پ۳۰، الضحی:۷) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जो तफ़्सीर बयान की है, उसे भी पढ़ें तो ऐसा लगता है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तर्जमा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की बयान कर्दा तफ़्सीर की तर्जुमानी कर रहा है।

"कन्ज़ुल ईमान" क़ुरआनो सुन्नत के बिल्कुल मवाफ़िक़ है, येही वज्ह है कि शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मुरीदीन, मुह़िब्बीन, मुतअ़ल्लिक़ीन को **"कन्ज़ुल ईमान"** पढ़ने का ही मश्वरा देते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने निहायत ही ख़ूब सूरत त़बाअ़त के साथ "कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" को शाएअ़ किया है, आप भी इसे ह़ासिल कीजिये, पढ़िये और अपने क़ुलूबो अज़्हान को फ़ैज़ाने क़ुरआन से मुनव्वर कीजिये।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(11)......जंगे क़ल्अ़ए इज़ाज़

जंगे क़ल्अ़ए इज़ाज़ का इजमाली ख़ाका

इस्लामी लश्कर जंगे ह़ल्ब के बा'द वहीं रुक गया था ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दीगर मुजाहिदीन सिह़्ह़तयाब हो जाएं, जब तमाम मुजाहिदीन सिह़्ह़तयाब हो गए तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा त़लब किया कि अब कौन से अ़लाके़ की त़रफ़ कूच किया जाए ? आप का इरादा इन्त़ाकिया का था जो मुल्के शाम का दारुल ख़िलाफ़ा था, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मश्वरा दिया कि यहां से क़रीबी अ़लाक़ा इज़ाज़ का ह़ाकिम मेरे चचा का बेटा है और मेरी उस से अच्छी जान पहचान है, मैं चाहता हूं कि उस के पास जाऊं और उसे कहूं कि मैं मुसलमानों से भाग कर तुम्हारे पास पनाह लेने आया हूं। बा'दे अज़ां इस्लामी लश्कर सुब्ह़ के वक़्त क़ल्ए़ के दरवाज़े पर आ जाए तो मैं मौक़अ़ देख कर दरवाज़ा खोल दूंगा और इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ में दाख़िल हो जाएगा, यूं हम उसे बा आसानी फ़त्ह़ कर लेंगे। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मश्वरे को क़बूल किया और उन्हें रवाना कर दिया। लेकिन क़ल्अ़ए इज़ाज़ के ह़ाकिम को जासूसों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इस जंगी चाल से पहले ही मुत्त़लअ़ कर दिया लिहाज़ा जैसे ही येह क़ल्अ़ए इज़ाज़ में पहुंचे तो वहां के ह़ाकिम ने इन को साथियों समेत गिरिफ़्तार कर के क़ैद कर लिया।(1)

सय्यिदुना यूक़न्ना की आज़ादी और क़ल्अ़ए इज़ाज़ की फ़त्ह़

ह़ाकिम इज़ाज़ के दो बेटे थे, उन में से एक बेटे लावन के मह़ल में सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ैद किया गया था। वोह चूंकि आप का रिश्तेदार भी था और अच्छी त़रह़ जानता था इस लिये उस ने रात को सोचा कि यूक़न्ना ने अ़रबों के साथ काफ़ी अ़र्से तक जंग की फिर उस के दीन को क़बूल कर लिया और वोह मेरे बाप से भी ज़ियादा इल्मो फ़ज़्ल वाला है इस के बा वुजूद उस ने वोह दीन इख़्तियार कर लिया यक़ीनन दीने इस्लाम बिल्कुल बरह़क़ है।

वोह निस्फ़ शब को सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया और सारी बात बयान कर दी, नीज़ येह भी ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि मैं इस्लाम क़बूल करता हूं और आप इस बात का मुझ से वा'दा करें कि अपनी बेटी का निकाह़ मुझ से करेंगे। सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया

---

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۶۶-۲۶۸ ملخصا۔

www.dawateislami.net

कि अगर तू ने येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया है तो मैं ज़रूर तेरी मुराद को पूरा कर दूंगा। चुनान्चे, लावन ने आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लिया। फिर वोह अपने बाप के कमरे में गया तो देखा कि उस का बाप मक़्तूल पड़ा है और वहां उस की बहनें और मां भी मौजूद हैं।

फिर वोह सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया और अपने बाप के हलाक होने की इत्तिलाअ़ दी और कहा कि अब आप यहां से निकल कर क़ल्ए़ के दरवाज़े पर ह़म्ला कर दें। चुनान्चे, उन्हों ने बाहर निकल कर ह़म्ला कर दिया, हर त़रफ़ से चीख़ो पुकार की आवाज़ें आने लगीं, बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक अशतर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ियादत में इस्लामी लश्कर भी आ पहुंचा, तमाम लोगों ने हथयार डाल दिये और यूं क़ल्अ़ए इ़ज़ाज़ थोड़ी सी मुज़ाह़मत के बा'द फ़त्ह़ हो गया।[1]

(12)......फ़त्ह़े इन्त़ाकिया (दारुस्सल्त़नत)

इन्त़ाकिया और हरक़िल बादशाह

जंगे यरमूक जैसी बड़ी बड़ी जंगों में रूमियों की शिकस्त के बा'द हरक़िल बादशाह भाग कर मुल्के शाम के दारुल ख़िलाफ़ा इन्त़ाकिया चला गया था और अब भी वोह यहीं मौजूद था। उसे बहुत पहले ही पता चल गया था कि अ़रबी मुजाहिदीन उस की सल्त़नत पर क़ब्ज़ा कर लेंगे, इस लिये उस के दिल में उस वक़्त से एक ख़ौफ़ बैठा हुवा था, वोह मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई काम करता था तो उस में वाज़ेह़ त़ौर पर कमज़ोरी होती थी, डर के मारे उस की ह़ालत एक ऐसी कमज़ोर दीवार की सी हो गई थी जिसे एक धक्का दे कर गिराया जा सकता था। क़ल्अ़ए इ़ज़ाज़ की फ़त्ह़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दो सौ[200] नौ मुस्लिम मुजाहिदीन के साथ इन्त़ाकिया रवाना हो गए ताकि हरक़िल के साथ भी वोही जंगी चाल चलें जो क़ल्अ़ए इ़ज़ाज़ के ह़ाकिम के साथ चली थी, लेकिन उन्हें इस में कोई ख़ाति़र ख़्वाह कामयाबी नहीं हुई थी इस लिये वोह अपनी दिली ख़्वाहिश को पूरा करने के लिये अपने साथियों के साथ इन्त़ाकिया पहुंच गए। हरक़िल ने आप के क़बूले इस्लाम पर सख़्त ख़फ़गी का इज़हार किया लेकिन आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के सामने ऐसी बातें कीं जिस से उस को यक़ीन हो गया कि यूक़न्ना तो फ़क़त़ मुसलमानों को धोका देने के लिये उन के दीन में दाख़िल हुवा है।

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۶۹ ملخصاً

www.dawateislami.net

इस्लामी लश्कर के तीन सौ सिपाहियों का क़ैद होना

हरक़िल बादशाह की छोटी बेटी ज़ैतून का शौहर नस्तूरस जंगे यरमूक में सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों क़त्ल हो चुका था इस लिये ज़ैतून ने हरक़िल को पैग़ाम भेजा कि मुझे अपने पास बुला लो, हरक़िल ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह ज़िम्मेदारी सोंप कर रवाना किया। वापसी पर रास्ते में उन्हें नसरानी अ़रबों का लश्कर मिला जो हरक़िल बादशाह के लिये ग़ल्ला ले कर इन्त़ाकिया जा रहा था, उस लश्कर का सिपह सालार जबला बिन ऐहम ग़स्सानी का बेटा अबहम बिन जबला था।

क़ल्अ़ए इज़ाज़ की फ़त्ह़ के बा'द सय्यिदुना उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीन सौ सुवारों पर सरदार मुक़र्रर कर के मरजे दाबिक़ के अ़लाक़े की त़रफ़ भेजा, इस लश्कर में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। येह क़ाफ़िला आराम कर रहा था कि नसरानी अ़रबों ने इन पर ह़म्ला कर दिया, सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही बहादुरी से लड़े और कई नसरानियों को वासिले जहन्नम किया लेकिन उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा थी इस लिये उन्हों ने सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत कई मुजाहिदीन को क़ैदी बना लिया। बा'दे अज़ां हरक़िल की बेटी ज़ैतून को इन्त़ाकिया पहुंचाने के लिये वापसी पर सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुलाक़ात उस लश्कर से हो गई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़त़्अ़न उन पर ज़ाहिर न होने दिया कि वोह मुसलमानों के लिये काम कर रहे हैं। और इन तमाम को हरक़िल के दरबार में ले कर पहुंच गए।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना और शेर की रहनुमाई

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के साथियों को क़ैद किया जाने लगा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुश्मनों की नज़रों से बच कर भाग निकले, उन्हें भागते हुवे किसी ने भी नहीं देखा था, इस लिये वोह दुश्मन के तआ़क़ुब से बे ख़ौफ़ हो कर तेज़ तेज़ भाग रहे थे ताकि फ़ौरन ह़ल्ब पहुंच जाएं और मुजाहिदों की गिरिफ़्तारी की सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़बर करें। आप ने जल्दी पहुंचने के लिये बड़े रास्ते को छोड़ कर जंगल का दरमियानी रास्ता इख़्तियार किया। चलते चलते आप रास्ता भूल

(1) فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۷۵۔

www.dawateislami.net

गए लेकिन फिर भी बिग़ैर तवक़्क़ुफ़ मुसलसल भागते जा रहे थे कि अचानक आप के सामने एक शेर आ गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : يَا اَبَا الْحَارِثِ اَنَا مَوْلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ مِنْ اَمْرِيْ كَيْتَ وَكَيْتَ "या'नी ऐ शेर ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम हूं और मेरे साथ येह येह मुआ़मला पेश आया है।" (या'नी मैं क़ैद से भाग कर आ रहा हूं ताकि सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुजाहिदीन के क़ैद होने की ख़बर दूं लेकिन रास्ता भूल गया हूं।) येह सुन कर शेर अपनी दुम हिलाता हुवा आप के क़रीब आ कर खड़ा हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के एक जानिब खड़े हो गए, फिर उस ने चलने का इशारा किया और दोनों चल पड़े, शेर आप को एक ऐसे अ़लाक़े में ले आया जिस से मुसलमानों का मुआ़हदा और सुल्ह़ थी। फिर वहां से शेर वापस चला गया।[1]

सय्यिदुना सफ़ीना का मुबारक अ़क़ीदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने, सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल हैं, बारगाहे रिसालत के तरबिय्यत याफ़्ता हैं, अ़र्सए दराज़ तक उन्हें बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल हुवा, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से बे शुमार अह़ादीस सुनीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसीबत के वक़्त अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुहाई दी और वोह भी किसी इन्सान को नहीं बल्कि इन्सानों को फाड़ खाने वाले शेर को दी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ए'तिक़ाद कितना पुख़्ता था, कैसा यक़ीने कामिल था, जंगल के शेर जो इन्सान की बोली नहीं जानते, नहीं समझते लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर भी शेर को मुख़ात़ब कर के फ़रमाते हैं कि "ऐ शेर ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुलाम हूं।"

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह ए'तिक़ाद था कि अगर्चे येह शेर इन्सानों की ज़बान नहीं जानता मगर तमाम काइनात के आक़ा व मौला को ज़रूर जानता है, सिर्फ़ जानता ही नहीं बल्कि मानता भी है, अगर मैं उस को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुहाई दूंगा तो वोह मुझ को ज़रर नहीं पहुंचाएगा, और वाक़ेई शेर ने आप को कोई नुक़्सान न पहुंचाया बल्कि वोह आप का गुलाम बन कर दुम हिलाने लगा, गोया वोह ज़बाने ह़ाल से कह रहा था कि ऐ सफ़ीना ! जिस बारगाह के तुम गुलाम हो मैं भी उसी का गुलाम हूं, मेरी क्या मजाल कि मैं तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाऊं बल्कि तुम्हारी ख़िदमत अन्जाम देना तो मेरी

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۷۸۔

खुश बख़्ती और सआ़दत है, चलो मैं तुम्हारा राहबर और निगहबान बन कर साथ चलता हूं और तुम को जहां जाना है वहां तक पहुंचा देता हूं। चुनान्चे, वोह शेर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के साथ ब हैसिय्यते राहबर व निगबान चलता रहा।

अपने मौला की है बस शाने अ़ज़ीम, जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम, पेड़ सजदे में गिरा करते हैं

इस्लामी लश्कर और रूमी लश्कर की जंग

हज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्लामी लश्कर में पहुंचते ही सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को मुजाहिदीन के क़ैद होने की तफ़्सील बताई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه और तमाम मुजाहिदीन बहुत ग़मगीन हुवे। नीज़ आप ने इस्लामी लश्कर को इन्त़ाकिया रवाना होने का हुक्म दिया। दूसरी त़रफ़ सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को ले कर हरक़िल के दरबार में पहुंच गए, हरक़िल ने तमाम मुजाहिदीन सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को सोंप दिये, सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه पर बहुत ज़ुल्म किया गया, जैसे ही आप होश में आए तो सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आप को तमाम तफ़्सीलात बता दीं कि वोह मुसलमानों के लिये काम कर रहे हैं और मुनासिब मौक़अ़ की तलाश में हैं। सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने हरक़िल के रूमी लश्कर के मैदाने जंग में आने तक तमाम तफ़्सीलात अपने एक मो'तमद शख़्स के ज़रीए सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه तक पहुंचा दीं। बहर ह़ाल इस्लामी लश्कर भी इन्त़ाकिया पहुंच गया और दोनों लश्करों में जंग हुई। रूमी लश्कर की त़रफ़ बे दिली से जंग लड़ी जा रही थी क्यूंकि हरक़िल क़ल्बी त़ौर पर इस्लामी लश्कर से निहायत ही ख़ौफ़ज़दा था। इतने में रौमतुल कुब्रा का ह़ाकिम फ़लन्त़ानूस तीस हज़ार के लश्कर के साथ हरक़िल की मदद के लिये आ पहुंचा। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इस ख़याल से कि क़रीबी अ़लाक़ों से अब कोई मदद न आए सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को भेजा जिन्हों ने तमाम अ़लाक़ों को ऐसा डराया कि हरक़िल की मदद के लिये किसी भी बड़ी कुमक के आने का ख़ौफ़ बाक़ी न रहा।(1)

ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस का क़बूले इस्लाम

रौमतुल कुब्रा के ह़ाकिम फ़लन्त़ानूस का रूमी लश्कर में शानदार इस्तिक़्बाल किया गया, हरक़िल का इरादा येह था कि वोह दूसरे दिन ही ह़म्ला करे ह़ाकिम फ़लन्त़ानूस ने मश्वरा दिया कि दीगर

(1) فتوح الشام، ذکر فتح عزاز،ج ۱، ص ۲۷۹۔ ۲۸۴ ملخصا۔

www.dawateislami.net

अ़लाक़ों से रूमियों को आने दें जब वोह आ जाएं तो फिर एक साथ इस्लामी लश्कर पर ह़म्ला करें, लेकिन हरक़िल के दरबार में हरक़िल समेत सब ने उस की बात को रद कर दिया बल्कि उस के साथ नाज़ेबा रवय्या इख़्तियार किया जिस से वोह दिल बरदाश्ता हो गया। उस के साथ उस के तमाम साथी भी निहायत ही बद दिल हुवे लेकिन अपने सरदार की ख़ामोशी की वज्ह से ख़ामोश रहे। सब ने उस से पूछा कि अब क्या इरादा है ? उस ने कहा : "क्या जो मैं कहूंगा वोह तुम करोगे ?" उन्हों ने कहा : "हम हरक़िल के लिये नहीं बल्कि तुम्हारे लिये यहां तक आए हैं और अब तुम्हारी ही बात मानेंगे, तुम्हारी मुख़ालफ़त से तो मर जाना बेहतर है।" उस ने कहा : "मैं तो अब ज़ुल्मत से नूर की त़रफ़, तारीकी से रौशनी की त़रफ़, जह्ल से अ़क़्ल की त़रफ़, ज़िल्लत से इ़ज़्ज़त की त़रफ़ और अ़ज़ाब से नजात की त़रफ़ जाने का इरादा रखता हूं। या'नी इस्लाम क़बूल कर के बिहिश्त का ह़क़दार बनना चाहता हूं, इस्लाम क़बूल कर के मुझे जो इ़ज़्ज़त मिलेगी मैं चाहता हूं तुम भी उस में शरीक हो।" उस के तमाम साथियों ने उस की ह़िमायत और भरपूर साथ देने का इक़रार किया।

फ़लन्त़ानूस बहुत ख़ुश हुवा और अपने साथियों को हुक्म दिया कि अपने सामान वग़ैरा को बिल्कुल तय्यार रखो, जब मैं हुक्म दूं तब हम सब इस्लामी लश्कर में शामिल हो जाएंगे। फ़लन्त़ानूस और उस के तमाम साथी जब तय्यारी कर रहे थे, उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ ले आए और जब उन पर सारी बात ज़ाहिर हुई कि ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस मुसलमान हो चुका है तो आप ने भी अपना आप उस पर ज़ाहिर फ़रमा दिया और उन्हें मश्वरा दिया कि फ़िलह़ाल इस्लामी लश्कर में शामिल होने का इरादा तर्क कर दें, बल्कि रूमी लश्कर में रूमी बन कर मौजूद रहें और ऐन जंग के वक़्त हरक़िल बादशाह को क़त्ल कर दें। ह़ाकिम फ़लन्त़ानूस ने सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मश्वरे को मानते हुवे उन्हें अपने ईमान पर गवाह बना लिया।

ह़ाकिम फ़लन्त़ानूस ने सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अ़र्ज़ किया कि बेहतर येह है हम अपने कारनामे की तमाम तफ़्सीलात सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को लिख कर भेज दें, सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया कि मेरे कुछ मो'तमिदे ख़ास लोग हैं मैं उन में से किसी को भेज कर इस्लामी लश्कर के सिपह सालार सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़बर करता हूं। येह कह कर वोह अपने ख़ैमे में चले गए।(1)

(1) ......فتوح الشام، ذكر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۹۹۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ का मुबारक ख़्वाब

हज़रते सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه और ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस के दरमियान जब गुफ़्त्गू हो रही थी उसी वक़्त हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़्वाब में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

يَا اَبَا عُبَيْدَةَ اَبْشِرْ بِرِضْوَانِ اللهِ وَرَحْمَتِهٖ وَغَداً تَفْتَحُ اِنْطَاكِيَةَ صُلْحاً وَاِنَّ صَاحِبَ رُوْمِيَةِ الْمَدَائِنِ الْكُبْرٰى قَدْ جَرٰى قَدْ جَرٰى مِنْ اَمْرِهٖ كَيْتَ وَكَيْتَ هُوَ يُوْقَنَّا صَاحِبُ حَلَبٍ وَهُمَا بِالْقُرْبِ مِنْكَ فَانْفُذْ اِلَيْهِمَا بِنَجَازِ الْاَمْرِ

''या'नी ऐ अबू उ़बैदा ! तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व रह़मत की ख़ुश ख़बरी हो कि कल तुम इन्त़ाकिया को बत़ौरे सुल्ह़ फ़त्ह़ कर लोगे और बेशक वालिये मदाइनुल कुब्रा के साथ इस इस त़रह़ मुआ़मला पेश आया है और वोह दोनों तुम्हारे क़रीब आने वाले हैं और तुम उन दोनों के पास अपना हुक्म भेज दो।''

येह ख़्वाब देख कर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه जाग गए और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को अपना ख़्वाब सुनाया वोह भी बहुत ख़ुश हुवे। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को तमाम तफ़्सीलात से आगाह कर के उन्हें सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास भेजा। जब वोह सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास पहुंचे और उन्हें तमाम बातें बताईं तो ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस ह़ैरानो परेशान हो गए, उन के जिस्म के रौंगटे खड़े हो गए और थर थर कांपने लगे फिर उन्हों ने कलिमए शहादत पढ़ा।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि रूमी लश्कर में मौजूद ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस जो गुफ़्त्गू अपने ख़ैमे में बैठ कर कर रहे हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ मदीनए त़य्यिबा में अपने मज़ारे पुर अन्वार में मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं, नीज़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह तमाम बातें सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه को उन के ख़्वाब में आ कर बताईं। मा'लूम हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैब जानते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ हो रहा है और जो कुछ आइन्दा होने वाला है तमाम बातों का आप को इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा दिया है।

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का अ़क़ीदा भी किस क़दर पुख़्ता था कि फ़ौरन सय्यिदुना अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۹۹۔

को उन के पास भेजा और वोह भी फ़ौरन सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पैग़ाम ले कर वहां पहुंच गए, मा'लूम हुवा कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का येह अ़क़ीदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो फ़रमाया है वोह बिल्कुल ह़क़ है और वैसा हो कर ही रहेगा।

जो हो चुका है जो होगा हुज़ूर जानते हैं
तेरी अ़त़ा से ख़ुदाया हुज़ूर जानते हैं

हरक़िल का फ़रार और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़

एक दो दिन की लड़ाई में हरक़िल ने ज़ियादा रग़बत न दिखाई थी, क्यूंकि उसे अपनी सल्त़नत के ज़वाल का पहले ही से इ़ल्म था, ब ज़ाहिर वोह येह बात किसी पर ज़ाहिर न करता था लेकिन दर ह़क़ीक़त अन्दर से बहुत ख़ौफ़ज़दा था, इसी वज्ह से लड़ाई को तूल दे रहा था ताकि मौक़अ़ देख कर राहे फ़रार इख़्तियार कर सके। जिस रात सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़्वाब देखा उसी रात हरक़िल ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स आस्मान से उतरा और उस ने उस के तख़्त को उलट कर रख दिया, उस के सर से ताज भी उड़ गया और कोई पुकारने वाला कह रहा है कि तेरी सल्त़नत के ज़वाल का वक़्त आ गया है। येह ख़्वाब देख कर हरक़िल हड़ बड़ा कर उठ बैठा और ख़्वाब की ता'बीर सोचता रहा। कुछ देर बा'द उस ने येह ता'बीर निकाली कि मेरी सल्त़नत का ज़वाल यक़ीनी है, लिहाज़ा उस ने फ़िलफ़ौर अपना ख़ज़ाना, क़ीमती जवाहिरात निकाले, अपनी बेटी ज़ैतून और ख़ानदान के लोगों को मह़ल के ख़ुफ़्या रास्ते से निकाल कर समुन्दर के किनारे भेज दिया, फिर अपने ख़ास ग़ुलाम को बुलाया और उसे अपना शाही लिबास पहना कर कहने लगा कि मैं अ़रबों से एक मक्रो फ़रैब करना चाहता हूं, तुम चूंकि मेरी शक्ल के बहुत ज़ियादा मुशाबेह हो लिहाज़ा कल सुब्ह़ तुम मेरी जगह लश्कर की कमान्ड करना, मैं भी जा कर इस्लामी लश्कर के पीछे छुप जाऊंगा, फिर ऐ़न लड़ाई के वक़्त ऐसा मक्र करूंगा कि अ़रबों को सख़्त हज़ीमत का सामना करना पड़ेगा। फिर हरक़िल ने उसे कुछ जंगी नसीह़तें की और अपने मह़ल के ख़ुफ़्या रास्ते से निकल कर साह़िल पर पहुंच गया, अपना तमाम मालो अस्बाब, रिश्तेदार वग़ैरा तमाम को ले कर कश्ती में सुवार हुवा और अपने आबाई शहर क़ुस्तुन्त़ीनिय्या रवाना हो गया, इस बात की किसी को भी ख़बर न हुई।

अगले दिन सुब्ह़ इस्लामी लश्कर बिल्कुल तय्यार हो कर मैदाने जंग में आया, रूमी लश्कर की कमान्ड वोही ग़ुलाम कर रहा था लेकिन किसी को भी शक न हुवा कि वोह हरक़िल नहीं बल्कि हरक़िल का ग़ुलाम है, सय्यिदुना यूक़न्ना رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ सय्यिदुना ज़िरार बिन अज़्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और

www.dawateislami.net

दीगर क़ैदियों को भी रूमी लिबास पहना कर रातों रात रूमी लश्कर में शामिल कर चुके थे नीज़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस दोनों हरक़िल के ग़ुलाम के क़रीब क़रीब ही थे, जब जंग शुरूअ़ हुई तो सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रूमियों पर टूट पड़े क्यूंकि उन्हें यक़ीने कामिल था कि आज रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने के मुत़ाबिक़ हमें फ़त्ह़ ह़ासिल हो जाएगी । रूमी लश्कर में खलबली मच गई, मौक़अ़ देख कर ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस ने ग़ुलाम को हरक़िल समझ कर उस पर ह़म्ला कर दिया, उसे नीचे गिराकर उसे गिरिफ़्तार कर लिया । रूमियों ने जब देखा कि हरक़िल बादशाह मारा गया है तो सब के सब भाग खड़े हुवे । इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन ने तमाम रूमियों का तआ़क़ुब किया और उन्हें वासिले जहन्नम किया । ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस जब हरक़िल के उस ग़ुलाम को बांध कर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में लाए तो उस ने इस बात का इक़रार किया कि मैं हरक़िल नहीं बल्कि उस का ग़ुलाम हूं और चूंकि मैं उस का हम शक्ल हूं इस लिये उस ने मुझे अपनी जगह खड़ा कर दिया और ख़ुद फ़रार हो गया ।

इन्त़ाकिया का ह़ाकिम क़ल्अ़ के ऊपर से सारी जंग देख रहा था, जब रूमी लश्कर के सिपाही भाग कर क़ल्अ़ की त़रफ़ आने लगे तो उस ने क़ल्अ़ के दरवाज़े बन्द कर लिये और जंग के लिये तय्यार हो गया लेकिन शहर वालों ने उसे मजबूर किया कि वोह सुल्ह़ करे, लिहाज़ा उस ने सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से सुल्ह़ कर ली और यूं इन्त़ाकिया भी फ़त्ह़ हो गया । इस्लामी लश्कर इन्त़ाकिया में तीन दिन ठहरा फिर वहां से कूच कर के दह़ाज़म नामी मक़ाम पर इस्लामी लश्कर ने पड़ाव किया ।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13)......साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ाज़िम के मक़ाम पर इस्लामी लश्कर का केम्प क़ाइम कर के अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ एक मक्तूब रवाना किया जिस में तमाम तफ़्सीलात लिख दीं नीज़ येह भी लिखा कि मुल्के शाम के तमाम अहम अ़लाक़े फ़त्ह़ हो चुके हैं, लिहाज़ा मेरा इरादा है कि मैं अब पहाड़ी अ़लाक़ों को फ़त्ह़ करूं । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप को कुल्ली इख़्तियार दे दिये । क़ासिद के वापस आने से पहले आप ने साह़िली अ़लाक़ों को फ़त्ह़ करने का फ़ैसला किया और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ुर्बो जवार में भेज दिया ।

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۳۰۰ ـ ۳۰۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

(1)......जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मम्बिज के क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो वहां के ह़ाकिम ने जंग करने का सोचा लेकिन शहर वालों ने शदीद मुख़ालफ़त की और क़ल्ए़ से बाहर आ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुल्ह़ कर ली, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ाकिमे शहर को वहां से भगा कर सय्यिदुना उ़बाद बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां का ह़ाकिम बना दिया।

(2)......मम्बिज से मुल्ह़िक़ एक क़ल्ए़ में रूमियों की एक बस्ती थी येह क़ल्आ़ भी सुल्ह़ के ज़रीए़ फ़त्ह़ हो गया और सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना नज्म बिन मुफ़र्ह़ फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यहां का ह़ाकिम बना दिया।

(3)......इस के बा'द सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बज़ाआ़ पहुंचे, अव्वलन उन्हों ने क़ल्ए़ के दरवाज़े बन्द कर लिये बा'द में सुल्ह़ कर ली, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना औस बिन ख़ालिद राबई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यहां का ह़ाकिम बनाया।

(4)......इस के बा'द आप बालिस पहुंचे, चूंकि शहर वालों को दीगर अ़लाक़ों की सुल्ह़ की ख़बर पहुंच चुकी थी इस लिये उन्हों ने भी सुल्ह़ कर ली, यहां ह़ज़रते सय्यिदुना बादर बिन औ़न ह़िमयरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाकिम मुक़र्रर किया गया।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन तमाम अ़लाक़ों को फ़त्ह़ करने के बा'द कसीर माले ग़नीमत के साथ इस्लामी लश्कर में वपास लौटे, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और उन्हें दुआ़ओं से नवाज़ा। फिर दोनों साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात का ज़िक्र कर रहे थे कि क़ासिद मदीनए मुनव्वरा से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का हुक्म नामा ले कर वापस पलटा।[1]

(14)......पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जैसे ही अमीरुल मोमिनीन का मक्तूब मौसूल हुवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा त़लब किया। सब ने अपनी ज़ाती राए पेश करने के बजाए आप की इत़ाअ़त का यक़ीन दिलाया नीज़ सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! पहाड़ी अ़लाक़ों की त़रफ़ पेश क़दमी करना बहुत मुफ़ीद है क्यूंकि रूमियों के दिलों में हमारा ख़ौफ़ बैठा हुवा है, जैसे ही हम पहाड़ी अ़लाक़े फ़त्ह़ करेंगे तो उन की रही कसर भी निकल जाएगी कि अब पहाड़ी अ़लाक़ों पर भी अ़रबों ने क़ब्ज़ा कर लिया है। चुनान्चे, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चार हज़ार सुवारों पर ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरदार मुक़र्रर कर के पहाड़ी अ़लाक़ों पर रवाना फ़रमाया। इन चार हज़ार

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح عزاز، ج ۱، ص ۲۷۶، ۳۰۶۔

www.dawateislami.net

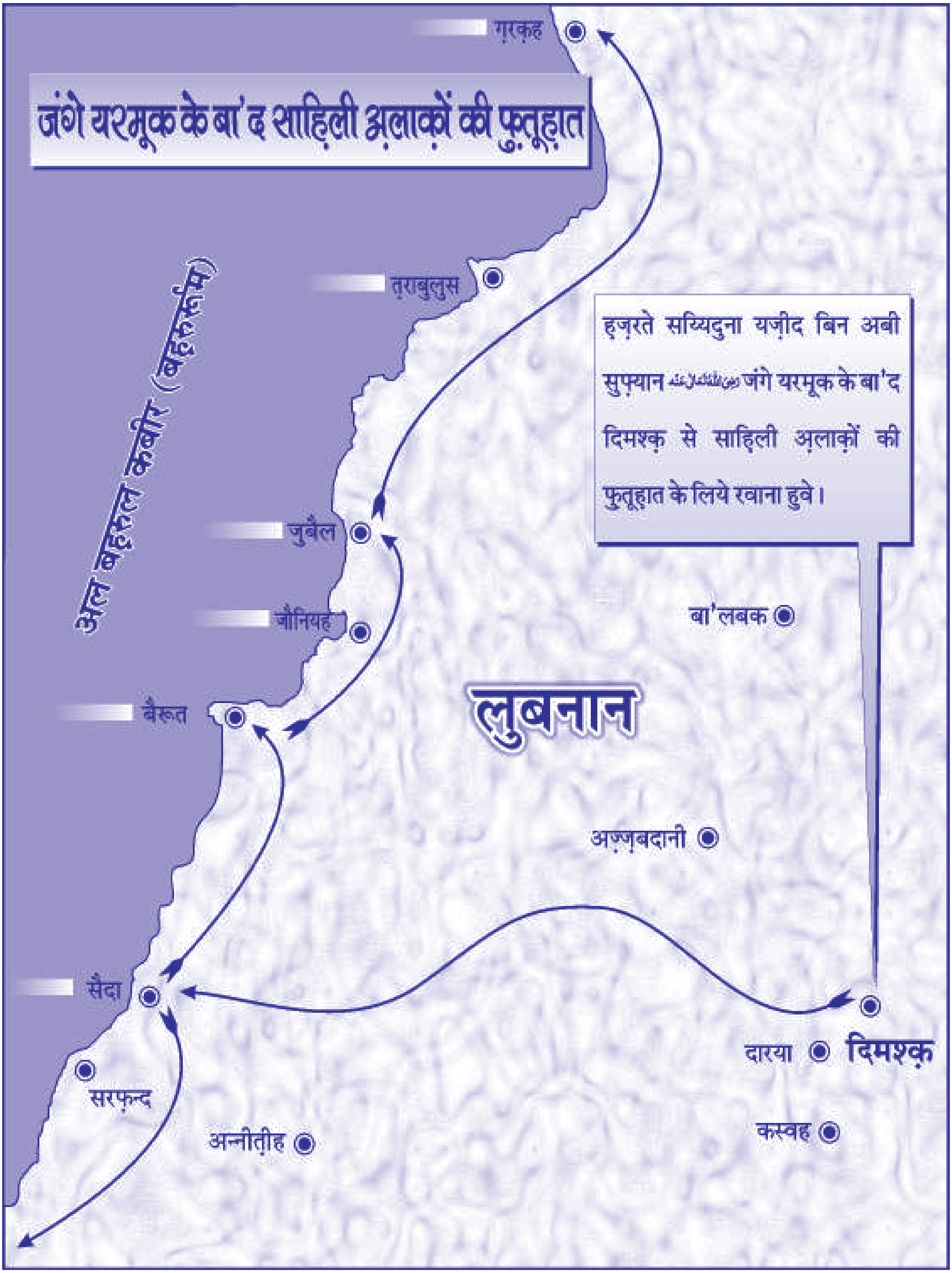

www.dawateislami.net

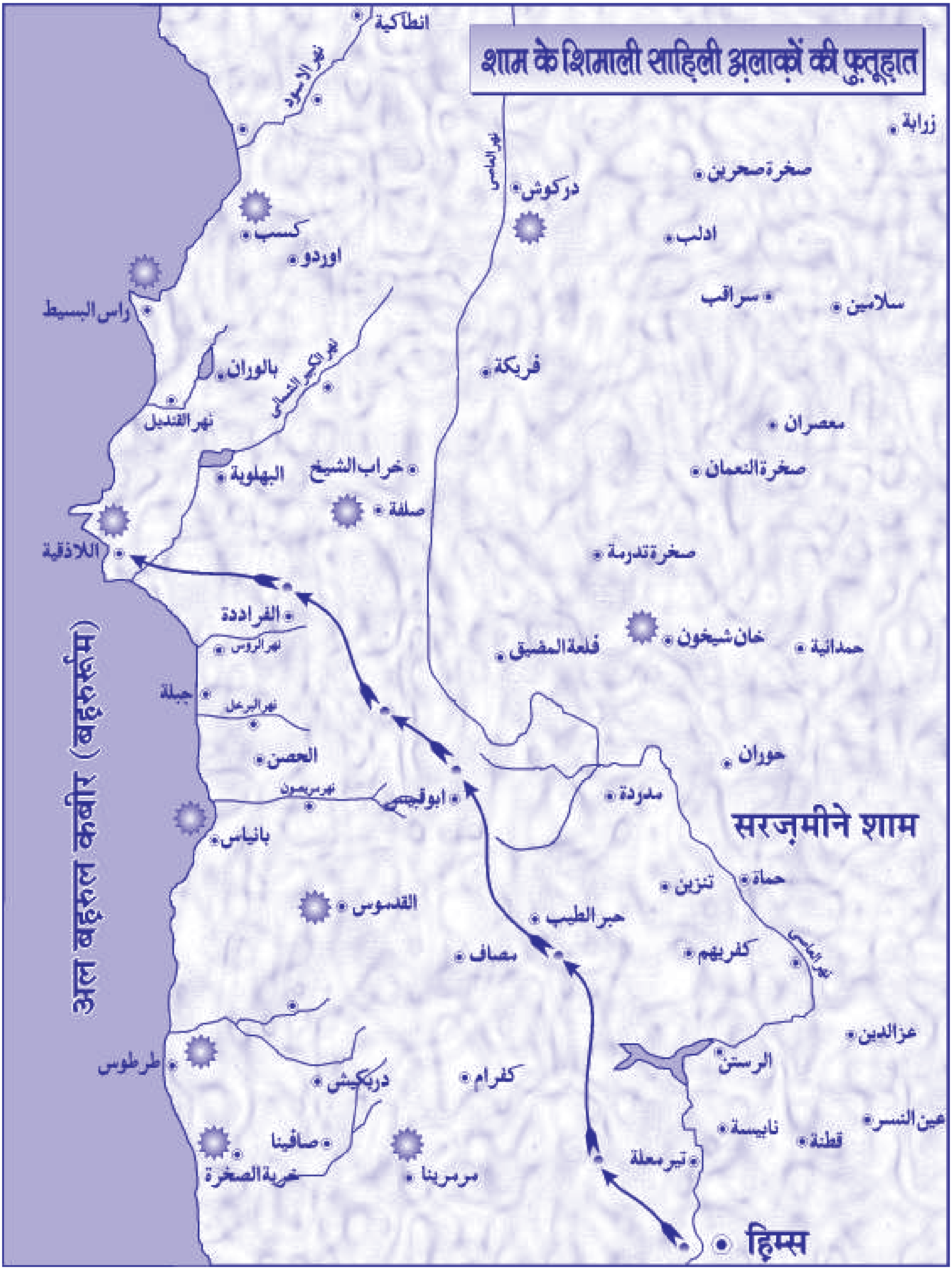

www.dawateislami.net

मुजाहिदीन में एक हज़ार गुलाम भी थे जिन के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه थे। दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़रता हुवा येह क़ाफ़िला एक गाऊं में पहुंचा, देखा तो गाऊं के माल मवेशी वग़ैरा सब मौजूद हैं लेकिन इन्सान कोई भी नहीं है।

तमाम मुजाहिदीन बड़े हैरान हुवे और कुफ़्फ़ार की साज़िश समझ कर चौकन्ने हो गए, नीज़ इस गाऊं से कसीर माले ग़नीमत भी ह़ासिल हुवा। फिर येह पूरा क़ाफ़िला मरजुल क़बाइल नामी वसीओ़ अ़रीज़ चरागाह में मुक़ीम हुवा। थोड़ी देर बा'द मुजाहिदीन एक रूमी को पकड़ कर लाए जिस ने बताया कि यहां के लोग मुसलमानों के डर से भाग कर पहाड़ों में छुप गए हैं और हरक़्लि ने तीस हज़ार का एक एक लश्कर इस अ़लाक़े में भेजा है।(1)

(15)......जंगे मरजुल क़बाइल

ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने मुजाहिदीन से मश्वरा किया तो तमाम मुजाहिदीन ने अपनी जान लुटाने का अ़ह्द किया। इसी दिन रूमी लश्कर भी कीड़े मकोड़ों की त़रह़ रेंगता हुवा मरजुल क़बाइल के मैदान में आ पहुंचा। दूसरे दिन सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने मुजाहिदीन की सफ़ें तरतीब दे दी, वहां से रूमी भी बिल्कुल जंग के लिये तय्यार थे, रूमी लश्कर में से एक मोटे डील डोल वाला नसरानी अ़रबी शहसुवार आया और मुक़ाबले के लिये ललकारने लगा, सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उस के मुक़ाबले के लिये निकले और देखते ही देखते उसे सीधा जहन्नम में भेज दिया, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने पुकार कर फ़रमाया : ''ऐ रूमियो ! मैं अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह का एक गुलाम हूं, पहले मुझ से लड़ो फिर उन से लड़ाई करना।'' रूमियों ने जब येह देखा कि मुसलमानों के तो गुलाम भी इस क़दर बहादुर हैं तो उन के दिल में शदीद ख़ौफ़ बैठ गया।

फिर सय्यिदुना दामिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने रूमी लश्कर पर ह़म्ला कर दिया, रूमी इधर उधर भागने लगे, बहुत शिद्दत से नेज़ाबाज़ी और शमशीर ज़नी का बाज़ार गर्म हुवा, रूमी लश्कर बोखला गए और उन्हों ने चारों त़रफ़ से मुजाहिदीन को घेर लिया। मुजाहिदीन ''یَا مُحَمَّد، یَا مُحَمَّد'' के ना'रे लगा रहे थे और रूमियों को जहन्नम में भेजते जा रहे थे। जब जंग मौक़ूफ़ हुई तो मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना दामिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को रूमी क़ैद कर के ले गए हैं।

---

1 ......فتوح الشام، ذکر غزوہ مرج القبائل، ج ۲، ص ۳-۵-

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह ने सय्यिदुना दामिस की ज़न्जीरें खोल दीं

दूसरे दिन इस्लामी लश्कर पूरी तय्यारी के साथ मैदान में आया, जब दोनों लश्करों में जंग जारी थी, ऐ़न उसी वक़्त मुजाहिदीन ने देखा कि रूमी लश्कर के पीछे से सफ़ें चीरते हुवे, रूमियों की लाशों के ढेर लगाते हुवे आगे चन्द मुजाहिदीन बढ़ते चले आ रहे हैं, पहले तो मुजाहिदीन ने समझा कि शायद येह फ़िरिश्ते हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुजाहिदीन की मदद के लिये भेजे हैं जिस त़रह़ जंगे बद्र में मुसलमानों की मदद के लिये आए थे। लेकिन जैसे ही वोह मुजाहिदीन क़रीब आए तो देखा कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना दामिस अबुल हौल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और उन के साथ क़ैद होने वाले मुजाहिदीन हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के क़रीब गए और फ़रमाया : "ऐ दामिस ! आप कहां थे ? पूरा इस्लामी लश्कर आप के लिये मुतफ़क्किर है।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! बात येह है कि कल जब मैं जंग में लड़ रहा था तो अचानक बहुत से रूमी मेरे ऊपर आ पड़े और मुझे अपने क़ाबू में कर के क़ैद कर लिया इसी त़रह़ मेरे दीगर साथियों को भी क़ैद कर लिया, फिर उन्हों ने हमें ले जा कर ज़न्जीरों से बांध दिया। जब रात हुई तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमा रहे हैं : لَا بَأْسَ عَلَيْكَ يَا دَامِسُ اِعْلَمْ اَنَّ مَنْزِلَتِيْ عِنْدَ اللهِ عَظِيْمَةٌ "या'नी ऐ दामिस ! तुम्हें फ़िक्र करने की कोई ज़रूरत नहीं, तुम जान लो कि मेरा मक़ामो मर्तबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बहुत बड़ा है।

फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी ज़न्जीरों पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह फ़ौरन खुल गईं, इसी त़रह़ मेरे दीगर साथियों की ज़न्जीरें भी खोल दीं, फिर इरशाद फ़रमाया : اَبْشِرُوْا بِنَصْرِ اللهِ فَاَنَا نَبِيُّكُمْ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ "या'नी तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद व नुस्रत की ख़ुश ख़बरी हो मैं तुम्हारा नबी **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** हूं।" फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَقْرِئْ عَنِّيْ مَيْسَرَةَ السَّلَامَ وَقُلْ لَّهُ جَزَاكَ اللهُ خَيْراً "या'नी ऐ दामिस ! मैसरा बिन मसरूक़ को मेरा सलाम कहना और उन्हें कहना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस त़रह़ अपने गुलामों की मदद फ़रमाई, उन की ज़न्जीरों को खोल कर क़ैद से रिहाई दिलाई, यक़ीनन तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद व

---

(1)......فتوح الشام، ذکر غزوۃ مرج القبائل داخل، ج۲، ص۸۔

www.dawateislami.net

नुस्रत का न सिर्फ़ पुख़्ता अ़क़ीदा रखते थे बल्कि उन का येह मुशाहदा था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुश्किल वक़्त में हमारी मदद फ़रमाते हैं, येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना दामिस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस मुबारक वाक़िए को ज़िक्र किया तो तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत ख़ुश हो गए और उन्हें इस बात का यक़ीन हो गया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दुश्मनों पर फ़त्ह व नुस्रत अ़ता फ़रमाएगा।

रूमियों के लिये कुमक और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह

दीगर कई छोटे छोटे अ़लाक़ों से रूमी लश्कर के लिये मुसलसल दो तीन तक कुमक आती रही जिस से उन के लश्कर में इज़ाफ़ा होता रहा, सय्यिदुना मैसरा बिन मसरूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने भी हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मक्तूब रवाना कर दिया कि मुजाहिदीन मुश्किल में हैं लिहाज़ा कुमक रवाना फ़रमाएं। वहां से हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तीन हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुवे, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस्लामी लश्कर में पहुंचने तक तमाम मुजाहिदीन साबित क़दमी से लड़ते रहे, जिस दिन वोह इस्लामी लश्कर में पहुंचे। जंग जारी थी, इसी दिन हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने रूमियों के बड़े नामी गिरामी शहसुवार को क़त्ल कर दिया जो हरक़िल का क़रीबी दोस्त था, बा'दे अज़ां आप गिरिफ़्तार हो गए और आप को हरक़िल के दरबार में भेज दिया गया जिस का तमाम मुजाहिदीन को बहुत अफ़्सोस था, जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने भी येह सुना तो आप को बहुत अफ़्सोस हुवा, बहर ह़ाल सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस्लामी लश्कर में पहुंचते ही रूमियों की सारी हवा निकल गई और उन्हों ने सुल्ह़ करने में ही आ़फ़िय्यत समझी, रात को उन्हों ने एक राहिब को सुल्ह़ करने भेजा, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सुब्ह़ का वक़्त अ़ता फ़रमाया। लेकिन जब सुब्ह़ सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने लश्कर को तरतीब दिया तो रूमी लश्कर से कोई ह़रकत न हुई काफ़ी देर तक कुछ न हुवा तो क़रीब जा कर देखने पर पता चला कि रूमी लश्कर अपने छोटे मोटे सामान के साथ रात ही को चुपके से फ़रार हो चुका है। बहर ह़ाल कसीर माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़त्ह़ व नुस्रत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

मक्तूबे फ़ारूक़े आ'ज़म और अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की रिहाई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه निहायत ही जलीलुल क़द्र सहाबी थे, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के क़ैद होने का सब ही को अफ़्सोस था, सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

www.dawateislami.net

ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्तूब रवाना किया जिस में येह बात भी ज़िक्र कर दी कि रूमियों ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गिरिफ़्तार कर के हरक़िल के पास भेज दिया है, चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हरक़िल को एक मक्तूब रवाना किया जिस का मज़्मून कुछ यूं था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَداً وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّهٖ مُحَمَّدِنِ الْمُؤَيَّدِ مِنْ عَبْدِ اللّٰهِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ اَمِيْرِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاِذَا وَصَلَ اِلَيْكَ كِتَابِيْ هٰذَا فَابْعَثْ اِلَيَّ بِالْاَسِيْرِ الَّذِيْ عِنْدَكَ وَهُوَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ حُذَافَةَ فَاِنْ فَعَلْتَ ذٰلِكَ رَجَوْتُ لَكَ الْهِدَايَةَ وَاِنْ اَبَيْتَ بَعَثْتُ اِلَيْكَ رِجَالًا وَاَيَّ رِجَالٍ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़म वाला*

तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ *के लिये हैं जिस की न तो ज़ौजा है और न ही औलाद और अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की रह़मत हो उस के नबी मुह़म्मद* صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *पर, येह ख़त़ अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के बन्दे उ़मर बिन ख़त़्त़ाब अमीरुल मोमिनीन की त़रफ़ से है, ह़म्दो सलात के बा'द मैं तुम्हें येह हुक्म देता हूं कि जब मेरा येह मक्तूब तुम्हारे पास पहुंचे तो तुम उस क़ैदी अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा को मेरे पास भेज दो, अगर तुम ने मेरे हुक्म पर अ़मल किया तो मैं तुम्हारी हिदायत की उम्मीद रखूंगा और अगर तुम ने मेरे हुक्म पर अ़मल करने से इन्कार किया तो मैं तुम्हें सबक़ सिखाने के लिये ऐसे लोगों को भेजूंगा जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के ज़िक्र से क़त़अ़न ग़ाफ़िल नहीं कर सकती, सलाम हो उस पर जो हिदायत की पैरवी करे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ैद में सख़्त सऊ़बतें बरदाश्त कीं लेकिन आप की साबित क़दमी में ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ न आया। जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मक्तूब हरक़िल के पास पहुंचा और उस ने खोल कर पढ़ा तो उस पर ऐसी हैबत त़ारी हुई कि चेहरे का रंग ही तब्दील हो गया, थर थर कांपने लगा, तमाम लोगों ने उस की कैफ़िय्यत को

www.dawateislami.net

महसूस किया, उस का सारा गुस्सा पानी हो गया और रवय्या इतना नर्म हो गया कि जैसे मुसलमानों से उसे कभी कोई अ़दावत थी ही नहीं, फिर उस ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत सारे तोहूफ़े तहाइफ़ दिये, नीज़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये एक बेश क़ीमत मोती दे कर आज़ाद कर दिया। उस ने अपने फ़ौजियों को हुक्म दिया कि इन्हें शाही ए'ज़ाज़ के साथ सरहद पार छोड़ कर आएं। चुनान्चे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले इस्लामी लश्कर में आए, आप को देख कर तमाम मुजाहिदीन ख़ुशी से झूम उठे, फिर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चले गए और वहां जा कर क़ैद की तमाम तफ़्सीलात बताईं, हरक़िल का तोहूफ़ा भी पेश किया।

चूंकि येह तोहूफ़ा ख़ास सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये हरक़िल ने भेजा था इस लिये लोगों ने येही मश्वरा दिया कि आप इसे अपने इस्ति'माल में लाएं, लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, इसे तुम फ़क़त़ मेरे लिये हलाल करना चाहते हो? हालांकि जो मुसलमान मुजाहिदीन यहां मौजूद नहीं और मुहाजिरीन व अन्सार की वोह औलाद जो अपनी माओं के पेट में है, अपने बाप की पुश्त में है, मैं उन के साथ कैसे ना इन्साफ़ी कर सकता हूं? उ़मर इस बात की ताक़त नहीं रखता कि येह तमाम लोग कल बरोज़े क़ियामत मुझ से मुतालबा करें।" फिर आप ने उस बेश क़ीमत मोती को बेच कर क़ीमत बैतुल माल में जम्अ़ करवा दी।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कैसी शानो शौकत के मालिक थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका ही नहीं बल्कि फ़क़त़ मक्तूब की भी येह हैबत थी कि बड़े बड़े बादशाह उस को पढ़ते ही थर थर कांपने लग जाते, यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम था, आप ने कुरआनो सुन्नत पर अ़मल किया, अ़द्लो इन्साफ़ को क़ाइम किया, कभी किसी पर ज़ुल्म न किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी आप की हैबत मख़्लूक़ के दिलों में डाल दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते तय्यिबा में तमाम हुक्मरानों व ज़िम्मेदारों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं, काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं।

(1) فتوح الشام، کتاب عمر، ج۲، ص۱۲۔

www.dawateislami.net

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र

उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बाति़ल इमामुल हुदा

तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16)......जंगे नख़्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पांच हज़ार मुजाहिदीन का इस्लामी लश्कर ले कर क़ैसारिया की त़रफ़ रवाना हुवे, रास्ते में चन्द अ़लाक़ों को ब ज़रीअ़ए सुल्ह़ फ़त्ह़ किया और नख़्ल नाम के एक गाऊं में पड़ाव किया। येह गाऊं क़ैसारिया के क़रीब था जहां का ह़ाकिम हरक़िल का बेटा फ़िलिस्त़ीन था। उस ने अस्सी हज़ार का लश्कर जम्अ़ कर रखा था, फिर वोह अपने बाप के पास क़ुस्तुन्त़ीनिय्या चला गया। जब वोह वहां मौजूद था तभी सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्तूब उस के बाप के पास आया था बा'दे अज़ां हरक़िल का इन्तिक़ाल हो गया। फ़िलिस्त़ीन ने इस्लामी लश्कर की ता'दाद मा'लूम कर के तक़रीबन अस्सी हज़ार (80,000) का लश्कर लिया और नख़्ल आ गया। उस के जासूसों ने उसे बताया था कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद फ़क़त़ पांच हज़ार है लेकिन जब उस ने इस्लामी लश्कर को देखा तो उसे ता'दाद बहुत ही ज़ियादा लगी इस लिये उस ने अगले दिन सुल्ह़ के लिये इस्लामी लश्कर के सिपह सालार सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया लेकिन कोई फ़ाइदा न हुवा और दोनों लश्करों में जंग होना तै़ पाई।[1]

रूमी लश्कर का फ़रार और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़

अगले दिन सुब्ह़ दोनों लश्कर मुकम्मल तय्यारी के साथ मैदाने जंग में आ गए, रूमी लश्कर से फ़िलिस्त़ीन का दायां बाज़ू और भारी जसामत का शहसुवार बित़रीक़ क़ैदमून मुक़ाबले के लिये आया और उस ने दो मुजाहिदीन को शहीद किया, फिर उस के मुक़ाबले के लिये सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए, दोनों में ख़ूब लड़ाई हुई, इसी दौरान ज़ोरदार बारिश शुरूअ़ हो गई, बारिश में चूंकि हथयार चलाना निहायत मुश्किल था इस लिये बिग़ैर हथयारों के कुश्ती शुरूअ़ हो गई, बित़रीक़ क़ैदमून सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नीचे गिरा कर उन के सीने पर सुवार

1......فتوح الشام، ذکر فتح قیساریة الشام بساحل البحر، ج ۲، ص ۱۴ - ۲۰ ملخصاً

www.dawateislami.net

हो गया और गला दबाने लगा, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी शहादत का यक़ीन हो गया, ऐन उसी वक़्त रूमी लश्कर से एक शहसुवार दौड़ता हुवा आया और उस ने बित़रीक़ क़ैदमून की गर्दन उड़ा दी।

शदीद बारिश की वज्ह से जंग मौक़ूफ़ कर के दोनों लश्कर अपनी अपनी क़ियामगाह में वापस चले गए थे, रूमी लश्कर में ख़ैमों की कसरत थी इस लिये वोह अपने ख़ैमों में पनाह गुज़ीं हो गए लेकिन इस्लामी लश्कर में चन्द ही ख़ैमे थे इस लिये वोह क़रीबी अ़लाक़े ह़ल्ब में चले गए जिन के साथ मुआ़हदा था। बारिश तक़रीबन तीन दिन तक जारी रही, चौथे दिन बारिश रुकी और सूरज निकला तो इस्लामी लश्कर तय्यार हो कर जंग के लिये नख़्ल के मैदान में आया लेकिन येह देख कर सब की आंखें फटी की फटी रह गईं कि रूमी लश्कर अपने तमाम साज़ो सामान के साथ वहां से क़ैसारिया फ़रार हो चुका था। इस्लामी लश्कर के सिपह सालार सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सारी सूरते ह़ाल लिख कर भेजी कि रूमी लश्कर राहे फ़रार इख़्तियार कर चुका है तो सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन लिखा कि मेरा ख़त़ मिलते ही क़ैसारिया कूच करो और मैं सुव्वर, अ़क्काअ और त़राबुलुस की जानिब रवाना होता हूं, चुनान्चे, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ैसारिया रवाना हो गए और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ त़राबुलुस रवाना हो गए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17)......फ़त्हे क़ल्अ़ए त़राबुलुस

सय्यिदुना यूक़न्ना की जंगी ह़िक्मते अ़मली और फ़त्हे क़ल्अ़ए त़राबुलुस

क़ल्अ़ए त़राबुलुस के लोगों को पहले ही मा'लूम हो गया था कि इस्लामी लश्कर उन के पास आ रहा है लिहाज़ा उन्हों ने फ़िलिस्त़ीन से मदद त़लब की, उस ने तीन हज़ार सिपाहियों का लश्कर उन की मदद के लिये भेज दिया। उधर सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस समेत सात हज़ार नौ मुस्लिम मुजाहिदीन के साथ साह़िली अ़लाक़ों की जानिब बत़ौरे त़लीआ़ रवाना किया। येह तमाम मुजाहिदीन रूमियों के लिबास में थे।

इस लश्कर की मुलाक़ात त़राबुलुस की ह़िफ़ाज़त की ग़रज़ से आने वाले लश्कर से हुई तो सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के सरदार का ए'तिमाद ह़ासिल किया। नीज़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़रीबी अ़लाक़े में मौजूद इस्लामी लश्कर के दो सौ सिपाहियों को भी क़ैद कर लिया जिस से उन का

1 ......فتوح الشام، البطریق قیدمون، ج ۲، ص ۲۵۔

www.dawateislami.net

ए'तिमाद मज़ीद पुख़्ता हो गया। चूंकि येह लश्कर त़राबुलुस जा रहा था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस को फ़त्ह़ करने का क़स्द कर लिया, जब आप इस लश्कर से जुदा हो कर थोड़ी ही दूर गए तो फ़ौरन अपने लश्कर को हुक्म दिया कि त़राबुलुस की ह़िफ़ाज़त के लिये जाने वाले तीन हज़ार के लश्कर को घेर लें। सात हज़ार मुजाहिदीन ने फ़ौरन तीन हज़ार लोगों को क़ैदी बना लिया। सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने तीन हज़ार मुजाहिदीन को त़राबुलुसी फ़ौज का लिबास पहना कर बक़िय्या लोगों को एक जगह छुपा दिया।

फिर आप त़राबुलुस रवाना हुवे, जैसे ही क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो अह्ले त़राबुलुस ने येही समझा कि फ़िलिस्त़ीन का लश्कर आ पहुंचा है लिहाज़ा उन्हों ने आप का शानदार इस्तिक़्बाल किया और क़ल्ए़ में ले गए। वहां जा कर आप ने अपने तमाम मुजाहिदीन को हुक्म दिया और फ़ौरन क़ल्ए़ पर क़ब्ज़ा कर लिया। वहां मौजूद लोगों के सामने आप ने ऐसा ईमान अफ़रोज़ बयान किया कि अक्सर लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और बक़िय्या लोगों ने सुल्ह़ कर ली। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने त़राबुलुस के तीन हज़ार क़ैदियों समेत अपने बक़िय्या चार हज़ार के लश्कर को त़राबुलुस बुला लिया। यूं बिग़ैर किसी जंग के सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी जंगी ह़िक्मते अ़मली के साथ क़ल्अ़ए त़राबुलुस फ़त्ह़ कर लिया। फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़ासिद के ज़रीए़ सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़त्ह़े त़राबुलुस की ख़ुश ख़बरी भेज दी।[1]

(18)......फ़त्ह़े क़ल्अ़ए सुव्वर

सय्यिदुना यूक़न्ना की जंगी ह़िक्मते अ़मली और गिरिफ़्तारी

त़राबुलुस का क़ल्अ़ फ़त्ह़ करने के बा'द सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने साथियों को हुक्म दे दिया था कि किसी को भी क़ल्ए़ से बाहर न निकलने दिया जाए। इस की वज्ह येह थी कि आप ने क़ल्अ़ए सुव्वर को भी फ़त्ह़ करने का मन्सूबा बना लिया था, वोह इस त़रह़ कि क़ल्अ़ए त़राबुलुस को एक बन्दरगाह की ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी, वहां पर कश्तियों की ब कसरत आमदो रफ़्त रहती थी। एक बार तक़रीबन पचास कश्तियां साह़िल पर आईं, पता चला कि इन तमाम कश्तियों में फ़िलिस्त़ीन बादशाह का हथयार, ग़ल्ला और दीगर सामान भरा हुवा है। सय्यिदुना यूक़न्ना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन को अपने क़ल्ए़ में बुलाया, मेहमान नवाज़ी की और बा'द में उन सब को पकड़ कर क़ैदख़ाने में डाल दिया। फिर उन कश्तियों पर सुवार हो कर क़ल्अ़ए सुव्वर पर रवाना हो रहे थे कि सय्यिदुना

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح صور وعکاء۔۔۔الخ، ج۲، ص۲۶۔

www.dawateislami.net

ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ पहुंचे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़ुश आमदीद कहा, क़ल्अ़ए सुव्वर की फ़त्ह़ से मुतअ़ल्लिक़ अपने मन्सूबे से आगाह किया और उन्हें क़ल्अ़ए त़राबुलुस में ही रहने की तजवीज़ दी, फिर कश्तियों में बैठ कर क़ल्अ़ए सुव्वर की त़रफ़ रवाना हो गए।

क़ल्अ़ए सुव्वर भी साह़िल के किनारे वाक़ेअ़ था, जब क़ल्ए़ के क़रीब पहुंचे तो क़ल्ए़ के ह़ाकिम अरमवील के आदमी आए आप ने उन को अपना तआ़रुफ़ करवाया कि हम फ़िलिस्त़ीन बादशाह के लिये अस्लेह़ा ले कर जा रहे हैं, हमारे पास खाने पीने का सामान ख़त्म हो गया है लिहाज़ा हमारी मदद की जाए। क़ल्ए़ के ह़ाकिम ने आप और आप के साथियों को अपना मेहमान बना लिया और बहुत ख़ात़िर तवाज़ोअ़ की, फिर एक बड़ी सी ह़वेली में आप को रात गुज़ारने के लिये रिहाइश दी। आधी रात को सय्यिदुना यूक़न्ना के चचा का बेटा जो आप के लश्कर में शामिल था और बात़िनी त़ौर पर मुर्तद हो चुका था, क़ल्अ़ए सुव्वर के ह़ाकिम के पास आया और आप की तमाम ह़क़ीक़त बयान कर दी। क़ल्ए़ का ह़ाकिम उसी वक़्त उठा और फ़ौरन आप को गिरिफ़्तार कर के क़ैद में डाल दिया, इन पर एक हज़ार सिपाहियों को निगरानी पर मुक़र्रर कर दिया। उस का इरादा था कि इन तमाम को फ़िलिस्त़ीन के पास भेज दिया जाए ताकि वोह उन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा दे।[1]

सय्यिदुना यूक़न्ना की आज़ादी व फ़त्ह़े क़ल्अ़ए सुव्वर

लेकिन सुब्ह़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने दो हज़ार के लश्कर के साथ क़ल्अ़ए सुव्वर के बाहर पहुंच गए ह़ाकिम अरमवील बिन नश्त़ा को भी ख़बर पहुंची तो उस ने जंग की तय्यारी कर ली। नीज़ उस ने सय्यिदुना यूक़न्ना और दीगर क़ैदियों पर मामूर एक हज़ार सिपाहियों को भी लश्कर में शामिल कर लिया, नीज़ जंग लड़ने के लिये क़ल्ए़ के बाहर मैदान में आ गया। ह़ाकिम अरमवील ने सय्यिदुना यूक़न्ना और तमाम क़ैदियों की अपने चचाज़ाद भाई बासील बिन मिन्जाईल को ज़िम्मेदारी सोंप दी, नीज़ क़ल्ए़ की तमाम चाबियां भी उसे दे दीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत कि ह़ाकिम अरमवील का चचाज़ाद भाई बासील ख़ुफ़्या त़ौर पर ईमान ला चुका था, क्यूंकि वोह बचपन से बुह़ैरा राहिब के पास जाता रहता था और उस से दीनी बातें सीखता था, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ लाए तो बासील ने भी आप की ज़ियारत की और दिल ही दिल में मो'तक़िद हो गए, लेकिन बा'द में आप को मौक़अ़ ही न मिला कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आ कर इस्लाम क़बूल करते, इसी त़रह़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का

[1] ......فتوح الشام، ذکر فتح صور وعکاء---الخ، ج ۲، ص ۲۷-۲۸ ملخصا۔

www.dawateislami.net

ज़माना भी गुज़र गया, फिर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ लाए तब भी मौक़अ़ न मिला, लेकिन अब वोह मौक़अ़ आ चुका था, लिहाज़ा उन्हों ने सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ को अपना सारा मुआमला बयान कर दिया और उन्हें आज़ाद कर के जंगी सामान से लेस कर दिया। सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ क़ल्ए़ की दीवार पर आए और अपने तमाम साथियों समेत एक ऐसा ना'रा बुलन्द किया कि क़ल्ए़ की बाहर मौजूद दोनों लश्करों ने इसे सुन लिया, रूमियों ने सुना तो उन के औसान ख़ता हो गए जब कि सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ समझ गए कि मुसलमानों ने क़ल्ए़ पर क़ब्ज़ा कर लिया है लिहाज़ा आप ने रूमी लश्कर पर ह़म्ला कर दिया, सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ क़ल्ए़ के बाहर निकले और आप ने भी ह़म्ला कर दिया, रूमी लश्कर बुरी त़रह़ फंस गया, आगे से सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ और पीछे से सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ तमाम रूमी भाग खड़े हुवे लेकिन सय्यिदुना यूक़न्ना رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ और सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ दोनों ने रूमियों का पीछा किया और भागने वाले रूमियों को जहन्नम में पहुंचा दिया। इस्लामी लश्कर शानो शौकत के साथ क़ल्ए़ में दाख़िल हुवा, तमाम शहर वालों ने अमान त़लब की, उन पर इस्लाम पेश किया गया अक्सर ने इस्लाम क़बूल कर लिया बक़िय्या ने जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली, इस त़रह़ क़ल्अ़ए सुव्वर पर भी परचमे इस्लाम लहराने लगा।[1]

(19)......फ़त्ह़े क़ैसारिया

फ़त्ह़े क़ैसारिया के मुख़्तसर अह़वाल

हरक़िल का बेटा फ़िलिस्त़ीन क़ैसारिया में मौजूद था जब उसे पता चला कि मुसलमानों ने क़ल्अ़ए सुव्वर पर भी क़ब्ज़ा कर लिया है तो उसे अपनी हलाकत का यक़ीन हो गया, लिहाज़ा उस ने अपने बाप के त़रीक़े पर चलते हुवे राहे फ़रार इख़्तियार करने का मन्सूबा बनाया। क़ल्ए़ के सद्र दरवाज़े पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ का लश्कर मौजूद था, लिहाज़ा उस ने समन्दर के रास्ते से फ़रार होना मुनासिब समझा। उस ने अपने चन्द मो'तमद आदमियों को ख़ुफ़्या रास्ते से समन्दर के घाट भेज कर चन्द कश्तियां तय्यार रखने का हुक्म दिया, फिर अपना ख़ज़ाना, सोना, जवाहिरात, नक़्दी और तमाम क़ीमती सामान बड़े बड़े सन्दूक़ों में भरा और अपने अह्लो इ़याल को ले कर ख़ुफ़्या रास्ते से निकल कर कश्तियों के ज़रीए़ अपने आबाई शहर क़ुस्तुन्त़ीनिय्या भाग गया।

उस के फ़रार होने की क़त़अ़न किसी को ख़बर न हुई, सुब्ह़ शहर वालों को मा'लूम हुवा कि फ़िलिस्त़ीन तो फ़रार हो चुका है लिहाज़ा शहर के बड़े बड़े रुअसा ने तै़ किया कि इस्लामी लश्कर के

---

[1] ......فتوح الشام، ذکر فتح صور وعکاء ۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۹ ۔ ۱ ۳ ملخصا۔

www.dawateislami.net

पास जा कर उन से सुल्ह़ कर ली जाए इसी में ही आ़फ़िय्यत है। लिहाज़ा सुब्ह़ के वक़्त शहर के अन्दर से शोरो गुल की आवाज़ें आईं और अचानक दरवाज़ा खुला तो सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सोचा शायद रूमी लश्कर ह़म्ला करने आ रहा है लेकिन देखा तो शहर के रुअसा एक क़ाफ़िले की सूरत में बाहर निकले। फिर उन्हों ने आप के सामने पहुंच कर बताया कि फ़िलिस्त़ीन तो क़ुस्तुन्त़ीनिय्या भाग गया लिहाज़ा हम आप से सुल्ह़ करना चाहते हैं, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से जिज़्ये की अदाएगी और सुल्ह़ का मुआ़हदा कर लिया, फिर इस्लामी लश्कर शानो शौकत से क़ल्अ़ए क़ैसारिया में दाख़िल हुवा।(1)

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के इब्तिदाई छे साल में पूरा शाम फ़त्ह़

क़ैसारिया फ़त्ह़ होने की ख़बर सुन कर अत़राफ़ के शहर व दिहात रमला, अ़क्का, अ़स्क़लान, ग़ज़्ज़ा, नाबुलुस, त़बरिय्या, बैरूत, जबला और लाज़िक़िय्या वग़ैरा के लोग भी सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए और अदाए जिज़्ये की शर्त़ पर सुल्ह़ कर ली यूं येह तमाम अ़लाक़े भी एक साथ फ़त्ह़ हो गए, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना बासील बिन औ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक सौ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ क़ल्अ़ए सुव्वर भेजा और उन्हें वहां का ह़ाकिम मुक़र्रर कर दिया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के इब्तिदाई छे साल में ही पूरा मुल्के शाम फ़त्ह़ हो गया, मुल्के शाम के बा'द मिस्र और इराक़ पर भी परचमे इस्लाम लहराया और यूं इस्लाम का नूरे हिदायत पूरी दुन्या में फैल गया।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते मिस्र

इस्लामी लश्कर और अलयून की फ़त्ह़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ही मुल्के शाम की फ़ुतूह़ात से फ़ारिग़ हुवे तो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि मिस्र की त़रफ़ रवाना हो जाएं, चुनान्चे, वोह इस्लामी लश्कर को ले कर मिस्र की त़रफ़ रवाना हो गए। सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाबे अलयून को फ़त्ह़ किया फिर इस्कन्दरिया और अलयून के दरमियान में एक गाऊं बल्हीब पहुंचे जिसे क़र्यतुर्रीश भी कहा जाता है।(3)

---

1 ......فتوح الشام، ذکر فتح صور وعکاء۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۱ ۳۔

2 ......فتوح الشام، ذکر فتح صور وعکاء۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲ ۳۔

3 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۲ ۱ ۵۔

www.dawateislami.net

इस्कन्दरिया की फ़त्ह

चूंकि इस्कन्दरिया के ह़ाकिम को पहले ही इस्लामी लश्कर की आमद का मा'लूम हो चुका था इस लिये उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुल्ह़ का पैग़ाम भेजा, नीज़ येह शर्त़ भी रखी कि हमारे जो क़ैदी तुम्हारे पास हैं उन्हें आज़ाद करना होगा। सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया कि मुझ पर भी एक ह़ाकिम मुक़र्रर है और मैं येह काम उस की इजाज़त के बिग़ैर नहीं कर सकता तुम इन्तिज़ार करो ताकि मैं उन से मुशावरत के बा'द कोई फ़ैसला कर सकूं। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना किया जिस की सारी सूरते ह़ाल बयान की। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिज़्ये की अदाएगी को तरजीह़ दी। ह़ाकिमे इस्कन्दरिया की शर्त़ के बारे में फ़रमाया कि "जो क़ैदी अ़रब तक जा चुके हैं चूंकि वोह सब इधर उधर हो गए हैं लिहाज़ा उन की ज़िम्मेदारी नहीं ली जा सकती अलबत्ता जो क़ैदी वहां मौजूद हैं, अव्वलन उन पर इस्लाम पेश किया जाएगा, जिस ने इस्लाम क़बूल कर लिया वोह इस्लामी लश्कर में शामिल हो जाएगा और जिस ने क़बूल न किया उसे भी शहर वालों की त़रह़ जिज़्या अदा करना होगा।" सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से ह़ाकिमे इस्कन्दरिया को आगाह कर दिया और उस ने भी इन तमाम बातों को क़बूल कर लिया। चुनान्चे, क़ैदियों पर इस्लाम पेश किया गया जिन्हों ने इस्लाम क़बूल न किया उन पर जिज़्या लाज़िम कर दिया गया। फिर इस्लामी लश्कर क़ल्ए़ में दाख़िल हुवा और इस्कन्दरिया ब ज़रीअ़ए सुल्ह़ फ़त्ह़ हो गया।(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते इराक़

जंगे कस्कर और मुसलमानों की फ़त्ह

इस्लामी लश्कर के अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमारिक़ से फ़ारिग़ हो कर कस्कर के अ़लाक़े की त़रफ़ बढ़े जहां कुफ़्फ़ार का लश्कर मौजूद था, उस का अमीर नरसी नाम का शख़्स था। एक चटयल मैदान में बड़ी घुमसान की जंग हुई, नरसी भाग खड़ा हुवा और मुसलमानों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया। उस जंग में मुसलमानों को कसीर माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा ख़ुसूसन खाने पीने का सामान तो शुमार से बाहर था। कई शाही बाग़ात भी मुसलमानों के हाथ आए जिन से अ़ाम आदमियों को खाने की इजाज़त न थी लेकिन मुसलमानों के

(1) ......المنتظم، ثم دخلت سنة عشرين، ذكر الخبر عن---الخ، ج ۴، ص ۲۹۱-

www.dawateislami.net

क़ब्ज़े में आते ही उस का फल तमाम लोगों को खिलाया गया । नीज़ उस जंग की फ़त्ह और माले ग़नीमत की तमाम तफ़्सील अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिख कर भेज दी गई ।(1)

जंगे बुवैब और मुसलमानों की फ़त्ह

जंगे नमारिक़ के बा'द जंगे जसर का वुक़ूअ़ हुवा जिस में इस्लामी लश्कर के कमान्डर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत पांच सिपह सालार शहीद हो गए और इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर की कमान्ड संभाल ली । आप ने क़ुर्बो जवार के कई लोगों को इस्लामी लश्कर में भरती कर के एक अ़ज़ीम लश्कर तय्यार कर लिया । ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना इ़स्मा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी उन की मदद के लिये दीगर अ़लाक़ों से पहुंच गए । मुसलमानों के लश्कर ने उस जगह पड़ाव किया था जहां आज कल कूफ़ा है, जब कि कुफ़्फ़ार के लश्कर का सिपह सालार मेहरान था और उस ने लश्कर को दरयाए फ़ुरात की दूसरी त़रफ़ उतारा । लश्करे कुफ़्फ़ार के आगे आगे देव हैकल हाथी और उन के आगे तीर अन्दाज़ थे । बा'दे अज़ां कुफ़्फ़ार का लश्कर दरयाए फ़ुरात उ़बूर कर के मुसलमानों की त़रफ़ आ गया, घुमसान की जंग हुई, लश्करे कुफ़्फ़ार का अमीर मेहरान मारा गया और उस का सारा लश्कर भाग खड़ा हुवा लेकिन भागने वालों में से कोई भी दरयाए फ़ुरात को उ़बूर न कर सका सब के सब मारे गए । जिस दिन येह जंग हुई उस दिन को ''यौमुल आ'शार'' या'नी दसों वाला दिन भी कहते हैं क्यूंकि मुसलमानों के लश्कर में सौ मुजाहिदीन ऐसे थे जिन्हों ने दस दस काफ़िरों को जहन्नम वासिल किया था । जंगे बुवैब 13 रमज़ानुल मुबारक सिन 13 हिजरी में लड़ी गई ।(2)

सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास की तअ़य्युनाती

इन तमाम फ़ुतूहात के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक अ़ज़ीम लश्कर दे कर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इराक़ भेजा और वहां मौजूद इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बजली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों को उन के ताबेअ़ कर दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहां फ़ौजी चौकियां भी बनाईं, बग़दाद और

---

1 ......الکامل فی التاریخ، ذکر وقعۃ السقاطیۃ بکسکر، ج ۲، ص ۲۸۴ ملخصا۔

2 ......الکامل فی التاریخ، ذکر وقعۃ بویب، ج ۲، ص ۲۸۸۔ ۲۹۱ ملخصا۔

www.dawateislami.net

जंगे बुवैब का नक़्शा
मा'रिकए
हक़ व बातिल
का मक़ाम
लश्करे कुफ़्फ़ार व
इक़ामत गाह
इस्लामी लश्कर व
इक़ामत गाह

ख़नाफ़स के बड़े बड़े तिजारती मराकिज़ भी मुसलमानों के हि़स्से में आए, बा'दे अज़ां अल कबास, बनू सिफ़्फ़ीन, बनी तग़लिब वग़ैरा पर भी ग़लबा ह़ासिल हुवा नीज़ कसीर माले ग़नीमत भी हाथ आया।(1)

इ़राक़ की अ़ज़ीम जंग "जंगे क़ादिसिया"

जंगे क़ादिसिया के अस्बाब

जंगे क़ादिसिया की तय्यारी सिन 13 हिजरी के आख़िरी महीने ज़ुल हि़ज्जा ही से शुरूअ़ हो गई थी इस की वज्ह येह थी कि ईरानियों में कई इख़्तिलाफ़ात हो गए थे, जिस के नतीजे में उन्हों ने यज़्दगिर्द को अपना ह़ाकिम बना लिया जो निहायत ही चालाक और होशयार शख़्स था, इस के ह़ाकिम बनते ही चन्द ऐसे क़बाइल जिन्हों ने मुसलमानों से अम्न के मुआ़हदे किये थे, फिर गए। येही वज्ह थी कि मुसलमानों को इस जंग के लिये पहले से तय्यारी करना पड़ी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने तमाम उ़म्मालों को इस बात का हुक्म दिया कि क़ाबिल, बहादुर, शह सुवार और जंगी मुआ़मलात में महारत रखने वालों को ले कर फ़ौरन मेरे पास पहुंचो।

बा'दे अज़ां उन तमाम लोगों को लश्करे इस्लाम में शामिल कर लिया गया। उन तमाम लोगों का लश्कर तय्यार कर के सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुसलमानों से मश्वरा किया और उन्हें ईरान के तमाम ह़ालात से आगाह किया, नीज़ इस बात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, कि मैं बज़ाते खुद जिहाद के लिये तुम्हारे साथ चलूंगा। अक्सर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस बात से इत्तिफ़ाक़ न किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो अकाबिरीन में से थे, क़त़ई जन्नती थे, अ़र्ज़ करने लगे : "हु़ज़ूर ! आप येह इरादा तर्क फ़रमा दें, किसी और शख़्स को लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमा कर रवाना कर दें। क्यूंकि अगर आप को कुछ हो गया तो ज़मीन में बसने वाले मुसलमान कमज़ोर हो जाएंगे।"(2)

सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास का तक़र्रुर

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कलाम सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरादा तर्क फ़रमा दिया और इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "किसे इस्लामी लश्कर का अमीर

---

1 ......الکامل فی التاریخ، ذکر خبر الخنافس۔۔۔الخ، ج ۲، ص ۲۹۲۔

2 ......البدایۃ والنھایۃ، ج ۵، ص ۱۰۳۔

www.dawateislami.net

मुक़र्रर किया जाए ?" सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर कच्छार के शेर ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीर मुक़र्रर फ़रमा दें।" दीगर तमाम लोगों ने भी इस बात की ताईद की। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बुला कर इराक़ की इस जंगे अ़ज़ीम का सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमा दिया। नीज़ उन्हें मुख़्तलिफ़ नसीह़तें भी फ़रमाईं।(1)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की फ़िरासत व दूरअन्देशी

इस जंग के लिये मुख़्तलिफ़ क़बाइल इस्लामी लश्कर में शामिल हो गए थे। क़बीला सुकून और किन्दा के चार सौ लोग भी इस लश्कर में शामिल होने के लिये आए। लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन लोगों से बे रुख़ी का इज़्हार फ़रमाया। जब कई बार ऐसा मुआ़मला हुवा तो लोगों ने आप से पूछा कि "हुज़ूर क्या बात है आप इन से बे रुख़ी क्यूं फ़रमा रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे येह लोग मश्कूक लग रहे हैं, ह़ालांकि इन से पहले कभी मुझे किसी अ़रब जमाअ़त से ऐसी ना गवारी मह़सूस नहीं हुई।" बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें भी लश्कर के साथ रवाना कर दिया लेकिन आप का दिल मुत़्मइन नहीं था और उन के जाने के बा'द भी उन के बारे में ना गवारी ही ज़ाहिर फ़रमाते रहे। सब लोग बड़े ह़ैरान हुवे कि ऐसा क्यूं हो रहा है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल उन से क्यूं बेज़ारी ज़ाहिर कर रहा है ? लेकिन किसी को क्या मा'लूम था कि येह कोई आ़म शख़्स का दिल नहीं है जो ज़ाती बुग़्ज़ो इनाद के सबब भी ना गवारी ज़ाहिर कर सकता है, बल्कि येह तो फ़ारूके़ आ'ज़म का दिल है जिस के इरादों पर ख़ुद क़ुरआन ने गवाही दी है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मोहरे तस्दीक़ सब्त की है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जय्यिद अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस के इरादों की ताईद की है। इस की ना गवारी बिग़ैर किसी अहम सबब के कैसे हो सकती थी ? फिर लोगों ने देखा कि वाक़ेई जिन लोगों से आप ने ना गवारी का इज़्हार किया था उन ही में एक शख़्स सौदान बिन ह़मरान था जिस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया था। उन्ही लोगों का एक ह़लीफ़ था जिस का नाम ख़ालिद बिन मुलजिम था जिस ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को शहीद किया था, उन्ही लोगों में कई ऐसे लोग थे जिन्हों ने सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिलों की मेहमान नवाज़ी की थी। जिस गुरौह में ऐसे बद बख़्त लोग हों,

1 ......البداية والنهاية، ج٥، ص١٠٣ ـ

www.dawateislami.net

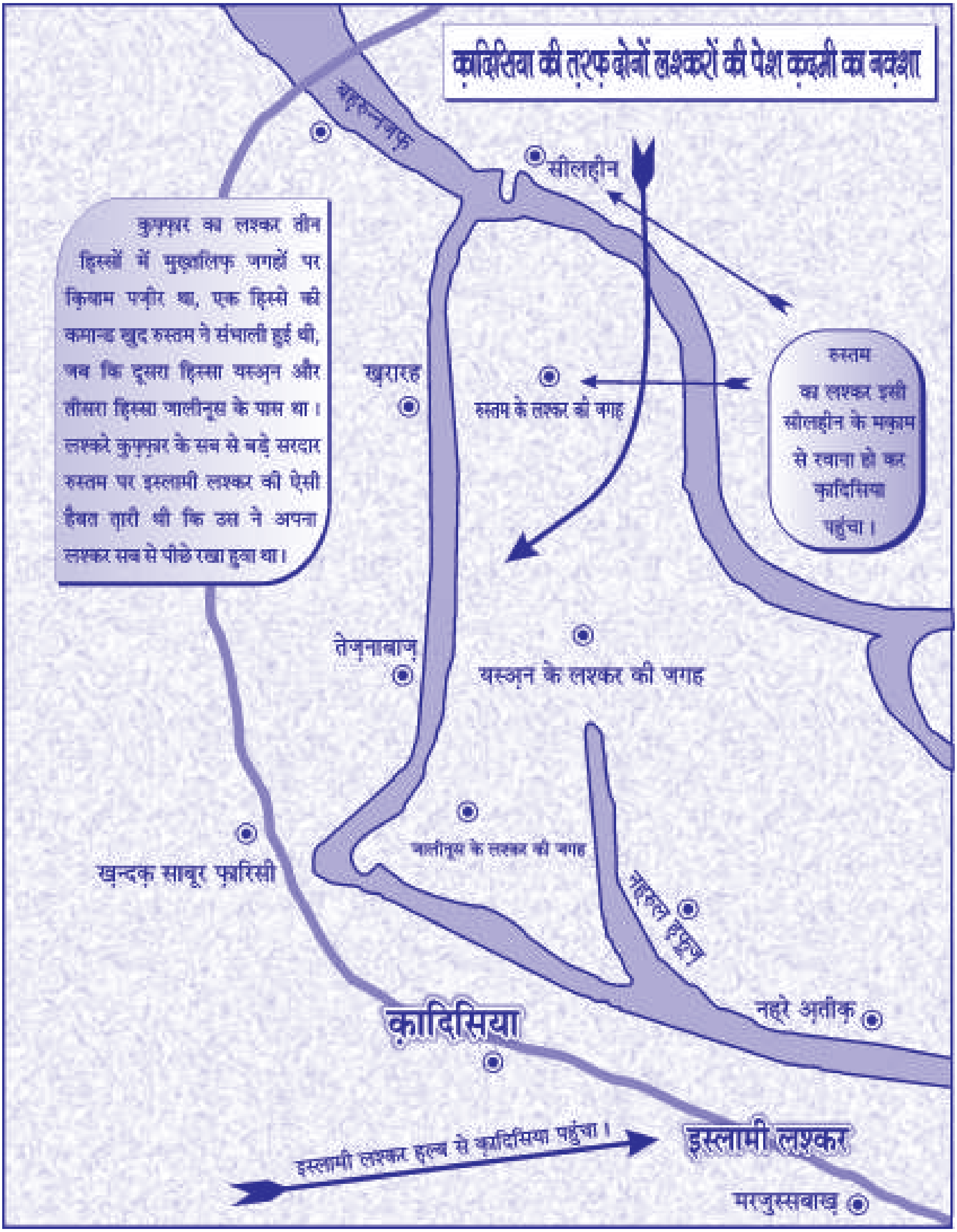
क़ादिसिया की त़रफ़ दोनों लश्करों की पेश क़दमी का नक़्शा
सीलहीन
कुफ़्फ़ार का लश्कर तीन हिस्सों में मुख़्तलिफ़ जगहों पर क़ियाम पज़ीर था, एक हिस्से की कमान्ड ख़ुद रुस्तम ने संभाली हुई थी, जब कि दूसरा हिस्सा यस्अ़न और तीसरा हिस्सा जालीनूस के पास था। लश्करे कुफ़्फ़ार के सब से बड़े सरदार रुस्तम पर इस्लामी लश्कर की ऐसी हैबत त़ारी थी कि उस ने अपना लश्कर सब से पीछे रखा हुवा था।
ख़ुरारह
रुस्तम के लश्कर की जगह
रुस्तम का लश्कर इसी सीलहीन के मक़ाम से रवाना हो कर क़ादिसिया पहुंचा।
तेज़नाबाज़
यस्अ़न के लश्कर की जगह
जालीनूस के लश्कर की जगह
ख़न्दक़ साबूर फ़ारिसी
नहरे अ़तीक़
क़ादिसिया
इस्लामी लश्कर हल्ब से क़ादिसिया पहुंचा।
इस्लामी लश्कर
मरजुस्सबाख़

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल उन से क्यूं ना गवारी ज़ाहिर नहीं करेगा ? यक़ीनन येह तारीख़ी वाक़िआ़ आप की अ़ज़ीम फ़िरासत व दूरअन्देशी पर दलालत करता है।(1)

जंगे क़ादिसिया में इस्लामी लश्कर की ता'दाद

इस्लामी लश्कर की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ ने चार हज़ार का क़ौल किया है क्यूंकि जब सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे थे तो उन के साथ इतने ही लोग थे। बा'ज़ ने आठ हज़ार का क़ौल किया है क्यूंकि मक़ामे ज़रूद में इतने लोग जम्अ़ हो गए थे। बा'ज़ ने नौ हज़ार का भी क़ौल किया है क्यूंकि इन के साथ क़ीसिय्यीन के एक हज़ार फ़ौजी भी मिल गए थे। बा'ज़ ने बारह हज़ार का क़ौल भी किया है क्यूंकि बनी असद के तीन हज़ार लोग भी शामिल हो गए थे।(2)

फ़ारूके आ'ज़म की मा'नवी शिर्कत

इस्लामी लश्कर के कमान्डरे आ'ज़म हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पल पल की ख़बर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब ज़रीअ़ए क़ासिद दे रहे थे, लश्कर को मुरत्तब करने के बा'द वोह फ़रमाने फ़ारूक़ी के इन्तिज़ार में थे। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक त़वील मक्तूब रवाना किया जिस में वा'ज़ो नसीहत के साथ साथ कई जंगी तदाबीर भी ज़िक्र की गई थीं। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह भी लिखा कि "जंगी ह़वाले से कई बातें मैं इस मक्तूब में लिखना चाहता हूं लेकिन चूंकि उस अ़लाके और दुश्मन की तफ़्सीलात मुझे मा'लूम नहीं इस लिये नहीं लिख सकता। लिहाज़ा तुम मुझे अ़लाके और दुश्मन की तफ़्सीलात लिख कर भेजो।" सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़लाके का तफ़्सीली ख़ाका और दुश्मन की भी तफ़्सीलात लिख कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ भेजीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें दोबारा जंगी हिदायात व तदाबीर लिख कर भेजीं, नीज़ येह भी लिखा कि मुझे इस बात का इल्हाम हुवा है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लश्कर को अ़ज़ीम फ़त्ह अ़ता फ़रमाएगा, लिहाज़ा घबराने की ज़रूरत नहीं, रब عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखना और दुश्मनों से जवांमर्दी से लड़ना।"

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जंग शुरूअ़ होने से क़ब्ल इस तफ़्सीली ख़त़्तो किताबत को देख कर ऐसा लगता था कि इस्लामी

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۳۸۴۔
2 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۳۸۴۔

जंगे क़ादिसिया में इस्लामी लश्कर की तरतीब

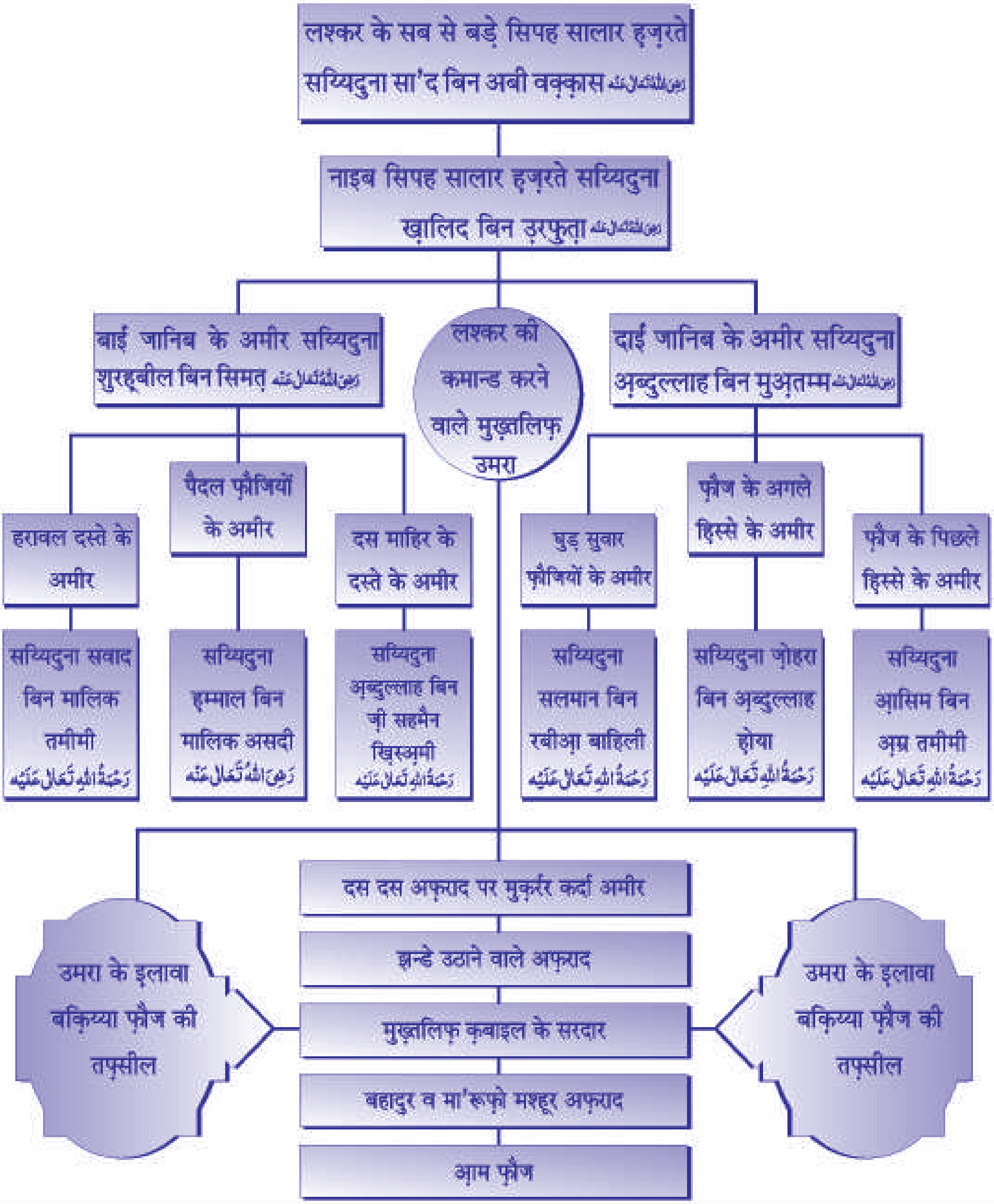

www.dawateislami.net

लश्कर की कमान्ड बज़ाते ख़ुद अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने संभाली हुई है और वोह मा'नवी तौर पर इस जंग में शरीक हैं। येही वज्ह है कि पूरा इस्लामी लश्कर कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन के ख़िलाफ़ जिहाद और क़िताल के लिये बहुत बे ताब था।

"यौमुल अबाक़िर" और इस की वज्हे तस्मिय्या

सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ छोटे छोटे मुख़्तलिफ़ दस्ते क़रीबी अ़लाक़ों में भेजते रहते थे ताकि वहां की सूरते ह़ाल पर मुकम्मल नज़र रख सकें। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम या आ़स बिन अ़म्र رضی اللہ تعالٰی عنہ को नह्रे फ़ुरात की त़रफ़ भेजा जब वोह मक़ामे मैसान के क़रीब पहुंचे तो उन्हें जानवरों और मवेशियों की ज़रूरत पड़ी। उन्हें देख कर अ़लाक़े के तमाम लोग छुप गए। उस अ़लाक़े के एक चरवाहे से पूछा तो वोह क़सम खा कर कहने लगा कि मुझे जानवरों के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम नहीं है। क़रीब में मौजूद एक बैल चिल्ला कर बोला : "अल्लाह عزوجل की क़सम ! येह शख़्स झूट बोल रहा है, देखो हम यहां मौजूद हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رضی اللہ تعالٰی عنہ अन्दर गए और जानवरों को बाहर ले आए। काफ़ी अ़र्से बा'द ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़माने में इस वाक़िए़ का ज़िक्र हुवा तो उस ने इस वाक़िए़ के ऐ़नी शाहिदीन को बुला कर गवाही ली और कहने लगा कि "जब उस वक़्त के काफ़िरों को मा'लूम हुवा कि बैल ने यूं कलाम किया है तो उन्हों ने क्या कहा ?" ऐ़नी शाहिदीन ने बताया कि उन्हों ने येह कहा कि "अल्लाह عزوجل हमारे दुश्मनों को इ़ज़्ज़त व फ़त्ह़ और हमें ज़िल्लतो रुस्वाई देगा।" ह़ज्जाज ने कहा : "जब येह बात हो तो ऐसे लोग मुत्तक़ी और परहेज़गार होते हैं।" इसी वज्ह से इसे "यौमुल अबाक़िर" या'नी गायों और मवेशियों का दिन कहा जाता है।[1]

इस्लामी सिफ़ारत और मुसलमानों की फ़त्ह़

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने चन्द जय्यिद अस्ह़ाब को जो क़ादिरुल कलाम भी थे, मुसलमानों का सफ़ीर बना कर ईरानी सरदार रुस्तम के पास भेजा। येह लोग रुस्तम के पास जा कर उस की मस्नद पर बैठ गए जिसे उस के दरबारियों ने ना पसन्द किया। बा'दे अज़ां उन्हें इस्लाम की दा'वत दी, ब सूरते दीगर जिज़्या का मश्वरा दिया। इस पर वोह लोग आपे से बाहर हो गए और जंग के लिये राज़ी हो गए। फिर वोह दरया पार कर के मुसलमानों की त़रफ़ आए,

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۳۸۸، الکامل فی التاریخ، ذکر ابتداء امر القادسیة، ج ۲، ص ۳۰۲۔

www.dawateislami.net

मुसलमानों ने उन पर ह़म्ला किया और बुरी त़रह़ शिकस्त दे दी। लश्करे कुफ़्फ़ार के सिपाही जिस अ़लाके़ में जाते मुसलमान उन्हें वहां से भगा देते यहां तक कि वोह मदाइन तक पहुंच गए। इस्लामी लश्कर ने वहां भी उन्हें पस्पा कर दिया।

यज़्दगिर्द के दरबार में इस्लामी सिफ़ारत

इस्लामी लश्कर की त़रफ़ से चन्द अस्ह़ाब इस्लामी सफ़ीर बन कर यज़्दगिर्द के दरबार में भी गए ताकि उस पर हु़ज्जत तमाम हो सके। वहां पहुंच कर इस्लामी सफ़ीरों से गुफ़्त्गू करने के बा'द कोई नतीजा न निकला बल्कि उस ने ज़लील करने के लिये मिट्टी का एक टोकरा दे कर वापस भेज दिया, जिसे ले कर तमाम सफ़ीर सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ की बारगाह में आ गए और इस फे़'ल से मुसलमानों की फ़त्ह़ का फ़ाल लिया कि उन्हों ने अपनी अ़लाके़ की मिट्टी दे कर गोया अपने ख़ज़ानों की चाबियां हमें दे दी हैं।

दोनों फ़ौजों का आमना सामना

ईरानी लश्कर की ता'दाद इस्लामी लश्कर से कहीं ज़ियादा थी, जंगी साज़ो सामान भी कसरत से उन के साथ था। नीज़ घोड़ों और ऊंटों के इ़लावा उन के पास हाथी भी मौजूद थे। जब कि इस्लामी लश्कर की ता'दाद क़लील होने के साथ साथ जंगी साज़ो सामान की भी कि़ल्लत थी। शाहे ईरान किस्रा ने ईरानी लश्कर की कमान्ड रुस्तम के हाथ में दे दी थी, रुस्तम इस जंग से बहुत ख़ौफ़ज़दा था, उस के ख़ौफ़ का आ़लम येह था वोह कमान्डर बनने के बा'द कमो बेश सात महीने तक जंग को मुअख़्ख़र करता रहा। इस की वज्ह येह थी कि बीसियों दफ़्आ़ उस ने येह ख़्वाब देखा कि ईरानी फ़ौज के लश्करों पर फ़िरिश्ते ने मोहर लगा दी है। बहर ह़ाल ईरानी फ़ौज दरयाए अ़तीक़ पार कर के दूसरी त़रफ़ आ गई अलबत्ता उन्हों ने दरया को पार करने के लिये अ़लाहि़दा से एक पुल बनाया था क्यूंकि पहले से मौजूदा पुल पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा था।

रुस्तम का फ़ारूके़ आ'ज़म से ख़ौफ़ज़दा होना

ईरानी लश्कर के सिपह सालार रुस्तम ने इस्लामी लश्कर की जासूसी के लिये एक शख़्स को भेजा उस ने वापस आ कर तमाम तफ़्सील से आगाह किया, जब रुस्तम अपनी फ़ौज ले कर दरया पार कर के दूसरी त़रफ़ आया तो उस वक़्त इस्लामी लश्कर में अज़ान हो रही थी और तमाम लोग नमाज़ के लिये जम्अ़ हो रहे थे, रुस्तम ने भी अपनी फ़ौज को जम्अ़ कर लिया लेकिन जासूस ने बताया कि येह जंग के लिये नहीं बल्कि नमाज़ के लिये जम्अ़ हो रहे हैं। रुस्तम ने कहा : ''आज सुब्ह़ ही मेरे कानों

www.dawateislami.net

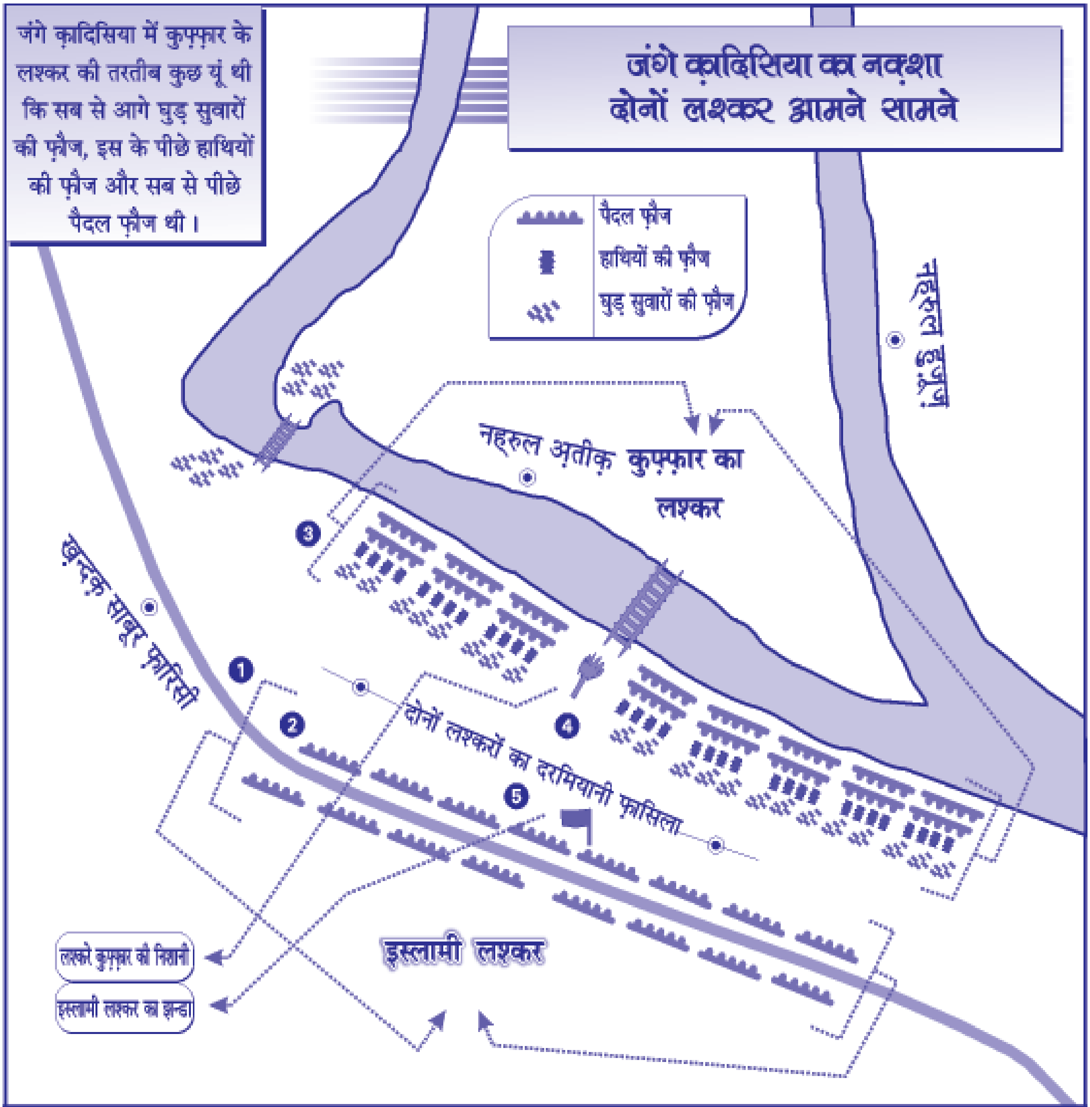

1....जंगे क़ादिसिया के लश्कर की तरतीब वग़ैरा तमाम मुआ़मलात बिल वासित़ा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ख़ुद ही मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे थे।

2....इस्लामी लश्कर की येह जंगी ह़िक्मते अ़मली थी कि आधी फ़ौज ख़न्दक़ को पार कर के दूसरी त़रफ़ मौजूद थी और बक़िय्या आधी फ़ौज ख़न्दक़ के पीछे मौजूद थी।

3....कुफ़्फ़ार के लश्कर की येह बे वुक़ूफ़ी थी कि उन का तक़रीबन पूरा का पूरा लश्कर दरया पार कर के मक़ामे क़ादिसिय्या पहुंच गया था।

4....उ़मूमन लश्कर का सिपह सालार लश्कर के सब से आगे होता है, लेकिन कुफ़्फ़ार के लश्कर के सरदार रुस्तम पे ऐसी हैबत त़ारी थी कि वोह लश्कर के सब से पीछे था।

5....सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की येह फ़िरासत थी कि उन्हों ने सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ जैसे जंगी माहिर का इन्तिख़ाब फ़रमाया।

www.dawateislami.net

में मुसलमानों के अमीर (ह़ज़रते सय्यिदुना) उ़मर (फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) की आवाज़ गूंज रही थी, वोह खुद इस्लामी लश्कर से बातें कर रहे थे और उन्हें हिक्मतो दानाई की बातें सिखा रहे थे।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कैसी हैरानी की बात है कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ईरान से मीलों दूर मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ फ़रमा हैं लेकिन वहां ईरानी लश्कर का सिपह सालार आप की ज़ाते मुबारका से ख़ौफ़ज़दा है यहां तक कि उसे ख़यालों में भी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गुफ़्त्गू सुनाई दे रही है। वाक़ेई जब कोई ह़ाकिम क़ुरआनो सुन्नत पर अ़मल करे, उसी के मुत़ाबिक़ अपनी रियासत को चलाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की रिआ़या के क़ुलूब में उस की मह़ब्बत और दुश्मनों के दिलों में हैबत डाल देता है।

घुमसान की जंग और मुसलमानों की फ़त्ह़

ईरानी लश्कर भी पूरी त़रह़ जंग के लिये तय्यार था, ईरानियों की ता'दाद एक लाख बीस हज़ार के क़रीब थी, उन के लश्कर में तीस हाथी थे और हर हाथी के साथ चार हज़ार फ़ौजी थे। इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त बीमार थे इस लिये आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़रफ़ुत़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना नाइब मुक़र्रर किया और इरशाद फ़रमाया : "जब मैं एक दफ़्आ़ ना'रए तक्बीर लगाऊं तो तमाम लोग अपने तस्मे बांध लें, दूसरी बार लगाऊं तो जंग के लिये तय्यार हो जाएं और तीसरी बार लगाऊं तो दुश्मन पर ह़म्ला कर दें, चौथी तक्बीर पर तमाम लश्करे कुफ़्फ़ार पर धावा बोल दिया जाए। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा, दोनों लश्करों के दरमियान तक़रीबन चार दिन तक लड़ाई होती रही। मुसलमानों ने ईरानियों के हाथियों की दुमें और सूंडें काट दीं नीज़ उन की आंखों में नेजे घोंप दिये जिस से वोह बोखला कर वापस भाग खड़े हुवे और अपनी ही फ़ौज को कुचलने लगे। बिल आख़िर मुसलमानों की बेहतरीन जंगी हिक्मते अ़मली के सबब ईरानी फ़ौज बिल्कुल पस्पा हो गई, ईरानियों के वोह तीस हज़ार सिपाही जिन्हों ने अपने आप को रस्सियों से बांध रखा था सब के सब क़त्ल हो गए उन में से एक भी न बचा जो अपनी फ़ौज की ह़ालत को बयान कर सकता। बहर ह़ाल ईरानी लश्कर के तमाम सिपाही भाग खड़े हुवे, इस्लामी लश्कर के कई दस्ते उन के तआ़क़ुब में गए और जो जो हाथ लगा सब को जहन्नम वासिल कर दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्लो करम, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेहतरीन जंगी हिक्मते अ़मली से

(1) ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۰۸۔

www.dawateislami.net

मुसलमानों को अ़ज़ीमुश्शान फ़त्हो नुस्रत अ़ता फ़रमाई। इस्लामी लश्कर के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़त्ह की तमाम तफ़्सीलात व ख़ुमुस वग़ैरा सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में भेज दिया।(1)

जंगे जलूला और मुसलमानों की फ़त्ह

जंगे क़ादिसिया से भाग कर ईरानी दीगर कई अ़लाक़ों में भाग गए थे, इस्लामी लश्कर के कई दस्तों ने उन का तआ़क़ुब किया और जहां जो भी मिला वासिले जहन्नम कर दिया गया। मुख़्तलिफ़ दस्ते ईरानियों के तआ़क़ुब में जलूला के मक़ाम तक पहुंच गए। वहां ईरानियों के एक लश्कर से जंगे जलूला हुई, بِحَمْدِ اللہِ تَعَالٰی यहां भी मुसलमानों को फ़त्ह नसीब हुई।(2)

शहरे बसरा की ता'मीर

इसी जंगे क़ादिसिया के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहरे बसरा को ता'मीर व आबाद किया जिस की तफ़्सीलात इसी किताब के बाब "अ़हदे फ़ारूक़ी की ता'मीरात" सफ़्ह़ा 793 पर मुलाह़ज़ा की जा सकती हैं।

अ़हदे ईसवी के एक शख़्स का ज़ुहूर

अ़हदे फ़ारूक़ी में दौरे ईसवी का एक शख़्स नुमूदार हुवा

मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमान भेजा कि ह़ज़रते नज़्ला बिन मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कमान में इराक़ के शहर ह़ुलवान पर चढ़ाई के लिये लश्कर रवाना किया जाए, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना नज़्ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को तीन सौ सुवार दे कर रवाना किया, वोह ह़ुलवान पहुंचे और ह़म्ला किया, मुसलमानों को फ़त्ह ह़ासिल हुई, कसीर माल बतौरे ग़नीमत हाथ आया। सय्यिदुना नज़्ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सामान और लश्कर समेत वापस आ रहे थे कि रास्ते में नमाज़े अ़स्र का अख़ीर वक़्त हो गया, सूरज ग़ुरूब होने लगा। आप ने क़ैदियों और माले ग़नीमत को दामने कोह में छुपाया और नमाज़े अ़स्र के लिये अज़ान देना शुरूअ़ की, जैसे आप ने कहा : "اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ" तो अचानक पहाड़ में से आवाज़ आई : "ऐ नज़्ला तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ूब अ़ज़्मत बयान की।" जब आप ने कहा : "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ" तो

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۰۹، البدایۃ والنہایۃ، ج ۵، ص ۱۱۲ ملخصاً۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۳۲۔

www.dawateislami.net

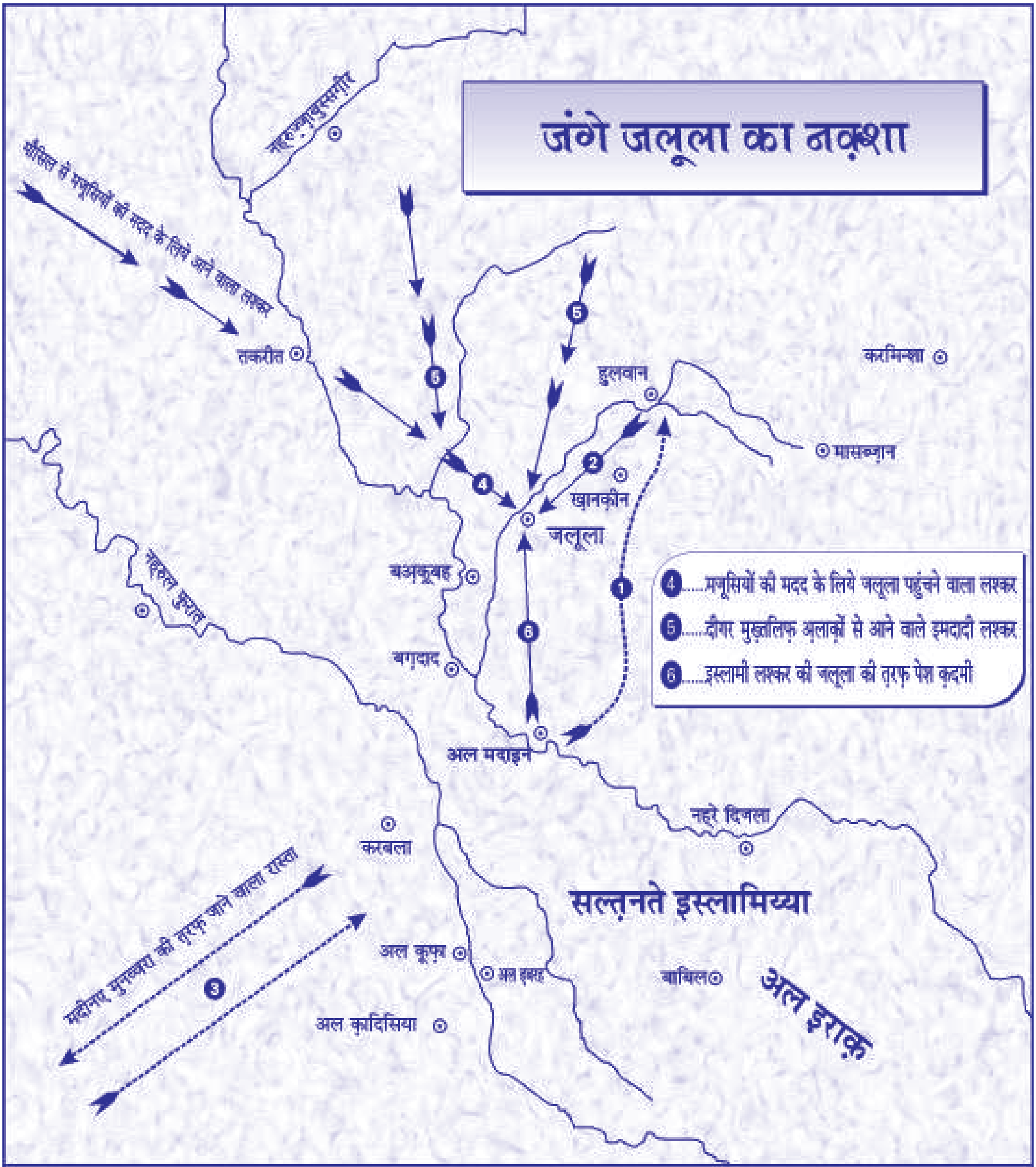

1....जब इस्लामी लश्कर मदाइन को फ़त्ह करने के लिये उस की त़रफ़ बढ़ा तो कुफ़्फ़ार का सरदार यज़्दगिर्द वहां से हुलवान की त़रफ़ भाग गया।

2....जलूला में मौजूद मेहरान राज़ी इस्लामी लश्कर का सुन कर क़ल्ए के हिफ़ाज़ती इक़्दामात में लग गया था और यज़्दगर्द की नज़रें उसी पर लगी हुई थीं।

3....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जलूला के मुतअ़ल्लिक़ अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ को तफ़्सीलात लिख कर भेजीं तो आप ने जवाबन एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में लश्कर की तरतीब के हवाले से तमाम तफ़्सीलात मौजूद थीं कि फ़ुलां शख़्स को फ़ुलां जगह मुतअ़य्यन किया जाए।

www.dawateislami.net

पहाड़ से दोबारा आवाज़ आई : "येह वोही मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन की बिशारत ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दे गए हैं और इन्ही की उम्मत पर क़ियामत क़ाइम होगी (या'नी येह आख़िरी रसूल हैं) ।" जब आप ने कहा : "حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ" तो आवाज़ आई : "मुबारक हो उसे जो नमाज़ की त़रफ़ चल कर गया और इस पर पाबन्दी की । जब आप ने कहा : "حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ" तो आवाज़ आई : "जिस ने इसे मान लिया वोह वाक़िअ़तन कामयाब है ।" फिर आख़िर में जब आप ने कहा : "اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" तो आवाज़ आई : "ऐ नज़्ला ! तुम ने इख़्लास की तमाम मनाज़िल तै कर लीं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर जहन्नम की आग ह़राम फ़रमा दी ।"

अज़ान ख़त्म कर के सय्यिदुना नज़्ला رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और आप के साथियों ने पूछा : "तुम कौन हो ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे, जिन्न हो या फ़िरिश्ता ? या फिर कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पोशीदा बन्दा । तुम्हारी आवाज़ तो हम ने सुनी है अब अपना चेहरा भी दिखाओ, हम लोग नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, सुल्त़ाने दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का लश्कर हैं ।"

रावी कहते हैं कि अचानक पहाड़ की चोटी चक्की के मुंह की त़रह़ फट गई और उस में से एक शख़्स बाहर निकला, उस का सर और दाढ़ी बहुत सफ़ेद हो चुकी थी, उस ने सौफ़ का लिबास ज़ेबे तन कर रखा था । उस ने आते ही सलाम किया : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه" लोगों ने जवाब दिया : وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه! "आप कौन हैं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ।" वोह कहने लगा : "मैं ज़रीत बिन बरशुमला हूं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पाकीज़ा बन्दे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुझे इस पहाड़ में ठहराया था और आस्मानों से अपने दोबारा नुज़ूल तक मेरे ज़िन्दा रहने की दुआ़ की थी, आप लोग जब अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में पहुंचें तो उन्हें मेरा सलाम अ़र्ज़ करें और येह भी अ़र्ज़ कीजियेगा कि : ऐ उ़मर ! हुकूमत को सीधा रखें, लोगों के क़रीब रहें, क़ियामत क़रीब आ गई है और ऐ उ़मर ! जब येह बातें उम्मते मुह़म्मदिय्या में पैदा हो जाएं तो फिर दुन्या से चले जाने में ही आ़फ़िय्यत है : (1) जब मर्द मर्दों से और औ़रतें औ़रतों से अपनी शहवत पूरी करने लगें । (2) जब लोग अपना नसब बदलने लगें, ग़ुलाम ख़ुद को दूसरे आक़ाओं की मिल्किय्यत बतलाएं । (3) छोटों पर बड़े शफ़्क़त न करें । (4) नेकी का हुक्म न दें और बुराई से मन्अ़ न करें । (5) माल व दुन्या कमाने की ख़ात़िर इ़ल्म ह़ासिल करें । (6) बारिशें ब कसरत हों । (7) औलाद वबाले जान बन जाए । (8) लोग बुलन्दो बाला

www.dawateislami.net

मनारे बनाने लगें। (9) कुरआने करीम के नुस्ख़ों पर सोना चढ़ाने लगें। (10) मस्जिदों की ज़ेबो ज़ीनत करने लगें, मगर मस्जिदें नमाज़ियों से ख़ाली हों। (11) रिश्वत आ़म हो जाए। (12) मज़बूत़ इमारतें बनने लगें। (13) ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगें। (14) दुन्या के इवज़ दीन फ़रोख़्त करने लगें। (15) रिश्तेदारों से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी आ़म होने लगे। (16) हिक्मतें फ़रोख़्त हों। (17) सूद फैल जाए। (18) मालदार होना ही वज्हे एह़तिराम बन जाए। (19) अदना शख़्स घर से निकले और उस से बेहतर लोग राह में खड़े हो कर इसे सलाम करें। (20) औ़रतें घुड़ सुवारी करने लगें। जब येह सारी बातें आ़म होने लगें तो फिर दुन्या से भाग कर किसी पहाड़ के ग़ार में छुप जाना और वहीं पे ख़ुदा की याद में मगन हो जाने में ही आ़फ़िय्यत होगी।" येह कह कर वोह शख़्स रूपोश हो गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना नज़्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तफ़्सील से लिख कर भेज दिया और उन्हों ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ लिखा। जवाब में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि वोह अपने साथ मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम को ले कर उस पहाड़ पर पहुंचें और अगर वोह शख़्स दोबारा मिले तो उसे मेरा सलाम कहें। चुनान्चे, सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चार हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम को साथ ले कर उस पहाड़ पर पहुंचे और चालीस दिन तक मुसलसल अज़ान देते रहे मगर जवाबन न तो कोई आवाज़ सुनी और न ही कोई दूसरा जवाब आया।[1]

अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूहाते ईरान

मुल्के शाम, मिस्र व इराक़ की फ़ुतूहात के बा'द सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ईरान की तस्ख़ीर के ह़वाले से कोई इरादा न था, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ देख रहे थे कि ईरानी हर वक़्त अपनी फ़ौज को तय्यार रखते थे और किसी न किसी अ़लाक़े पर ह़म्ले करते ही रहते थे, नीज़ मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में भी बग़ावत होती रहती थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मुशावरत की तो मा'लूम हुवा कि उन का ह़ाकिम या'नी यज़्दगिर्द जब तक ज़िन्दा और उस अ़लाक़े में मौजूद है उस वक़्त तक ऐसा होता रहेगा इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईरान पर लश्कर कशी की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 ......تاریخ بغداد، من اسمہ عبدالرحمن، ج ۱۰، ص ۲۵۵۔

www.dawateislami.net

ने मुख़्तलिफ़ लश्कर तय्यार कर के उन्हें मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब की सिपह सालारी में ईरान रवाना कर दिया जिन्हों ने बा'ज़ अ़लाक़े तो बिग़ैर जंग ब ज़रीअ़ए सुल्ह़, बा'ज़ अ़लाक़े छोटी और मुख़्तसर सी जंग के ज़रीए़ और बा'ज़ अ़लाक़े अच्छी ख़ासी लड़ाई के बा'द फ़त्ह़ कर लिये।

इस्लामी लश्कर और फ़त्हे़ आज़रबाईजान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आज़रबाईजान पर ह़ज़रते सय्यिदुना बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया था, फिर उन की मदद के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सिमाक बिन ख़रशा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेज दिया। जब इस्लामी लश्कर मैदाने जंग में पहुंचा तो वहां कुफ़्फ़ार का लश्कर भी पहुंच गया। आज़रबाईजान में येह इस्लामी लश्कर की पहली जंग थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को फ़त्ह़ व नुस्रत से नवाज़ा और काफ़िरों को शिकस्त से दो चार किया, लश्करे कुफ़्फ़ार का सिपह सालार इस्फ़न्दियाज़ गिरिफ़्तार हो गया। आज़रबाईजान के लोग भाग कर पहाड़ों में छुप गए। सय्यिदुना बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्फ़न्दियाज़ को अपने पास क़ैद कर के रखा और सारे अ़लाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया।[1]

अ़लाक़ा "रै" की फ़त्ह़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बारह हज़ार का लश्कर दे कर हमदान भेजा, उन्हों ने वहां पहुंच कर बक़िय्या तमाम मक़ामात फ़त्ह़ कर लिये, अत़राफ़ के अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे तो शहर वालों ने आप से सुल्ह़ कर ली, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से रै के मक़ाम पर पहुंचे, रै के ह़ाकिम ने पहले से ही जंग की तय्यारी की हुई थी, वहां के चन्द लोग इस्लामी लश्कर के साथ भी मिल गए और जंग शुरूअ़ हो गई, सय्यिदुना नुऐ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ुफ़्या रास्ते से इस्लामी लश्कर के एक दस्ते को क़ल्ए़ में दाख़िल कर दिया और यूं क़ल्ए़ पर क़ब्ज़ा कर लिया, फिर अह्ले शहर ने सुल्ह़ कर ली और यूं रै को भी फ़त्ह़ कर लिया।[2]

इस्लामी लश्कर और फ़त्हे़ जुरजान

जुरजान की फ़त्ह़ के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहुंचे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना क़ासिद ह़ाकिमे जुरजान के पास भेजा ताकि उस से क़बूले इस्लाम या सुल्ह़ या जंग के

1 ......تاریخ طبری،ج۲،ص۵۳۹۔

2 ......البدایۃ والنھایۃ،ج۵،ص۱۹۹۔

www.dawateislami.net

मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू की जाए। हाकिमे जुरजान को जैसे ही इस्लामी लश्कर के सिपह सालार का मक्तूब मिला तो उस ने फ़ौरन सुल्ह़ कर ली और जुरजान को जंग से बचा लिया, इस्लामी लश्कर शहर में दाख़िल हुवा और फिर वहां के लोगों से जिज़्या वुसूल किया। जो लोग सरह़दों की ह़िफ़ाज़त करते थे, उन का जिज़्या मुआ़फ़ कर दिया गया।[1]

इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े त़बरिस्तान

जुरजान के बा'द त़बरिस्तान को भी ब ज़रीअ़ए सुल्ह़ फ़त्ह़ किया गया अलबत्ता इस के ह़ाकिम ने येह शर्त़ रखी कि जब तक दोनों त़रफ़ से मुआ़हदे का इक़रार नहीं होगा उस वक़्त तक सुल्ह़ न होगी चुनान्चे, सय्यिदुना सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे मुआ़हदा तह़रीर कर दिया जिस में मुसलमानों की इआ़नत और दुश्मनों की मदद न करने का अ़ह्द था, बा'दे अज़ां इस पर चन्द गवाहों के दस्तख़त़ भी कर दिये गए। यूं त़बरिस्तान भी बा आसानी ब ज़रीअ़ए सुल्ह़ के फ़त्ह़ हो गया।[2]

इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े "बाब" व "आरमीनिया"

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़लाक़ा बाब की त़रफ़ भेजा। ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक दस्ता दे कर अपने आगे भेजा और ख़ुद भी उन के बा'द रवाना हो गए। सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब बाब के अ़लाक़े में पहुंचे तो वहां के ह़ाकिम ने आप से सुल्ह़ कर ली अलबत्ता जिज़्ये के बदले में येह दरख़्वास्त की, कि हम इस्लामी लश्कर की मदद करेंगे और येही हमारा जिज़्या होगा। सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत के बा'द इस बात को क़बूल कर लिया नीज़ इस बात की सराह़त फ़रमा दी कि जो लोग इस्लामी लश्कर की मदद करेंगे उन का इस साल का जिज़्या मुआ़फ़ है और जो वापस शहर में आ जाएंगे उन्हें शहर वालों की त़रह़ जिज़्या अदा करना होगा। सय्यिदुना सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इस अनोखे जिज़्ये की तरकीब लिख कर भेज दी जिसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूल फ़रमा लिया इस के बा'द येह रवाज चल पड़ा और कई

[1] ......البدایۃ والنہایۃ، ج۵، ص۲۰۰۔

[2] ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۳۸۔

www.dawateislami.net

अ़लाक़ों की फ़ौजें येही जिज़्या देती रहीं, जिस से इस्लामी लश्कर की क़ुव्वत में बहुत इज़ाफ़ा हुवा, चुनान्चे, अह्ले आरमीनिया ने भी इसी जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली।(1)

इस्लामी लश्कर और फ़त्हे ख़ुरासान

जंगे जलूला में जब अह्ले जलूला को शिकस्त हुई तो शाहे ईरान यज़्दगिर्द "रै" अ़लाके़ की त़रफ़ रवाना हुवा। बा'ज़ अ़लाक़ों वाले बग़ावत कर के उस से मिल गए, वोह मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से होता हुवा बल्ख़ पहुंच गया। वहां कूफ़ा के इस्लामी लश्कर के साथ जंग हुई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे शिकस्त दी और वोह ईरानियों को ले कर दरया पार कर के भाग गया। जब अह्ले ख़ुरासान ने देखा कि यज़्दगिर्द भाग गया है तो उन्हों ने इस्लामी लश्कर से सुल्ह़ कर ली। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़त्ह़े ख़ुरासान की तफ़्सील लिख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेज दी।(2)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की फ़िरासत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जब ख़ुरासान की फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "काश हमारे और उन के दरमियान आग का पहाड़ होता न हम उन से लड़ते और न वोह हम से लड़ते।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं ? क्यूंकि येह तो ख़ुशी का मक़ाम है, न कि इस त़रह़ अफ़्सोस करने का।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से भरपूर जवाब देते हुवे फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन ! वाके़ई येह ख़ुशी की बात है लेकिन अफ़्सोस येह है कि अह्ले ख़ुरासान तीन दफ़्आ़ अ़ह्द शिकनी करेंगे।"(3)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से जान लिया और ग़ैबी ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि अह्ले ख़ुरासान तीन दफ़्आ़ अ़ह्द शिकनी करेंगे और तारीख़ इस बात की गवाह है कि वाके़ई अ़ह्दे

1 .....تاریخ طبری، ج۲، ص۵۴۰۔
2 .....تاریخ طبری، ج۲، ص۵۴۶۔۵۴۷۔
3 .....تاریخ طبری، ج۲، ص۵۴۷۔

www.dawateislami.net

उ़स्मानी में अहले खुरासान ने अ़हद शिकनी की । मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बा कमाल फ़िरासत अ़ता फ़रमाई है और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से गै़ब का इ़ल्म रखते हैं ।

इस्लामी लश्कर और जंगे निहावन्द

हज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहावन्द के अ़लाके़ में पहुंचे तो वहां के क़ल्ए का मुह़ासरा कर लिया बा'द में काफ़िर लश्कर की मदद के लिये मुख़्तलिफ़ शहरों से सिपाही आ गए, जिस से उन का एक लश्करे अ़ज़ीम तय्यार हो गया और वोह जंग करने के लिये मैदान में आए । अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सारी सूरते ह़ाल मा'लूम थी, जिस दिन जंग थी उसी रात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़्वाब देखा कि मुसलमानों का लश्कर एक सह़रा में है और सह़रा में होने की वज्ह से उस पर चारों त़रफ़ से ह़म्ला हो सकता है लेकिन अगर वोह पहाड़ की ओट में रहे तो फ़क़त़ एक ही त़रफ़ से ह़म्ला होगा ।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को अपने इस ख़्वाब से आगाह किया और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़ के लिये दुआ़ गो हुवे । फिर जब दोनों लश्करों में जंग हो रही थी तो ऐ़न उसी वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुआ़ का खुत़बा दे रहे थे, कि अचानक आप ने दौराने खुत़्बा इस्लामी लश्कर के सिपह सालार को पुकार कर फ़रमाया : **یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ الْجَبَل** ''या'नी ऐ सारिया ! लश्कर को पहाड़ की ओट में ले लो ।'' आप के इसी हुक्म पर अ़मल के सबब इस्लामी लश्कर को फ़त्ह़ नसीब हुई ।[1]

इस्लामी लश्कर और फ़त्हे सिजिस्तान

येह अ़लाक़ा हज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर फ़त्ह़ हुवा । पहले अ़लाके़ वाले मुज़ाहिम हुवे लेकिन थोड़ी सी लड़ाई के बा'द भाग खड़े हुवे । बा'द में सय्यिदुना आ़सिम बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुल्ह़ की दरख़्वास्त की, येह भी दरख़्वास्त की, कि हमारे खेतों को नुक़्सान न पहुंचाया जाए, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की तमाम शराइत़ मन्ज़ूर कर लीं और येह सिजिस्तान का अ़लाक़ा भी बा आसानी फ़त्ह़ हो गया ।[2]

1....इस वाक़िए की तफ़्सील के लिये ''फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म'' (जिल्द अव्वल), बाब ''करामाते फ़ारूके़ आ'ज़म'' सफ़ह़ा 627 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

2......تاریخ طبری، ج۲، ص ۵۵۴۔

www.dawateislami.net

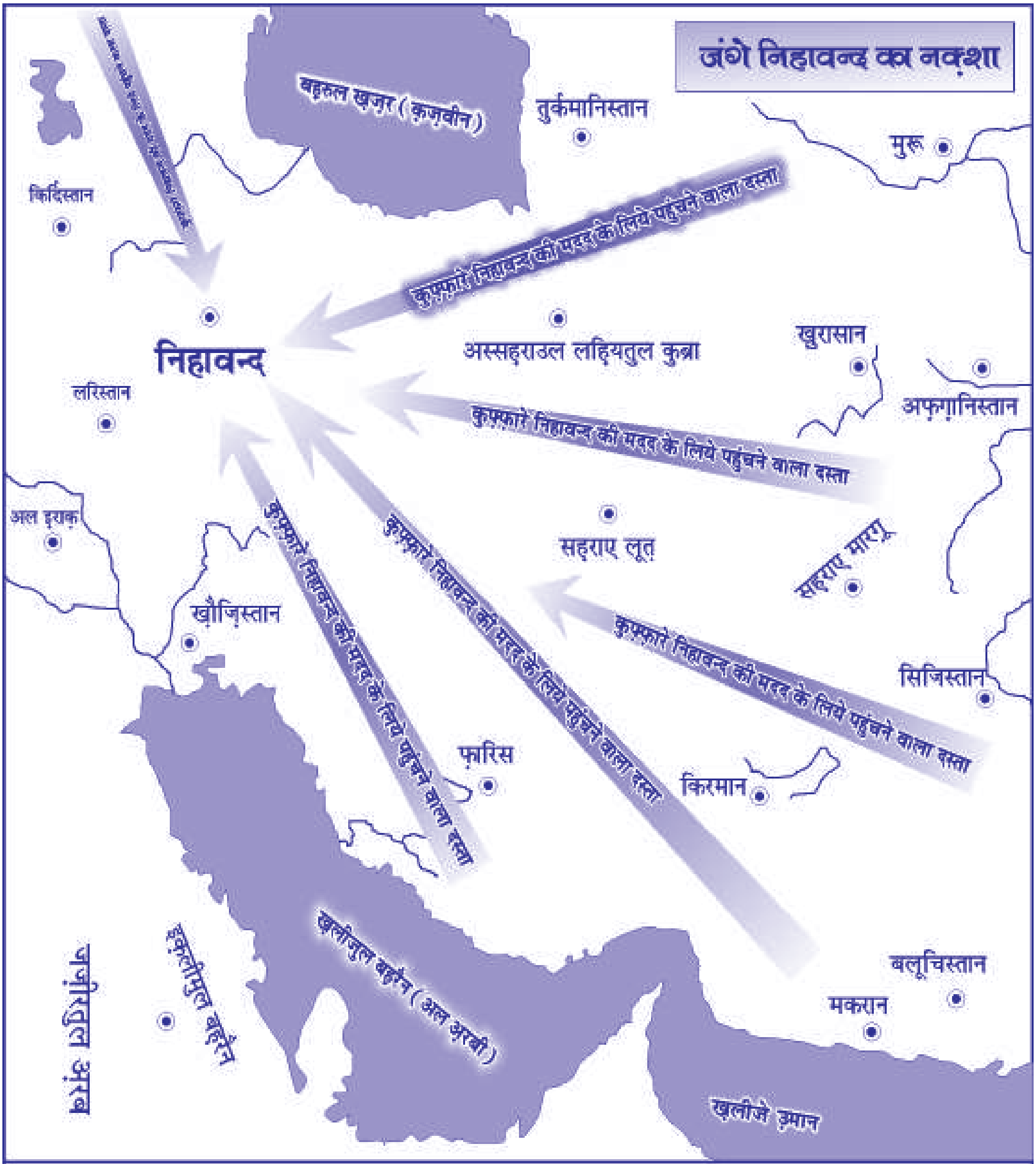

जब इस्लामी लश्कर मक़ामे निहावन्द में कुफ़्फ़ार से बर सरे पैकार था तो ऐन उसी वक़्त सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मदीनए मुनव्वरा से उन की रहनुमाई फ़रमाई, जिस के सबब मुसलमानों को फ़त्ह़ व नुस्रत हुई। आप का इतनी दूर से इस्लामी लश्कर को मुलाह़ज़ा फ़रमाना और उस की मदद करना बहुत बड़ी करामत है। वाज़ेह़ रहे कि निहावन्द से मदीनए मुनव्वरा का रास्ता तक़रीबन एक माह का है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "निहावन्द से मदीनए मुनव्वरा का रास्ता तक़रीबन एक माह की मसाफ़त है।" (اشعۃ اللمعات، ج ۳، ص ۱۰۱)

www.dawateislami.net

इस्लामी लश्कर और फ़त्हे मकरान

"मकरान" पर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन अ़म्र तग़लबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुक़र्रर किया था चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के साथ नहरे मकरान के एक त़रफ़ पड़ाव किया। यहां के ह़ाकिम रासिल ने पूरी जंगी तय्यारी की हुई थी, लिहाज़ा मैदाने जंग में अपने लश्कर को ले कर आया और सफ़ें तरतीब दीं। दोनों लश्करों में घुमसान की जंग हुई लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुजाहिदीन को फ़त्ह़ व नुस्रत अ़त़ा की। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जब इस जंग की फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर की फ़ौजों को मज़ीद पेश क़दमी से मन्अ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे, अ़ल्लामा त़बरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुत़ाबिक़ फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की आख़िरी ह़द येही "मकरान" है।(1)

फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुस्अ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले मुबारका के वक़्त इस्लामी ह़ुकूमत का कुल रक़्बा तक़रीबन नौ लाख सत्ताईस हज़ार मुरब्बअ़ मील था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे तो उन की ख़िलाफ़त का अक्सर ह़िस्सा मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी में ही सर्फ़ हो गया, लेकिन सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़्रे इनायत से न सिर्फ़ उन फ़ितनों का मुक़ाबला किया बल्कि सिर्फ़ सवा दो साल की मुद्दते ख़िलाफ़त में अ़ह्दे रिसालत में क़ाइम इस्लामी ह़ुकूमत के रक़्बे में मज़ीद दो लाख पछत्तर हज़ार एक सौ चौंसठ मुरब्बअ़ मील का इज़ाफ़ा कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के वक़्त सल्त़नते इस्लामिया का कुल रक़्बा बारह लाख दो हज़ार एक सौ चौंसठ मुरब्बअ़ मील था। आप के विसाल के बा'द सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुल मुद्दते ख़िलाफ़त कमो बेश दस10 साल छे6 माह और आठ8 दिन है। क़मरी महीनों के अय्याम मुख़्तस न होने के सबब येह कुल मुद्दते ख़िलाफ़त कमो बेश तीन हज़ार सात सौ पचास दिन बनती है। आप के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में सल्त़नते इस्लामिया में तेरह लाख नौ हज़ार पांच सौ एक मुरब्बअ़ मील का इज़ाफ़ा हुवा। येह इज़ाफ़ा तमाम अ़लाक़ों को शामिल कर के है, बा'ज़

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۵۵۔

www.dawateislami.net

मुअर्रिख़ीन ने चन्द अ़लाक़े जो मुकम्मल त़ौर पर फ़त्ह़ नहीं हुवे थे उन्हें शामिल न किया। यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात तक सल्त़नते इस्लामिया का कुल रक़बा पच्चीस लाख ग्यारह हज़ार छे सौ पेंसठ मुरब्बअ़ मील या कम अज़ कम बाईस लाख इक्कावन हज़ार तीस मुरब्बअ़ मील तो ज़रूर था। अ़ल्लामा वाक़िदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के इब्तिदाई छे सालों में पूरा मुल्के शाम फ़त्ह़ हो चुका था। जब कि ईरान, इ़राक़, मिस्र और दीगर अ़लाक़े बक़िय्या मुद्दते ख़िलाफ़त में फ़त्ह़ हुवे। अगर फ़क़त़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त की फ़ुतूह़ात के कुल रक़बे या'नी तेरह लाख नौ हज़ार पांच सौ एक मुरब्बअ़ मील को आप की ख़िलाफ़त के अय्याम या'नी तीन हज़ार सात सौ पचास पर तक़्सीम किया जाए तो कमो बेश साढ़े तीन सौ मुरब्बअ़ मील का यौमिय्या इज़ाफ़ा हुवा। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुद्दते ख़िलाफ़त में बड़े बड़े शहरों की ता'दाद कमो बेश एक हज़ार छत्तीस है, इन तमाम शहरों के मज़ाफ़ाती अ़लाक़ों की तफ़्सील जुदा है।

फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की वुजूहात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ज़रा ग़ौर तो कीजिये, फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी जिस दौर में हुईं उस में आज कल के जदीद दौर की त़रह़ कोई भी वसाइल मौजूद न थे, आज कल तो ऐसे ज़राएअ़ मौजूद हैं कि महीनों का सफ़र दिनों में, दिनों का सफ़र घन्टों में, घन्टों का सफ़र मिनटों में और मिनटों का सफ़र सेकन्डों में तै़ हो जाता है, पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात में इस्लामी लश्कर को मक़ामे जंग तक पहुंचने के लिये कई कई दिनों का सफ़र करना पड़ा, उस दौरान में तो ऊंट और घोड़े के सिवा कोई उ़म्दा सुवारी भी मयस्सर न थी, फ़क़त़ इन्ही पर सफ़र करना मुमकिन था, इन बेहतरीन सुवारियों की इस्लामी लश्कर में मौजूदगी का येह ह़ाल था कि कोई भी ऐसी जंग न हुई कि जिस में इस्लामी लश्कर के हर सिपाही के पास कोई न कोई सुवारी हो, बल्कि बहुत ही क़लील ता'दाद में सुवारियां होती थीं। आज के सफ़रों में तो काफ़ी सहूलियात मयस्सर होती हैं, कहीं भी खाने पीने की तंगी नहीं होती, जब कि उस दौर में तो ख़ुसूसन सफ़र में खाने पीने की क़िल्लत का शदीद सामना होता था, ज़ादे सफ़र में खजूरें, किश्मिश, सिर्के और सत्तू वग़ैरा के सिवा कोई ख़ास ग़िज़ा न होती थी, येह ज़ादे सफ़र भी निहायत क़लील होता था। अगर किसी मुजाहिद को पांच से ज़ियादा खजूरें और मीठा पानी पीने को मिल जाता तो गोया उस की ई़द ही हो जाती थी। आज कल के जदीद दौर में फ़ौजी जर्नलों और आ़म फ़ौजियों को जंगी

www.dawateislami.net

अ़हदे रिसालत से अ़हदे फ़ारूक़ी तक इस्लामी सल्तनत का नक़्शा

- अ़हदे रिसालत में दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार के साथ जंगें लड़ीं इन जंगों में मक्कए मुकर्रमा, मदीनए मुनव्वरा समेत अ़रब शरीफ़ के बड़े बड़े अ़लाक़े इस्लामी सल्तनत में शामिल हो गए।
- फिर ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के अ़हदे ख़िलाफ़त में कुफ़्फ़ार व मुर्तदीन व मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ मुख़्तलिफ़ जंगें लड़ी गईं, अ़हदे फ़ारूक़ी के शुरूअ़ होने तक पूरा जज़ीरए अ़रब इस्लामी सल्तनत बन चुका था।
- फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का अ़हदे ख़िलाफ़त आया और आप के अ़हद में जज़ीरए अ़रब के बाहर शाम, मिस्र और ईरान के कई बड़े बड़े अ़लाक़ों में जंगें लड़ी गईं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से येह तमाम अ़लाक़े भी सल्तनते इस्लामिय्या में शामिल हो गए।

www.dawateislami.net

तरबिय्यत दी जाती है जब कि उस दौर में ऐसा कोई निज़ाम राइज न था, जिन्हें विरसे में ऐसी महारत मिलती या कोई अपने तौ़र पर इसे हा़सिल कर लेता तो अलग बात थी वरना किसी को बा क़ाइदा इस की तरबिय्यत न दी जाती थी। कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में इस्लामी लश्कर के सिपह सालार समेत तमाम सिपाहियों पर शरई अह़कामात की पासदारी भी लाज़िम थी, ऐसा न था कि दिन को जंग करो, रात को खाओ पियो और सो जाओ, बल्कि इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन कभी रोज़ों को तर्क न करते। जिस्मानी व रूहा़नी त़हारतों में कभी कमी न आने देते, शहरों को फ़त्ह़ करते मगर किसी का एक पैसा भी न लूटा, न किसी का मालो अस्बाब बरबाद किया, सेंकडों गाऊं से गुज़रे मगर उन की खेतियों को हाथ तक न लगाया, पके हुवे फल देखते मगर सख़्त भूक प्यास के बा वुजूद उन्हें छुवा तक नहीं, किसी की इ़ज़्ज़त व आबरू में फ़र्क़ न आने दिया। औ़रतों, बूढ़ों और बच्चों के ख़ून बहाने पर सख़्ती से पाबन्दी थी, इस्लामी लश्कर के तमाम मुजाहिदीन दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत के लिये नहीं बल्कि इस्लाम की सर बुलन्दी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये जिहाद करते थे।

जब कि उन के मुक़ाबले में लश्करे कुफ़्फ़ार का मुआ़मला बिल्कुल बर अ़क्स था। फ़ौजों की कसरत उन के पास थी, हथयारों की फ़िरावानी थी, ऐ़शो इ़शरत का सामान उन के पास था, अल ग़रज़ दुन्या की वोह कौन सी चीज़ थी जो उन के पास न थी लेकिन हम देखते हैं कि चन्द हज़ार के इस्लामी लश्कर ने पूरे मुल्के शाम व ईरान को तख़्तो ताराज कर दिया, अगर किसी को इन दोनों फ़ौजों का तक़ाबुल किये बिग़ैर फ़ुतूहा़त की तफ़्सील बताई जाए तो वोह येह कहने पर मजबूर होगा कि यक़ीनन इस्लामी लश्कर की ता'दाद करोड़ों में होगी, उन के पास कसीर वसाइल होंगे वग़ैरा वग़ैरा। कोई अपना हो या ग़ैर मज़्कूरए बाला तक़ाबुल के बा'द हर शख़्स ज़बाने हा़ल व क़ाल दोनों से येह पुकार उठता है कि इस्लामी लश्कर की फ़ुतूहा़त का सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद व नुस्रत थी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ज़्लो करम और आप की ख़ासुल ख़ास इ़नायत थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़ीम मो'जिज़ा था, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की करामत थी, मज़हबे इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत थी, मुसलमानों की फ़ुतूहा़त का सबब उन की अख़्लाक़ी और दीनी मदनी सोच थी, उन का शरीअ़त के मुत़ाबिक़ चलना था, उन का हर शख़्स के साथ अ़द्लो इन्साफ़ के साथ पेश आना था, उन का औ़रतों बच्चों और बूढ़ों पर ज़ुल्मो सितम न ढाना था। जिस क़ौम को येह तमाम बातें हा़सिल हों वोह कभी भी शिकस्त नहीं खाती, क्यूंकि ऐसे लोगों को काइनात की हर हर शै की हि़मायत हा़सिल होती है। ऐसे लोगों की कामयाबी में दुन्यवी अ़वारिज़ रुकावट नहीं बन सकते।

www.dawateislami.net

अस्ल वज्ह तकब्बुर व गुरूर का इस्तिह़्साल

फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की ब ज़ाहिर येही वुजूहात समझ में आती हैं लेकिन एक वज्ह अ़क़्ली भी है और वोह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन तमाम बाति़ल कु़व्वतों के गुरूर व तकब्बुर को ख़ाक में मिलाने के लिये इस्लामी लश्कर की मदद फ़रमाई। तारीख़ गवाह है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मुल्कों के बादशाहों को दा'वते इस्लाम के मक्तूब लिखे तो चन्द बादशाहों ने अपने गुरूर व तकब्बुर के सबब उन की बे अदबी की, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में उन ही बादशाहों की सल्त़नतों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नैस्तो नाबूद फ़रमाया। गोया उन के गुरूरो तकब्बुर को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलामों के ज़रीए़ नैस्तो नाबूद कर दिया गया।

फ़ुतूह़ात में फ़ारूके़ आ'ज़म का इख़्तिसास

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब ज़ाहिर इन तमाम जंगों में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुद शिर्कत न फ़रमाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा जर्नल ही जंग लड़ते रहे लेकिन वाज़ेह़ रहे कि तमाम फ़ुतूह़ात का दारो मदार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते गिरामी पर ही था। नीज़ इन तमाम फ़ुतूह़ात के साथ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका का इख़्तिसास है। इस पर चन्द दलाइल और क़राइनो शवाहिद पेशे ख़िदमत हैं।

......येह बात अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज से ज़ियादा रौशन) है कि कोई भी फ़ौज अगर्चे बेहतरीन शहसुवारों, जंगी साज़ो सामान से लैस हो मगर उस की कामयाबी का दारो मदार उस के कमान्ड करने वाले शख़्स पर होता है और इस्लामी लश्कर की कमान्ड सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में थी, गोया इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़ व शिकस्त की डोर आप के हाथ में थी।

......तमाम बड़े बड़े अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात में जो फ़ौजें शरीक थीं उन के बड़े बड़े सिपह सालार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के मुक़र्रर कर्दा थे, अलबत्ता एक ही लश्कर के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों के सिपह सालार उ़मूमन इस्लामी लश्कर के बड़े सिपह सालार ही मुन्तख़ब करते रहते थे।

......ऐन उ़रूज व ज़वाल के वक़्त बड़े कमान्डर की तब्दीली सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ला जवाब फ़िरासत थी, जो दुश्मनों के साथ साथ खुद इस्लामी लश्कर के मुआ़मलात पर भी ख़ासी असर अन्दाज़ होती थी।

www.dawateislami.net

......बड़े बड़े शहरों की त़रफ़ रवानगी, उन के मुह़ासरे और फ़त्ह़ के मुआ़मले में सिपह सालार समेत पूरा इस्लामी लश्कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के हुक्म का पाबन्द था, कोई भी ऐसा बड़ा शहर न था जिस की त़रफ़ रवानगी, उस का मुह़ासरा या फ़त्ह़ आप के हुक्म के बिग़ैर हुई हो।

......जंगी मुआ़मलात के साथ साथ इस्लामी लश्कर में मौजूद सिपह सालार से ले कर एक आ़म फ़ौजी के ज़ाती मुआ़मलात के बारे में भी उ़मूमी हिदायात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की अ़त़ाकर्दा थीं।

......आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी लश्कर के लिये ऐसे जंगी उसूलो ज़वाबित़ मुक़र्रर फ़रमाए कि सिपह सालार से ले कर एक आ़म फ़ौजी भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की नज़रों में था, गोया इस्लामी लश्कर में अ़मली क़ुव्वत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस्लामी लश्कर में मौजूदगी पर दलालत करती थी।

......इस्लामी लश्कर की मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में रवानगी, मुह़ासरे, जंग करने से फ़त्ह़ तक के तमाम मुआ़मलात की मुकम्मल तफ़्सील आप के पास इस त़रह़ पहुंचती थी कि गोया आप खुद उन के साथ हैं।

......इस्लामी लश्कर से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बाहमी राबित़ा इतना मज़बूत़ था कि इस्लामी लश्कर सेंकड़ों मील दूर फ़त्ह़ से हमकिनार होता तो फ़त्ह़ की खुशी में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ब ज़रीअ़ए मक्तूब ऐसी शिर्कत होती जैसे आप खुद लश्कर में मौजूद हों।

......इस्लामी लश्कर के सिपह सालार से ले कर एक आ़म फ़ौजी भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ऐसी इत़ाअ़त करता था गोया आप हर शख़्स के अ़मल को बज़ाते खुद मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हों। हर शख़्स आप का मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार था, हर क़िस्म के बड़े बड़े फ़ैसलों के लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िरी ज़रूरी थी।

......इस्लामी लश्कर को पेश आने वाले बड़े बड़े मसाइल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद ही ह़ल किया करते थे। कई जंगों में त़वील मुह़ासरे के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मज़बूत़ ह़िक्मते अ़मली के सबब मुसलमानों को फ़त्ह़ो नुसरत ह़ासिल हुई, जहां आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका की ह़ाजत होती वहां आप खुद ही तशरीफ़ ले जाते जैसा कि फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस के मौक़अ़ पर आप खुद ही तशरीफ़ ले गए। मज़्कूरए बाला तमाम दलाइलो शवाहिद इस बात पर दलालत करते हैं कि इन तमाम फ़ुतूह़ात में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की खुसूसिय्यत है।

www.dawateislami.net

फ़ुतूहाते फ़ारूक़ी की आख़िरी ह़द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ुतूह़ाते फ़ारूक़ी की आख़िरी ह़द मकरान का अ़लाक़ा है, इस की फ़त्ह़ के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिन 23 हिजरी में ह़ज से वापसी के बा'द शहादत पाई। फ़क़त़ फ़ुतूह़ात को देख कर ऐसा नहीं लगता कि उन की कमान्ड करने वाला कोई एक शख़्स है बल्कि ऐसा ज़ाहिर होता है कि माहिर व ह़ाज़िक़ लोगों पर मुश्तमिल एक पूरी क़ौम है जिस का इन तमाम फ़ुतूह़ात के पीछे हाथ है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका हमा जिहत शख़्सिय्यत थी, मुल्के शाम, इराक़, मिस्र और मुल्के ईरान जैसे अहम मह़ाज़ों पर मुनज़्ज़म त़रीक़े से जंग की कमान्ड करना, माले ग़नीमत की तक़्सीम, इस्लामी लश्कर की हर हर मुआ़मले में रहनुमाई करना, नीज़ उसी वक़्त सल्त़नत के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात को संभालना, उन को सह़ीह़ रुख़ पर चलाना, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही की ज़ाते मुबारका थी जो इन दोनों मह़ाज़ों पर बयक वक़्त अह़सन त़रीक़े से मुसलमानों की रहनुमाई फ़रमा रही थी, इस की सब से बड़ी वज्ह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ासुल ख़ास इनायत और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदनी तरबिय्यत थी। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी के दौरान हमेशा आप को अपने साथ ही रखा था नीज़ मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में आप ही से मुशावरत फ़रमाते रहते थे, ब ज़ाहिर मुशावरत होती थी लेकिन दर ह़क़ीक़त वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदनी तरबिय्यत थी।

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम
फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बात़िल इमामुल हुदा
तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम
तर्जुमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तेरहवां बाब

फ़ारूक़ी गवर्नर
और इन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये.................................

......हुकूमत व मन्सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म

......गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइत़, शराइते़ साबिता व नाफ़िया

......गवर्नरों से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियाती़ तदाबीर का बयान

......फ़ारूक़ी गवर्नरों की चन्द अहम ख़ुसूसिय्यात का बयान

......गवर्नरों का सालाना मदनी मश्वरा

......हुक्मरानों की ज़िम्मेदारियों की तफ़्सील

......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और गवर्नरों का एह़तिसाब

......हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाएं

......गवर्नरों की मा'ज़ूली, सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मा'ज़ूली

......हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ रिआ़या की ज़िम्मेदारियां

......अ़हदे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ सूबों और शहरों के गवर्नर

....

www.dawateislami.net

फ़ारूक़ी गवर्नर और इन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर

मिसाली हुकूमत और इस की कामयाबी का राज़

खलीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में फ़ुतूहात का जो सिलसिला शुरूअ़ हुवा था अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में भी जारी रहा। इन फ़ुतूहात का मक़्सद तौहीदो रिसालत का प्रचार, अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम, नेकी की दा'वत की तरवीजो इशाअ़त और आ'ला व बुलन्द अख़्लाक़ से दुन्या भर को रूशनास कराना था। कामयाबी का हुसूल बिलाशुबा ए'ज़ाज़ है लेकिन इस कामयाबी की हिफ़ाज़त के लिये बेहतरीन हिक्मते अ़मली इख़्तियार करना और कामयाबी की बुन्याद पर अपने मक़ासिद पाने में भी कामयाब हो जाना एक इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यत है। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यत से नवाज़ा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन मुमालिक को फ़त्ह़ करने के बा'द कामयाबी का सफ़र जारी रखने के लिये बेहतरीन इन्तिज़ामी ढांचा तरतीब दिया। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस निज़ाम के क़ियाम व बक़ा के लिये सल्तनत के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में गवर्नर और हाकिम मुक़र्रर किये।

इन्तिख़ाबे फ़ारूके़ आ'ज़म के क्या कहने....!

वाज़ेह़ रहे कि क़ाबिल, पाकबाज़ और बा सलाहिय्यत अफ़राद के बिग़ैर न तो कोई आईन मुरत्तब किया जा सकता है, न ही कोई क़ानून बनाया जा सकता है और न ही किसी इन्तिज़ामी ढांचे की तरकीब हो सकती है। मुआ़शरे में से ऐसे अफ़राद का इन्तिख़ाब उन की सलाहिय्यतों का दुरुस्त जगह इस्ति'माल एक कामयाब हाकिम की फ़ह्मो फ़िरासत की वाज़ेह़ दलील है। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बे मिसाल फ़िरासत के बा कमाल मालिक थे। आप ने जिस शो'बे के लिये जो हाकिम या ज़िम्मेदार मुन्तख़ब फ़रमाया उस की कामयाबियों और तर्ज़े हुकूमत को देख कर ऐसा लगता है कि उस ज़िम्मेदारी के लिये आप को उस शख़्स से बेहतर कोई नज़र नहीं आया। किस मन्सब के लिये कौन मुनासिब है ? कौन बेहतर और कौन बेहतरीन ? अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तमाम बातों को अपनी कामिल फ़िरासत से ब ख़ूबी जान लिया और फिर इसी के मुताबिक़ ज़िम्मेदारान का इन्तिख़ाब फ़रमाया। यक़ीनन अ़वाम की फ़लाहो बहबूद और उन की अख़्लाक़ी तरबिय्यत में एक अमानतदार हाकिम का बहुत किरदार होता है, अगर हाकिम दुरुस्त हो तो रिआ़या भी दुरुस्त ही रहती है, अगर हाकिम ही दुरुस्त न हो तो फिर

www.dawateislami.net

रिआ़या तनज़्ज़ुली की अ़मीक़ वादियों में गिरती जाती है। हुक्मरानों और ज़िम्मेदारान से मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चन्द फ़रामीन पेशे ख़िदमत हैं।

हुकूमत व मन्सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूके़ आ'ज़म

(1)......हाकिम की चार ख़स्लतें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इमरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "इस मन्सबे हुकूमत के लाइक़ सिर्फ़ वोही शख़्स है जिस में येह चार ख़स्लतें पाई जाएं : (1) नर्मी हो लेकिन ऐसी नर्मी भी नहीं जो कमज़ोरी पर मुश्तमिल हो। (2) सख़्ती हो मगर ऐसी नहीं कि जिस में शिद्दत हो। (3) किफ़ायत शिआ़र हो लेकिन ऐसा नहीं कि उस में बुख़्ल हो। (4) लिहाज़ करने वाला हो लेकिन ऐसा नहीं कि हृद से तजावुज़ कर जाए। क्यूंकि इन में से एक भी सिफ़त ख़त्म होगी तो बक़िय्या तीनों ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जाएंगीं।"[1]

(2)......कामयाब हाकिम के औसाफ़

हज़रते सय्यिदुना मिस्अ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अम्र या'नी सल्तनत के मुआ़मले को सिर्फ़ वोही शख़्स दुरुस्त त़रीके़ से चला सकता है जो न तो रियाकारी करता हो, न ही तसाहुल या'नी सुस्ती व बिला वज्ह नर्मी से काम लेता हो, न ही ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाला हो।"[2]

(3)......गुमराह कुन हुक्मरानों का ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द अन्सारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "ऐ का'ब ! मैं तुम से एक बात पूछता हूं अगर तुम्हें मा'लूम हो तो हरगिज़ न छुपाना।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां ! मुझे अगर मा'लूम हुई तो मैं हरगिज़ न छुपाऊंगा।" फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : مَا اَخْوَفُ شَيْءٍ تَخَوَّفُهُ عَلٰى اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "या'नी वोह कौन सी चीज़ है जिस का तुम्हें उम्मते मुहम्मदिया पर ख़ौफ़ है ?" अ़र्ज़ किया : اَئِمَّةٌ مُّضِلِّيْنَ "या'नी गुमराह कुन हुक्मरान।"

---

1 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، باب کیف ینبغی للقاضی۔۔۔الخ، ج۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۲۶۷۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، باب کیف ینبغی للقاضی۔۔۔الخ، ج۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۶۹۔

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "तुम ने सच कहा क्यूंकि येह राज़ मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद इरशाद फ़रमाया था।"[1]

(4)......दीन को आज़माइश में डालने वाली शै

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : **مَالَکَ لَاتَسْتَعْمِلُنِي** "या'नी क्या बात है कि आप मुझे कोई हुकूमती ज़िम्मेदारी नहीं देते।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **اَکْرَہُ اَنْ یُّدَنِّسَ دِیْنَکَ** "या'नी मैं इस बात को ना पसन्द करता हूं कि आप की येह ज़िम्मेदारी आप के दीन को ऐ़बदार कर दे।"[2]

गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइत़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म गवर्नरों के इन्तिख़ाब में दो त़रह़ की शराइत़ का ए'तिबार किया करते थे :

(1) **शराइते़ साबिता :** या'नी वोह अच्छी सिफ़ात जिन का किसी गवर्नर या ह़ाकिम की ज़ात में पाया जाना ज़रूरी है।

(2) **शराइते़ नाफ़िया :** या'नी वोह क़बीह़ सिफ़ात जिन का किसी गवर्नर या ह़ाकिम की ज़ात में न पाया जाना ज़रूरी है, तफ़्सील यूं है :

गवर्नरों की शराइते़ साबिता

(1)......ह़ाकिम त़ाक़तवर हो

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी किसी को ह़ाकिम या गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाते तो इस बात को ज़रूर पेशे नज़र रखते कि वोह क़ुव्वतो त़ाक़त के ए'तिबार से भी कोई सलाहि़य्यत रखता है या नहीं ? अगर आप को ऐसा कोई शख़्स मिल जाता तो आप उसे तरजीह़ दिया करते थे। चुनान्चे, एक मौक़अ़ पर आप ने हज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल कर के हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़िम्मेदार बनाया और हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ व हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मा तह़्त कर दिया तो सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना

1 ......مسند امام احمد، مسند عمر بن الخطاب، ج ۱، ص ۹۷، حدیث: ۲۹۳۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۷۹۔

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस का सबब पूछा । आप ने इस की वज्ह बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اِنَّکَ لَکُمَا اَحَبُّ وَلٰکِنِّیْ اُرِیْدُ رَجُلاً اَقْوٰی مِنْ رَجُلٍ "बेशक मैं तुम दोनों से महब्बत करता हूं लेकिन मैं तुम से ज़ियादा ताक़तवर शख़्स चाहता हूं ।" सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर येही बात आप लोगों के सामने भी बयान फ़रमा दीजिये ताकि उन के दिल भी मेरे मुआ़मले में साफ़ हो जाएं ।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से मुख़ात़िब हो कर इरशाद फ़रमाया : اَیُّھَا النَّاسُ اِنِّیْ وَاللّٰہِ مَا عَزَلْتُ شُرَحْبِیْلَ عَنْ سُخْطَۃٍ وَلٰکِنِّیْ اَرَدْتُّ رَجُلًا اَقْوٰی مِنْ رَجُلٍ "या'नी ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने शुरह़बील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी नाराज़ी वग़ैरा की वज्ह से मा'ज़ूल नहीं किया बल्कि मैं इन से ज़ियादा त़ाक़त व क़ुव्वत वाला शख़्स चाहता हूं ।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ोहरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنِّیْ لَاَتَحَرَّجُ اَنْ اَسْتَعْمِلَ الرَّجُلَ وَاَنَا اَجِدُ اَقْوٰی مِنْہُ "या'नी मैं इस परेशानी से बचता हूं कि ज़ियादा क़वी शख़्स के होते हुवे किसी और को ह़ाकिम बना दूं ।"(2)

(2)......ह़ाकिम अमानतदार हो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी भी ओ़ह्दे की तक़र्रुरी में अमानतदारी को अव्वलीन तरजीह़ देते थे, आप के नज़्दीक ह़ाकिम बनने के लाइक़ ही वोह शख़्स था जो अमानतदार हो । क्यूंकि ह़ाकिम जब तक अमानतदारी से काम लेगा तब तक रिआ़या भी अमानतदारी से काम लेगी वरना बे ए'तिदाली, बद नज़्मी और ज़ुल्म जैसे नासूर मुआ़शरे में पैदा हो कर इस के बिगाड़ का सबब बनेंगे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَلرَّعِیَّۃُ مُؤَدِّیَۃٌ اِلَی الْاِمَامِ مَا اَدَّی الْاِمَامُ اِلَی اللّٰہِ فَاِذَا رَتَعَ الْاِمَامُ رَتَعُوْا "या'नी रिआ़या उस वक़्त तक अपने इमाम या'नी ह़ाकिम से अमानतदारी करेगी जब तक वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अमानतदारी करेगा, जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अमानतदारी करना छोड़ देगा तो रिआ़या उस से अमानतदारी छोड़ देगी ।"(3)

1......الکامل فی التاریخ، ذکر طاعون عمواس، ج ۲، ص ۴۰۲، تاریخ ابن عساکر، ج ۲۲، ص ۴۷۴۔

2......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۲۲۔

3......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، کلام عمر بن الخطاب، ج ۸، ص ۱۴۷، حدیث: ۸۔

www.dawateislami.net

अमानत और ओ़हदे के बारे में पूछगछ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात को ब ख़ूबी जानते थे कि किसी भी अ़लाके़ पर गवर्नर या ह़ाकिम का तक़र्रुर एक अमानतदारी वाला काम है, अगर उस अ़लाके़ पर अमीन ह़ाकिम का तक़र्रुर न किया गया तो वहां के रहने वाले लोगों के साथ येह ख़ियानत होगी । ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द आप ने जो ख़ुत़बा दिया उस में इरशाद फ़रमाया : "मुझ से मेरी अमानत और ओ़हदे के बारे में पूछा जाएगा, मैं अपनी अमानत को किसी ऐसे शख़्स के सिपुर्द न करूंगा जो इस का अह्ल ही नहीं है और न ही मैं ना अह्ल को कोई मन्सब दूंगा, मैं येह मन्सब सिर्फ़ उसी को दूंगा जो अमानत की अदाएगी, मुसलमानों की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर में रग़बत रखता है ।"(1)

(3)......ह़ाकिम आ़लिमे दीन हो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जिस शख़्स को भी ह़ाकिम या किसी भी मुआ़मले का ज़िम्मेदार मुक़र्रर फ़रमाया उस की ज़ात में एक शर्त़ लाज़िमी जुज़ की हैसिय्यत रखती थी कि वोह उस फ़न का आ़लिम भी था, आप ने कभी किसी जाहिल शख़्स को कोई मन्सब अ़त़ा नहीं फ़रमाया । ख़ुसूसन इस्लामी फ़ौजों के जब अमीर मुक़र्रर फ़रमाते तो उस में साह़िबे इ़ल्म लोगों को तरजीह़ देते ।

(4)......ह़ाकिम तजरिबा कार और साह़िबे बसीरत हो

ह़ाकिम के लिये दीगर तमाम सिफ़ात के साथ साथ तजरिबा कार और साह़िबे बसीरत होना भी निहायत ज़रूरी है, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने अगर दो ऐसे अफ़राद इन्तिख़ाब के लिये आते जिन में एक तजरिबा कार होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के तजरिबे की बिना पर दूसरे फ़र्द पर तरजीह़ देते अगर्चे वोह तरजीह़ दिये जाने वाले से मक़ामो मर्तबे में अफ़्ज़लो आ'ला ही क्यूं न हो ! क्यूंकि येह बात ज़रूरी नहीं कि एक शख़्स मुत्तक़ी व नेक पारसा हो तो दुन्यावी मुआ़मलात में भी वोह महारत रखता हो, इसी त़रह़ कोई शख़्स इ़ल्मी ह़वाले से फ़ौक़िय्यत रखता हो तो ज़रूरी नहीं कि वोह दुन्यवी, सियासी या तन्ज़ीमी ए'तिबार से भी तजरिबा कार हो ।

दर अस्ल सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मे'यारे इन्तिख़ाब आप की दूरअन्देशी पर दलालत करता है कि दीनदार, मुत्तक़ी, बा अख़्लाक़ आदमी अगर दुन्यवी मुआ़मलात में तजरिबा व

1 ......كتاب الثقات لابن حبان، ذكر استخلاف عمر بن الخطاب، ج ١، ص ١٨٣ ملتقطاً

www.dawateislami.net

बसीरत न रखता हो तो वोह गुमराहों के धोके में आ सकता है और अगर वोह तजरिबा कार और साहि़बे बसीरत होगा तो लोगों की मुख़्तलिफ़ त़रह़ की चर्ब ज़बानी और उन से पैदा होने वाले फ़साद को फ़ौरन भांप लेगा।

(5)......हाकिम शफ़ीक़ व मेहरबान हो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी निहायत शफ़ीक़ थे और आप की येह ख़्वाहिश भी होती थी कि जिसे भी ह़ाकिम मुक़र्रर करें वोह मज़्कूरा तमाम सिफ़ात के साथ साथ इन्तिहाई शफ़ीक़ व मेहरबान भी हो। दर अस्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मदनी सोच आप की आ'ला ज़र्फ़ी और उम्मते मुस्लिमा पर शफ़्क़त व मह़ब्बत पर दलालत करती है। जिस शख़्स में अपनी रिआ़या या मा तह़्त अफ़राद पर शफ़्क़त व मह़ब्बत करने का ज़ेह्न नहीं वोह आप के नज़्दीक कोई ओ़ह्दा दिये जाने के क़ाबिल नहीं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान नहदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बीलए बनू असद के एक शख़्स को ह़ाकिम बनाया। वोह ओ़ह्दा लेने के लिये बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवा तो देखा कि आप का एक छोटा मदनी मुन्ना भी आप के पास मौजूद है और आप उसे फ़र्ते मह़ब्बत से चूम रहे हैं। उस ने तअ़ज्जुब से कहा : "हुज़ूर ! क्या आप इस बच्चे को चूम रहे हैं ? मैं ने कभी अपनी औलाद को मह़ब्बत से नहीं चूमा।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़्त ना पसन्दीदगी का इज़्हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया : **فَاَنْتَ بِالنَّاسِ اَقَلُّ رَحْمَۃً هَاتِ عَهْدَنَا لَا تَعْمَلْ لِی عَمَلًا اَبَدًا** "या'नी तुम तो लोगों पर बहुत कम रह़्म करने वाले हो, लाओ हमारा ओ़ह्दा वापस करो और आइन्दा तुम कभी कोई हुकूमती काम नहीं करोगे।"(1)

नर्मी व बुर्दबारी का दर्से फ़ारूक़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़कैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नर्मी व बुर्दबारी का दर्स देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "इमाम या'नी ह़ाकिम की बुर्दबारी व नर्मी से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई बुर्दबारी और नर्मी मह़बूब नहीं, इसी त़रह़ ह़ाकिम की जहालत और बेवुक़ूफ़ी व ह़माक़त से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कोई चीज़ ना पसन्दीदा नहीं। याद रखो ! जो ह़ाकिम अपने मा तह़्त

---

(1)......سنن کبری، کتاب السیر، باب ماعلی الوالی من امر الجیش، ج ۹، ص ۷۲، حدیث: ۱۷۹۰۶۔

www.dawateislami.net

लोगों के साथ अफ़्वो दर गुज़र से पेश आता है तो उस के साथ भी अफ़्व का मुआमला किया जाता है जो हाकिम अपनी ज़ात से लोगों को इन्साफ़ फ़राहम करता है उसे भी उस के मुआमलात में कामयाबी व कामरानी अता की जाती है।"[1]

फ़ारूक़े आ'ज़म और एक हाकिम की गिरिफ़्त

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन वहब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर निकले, आप के दोनों हाथ आप के कानों में थे, आप फ़रमा रहे थे : يَا لَبَّيْكَاهُ يَا لَبَّيْكَاهُ "या'नी हां मैं हाज़िर हूं, हां मैं हाज़िर हूं।" लोगों ने हैरान हो कर पूछा कि हुज़ूर ! क्या बात है आप ऐसा क्यूं कर रहे हैं ? इरशाद फ़रमाने लगे कि उन के पास उन के एक इस्लामी लश्कर के अमीर की तरफ़ से मक्तूब आया जिस में उस ने लिखा कि वोह लोग एक नहर के पास पहुंचे, नहर पार करने के लिये उन के पास कोई चीज़ न थी, उस लश्कर के अमीर ने नहर की गहराई देखने के लिये किसी को बुलवाया, एक बूढ़े शख़्स को लाया गया, सर्दियों का मौसिम था, उस ने कहा कि मुझे ठन्ड लग जाएगी। अमीर ने उस पर ज़बरदस्ती की, वोह नहर में उतरा उसे ज़ियादा ठन्ड लगी तो वोह बे साख़्ता मुझे पुकारने लगा : يَا عُمَرَاهُ يَا عُمَرَاهُ "या'नी ऐ उमर मेरी मदद कीजिये, ऐ उमर मेरी मदद कीजिये।" यहां तक कि वोह डूब गया।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस अमीर को तलब किया, जब वोह आप की बारगाह में आया तो आप चन्द दिनों तक उस से ए'राज़ करते रहे, क्यूंकि आप की येह आदत थी कि जब किसी को सज़ा देते तो उस से ए'राज़ करते, बात वग़ैरा न करते। फिर एक दिन आप ने उस अमीर को बुला कर पूछगछ की तो उस ने अर्ज़ किया : "हुज़ूर ! मैं ने उसे जान बूझ कर क़त्ल नहीं किया, हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न थी जिस के ज़रीए उस नहर को उबूर करते, इस लिये हम ने ऐसा किया।"

येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَرَجُلٌ مُسْلِمٌ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ جِئْتَ بِهِ لَوْ لَا اَنْ تَكُوْنَ سُنَّةً لَضَرَبْتُ عُنُقَكَ اِذْهَبْ فَاَعْطِ اَهْلَهُ دِيَتَهُ وَاخْرُجْ فَلَا اَرَاكَ

"या'नी एक मुसलमान की जान मेरे नज़दीक हर उस चीज़ से ज़ियादा प्यारी है जो तुम मेरे पास लाए हो, अगर मुझे येह तरीक़ा राइज होने का ख़ौफ़ न होता तो मैं ज़रूर तुम्हारी गर्दन उड़ा देता। जाओ यहां से और उस शख़्स के घरवालों को दियत दे दो और आज के बा'द मैं तुम्हारी शक्ल न देखूं।"[2]

---

1 ......كنز العمال، كتاب الخلافة، آداب الامارة، الجزء: ٥، ج ٣، ص ٣٠٦، حديث: ١٤٣٣١-

2 ......سنن كبرى، كتاب الاشربة، السلطان يكره احدا على ان يدخل نهرا ـــ الخ، ج ٨، ص ٥٥٩، حديث: ١٧٥٥٥-

www.dawateislami.net

(6)......हाकिम वोह जो रिआ़या में से लगे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ल्बी त़ौर पर ऐसे शख़्स को ह़ाकिम बनाने की ख़्वाहिश रखते थे जो ह़ाकिम बनने के बा'द अ़वाम और रिआ़या में ऐसे रहे जैसे वोह उन्ही में से एक फ़र्द हो और जब वोह ह़ाकिम न हो तो ऐसा लगे जैसे वोही ह़ाकिम बनाए जाने के क़ाबिल है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : دُلُّوْنِیْ عَلٰی رَجُلٍ اَسْتَعْمِلُہٗ عَلٰی اَمْرٍ قَدْ اَھَمَّنِیْ مِنْ اَمْرِ الْمُسْلِمِیْنَ "या'नी मुझे किसी ऐसे शख़्स के बारे में बताओ जिसे मैं मुसलमानों के किसी अहम मुआ़मले का निगरान बना सकूं।" लोगों ने कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।" फ़रमाया : "वोह तो ज़ईफ़ुल उ़म्र हो चुके हैं, किसी और का बताओ।" अ़र्ज़ किया : "फ़ुलां।" फ़रमाया : "उस की मुझे कोई ह़ाजत नहीं।" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर आप को कैसा शख़्स चाहिये ?" फ़रमाया : "मुझे एक ऐसे शख़्स की तलाश है जिसे मैं ह़ाकिम बनाऊं तो वोह रिआ़या का ही एक फ़र्द लगे और अगर वोह उन का ह़ाकिम न हो तो ऐसे लगे जैसे वोही उन का ह़ाकिम है।" लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ज़ियाद ह़ारिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निशान देही की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम लोगों ने सच कहा।"(1)

गवर्नरों की शराइत़े नाफ़िया

(1)......हाकिम फ़ासिक़ो फ़ाजिर न हो

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स को ज़िम्मेदारी देना क़त़्अ़न पसन्द न फ़रमाते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَعْمَلَ فَاجِراً وَھُوَ یَعْلَمُ اَنَّہٗ فَاجِرٌ فَھُوَ فَاجِرٌ مِثْلُہٗ "या'नी जिस ने किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स को निगरान बनाया और वोह जानता था कि मैं ने जिस को ह़ाकिम बनाया है वोह फ़ासिक़ो फ़ाजिर है तो निगरान बनाने वाला भी उसी की त़रह़ है।"(2)

1 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ، آداب الامارۃ، الجزء: ۵، ج۳، ص ۳۰۴، حدیث: ۱۴۳۰۷۔

2 ......اخبار القضاۃ، ج ۱، ص ۲۹، مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۸۔

www.dawateislami.net

गवर्नरों के नाम नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ उ़मूमी फ़रमान

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने गवर्नरों के पास नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ येह उ़मूमी फ़रमान भेजा कि : إِنَّ اَهَمَّ اَمْرِكُمْ عِنْدِى الصَّلَاةُ مَنْ حَفِظَهَا اَوْ حَافَظَ عَلَيْهَا حَفِظَ دِيْنَهُ وَمَنْ ضَيَّعَهَا فَهُوَ لِمَا سِوَاهَا اَضْيَعُ "या'नी मेरे नज़्दीक तुम्हारा सब से अहम काम नमाज़ है, जिस ने खुद इस की हिफ़ाज़त की और इस पर मुहाफ़ज़त इख़्तियार की, उस ने अपना दीन महफ़ूज़ कर लिया और जिस ने नमाज़ ज़ाएअ़ कर दी वोह दूसरी चीज़ों को बदरजए औला ज़ाएअ़ करने वाला होगा।"(1)

तारिके नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़र्वा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तारिके नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : اِذَا رَاَيْتُمُ الرَّجُلَ يُضِيعُ مِنَ الصَّلَاةِ فَهُوَ لِغَيْرِهَا مِنْ حَقِّ اللّٰهِ اَشَدُّ تَضْيِيعاً "या'नी जब तुम किसी शख़्स को देखो कि वोह कोई नमाज़ ज़ाएअ़ कर रहा है तो समझ जाओ कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दीगर हुक़ूक़ को ज़ियादा ज़ाएअ़ करता होगा।"(2)

(2)......हाकिम ज़ालिम न हो

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से किसी भी हाकिम को ज़ुल्म करने की क़त़्अ़न इजाज़त न थी। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اَيُّمَا عَامِلٍ لِيْ ظَلَمَ اَحَداً وَبَلَغَنِيْ مَظْلَمَتُهُ وَلَمْ اُغَيِّرْهَا فَاَنَا ظَلَمْتُهُ "या'नी मेरे मुक़र्रर किये हुवे किसी भी हाकिम ने किसी भी शख़्स पर कोई ज़ुल्म किया और मुझ तक उस के ज़ुल्म की ख़बर पहुंच गई इस के बा वुजूद अगर मैं ने उसे तब्दील न किया तो येह ऐसे होगा जैसे मैं ने उस पर ज़ुल्म किया।"(3)

---

1 ......سنن کبری، کتاب الصلاۃ، باب کراھیۃ تاخیر العصر، ج ۱، ص ۶۵۴، حدیث: ۲۰۹۲ ملتقطاً۔

2 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب السابع والخمسون، ص ۱۷۴۔

3 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی والاربعون، ص ۱۱۳۔

www.dawateislami.net

सख़्ती ऐसी जिस में ज़ुल्म न हो

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद कातिब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाया करते थे : اِنَّ هٰذَا الْاَمْرَ لَا يَصْلُحُ اِلَّا بِالشِّدَّةِ الَّتِيْ لَا جَبْرِيَّةَ فِيْهَا وَبِاللِّيْنِ الَّذِيْ لَا وَهَنَ فِيْهِ "या'नी बेशक येह अम्रे हुकूमत उस सख़्ती के साथ दुरुस्त होता है जिस में ज़ुल्म न हो और उस नर्मी के साथ दुरुस्त होता है जिस में कमज़ोरी न हो ।"(1)

(3)......हाकिम मलामत की परवाह न करे

हाकिम की एक सिफ़त येह भी है कि वोह किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करे । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز से रिवायत है कि एक शख़्स ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "क्या मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में मलामत करने वाले की मलामत की परवाह करूं या अपनी ज़ात को देखूं ?" फ़रमाया : "जिस शख़्स को मुसलमानों के मुआ़मलात पर निगरान बनाया गया हो तो उसे चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करे और जो आ़म आदमी है उसे चाहिये कि वोह अपनी ज़ात का ख़याल रखे और अपने हाकिम के साथ अच्छा बरताव करे ।"(2)

(4)......जज़्बाती फ़ैसले से इजतिनाब करे

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने गवर्नरों व उमरा को फ़ैसला करने के हवाले से एक एहतियाती अम्र येह भी इरशाद फ़रमाते थे कि वोह कभी भी जज़्बाती कैफ़िय्यत में फ़ैसला न करें, इस हवाले से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने उमरा को मुख़्तलिफ़ अहकाम और मदनी फूल अ़ता फ़रमाते रहते थे । चुनान्चे,

(1)......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि "जब तुम गुस्से में हो तो दो आदमियों के दरमियान फ़ैसला न करो ।"(3)

---

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۶۲۔

2 ......شعب الایمان، باب فی الامر بالمعروف ـــ الخ، ج ۶، ص ۸۶، حدیث: ۷۵۶۲۔

3 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، کیف ینبغی للقاضی، ج ۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۶۹ ملتقطا۔

www.dawateislami.net

(2)......आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगी लश्करों के उमरा को लिखा : ''कोई भी अमीरे लश्कर चाहे वोह छोटा हो या बड़ा किसी मुसलमान पर ह़द जारी न करे जब तक उस का लश्कर दुश्मनों की ह़ुदूद से न निकल जाए क्यूंकि मुझे डर है कि कहीं वोह दुश्मनों के सामने ह़द जारी करने के सबब ग़ैरत में आ कर ख़ुदा न ख़्वास्ता मुशरिकीन से मिल जाए।''(1)

(3)......ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَيْسَ الرَّجُلُ اَمِيْناً عَلٰى نَفْسِهٖ اِذَا اَخَفْتَهٗ اَوْ اَوْثَقْتَهٗ اَوْ ضَرَبْتَهٗ ''या'नी कोई शख़्स अपनी ज़ात पर भी अमीन नहीं रहता जब तू उस को डराए, बांधे या मारे।''(2)

(5)......ह़ाकिम रिश्तेदारी का लिह़ाज़ न करे

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने रिश्तेदारों में से किसी को ह़ाकिम बनाना पसन्द नहीं फ़रमाते थे क्यूंकि जब कोई शख़्स अपनी रिश्तेदारी का लिह़ाज़ करेगा तो यक़ीनन वोह कई ऐसी ज़रूरी बातों को भी नज़र अन्दाज़ कर देगा जो एक ह़ाकिम के लिये बहुत ज़रूरी हैं, जब उस ह़ाकिम में ज़रूरी उमूर मौजूद नहीं होंगे तो वोह अपनी रिआ़या के मुआ़मलात को अच्छे त़रीक़े से नहीं निभा सकेगा येही वज्ह है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिश्तेदारों को ओ़ह्दा देना ख़ियानत तसव्वुर किया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اسْتَعْمَلَ رَجُلًا لِمَوَدَّةٍ اَوْ لِقَرَابَةٍ لَا يَسْتَعْمِلُهٗ اِلَّا لِذٰلِكَ فَقَدْ خَانَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالْمُؤْمِنِيْنَ ''या'नी जिस ने किसी शख़्स को मह़ब्बत और रिश्तेदारी की वज्ह से कोई ओ़ह्दा दिया और कोई वज्ह ओ़ह्दे देने की नहीं थी तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम मोमिनों से ख़ियानत की।''(3)

1......مصنف عبد الرزاق، کتاب الجهاد، هل یقام علی المسلم ۔۔۔ الخ، ج ۵، ص ۱۳۴، حدیث: ۹۴۳۳۔

2......مصنف عبد الرزاق، کتاب العقول، الاعتراف بعد العقوبة والتهدد، ج ۹، ص ۲۸۷، حدیث: ۱۹۰۶۳۔

3......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الثالث والثلاثون، ص ۷۸۔

کنز العمال، کتاب الخلافة، الترهیب عنها، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۰۳، حدیث: ۱۴۳۰۱۔

www.dawateislami.net

अपने रिश्तेदारों को हाकिम न बनाया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में वोह तमाम सिफ़ात मौजूद थीं जो एक ह़ाकिम के लिये ज़रूरी हैं, इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ई जन्नती सह़ाबी और सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बहनोई थे, आप में भी वोह सलाह़िय्यतें मौजूद थीं जो एक ह़ाकिम के लिये ज़रूरी हैं लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी उन दोनों को ह़ाकिम न बनाया, बल्कि एक दफ़्आ़ किसी ने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ाकिम बनाने का मश्वरा दिया तो उसे सख़्ती से डांट दिया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अह्ले कूफ़ा पर मैं अगर किसी नर्म और रह़्म दिल शख़्स को मुक़र्रर करता हूं तो वोह कमज़ोर हो जाते हैं और अगर मैं किसी सख़्त आदमी को मुक़र्रर करता हूं तो वोह शिकायत करते हैं, लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि मुझे कोई ऐसा शख़्स मिले जो त़ाक़तवर भी हो, अमानतदार भी हो।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मैं एक ऐसे शख़्स को जानता हूं जो इन तमाम सिफ़ात का ह़ामिल है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "वोह कौन है ?" अ़र्ज़ किया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : قَاتَلَکَ اللّٰہُ وَاللّٰہِ مَا اَرَدْتَّ اللّٰہَ بِھَا "या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हलाक फ़रमाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू ने इस बात से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का इरादा नहीं किया।"(1)

(6)......ओ़ह्दे का त़ालिब न हो

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस शख़्स को कभी ओ़हदा न देते थे जो ओ़हदा त़लब करता हो क्यूंकि आप के नज़्दीक ऐसे शख़्स से बहुत बई़द है कि वोह इन्साफ़ कर सके। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़र्वा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

1 ......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی والاربعون، ص ۱۱۴۔

www.dawateislami.net

مَاحَرَصَ رَجُلٌ كُلَّ الْحِرْصِ عَلَى الْإِمَارَةِ فَعَدَلَ فِيهَا "या'नी जो कोई शख़्स मन्सब की हिर्स व लालच रखता हो, मुमकिन नहीं कि ओ़हदा मिलने के बा'द वोह लोगों में इन्साफ़ क़ाइम कर सके।"(1)

(7)......हाकिम तिजारत न करे

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने एक मक्तूब में लिखा : اِنَّ تِجَارَةَ الْاَمِيْرِ فِي اِمَارَتِهٖ خَسَارَةٌ "या'नी हाकिम का अपनी हुकूमत में तिजारत करना ख़सारा या'नी सरासर नुक़्सान देह है।"(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की येह दूरअन्देशी थी कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हाकिमे वक़्त के अपनी रिआ़या में तिजारत करने के नुक़्सानात को पहले ही जान लिया था, वाक़ेई जो हाकिम अपनी ही रिआ़या में तिजारती मुआ़मलात करेगा तो इस से कई नुक़्सान ज़ाहिर होंगे, मसलन : हो सकता है लोग उस के ज़ुल्मो सितम से बचने के लिये या उस के अच्छे अख़्लाक़ की वज्ह से माल की ख़रीदो फ़रोख़्त में नर्मी करें। नीज़ लोग उस के मन्सब को सामने रखते हुवे किसी भी क़िस्म की नर्मी करेंगे जिस से वोह अपना भी नुक़्सान करेंगे और हाकिम को भी नुक़्सान पहुंचाएंगे। येही वज्ह है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी ख़रीदो फ़रोख़्त से मन्अ़ फ़रमा दिया था। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू हरीज़ सिजिस्तानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को लिखा : لَا تَبِيْعَنَّ وَلَا تَبْتَاعَنَّ وَلَا تُشَارَنَّ وَلَا تُضَارَنَّ وَلَا تَرْتَشِ فِي الْحُكْمِ وَلَا تَحْكُمْ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَاَنْتَ غَضْبَانُ "या'नी न तो तुम कोई चीज़ ख़रीदना और न ही कोई चीज़ बेचना, न ही लोगों के साथ बद सुलूकी करना, न ही उन को किसी क़िस्म का नुक़्सान पहुंचाना, न ही फ़ैसला करने में रिश्वत ख़ोरी से काम लेना, और न ही दो अफ़राद के माबैन ग़ुस्से की हा़लत में फ़ैसला करना।"(3)

(8)......फ़क़त़ शुब्हे की बिना पर पकड़ न करे

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ से तमाम गवर्नरों को इस बात का ख़ुसूसी हुक्म दिया जाता था कि जब तक मुआ़मले की तह तक न पहुंच जाएं

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، باب فی الامارة، ج۷، ص ۵۲۹، حدیث: ۹۔

2 ......سنن کبری، کتاب آداب القاضی، مایکرہ للقاضی ـــ الخ، ج ۱۰، ص ۱۸۳، حدیث: ۲۰۲۹۰۔

3 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب البیوع، کیف ینبغی للقاضی ان یکون، ج۸، ص ۲۳۲، حدیث: ۱۵۳۲۹۔

www.dawateislami.net

फ़क़त़ शुब्हे की बिना पर किसी के ख़िलाफ़ कोई भी कारवाई न करें । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा कि ह़ाकिम फ़क़त़ अपने इ़ल्म की बुन्याद पर या फ़क़त़ गुमान पर, या शुब्हे पर किसी की पकड़ न करे ।(1)

गवर्नरों से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियाती तदाबीर

गवर्नरों के इन्तिख़ाब के लिये मुशावरत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुख़्तलिफ़ अकाबिर बुज़ुर्ग सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बा'ज़ औक़ात दीगर लोगों से भी इस के मुतअ़ल्लिक़ मुशावरत फ़रमाते, फिर उसे गवर्नर मुन्तख़ब फ़रमा देते । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ज़ियाद ह़ारिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया, लोगों ने उन की मद्ह़ की तो उन्हें गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया ।(2)

गवर्नरों की तक़र्रुरी से पहले उन का इम्तिह़ान

बा'ज़ गवर्नरों की तक़र्रुरी से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इम्तिह़ान ले कर तफ़्तीश भी कर लिया करते थे कि येह शख़्स वाक़ेई इस ओ़ह्दे का अह्ल है या नहीं । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि एक बार मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने मुझे अपने पास एक साल तक रखा । फिर इरशाद फ़रमाया : ''ऐ अह़नफ़ ! मैं ने तुम्हें आज़मा लिया है और तुम्हारी सलाह़िय्यतों को परख लिया है, मैं ने देखा है कि तुम्हारा ज़ाहिर बहुत अच्छा है और उम्मीद है कि तुम्हारा बात़िन भी तुम्हारे ज़ाहिर ही की त़रह़ होगा ।''

फिर इसी त़रह़ बातें होती रहीं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا يُهْلِكُ هٰذِهِ الْاُمَّةَ كُلُّ مُنَافِقٍ عَلِيْمٍ ''या'नी इस उम्मत को इ़ल्म वाले मुनाफ़िक़ीन ही हलाक करेंगे ।'' लेकिन ऐ अह़नफ़ तुम मुनाफ़िक़ नहीं हो । बा'दे अज़ां सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुशीरे ख़ास बना दिया और उन से फ़रमाया :

1 ......مصنف عبد الرزاق، كتاب الشهادات، باب شهادة الامام، ج٨، ص٢٦٢، حديث: ١٥٥٤٦-

2 ......كنز العمال، كتاب الخلافة، آداب الامارة، الجزء: ٥، ج٣، ص٣٠٤، حديث: ١٤٣٠٧-

www.dawateislami.net

اَمَّابَعْدُ فَاُذُنُ الْاَحْنَفَ بْنَ قَیْسٍ وَشَاوِرْہُ وَاسْمَعْ مِنْہُ "या'नी ह़म्दो सलात के बा'द मैं तुम्हें इस बात का हुक्म देता हूं कि अह़नफ़ बिन क़ैस को अपना क़रीबी मुशीर बनाओ, उन से मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मुशावरत करो और उन की बातें ग़ौर से सुनो।"[1]

तक़र्रुरी के बा'द अ़मली कैफ़िय्यत पर नज़र

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी को गवर्नर या ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो इस के बा'द उस की अ़मली कैफ़िय्यत को भी मुलाह़ज़ा करते कि वाक़ेई वोह अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छे त़रीके़ से निभा रहा है या नहीं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने त़ाऊस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तुम क्या समझते हो कि मैं ने तुम में से सब से ज़ियादा इल्म वाले को तुम पर ह़ाकिम मुक़र्रर कर दिया और उसे हुक्म दे दिया कि इन्साफ़ से काम लो तो क्या मेरी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "जी हां।" फ़रमाया : "नहीं बल्कि जब तक मैं देख न लूं कि वोह मेरे हुक्म पर अ़मल करता भी है या नहीं ?"[2] (तब तक मेरी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं होगी।)

ह़ाकिम के असासों की तफ़्सील

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अफ़्सरान और गवर्नरों की तक़र्रुरी से क़ब्ल उन के मालो जाइदाद की जांच पड़ताल भी कर लेते थे ताकि ओ़ह्दा संभालने के बा'द उन के मुशाहरे के इलावा इज़ाफ़ी आमदनी पर नज़र रखी जा सके, आप का येह अम्र एह़तिसाब से तअ़ल्लुक़ रखता है, इस की एक वज्ह येह भी थी कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी को कोई ओ़ह्दा देते तो उस के लिये बैतुल माल से इतना वज़ीफ़ा जारी फ़रमाते कि उसे तिजारत की ह़ाजत न होती। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अम्र तमाम हुक्मरानों व गवर्नरों की दुन्यवी इस्लाह़ और उख़रवी फ़लाह़ पर मुश्तमिल था। चुनान्चे,

माल के दो हिस्से कर देते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने गवर्नरों को हुक्म दिया कि वोह अपने अमवाल की फ़ेहरिस्त तय्यार करें, उन गवर्नरों में जलीलुल क़द्र सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द

1 ......طبقات کبری، الاحنف بن قیس، ج۷، ص۶۵۔

2 ......شعب الایمان، باب فی طاعۃ اولی الامر، فصل فی فضل الامام العادل، ج۶، ص۲۴، حدیث: ۷۳۹۵۔

www.dawateislami.net

बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन सब के अमवाल के दो दो हिस्से कर के एक हिस्सा अमानतन अपने पास रख लिया और दूसरा हिस्सा उन्हें दे दिया।(1)

फ़ारूक़े आ'ज़म माल की तफ़्सील लिख लेते

हज़रते सय्यिदुना आ़मिर शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से रिवायत है कि "अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी को हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो उस की माल वग़ैरा की तफ़्सील लिख लिया करते थे।"(2)

हाकिम की चन्द मुतलक़ शराइत़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी किसी को हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो दो त़रह की शराइत़ होतीं, एक तो वोह शराइत़ जो आप अपने ज़ेहन में रखते और इन को मुतअ़ल्लिक़ा शख़्स की ज़ात में देखते नीज़ दूसरी कुछ मुत़लक़ शराइत़ भी थीं जो हर हाकिम के लिये ज़रूरी थीं, जो शख़्स इन पर अ़मल करने का अ़हद करता फ़क़त़ उसी को ओ़हदा दिया जाता था। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी किसी को हाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो उस के लिये येह शराइत़ लिखवाते : (1) वोह आ'ला तुर्की घोड़े पर सुवारी नहीं करेगा। (2) लज़ीज़ व उ़म्दा खाने नहीं खाएगा। (3) बारीक लिबास नहीं पहनेगा। (4) ह़ाजत मन्दों के सामने अपना दरवाज़ा कभी भी बन्द नहीं करेगा। जो शख़्स इन चारों शराइत़ पर अ़मल नहीं करेगा तो उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी।(3)

फ़ैसला करने की शराइत़

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से तक़्वा व परहेज़गारी के ए'तिबार से भी चन्द शराइत़ का लिहाज़ किया जाता था, जिन को आप ने अपने मुबारक फ़रमान में यूं बयान फ़रमाया : "दुन्या के हुक्मरान जिस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेंगे उस रोज़ उन की हलाकत होगी, सिवाए उन के जो अ़द्लो इन्साफ़ को क़ाइम करें, ह़क़ और सच बात ही के साथ फ़ैसला करें,

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۳۔
2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۳۳ ملتقطا۔
3 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۴۴، ص ۲۷۶، البدایۃ والنہایۃ، ج ۵، ص ۲۱۴۔

www.dawateislami.net

अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पर फ़ैसला न करें, फ़ैसला करने में रिश्तेदारी का लिहाज़ न करें, अपनी रग़बत पर फ़ैसला न करें, किसी के ख़ौफ़ से फ़ैसला न करें और **किताबुल्लाह** को हर वक़्त पेशे नज़र रखें।"(1)

मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों का एह़तिराम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने गवर्नरों को इस बात की भी ताकीद फ़रमाते थे कि जो शख़्स जिस मन्सब का हो उस का वैसा ही लिहाज़ा किया जाए, इस में कई फ़वाइद पोशीदा थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन ह़बीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा : "येह उ़र्फ़ है कि लोगों के सरदार होते हैं जिन के पास वोह अपनी ह़ाजतें वग़ैरा ले कर जाते हैं, लिहाज़ा तुम भी उन सरदारों का इकराम करना और कमज़ोर मुसलमान के लिये येही काफ़ी है इस के बारे में फ़ैसला करते हुवे या कोई तक़्सीम करते हुवे इन्साफ़ से काम लिया जाए।"(2)

लोगों की इस्लाह़ का राज़

एक कामयाब और साहिबे फ़िरासत ह़ाकिम के लिये ज़रूरी है कि वोह ऐसे तमाम उमूर को भी जानता हो जिन में रिआ़या की इस्लाह़ पोशीदा हो, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ गवर्नरों की तक़र्रुरी का फ़न जानते थे बल्कि येह भी जानते थे कि उस गवर्नर की तक़र्रुरी कब तक अ़वाम के लिये मुफ़ीद है, जैसे ही उस गवर्नर की तक़र्रुरी का वक़्त ख़त्म होता उसे फ़िलफ़ौर मा'ज़ूल कर देते या तब्दील फ़रमा देते, नीज़ आप इस अम्र को रिआ़या की इस्लाह़ के लिये एक बेहतरीन अम्र क़रार दिया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : هَانَ عَلَيَّ شَيْءٌ أُصْلِحُ بِهٖ قَوْمًا أَنْ أُبَدِّلَهُمْ أَمِيرًا مَكَانَ أَمِيرٍ "या'नी एक बात ऐसी है जिस के ज़रीए़ मैं किसी भी क़ौम की बेहतरीन इस्लाह़ कर सकता हूं वोह येह कि उन के एक अमीर को तब्दील कर के उस की जगह दूसरे को मुक़र्रर कर दूं।"(3)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب البیوع والاقضیة فی الحکم۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۵۴، حدیث: ۴۔

2 ......سنن کبری، کتاب قتال اهل البغی، ماعلی السلطان۔۔۔الخ، ج۸، ص ۲۹۱، حدیث: ۱۶۶۸۸۔

3 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۵، تاریخ مدینۂ منوره، ج ۲، الجزء: ۳، ص ۸۰۵۔

www.dawateislami.net

इन्तिख़ाबे हाकिम में त़बई सिफ़ात का लिहाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने बा'ज़ हुक्काम की तक़र्रुरी में मज़्कूरा तमाम सिफ़ात के इलावा त़बई सिफ़ात का भी ख़ुसूसी लिहाज़ किया करते थे, मसलन किसी भी शहरी शख़्स को देहाती लोगों पर ह़ाकिम मुक़र्रर न फ़रमाते, इसी त़रह़ किसी देहात से तअ़ल्लुक़ रखने वाले शख़्स को शहरियों पर ह़ाकिम मुक़र्रर न फ़रमाते, येही वज्ह है कि आप जब भी किसी शहर में कोई ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो इस के साथ उस अ़लाके़ के रहने वाले ऐसे लोगों को भी मुआ़विन बनाते जो वहां के रहन सहन को अच्छी त़रह़ जानते हों, क्यूंकि अगर इस के बर अ़क्स किया जाता तो हो सकता है शहरी ह़ाकिम देहातियों के रहन सहन से अ़दमे वाक़िफ़िय्यत की बिना पर किसी ऐसी शै की मुमानअ़त का हुक्म दे दे जो वहां के ए'तिबार से बिल्कुल मा'रूफ़ हो, येही ग़लत़ी शहरियों पर मुक़र्रर किये गए ह़ाकिम से भी सादिर हो सकती थी। अलबत्ता आप अपने यहां के मक़ामी लोगों को दीगर शहरों पर निगरानी के लिये तरजीह़ देते थे इस की एक वज्ह येह भी थी कि अह़कामाते शरइय्या के नफ़ाज़ वग़ैरा तमाम उमूर में येह लोग आप के मो'तमद अ़लय थे। आप इन पर ए'तिमाद फ़रमाया करते थे। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को इराक़ में क़ौमे बजीला का ह़ाकिम बनाया, सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मदाइन, ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्कए मुकर्रमा और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़ाइफ़ वालों का गवर्नर मुक़र्रर किया। यक़ीनन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन दोनों उमूर के पीछे मख़्सूस मक़ासिद थे।

गवर्नरों से अ़ह्द नामा

कुतुबे सियर व तारीख़ के मुत़ालए़ से येह बात भी सामने आती है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी को ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाते तो अपनी मजलिसे शूरा से मुशावरत के बा'द उस के लिये एक अ़ह्द नामा तह़रीर फ़रमाते जिस में उस के ओ़ह्दे के मुत़अ़ल्लिक़ हुक्मनामा और मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात की तफ़्सील होती, अगर वोह ह़ाकिम आप के पास ही मौजूद होता तो उसे वोह दे दिया जाता ब सूरते दीगर वोह जहां भी होता उसे वोह अ़ह्दनामा वहां पहुंचा दिया जाता। जैसा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बह़रैन के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को अ़ह्द नामा इरसाल किया और हुक्म दिया कि बसरा चले जाओ।

अगर पहले से मौजूद किसी गवर्नर को मा'ज़ूल करते तो नए गवर्नर के हाथ उस की मा'ज़ूली का हुक्मनामा भेजते जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूली का हुक्म दे कर भेजा। इसी त़रह़ अगर वहीं के किसी शख़्स को ह़ाकिम बनाना होता तो क़ासिद को हुक्मनामा दे कर भेजा जाता जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल फ़रमाया तो क़ासिद को येह हुक्म नामा दे कर भेजा कि ख़ालिद बिन वलीद को मा'ज़ूल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लश्कर का अमीर मुक़र्रर कर दिया गया है। इस त़रह़ की बीसियों मिसालें कुतुबे सियर व तारीख़ में मुलाह़ज़ा की जा सकती हैं।

गवर्नरों से ख़त़्तो किताबत

वाज़ेह़ रहे कि उ़र्फ़ का मुआ़शरे में बहुत बड़ा दख़्ल है, अह़कामे शरइय्या का एक बड़ा ह़िस्सा उ़र्फ़ से तअ़ल्लुक़ रखता है, जो ह़ाकिम अपने अ़लाक़े के उ़र्फ़ से वाक़िफ़ न हो यक़ीनन वोह किसी सूरत भी कामयाब ह़ाकिम नहीं हो सकता, येही वज्ह है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों का दौरा फ़रमाते ताकि वहां के उ़र्फ़ व आ़दात को जान सकें और अपने गवर्नरों व उ़म्मालों से ब ज़रीअ़ए ख़त़्तो किताबत भी इस मुआ़मले में मा'लूमात ह़ासिल करते रहते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अक्सर ख़त़्तो किताबत फ़रमाते रहते थे।

हुकूमती मुआ़मलात में मुसलमानों की तक़र्रुरी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि मुसलमानों के हुकूमती मुआ़मलात में कभी भी ग़ैर मुस्लिमों को मुक़र्रर नहीं फ़रमाते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ग़ैर मुस्लिम ग़ुलाम को जो लिखाई पढ़ाई का माहिर था कातिब रखना चाहा तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मन्अ़ फ़रमा दिया। नीज़ इस की वज्ह येह बयान फ़रमाई कि ग़ैर मुस्लिम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ाइन हैं तो मुसलमानों के मुआ़मलात में हम उन से क्या अमानतदारी की उम्मीद करें?[1]

अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर किसी ग़ैर मुस्लिम को इस के क़ाबिल समझते तो उसे मुसलमान होने की तरग़ीब दिलाते थे। जैसा कि आप का एक ग़ुलाम "**उसुक़**" ईसाई था, आप ने उस

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الصحبة، صحبة الذمي، الجزء: ٩، ج٥، ص ٨٩، حديث: ٢٥٦٧٧-

www.dawateislami.net

से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम इस्लाम ले आओ तो मैं मुसलमानों के मुआमलात में तुम से मदद लूंगा क्यूंकि मेरे नज़्दीक मुसलमानों के मुआमलात में ग़ैर मुस्लिमों से मदद लेना जाइज़ नहीं है।"[1]

फ़ारूक़ी गवर्नरों की चन्द अहम ख़ुसूसिय्यात

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़्कूरए बाला तमाम सिफ़ात के हामिल अफ़राद को ही मुख़्तलिफ़ ओह्दे दिया करते थे, بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा गवर्नरों ने कभी भी आप के अह्द की जान बूझ कर अह्द शिकनी नहीं की, बल्कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाती सिफ़ात, मदनी सोच का असर आप के गवर्नरों में भी देखने में आया, आप के अह्द के गवर्नरों की तक़्वा व परहेज़गारी वाली सिफ़ात को देख कर ऐसे लगता है जैसे सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी को गवर्नर बनाते तो रूहानी तौर पर येह दोनों सिफ़ात उसे सीना ब सीना अता फ़रमा देते थे। बहर हाल आप के तमाम गवर्नर क़ुरआनो सुन्नत के आमिल, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका पर मुकम्मल भरोसा करने वाले, सादिक़ो अमीन, दीनी व दुन्यवी सलाहिय्यतों के माहिर, बहादुरी, मुरुव्वत, ज़ोह्द, वरअ़ जैसी सिफ़ात से मौसूफ़, निहायत ही आजिज़ी व इन्किसारी करने वाले, शरई हुदूद क़ाइम करने वाले, बुर्दबार, हौसला मन्द, बुलन्द हिम्मत, दूरअन्देश, आदिल व मुन्सिफ़, मुश्किलात से निपटने की भरपूर सलाहिय्यत रखने वाले और इन जैसी तमाम सिफ़ात के हामिल थे, अलबत्ता चन्द सिफ़ात को इम्तियाज़ी हैसिय्यत भी हासिल थी, तफ़्सील कुछ यूं है :

फ़ारूक़ी गवर्नरों का ज़ोह्दो तक़्वा

ज़ोह्दो तक़्वा में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गवर्नरों में हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ज़ियादा मश्हूर हैं। इन परहेज़गार हस्तियों के तक़्वा व परहेज़गारी का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि बा'ज़ औक़ात इन के घरवाले भी इस को बहुत महसूस करते थे। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़बीलए बनू किलाब या क़बीलए बनू सा'द के पास भेजा तो उन्हों ने सारा

---

1 ......طبقات کبری، بقیۃ طبقۃ عن روی---الخ، ج٦، ص٢٠٢۔

www.dawateislami.net

का सारा माल उन में तक़्सीम कर दिया अपने लिये कुछ भी न रखा और घर से जिस ह़ालत में आए थे वैसे ही वापस चले गए, उन की ज़ौजा ने उन से उन के माल के बारे में पूछा तो फ़रमाया : "मुझ पर एक निगरान मुक़र्रर था।" आप की ज़ौजा ने सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से शिकायत की तो उन्हों ने बुलाया और मुआ़मला दरयाफ़्त किया कि मैं ने तो तुम पर कोई निगरान मुक़र्रर नहीं किया था ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : لَمْ اَجِدْ شَیْئًا اَعْتَذِرُ بِهٖ اِلَیْهَا اِلَّا ذٰلِکَ "या'नी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस बात के इ़लावा मेरे पास कोई ऐसी बात नहीं थी कि जिस के ज़रीए़ मैं अपनी ज़ौजा के आगे अपना उ़ज़्र बयान करता।" येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्कुराए और फिर उन्हें कुछ माल वग़ैरा दे कर भेजा कि अपनी ज़ौजा को दे कर उसे राज़ी करो।[1]

ह़ाकिम का नाम मोह़ताजों की फ़ेहरिस्त में

एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िम्स के बाशिन्दों से उन के फ़ुक़रा और मोह़ताजों की फ़ेहरिस्त त़लब की ताकि उन्हें अ़तिय्यात भेजे जा सकें। जब वोह मत़लूबा फ़ेहरिस्त अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंची तो उस में सब से पहला नाम ह़िम्स के गवर्नर या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का था। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बड़ी ह़ैरत हुई कि हम तो उन्हें मुनासिब मिक़्दार में वज़ीफ़ा देते हैं, इस के बा वुजूद उन का नाम मोह़ताज व मसाकीन की फ़ेहरिस्त में क्यूं दर्ज है ? इस्तिफ़्सार पर बताया गया कि : "जो कुछ आप यहां से रवाना करते हैं, वोह उसे अपने पास रखते ही नहीं, बल्कि फ़क़ीरों और मोह़ताजों में तक़्सीम कर देते हैं।" फिर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िम्स के बाशिन्दों से ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के रवय्ये के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि बाक़ी सब तो ठीक है लेकिन हमें उन से चार[4] शिकायात हैं :

(1)......"वोह हमारे पास सुब्ह़ सुब्ह़ नहीं आते बल्कि दिन चढ़ने के बा'द आते हैं।"

(2)......"दिन के वक़्त तो मुलाक़ात फ़रमाते हैं लेकिन रात के वक़्त मुलाक़ात नहीं फ़रमाते।"

(3)......"महीने में एक दिन ऐसा आता है कि वोह किसी से भी नहीं मिलते।"

(4)......"हम ने येह भी देखा है कि कभी कभी उन पर बेहोशी का त़वील दौरा पड़ता है।"

---

1 ......كتاب الاموال لابی عبيد، باب قسم الصدقة فی ـــ الخ، ص ۵۸۹، الرقم: ۱۹۱۳، تاريخ ابن عساكر، ج ۵۸، ص ۴۳۵۔

www.dawateislami.net

बा'द में जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हुई तो आप ने उन से अहले ह़िम्स की शिकायात के बारे में वज़ाह़त त़लब की। ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन चारों शिकायात की निहायत ही ईमान अफ़रोज़ वज़ाह़त करते हुवे अ़र्ज़ किया :

(1)......"हुज़ूर ! इन की पहली शिकायत येह है कि मैं दिन चढ़ने के बा'द इन के पास आता हूं, इस की वज्ह येह है कि मेरा कोई भी ख़ादिम वग़ैरा नहीं है जब कि मेरी ज़ौजा बीमार है। लिहाज़ा मैं खुद ही नमाज़े फ़ज्र के बा'द दिन चढ़ने तक अपने घर के सारे काम काज करता रहता हूं जिस के सबब लेट हो जाता हूं।"

(2)......"हुज़ूर ! इन की दूसरी शिकायत येह है कि मैं रात के वक़्त इन से मुलाक़ात नहीं करता। इस की वज्ह येह है कि मैं दिन भर लोगों की ख़िदमत करता हूं, इन के हुक़ूक़ की पासदारी करता हूं जब कि रात का वक़्त मैं ने अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ की अदाएगी के लिये वक़्फ़ कर रखा है।"

(3)......"हुज़ूर ! इन की तीसरी शिकायत येह है कि मैं पूरे महीने में एक दिन घर से बाहर नहीं निकलता, इस की वज्ह येह है कि मेरे पास कपड़ों का सिर्फ़ एक ही जोड़ा है, जिसे मैं महीने भर पहनता हूं, फिर एक दिन उसे धोता हूं, फिर खुश्क होने पर उसे पहन लेता हूं, तो कपड़े न होने की वज्ह से मैं उस दिन लोगों से मुलाक़ात नहीं कर सकता।"

(4)......"हुज़ूर ! इन की चौथी शिकायत येह है कि मुझ पर कभी कभी बेहोशी का त़वील दौरा पड़ता है, तो इस की वज्ह येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना खुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे सामने शहीद किये गए, मैं उस वक़्त ह़ालते कुफ़्र में था। मुझे जब भी येह वाक़िआ़ याद आता है तो मेरे दिल पर चोट लगती है और सीने से एक हूक सी उठती है कि काश ! मैं उस वक़्त इस्लाम ला चुका होता और उन के दिफ़ाअ़ की कोशिश करता। ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे जब भी उन की याद आती है तो मुझ पर रन्जो अलम का एक बहुत बड़ा पहाड़ टूट पड़ता है और मेरे होशो ह़वास गुम हो जाते हैं, मुझ पर त़वील बेहोशी त़ारी हो जाती है।"

اَللّٰہُ اَکْبَر ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह वज़ाह़तें सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस शिद्दत से रोए की रोते रोते आप की हिचकियां बन्ध गईं।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द जब भी इन का तज़किरा होता तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर शदीद गिर्या त़ारी हो जाता और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के लिये दुआ़ए रह़मत व मग़फ़िरत फ़रमाया करते थे।(1)

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म की दिली आरज़ू

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ किया और उन से फ़रमाया : "आप लोग अपनी अपनी आरज़ू बयान करें।" एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! मेरी आरज़ू येह है कि मेरे पास एक लश्कर हो जिसे ले कर मैं दुश्मनाने इस्लाम से जिहाद करूं।" दूसरे सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर ! मेरी आरज़ू येह है कि मेरे पास बहुत सा माल हो जिसे मैं राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दूं।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी आरज़ू येह है कि मेरे पास ह़ज़रते सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा कोई अमीर हो जिसे मैं मुसलमानों के उमूर का वाली बना दूं।" येह फ़रमाने के बा'द आप इतना रोए कि बात करना भी मुश्किल हो गई। आप की ज़बान से बार बार सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये येही दुआ़ निकल रही थी : رَحِمَهُ الله، رَحِمَهُ الله، رَحِمَهُ الله "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर रह़म फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर रह़म फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर रह़म फ़रमाए।"(2)

इ़ल्मो हिक्मत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गों का किरदार कितना अ़ज़ीम और लाइके़ तक़्लीद हुवा करता था, बिल ख़ुसूस अहले ह़िम्स की दूसरी शिकायत के जवाब में ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो कुछ इरशाद फ़रमाया, उस में हमारे लिये किस क़दर सबक़ पोशीदा है, आप अपने बा'द में आने वाले निगरानों के लिये रिआ़या की ख़िदमत के साथ साथ इनफ़िरादी इ़बादत की कैसी मदनी सोच पैदा कर रहे हैं और इस इ़बादत में इख़्लास ऐसा कि किसी को कानों कान ख़बर न होने दी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़ी गवर्नरों की आ़जिज़ी व इन्किसारी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ज़ाते ख़ुद आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे, आप के मुक़र्रर कर्दा गवर्नरों और सिपह सालारों को भी आ़जिज़ी व इन्किसारी

1 ......اسد الغابة، سعید بن عامر، ج ۲، ص ۶۲۴، حلیة الاولیاء، ج ۱، ص ۳۰۹، عیون الحکایات، ص ۱۵۔

2 ......من نفحات الخلود، ص ۱۹۹۔

www.dawateislami.net

गोया फ़ारूक़े आ'ज़म की त़रफ़ से विरसे में मिली थी, वैसे तो आप के तमाम गवर्नर व सिपह सालार इस बेहतरीन वस्फ़ से ब ख़ूबी मुत्तसिफ़ थे लेकिन इन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम बिल्कुल नुमायां है। आप का फ़क़त़ एक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है कि मुसलमानों ने मुसलसल कई रोज़ से रूमी क़ल्ए़ का मुह़ासरा किया हुवा था और एक मरतबा रूमी क़ल्ए़ से बाहर आ कर मुसलमानों से झड़प भी कर चुके थे लेकिन मुंह की खा कर वापस क़ल्ए़ में मह़सूर हो गए। जब रूमियों के पास सुल्ह़ के इलावा कोई सूरत बाक़ी न रही तो उन्हों ने लश्करे इस्लाम के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिब पैग़ाम भेजा कि हम आप से सुल्ह़ करने के लिये अपना क़ासिद भेजना चाहते हैं। अगर आप ने हमारी येह अ़र्ज़ क़बूल कर ली तो हम इसे अपने और आप के ह़क़ में बेहतर समझेंगे और अगर आप ने इन्कार कर दिया तो यक़ीनन इस में सरा सर नुक़्सान ही होगा। मुसलमानों के सिपह सालार ने उन की पेशकश को क़बूल कर लिया और इरशाद फ़रमाया : "ठीक है तुम अपना क़ासिद भेज दो।"

रूमियों ने मुसलमानों के सिपह सालार को मुतअस्सिर करने के लिये निहायत ही क़ीमती लिबास में मल्बूस एक दराज़ क़ामत शख़्स को सफ़ीर बना कर भेजा। चूंकि रूमी सफ़ीर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहले नहीं देखा था इस लिये वोह मुसलमानों के लश्कर के क़रीब पहुंच कर यूं मुख़ात़ब हुवा : "ऐ गुरौहे अ़रब ! तुम्हारा सिपह सालार कहां है ?" मुसलमान सिपाहियों ने एक जानिब इशारा कर के बताया कि वोह वहां होंगे। जब सफ़ीर ने उस जगह पहुंच कर देखा तो उस की आंखें फटी की फटी रह गईं, क्यूंकि मुसलमानों के सिपह सालार के बारे में शायद उस ने अपने ज़ेह्न में येह ख़ाका बनाया था कि उस का बहुत बड़ा दरबार होगा जिस में वोह अ़ज़ीमुश्शान तख़्त पर क़ीमती लिबास पहने बिराजमान होगा, बीसियों ख़ादिमीन उस के सामने सर झुकाए बा अदब उस के हुक्म की ता'मील के लिये हर वक़्त तय्यार खड़े होंगे, उस के आस पास पहरेदारों की एक फ़ौज होगी और उस तक पहुंचने के लिये शायद मुझे कई एक मराह़िल तै़ करना होंगे। लेकिन क्या देखता है कि एक कमज़ोर जिस्म और लम्बे क़द वाले बा रो'ब शख़्स ज़मीन पर बैठे हैं और अपने हाथ से तीरों को उलट पलट कर जंगी हथयारों का मुआ़इना कर रहे हैं। रूमी सफ़ीर ने आप की त़रफ़ देखते हुवे बड़ी ह़ैरानी से पूछा : "क्या आप ही मुसलमानों के सिपह सालार हैं ?" फ़रमाया : "जी हां।" सफ़ीर ने कहा : "आप के ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा होने की क्या वज्ह है ? अगर तक्ये से टेक लगा कर या क़ालीन पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुअ़ज़्ज़ज़ ही रहते, आप ने ख़ुद को इन ने'मतों

www.dawateislami.net

से क्यूं महरूम रखा हुवा है ?" इस पर आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने फ़रमाया : "जब अल्लाह عزوجل हक़ बयान करने से हया नहीं फ़रमाता तो मैं आप से क्यूं शरमाऊं ? बात दर अस्ल येह है कि मेरी ज़रूरत का सामान ज़ियादा से ज़ियादा तलवार, घोड़ा और दीगर चन्द हथयार हैं, अलबत्ता ! अगर इन के इलावा मुझे किसी और चीज़ की ज़रूरत महसूस हो तो मैं अपने इस्लामी भाई मुआज़ बिन जबल رضی اللہ تعالیٰ عنہ से क़र्ज़ ले लेता हूं, अगर मुआज़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ को कोई हाजत होती है तो वोह मुझ से क़र्ज़ ले कर अपनी ज़रूरत पूरी कर लेते हैं (यूं हमारा दिल उन आसाइशों की जानिब माइल ही नहीं होता जिन का तज़्किरा तुम कर रहे हो) बिलफ़र्ज़ ! अगर मुझे क़ालीन मयस्सर हो भी जाए तो मैं उस पर कैसे बैठ सकता हूं जब कि मेरे दीगर भाई तो ज़मीन पर बैठते हैं (और मुझे इस त़रह़ का कोई इम्तियाज़ गवारा नहीं क्यूंकि) हम अल्लाह عزوجل के बन्दे हैं, ज़मीन पर चलते हैं, इसी पर बैठ जाते हैं, इसी पर बैठ कर खा पी लेते हैं, इसी पर सो जाते हैं, इन बातों के सबब अल्लाह عزوجل की बारगाह में हमारा सवाब बढ़ने के साथ साथ मज़ीद दरजात भी बुलन्द हो जाते हैं।"(1)

फ़ारूक़ी गवर्नरों की हुब्बे जाह से दूरी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ के मुक़र्रर कर्दा गवर्नरों में हुब्बे जाह से दूरी जैसा वस्फ़ भी पाया जाता था, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ जिसे भी ह़ाकिम मुक़र्रर कर देते तो उस की मजाल न होती कि वोह आप के हुक्म के आगे कोई भी बात करे, लेकिन कई गवर्नर ऐसे भी थे जिन्हों ने आप के हुक्म पर इस मन्सब को क़बूल कर लिया लेकिन हुब्बे जाह से दूरी इख़्तियार करते हुवे बा'दे अज़ां अपना इस्ति'फ़ा पेश कर दिया, बा'ज़ गवर्नरों ने इस्ति'फ़ा पेश किया तो आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने उसे क़बूल न फ़रमाया। जैसे कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने बसरा की गवर्नरी से इस्ति'फ़ा पेश किया तो आप ने क़बूल न फ़रमाया। इसी त़रह़ "कस्कर" के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने जिहाद में शिर्कत की वज्ह से इस्ति'फ़ा पेश किया। नीज़ आप के अस्ह़ाब में भी कई दोस्त ऐसे थे जिन्हें आप ने ओ़ह्दा देने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो उन्हों ने मा'ज़िरत कर ली जैसे कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ تعالیٰ عنہ को मिस्र का गवर्नर बनाना चाहा तो आप ने इन्कार कर दिया, इसी त़रह़ "ह़िम्स" के साबिक़ा गवर्नर की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہ को गवर्नर

---

(1) ......رياض النضرة، ج٢، ص٣٥٥-

www.dawateislami.net

बनाना चाहा तो उन्हों ने भी इन्कार कर दिया। ओ़हदा न लेने से मुतअ़ल्लिक़ यहां एक रिवायत ज़िक्र करना काफ़ी मुफ़ीद है जिस में ओ़हदा लेने वाले की आज़्माइश का बयान है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन आ़सिम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुझे कोई ओ़हदा लिख कर दे दिया तो मैं ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! मुझे इस ओ़हदे की कोई ह़ाजत नहीं है क्यूंकि मैं ने **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم को येह फ़रमाते सुना है कि वालियों या'नी सरकारी मन्सबों पर फ़ाइज़ लोगों को क़ियामत के दिन बुलाया जाएगा और उन्हें जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा, पस जो शख़्स **अल्लाह** عزوجل का इत़ाअ़त गुज़ार होगा तो रब عزوجل उसे अपने दाएं दस्ते क़ुदरत से पकड़ कर जहन्नम से नजात दे देगा और जो **अल्लाह** عزوجل का ना फ़रमान होगा उस के लिये जहन्नम का पुल फट जाएगा जिस से वोह जहन्नम की वादियों में गिरता ही चला जाएगा जहां आग के शो'ले भड़क रहे होंगे।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस ह़दीसे मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ تعالٰی عنہ और हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ से इस्तिफ़्सार किया और बा'दे अज़ां इरशाद फ़रमाया : "जब हुकूमती ओ़हदा लेने में इस क़दर आज़्माइश है तो अब इस ओ़हदे को कौन क़बूल करेगा ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! अब इस ओ़हदे को सिर्फ़ वोही क़बूल करेगा जिस की नाक **अल्लाह** عزوجل ने काट दी हो, उस की आंख निकाल दी हो और उस का रुख़्सार ज़मीन के साथ रगड़ दिया हो।"[1]

ज़िम्मेदारान का एह़तिराम करने वाले

बा'ज़ औक़ात येह भी देखने में आया है कि जब किसी शख़्स को कोई ओ़हदा मिले तो वोह शैत़ान के बहकावे में आ कर अपने से पहले गवर्नर की ख़ामियों को उछालता और अपनी ख़ूबियों को बयान करता है लेकिन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ के तमाम गवर्नरों में एक सिफ़ते मुश्तरका येह भी थी कि तमाम गवर्नर चाहे वोह मौजूदा गवर्नर हों या साबिक़ा, एक दूसरे की बहुत ही इ़ज़्ज़त किया करते थे, निहायत ही एह़तिराम से पेश आते थे, पूरी तारीख़ में किसी गवर्नर के बारे में एक भी ऐसा वाक़िआ़ नहीं मिलता कि उस ने किसी साबिक़ा गवर्नर के ख़िलाफ़ कोई आवाज़ उठाई हो या उस के ख़िलाफ़ किसी क़िस्म का प्रोपेगेन्डा किया हो, यक़ीनन येह वस्फ़ इन फ़ारूक़ी गवर्नरों की आ'ला ज़र्फ़ी और हुब्बे जाह से दूरी पर वाज़ेह़ दलालत करता है।

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الجهاد، باب فی الامارة، ج ۷، ص ۵۶۹، حدیث: ۷ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार बनाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिपह सालार होने के बावुजूद सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इक़्तिदा में नमाज़ें अदा किया करते थे, इसी त़रह़ जब उन्हें मा'ज़ूल कर के सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर किया गया तो उन्हों ने वोह मक्तूब आप को न दिखाया जिस में मा'ज़ूली का हुक्म था, बा'द में उन्हें मा'लूम हुवा तो कबीदा ख़ात़िर (रन्जीदा) हुवे कि मैं तो मा'ज़ूल हो चुका था फिर भी इन पर हुक्म चलाता रहा। बहर ह़ाल फ़ारूक़ी गवर्नरों के इस प्यारे वस्फ़ के पीछे दर अस्ल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोह अ़ज़ीम तरबिय्यत काम कर रही थी जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत से ह़ासिल की थी।

गवर्नरों का सालाना मदनी मश्वरा

किसी भी रियासत या मुल्क के सरबराह के लिये येह बात निहायत ज़रूरी है कि वोह अपने तमाम ज़िम्मेदारान और उन की मा तह़्त रिआ़या दोनों को एक दूसरे के मुआ़मलात से मुत़्मइन करे, अगर ज़िम्मेदारान को अ़वाम से या अ़वाम को अपने ज़िम्मेदारान से कोई शिकायत हो तो वोह दूर करे। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि आप सालाना दो त़रह़ के मदनी मश्वरे फ़रमाया करते थे, एक तो फ़क़त़ ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा जिस में उन से उन के मन्सब और रिआ़या के साथ चलने वाले मुआ़मलात के बारे में पूछगछ की जाती और दूसरा मदनी मश्वरा उन गवर्नरों के बारे में अ़वामुन्नास से ह़ज के मौक़अ़ पर किया करते थे। दोनों की तफ़्सील कुछ यूं है :

अ़वाम के मुतअ़ल्लिक़ गवर्नरों से मदनी मश्वरा

ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ बिन जाबिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना रियाश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर साल अपने तमाम गवर्नरों को अपने पास बुलाया करते, जब वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते तो आप उन से उन की हुक्मरानी और रिआ़या वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात लेते, पस जिसे उस के ओ़ह्दे पर क़ाइम रखना चाहते तो उसे वापस भेज देते और जिसे मा'ज़ूल करना होता मा'ज़ूल कर देते।(1)

1 ......تاریخ مدینۂ منورہ، ج۲، ص۸۰۶۔

www.dawateislami.net

गवर्नरों के मुतअ़ल्लिक़ अ़वाम से मदनी मश्वरा

हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हर साल हज के मुबारक मौसिम में अपने उ़म्माल और गवर्नरों के साथ उ़मूमी मदनी मश्वरा किया करते थे, जब तमाम लोग जम्अ़ हो जाते तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते :

يَا اَيُّهَا النَّاسُ! اِنِّي لَمْ اَبْعَثْ عُمَّالِي عَلَيْكُمْ لِيُصِيْبُوْا مِنْ اَبْشَارِكُمْ وَلَا مِنْ اَمْوَالِكُمْ اِنَّمَا بَعَثْتُهُمْ لِيَحْجِزُوْا بَيْنَكُمْ وَلِيَقْسِمُوْا فَيْئَكُمْ بَيْنَكُمْ، فَمَنْ فُعِلَ بِهٖ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلْيَقُمْ

"या'नी ऐ लोगो ! मैं ने अपने उ़म्माल और गवर्नरों को तुम लोगों पर इस लिये मुक़र्रर नहीं किया कि येह लोग तुम पर ज़ुल्मो सितम कर के तुम्हारी खालें उधेड़ें, तुम्हारे मालों पर क़ब्ज़ा कर लें, बल्कि मैं ने तो इन्हें इस लिये भेजा है कि तुम्हारे और ज़ुल्मो सितम के दरमियान रुकावट बन जाएं, अ़द्लो इन्साफ़ के साथ तुम्हारे दरमियान माल तक़्सीम करें, अगर इन तमाम मुआ़मलात के इलावा किसी के साथ कोई मुआ़मला पेश आया तो वोह मेरे सामने बयान कर सकता है।" फिर अगर किसी को अपने ज़िम्मेदार से कोई शिकायत होती तो वोह खड़े हो कर बयान करता और उसे भरपूर इन्साफ़ दिया जाता।(1)

हुक्मरान सीधे रहें तो रिआ़या भी सीधी

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने विसाल के वक़्त इरशाद फ़रमाया : اِعْلَمُوْا اَنَّ النَّاسَ لَنْ يَّزَالُوْا بِخَيْرٍ مَا اسْتَقَامَتْ لَهُمْ وُلَاتُهُمْ وَهُدَاتُهُمْ "या'नी येह बात अच्छी त़रह जान लो कि लोग उस वक़्त तक सीधी राह पर गामज़न रहेंगे जब तक उन के हुक्मरान और रहनुमा सीधे रहेंगे।"(2)

अपने हाकिम से त़लबे आ़फ़िय्यत का त़रीक़ा

हज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْوَالِيْ اِذَا طَلَبَ الْعَافِيَةَ مِمَّنْ هُوَ دُوْنَهٗ اَعْطَاهُ اللّٰهُ الْعَافِيَةَ مِمَّنْ هُوَ فَوْقَهٗ "या'नी जब कोई हाकिम अपनी

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۲۳۔

2 ......سنن کبری، کتاب قتال اهل البغی، باب فضل الامام ــــ الخ، ج۸، ص ۲۸۱، حدیث: ۱٦۲۵۱۔

www.dawateislami.net

रिआ़या के साथ आ़फ़िय्यत वाला मुआ़मला करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे भी उस के माफ़ूक़ (ऊपर वाले) हा़किम से आ़फ़िय्यत अ़ता फ़रमाएगा।"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुक्मरानों की ज़िम्मेदारियां

(1)......अपनी और घरवालों की इस्लाह़ की कोशिश करे

हा़किम की अव्वलीन ज़िम्मेदारियों में से है कि वोह अपनी और अपने घरवालों की इस्लाह़ की कोशिश करता रहे क्यूंकि अ़वामुन्नास के साथ पहला तअ़ल्लुक़ उस की ज़ात का है, फिर उस के घरवालों का है, हा़किम जब भी कोई हुक्म रिआ़या के लिये जारी करता है तो अव्वलन रिआ़या येह देखती है कि क्या हा़किम खुद भी उस पर अ़मल करता है या नहीं ? बा'दे अज़ां वोह येह देखते हैं कि हमें तो येह इस बात की तल्क़ीन कर रहा है क्या अपने घरवालों की भी इस्लाह़ की कोशिश करता है ? यक़ीनन एक कामयाब हा़किम की निशानी येही है कि वोह अपनी इस्लाह़ की कोशिश के साथ साथ अपने घरवालों की इस्लाह़ की कोशिश में भी मसरूफ़ रहे, जो हा़किम या ज़िम्मेदार अपनी इस्लाह़ की कोशिश में लगा रहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ज़बान में तासीर पैदा फ़रमा देता है, जब कोई बात उस के मुंह से निकलती है तो तासीर का तीर बन कर लोगों के दिलों में पैवस्त हो जाती है। अपनी और घरवालों की इस्लाह़ के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ﴾ (پ۲۸، التحریم:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।"

फ़ारूक़े आ'ज़म ने खुद को अ़मली नमूना बना कर पेश किया

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुकम्मल सीरते त़य्यिबा से मा'लूम होता है कि हा़किमे वक़्त जब तक अपने आप को अ़मली सूरत में अ़वाम के सामने पेश नहीं करेगा रिआ़या से इता़अ़त की तवक़्क़ोअ़ न रखे। येही वज्ह है कि आप ने ख़लीफ़ा बनने से ले कर विसाल तक कभी भी कोई ऐसा हुक्म जारी न फ़रमाया जिस पर खुद अ़मल न किया हों। तक़्वा व परहेज़गारी, आ़जिज़ी व इन्किसारी, खुद्दारी, गुनाहों व मा'सिय्यत से बचने का ज़ेह्न, क़नाअ़त, ग़ैरत व

---

(1) ....تاریخ ابن عساکر، ج۴۴، ص۳۲۱، کنز العمال، کتاب الخلافۃ، آداب الامارۃ، الجزء:۵، ج۳، ص۳۰۷، حدیث:۱۴۳۳۶۔

www.dawateislami.net

ह़मिय्यत, हुक़ूक़ुल्लाह की रिआ़यत, हुक़ूक़ुल इ़बाद की रिआ़यत, इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का जज़्बा रह़्म दिली और शफ़्क़त व मह़ब्बत, अल ग़रज़ ज़िन्दगी का कोई एक पहलू भी ऐसा नहीं है कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपनी रिआ़या को तो हुक्म दिया हो मगर खु़द उस पर अ़मल न किया हो, येही वज्ह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप की ज़बाने मुबारका में ऐसी तासीर रखी कि आप की जानिब से जो भी हुक्म जारी होता रिआ़या व अ़वामुन्नास उसी में अपनी बेहतरी समझते, हाथों हाथ उस पर अ़मल की कोशिश करते, आप की ग़ैर मौजूदगी में आप के लिये दुआ़एं करते। सीरते फ़ारूक़ी के इस नायाब पहलू में तमाम ज़िम्मेदारान के लिये बेशुमार इस्लाह़ के मदनी फूल हैं। काश ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं।

अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप भी ह़त्तल मक्दूर अपने मुरीदीन, मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन को जब भी कोई तक़्वा व परहेज़गारी से मुतअ़ल्लिक़ दर्स देते हैं तो पहले अपनी ज़ात पर उसे नाफ़िज़ फ़रमाते हैं, आप دامت برکاتہم العالیہ ने जब अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "फ़ैज़ाने सुन्नत" का एक बाब "पेट का कु़फ़्ले मदीना" लिखा जो कम खाने की बरकतों पर मुश्तमिल है, तो सब से पहले अपनी ज़ात पर उसे नाफ़िज़ फ़रमाया, आप ने अपने खाने में इतनी कमी कर ली कि कमज़ोरी लाह़िक़ हो गई और बा'ज़ औक़ात आप ग़श खा कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते, क्यूंकि आप की येह मदनी सोच थी कि जब तक मैं अपनी ज़ात पर इस को नाफ़िज़ नहीं करूंगा मेरी तह़रीर में असर नहीं होगा, येही वज्ह है कि आज आप की तालीफ़ पढ़ कर बे शुमार लोगों का पेट का कु़फ़्ले मदीना लगाने का ज़ेह्न बन रहा है और इस के कसीर फ़वाइदो समरात से फ़ैज़याब हो रहे हैं, आप دامت برکاتہم العالیہ ने अपने मुरीदीन, मुह़िब्बीन, मुतअ़ल्लिक़ीन इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों तमाम को येह अ़ज़ीम मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया है कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" यक़ीनन आप का अ़त़ाकर्दा येह मदनी मक़्सद सीरते फ़ारूक़ी की बेहतरीन अ़क्कासी करता है। न सिर्फ़ आप ने मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया बल्कि इस पर अ़मल करने का बेहतरीन और आसान त़रीक़ा भी बताया कि अपनी इस्लाह़ के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी इस की निय्यत कर लीजिये कि अपनी इस्लाह़ के साथ साथ घरवालों, अपने मुतअ़ल्लिक़ीन बल्कि पूरी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करता रहूंगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(2)......अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन की इस्लाह़ करे

एक ह़ाकिम के लिये अपनी और अह्ले ख़ाना की इस्लाह़ के साथ येह बात भी अहम्मिय्यत की ह़ामिल है कि आया उस के साथ रहने वाले उस के मुतअ़ल्लिक़ीन भी अ़मली नफ़ाज़ का मुज़ाहरा करते हैं या नहीं ? लिहाज़ा ह़ाकिम को चाहिये कि अपने क़रीबी लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ रहे, उन की ख़ैरख़्वाही की निय्यत से उन्हें नेकी की दा'वत पेश करता रहे। हम फ़क़त़ अपनी इस्लाह़ की कोशिश करते हैं, अपने साथ रहने वाले इस्लामी भाइयों पर कोई ख़ास तवज्जोह नहीं करते, वाज़ेह़ रहे कि हमारे साथ रहने वाले मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन के भी हम पर बहुत से ह़ुक़ूक़ हैं इन में से एक ह़क़ येह भी है कि हम उन की इस्लाह़ की कोशिश करते रहें। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी येह आ़दते मुबारका थी कि अपने साथ बैठने वालों, मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन तमाम लोगों के अफ़्आ़ल व आ'माल पर नज़र रखते थे और जहां कहीं इस्लाह़ की ह़ाजत दर पेश होती वहां अह़सन अन्दाज़ से इस्लाह़ फ़रमाते।

(3)......रिआ़या के साथ शफ़ीक़ बाप जैसा सुलूक करे

वाके़ई ह़ाकिम एक बाप की त़रह़ है, बाप अगर शफ़ीक़ होगा तो उस की औलाद उस की त़रफ़ माइल होगी, बाप अगर बे रह़्म होगा तो उस की औलाद उस से नफ़रत करेगी, उस की मौजूदगी को बरदाश्त नहीं करेगी, बल्कि हो सकता है उस की ग़ैर मौजूदगी में उस से आ़फ़िय्यत की दुआ़एं मांगे। यक़ीनन येह एक तश्वीश नाक बात है। ह़ाकिम अपनी ज़ात में शहद जैसी मिठास और मां जैसी शफ़्क़त पैदा करे नीज़ इस मिठास और शफ़्क़त के साथ अपना रो'ब व दबदबा भी बर क़रार रखे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़वामुन्नास को ऐसी शफ़्क़तों से नवाज़ा था कि जब भी किसी शख़्स को कोई शिकायत होती उसे बारगाहे फ़ारूक़ी एक मह़फ़ूज़ क़ल्अ़ की सूरत में नज़र आती कि मुझे फ़क़त़ यहीं से तह़फ़्फ़ुज़ मिल सकता है, लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआनो सुन्नत के नफ़ाज़ में अपना ऐसा रो'ब व दबदबा क़ाइम किया हुवा था कि किसी शख़्स को

www.dawateislami.net

खि़लाफे़ शरीअ़त काम करने की जुरअत नहीं होती थी, लिहाज़ा ह़ाकिम के लिये शफ़्क़त व मेहरबानी और रो'ब व दबदबा दोनों ज़रूरी हैं ।

अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं, आप भी अपने मुरीदीन, मुह़िब्बीन व मुतअ़ल्लिक़ीन के साथ निहायत ही शफ़्क़त भरा सुलूक फ़रमाते हैं, आप की शफ़्क़त का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि बसा औक़ात पूरी पूरी रात भी इस्लामी भाइयों से आ़म मुलाक़ात फ़रमाते रहते हैं, अमीरे अह्ले सुन्नत जब किसी से मुलाक़ात फ़रमाते हैं तो ऐसी शफ़्क़त फ़रमाते हैं कि कई लोग इसी शफ़्क़त के बाइ़स भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आ कर सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करना शुरूअ़ कर देते हैं, काश हम भी अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों पर शफ़्क़त करने वाले बन जाएं, इन की दिलजूई करें न कि दिल तोड़ने वाले बनें, इन को डांटने के बजाए प्यार से इन की इस्लाह़ करें ।

(4)......अरकाने इस्लाम पर अ़मल में रिआ़या की मुआ़वनत

मश्हूर मक़ूला है : اَلْعَوَامُ كَالْاَنْعَامِ ''या'नी अ़वाम बेचारी चौपायों की त़रह़ सीधी साधी होती है ।'' जिस त़रह़ चोपाए को उस का मालिक जहां ले जाता है वोह ख़ामोशी से वहीं चला जाता है इसी त़रह़ ह़ाकिम व रिआ़या का ह़ाल है कि ह़ाकिम रिआ़या को जहां ले जाता है अ़वाम उस के पीछे पीछे चल पड़ती है, अब येह ह़ाकिम पर है वोह उसे अच्छी राह पर चलाए या उन्हें तबाही व बरबादी के अ़मीक़ गढ़ों में धकेल दे । लिहाज़ा ह़ाकिमे वक़्त को चाहिये कि सीधी साधी अ़वाम की दीनी व दुन्यवी तमाम मुआ़मलात में मुकम्मल रहनुमाई करे, ख़ुसूसन अरकाने इस्लाम पर अ़मल में रिआ़या की मुआ़वनत करे । नमाज़, रोज़ा, ह़ज और ज़कात वग़ैरा के मुआ़मलात में जो उन्हें मुश्किलात पेश आएं उन में मुआ़वनत करे । मसलन जो लोग नमाज़ वग़ैरा के मसाइल से वाक़िफ़ नहीं उन के लिये ऐसे इक़्दामात करे कि वोह इन मसाइले शरइय्या को अच्छी त़रह़ सीखें । इसी त़रह़ रोज़ा, ज़कात व दीगर मसाइले शरइय्या को सिखाने का एहतिमाम करे । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे खि़लाफ़त में मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब की मसाइले शरइय्या सिखाने की ज़िम्मेदारियां लगा दी थीं जो मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में अ़वामुन्नास की शरई रहनुमाई करते थे ।[1]

1 .....तफ़्सील के लिये इसी किताब का बाब ''अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इ़ल्मी सरगर्मियां'' सफ़ह़ा 483 का मुत़ालआ़ कीजिये ।

www.dawateislami.net

(5)......मुब्तदिईन व गुमराह लोगों की पकड़ करे :

येह एक वाज़ेह़ अम्र है कि तमाम लोगों की नफ़्सियात, सोच और फ़िक्र एक जैसी नहीं होती, कोई अच्छी सोच का ह़ामिल होता है तो कोई बुरी सोच का, कोई अम्न का ख़्वाहां होता है तो कोई फ़सादात फैलाने का शौक़ीन। ह़ाकिमे वक़्त के लिये इन्तिहाई ज़रूरी है कि वोह अपनी रियासत में ऐसे लोगों पर कड़ी नज़र रखे जो मुआ़शरे को ख़राब करने का बाइ़स बनते हैं, इस में दुन्यवी शर पसन्द भी शामिल हैं। मसलन चोरियां करने, डाके डालने, शराब व कबाब की मह़फ़िलें सजाने वाले और दीगर नाजाइज़ सरगर्मियों में ह़िस्सा लेने वाले लोग। नीज़ दीनी शर पसन्दी वाले लोग भी शामिल हैं, ख़ुसूसन वोह बिदअ़ती, गुमराह और बद दीन लोग जो इस्लाम का लुबादा ओढ़ कर मुसलमानों को इस्लाम से बद ज़न करते हैं, इस में भी कई त़रह़ के लोग हैं। मसलन :

......क़ुरआनो सुन्नत के ग़लत़ मत़ालिब अख़्ज़ कर के अ़वाम को गुमराह करने वाले।

......इस्लाम के इजतिमाई निज़ाम को दरहम बरहम कर के इस में तफ़रिक़ा और फूट डालने वाले।

......अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम, ताबेई़न, तब्ए़ ताबेई़न औलियाए उ़ज़्ज़ाम वग़ैरा की शान में गुस्ताख़ियां करने वाले।

......ख़ुसूसन वोह बद अ़क़ीदा और मुनाफ़िक़ीन जो तमाम ह़क़ीक़ी मुसलमानों की जान, ईमान बल्कि जाने ईमान या'नी ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा ज़ाते मुबारका में उ़यूब व नक़ाइस को तलाश करने वाले।

......आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ ग़लत़ बातें मन्सूब करने वाले।

......आप के अहले बैत, सह़ाबए किराम, औलियाए किराम की त़रफ़ ग़लत़ बातें मन्सूब करने वाले।

......अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम, औलियाए किराम वग़ैरा के मज़ारात की बे ह़ुर्मती करने वाले।

......मुसलमानों के मज़हबी शआ़इर जैसे रमज़ानुल मुबारक में इ़बादात का एहतिमाम करना, ए'तिकाफ़ करना, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मीलाद मनाना, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, औलियाए किराम के उ़र्स मनाना, नज़्रो नियाज़ करना, चारों अइम्मए किराम इमामे आ'ज़म अबू

www.dawateislami.net

हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई, इमामे मालिक, इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की शान में बिला वज्ह ए'तिराज़ात कर के मुसलमानों में इन्तिशार फैलाने वाले।

......मुसलमानों पर कुफ़्रो शिर्क के फ़तवे लगाने वाले, काफ़िरों को مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ मुसलमान कहने वाले।

मज़्कूरए बाला तमाम लोग दीनी शर पसन्द कहलाते हैं, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में दीनी व दुन्यवी तमाम शर पसन्दों के ख़िलाफ़ कारवाई फ़रमाई और हर त़रफ़ अम्नो अमान को क़ाइम फ़रमाया, जिन्हों ने दुन्यवी अम्न को ख़राब करने की कोशिश की उन के ख़िलाफ़ भी कारवाई फ़रमाई और जिन लोगों ने अ़क़ाइदो आ'माल में फ़साद व बिगाड़ पैदा करने की मज़्मूम कोशिश की उन के ख़िलाफ़ भी भरपूर कारवाई की।[1]

(6)......मसाजिद की ता'मीर व तरक़्क़ी

मुसलमानों में ज़िन्दगी और मुआ़शरे में मसाजिद की अहम्मिय्यत से कौन वाक़िफ़ नहीं, मसाजिद मुसलमानों के लिये वोह मुबारक मक़ामात हैं जहां जा कर वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हैं, मसाजिद मुसलमानों की इजतिमाइय्यत की जीती जागती तसावीर हैं कि जहां मुसलमान पांच औक़ात में एक साथ जम्अ़ हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हैं। मस्जिद मोमिन के लिये ऐसे है जैसे मछली के लिये पानी कि मछली पानी के बिग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकती और मुसलमान मस्जिद के बिग़ैर नहीं रह सकते। रियासत के ह़ाकिम के लिये येह बात ज़रूरी है कि वोह उन अ़लाक़ों में मसाजिद की ता'मीरात करवाए जहां अभी तक मसाजिद का क़ियाम नहीं है और जिन अ़लाक़ों में मसाजिद हैं उन की इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत का ख़याल रखते हुवे उन की ह़िफ़ाज़त के इक़्दामात करे, नीज़ ऐसी मजालिस क़ाइम करे जो मसाजिद के मुआ़मलात को देखे। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मस्जिद आबाद करने की ग्यारह सूरतें हैं : (1) मस्जिद ता'मीर करना। (2) उस में इज़ाफ़ा करना। (3) उसे वसीअ़ करना। (4) उस की मरम्मत करना। (5) उस में चटाइयां, फ़र्श बिछाना। (6) उस की क़लई चूना कराना। (7) उस में रौशनी व ज़ीनत करना। (8) उस में नमाज़ पढ़ना व तिलावते क़ुरआन करना। (9) उस में दीनी मदारिस क़ाइम करना। (10) वहां दाख़िल होना, वहां अक्सर जाना, आना, रहना। (11) वहां अज़ान व तक्बीर कहना।"[2]

1....मज़ीद तफ़्सील के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "अ़ह्दे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब" और "निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त" का मुत़ालआ़ कीजिये।

2....तफ़्सीरे नईमी, पारह 10, अत्तौबह : 18, जि. 10, स. 201

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़रब और इस के इलावा दीगर तमाम जगहों पर इस बात का ख़ुसूसी इल्तिज़ाम फ़रमाया कि जब भी किसी शहर को आबाद किया जाता या फ़त्ह़ किया जाता तो सब से पहले वहां मस्जिद बनाई जाती। आप का येह अ़मल दर अस्ल **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका पर अ़मल था क्यूंकि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो सब से पहले आप ने मस्जिदे क़ुबा ता'मीर फ़रमाई, बा'दे अज़ां मदीनए मुनव्वरा ख़ास शहर में मस्जिदे नबवी ता'मीर फ़रमाई, जो आज तमाम मुसलमानों के लिये राह़ते क़ल्ब का सामान है। आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में इस बात को बयान किया है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में तक़रीबन 4000 मसाजिद की ता'मीर की गई।[1]

दा'वते इस्लामी की मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ता दमे तह़रीर 87 से ज़ाइद शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, हर शो'बा एक मजलिस के तह़्त काम करता है, इन मजालिस में एक "मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद" भी है। इस मजलिस के तह़्त जिन अ़लाक़ों में मसाजिद की ह़ाजत होती है वहां मसाजिद क़ाइम की जाती हैं, नीज़ उन की आबाद कारी या'नी वहां अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन व ख़ुत़बा की तक़र्रुरी और उन के मुशाहरों की तरकीब भी इसी मजलिस के तह़्त होती है। येह मजलिस दर अस्ल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मसाजिद से उल्फ़तो मह़ब्बत का नतीजा है, आप का येह दर्द है कि मसाजिद को आबाद किया जाए, इस का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि आप ने "**दा'वते इस्लामी**" को मस्जिद भरो तह़रीक क़रार दिया है। आप वक़्तन फ़ वक़्तन हफ़्तावार इजतिमाआ़त व मदनी मुज़ाकरों में मसाजिद को आबाद करने की तरग़ीब दिलाते ही रहते हैं। काश हम भी अमीरे अह्ले सुन्नत की मदनी सोच के मुत़ाबिक़ मसाजिद बनाने और लोगों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के मसाजिद को आबाद करने वाले बन जाएं।

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ू बा जमाअ़त
हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1]....फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 560।

www.dawateislami.net

(7)......मनासिके हज के लिये सहूलियात फ़राहम करे

हज इस्लाम का एक अहम रुक्न है, जिस में हर साल लाखों मुसलमान एक ही लिबास और हुल्ये में मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ होते हैं, येह वक़्त बड़ा ही पुर कैफ़ होता है, हर मुसलमान की ज़बान पर एक ही सदा होती है : لَبَّيْكَ ط اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ط لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ ط اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ط لَا شَرِيْكَ لَكَ ط "या'नी मैं हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं हाज़िर हूं, मैं हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूं, बेशक तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिये हैं, तमाम ने'मतें तेरे ही लिये हैं और बादशाही तेरे ही लिये है, तेरा कोई शरीक नहीं।" मुसलमानों के लिये पूरे साल में सिर्फ़ येह एक ही मौक़अ़ होता है जब दुन्या भर के लाखों मुसलमान हज की अदाएगी के लिये का'बतुल्लाह शरीफ़, अ़रफ़ात व मिना और मदीनए मुनव्वरा में बसद इ़ज्ज़ो नियाज़ हाज़िरी देते हैं, यक़ीनन इस मुक़द्दस और पाकीज़ा फ़रीज़े की अन्जाम देही में कोई भी बद मज़गी सारे सोज़ो गुदाज़ को ख़त्म कर के रख देती है। लिहाज़ा हाकिम के फ़राइज़ में से येह भी है कि वोह मनासिके हज के लिये रिआ़या को सहूलियात फ़राहम करे, उन की ब हिफ़ाज़त हज की अदाएगी यक़ीनी बनाए, उन के सफ़री मुआ़मलात में मुआ़वनत करे, अल ग़रज़ उन्हें हर वोह सहूलत फ़राहम करे जिस से वोह बा आसानी अपने इस फ़रीज़े को अदा कर सकें। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी येह आ़दते मुबारका थी कि मुख़्तलिफ़ हुज्जाज के क़ाफ़िलों के साथ अमीर मुक़र्रर फ़रमा देते थे, जो उन की ख़ैरख़्वाही किया करते, उन की ज़रूरियात को पूरा करते, उन्हें हज के मसाइल वग़ैरा से भी आगाह करते।

दा'वते इस्लामी की मजलिसे हज व उ़मरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की एक मजलिस "हज व उ़मरा" भी है जो हज जैसे मुक़द्दस फ़रीज़े को सर अन्जाम देने वाले मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही के लिये बनाई गई है, इस मजलिस के तहत हुज्जाज से मुतअ़ल्लिक़ा ख़ुसूसी तरबिय्यती इजतिमाआ़त का इन्इ़क़ाद होता है, जिस में हज व उ़मरा के ज़रूरी मसाइल सिखाए जाते हैं। नीज़ उन की हज व उ़मरा के हवाले से दीगर उमूर में भी तरबिय्यत की जाती है। शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हुज्जाज इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये दो किताबें "रफ़ीक़ुल हरमैन" और "रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन" मुरत्तब फ़रमाई हैं इन कुतुब को पढ़ कर जब हाजी हज करता है तो بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى उस के हज व उ़मरा में मज़ीद सोज़ और बरकत पैदा हो जाती है।

www.dawateislami.net

(8)......लोगों को इन्साफ़ दिलाए

जो ह़ाकिम रिआ़या को इन्साफ़ नहीं दे सकता वोह हुक्मरानी के लाइक़ नहीं, क्यूंकि अपनी रिआ़या को अ़द्लो इन्साफ़ फ़राहम करना ह़ाकिम की बुन्यादी ज़िम्मेदारियों में से है नीज़ ह़ाकिम पर जो रिआ़या के हुक़ूक़ लागू होते हैं उन में से एक बहुत बड़ा ह़क़ है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में हर त़रफ़ इन्साफ़ का दौर दौरा कर दिया था, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्साफ़ क़ाइम करने के लिये अपनी ज़ात की भी परवाह न की, अगर किसी ने आप की ज़ात पर मुक़द्दमा क़ाइम किया तो उसे डांटे या झिड़कने के बजाए ख़ुद को अ़दालत में पेश किया और उस मुक़द्दमे का सामना किया।[1]

(9)......जान, माल, औलाद का तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम करे

रियासत में अम्नो अमान क़ाइम रखना ह़ाकिम की अहम ज़िम्मेदारियों में से है, यक़ीनन जो ह़ाकिम अपनी अ़वाम की जान, माल और औलाद वग़ैरा को तह़फ़्फ़ुज़ देने में कामयाब हो जाता है वोह उन के दिलों पर हुकूमत करता है। अगर ह़ाकिम येह चाहता है कि उस की जान, माल, औलाद वग़ैरा को तह़फ़्फ़ुज़ मिल जाए तो उसे चाहिये कि वोह अपने मा तह़्त लोगों को तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम करे उसे भी अपने ज़िम्मेदारान से तह़फ़्फ़ुज़ मिलेगा ब सूरते दीगर वोह मह़फ़ूज़ नहीं है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में ऐसा अम्नो अमान क़ाइम किया कि जिस से लोगों की जान, माल, औलाद को ऐसा तह़फ़्फ़ुज़ मिला जिस की तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती। आप के अ़ह्द में किसी को जुरअत नहीं थी कि किसी भी शख़्स की इ़ज़्ज़त या माल वग़ैरा पर हाथ डाले। आप ने अपने गवर्नरों को वाज़ेह़ त़ौर पर येह इरशाद फ़रमा दिया था कि मैं ने तुम लोगों को अ़वाम पर इस लिये नहीं मुक़र्रर किया कि उन पर ज़ुल्मो सितम कर के उन की खालें उतारो, उन के मालो अस्बाब पर क़ब्ज़ा कर लो बल्कि इस लिये भेज रहा हूं कि उन को दीन की बातें सिखाओ। वग़ैरा वग़ैरा

(10)......शरई हुदूद को क़ाइम करे

तारीख़ इस बात की गवाह है कि जब तक इस्लामी रियासतों में शरई हुदूद को क़ाइम किया जाता रहा उस वक़्त तक तमाम मुसलमान अह़कामे शरइय्या पर अ़मल करने के साथ साथ गुनाहों से भी बचे रहे, लेकिन जब हुदूद क़ाइम करने में नर्मी बरती गई वहीं ज़िल्लत व बरबादी और तबाही का

1...मज़ीद तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब ''निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम'' सफ़ह़ा 324 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

दौर शुरूअ़ हो गया। शरई हुदूद क़ाइम करना पुर अम्न मुआ़शरे के क़ियाम में एक अहम किरदार अदा करता है। जब कोई शख़्स किसी जुर्म का मुर्तकिब होता है और उस की सज़ा पाता है तो दीगर लोग उस से बचने की कोशिश करते हैं, अगर मुजरिमों को उन के जराइम के मुताबिक़ सज़ाएं न दी जाएं तो यक़ीनन मुआ़शरे में जराइम बढ़ते ही जाएंगे और येह भी हो सकता है कि ख़ुद हाकिम भी उन की लपेट में आ जाए। लिहाज़ा हाकिमे वक़्त के लिये बहुत ज़रूरी है कि पुर अम्न मुआ़शरे के क़ियाम के लिये इस्लामी हुदूद का नफ़ाज़ करे।

(11)......हर वोह काम करे जो मुल्की मफ़ाद में हो

हाकिम व रियासत की मिसाल एक अंखयारे और नाबीना शख़्स की त़रह है, नाबीना शख़्स को नहीं मा'लूम कि मुझे कहां जाना है, अंखयारा उसे जहां ले जाएगा वोह वहीं चला जाएगा। रियासत भी एक नाबीना शख़्स की त़रह है, हाकिम इस में जो भी मुआ़मलात करेगा वोह सब इस पर असर अन्दाज़ होंगे, अगर काम मुस्बत होगा तो इस के नताइज भी मुस्बत ही बर आमद होंगे, अगर काम मन्फ़ी नोइय्यत का होगा तो इस के नताइज भी मन्फ़ी होंगे। लिहाज़ा हाकिम का दूरअन्देश होना बहुत ज़रूरी है कि वोह किसी भी काम को करने से पहले उस के मन्फ़ी या मुस्बत पहलूओं पर ग़ौर कर ले, हर वोह काम करे जो मुल्की मफ़ाद में हो। कभी भी वोह काम न करे जो इस्लामी रियासत, हुकूमत या रिआ़या के मफ़ाद में न हो। इस बात को जानने के लिये कि फ़ुलां काम मुल्की मफ़ाद में है या नहीं ? बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि मुशावरत से काम ले, मुशावरत की बरकत से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़वाइद ही हासिल होंगे। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि जब भी कोई नया काम करना होता तो आप अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत करते और जो मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला होता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल फ़रमाते।[1]

(12)......हाकिम एह़तियात़ करे....!

वाज़ेह़ रहे कि हाकिम की मिसाल एक सफ़ेद चादर की त़रह है कि जिस पर लगा दाग़ बहुत दूर से नज़र आ जाता है। लिहाज़ा हाकिम को चाहिये कि हर हर मुआ़मले में फूंक फूंक कर क़दम रखे, कभी भी कोई ऐसा काम न करे जो उस की शख़्सिय्यत को दाग़दार करे, रिआ़या के अज़्हान में शुकूको शुब्हात पैदा करे। ख़ुद को रिआ़या के लिये आईडियल शख़्सिय्यत बनाने की कोशिश करे, हमेशा येह

1...मज़ीद तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम" सफ़ह़ा 186 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

बात ज़ेहन में रखे कि मेरा एक एक फ़े'ल रिआ़या की नज़र में है मैं जैसा करूंगा रिआ़या पर वैसा ही तअस्सुर पड़ेगा। जहां मेरी अच्छी बातों पर ता'रीफ़ की जाएगी वहीं मेरी ग़लती पर सौ सौ बातें भी बनाई जाएंगी, लिहाज़ा ह़ाकिम को चाहिये कि हर मुआ़मले में ख़ूब एह़तियात़ करे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ इस मुआ़मले में भी इन्तिहाई मोह़तात़ थे, बसा औक़ात आप ऐसे काम भी न करते जो आप के लिये बिल्कुल जाइज़ होते कि कहीं रिआ़या के दिलों में मेरे मुतअ़ल्लिक़ शुकूको शुब्हात न पैदा हो जाएं। बल्कि अगर कोई ऐसा मुआ़मला सरज़द हो जाता तो उस की फ़िलफ़ौर वज़ाह़त फ़रमाते ताकि लोग ग़ीबत, बद गुमानी और तोहमत जैसे गुनाहों में मुब्तला होने से बच जाएं।

(13)......ता'मीराती मन्सूबों पर तवज्जोह दे

किसी भी रियासत की तरक़्क़ी में मुआ़शी कैफ़िय्यत का बहुत दख़्ल है। मुल्की मईशत को बढ़ाने और बेहतर करने के लिये ह़ाकिम को चाहिये कि रियासत में मुख़्तलिफ़ ता'मीराती मन्सूबे तरतीब दे, ऐसे फ़लाह़ी काम करे जिस से मुल्की मईशत पर अच्छा असर पड़े। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में इस बात पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी और मुख़्तलिफ़ शो'बाजात का क़ियाम, मुख़्तलिफ़ ता'मीरात वग़ैरा करवाईं, येही वज्ह है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की रियासत वसीअ़ होने के साथ साथ बहुत ख़ुशह़ाल भी थी।[1]

(14)......मुआ़शरती उमूर पर ख़ुसूसी तवज्जोह दे

एक बेहतरीन मुआ़शरे से ही बेहतरीन रियासत का पता चलता है, ह़ाकिमे वक़्त की ज़िम्मेदारियों में से है कि वोह मुआ़शरती उमूर पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दे, लोगों के मसाइल को ह़ल करे, उन्हें ऐसे वसाइल फ़राहम करे जिस से वोह ख़ुशह़ाल हो जाएं, अगर उन पर कोई समावी आफ़त आ जाए तो उन से भागने के बजाए उन के ग़म और तकालीफ़ में बराबर शरीक हो। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मुआ़शरती उमूर में अपनी ज़ात को जिस त़रह़ मसरूफ़ किया तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती। लोगों के घरेलू मुआ़मलात तक में आप ने उन की मदद की, मुश्किल मुआ़मले में उन की तकालीफ़ में ख़ुद इस त़रह़ शरीक हुवे गोया आप लोगों के ख़ादिम हैं, आ़मुर्रमादह में आप ने लोगों को अपने हाथों से खाना पका कर खिलाया और लोगों को खाना पका कर

1....मज़ीद तफ़्सील के लिये इसी किताब के बाब "अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात" सफ़हा 769 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

दिखाया कि ऐसे पकाया जाता है। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने लोगों से क़ह्त़ साली को दूर फ़रमाया और लोग ख़ुशह़ाल हो गए तो आप ने एक अ़लाक़ाई दौरा फ़रमाया और देखा कि अब लोग अपने घरों को वापस जा रहे हैं तो आप की आंखें अश्कबार हो गईं। एक शख़्स ने आप की ता'रीफ़ करते हुवे कहा : "मैं गवाही देता हूं कि येह मुसीबत आप की वज्ह से टली है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे डांटते हुवे इरशाद फ़रमाया : "तेरा नास हो ! इस ता'रीफ़ का मैं उस वक़्त ह़क़दार होता जब मैं अपने या अपने बाप के माल से लोगों की मदद करता।"(1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आ'ज़म और गवर्नरों का एह़तिसाब

(1)......तक़र्रुरी के बा'द निगरानी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ कड़ी शराइत़ के साथ गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाते बल्कि गवर्नर बनने के बा'द उस की निगरानी भी फ़रमाते बल्कि आप की येह पूरी कोशिश होती थी कि गवर्नर के तमाम मुआ़मलात से बा ख़बर रहें कि कहीं वोह ख़्वाहिशाते नफ़्स में मुब्तला हो कर अपने अ़ह्द की ख़िलाफ़ वर्ज़ी तो नहीं कर रहा ? किसी पर ज़ुल्मो सितम तो नहीं कर रहा, कहीं रिआ़या के ह़ुक़ूक़ पामाल तो नहीं कर रहा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद बयान फ़रमाया करते थे कि : اَیُّمَا عَامِلٍ لِیْ ظَلَمَ اَحَداً وَبَلَغَنِیْ مَظْلَمَتُہٗ وَلَمْ اُغَیِّرْھَا فَاَنَا ظَلَمْتُہٗ "या'नी मेरे मुक़र्रर कर्दा ह़ाकिम ने किसी भी शख़्स पर कोई ज़ुल्म किया और मुझ तक इस के ज़ुल्म की ख़बर पहुंच गई इस के बा वुजूद अगर मैं ने इसे तब्दील न किया तो येह ऐसे होगा जैसे मैं ने उस पर ज़ुल्म किया।"(2)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गवर्नरों की तक़र्रुरी के बा'द इन के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से पूछगछ फ़रमाते रहते थे, अगर लोगों को उन से कोई शिकायत वग़ैरा होती तो उन के ख़िलाफ़ कारवाई फ़रमाते। वाक़ेई किसी को ज़िम्मेदारी देने के बा'द उस की कारकर्दगी को चेक करना भी एक अहम अम्र है, इस से क़ाबिल लोगों की सलाह़िय्यतें सामने आती हैं। नीज़ पूछगछ का निज़ाम ह़ाकिमों, गवर्नरों और ज़िम्मेदारान को इ़ल्मी व अ़मली दोनों त़ौर पर कमज़ोर नहीं होने देता।

1......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمۃ، الاختیار فی التعجیل۔۔۔الخ، ج۶، ص۵۸۱، حدیث: ۱۳۰۳۳۔

2......مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب، الباب الحادی والاربعون، ص۱۱۳۔

www.dawateislami.net

(2)......हुक्मरानों से वुफ़ूद भेजने का मुतालबा

वाज़ेह रहे कि किसी भी हाकिम की ज़िम्मेदारी को सब से ज़ियादा देखने और जानने वाली उस की रिआ़या होती है कि आया वोह अपनी ज़िम्मेदारियों को ब त़रीके़ अह़सन पूरा कर भी रहा है या नहीं ? क्यूंकि हाकिम का तअ़ल्लुक़ रिआ़या के साथ बिग़ैर किसी वासिते़ के होता है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी इस अम्र से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थे, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने हुक्मरानों की कारकर्दगी जानने के लिये उन्हें इस बात का हुक्म दिया कि अपने अ़लाके़ के मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद मेरे पास भेजते रहा करो। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब हाकिम बनाते तो उन की कारकर्दगी जानने के लिये उन्ही के अ़लाक़ों से वुफ़ूद को त़लब फ़रमाया करते थे।''(1)

(3)......वुफ़ूद से हुक्मरानों की पूछगछ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से वुफ़ूद को त़लब फ़रमाते बल्कि उन से वहां के हुक्मरानों के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में पूछगछ भी फ़रमाते रहते थे। चुनान्चे, जब वुफ़ूद आप की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो आप उन से यूं सुवालात पूछते : ''तुम्हारा हुक्मरान कैसा है ? क्या वोह ग़ुलामों की इ़यादत करता है ? क्या वोह जनाज़ों में शिर्कत करता है ? उस का दरवाज़ा नर्म है या सख़्त ? (या'नी रिआ़या की दाद रसी के लिये वोह खुला रहता है या बन्द ?)'' अगर वफ़्द के लोग येह जवाब देते कि इन के दरवाजे़ पर मज़्लूमों, ग़रीबों की शनवाई होती है और येह ग़ुलामों की इ़यादत भी करते हैं तो आप उस हाकिम को छोड़ देते वरना उस की त़रफ़ पैग़ाम भेज कर उसे मा'ज़ूल कर देते।(2)

(4)......हुक्मरानों के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुत़ूत़ लिखने की इजाज़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी बा कमाल फ़िरासत से इस बात को जानते थे कि बा'ज़ औक़ात रिआ़या अपने हाकिम के रो'ब व दबदबे की वज्ह से उस के सामने बात नहीं कर पाती, इसी वज्ह से आप जब किसी हाकिम या गवर्नर के पास कोई क़ासिद भेजते तो उसे हुक्म फ़रमा देते कि वापस आते हुवे लोगों में इस बात का ए'लान कर दे कि

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الخلافة، آداب الامارة، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۰۷، حديث: ۱۴۳۳۲۔

2 ......كنزالعمال، كتاب الخلافة، آداب الامارة، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۰۷، حديث: ۱۴۳۳۲۔

www.dawateislami.net

अगर कोई ज़ाती मक्तूब अमीरुल मोमिनीन तक पहुंचाना चाहे तो मुझे दे दे मैं पहुंचा दूंगा। खुद उस क़ासिद को भी इस बात का इल्म न होता था कि उस मक्तूब में क्या लिखा है ? इस का नतीजा येह होता कि रिआ़या में से किसी शख़्स को अपने मुतअ़ल्लिक़ा हाकिम से कोई शिकायत होती तो वोह बिला वासित़ा अमीरुल मोमिनीन तक पहुंच जाती। गोया आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़वाम को अपने दुख दर्द बयान करने के लिये एक रास्ता बना कर दे दिया था कि जो चाहे इस रास्ते से अपने दुख दर्द अमीरुल मोमिनीन से बयान कर सकता है। जब क़ासिद उन खुतूत़ को ले कर पहुंचता तो आप उन्हें ज़मीन पर फैला देते और एक एक कर के सारे खुतूत़ पढ़ते। फिर उन की तह़क़ीक़ के बा'द हुक्म जारी फ़रमाते।[1]

(5)......हुक्मरानों के लिये मजलिसे एह़तिसाब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़क़त़ अ़वामुन्नास के मक्तूब और ख़बरों पर किसी गवर्नर या आ़मिल की पकड़ नहीं फ़रमाते थे जब तक उस की तह़क़ीक़ न फ़रमा लेते, तह़क़ीक़ का एक त़रीक़ए कार येह भी था कि आप ने एक मजलिसे एह़तिसाब क़ाइम फ़रमा दी थी जिस के निगरान ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رضی اللہ تعالٰی عنہ थे, जब भी किसी ह़ाकिम के ख़िलाफ़ कोई शिकायत मौसूल होती तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رضی اللہ تعالٰی عنہ को इस की तह़क़ीक़ के लिये भेजते, वोह अपने मुआ़विनीन के साथ जाते और मुआ़मले की तह़क़ीक़ कर के सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ की बारगाह में मुकम्मल कारकर्दगी पेश कर देते, फिर सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ इस के मुत़ाबिक़ कारवाई फ़रमाते।[2]

(6)......हुक्मरानों के एह़तिसाब का मदनी मश्वरा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ हर साल ह़ज के मौसिम में हुक्मरानों का एह़तिसाबी मदनी मश्वरा भी फ़रमाया करते थे, जिस में रिआ़या को इस बात की मुकम्मल आज़ादी दी जाती थी कि अगर किसी भी फ़ारूक़ी गवर्नर ने उस के साथ कोई भी ज़ियादती की हो वोह भरे मज्मए़ में उस को बयान कर के अपना बदला ले सकता है। कई बार ऐसा होता कि किसी भी मा'रूफ़ गवर्नर के ख़िलाफ़ कोई शिकायत की जाती तो आप رضی اللہ تعالٰی عنہ उसी वक़्त उस के ख़िलाफ़ कारवाई करते, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ के ख़िलाफ़

1 ......تاریخ مدینۃ منورہ، ج۲، ص۷٦٠۔

2 ......اسد الغابۃ، محمد بن مسلمۃ، ج۵، ص۱۱۷۔

www.dawateislami.net

किसी शख़्स ने ज़ियादती की शिकायत की तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसी वक़्त सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से माली बदला दिलवाया ।[1]

(7)......फ़ारूके आ'ज़म का एहतिसाबी अ़लाक़ाई दौरा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मदनी सोच थी कि तमाम तर एह़तियाती तदाबीर के इ़लावा अमीरुल मोमिनीन के लिये येह बात इन्तिहाई अहम्मिय्यत की ह़ामिल है कि वोह रिआ़या की ख़बर गीरी और हुकूमती मुआ़मलात के बारे में इत्मीनाने क़ल्बी के लिये बज़ाते खुद मुख़्तलिफ़ रियासतों का अ़लाक़ाई दौरा करे । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अगर मैं ज़िन्दा रहा तो पूरे एक साल अपनी सल्तनत का दौरा करूंगा, क्यूंकि मैं जानता हूं लोगों की बा'ज़ ज़रूरतें ऐसी होती हैं जो न तो वोह खुद मुझ तक पहुंचा पाते हैं और न ही उन के गवर्नर मुझ तक पहुंचाते हैं, मैं मुल्के शाम जाऊंगा वहां दो महीने क़ियाम करूंगा, फिर बसरा में भी दो महीने क़ियाम करूंगा, वल्लाह मेरी ज़िन्दगी का येह बहुत प्यारा साल होगा ।''[2]

वाक़ेई एक कामयाब ह़ाकिम के लिये येह बात ख़ूब है कि वोह अपनी रियासत का दौरा करे, खुद जा कर अ़वाम से मुलाक़ात करे, उन के साथ घुल मिल जाए और उन के वोह तअस्सुरात सुने जो न तो वोह खुद पहुंचा सकते हैं और न ही उन के ह़ाकिम, दर अस्ल अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ियामत तक आने वाले हुक्मरानों को हुक्मरानी करना सिखा दिया कि हुक्मरानी ऐसे की जाती है । एक कामयाब ह़ाकिम के येह उसूल हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(8)......रिआ़या की शिकायतों की तह़क़ीक़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब भी रिआ़या की त़रफ़ से ह़ाकिमों के मुतअ़ल्लिक़ शिकायात मौसूल होतीं तो आप फ़िलफ़ौर उन के ख़िलाफ़ कारवाई न फ़रमाते बल्कि इस की तह़क़ीक़ करते और फिर कारवाई फ़रमाते, तह़क़ीक़ के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े थे, बसा औक़ात आप अपना क़ासिद उस ह़ाकिम की त़रफ़ भेजते और फ़रमाते कि ''मुझे तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ۳، ص ۲۲۳۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۵۷۵۔

www.dawateislami.net

फ़ुलां शिकायत मिली है, इस की वज़ाहत करो।" अगर मुआमला हस्सास नौइय्यत का होता तो उस हाकिम को फ़िलफ़ौर तलब फ़रमा कर उस से पूछगछ फ़रमाते, जैसा कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ आप को शिकायत पहुंची कि उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन के बेटे के साथ रिआ़यत की है तो आप ने फ़िलफ़ौर उन्हें बुलाया और उन के ख़िलाफ़ तमाम बातों की तह़क़ीक़ फ़रमाई। अगर कोई ऐसी ख़बर पहुंचती जिस के मुतअ़ल्लिक़ फ़क़त देखना ही काफ़ी होता तो देखते ही उस के ख़िलाफ़ कारवाई फ़रमा देते, मसलन हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ येह शिकायत मिली कि उन्हों ने मह़ल का बड़ा दरवाज़ा बना लिया है और अ़वाम के लिये बन्द कर दिया है तो आप ने क़ासिद को येह हुक्म दे कर भेजा कि जाओ देखो अगर बड़ा दरवाज़ा हो तो उसे फ़िलफ़ौर जला देना, बा'दे अज़ां क़ासिद ने ऐसा ही किया। ह़िम्स के गवर्नर हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़िलाफ़ जब लोगों ने चार शिकायात कीं तो आप ने उन से भी तफ़्तीश फ़रमाई और उन की वज़ाहत त़लब की। इस त़रह़ के बीसियों वाक़िआ़त कुतुबे सियर व तारीख़ में मुलाह़ज़ा किये जा सकते हैं।

(9)......शिकायतों की तह़क़ीक़ के बा'द अ़मली कारवाई

किसी भी हाकिम के ख़िलाफ़ मिलने वाली शिकायतों की जब मुकम्मल तह़क़ीक़ हो जाती कि वोह वाक़ेई बिल्कुल सह़ीह़ हैं तो आप उस हाकिम को ज़र्रा बराबर मोहलत न देते और उस के ख़िलाफ़ कारवाई फ़रमाते। कूफ़ा के हाकिम के ख़िलाफ़ जब कूफ़ा वालों ने शिकायत की तो आप ने हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की तह़क़ीक़ के लिये भेजा, उन्हों ने तह़क़ीक़ मुकम्मल कर के उन की कारकर्दगी बारगाहे फ़ारूक़ी में पेश कर दी।(1)

हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाएं

(1)......गवर्नरों से रिआ़या को बदला दिलाना

हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाओं में से एक सज़ा येह भी है कि अगर किसी हाकिम ने किसी शख़्स के साथ ज़ियादती की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस हाकिम से उस शख़्स को बदला दिलवाया।(2)

---

1 ......طبقات کبری، ملیح بن عوف السلمی، ج۵، ص۴۶۔

2 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج۳، ص ۲۲۳۔

www.dawateislami.net

(2)......गवर्नरों की दुर्रे से तादीब

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ गवर्नरों के ख़िलाफ़ तादीबी कारवाइयों में कोड़े का भी इस्ति'माल फ़रमाते थे, रिआ़या के मुआ़मलात में दुर्रा आ़म था, बल्कि इस दुर्रे को आप हर वक़्त साथ रखा करते थे, इसी त़रह़ बा'ज़ गवर्नरों को भी आप ने दुर्रे के ज़रीए़ सज़ा दी, जब आप ने मुल्के शाम का दौरा किया तो बा'ज़ गवर्नरों के पास उन की ज़रूरत से ज़ियादा सामान देखा तो उन पर सख़्त नाराज़ हुवे और अपने दुर्रे से उन को मारा। इसी सफ़र में बा'ज़ ज़िम्मेदारान ने अच्छा लिबास पहन कर आप का इस्तिक़्बाल किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें देखा तो उन्हें दुर्रा मारते हुवे सख़्त नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "आइन्दा तुम मेरा इस त़रह़ इस्तिक़्बाल न करना।"(1)

(3)......हुक्मरानों को डांट डपट करना

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि आप हुक्मरानों की इस्लाह़ के लिये डांट डपट भी करते रहते थे। चुनान्चे, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लिखा : "मुझे तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ येह ख़बर पहुंची है कि तुम ने एक मिम्बर बना लिया है जिस के ज़रीए़ तुम लोगों की गर्दनों से भी ऊपर होना चाहते हो, क्या तुम्हारे लिये येह काफ़ी नहीं है तुम सीधे खड़े हो और मुसलमान तुम्हारे क़दमों की एड़ियों के बराबर हों ? मैं ने तुम्हारे ख़िलाफ़ अ़ह्द कर लिया है कि तुम इस को तोड़ दो।"(2)

गवर्नरों की मा'ज़ूली

गवर्नरों को दी जाने वाली सज़ाओं में एक अहम सज़ा उन की मा'ज़ूली भी थी, वाज़ेह़ रहे कि किसी गवर्नर या ह़ाकिम की मा'ज़ूली अमीरुल मोमिनीन की सवाब दीद पर है कि वोह मुआ़मले की नौइय्यत को देखे कि उस के लिये कैसी सज़ा मुनासिब है ? सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मुआ़मले में बहुत ही दूरअन्देश थे, आप मुआ़मले की नौइय्यत को देखते ही पहचान जाते थे कि इस ह़ाकिम को कौन सी सज़ा दी जाए ? तारीख़ व सियर की कुतुब का मुत़ालआ़ किया जाए तो येह बात सामने आती है कि जब कोई ह़ाकिम अपनी ज़िम्मेदारियों से कोताही करता या ऐसे ख़ारिजी उमूर में मुब्तला हो जाता जो एक ह़ाकिम के लिये मुनासिब न होते तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......تاریخ مدینۃ منورہ، ج۲، ص ۸۳۴ ملخصا۔

2 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ، آداب الامارۃ، الجزء:۵، ج۳، ص۳۰۷، حدیث: ۱۴۳۳۳۔

www.dawateislami.net

उसे मा'ज़ूल फ़रमा देते । बीसियों ऐसे वाक़िआत हैं कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़ालिफ़ गवर्नरों को मा'ज़ूल कर के उन की जगह किसी और को हाकिम बनाया ।

(1)......हाकिमे वक़्त को साबिक़ा काम पर लगा दिया

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन रुवैम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों से हाल अह़वाल दरयाफ़्त फ़रमाया करते थे, जब अह्ले हिम्स गुज़रे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा : "तुम्हारा हाकिम कैसा है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "वैसे तो वोह बहुत अच्छे हैं लेकिन उन्हों ने एक बालाख़ाना बना लिया है जिस में वोह रहते हैं ।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस हाकिम को एक मक्तूब क़ासिद के ज़रीए़ रवाना कर दिया नीज़ क़ासिद को येह भी हुक्म दिया कि "उस बालाख़ाने को आग लगा दो ।" चुनान्चे, क़ासिद गया और आप के हुक्म की ता'मील करते हुवे उस बालाख़ाने को आग लगा दी और हाकिम को आप का मक्तूब दे दिया । हाकिम वोह मक्तूब पढ़ते ही बारगाहे फ़ारूक़ी में हाज़िर हो गया ।

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैसे ही उस हाकिम को देखा तो फ़रमाया : "तीन दिन तक क़ैद हो जाओ और इस के बा'द मुझ से मुलाक़ात करना ।" तीन दिन बा'द आप ने उस हाकिम को एक मक़ाम पर बुलाया जहां सदके़ के ऊंट थे, फिर उस की क़मीस उतरवा के ऊंटों को पानी पिलवाया, वोह हाकिम ऊंटों को पानी पिलाता रहा यहां तक कि थक गया । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : "हां ! अब बताओ तुम कब से इस ओ़ह्दे पर फ़ाइज़ हो ?" उस ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! थोड़ा ही अ़र्सा हुवा है ।" फ़रमाया : "इसी लिये तुम ने बालाख़ाना बनाया था ताकि उस में बैठ कर तुम मिस्कीनों, फ़क़ीरों और यतीमों से ऊंचे हो जाओ । गवर्नरी से पहले जो काम करते थे जा कर वोही करो और दोबारा मेरे पास न आना ।"(1)

(2)......हाकिमे वक़्त को चरवाहा बना दिया

हज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन उमय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुल्के शाम का गवर्नर बनाया । फिर आप को इन के मुतअ़ल्लिक़ येह ख़बर मिली कि इन्हों ने एक आ'ला क़िस्म का हम्माम बना लिया है नीज़ चन्द मख़्सूस लोगों को अपनी मजलिस में भी शामिल कर लिया है । आप ने फ़ौरन इन को त़लब फ़रमाया । जैसे ही येह बारगाहे फ़ारूक़ी में पहुंचे आप ने तीन

(1)......تاریخ ابن عساکر، ج۳۲، ص۱۲۔

www.dawateislami.net

दिन तक उन से कोई कलाम न किया, चौथे दिन उन को बुलाया, उन के लिये एक ऊन का जुब्बा मंगवाया और फ़रमाया : "इसे पहन लो।" फिर आप ने उन्हें चरवाहों वाला थेला दिया और साथ ही तीन सौ बकरियां दे कर फ़रमाया : اِنْعَقْ بِهَا "या'नी जाओ और जा कर बकरियां चराओ।"

वोह बकरियां ले कर चराने के लिये चले गए। थोड़ी ही दूर गए थे कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें दोबारा बुलाया, वोह तेज़ी से वापस पलटे कि शायद कोई नया हुक्म इरशाद फ़रमाएं लेकिन आप ने फ़रमाया : "इन बकरियों को ऐसे ऐसे चराना, जाओ ! अब जा कर चराओ।" वोह बकरियां ले कर फिर चले गए, थोड़ी ही दूर गए थे कि दोबारा उन्हें बुलाया, इस त़रह़ आप ने उन्हें कई बार बुलाया यहां तक कि उन की पेशानी पर पसीना आ गया। फ़रमाया : "जाओ और फ़ुलां दिन बकरियां मेरे पास ले कर ह़ाज़िर हो जाना।" वोह गए और मुक़र्ररा दिन पर बकरियां ले कर ह़ाज़िर हो गए। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बाहर निकले और फ़रमाया : "इन बकरियों को पानी पिलाओ।" उन्हों ने ह़ौज़ भरा और बकरियों को पानी पिलाने लगे। जब पानी पिला लिया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अब दोबारा इन बकरियों को ले जाओ और चराओ, फिर फ़ुलां दिन मेरे पास ले कर आना।" इसी त़रह़ दो तीन माह तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को मशक़्क़तों में रखा। जब उन्हें एह़सास हो गया तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "तुम ने अपने लिये ह़म्माम बनाया था, साथ ही मख़्सूस लोगों को अपनी निशस्त में दाख़िल कर लिया था, आइन्दा ऐसा करोगे ?" उन्हों ने न करने का अ़हद किया तो आप ने उन्हें दोबारा उन की ज़िम्मेदारी पर भेज दिया।(1)

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली

ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के विसाल तक ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही मुल्के शाम के मुह़ाज़ पर इस्लामी लश्कर के सिपह सालार थे, जैसे ही सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप ने उन को मा'ज़ूल कर दिया। येह सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पहली मा'ज़ूली थी, बा'दे अज़ां उन को एक बार फिर इस्लामी लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर कर दिया गया। मुल्के शाम की अक्सर फ़ुतूह़ात में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही का दख़्ल था, शामी व ईरानी लश्करों पर आप की धाक बैठ चुकी थी, यहां तक कि मुख़ालिफ़ अ़लाक़ों के लोग दूर दूर से आप को

(1) ......تاریخ مدینۃ منورہ، سیرۃ عمر فی عمالہ، ج۳، ص۸۱۷۔

www.dawateislami.net

देखने के लिये आते थे, शामी लश्कर के फ़ौजी आप के नाम से कांपते थे, येह वोह वक़्त था जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वुस्अ़तें और बुलन्दियां अ़ता फ़रमा दी थीं। ऐन उसी वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को मा'ज़ूल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार बना दिया।

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली की वुजूहात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी ज़ाती रन्जिश, बुग़्ज़ो इनाद, ह़सद व कीना, अ़दावत व जलन या किसी क़िस्मे ख़फ़्गी व नाराज़ी की वज्ह से उन के ओ़ह्दे से मा'ज़ूल नहीं किया था बल्कि ख़ैर अन्देशी, ख़ैरख़्वाही, ख़ुलूसो हमदर्दी, किफ़ायत शिआ़री और सलामत रवी के पेशे नज़र किया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हरगिज़ हरगिज़ ह़क़ तलफ़ी नहीं की थी बल्कि शफ़्क़ते अह़िब्बा का ह़क़ अदा किया था। उ़लमाए अह्ले सुन्नत ने सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मा'ज़ूली की दर्जे ज़ैल दस वुजूहात बयान की हैं।

(1)......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुरअत व बहादुरी और जंगी महारत ने रूमी लश्कर के होश उड़ा दिये थे, रूमी लश्कर का हर सिपाही आप का नाम सुन कर कांपने लग जाता था, हर रूमी सिपाही का येह ख़याल था कि शायद ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बज़ाते ख़ुद एक लश्कर हैं, इन की वज्ह से इस्लामी लश्कर का हौसला बर क़रार है, अगर येह न हों तो इस्लामी लश्कर की कोई अहम्मिय्यत नहीं, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को मा'ज़ूल कर के इस फ़ासिद ख़याल को ख़त्म कर दिया और रूमियों को येह बावर कराया कि अगर सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न भी हों तब भी इस्लामी लश्कर के रो'ब व दबदबे में कोई फ़र्क़ नहीं आएगा, इस्लामी लश्कर का हर सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ माहिरे जंग है।

(2)......सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुरअत व बहादुरी के सबब आप की ज़ात के लिये भी काफ़ी ख़त़रात बढ़ गए थे, बल्कि रूमी लश्कर ने मक्रो फ़रैब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई बार शहीद करने की कोशिश भी की, ह़ालांकि आप की मौजूदगी से मुजाहिदीन को ढारस मिलती थी और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की ज़ात को गंवाना नहीं चाहते थे, और येह तब ही मुमकिन था कि वोह सरदारी के मन्सब पर न हों क्यूंकि सरदार होने की वज्ह से उन की जान पर ज़ियादा ख़त़रा था।

www.dawateislami.net

(3)......हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत दीलैर और शुजाअ़ होने के साथ साथ हमेशा शहादत के भी मुतमन्नी रहते, इस अ़ज़ीम जज़्बे की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे सरदारी पर फ़ाइज़ होने की वज्ह से बसा औक़ात अपने आप को ख़त़रनाक मुहिमात में भी डाल देते थे, इसी वज्ह से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को मा'ज़ूल कर दिया कि जब वोह सरदारी के मन्सब पर न होंगे तो इस्लामी लश्कर के सिपह सालार के ताबेअ़ रहेंगे और अपने आप को ख़त़रनाक मुहिमात में डालने से बचेंगे।

(4)......इस्लामी लश्कर की फ़ुतूहात से शामी लश्कर पर एक धाक बैठ चुकी थी, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह चाहते थे कि मुल्के शाम में इस्लामी लश्कर की जो काफ़िर लश्कर पर धाक बैठी हुई है वोह क़ाइम रहे, जिस के लिये सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर में मौजूद रहना बहुत ज़रूरी था, इसी वज्ह से आप ने उन को मा'ज़ूल कर दिया क्यूंकि आप जानते थे कि हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लामी लश्कर के रूह़ रवां हैं, उन्हें लश्कर में रीढ़ की हड्डी की हैसिय्यत हासिल है, सिपह सालार होते हुवे उन को अगर कुछ हो गया तो इस्लामी लश्कर का हौसला टूट जाएगा और शामी लश्कर का ख़ौफ़ भी जाता रहेगा।

(5)......अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह ख़्वाहिश थी कि पूरे मुल्के शाम और दीगर मुमालिक में इस्लाम का परचम लहराने लगे, आप येह चाहते थे कि ज़ियादा से ज़ियादा लोग ईमान क़बूल कर के इस्लाम में दाख़िल हों और इस्लाम के अख़्लाक़ी महासिन की ता'लीम से मुतअस्सिर हो कर दुख़ूले इस्लाम की जानिब मैलान व रुजहान करें लेकिन सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत और उन की जुरअत व बहादुरी की वज्ह से कुफ़्फ़ार के लश्कर सुल्ह़ के लिये आप का सामना न कर पाते थे, जब कि सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के मुक़ाबले में काफ़ी नर्म त़बीअ़त के थे इस लिये आप ने उन को मा'ज़ूल कर दिया कि कुफ़्फ़ार सुल्ह़ की त़रफ़ राग़िब हों और मुसलमानों की ता'दाद में मज़ीद इज़ाफ़ा हो।

(6)......सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस्लामी लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर करने में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक दूरअन्देशी येह भी थी कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सख़्त हैं, जंगजू हैं, उन का रो'ब और उन की दहशत रूमियों के दिलों पर ग़ालिब है और वोह हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम से कांपते हैं, लिहाज़ा

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार की ज़र्ब से उन पर सख़्ती करें वोह तंग आ कर पनाह ढूंडें और सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आएं और सुल्ह़ कर लें।

(7)......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सख़्त होने के साथ साथ अख़्लाक़े ह़सना, एह़सान, रह़्म दिली और फ़राख़ दिली के ह़ामिल थे, लेकिन रूमी कुफ़्फ़ार फ़क़त़ आप की सख़्ती जानते थे, इन तमाम सिफ़ात से बे ख़बर थे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को मा'ज़ूल कर के सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार बना दिया ताकि रूमी कुफ़्फ़ार उन के तवस्सुत़ से सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन सिफ़ात से भी वाक़िफ़ हो जाएं।

(8)......सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल कर के रूमी कुफ़्फ़ार को येह तअस्सुर दिया कि सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक मक़ामो मन्सब की कोई अहम्मिय्यत नहीं, वोह लश्कर के सरदार हों तो भी शेरे बबर हैं और सरदार न हों तो भी शेरे बबर हैं।

(9)......ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मा'ज़ूली के ज़रीए़ सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुन्या को येह ह़क़ीक़त भी बावर कराना चाहते थे कि इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन रूमियों की त़रह़ नफ़्स परवर और दुन्या परस्त नहीं हैं बल्कि इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद फ़क़त़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये लड़ता है, येही वज्ह है कि वोह कुफ़्फ़ार पर तो सख़्त हैं लेकिन आपस में निहायत ही शफ़ीक़ व रह़्म दिल हैं।

(10)......अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'ज़ूल कर के उन की तमाम तर सलाहि़य्यतों से भरपूर फ़ाइदा उठाना चाहते थे क्यूंकि ब है़सिय्यते सिपह सालार उन पर जंग के इलावा दीगर कई ज़िम्मेदारियां थीं मसलन माले ग़नीमत जम्अ़ करना, फिर इस का ह़िसाब रखना, इस में से ख़ुमुस निकाल कर अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में भेजना, बाक़ी माल को मुजाहिदीन में तक़्सीम करना, पूरी फ़ौज के इन्तिज़ाम को संभालना, फ़ौजियों की ज़रूरिय्यात वग़ैरा का ख़याल रखना वग़ैरा वग़ैरा। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तमाम ज़िम्मेदारियों से सुबुकदोश कर दिया ताकि वोह अपनी तमाम सलाहि़य्यतों को सिर्फ़ जंगी उमूर में सर्फ़ करें और इस्लामी लश्कर की शानो शौकत बढ़ाएं।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1....मर्दाने अ़रब, स. 274 ता 281 माख़ूज़न।

www.dawateislami.net

हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ रिआ़या की ज़िम्मेदारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि रियासती मुआ़मलात में जहां एक ह़ाकिम या गवर्नर की बहुत सी ज़िम्मेदारियां हैं वहीं अ़वामुन्नास व रिआ़या पर भी रियासत और इस के गवर्नर के ह़वाले से कई ज़िम्मेदारियां आ़इद होती हैं। जब दोनों त़रफ़ से ज़िम्मेदारियां पूरी की जाएं तो ही तमाम मुआ़मलात बेहतर त़रीक़े से अन्जाम पाते हैं, सारी ज़िम्मेदारी फ़क़त़ ह़ाकिम पर डालना भी दुरुस्त नहीं है और न ही रिआ़या पर। बा'ज़ लोगों को येह कहते भी सुना गया है कि "सारा क़ुसूर सिर्फ़ हुक्मरानों का ही है।" ऐसा हरगिज़ नहीं, हां अगर कोई ह़ाकिम अपनी ज़िम्मेदारियां पूरी नहीं करता तो वोह उस का क़ुसूर है, लेकिन रिआ़या को चाहिये कि वहां इस बात पर भी ग़ौर कर ले कि वोह अपनी ज़िम्मेदारियों को कितना पूरा करती है ? अगर रिआ़या अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं करती तो रियासत के मुआ़मलात को ख़राब करने में वोह भी ह़ाकिम के साथ बराबर की शरीक है।

(1)......अह़कामे शरइय्या में इत़ाअ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ाकिम की इत़ाअ़त वाजिब है जब कि उस का हुक्म शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो, यक़ीनन इस में दुन्या व आख़िरत की बेहतरी है, क़ुरआने पाक में भी इस की सराह़त मौजूद है। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ﴾ (پ۵، النساء:۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अगर हुक्मरानों का एह़तिसाब फ़रमाते थे तो साथ ही रिआ़या की तरबिय्यत भी फ़रमाते रहते थे, हुक्मरानों की इत़ाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ आप का एक बेहतरीन राहनुमा फ़रमान पेशे ख़िदमत है।

ह़बशी ग़ुलाम की इत़ाअ़त का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : فَاسْمَعْ وَاَطِعْ وَاِنْ اُمِّرَ عَلَيْكَ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ مُجَدَّعٌ اِنْ ضَرَبَكَ فَاصْبِرْ وَاِنْ حَرَمَكَ فَاصْبِرْ وَاِنْ اَرَادَ اَمْرًا يَنْتَقِصُ دِيْنَكَ فَقُلْ سَمْعٌ وَطَاعَةٌ دَمِيْ دُوْنَ دِيْنِيْ فَلَا تُفَارِقِ الْجَمَاعَةَ "या'नी अपने ह़ाकिम व निगरान की बात को ग़ौर से सुनो और उस की इत़ाअ़त करो अगर्चे वोह

www.dawateislami.net

ह़ाकिम व निगरान कोई ह़बशी, नक कटा गुलाम ही क्यूं न हो ? अगर वोह तुम्हें मारे तो सब्र करो, मह़रूम करे तो सब्र करो, अलबत्ता अगर वोह तुम्हारे दीन में रख़्ना डालने की कोशिश करे तो उसे दो टोक अल्फ़ाज़ में कह दो कि तुम्हारे हर मुआ़मले को मैं सुन कर उस की इत़ाअ़त करूंगा लेकिन दीनी मुआ़मले में कोई मफ़ाहमत बरदाश्त नहीं करूंगा और जमाअ़त से अ़लाहिदा न होना।''(1)

(2)......ग़ैर मौजूदगी में ख़ैरख़्वाही

हुक्मरानों के हुक़ूक़ में से एक ह़क़ येह भी है कि उन की ग़ैर मौजूदगी में उन की ख़ैरख़्वाही की जाए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार हुक्मरानों के हुक़ूक़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! हमारे भी तुम पर कुछ हुक़ूक़ हैं, हमारी अ़दम मौजूदगी में हमारी ख़ैरख़्वाही करो, ख़ैरो भलाई के कामों में हमारी मुआ़वनत करो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां ह़ाकिम की बुर्दबारी और नर्मी से ज़ियादा कोई चीज़ मह़बूब नहीं, इसी त़रह़ ह़ाकिम की जहालत और बे वुक़ूफ़ी से बढ़ कर रब عَزَّوَجَلَّ के हां कोई चीज़ ना पसन्दीदा नहीं।''(2)

(3)......ग़ीबत से अपने आप को बचाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम मुसलमानों बिल ख़ुसूस हुक्मरानों के हुक़ूक़ में से एक ह़क़ येह भी है कि रिआ़या अपने आप को उन की ग़ीबत से बचाए। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : ''अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने हमें हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ कई बातों से मन्अ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि अपने हुक्मरानों को बुरा भला न कहो, उन्हें धोका न दो, उन की ना फ़रमानी न करो, तक़्वा इख़्तियार करो और सब्र का दामन थामे रहो क्यूंकि **अल्लाह** का अम्र या'नी क़ियामत क़रीब है।''(3)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''ग़ीबत की तबाहकारियां'' सफ़ह़ा 169 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बयान कर्दा हुक्मरानों की ग़ीबत से मुतअ़ल्लिक़ एक ह़िकायत और इस से ह़ासिल होने वाला दर्स पेशे ख़िदमत है :

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، فی امام السریة یامرھم۔۔۔الخ، ج ۷، ص ۷۳۷، حدیث: ۶ ملتقطا۔

2 ......کنزالعمال، کتاب الخلافۃ، آداب الامارۃ، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۰۶، حدیث: ۱۴۳۳۰۔

3 ......شعب الایمان، باب فی التمسک بالجماعۃ، فصل فی فضل الجماعۃ۔۔۔الخ، ج ۶، ص ۶۹، حدیث: ۷۵۲۳۔

www.dawateislami.net

बादशाह की सड़ी हुई लाश

एक मरतबा कुछ लोगों ने हज़रते सय्यिदुना मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने एक बादशाह की बुराइयां बयान करना शुरूअ़ कर दीं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ामोशी से सुनते रहे, ख़ुद उस के बारे में कोई अच्छी या बुरी बात नहीं की। जब रात सोए तो ख़्वाब में देखा कि उसी बादशाह की सड़ी हुई बदबू दार लाश आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने रखी है और एक आदमी कह रहा है : "इसे खाओ !" फ़रमाया : "मैं इसे क्यूं खाऊं ?" उस ने जवाब दिया : "इस लिये कि तुम्हारे सामने इस बादशाह की ग़ीबत की गई थी।" फ़रमाया : "मगर मैं ने तो इस के बारे में कोई अच्छा या बुरा कलाम नहीं किया !" जवाब मिला : "लेकिन तुम इस की ग़ीबत सुनने पर रिज़ामन्द थे।"(1)

हज़रते सय्यिदुना हज़्म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना मैमून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद किसी की ग़ीबत करते न अपने सामने किसी को ग़ीबत करने देते बल्कि अगर कोई ग़ीबत करने की कोशिश करता तो उसे मन्अ़ फ़रमा देते अगर वोह बाज़ आ जाता तो ठीक वरना आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से उठ खड़े होते।"(2)

सियासी तबसेरों की बैठकें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि सियासी क़ाइदीन, अरबाबे इक़्तिदार और हुक्मरान तबक़े की ग़ीबत की भी खुली छूट नहीं। सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल शायद ही हमारी कोई निशस्त ऐसी हो जिस में किसी सियासी लीडर या वज़ीर या क़ौमी या सूबाई एसेम्बली के किसी रुक्न की इज़्ज़त की धज्जियां न उड़ाई जाती हों। कभी वज़ीरे आ'ज़म हदफ़े तन्क़ीद होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की। मुख़्तलिफ़ लोगों के मुतअ़ल्लिक़ नाम ब नाम ज़ोरदार मन्फ़ी (NEGATIVE) बहसें की जातीं, जी भर कर कीचड़ उछाला जाता और एक से एक बुरे नाम रखे जाते हैं। ग़ौर से सुनिये ! रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सूरतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो।"

---

1 ......صفة الصفوة، ميمون بن سياه، ج ٣، ص ١٥٤۔

2 ......حلية الاولياء، ميمون بن سياه، ج ٣، ص ١٢٧۔

www.dawateislami.net

हज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن को ग़ीबत के मुआ़मले में अल्लाह दावर عَزَّوَجَلَّ का इस क़दर डर रहता था कि जिन के ज़ुल्मो सितम की दास्तानें मश्हूरो मा'रूफ़ होतीं उन का भी बिला ज़रूरते शरई तज़किरा करने से बचते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से अ़र्ज़ की गई : "क्या बात है कि आप ने कभी भी ह़ज्जाज (बिन यूसुफ़) के बारे में दो लफ़्ज़ नहीं बोले !" (या'नी उसे बुरा भला नहीं कहा) फ़रमाया : "मैं (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से) डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौह़ीद की बरकत से उसे तो छोड़ दे (या'नी चूंकि वोह मुसलमान था लिहाज़ा इस निस्बत के सबब अपने फ़ज़्लो करम से उसे बे ह़िसाब बख़्श दे) और मुझे उस की ग़ीबत करने की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे।"[1]

दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़त़रा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसलमान वोही है जो ज़बान से किसी को गाली न दे, बिला इजाज़ते शरई किसी को बुरा न कहे, किसी की ग़ीबत न करे, किसी को बे वुक़ूफ़ न कहे, किसी के ऐ़ब को न खोले, किसी का भेद न खोले और हाथ से भी किसी को तक्लीफ़ न दे, किसी की दिल आज़ारी न करे, बिला इजाज़ते शरई किसी को न मारे, किसी को तन्क़ीदे बेजा का निशाना न बनाए, इस के बर अ़क्स जिस ने लोगों को हर त़रह़ की तक्लीफ़ दी, हाथ से मारा, आंख से किसी की त़रफ़ ईज़ा देने वाले अन्दाज़ से इशारा किया, हर शख़्स उस से तंग व बेज़ार रहा तो वोह शख़्स कामिल मुसलमान नहीं है, ईमान उस के दिल में मज़बूत़ नहीं है, इन्तिक़ाल के वक़्त अन्देशा है कि مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान ग़ालिब आ जाए और हर त़रह़ से उसे वस्वसा डाले और مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह शख़्स दाइरए ईमान से निकल जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ न करे उस का क़दम सिराते़ मुस्तक़ीम से फिसल जाए और वोह जहन्नम की राह इख़्तियार करे, जन्नत से मह़रूम रहे। ब ख़िलाफ़ इस के जिस का ईमान कामिल हो, इस्लाम की सच्ची मह़ब्बत उस के दिल को ह़ासिल हो, कामिल मुसलमानों वाले आ'माल व अफ़्आ़ल उस के अन्दर पाए जाते हों, बन्दों के हुक़ूक़ गर्दन पर न उठाए हों, इस सूरत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

1 ......روح البیان، پ۲۶، الحجرات: ۱۲، ج۹، ص۹۰۔

www.dawateislami.net

फ़ज़्लो करम से शैतान का वस्वसा मौत के वक़्त असर अन्दाज़ न होगा, दरयाए ईमान जोश मारेगा। फ़िरिश्ता इब्लीस को भगा देगा, वसाविस को दूर करेगा, इस लिये ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा, शैतान अपना सर पीटेगा, अपने सर पर ख़ाक उड़ाएगा और बहुत चीख़ेगा चिल्लाएगा।

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसलमान बनने के लिये, ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये मदनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर मदनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे,

बद अक़ीदगी से तौबा नसीब हो गई

लतीफ़ाबाद हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया : बा'ज़ लोगों की सोहबत में बैठने की बिना पर मेरा ज़ेहन ख़राब हो गया और मैं तीन साल तक नियाज़ शरीफ़ और मीलाद शरीफ़ वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करता रहा मुझे पहले दुरूद शरीफ़ से बहुत शग़फ़ (या'नी बेहद दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत सोहबत के सबब दुरूदे पाक पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और मैं ने कसरत के साथ दुरूदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब दुरूद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सो गया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में सब्ज़ गुम्बद का दीदार हो गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान से اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ जारी हो गया। सुब्ह जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हल चल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आख़िर हक़ का रास्ता कौन सा है ? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से दा'वते इस्लामी वाले आशिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबिय्यत का मदनी क़ाफ़िला हमारे घर की क़रीबी

www.dawateislami.net

मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूंकि मुतज़ब्ज़िब (Confused) था इस लिये तलाशे हक़ के जज़्बे के तह़त मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले मदनी क़ाफ़िले वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही त़न्ज़ किया बल्कि अजनबिय्यत ही मह़सूस न होने दी। अमीरे क़ाफ़िला ने मदनी इन्आ़मात का तआ़रुफ़ करवाया और इस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने मदनी इन्आ़मात का बग़ौर मुत़ालआ़ किया तो चौंक उठा क्यूंकि मैं ने इतने ज़बरदस्त तरबिय्यती मदनी फूल ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और मदनी इन्आ़मात की बरकत से मुझ पर रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल हो गया। मैं ने मदनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से तौबा करता हूं और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रह़त व मसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन 30 रूपे की नुक्ती (एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। मैं 35 साल से सांस के मरज़ में मुब्तला था, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी दाढ़ में तक्लीफ़ थी जिस के बाइस सह़ीह़ त़रह़ खा भी नहीं सकता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाना भी खा रहा हूं। मेरा दिल गवाही देता है कि अ़क़ाइदे अह्ले सुन्नत ह़क़ हैं और मेरा ह़ुस्ने ज़न है कि दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

छाए गर शैत़नत, तो करें देर मत
क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
सोह़बते बद में पड़, कर अ़क़ीदा बिगड़
गर गया हो चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(4)......हुक्मरानों से राबित़ा

रियासती मुआ़मलात को चलाने और इन को मुनज़्ज़म करने के लिये ह़ाकिम और रिआ़या के दरमियान राबित़ा बहुत ज़रूरी है, यक़ीनन येह राबित़ा दोनों जानिब से होगा, ह़ाकिम को चाहिये कि अपनी रिआ़या से दूर न जाए उन में घुल मिल कर रहे, इसी त़रह़ रिआ़या की भी येह ज़िम्मेदारी है कि अपने हुक्मरानों और ज़िम्मेदारान से राबित़े में रहे। जो जिस सत़ह़ का ज़िम्मेदार है उसे चाहिये कि वोह अपने मा तह़त अफ़राद को अपने तक पहुंचने के ऐसे ज़राएअ़ इख़्तियार करे कि रिआ़या उस के पास आसानी से पहुंच जाए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जहां रिआ़या से मिल कर उन के हुक़ूक़ के बारे में अ़मली इक़्दामात फ़रमाया करते थे वहीं उस वक़्त की रिआ़या भी हुक्मरानों से राबित़े में रहा करती थी।

(5)......हुक्मरानों के शरई मौक़िफ़ की ताईद

रिआ़या की एक ज़िम्मेदारी येह भी है कि ख़्वाह म ख़्वाह हुक्मरानों की मुख़ालफ़त से बचे, उन का हर वोह मौक़िफ़ जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो उस की ताईद करे, अगर वोह मौक़िफ़ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो मगर उस की समझ में न भी आता हो तो भी ख़ामोशी ही में आ़फ़िय्यत है। ह़ाकिम अगर कोई ऐसी बात करता है जो शरीअ़त के मुख़ालिफ़ नहीं है मगर रिआ़या में से कोई उस से बेहतर राए रखता है तो उसे चाहिये कि वोह अपनी राए ह़ाकिम तक बिल वासित़ा या बिला वासित़ा पहुंचा दे। वाज़ेह़ रहे कि अपने मुसलमान भाई को चाहे वोह ह़ाकिम ही क्यूं न हो अच्छा मश्वरा देना उस के साथ दियानत दारी है, जब कि ग़लत़ मश्वरा देना उस के साथ ख़ियानत है, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि ख़ुद अ़वामुन्नास से मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मुशावरत फ़रमाया करते थे।[1]

(6)......ग़लत़ बात की ताईद से परहेज़

किसी भी रियासत का ह़ाकिम या कोई भी ज़िम्मेदार यक़ीनन एक इन्सान ही है, जहां उस से अच्छी बातें सादिर होती हैं, वहीं कभी उस से ग़लतियां भी सरज़द हो जाती हैं, रिआ़या या मा तह़त शख़्स की येह ज़िम्मेदारी है कि अगर वोह ह़ाकिम के फ़े'ल या हुक्म में कोई ग़लती देखे तो उस को मुत्तलअ़ करे अगर वोह मुत्तलअ़ करने पर क़ादिर हो। अगर वोह उस पर क़ुदरत नहीं रखता तो उसे कम अज़ कम ग़लत़ जानते हुवे उस की ताईद न करे।

1....तफ़्सील के लिये इसी किताब का मौज़ूअ़ "अ़हदे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम" सफ़ह़ा 195 का मुत़ालआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि ख़्वाह म ख़्वाह हुक्मरानों या ज़िम्मेदारान की हां में हां मिलाते रहते हैं, क़त्ए नज़र इस बात के कि वोह सहीह भी कह रहा है या नहीं। यक़ीनन हुक्मरानों के आगे जी जी करने वाला शख़्स ख़ाइन है। ह़दीसे पाक में ऐसे शख़्स के लिये हलाकत की वईद है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : وَيْلٌ لِلزَّرْبِيَّةِ "या'नी ज़रबिय्या के लिये हलाकत है।" अ़र्ज़ किया गया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह ज़रबिय्या कौन है ?" फ़रमाया : اَلَّذِيْ اِذَا صَدَقَ الْاَمِيْرُ قَالُوْا صَدَقَ وَ اِذَا كَذَبَ الْاَمِيْرُ قَالُوْا صَدَقَ "या'नी ज़रबिय्या वोह शख़्स है जो (ह़ाकिम की हां में हां मिलाए रखे, या'नी) ह़ाकिम कोई सच्ची बात कहे तो कहे : आप ने सच कहा। और अगर वोह कोई झूटी बात कहे तो भी येही कहे आप ने सच कहा।"[1]

(7)......मा'ज़ूली के बा'द भी उन का एह़तिराम

गर कोई ह़ाकिम या ज़िम्मेदार अपनी ज़िम्मेदारी या हुक्मरानी से मा'ज़ूल हो जाता है या उस की ज़िम्मेदारी की मुद्दत ख़त्म हो जाती है तो रिआ़या या मा तह़्त अफ़राद को चाहिये कि अब भी उस के साथ वैसा ही सुलूक करें जैसा उस की हुक्मरानी के वक़्त किया करते थे, बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि जब कोई शख़्स किसी ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ हो तो उस का बहुत ही एह़तिराम करते हैं लेकिन जैसे ही उस ने अपना मन्सब छोड़ा उसे पूछना भी गवारा नहीं करते, गोया उस के मन्सब की वज्ह से उस का एह़तिराम कर रहे थे। ऐसा करना हरगिज़ मुनासिब नहीं, तमाम लोगों के साथ अच्छा सुलूक कीजिये, चाहे वोह ज़िम्मेदार हों या मा तह़्त अफ़राद हों। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरते त़य्यिबा हमारे सामने है, आप ने अपनी ज़ात को कभी ऐसा बना कर पेश न किया कि मैं अमीरुल मोमिनीन हूं, बल्कि आप ने तो अपने गवर्नरों की भी ऐसी तरबिय्यत फ़रमाई कि वोह ह़ाकिम और ज़िम्मेदार बन कर भी आ़म फ़र्द की त़रह़ रहे। आप ने अपनी रिआ़या की येही तरबिय्यत की थी कि किसी ह़ाकिम के मन्सब छोड़ने के बा'द भी उस के साथ वैसा ही सुलूक किया जाए जैसा उस के मन्सब के वक़्त किया करते थे, येही वज्ह है कि तारीख़ में एक मिसाल भी ऐसी नहीं मिलती कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किसी गवर्नर को मा'ज़ूल फ़रमाया हो और बा'द में लोगों ने उस से कोई बुरा सुलूक किया हो।

---

1 ......شعب الایمان، باب فی مباعدۃ الکفار۔۔۔الخ، فصل فی مجانبۃ الظلمۃ، ج ۷، ص ۴۷، حدیث: ۹۴۰۰۔

www.dawateislami.net

(8)......ज़ाती मुआ़मलात को ख़ुद ही हल करना

हाकिम या ज़िम्मेदार अगर्चे उस की येह ज़िम्मेदारी है कि वोह रिआ़या या अपने मा तह़त अफ़राद के मसाइल ह़ल करे। लेकिन उस में रिआ़या के लिये एक मदनी फूल येह भी है कि ऐसे घरेलू और ज़ाती नौइय्यत के मुआ़मलात जिन का तअ़ल्लुक़ आ़म मुआ़मलात से है या उन को ख़ुद ही ह़ल किया जा सकता है, ह़ाकिम के पास न ले कर जाएं बल्कि ख़ुद ही ह़ल कर लें। इस का एक फ़ाइदा तो येह होगा कि आप के घर के ज़ाती मुआ़मलात आप ही तक मह़दूद रहेंगे और ह़ाकिम या ज़िम्मेदार का भी वक़्त बचेगा। नीज़ आप के अन्दर भी कुछ न कुछ मुआ़मलात को ह़ल करने की सलाहिय्यत पैदा होगी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास जब इस क़िस्म के मुआ़मलात आते तो आप की येही कोशिश होती कि उस शख़्स को समझा देते कि येह कोई ऐसा मुआ़मला नहीं है जिस के लिये तुम मेरे पास आए हो इसे ख़ुद ही ह़ल कर लो या इस मस्अले की वज्ह से परेशान होने की ज़रूरत नहीं। मसलन एक बार आप की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी ज़ौजा की शिकायत ले कर आए और उन के बारे में ऐसी बातें कीं, जो उ़मूमन हर मियां बीवी के दरमियान होती रहती हैं तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें येही मदनी ज़ेह्न दिया।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ौजैन में भी बसा औक़ात छोटे छोटे मुआ़मलात हो जाते हैं, यक़ीनन समझदार वोही है जो ह़त्तल मक़्दूर इन मुआ़मलात को अपने घर तक ही मह़दूद रखे, ख़ुद ही इन के ह़ल के लिये कोशिश करे, नहीं तो अपने ख़ानदान के बुज़ुर्गों से इन मसाइल को ह़ल करवाए, ख़ुसूसन ज़ौजा का मुआ़मला इन्तिहाई ह़स्सास है, बा'ज़ औक़ात त़बीअ़त के फ़र्क़ की वज्ह से भी ऊंच नीच हो जाती है, दोनों को चाहिये कि जहां तक मुमकिन हो एक दूसरे की बातों को बरदाश्त करें, अगर एक को गुस्सा आ जाए तो दूसरा ख़ामोश हो जाए, दोनों वसीअ़ ज़र्फ़ी का मुज़ाहरा करें, इसी में दुन्या व आख़िरत की भलाइयां हैं। ज़ौजैन, सास बहू वग़ैरा के माबैन होने वाले मुआ़मलात को ब त़रीक़े अह़सन ह़ल करने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इन तीन रसाइल : "(1) ना चाकियों का इलाज (2) घर अम्न का गहवारा कैसे बने ? (3) सास बहू में सुल्ह़ का राज़" का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ घर को अम्न का गहवारा बनाने में काफ़ी मुआ़वनत ह़ासिल होगी।"

[1]......معجم کبیر، ج ۹، ص ۳۳۸، حدیث: ۹۶۸۵، مجمع الزوائد، کتاب النکاح، حق المراۃ علی الزوج، ج ۴، ص ۵۵۹، حدیث: ۷۶۲۷۔

www.dawateislami.net

(9)......मुश्किल वक़्त में साथ देना

रिआ़या पर एक ह़क़ येह भी है कि जब किसी ह़ाकिम या ज़िम्मेदार पर मुश्किल वक़्त आए तो उस मुश्किल में ह़ाकिम का साथ दें, ताकि वोह ज़िम्मेदार अपनी ज़िम्मेदारी को ब त़रीक़े अह़सन निभाते हुवे इस मुश्किल को दूर करने की कोशिश करे, क्यूंकि येह वाज़ेह़ है कि जब कोई शख़्स परेशानी में हो वोह दीगर लोगों की तवज्जोह चाहता है और ह़ाकिम का रिआ़या के साथ तअ़ल्लुक़ होता है इस लिये उस की नज़र रिआ़या पर होती है कि मैं ने मुश्किल वक़्त में इन का साथ दिया तो क्या येह भी मुश्किल वक़्त में मेरा साथ देते हैं या नहीं ? अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारक में मदीनए मुनव्वरा में सख़्त क़ह़त़ साली हुई, उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रिआ़या की भरपूर ख़िदमत की तो रिआ़या ने भी आप के हर हुक्म की इत़ाअ़त की जिस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ह़त़ साली को दूर फ़रमा दिया।

(10)......ग़ैर मौजूदगी में दुआ़ करना

रिआ़या पर एक ह़क़ येह भी है कि हुक्मरानों या ज़िम्मेदारान की ग़ैर मौजूदगी में उन के लिये दुआएं करें, बिलफ़र्ज़ उन की ज़ात में कोई ग़लत़ी देखें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उसे दूर करने की दुआ़ करें। वाज़ेह़ रहे की दुआ़ मोमिन का हथयार है, दुआ़ से तक़्दीरें बदल जाती हैं, ह़ाकिमे वक़्त पर तो येह लाज़िम है कि वोह शरीअ़त के मुत़ाबिक़ चले लेकिन अगर बिलफ़र्ज़ इस में कोई कमी हो तो हो सकता है रिआ़या की दुआ़ओं की बरकत से दूर हो जाए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में आप की सल्त़नत के लोग भी आप के लिये बहुत दुआएं किया करते थे।

(11)......उ़यूब की पर्दापोशी करना

हुक्मरानों के हुक़ूक़ में से एक ह़क़ येह भी है अगर उन की ज़ात में कोई ऐ़ब हो तो उस की बिला इजाज़ते शरई तशहीर न की जाए बल्कि उस की पर्दापोशी की जाए, क्यूंकि जिस त़रह़ रिआ़या की इ़ज़्ज़ते नफ़्स है बिऐ़निही ह़ाकिम के साथ भी येही मुआ़मला है, जिस त़रह़ आप के कोई ऐ़बों को उछाले तो आप को बुरा लगेगा इसी त़रह़ ह़ाकिम या ज़िम्मेदार के ऐ़बों को आप उछालेंगे तो उसे भी बुरा लगेगा। ह़ाकिम व रिआ़या दोनों के लिये येह बात निहायत ज़रूरी है कि एक दूसरे के ऐ़बों को उछालने के बजाए अपनी और पूरी रियासत की इस्लाह़ की कोशिश करते रहें।

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक मज़बूत और इस्लामी मुआ़शरे के क़ियाम में बहुत मुआ़वनत मिलेगी, मुआ़शरे से तमाम बुराइयों का ख़ातिमा हो जाएगा, दीगर बुराइयों के साथ साथ ग़ीबत, तोहमत, बद गुमानी जैसे अमराज़ से भी नजात मिल जाएगी।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़हदे फ़ारूक़ी के गवर्नर

बा'ज़ रिवायात में येह भी है कि एक मरतबा आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को अपना नाइब बनाया, बा'ज़ रिवायात में चन्द दीगर अस्ह़ाब के भी अस्माए मुबारका मज़कूर हैं, दर अस्ल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इत्तिबाअ़ फ़रमाते थे कि इन दोनों हस्तियों की भी येही आ़दते मुबारका थी कि जब भी मदीनए मुनव्वरा से बाहर किसी ज़रूरी काम की ग़रज़ से जाना होता तो किसी न किसी को अपना नाइब ज़रूर बनाते।

मक्कए मुकर्रमा के फ़ारूक़ी गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा पर ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नर मुक़र्रर किया था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी इन को इसी मन्सब पर बर क़रार रखा। ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल एक ही दिन हुवा था।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर बिन जुदआ़न तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर मुक़र्रर किया था, बा'दे अज़ां उन को मा'ज़ूल कर के ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर बनाया।(2)

---

1 ......الاستیعاب، عتاب بن اسید، ج۳، ص۱۴۲۔

2 ......اسد الغابۃ، قنفذ بن عمیر، ج۴، ص۴۳۶۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना कुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर बिन जुदआ़न तमीमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मा'ज़ूली के बा'द हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस खुज़ाई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा के गवर्नर मुक़र्रर हुवे। हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस खुज़ाई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के गवर्नरी के ज़माने के दो वाक़िआ़त बहुत अहम हैं। एक तो येह कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को मक्का में जेलख़ाने के लिये जगह ख़रीदने का हुक्म इरशाद फ़रमाया था, लिहाज़ा आप ने जेलख़ाने के लिये हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर ख़रीदा।(1)

दूसरा येह कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा से सफ़रे हज के लिये रवाना हुवे तो मक़ामे "उ़स्फ़ान" पर आप की मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस खुज़ाई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "आप ने अपनी ग़ैर मौजूदगी में मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर किसे मुक़र्रर फ़रमाया है?" अ़र्ज़ किया : "सय्यिदुना इब्ने अबज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को।" इरशाद फ़रमाया : "कौन इब्ने अबज़ी।" अ़र्ज़ किया : "इब्ने अबज़ी हमारे ग़ुलामों में से एक है।" आप ने इन्तिहाई तअ़ज्जुब से इरशाद फ़रमाया : "एक ग़ुलाम को मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर बना दिया?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरुल मोमिनीन! इब्ने अबज़ी कोई आ़म आदमी नहीं हैं वोह तो किताबुल्लाह के क़ारी और आ़लिमे दीन हैं।" येह सुन कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने करीम के सबब एक क़ौम को बुलन्दी व उ़रूज अ़ता फ़रमाता है और दूसरी क़ौम को ज़िल्लत व पस्ती से हमकिनार फ़रमाता है।"(2)

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन आ़स बिन हिशाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मा'ज़ूली के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन आ़स बिन

---

1 ......بخاری، کتاب الخصومات، باب الربط والحبس فی الحرم، ج۲، ص۱۱۷، تحت الباب:۸۔

2 ......مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، فصل فی یقوم بالقرآن۔۔۔الخ، ص۴۰۷، حدیث:۸۱۶۔

हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मक्कए मुकर्रमा का गवर्नर बनाया । आप हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में भी इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहे ।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अबू मुलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को हुदूद क़ाइम करने के लिये मक्कए मुकर्रमा पर मुक़र्रर फ़रमाया ।(2)

मदीनए मुनव्वरा के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

मदीनए मुनव्वरा में चूंकि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुद ही मौजूद थे, इस लिये वहां किसी ख़ास शख़्सिय्यत को गवर्नर नहीं बनाया गया, वहां के मुआ़मलात आप खुद ही देखा करते थे, अलबत्ता मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में दीगर लोगों को ज़िम्मेदारियां दी हुई थीं, जब आप मदीनए मुनव्वरा से बाहर जाते तो उ़मूमन हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ाइम मक़ाम गवर्नर बना कर जाते, कई मरतबा मौला अ़ली शेरे खुदा (كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) को भी गवर्नर बनाया ।(3)

ताइफ़ के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ताइफ़ का गवर्नर बनाया था, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते ज़ाहिरी और अ़हदे सिद्दीक़ी में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ रहे । सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में भी दो साल तक इसी ज़िम्मेदारी पर बर क़रार रहे, फिर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को "बहरैन" का गवर्नर बना दिया, फिर वहां से मा'ज़ूल कर के "उ़मान" का गवर्नर बनाया ।(4)

---

1 ......اسد الغابہ، خالدبن العاص، ج ۲، ص ۱۲۳ ، الاستیعاب، خالدبن العاص بن ہشام، ج ۲، ص ۱۵۔

2 ......مصنف عبد الرزاق، کتاب الطلاق، باب ضرب الحدود، ج ۷، ص ۲۹۸، حدیث: ۱۳۵۹۱۔

3 ......الاستیعاب، زیدبن ثابت، ج ۲، ص ۱۱۲۔

4 ......الاستیعاب، عثمان ابی العاص الثقفی، ج ۳، ص ۱۵۳ ، الاصابة، عثمان بن ابی العاص، ج ۴، ص ۳۷۴، الرقم: ۵۴۵۷۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन अबू सुफ़्यान उमवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सगे भाई हैं, कुन्यत "अबू वलीद" है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत अ़ह्दे रिसालत में हुई थी, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ताइफ़ के गवर्नर रहे। फिर हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को मिस्र की फ़ौज का ज़िम्मेदार बना दिया। आप फ़सीहुल्लिसान मुबल्लिग़ थे, आप के बारे में येह मश्हूर था कि बनू उमय्या में आप से बढ़ कर कोई ख़तीब नहीं। मिस्र में एक साल रहे और 40 या 43 हिजरी में मिस्र के शहर "इस्कन्दरिया" में आप का विसाल हुवा।(1)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ताइफ़ से मा'ज़ूल कर के बह़रैन का गवर्नर बनाया और फिर उन की जगह हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ताइफ़ का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया।(2)

वाज़ेह़ रहे कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोही सह़ाबी हैं जिन्हों ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुवाल किया था कि "आप इस्लाम के बारे में मुझे ऐसी बात बताएं जिस के मुतअ़ल्लिक़ मैं आप के इलावा किसी और से न पूछूं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : قُلْ آمَنْتُ بِاللّٰہِ فَاسْتَقِمْ "या'नी येह कहो कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया फिर उस पर साबित क़दम रहो।"(3)

यमन के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़त्ह़े मक्का के रोज़ ईमान लाए, ग़ज़्वए हुनैन, ताइफ़ और तबूक में ह़ाज़िरी की सआ़दत पाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सख़ावत की वज्ह से मश्हूर

---

1 ......اسد الغابة، عتبة بن ابی سفیان، ج ۳، ص ۵۸۰۔

2 ......الاستیعاب، سفیان بن عبد اللہ، ج ۲، ص ۱۹۰۔

3 ......مسلم، کتاب الایمان، جامع اوصاف الاسلام، ص ۴۰، حدیث: ۶۲۔

www.dawateislami.net

थे । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को "यमन" के बा'ज़ अ़लाक़ों का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू रबीआ़ मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप की कुन्यत "अबू अ़ब्दुर्रह़मान" है, ज़मानए जाहिलिय्यत में आप का नाम "बुजैरा" था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम "अ़ब्दुल्लाह" रख दिया । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को यमन के बा'ज़ अ़लाक़ों का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया ।(2)

बह़रैन के फ़ारूक़ी गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़रैन का गवर्नर बनाया था, अ़ह्दे सिद्दीक़ी व अ़ह्दे फ़ारूक़ी में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। अ़ह्दे फ़ारूक़ी में सिन 14 हिजरी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बह़रैन ही में विसाल हुवा । आप के विसाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बह़रैन का गवर्नर बनाया गया । याद रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन "सा'बा बिन्ते ह़ज़रमी" अ़शरए मुबश्शरा में से एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा हैं, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मामूं हुवे ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन सख़्र है, क़बीलए दौस से तअ़ल्लुक़ रखते थे, अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा से थे, चश्मए उ़लूमे नबविय्या से सैराब होने के लिये भूक, मुफ़्लिसी जैसी दुश्वार गुज़ार घाटियों को उ़बूर किया, येह ही वज्ह है कि आप का शुमार **मुकस्सिरीन** सह़ाबए किराम (कसरत से रिवायात करने वाले सह़ाबा) में होता है । अ़ह्दे रिसालत में ग़ज़्वए ख़ैबर व हुनैन जैसे

1 ......الاستیعاب، یعلی بن امیۃ، ج۴، ص۱۴۷، الاصابۃ، یعلی بن امیۃ، ج۶، ص۵۳۹، الرقم: ۹۳۷۹۔
2 ......الاستیعاب، عبد اللہ بن ربیعۃ، ج۳، ص۳۲۔
3 ......الاستیعاب، علاء بن الحضرمی، ج۳، ص۱۹۳۔

www.dawateislami.net

मा'रिकों में भी पेश पेश रहे, अ़हदे सिद्दीक़ी में फ़ितनए इर्तिदाद की सरकोबी के लिये बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आप की इन ही ख़ुसूसिय्यात के पेशे नज़र सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को "बह़रैन" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।[1]

हज़रते सय्यिदुना क़ुदामा बिन मज़ऊ़न जमही رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू अ़म्र" या "अबू उ़मर" है, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपने दोनों भाइयों हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़बशा की जानिब हिजरत फ़रमाई और तमाम ग़ज़वात में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को बह़रैन का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।[2]

मिस्र के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िलिस्त़ीन का गवर्नर बनाया था, मिस्र फ़त्ह़ होने के बा'द आप को मिस्र का गवर्नर बना दिया गया क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही "फ़ातेह़े मिस्र" हैं।[3]

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़म्र बिन आ़स क़ुरैश के नेक लोगों में से है।"[4]

फ़िलिस्त़ीन के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को फ़िलिस्त़ीन का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाया करते थे :

1 ......الاستیعاب، ابوھریرۃ الدوسی، ج ۴، ص ۳۳۴۔

2 ......الاصابۃ، قدامۃ بن مظعون، ج ۵، ص ۳۲۲، الرقم: ۷۰۳ا۔

3 ......طبقات کبری، تسمیۃ من نزل مصر من اصحاب رسول اللہ، ج ۷، ص ۳۴۲۔

4 ......ترمذی، المناقب عن رسول اللہ، مناقب عمرو بن العاص، ج ۵، ص ۴۵۶، حدیث: ۳۸۷۱۔

www.dawateislami.net

مَنْ اَرَادَ اَنْ يَّسْاَلَ عَنِ الْحَلَالِ وَ الْحَرَامِ فَلْيَاْتِ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ "या'नी जो ह़लाल व ह़राम के मसाइल पूछना चाहता है वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाए।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मुजज़्ज़िज़ मुदलिजजी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़िलिस्त़ीन का गवर्नर बनाया था।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के भाई हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को फ़िलिस्त़ीन का गवर्नर बनाया, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के बा'द इन ही को दिमश्क़ का गवर्नर बना दिया।[3]

दिमश्क़ के फ़ारूक़ी गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़ह्दे रिसालत में कातिबे वह्य के मन्सब पर फ़ाइज़ थे, ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को शाम का गवर्नर मुक़र्रर कर दिया।[4]

ह़ौरान के फ़ारूक़ी गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन उ़लासा अल आ़मिरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन उ़लासा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही दानिशमन्द, बुर्दबार शख़्स थे नीज़ येह अपनी क़ौम के सरदार भी थे, इन ही ख़ुसूसिय्यात की बिना पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को "ह़ौरान" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।[5]

---

1 ......مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ان معاذا۔۔۔الخ، ج ۴، ص ۳۱۰، حدیث: ۵۲۴۰۔

2 ......الاصابۃ، علقمۃ بن مجزز، ج ۴، ص ۴۶۱، الرقم: ۵۶۹۳، الکامل فی التاریخ، ذکر عزل خالد بن الولید، ج ۲، ص ۳۸۰۔

3 ......الاصابۃ، یزید بن ابی سفیان، ج ۶، ص ۵۱۷، الرقم: ۹۲۸۵۔

4 ......الاصابۃ، معاویۃ بن ابی سفیان، ج ۶، ص ۱۲۱، الرقم: ۸۰۸۷۔

5 ......تہذیب الاسماء، علقمۃ بن علاثۃ، ج ۱، ص ۳۱۲۔

www.dawateislami.net

रमला के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन हकीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "रमला" का ह़ाकिम बनाया।[1]

ह़िम्स के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ क़बीला "ख़ज़रज" से है, आप की कुन्यत "अबू वलीद" है। आप उन छे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से हैं जो अन्सार में सब से पहले ईमान लाए। आप कातिबे वह्य भी थे और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को कुरआने पाक की ता'लीम देने पर मा'मूर थे। आप खुद भी तिलावते कुरआन के बहुत ह़रीस थे, ज़मानए रिसालत में ही आप ने मुकम्मल कुरआन ह़िफ़्ज़ कर लिया था। तमाम ग़ज़वात और शाम की फ़ुतूह़ात में शिर्कत फ़रमाई। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़िम्स का गवर्नर बनाया था। आप ही वोह पहले शख़्स हैं जिन्हें फ़िलिस्त़ीन का क़ाज़ी मुक़र्रर किया गया।[2]

हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ज़वए हुदैबिय्या से पहले इस्लाम लाए और हुदैबिय्या में भी शरीक हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत सख़ी थे सफ़र में अपना ज़ादे राह लोगों को खिला दिया करते थे, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "ज़ादुर्राकिब" (या'नी सुवारियों का ज़ादे राह) कहा जाता था। अमीनुल उम्मा हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़िम्स का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया। सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को इस मन्सब पर बर क़रार रखा और इरशाद फ़रमाया : "मैं अमीनुल उम्मा हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा अमीर को तब्दील नहीं करूंगा।" आप ने "अल जज़ीरा" के कई अ़लाके़ फ़त्ह़ किये। आप का इन्तिक़ाल 60 साल की उ़म्र में सिने 20 हिजरी में हुवा।[3]

---

1 ......الاصابة، علقمة بن حكيم، ج۵، ص۱۰۵، الرقم: ۶۲۶۸۔

2 ......الاستيعاب، عبادة بن الصامت، ج۲، ص۳۵۵، اسد الغابة، عبادة بن الصامت، ج۳، ص۱۵۸۔

3 ......الاستيعاب، عياض بن غنم، ج۳، ص۳۰۳۔

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आमिर बिन हुज़ैम رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन आमिर رضی اللہ تعالٰی عنہ और हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رضی اللہ تعالٰی عنہ के भाई हैं। गज़्वए ख़ैबर से क़ब्ल इस्लाम लाए, आप का शुमार अकाबिर सहाबए किराम علیہم الرضوان में होता है, ज़ोहदो तक़्वा में बहुत मश्हूर थे। हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम फ़ह्री رضی اللہ تعالٰی عنہ के इन्तिक़ाल के बा'द आप हिम्स के गवर्नर बने।(1)

हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ

हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ शाम की तमाम फ़ुतूहात में पेश पेश रहे, हज़रते सईद बिन आमिर رضی اللہ تعالٰی عنہ के इन्तिक़ाल के बा'द अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को हिम्स का गवर्नर बना दिया था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ हज़रते सय्यिदुना उमैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ के बारे में फ़रमाया करते थे कि : "काश ! मेरे मा तह्त उमैर बिन सा'द जैसे जवान होते, मैं उन से उमूरे मुस्लिमीन के हवाले से मदद लेता।" हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने आप के फ़रज़न्द हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन उमैर رضی اللہ تعالٰی عنہ से इरशाद फ़रमाया : "शाम में तुम्हारे वालिद से बढ़ कर कोई अफ़्ज़ल शख़्स नहीं।"(2)

अल जज़ीरा के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन मस्लमा फ़ह्री رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप की कुन्यत "अबू अब्दुर्रहमान" है, चूंकि आप का मुल्के रूम में कसरत से आना जाना रहता था इसी लिये आप "हबीबुर्रूम" (मुल्के रूम के दोस्त) कहलाते थे। आप मुस्तजाबुद्दा'वात थे।(3)

इराक़ के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन हारिसा शैबानी رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बहुत बहादुर व हौसला मन्द थे, इराक़ की जंगों में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को जैसी आज़माइशें आईं वैसी किसी को पेश न आई। हज़रते सय्यिदुना अबू उबैद बिन मसऊद

1 ......الاصابة، سعيد بن عامر، ج٣، ص٩٢، الرقم: ٣٢٨٠۔

2 ......الاصابة، عمير بن سعد ــــ الخ، ج٤، ص٥٩٦، الرقم: ٦٠٥١۔

3 ......الاستيعاب، حبيب بن مسلمة الفهري، ج١، ص٣٨١۔

www.dawateislami.net

सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इराक़ के गवर्नर रहे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इराक़ का गवर्नर बनाया था, आप की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में थीं। आप की शहादत मा'रिकए "जस्र" में हुई।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन फ़रक़द सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आज़रबाईजान का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था। याद रहे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जिन के जिस्म पर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस्ते मुबारक फेरा तो न सिर्फ़ आप के दाने ख़त्म हो गए बल्कि पूरी ज़िन्दगी आप का बदन भी ख़ुश्बू से महकता रहा।(3)

बसरा के फ़ारूक़ी गवर्नर

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुत़्बा बिन क़तादा सदूसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुत़्बा बिन क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तअ़ल्लुक़ क़बीलए "सदूस" से था, इसी वज्ह से आप को "सदूसी" कहा जाता था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा के गवर्नर रहे हैं।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बसरा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था।(5)

---

1. ......الاستیعاب، مثنی بن حارثۃ۔۔۔الخ، ج۴، ص۱۹۔
2. ......اسد الغابۃ، ابو عبید بن مسعود، ج۶، ص۲۱۷۔
3. ......معجم صغیر، من اسمہ محمد، ص۳۸، حدیث:۹۸، الکامل فی التاریخ، ذکر فتح آذربیجان، ج۲، ص۴۲۹۔
4. ......الاصابۃ، قطبۃ بن قتادۃ، ج۵، ص۳۳۹، الرقم:۷۱۳۵۔
5. ......اسد الغابۃ، شریح بن عامر، ج۲، ص۵۹۷۔

www.dawateislami.net

कूफ़ा के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ निहायत बहादुर सहाबी हैं, आप का शुमार हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के खुसूसी मुहाफ़िज़ीन में होता है, अ़हदे रिसालत में आप कातिब थे। अ़हदे फ़ारूक़ी में आप के सबब क़ादिसिया मदाइन और मुल्के फ़ारिस के कई शहर फ़त्ह हुवे। हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म ने इस त़रह़ की बहुत सी खुसूसिय्यात के पेशे नज़र कूफ़ा की गवर्नरी आप के सिपुर्द कर दी नीज़ आप ने ही कूफ़ा की बुन्याद रखी।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ अल्लाह عزَّوجلَّ की खुफ़्या तदबीर से हर वक़्त डरने वाले, शर्मो ह़या के पैकर, त़हारत व पाकीज़गी का ख़ास ख़याल रखने वाले, नफ़्ली इ़बादात का एहतिमाम फ़रमाने वाले और बहुत ही बहादुर शख़्स थे। खुश अख़्लाक़ी, मिलनसारी और मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही जैसी आ'ला सिफ़ात के मालिक थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का अस्ल नाम "अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस" और कुन्यत "अबू मूसा" है और इसी से मश्हूर हुवे। अ़हदे रिसालत में आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ज़िबैद व अ़दन और यमन के साह़िली अ़लाक़ों के आ़मिल थे। दौरे फ़ारूक़ी में कूफ़ा और बसरा के गवर्नर रहे।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का शुमार अव्वलीन मुसलमानों में होता है। आप के वालिदैन को राहे खुदा में बहुत तकालीफ़ दी गईं। आप के वालिदैन को सब से पहले "शहीदे इस्लाम" होने का शरफ़ ह़ासिल है। जंगे यमामा में शिर्कत की और उसी जंग में आप का कान कट गया। आप और ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رضی اللہ تعالٰی عنہ एक साथ इस्लाम लाए थे। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप को "अत्त़य्यिबुल मुत़य्यिबु" (या'नी खुद भी पाकीज़ा और दूसरों को पाकीज़ा करने वाले) का

---

1 ....मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 89 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ" का मुत़ालआ़ कीजिये।

2 ......تہذیب الاسماء، ابوموسی الاشعری، ج ۲، ص ۵۴۵۔

www.dawateislami.net

लक़ब अ़ता फ़रमाया । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था ।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन अबुल जा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुव्वते फ़ैसला की पुख़्तगी को देखते हुवे आप को कूफ़ा का क़ाज़ी बना दिया ।(2)

कस्कर के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "कस्कर" का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था ।(3)

उ़मान के फ़ारूक़ी गवर्नर

हज़रते सय्यिदुना बिलाल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उ़मान का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया था ।(4)

मुल्के शाम के फ़ारूक़ी कमान्डर

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही मुत्तक़ी परहेज़गार क़त्ई जन्नती सह़ाबी थे, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को मुल्के शाम की तमाम जंगों का कमान्डरे आ'ज़म बनाया था, नीज़ जो जो अ़लाक़े फ़त्ह़ होते थे, आप ख़ुद उन अ़लाक़ों में मुख़्तलिफ़ लोगों को ह़ाकिम मुक़र्रर करते थे ।(5)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......تهذيب الاسماء، عمار بن ياسر، ج ٢، ص ٣٥٢، معرفة الصحابة، عمار بن ياسر، ج ٣، ص ٤٥١۔

2 ......جامع الاصول فى احاديث الرسول، عروة بن الجعد، ج ١٣، ص ٣١٨، الرقم: ١٥٢٠۔

3 ......حلية الاولياء، سفيان بن عيينة، ج ٧، ص ٣٥١۔

4 ......الاصابة، بلال الانصارى، ج ١، ص ٤٥٦، الرقم: ٧٣٩۔

5 ....मज़ीद तफ़्सील के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 60 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ सूबों और शहरों पर मुक़र्रर फ़ारूक़ी गवर्नरों का चार्ट

नम्बर शुमार	गवर्नर का नाम	सूबा या शहर	दीगर तफ़्सील
1	सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	मदीनए मुनव्वरा	नाइब अमीरुल मोमिनीन
2	सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم	मदीनए मुनव्वरा	नाइब अमीरुल मोमिनीन ब मुताबिक़ बा'ज़ रिवायात
3	सय्यिदुना कुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर बिन जुदआ़न तमीमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	मक्कए मुकर्रमा	---------
4	सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	मक्कए मुकर्रमा	सय्यिदुना कुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर के बा'द
5	सय्यिदुना ख़ालिद बिन आस बिन हिशाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	मक्कए मुकर्रमा	सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस के बा'द
6	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	ताइफ़	ताइफ़ फिर बहरैन फिर उ़मान
7	सय्यिदुना उ़त्बा बिन अबू सुफ़्यान उमवी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	ताइफ़	---------
8	सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	ताइफ़	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आस के बा'द
9	सय्यिदुना अ़ला बिन हज़रमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	बहरैन	---------
10	सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	बहरैन	---------
11	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	बहरैन	---------
12	सय्यिदुना कुदामा बिन मज़ऊ़न जमही رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	बहरैन	---------
13	सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	यमन	बा'ज़ अ़लाक़ों के गवर्नर
14	सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू रबीआ़ मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ	यमन	बा'ज़ अ़लाक़ों के गवर्नर

www.dawateislami.net

नम्बर शुमार	गवर्नर का नाम	सूबा या शहर	दीगर तफ़्सील
15	सय्यिदुना अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ	फ़िलिस्तीन	---------
16	सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ	फ़िलिस्तीन	---------
17	सय्यिदुना अल्क़मा बिन मुजज़्ज़िर मुदलिज्जी رضی اللہ عنہ	फ़िलिस्तीन	---------
18	सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ عنہ	फ़िलिस्तीन	---------
19	सय्यिदुना अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ	मिस्र	मिस्र की फ़त्ह के बा'द मुक़र्रर हुवे।
20	सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ	दिमश्क़	---------
21	सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ عنہ	दिमश्क़	सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल के बा'द
22	सय्यिदुना मुआविया बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ عنہ	दिमश्क़	सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान के बा'द
23	सय्यिदुना अल्क़मा बिन उलासा رضی اللہ عنہ	हौरान	---------
24	सय्यिदुना अल्क़मा बिन हकीम رضی اللہ عنہ	रमला	---------
25	सय्यिदुना उबादा बिन सामित رضی اللہ عنہ	हिम्स	---------
26	सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رضی اللہ عنہ	हिम्स	---------
27	सय्यिदुना सईद बिन आमिर बिन हुज़ैम رضی اللہ عنہ	हिम्स	सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम के बा'द
28	सय्यिदुना उमैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ عنہ	हिम्स	सय्यिदुना सईद बिन आमिर बिन हुज़ैम के बा'द
29	सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رضی اللہ عنہ	शाम	---------
30	सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رضی اللہ عنہ	शाम	---------
31	सय्यिदुना हबीब बिन मस्लमा رضی اللہ عنہ	अल जज़ीरा	---------

www.dawateislami.net

नम्बर शुमार	गवर्नर का नाम	सूबा या शहर	दीगर तफ़्सील
32	सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा शैबानी رضی اللہ تعالٰی عنہ	इराक़	---------
33	सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ	इराक़	---------
34	सय्यिदुना उ़त्बा बिन फ़रक़द सुलमी رضی اللہ تعالٰی عنہ	इराक़	---------
35	सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ	बसरा	---------
36	सय्यिदुना कुत़्बा बिन क़तादा رضی اللہ تعالٰی عنہ	बसरा	---------
37	सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رضی اللہ تعالٰی عنہ	बसरा	---------
38	सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ बिन आ़मिर رضی اللہ تعالٰی عنہ	बसरा	---------
39	सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़्बा رضی اللہ تعالٰی عنہ	बसरा	बा'दे अज़ां कूफ़ा के गवर्नर मुक़र्रर हुवे
40	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ	कूफ़ा	---------
41	सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ	कूफ़ा	---------
42	सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शुअ़्बा رضی اللہ تعالٰی عنہ	कूफ़ा	---------
43	सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رضی اللہ تعالٰی عنہ	कस्कर	---------
44	सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رضی اللہ تعالٰی عنہ	कस्कर	---------
45	सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ	उ़मान	---------
46	सय्यिदुना बिलाल अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ	उ़मान	---------
47	सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ	मदाइन	---------

चौदहवां बाब

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात

इस बाब में मुलाहज़ा कीजिये.....

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी की दाख़िली ता'मीरात, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में गि़लाफ़े का'बा की तब्दीली

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मसाजिद की ता'मीर, दीनी ता'लीमो तरबिय्यत वाली मसाजिद

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मक़ामे इब्राहीम की तब्दीली

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ख़ारिजी ता'मीरात, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में दीवान की ता'मीर

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में बैतुल माल का क़ियाम

....मुसाफ़िरों के लिये पानी की सबीलें

....मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर, मुख़्तलिफ़ नह्रों की खुदाई

....नह्री व दरयाई रास्तों पर पुलों की ता'मीर

....मुख़्तलिफ़ शहरों की आबादकारी, अ़ह्दे फ़ारूक़ी और मुल्की ख़ज़ाने

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ज़कात की वुसूली, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जिज़्ये की वुसूली

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ख़िराज की वुसूली, अ़ह्दे फ़ारूक़ी में उ़शूर की वुसूली

....माले फ़ै और माले ग़नीमत की वुसूली

....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ज़रई व आबपाशी का निज़ाम

....

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ता'मीरात

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में कई त़रह़ की ता'मीरात हुईं, बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ फ़लाहो बहबूद से है कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़रूरत मह़सूस की, कि अ़वाम की फ़लाहो बहबूद के लिये फ़ुलां फ़ुलां ता'मीरात होनी चाहिये, नीज़ बा'ज़ का तअ़ल्लुक़ शहरों के साथ है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में से कई एक शहरों को आबाद फ़रमाया।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त और इस में होने वाली ता'मीरात व तौसीआ़त को निहायत ही इजमाली अन्दाज़ में यूं बयान फ़रमाया है : "जब ख़िलाफ़त ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म के सिपुर्द हुई तो आप ने सियासत को इस त़रह़ बेहतर अन्दाज़ में निभाया कि किसी ग़ैरे नबी से ऐसा मुमकिन न था अगर अ़क़्ले सलीम को उमूरे ख़िलाफ़त में बरूए कार लाया जाए तो मह़सूस होगा कि अम्बिया की ख़िलाफ़त का काम इन से बेहतर निभाया नहीं जा सकता क्यूंकि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन दो मुआ़मलात की त़रफ़ बहुत ही ज़ियादा तवज्जोह देते थे उन में से एक ता'लीमे इ़ल्म है और फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मसाइल में खोद कुरैद कर के और निहायत ही मेह़नत व कोशिश के साथ किताबो सुन्नत, इजमाअ़ व क़ियास की तरतीब को क़ाइम फ़रमा कर तह़रीफ़ के तमाम रास्ते बन्द कर दिये, चुनान्चे, तमाम सह़ाबा ने इस बात की गवाही दी है कि वोह अपने दौर में सब से ज़ियादा आ़लिम थे। और दूसरा मुआ़मला जिहाद का था फ़ारूक़े आ'ज़म ने इस मुआ़मले को इस त़रह़ निभाया कि इस से बेहतर तसव्वुर नहीं किया जा सकता। याफ़ेई कहते हैं कि 14 हिजरी में दिमश्क़ फ़त्ह़ हो गया.....इलख़ और रौज़तुल अह़बाब में है कि फ़ारूक़े आ'ज़म के दौर में एक हज़ार छत्तीस(1036) शहर मअ़ मज़ाफ़ात फ़त्ह़ हुवे, चार हज़ार(4000) मसाजिद की ता'मीर हुई, चार हज़ार(4000) कनीसे तबाह किये गए, एक हज़ार नौ सौ(1900) मिम्बर तय्यार हुवे।"[1]

इस बाब में वोह तमाम ता'मीरात बयान की जाएंगी जो अ़ह्दे फ़ारूक़ी में हुईं अलबत्ता इन ता'मीरात को हम ने दो अबवाब में तक़्सीम किया है :

(1) दाख़िली ता'मीरात। (2) ख़ारिजी ता'मीरात।

1....फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 559

अ़हदे फ़ारूक़ी की दाख़िली ता'मीरात

मस्जिदे नबवी की तौसीअ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त की सब से अहम ता'मीरात मस्जिदे नबवी और मस्जिदे ह़राम की तौसीआ़त हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों में कई त़रह़ से वुस्अ़त फ़रमाई, इस की सब से बड़ी वज्ह येह थी कि अ़हदे नबवी व अ़हदे सिद्दीक़ी में इन का मुकम्मल रक़्बा नमाज़ियों को किफ़ायत करता था लेकिन अ़हदे फ़ारूक़ी में जब फ़ुतूह़ात के सबब मुसलमानों की कसरत हुई तो इस की वुस्अ़त की ह़ाजत हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ फ़रमाई और इस में कंकरियों का फ़र्श बिछा कर इसे पक्का किया। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं :

هَدَمَ الْمَسْجِدَ النَّبَوِيَّ، وَزَادَفِيْهِ وَوَسَّعَهُ وَفَرَّشَهُ بِالْحَصْبَاء "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी की नए सिरे से ता'मीर की और उस के रक़्बे में इज़ाफ़ा किया, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे नबवी के फ़र्श को पक्का करवाने के लिये वहां बजरी बिछाई।"(1)

अ़हदे नबवी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सिने हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में खुद अपने मुबारक हाथों से मस्जिदे नबवी की बुन्याद रखी और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुआ़वनत से इस की ता'मीर फ़रमाई। मस्जिद की लम्बाई 70 हाथ, चौड़ाई 60 हाथ थी जो तक़रीबन 30×35 मीटर है। जिस का रक़्बा एक हज़ार पचास मुरब्बअ़ मीटर है। छत की बुलन्दी पांच हाथ, बुन्यादें पथ्थर की, दीवारें कच्ची ईंटों की, सुतून खजूर के तनों के और छत खजूर की शाख़ों की बनाई गई। मस्जिद के तीन दरवाज़े थे, एक मस्जिद की जुनूबी जानिब जिसे तह़वीले क़िब्ला के बा'द बन्द कर दिया गया, एक शुमाली जानिब जब कि दूसरे दो दरवाज़ों में से एक बाबुर्रह़मत और दूसरा बाबे जिब्रील था, मस्जिद का दालान तीन सफ़ों पर मुश्तमिल और बाक़ी सेह़्न था। ग़ज़्वए ख़ैबर से वापसी पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी की चौड़ाई में बीस

(1) ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۹۔

www.dawateislami.net

मीटर और लम्बाई में पन्दरह मीटर इज़ाफ़ा फ़रमाया जिस से मस्जिद मुरब्बअ़ हो गई, अब उस की पैमाइश 50×50 मीटर हो गई। और कुल रक़्बा 2500 मुरब्बअ़ मीटर हो गया।(1)

अ़ह्दे सिद्दीक़ी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में मुख़्तलिफ़ बाग़ी व मुर्तद क़बाइल के ख़िलाफ़ जिहाद में मसरूफ़िय्यत के सबब मस्जिदे नबवी में तौसीअ़ न हो सकी।(2)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मुसलमानों की आबादी बहुत ज़ियादा हो गई तो मस्जिदे नबवी नमाज़ियों के लिये बहुत छोटी पड़ गई, लोगों ने आप की बारगाह में इस की तौसीअ़ की दरख़्वास्त की तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह न सुना होता कि हमारी मस्जिद बढ़ेगी तो मैं क़त्अ़न इस में तौसीअ़ न करता।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिने 17 हिजरी में उसे मुन्हदिम कर के नए सिरे से उस की ता'मीर की, मज़बूत़ पथ्थरों से उस की बुन्यादों और दीवारों को उस्तुवार किया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : اَنَّ الْمَسْجِدَ كَانَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَبْنِيًّا بِاللَّبِنِ وَالْجَرِيدِ "या'नी रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में मस्जिद कच्ची ईंटों और शाख़ों से बनी हुई थी। सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : وَعُمُدُهُ مِنْ خَشَبِ النَّخْلِ فَلَمْ يَزِدْ فِيهِ اَبُو بَكْرٍ شَيْئًا وَزَادَ فِيهِ عُمَرُ وَبَنَاهُ عَلَى بِنَائِهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِاللَّبِنِ وَالْجَرِيدِ وَاَعَادَ عُمُدَهُ، عُمُدَهُ خَشَبًا "या'नी अ़ह्दे नबवी में मस्जिदे नबवी के सुतून खजूर के तनों के थे, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में कोई तौसीअ़ न हुई, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तौसीअ़ फ़रमाई और साबिक़ा ता'मीर की त़रह़ ईंटों और खजूर की शाख़ों से ता'मीर की और लकड़ी के सुतून बनाए।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़िब्ले की त़रफ़ पांच मीटर, शुमाल की त़रफ़ पन्दरह मीटर और मग़रिब की जानिब

---

1 ......وفاء الوفاء، الباب الرابع فیما یتعلق۔۔۔الخ، الفصل الاول فی اخذ۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۳۳۴۔۳۳۶ ماخوذا۔

2 ......وفاء الوفاء، الباب الرابع فیما یتعلق۔۔۔الخ، الفصل الرابع عشر فی زیادة عثمان۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۵۰۰۔

www.dawateislami.net

अ़हदे रिसालत से मौजूदा तौसीए मस्जिदे नबवी तक तफ़्सीली नक़्शा

एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ मस्जिदे नबवी का मौजूदा कुल रक़्बा अ़हदे रिसालत में शहरे मदीनए मुनव्वरा के कुल रक़्बे जितना है। सीढ़ियां, बर्क़ी गुम्बद, बर्क़ी सीढ़ियां, मीनार, दरवाज़े

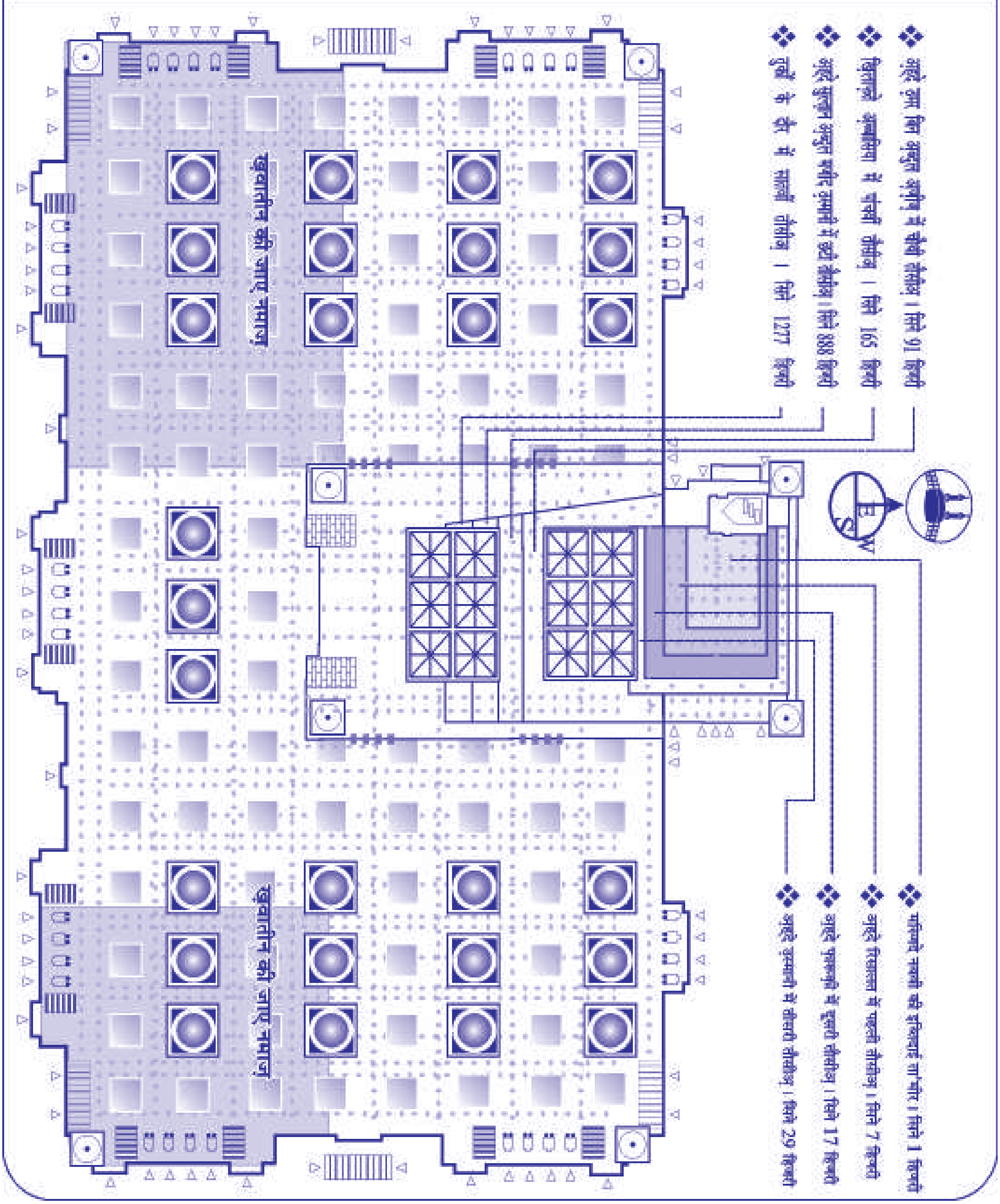

www.dawateislami.net

से दो सुतून ज़ियादा कर दिये अलबत्ता मशरिक़ की जानिब कोई तौसीअ़ न की। इस त़रह़ शुमाल से जुनूब की त़रफ़ लम्बाई सत्तर मीटर हो गई और चौड़ाई साठ मीटर हो गई, छत ग्यारह हाथ बुलन्द कर दी गई। मग़रिबी दीवार के शुरूअ़ में जुनूब की जानिब एक दरवाज़ा बाबुस्सलाम बढ़ा दिया गया नीज़ मशरिक़ी दीवार में ख़्वातीन के लिये भी अ़लाह़िदा दरवाज़ा बना दिया गया। क्यूंकि उस दौर में ख़्वातीन को मस्जिद में आने की इजाज़त थी। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वादिये अ़क़ीक़ से कंकरियां (बजरी) मंगवा कर मस्जिदे नबवी में बिछा दिया और इस के कच्चे फ़र्श को पक्का करवा दिया।[(1)]

अ़हूदे फ़ारूक़ी में मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़

मस्जिदे नबवी के मुक़ाबले में सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे ह़राम में मा'मूली तरमीम व तौसीअ़ की। ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی ने लिखा है कि "एक दफ़्आ़ जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़मरह की निय्यत से मस्जिदे ह़राम तशरीफ़ लाए तो आप ने ज़रूरत मह़सूस की, कि मस्जिदे ह़राम में भी कुछ तौसीअ़ की जाए यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ फ़रमाई।"[(2)]

तौसीअ़ में आने वाले घर

सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ फ़रमाई उस वक़्त कई एक घर उस तौसीई मन्सूबे में भी आ रहे थे आप ने वोह तमाम घर ख़रीद कर मुन्हदिम कर दिये, जिन लोगों ने बेचने से इन्कार किया उन के घर भी आप ने मुन्हदिम कर के तौसीअ़ में शामिल कर दिये और उन के घरों की क़ीमत को बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया ताकि वोह बा'द में लेना चाहें तो ले लें।"[(3)]

मस्जिदे ह़राम के चबूतरों की अज़ सरे नौ ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस साल माहे रजब में उ़मरह अदा फ़रमाया और अ़ल्लामा वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ मस्जिदे

---

(1) ......ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب فی بناء المسجد، ج ۱، ص ۱۹۴، حدیث: ۴۵۱، طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ۳، ص ۲۱۵۔
وفاء الوفاء، الباب الرابع فیما یتعلق۔۔۔الخ، الفصل الثالث عشر۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۴۹۳۔

(2) ......ازالۃ الخفاء، ج ۳، ص ۲۳۵۔

(3) ......روح المعانی، پ۱۷، الحج، تحت الآیۃ: ۲۵، الجزء: ۱۷، ص ۱۸۵، تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۹۲۔

www.dawateislami.net

अ़हदे रिसालत से मौजूदा दौर तक मस्जिदे ह़राम मअ़ तौसीअ़ का तफ़्सीली नक़्शा

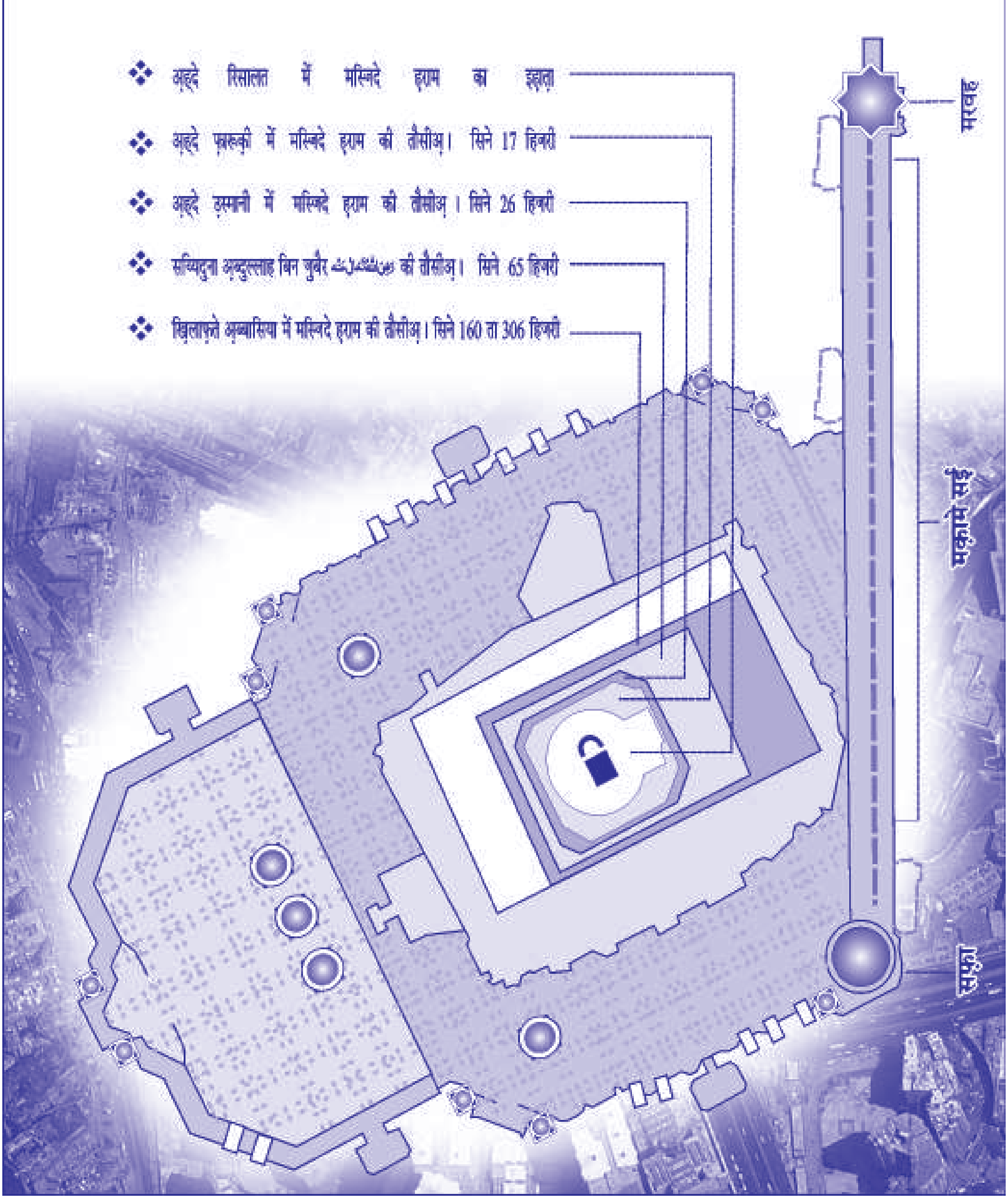

www.dawateislami.net

ह़राम के चबूतरों की भी अज़ सरे नौ ता'मीर करवाई, नीज़ इस काम के लिये आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना मख़रमा बिन नौफ़ल, ह़ज़रते सय्यिदुना अज़्हर बिन अ़ब्दे औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना हुवैति़ब और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन यरबूअ़ (رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَیۡہِم) को मुन्तख़ब फ़रमाया।(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ व बैरूनी दीवार की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले मस्जिदे ह़राम की बैरूनी दीवार ता'मीर फ़रमाई। अ़ह्दे रिसालत, अ़ह्दे सिद्दीक़ी और अ़ह्दे फ़ारूक़ी के इब्तिदाई दौर में भी मस्जिदे ह़राम के गिर्द लोगों के मकानात बने हुवे थे, इसी वज्ह से येह मस्जिद रक़्बे के लिह़ाज़ से बहुत छोटी और नमाज़ियों के लिये निहायत तंग थी। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस के गिर्द घरों को ख़रीद कर मुन्हदिम कर दिया और जिन के वोह घर थे उन तमाम लोगों को उन की क़ीमत अदा फ़रमा दी। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदे ह़राम की एक बैरूनी दीवार ता'मीर फ़रमाई जो एक आ़म इन्सान के क़द से थोड़ी छोटी थी और इसी दीवार पर चराग़ रखे जाते थे।(2)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ग़िलाफ़े का'बा की तब्दीली

ज़मानए जाहिलिय्यत में चमड़े का ग़िलाफ़े का'बा

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने का'बतुल्लाह शरीफ़ की ता'मीर फ़रमाई तो उस वक़्त उस पर कोई ग़िलाफ़ नहीं था, बा'दे अज़ां ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग उस पर चमड़े का ग़िलाफ़ चढ़ाया करते थे।(3)

सब से पहले ग़िलाफ़े का'बा चढ़ाने वाले

सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द हि़मयरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने का'बतुल्लाह शरीफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ाया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी वज्ह से उन्हें गाली देने से मन्अ़ फ़रमाया। चुनान्चे, सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۲۹۲۔

2 ......روح المعانی، پ ۱۷، الحج، تحت الآیۃ: ۲۵، الجزء: ۱۷، ص ۱۸۴۔۱۸۵۔

فتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب بنیان الکعبۃ، ج ۸، ص ۱۲۵، تحت الحدیث: ۳۸۳۰۔

3 ......ارشاد الساری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۴، ص ۱۲۸، تحت الباب: ۴۸ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अस्अ़द ह़िमयरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को गाली देने से मन्अ़ फ़रमाया और फ़रमाया : هُوَ اَوَّلُ مَنْ كَسَا الْبَيْتَ ''या'नी येही वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने का'बतुल्लाह शरीफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ाया।''(1)

रसूलुल्लाह ने यमनी ग़िलाफ़ चढ़ाया

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बतुल्लाह शरीफ़ पर यमनी ग़िलाफ़ चढ़ाया, अ़हदे सिद्दीक़ी में भी वोही ग़िलाफ़ रहा कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपने अ़हद में मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी में मसरूफ़ रहे और इन मुआ़मलात की त़रफ़ तवज्जोह कम रही।(2)

फ़ारूक़े आ'ज़म ने क़िब्त़ी ग़िलाफ़ चढ़ाया

जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه व अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه दोनों ने का'बतुल्लाह शरीफ़ को क़िब्त़ी कपड़े का ग़िलाफ़ चढ़ाया। एक क़ौल येह भी है कि सब से पहले क़िब्त़ी ग़िलाफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ही चढ़ाया।(3)

हर साल ग़िलाफ़े का'बा को तक़्सीम फ़रमा देते

बा'ज़ सीरत निगारों ने येह भी बयान किया है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हर साल ग़िलाफ़े का'बा को तब्दील कर दिया करते थे और पुराना ग़िलाफ़ ह़ाजियों में तक़्सीम कर देते थे।(4)

अ़हदे फ़ारूक़ी में मसाजिद की ता'मीर

मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में मसाजिद की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के अ़हदे ख़िलाफ़त में सब से ज़ियादा मसाजिद की ता'मीर हुई, इस की वज्ह येह थी कि जो भी अ़लाक़ा फ़त्ह़ होता आप सब

---

1 ......مسند الحارث، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۱، ص ۴۶۴، حدیث: ۳۹۰۔

2 ......إرشاد الساری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۴، ص ۱۲۸، تحت الباب: ۴۸ ماخوذا۔

3 ......إرشاد الساری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۴، ص ۱۲۸، تحت الباب: ۴۸۔

4 ......إرشاد الساری، کتاب الحج، باب کسوۃ الکعبۃ، ج ۴، ص ۱۳۰، تحت الحدیث: ۱۵۹۴۔

www.dawateislami.net

से पहले उस अ़लाके़ में मस्जिद की ता'मीर का हुक्म देते, बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता कि ज़रूरत के पेशे नज़र बा'ज़ बड़े अ़लाक़ों में कई कई मसाजिद की ता'मीर होती, यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में जितने अ़लाके़ फ़त्ह़ हुवे उस से कहीं ज़ियादा मसाजिद बनाई गईं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ अ़ह्दे फ़ारूक़ी में कमो बेश चार हज़ार मसाजिद की ता'मीर की गई।[1]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जामेअ़ मसाजिद का क़ियाम

इन तमाम मसाजिद में अक्सरिय्यत उन मसाजिद की है जिन में फ़क़त़ नमाज़ वग़ैरा इ़बादात का ही एहतिमाम होता था, इन्हें किसी और दीनी मुआ़मले के लिये इस्ति'माल नहीं किया जाता था और न ही जुमुआ़ व ईदैन की नमाज़ें इन मसाजिद में होती थीं, जब कि कई एक बड़ी मसाजिद ऐसी भी थीं, जिन्हें जामेअ़ मस्जिद की हैसिय्यत ह़ासिल थी कि तमाम लोग नमाज़े जुमुआ़ व ईदैन के लिये उन्ही मसाजिद में आते और इजतिमाई त़ौर पर जुमुआ़ व ईदैन की नमाज़ अदा करते। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जामेअ़ मसाजिद की ता'मीर का ख़ुसूसी हुक्म इरशाद फ़रमाया था। चुनान्चे, आप ने कूफ़ा के अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुल्के शाम के फ़ौजी कमान्डरों के नाम भी येह हुक्म लिखा कि "शहरों को छोड़ कर देहातों की त़रफ़ मत जाओ, हर शहर में सिर्फ़ एक जामेअ़ मस्जिद बना लो। मिस्र, बसरा और कूफ़ा वालों की त़रह़ हर क़बीले की अलग अलग जामेअ़ मसाजिद न हों।"[2]

दीनी ता'लीमो तरबिय्यत वाली मसाजिद

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की मसाजिद में वोह मसाजिद जिन्हें जामेअ़ मस्जिद की हैसिय्यत ह़ासिल थी उ़मूमन उन मसाजिद में दीगर दीनी मा'मूलात जैसे क़ुरआने पाक की दीनी ता'लीम व अख़्लाक़ी तरबिय्यत की तरकीब भी होती थी, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़र्रर कर्दा गवर्नर, क़ाज़ी, मुफ़्ती, मुदर्रिस और दीगर ज़िम्मेदार ह़ज़रात इन्ही मसाजिद में दीनी मुआ़मलात को सर अन्जाम देते थे। चुनान्चे,

जामेअ़ मस्जिद बसरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बसरा की मस्जिद को अपनी सरगर्मियों का मर्कज़ बनाया था और अपने वक़्त का एक बड़ा ह़िस्सा इल्मी मजालिस के लिये ख़ास कर दिया

1 ....फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 560।

2 ......کنز العمال، کتاب الصلاۃ، فیما یتعلق بالمسجد، الجزء: ۸، ج ۴، ص ۱۴۸، حدیث: ۲۳۰۷۰۔

www.dawateislami.net

था, सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि कोई लम्ह़ा ऐसा न गुज़रता था जिसे आप ता'लीम व तदरीस और लोगों को तब्लीग़ करने में इस्ति'माल न करते हों, जब सलाम फेर कर नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो लोगों की त़रफ़ मुंह कर लेते और उन्हें मसाइल सिखाते और क़ुरआने पाक पढ़ने का त़रीक़ा बताते। सय्यिदुना इब्ने शौज़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब सुब्ह़ की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो सफ़ों में मौजूद एक एक आदमी को क़ुरआने पाक पढ़ाते।"(1)

जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़

यहां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुक़र्रर थे, आप ने वहां के लोगों को क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीमो तरबिय्यत देने में इन्तिहाई अहम किरदार अदा किया, दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का एक बहुत ही वसीअ़ इल्मी ह़ल्क़ा लगता था जिस में कमो बेश सोलह सौ[1600] लोग ह़ाज़िर होते थे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन्हें दस दस के ह़ल्क़े बना कर उन पर एक एक निगरान मुक़र्रर फ़रमा देते, जब कोई ग़लती करता तो निगरान की त़रफ़ रुजूअ़ और निगरान आप की त़रफ़ रुजूअ़ कर के उस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करता।(2)

जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा

यहां ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه थे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कूफ़ा भेजा था। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कूफ़ा वालों को एक मक्तूब भेजा जिस में फ़रमाया : "ऐ कूफ़ा के रहने वालो ! तुम लोग अ़रब की जान हो, इस का दिमाग़ हो, मेरा तीर हो जिस के ज़रीए़ मैं अपने ऊपर इधर उधर से होने वाले ह़म्लों का दिफ़ाअ़ करता हूं, मैं तुम्हारे पास अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भेज रहा हूं, मैं ने ख़ुद उन्हें तुम्हारे लिये पसन्द किया है और ऐसे अ़ज़ीम शख़्स को तुम्हारे पास भेज कर मैं ने तुम लोगों को ख़ुद पर तरजीह़ दी है।"(3)

---

1 ......سیر اعلام النبلاء، ابوموسی الاشعری، ج ۴، ص ۵۰، الرقم: ۱۷۸۔

2 ......غایة النہایة فی طبقات القراء، باب العین، ج ۱، ص ۲۶۹ ماخوذا۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل الکوفة، ج ۷، ص ۵۵۳، حدیث: ۵۔

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मक़ामे इब्राहीम की तब्दीली

फ़ारूक़े आ'ज़म ने मताफ़ से बाहर रखवा दिया

अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में भी येह पथ्थर उसी मक़ाम पर रहा अलबत्ता अ़ह्दे फ़ारूक़ी में जब हुज्जाज की बहुत कसरत हो गई, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने त़वाफ़ करने वालों की सहूलत के लिये उसे ख़ानए का'बा की दीवार से कुछ दूर कर के बाहर रखवा दिया और आज तक वोह तक़रीबन उसी मक़ाम पर मौजूद है । इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : وَهُوَ الَّذِيْ اَخَّرَ مَقَامَ اِبْرَاهِيْمَ اِلٰى مَوْضَعِهِ الْيَوْمَ وَ كَانَ مُلْصِقًا بِالْبَيْتِ "या'नी अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही मक़ामे इब्राहीम की जगह तब्दील कर के उस जगह रखा जहां आज है वरना पहले मक़ामे इब्राहीम बैतुल्लाह शरीफ़ से मुत्तसिल था ।"(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी की ख़ारिजी ता'मीरात

दारुद्दक़ीक़ की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अनथक कोशिशों से मुख़्तलिफ़ मफ़्तूह़ा अ़लाक़ा जात के माबैन बाहमी रब्त़ भी पैदा हुवा और मुख़्तलिफ़ कारोबारी व तिजारती या ह़ज व ड़मरह वग़ैरा जैसी अहम ज़रूरिय्यात के पेशे नज़र लोग एक अ़लाक़े से दूसरे अ़लाक़े में आने जाने लगे, चूंकि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सल्त़नत काफ़ी वसीअ़ थी और इतने लम्बे सफ़र में मुसाफ़िरों को तकालीफ़ का भी सामना करना पड़ता था इसी लिये आप ने लोगों की सहूलत के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में दारुद्दक़ीक़ या'नी आटे के गोदाम क़ाइम फ़रमाए। इन गोदामों में आप आटा, सत्तू, खजूर, किश्मिश और दीगर ज़रूरिय्यात की अश्या रखते थे, यूं इन तमाम अश्या से मुसाफ़िरों की मदद की जाती ।(2)

दारुद्दक़ीक़ से एक ख़ातून की मदद

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मश्हूरो मा'रूफ़ वाक़िआ़ है कि जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात को अ़लाक़ाई दौरे के लिये बाहर निकले और वीराने में एक ख़ातून अपने बच्चों के साथ

---

1 ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۹۔

2 ......تاریخ الخلفاء، ص ۱۰۹۔

www.dawateislami.net

मिली जो उन्हें बहला रही थी। आप ने उस ख़ातून के ह़ाल पर मुत्तलअ़ होने के बा'द अपने ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथ मदीनए मुनव्वरा के इसी दारुद्दक़ीक़ में तशरीफ़ लाए थे और इसी से तमाम ज़रूरी अश्या ले कर उस ख़ातून और उस के बच्चों की मदद फ़रमाई।(1)

सरायों की ता'मीर

अह्दे फ़ारूक़ी में सब से अहम और पाकीज़ा सफ़र मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा का या मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा का होता था, क्यूंकि लोग जब मुसलमान होते थे तो ह़ज्जे बैतुल्लाह की सआ़दत ह़ासिल करते और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िरी का शरफ़ ह़ासिल करते, चूंकि येह सफ़र काफ़ी त़वील था और अ़रब के पहाड़ी अ़लाक़ों जंगलात वग़ैरा से घिरा हुवा था, येही वज्ह थी कि ह़ाजियों और ज़ाइरीन को इस सफ़र में पेश आने वाली मुश्किलात और तकालीफ़ व मसाइल के पेशे नज़र सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के दरमियान ऐसे सराए (मुसाफ़िर ख़ाने) ता'मीर करवाए जहां मुसाफ़िर आराम करते और थकन वग़ैरा दूर करने के बा'द दोबारा अपनी मन्ज़िल की जानिब रवाना हो जाते।(2)

अह्दे फ़ारूक़ी में दारुल इमारा की ता'मीर

"दारुल इमारा" से मुराद वोह इमारत है जो सरकारी ओ़ह्दे दारान के लिये ता'मीर की जाती है, अह्दे फ़ारूक़ी में भी गवर्नरों और उ़म्मालों के लिये ऐसी ता'मीरात की जाती थीं और उन्हें "दारुल इमारा" कहा जाता था। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब कूफ़ा फ़त्ह़ किया तो अव्वलन जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा बनाई और फिर उस मस्जिद के बिल्कुल सामने दारुल इमारा ता'मीर करवाया जिस में बैतुल माल भी क़ाइम फ़रमाया। एक बार बैतुल माल में किसी ने नक़्ब लगा कर माल चोरी कर लिया, सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस की तफ़्सील सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लिख कर भेज दी। सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मश्वरा दिया कि मस्जिद और दारुल इमारा इस त़रह़ कर दो कि दारुल इमारा मस्जिद के पहलू में और क़िब्ला रू हो क्यूंकि मस्जिद में सुब्ह़ो शाम लोगों का आना जाना लगा रहता है। चुनान्चे मस्जिद

---

1 ......فضائل الصحابة للامام احمد، ج ١، ص ٢٩٠۔

2 ......تاريخ الخلفاء، ص ١٠٩ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

और दारुल इमारा सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे के मुताबिक़ ता'मीर की गई। इसी त़रह़ कूफ़ा में भी एक दारुल इमारा ता'मीर किया गया जिस की तफ़्सील तारीख़ की किताबों में मौजूद है।(1)

अ़हदे फ़ारूक़ी में दीवान की ता'मीर

सब से पहले दीवान क़ाइम फ़रमाया

"**दीवान**" उस इमारत को कहा जाता है जहां सरकारी काग़ज़ात वग़ैरा रखे जाते हैं। बा'ज़ लोगों ने येह भी बयान किया है कि "दीवान" उस रजिस्टर को कहते हैं जिस में मर्दम शुमारी वग़ैरा का रेकॉर्ड रखा जाए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह पहली शख़्सिय्यत हैं जिन्हों ने सब से पहले दीवान क़ाइम फ़रमाया, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 20 सिने हिजरी में दीवान क़ाइम फ़रमाया।(2)

दीवान क़ाइम करने के लिये मुशावरत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन हुवैरिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीवान बनाने के लिये लोगों से मुशावरत की तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने येह मश्वरा दिया कि "आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जो भी माल जम्अ़ हुवा करे उसे हर साल तक़्सीम कर दिया करें और उस में से कोई शै न बचाया करें।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह मश्वरा दिया कि "हुज़ूर ! मैं देख रहा हूं कि अब हमारे पास माल बहुत ज़ियादा है, अगर लेने वालों और न लेने वालों का ह़िसाब न रखा गया तो मुझे अन्देशा है कि कहीं मुआ़मला ख़ल्त़ मल्त़ न हो जाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना वलीद बिन हिशाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा दिया कि : "हुज़ूर ! मैं ने शाम के बादशाहों को देखा है कि उन्हों ने भी दीवान क़ाइम किये हुवे हैं नीज़ उन पर मुह़ाफ़िज़ भी तअ़य्युनात किये हुवे हैं, आप भी दीवान क़ाइम फ़रमाएं और इस पर मुह़ाफ़िज़ भी तअ़य्युनात फ़रमाएं।" चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना मख़रमा बिन नौफ़ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۸۰ ماخوذا۔
2 ......تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸۔

www.dawateislami.net

हुक्म फ़रमाया कि वोह लोगों के नाम उन के मक़ामो मर्तबे के मुताबिक़ लिखना शुरूअ़ कर दें क्यूंकि येह तमाम ह़ज़रात माहिरे नसब थे। चुनान्चे, इन ह़ज़रात ने सब से पहले रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान बनू हाशिम से आग़ाज किया फिर इन के बा'द ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के ख़ानदान की तफ़्सील लिखी, फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के ख़ानदान वालों की तफ़्सील लिखी। जब येह तफ़्सील सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखी तो इरशाद फ़रमाया : "हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़राबत दारों को अव्वलीन तरजीह़ दो, सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सब से ज़ियादा क़ुर्ब रखने वालों का नाम लिखो, फिर इस के बा'द तरतीब से लिखते जाओ यहां तक कि उ़मर को उसी मक़ाम पर रखो जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे रखा है।"(1)

रजिस्टर की इब्तिदा किस के नाम से की जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़जलान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीवान मुरत्तब करने वालों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "किस के नाम से शुरूअ़ करोगे ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "आप के नाम से।" फ़रमाया : "नहीं बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से शुरूअ़ करो कि वोह हमारे इमाम व सरदार हैं, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रिश्तेदारों से, इसी त़रह़ फिर आप के क़रीबी अस्ह़ाब से।"(2)

मुख़्तलिफ़ शहरों में दीवान क़ाइम फ़रमाए

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा के इलावा दीगर अ़लाक़ों के गवर्नरों को भी येह हुक्म जारी फ़रमा दिया था कि वोह दीवान क़ाइम करें और उन के मुताबिक़ ही माल की तक़्सीम कारी करें। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मुल्के शाम का दीवान क़ाइम फ़रमाया तो उस वक़्त सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम जा चुके थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछ कर वहां का दीवान उन के इख़्तियार में दे दिया और ह़बशा का दीवान ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रुवैह़ा अ़ब्दुल्लाह बिन इब्राहीम ख़सअ़मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के

1 ......طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ج ٣، ص ٢٢٤۔

2 ......کتاب الاموال، باب فرض الاعطیة ـــ الخ، ص ٢٣٦، الرقم: ٥٤٩۔

www.dawateislami.net

ह़वाले कर दिया क्यूंकि सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे और ह़ज़रते ख़सअ़मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माबैन मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाई थी लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन्हें भी मुल्के शाम में ही रहने दें।(1)

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में बैतुल माल का क़ियाम

अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में बैतुल माल

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में जितनी भी जंगें हुई वोह तक़रीबन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के साथ हुईं और उन में इतना माले ग़नीमत वग़ैरा ह़ासिल न हुवा कि वोह तक़्सीम के बा'द भी बच जाता और उसे कहीं मह़फ़ूज़ रखने की ह़ाजत होती, इस लिये अ़ह्दे रिसालत में बैतुल माल क़ाइम करने की नौबत ही नहीं आई। अलबत्ता अ़ह्दे सिद्दीक़ी में अगर्चे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के इलावा दीगर क़ौमों से बहुत जंगें हुईं लेकिन उन में भी इतना माले ग़नीमत ह़ासिल न हुवा कि उसे जम्अ़ कर के रखा जाता, बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल क़ाइम फ़रमाया था, लेकिन जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द उसे खोला गया तो उस में एक दिरहम और एक दीनार तक नज़र न आया अलबत्ता एक बोरी मिली जिसे खोला गया तो उस में से फ़क़त़ एक दिरहम निकला।(2)

बा क़ाइदा बैतुल माल अ़ह्दे फ़ारूक़ी में क़ाइम हुवा

बा क़ाइदा बैतुल माल कि जिस में माल जम्अ़ भी किया गया हो और उस का ह़िसाबो किताब भी रखा गया वोह सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में ही क़ाइम हुवा, येही वज्ह है कि अस्ह़ाबे सियर व तारीख़ ने इसे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मन्सूब किया है।(3)

बैतुल माल क़ाइम करने की वज्ह

बैतुल माल क़ाइम करने की सब से बड़ी वज्ह येह थी कि जैसे जैसे फ़ुतूह़ात का सिलसिला वसीअ़ होता गया इसी त़रह़ माले ग़नीमत की भी कसरत होती गई, एक बार सय्यिदुना अबू

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۲۶، ص۳۴۳، الاصابة، ابورویحة الخثعمی، ج۷، ص۱۲۱، الرقم: ۹۹۱۲۔

2 ......طبقات کبری، ابوبکر الصدیق، ج۳، ص۱۶۰۔

3 ......تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸۔

www.dawateislami.net

हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास इतना माले ग़नीमत ले कर आए कि आप को खुद भी इस पर यक़ीन न आया लिहाज़ा आप ने बैतुल माल क़ाइम करने का हुक्म दिया।[1]

बैतुल माल के निगरान व मुहाफ़िज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़रीबन तमाम मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में बैतुल माल क़ाइम फ़रमाए और उन पर मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया, अलबत्ता आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल पर ऐसे अस्ह़ाब को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया जो नेक, सालेह़ और जिन की शख़्सिय्यत लोगों की नज़र में बिल्कुल पाकीज़ा हो। चुनान्चे,

कूफ़ा के बैतुल माल के निगरान

कूफ़ा के बैतुल माल पर सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया।[2]

मदीनए मुनव्वरा के बैतुल माल के निगरान

मदीनए मुनव्वरा के बैतुल माल पर तीन लोगों को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया था, एक तो सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, इन के साथ मशहूर ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मुऐ़क़ीब बिन अबू फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, येह वोह अ़ज़ीम सह़ाबी हैं जिन के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अंगुश्तरी मुबारका रहती थी, क़बूले इस्लाम के बा'द ह़बशा की हिजरते सानिया में भी शिर्कत की।[3]

बैतुल माल की इमारतें

इब्तिदा में बैतुल माल की कोई अ़लाह़िदा इमारत वग़ैरा की तरकीब नहीं थी लेकिन जब अ़लाक़ों को आबाद करने की तरकीब बनी तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से बैतुल माल को भी अ़लाह़िदा कर दिया गया, जैसा कि कूफ़ा में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब दारुल इमारा की ता'मीर की तो उस में बैतुल माल की इमारत को भी अ़लाह़िदा से

---

1 ......سنن کبری، کتاب قسم الفی والغنیمة، باب التفضیل علی۔۔۔الخ، ج۶، ص ۵۶۹، حدیث: ۱۲۹۹۶۔

2 ......مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود، ج ۲، ص ۱۸۳، حدیث: ۴۳۸۵ماخوذا۔

3 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزکاة، ماقالوا۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۷۵، حدیث: ۴، جامع الاصول، معیقیب، ج ۱۴، ص ۱۳۳، الرقم: ۲۴۱۲۔

www.dawateislami.net

ता'मीर फ़रमाया, बा'दे अज़ां बैतुल माल की इमारत में नक़्ब लगा कर चोरी की गई तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की ता'मीर इस तर्ज़ पर करवाई कि मस्जिद की दीवार से मुत्तसिल बैतुल माल बनाया गया जिस से बैतुल माल चोरी से मह़फ़ूज़ हो गया।(1)

बच जाने वाला माल दारुल ख़िलाफ़ा भेज दिया जाता

मदीनए मुनव्वरा के इलावा जिन अ़लाक़ों में बैतुल माल क़ाइम थे, उन के गवर्नरों को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से येह ख़ुसूसी हिदायत थी कि "माल जम्अ़ होने के बा'द उस से वज़ाइफ़ की अदाएगी की जाए, इस के इलावा दीगर तमाम मसारिफ़ में उस को ख़र्च किया जाए, अगर बिलफ़र्ज़ फिर भी कुछ माल बच जाए तो उसे दारुल ख़िलाफ़ा "या'नी मदीनए मुनव्वरा भेज दिया जाए।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जो माल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब रवाना किया उस में इस बात की तसरीह़ फ़रमाई।(2)

मुसाफ़िरों के लिये पानी की सबीलें

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ रास्तों में पानी की सबीलें भी तय्यार करवाईं ताकि थके मांदे मुसाफ़िर वहां से पानी पियें और अपने सफ़र को अच्छे त़रीक़े से जारी रख सकें। बा'ज़ लोगों ने इसे चश्मों से भी ता'बीर किया है लेकिन फ़ी ज़माना उन्हें सबीलों से ता'बीर करना ज़ियादा मुनासिब है। उ़मूमन मुसाफ़िर, खाने का सामान साथ रख लेते हैं लेकिन उन्हें सब से ज़ियादा पानी की ह़ाजत होती है अगर रास्ते में वक़्फ़े वक़्फ़े से मुसाफ़िरों को पानी मिलता रहे तो उन का सफ़र काफ़ी अच्छा गुज़रता है, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अम्र से तमाम मुसाफ़िरों की एक बड़ी मुश्किल दूर हो गई।

मालिकान को घर बनाने की मशरूत़ इजाज़त

अव्वलन इन सबीलों के क़रीब कोई आबादी वग़ैरा न थी लेकिन बा'द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन सबीलों के मालिकान को वहां घर बनाने की भी इजाज़त अ़त़ा फ़रमा दी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۸۰۔

2 ......کنز العمال، کتاب الخلافۃ، الترھیب عنھا، الجزء: ۵، ج ۳، ص ۳۰۲، حدیث: ۱۴۳۰۰ ماخوذا۔

कसीर बिन अ़ब्दुल्लाह मुर्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद और वोह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिने सतरह[17] हिजरी में मक्कए मुकर्रमा उ़मरह करने के लिये तशरीफ़ लाए तो रास्ते में सबीलों के मालिकान से मुलाक़ात हुई, उन्हों ने इन सबीलों के क़रीब मकानात बनाने की इजाज़त मांगी ह़ालांकि पहले वहां मकानात नहीं थे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें इजाज़त दे दी लेकिन इरशाद फ़रमाया : اِنَّ ابْنَ السَّبِيْلِ اَحَقُّ بِالظِّلِّ وَالْمَاءِ ''या'नी बिलाशुबा मुसाफ़िर साए और पानी के ज़ियादा ह़क़दार हैं।''(1)

क़ैदख़ानों की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ैदख़ाने भी बनवाए, क्यूंकि येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ है कि जैसे जैसे आबादी का तनासुब बढ़ेगा वैसे ही लोगों के दरमियान अच्छे बुरे अफ़्आ़ल भी बढ़ेंगे, यक़ीनन इन की रोक थाम के लिये नीज़ मुजरिमों को क़ैद की सज़ाएं देने के लिये क़ैदख़ानों का क़ियाम बहुत ज़रूरी था, इस से पहले अ़रब में जेलख़ानों का क़त़अ़न रवाज न था। चुनान्चे, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म पर उन तमाम अ़लाक़ों में क़ैद ख़ाने बनाए गए जहां मुजरिमों को क़ैद किया जाता था, अव्वलन मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घर चार हज़ार दिरहम में ख़रीद कर उसे क़ैदख़ाना बनाया गया। बसरा का क़ैदख़ाना ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बनवाया था लेकिन उस की कोई अ़लाह़िदा से इमारत नहीं थी बल्कि वोह उसी इमारत में शामिल था जो दारुल इमारा के लिये ता'मीर की गई थी।(2)

मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि नए नए मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों का पुराने अ़लाक़ों के साथ राबित़ा क़ाइम करने के लिये, नीज़ लोगों की आमदो रफ़्त को आसान बनाने के लिये उन के माबैन मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर का हुक्म जारी फ़रमाते, अगर पहले से बनाई हुई सड़कों की मरम्मत की ह़ाजत होती तो उन की मरम्मत का भी हुक्म देते, अलबत्ता सड़कें बनाने या उन की मरम्मत करने का काम उ़मूमन मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों के लोगों से ही

1 ......البداية والنهاية، ج۵، ص۱۵۵، تاریخ طبری، ج۲، ص۲۹۴۔

2 ......عمدة القاری، کتاب الخصومات، باب الربط والحبس فی الحرم، ج۹، ص۱۵۱ ملخصا، معجم البلدان، ج۱، ص۳۴۲ماخوذا۔

www.dawateislami.net

लिया जाता था येही वज्ह है कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के जंगी सिपह सालार किसी अ़लाक़े को फ़त्ह़ करते या किसी अ़लाक़े से अम्न का मुआ़हदा करते तो सड़कों की ता'मीर व दुरुस्ती को ज़रूर शामिल करते । तारीख़ में ऐसी कई मिसालें मौजूद हैं कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के मुक़र्रर कर्दा जंगी सिपह सालारों ने कुफ़्फ़ार से जिज़्या देने वाले अम्न के मुआ़हदों में सड़कों पुलों की ता'मीर और पहले से ता'मीर शुदा सड़कों की मरम्मत को मुआ़हदों में शामिल किया । चुनान्चे,

सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान के मुआ़हदे में शर्त

जब ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अह्ले "बहरज़ान" और ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अह्ले "माहे दीनार" से मुआ़हदा किया तो उस में सड़कों की दुरुस्ती का ज़िम्मा उन ही पर डाला और सड़कों की दुरुस्ती को ख़ुसूसी तौ़र पर बयान फ़रमाया, दोनों के मुआ़हदे का मज़्मून कुछ यूं था :

"अह्ले बहरज़ान मुसलमानों की जानो माल और उन की इमलाक को मह़फ़ूज़ रखने का वा'दा करते हैं, वोह किसी क़ौम पर ह़म्ला नहीं करेंगे, उन के मज़्हब और क़वानीन में किसी क़िस्म की मुदाख़लत नहीं की जाएगी, वोह जब तक सालाना जिज़्या मुस्लिम ह़ाकिमे वक़्त को अदा करते रहेंगे तो उन की ह़िफ़ाज़त की जाएगी, हर बालिग़ पर उस की हैसिय्यत के मुत़ाबिक़ उस के जानो माल का जिज़्या है, **इन तमाम बातों के साथ साथ मुसाफ़िरों की राहनुमाई और सड़कों को दुरुस्त करना भी इन की ज़िम्मेदारी है,** मुसलमानों की फ़ौज में से अगर कोई उन के पास से गुज़रे तो वोह उसे एक रात और एक दिन के लिये पनाह भी देंगे, वफ़ादार और ख़ैरख़्वाह रहेंगे, अगर उन्हों ने धोका दिया और मुआ़हदे की मुख़ालफ़त की तो हम उन से बरिय्युज़्ज़िम्मा हैं ।"(1)

सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम के मुआ़हदे में शर्त

ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अह्ले "रहा" को जो अम्न का मुआ़हदा लिख कर दिया था उस में भी सड़कों और पुलों की ता'मीर को ख़ास तौ़र पर ज़िक्र किया था, उन के मुआ़हदे का मज़्मून कुछ यूं था : "अगर तुम ने मेरे लिये शहरों के दरवाज़े खोले और येह इक़रार कर लिया है कि हर आदमी की त़रफ़ से बत़ौरे जिज़्या एक दीनार और दो मुद गेहूं दोगे तो तुम और जो तुम्हारे

(1) ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۲۸-۵۳۰۔

www.dawateislami.net

साथ हैं सब की जानो माल को अमान है, नीज़ तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि तुम भटके हुवे मुसाफ़िरों की राहनुमाई करोगे, **पुलों और सड़कों की ता'मीर भी करोगे**, और मुसलमानों के ख़ैरख़्वाह रहोगे।"[1]

सड़कों की कुशादगी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मफ़्तूहा अ़लाक़ों में से जिन अ़लाक़ों को आबाद करने का हुक्म दिया था उन में सब से अहम शहर "कूफ़ा" और "बसरा" की सड़कों की पैमाइश भी मुक़र्रर फ़रमा दी थी। चुनान्चे,

जब तमाम मुसलमानों को कूफ़ा की ता'मीर पर इत्तिफ़ाक़ हो गया तो हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबुल हय्याज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुलाया और उन्हें अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सड़कों से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब दिखाया जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह हुक्म दिया था कि "बड़ी सड़कें या तो चालीस गज़ की हों, या तीस गज़ की हों या कम अज़ कम बीस गज़ चौड़ी हों। नीज़ महल्लों की छोटी गलियां सात गज़ की हों इस से कम की न हों।"[2]

सड़कों के मुतअ़ल्लिक़ एक अहम वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में आज कल के जदीद दौर की मज़बूत़ सड़कें नहीं होती थीं बल्कि वोह सड़कें उ़मूमन इस त़र्ज़ पर बनाई जाती थीं कि सड़क के इह़ाते़ में जो भी कांटे दार झाड़ियां वग़ैरा आतीं उन्हें साफ़ कर दिया जाता, पथ्थरों को हटाया जाता और गढ़ों को भर दिया जाता जिस से वोह रास्ता इतना वाज़ेह़ हो जाता कि उस पर चलने वाला सीधा अपनी मन्ज़िल तक पहुंच जाता।

मेहमान ख़ानों की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सल्त़नत में जैसे जैसे वुस्अ़त होती गई वैसे ही मसाइल भी बढ़ते गए, ऐसे लोग जो दूर दराज़ के अ़लाक़ों से आते थे उन की रिहाइश का कोई ख़ास इन्तिज़ाम न था, इसी वज्ह से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहुत से अ़लाक़ों में मेहमान ख़ाने बनाने का हुक्म दिया जहां बाहर से

1 ......فتوح البلدان، ج ۱، ص ۲۰۶۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۷۹۔

आने वाले मेहमान हज़रात की रिहाइश की तरकीब होती । चुनान्चे, फ़ुतूहुल बलदान में है : اَمَرَ عُمَرُ اَنْ يَتَّخِذَ لِمَنْ يَّرِدُ مِنَ الْاٰفَاقِ دَاراً ''या'नी अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया कि बाहर से आने वाले लोगों के लिये मेहमान ख़ाने बनाए जाएं ।''(1)

मुख़्तलिफ़ नह्रों की खुदाई

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे मफ़्तूहा अ़लाक़े जहां पानी की क़िल्लत थी या उन्हें किसी दूर दराज़ के मक़ाम से पानी लाना पड़ता था वहां नह्रें खुदवाईं ताकि वहां के मकीनों को पानी के ह़वाले से किसी क़िस्म की कोई परेशानी न हो, छोटी छोटी बेशुमार नह्रें खुदवाईं, अलबत्ता चन्द एक ऐसी बड़ी नह्रें भी हैं जो अ़ह्दे फ़ारूक़ी में बड़े शहरों के लिये खोदी गईं, तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

बसरा वालों के लिये ''नह्रुल इजानह'' की खुदाई

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में येह नह्रुल इजानह खोदी गई, इस का सबब कुछ यूं था कि बसरा के लोगों को पानी की क़िल्लत का सामना था और उन्हें काफ़ी दूर से पानी लाना पड़ता था । चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे और शिकायत करते हुवे सारी सूरत वाज़ेह़ की, कि बसरा वालों को पानी के मुआ़मले में शदीद दुश्वारी का सामना है । अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में हुक्म दिया कि बसरा वालों के लिये दरयाए दिजला से एक नह्र खोद कर निकाली जाए ताकि उन्हें किसी क़िस्म की परेशानी न हो, लिहाज़ा दरयाए दिजला से बसरा तक 9 मील लम्बी नह्र खोदी गई और बसरा के लोगों तक पानी पहुंचाया गया । इस नह्र का अस्ल नाम ''नह्रुल इजानह'' है लेकिन इसे हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुदवाया था इसी लिये इसे ''नहरु अबी मूसा'' भी कहा जाता है ।(2)

अह्ले बसरा के लिये ''नह्रुल मलाह़ा'' की खुदाई

येह नह्रुल मलाह़ा भी शहरे बसरा ही के लिये खुदवाई गई थी, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को

1 ......فتوح البلدان، ج ۲، ص ۱۴۳۔

2 ......معجم البلدان، ج ۴، ص ۱۱۴ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

जब बसरा का वाली मुक़र्रर फ़रमाया तो उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से दरयाए दिजला से शहरे बसरा तक येह नहर खुदवाई, इसी वज्ह से इस नहर का नाम "नहरे मा'क़िल बिन यसार" है। कुतुबे सियर व तारीख़ में इस नहर का ज़िक्र बड़ी तफ़्सील से किया गया है।[1]

नहरे सा'द बिन अबी वक़्क़ास की खुदाई

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब "अम्बार" और उस के नवाही अ़लाक़ों को फ़त्ह किया तो वहां के बाशिन्दों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरख़्वास्त की, कि आप उन के लिये नहर खुदवाएं, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के लिये इस त़रह नहर खुदवाई कि उन ही में से कई लोगों को जम्अ़ किया और उन से नहर खुदवाई, सब लोग नहर खोदते हुवे एक ऐसे पहाड़ तक पहुंचे जिसे खोदना बहुत मुश्किल था इस लिये नहर को वहीं तक छोड़ दिया गया।[2]

ख़लीजे अमीरुल मोमिनीन

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जो सब से बड़ी नहर खोदी गई वोह "नहरे अमीरुल मोमिनीन" है, जिसे "ख़लीजे अमीरुल मोमिनीन" भी कहते हैं। मदीनए मुनव्वरा में जब क़ह्त़ पैदा हुवा तो सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर अ़लाक़ों के गवर्नरों को मक्तूब रवाना फ़रमाए कि वोह अह्ले मदीना की मदद करे, कई शहरों से ऊंटों पर ग़ल्ला लाद कर भेजा गया, अह्ले मदीना के लिये सब से बड़ी इमदाद मिस्र से हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भेजी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ल्ले से भरे हुवे ऊंट इतनी ता'दाद में भेजे कि इन तमाम ऊंटों की क़ित़ार का पहला ऊंट मदीनए मुनव्वरा में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास और आख़िरी ऊंट मिस्र में उन के पास था, बीच का पूरा रास्ता ग़ल्ले से लदे हुवे ऊंटों से भरा हुवा था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुश हो कर सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने दीगर ज़िम्मेदारों के साथ मदीनए मुनव्वरा त़लब फ़रमाया, उन्हें ए'ज़ाज़ व इकराम से नवाज़ा और फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़म्र बिन आ़स ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मिस्र को मुसलमानों के हाथ फ़त्ह फ़रमाया और इस को अह्ले मिस्र और तमाम मुसलमानों के लिये कुव्वत का ज़रीआ़ बनाया, मैं ने येह सोचा है कि अह्ले ह़रमैन पर आसानी पैदा करूं और उन पर इस

1 ......تاریخ ابن عساکر، ج۵۸، ص۱۵۵، طبقات کبری، معقل بن یسار، ج۷، ص۱۰، معجم البلدان، ج۴، ص۱۷۴۔

2 ......معجم البلدان، ج۴، ص۱۵۴۔

www.dawateislami.net

त़रह़ वुस्अ़त दूं कि दरयाए नील से एक लम्बी नह्र खुदवाऊं जिस के ज़रीए़ मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के लोगों तक ग़ल्ला वग़ैरा बा आसानी पहुंचाया जाए।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वापस जा कर अपने साथियों से मश्वरा किया और जब इत्तिफ़ाक़े राए हो गया तो इस का काम शुरूअ़ कर दिया गया, निहायत ही क़लील अ़र्से में इस नह्र की खुदाई कर दी गई, चूंकि येह नह्र अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरे से खोदी गई थी इस लिये इस का नाम "ख़लीजे अमीरुल मोमिनीन" रखा गया। दरयाए नील से बह़रे क़ुल्ज़ुम तक इस नह्र के ज़रीए़ मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के लोगों के लिये खाने का सामान वग़ैरा पहुंचाया जाता रहा। येह नह्र सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दौर तक बाक़ी रही बा'द में ह़िफ़ाज़त न होने के सबब बन्द हो गई।(1)

नह्री व दरयाई रास्तों पर पुलों की ता'मीर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में जो नहरें खुदवाई गईं उन के ऊपर पुलों की ता'मीर भी की जाती थी, येह पुल भी बिऐ़निही आज कल के बर्फ़ानी अ़लाक़ों के उन हवाई और कच्चे पुलों की त़रह़ होते हैं जिन्हें पहाड़ी दरयाओं के ऊपर बनाया जाता है। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वोह गवर्नर जिन्हों ने आप के हुक्म से नहरों की खुदाई की वोह इन नहरों पर पुलों की ता'मीर की तरकीब भी बनाते थे।

बह़री रास्ते पर पुल बनाने की इजाज़त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में मदीनए मुनव्वरा और इस के अत़राफ़ के अ़लाक़ों में शदीद क़ह़त़ साली हुई इस साल को "आ़मुर्रमादह" का नाम दिया गया। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीगर अ़लाक़ों के गवर्नरों को इमदाद का हुक्म फ़रमाया, चुनान्चे, कई अ़लाक़ों से इमदाद भेजी गई। दीगर अ़लाक़ों से इमदाद ऊंटों के ज़रीए़ मदीनए मुनव्वरा में पहुंचाई जाती थी, यक़ीनन येह काम बहुत तक्लीफ़ देह था और इसे लम्बे अ़र्से तक जारी रखना इन्तिहाई मुश्किल अम्र था, इस लिये मिस्र के गवर्नर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक मक्तूब लिखा जिस का मज़मून कुछ यूं था : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हुज़ूर नबिय्ये करीम,

---

(1)......كنز العمال، كتاب الفضائل، وقائعة عام الرمادة، الجزء: ١٢، ج٦، ص٢٧٥، الحديث: ٣٥٩٠١۔

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत के ज़माने में शामी समन्दर या'नी बह़ीरए कुल्ज़ुम को खोद कर बह़्रे मग़्रिब के साथ मिला दिया गया था, मगर रूमियों और क़िब्त़ियों ने इस रास्ते को बन्द कर दिया। अगर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه चाहते हैं कि मदीनए मुनव्वरा में ग़ल्ले का भाव मिस्र के ग़ल्ले के भाव के बराबर रहे तो आप मुझे इस बात की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं कि मैं दोबारा इस बह़्री रास्ते को खुदवा कर इस पर पुल बनवाऊं।" सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : اِفْعَلْ وَعَجِّلْ ذٰلِكَ "या'नी येह काम ज़रूर करो और जल्दी करो।" सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक शुबा ज़ाहिर करते हुवे अ़र्ज़ किया कि "हुज़ूर ! इस त़रह़ येह भी हो सकता है कि मिस्र का ख़िराज कम हो जाए।" (या'नी मिस्र से ह़ासिल होने वाली आमदनी कम हो सकती है।) लेकिन सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दोबारा वोही हुक्म दिया और ताकीद फ़रमाई कि "येह काम जल्द अज़ जल्द सर अन्जाम दो।" चुनान्चे, सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हुक्म की ता'मील करते हुवे वैसा ही किया और उस बह़्री रास्ते को दोबारा खोद कर उस पर पुल ता'मीर करवा दिया, जिस के नतीजे में न सिर्फ़ मदीनए मुनव्वरा के ग़ल्ले के भाव मिस्र की त़रह़ हो गए बल्कि मदीनए मुनव्वरा की बरकत से मिस्र की खुशह़ाली और तरक़्क़ी में भी इज़ाफ़ा हो गया, अह्ले मदीना ने दोबारा कभी भी क़ह़्त़ साली न देखी। अलबत्ता सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत के बा'द येह रास्ता दोबारा बन्द हो गया।(1)

मुआ़हदों में पुलों की ता'मीर की शर्त़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मुख़्तलिफ़ क़ौमों से जो मुआ़हदे होते थे उन में दीगर शराइत़ के साथ साथ पुलों की ता'मीर की शर्त़ भी होती थी, जैसा कि सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जब शामियों से मुआ़हदा किया तो इस में एक शर्त़ येह भी रखी कि वोह लोग अपने ही माल से नह्रों पर पुलों की ता'मीर भी करेंगे।(2)

मुख़्तलिफ़ शहरों की आबादकारी

शहरे बसरा की आबादकारी

कंकरीली और पथरीली ज़मीन को "बसरा" कहते हैं। बसरा शहर दरयाए दिजला व नह्रे फ़ुरात के किनारे वाके़अ़ है इसे "शत्तुल अ़रब" भी कहा जाता है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۵۰۹۔

2 ......کتاب الخراج، فصل فی الکنائس والبیع والصلبان، ص۱۳۸۔

www.dawateislami.net

उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिने 14 हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बसरा के अ़लाक़े की त़रफ़ भेजा और हुक्म दिया कि वोह अपने साथियों के साथ वहां क़ियाम करें और अह्ले फ़ारिस की फ़ौज को मदाइन और इस के गिर्दो नवाह़ में आने से रोकें। शहरे बसरा भी इसी त़रह़ बसाया गया जिस त़रह़ कूफ़ा बसाया गया था, कूफ़ा और बसरा दोनों की एक साथ ता'मीर की गई और दोनों का नक़्शा एक ही त़रह़ का था।(1)

शहरे कूफ़ा की आबादकारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में कूफ़ा शहर बसाया गया। ''जलूला'' और ''ह़ुलवान'' की फ़त्ह़ के बा'द इस्लामी लश्कर ने रहने के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों का दौरा किया लेकिन उन्हें कोई अ़लाक़ा रास न आया। इस बात की शिकायत उन्हों ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हिदायत की, कि इस्लामी लश्कर जो कि तक़रीबन अ़रबों पर मुश्तमिल था इस के लिये किसी मौज़ूं जगह की तलाश करो, चुनान्चे, उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों को भेजा, बिल आख़िर दोनों ह़ज़रात मुख़्तलिफ़ शहरों में घूमते हुवे कूफ़ा आए और इस अ़लाक़े को पसन्द कर लिया। ''कूफ़ा'' दर अस्ल उस अ़लाक़े को कहते हैं जहां सुर्ख़ रेत और संगरेज़े कसरत से पाए जाते हों। बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम तर इस्लामी लश्कर के साथ मुह़र्रमुल ह़राम की सतरह तारीख़ सिने 17 हिजरी में कूफ़ा के मक़ाम पर मुक़ीम हुवे। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ा बनने के तीन साल और आठ महीने के बा'द कूफ़ा आबाद हुवा।(2)

मुसलमानों को ख़ुशगवार मक़ाम की सैर का हुक्म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों को हुक्म दिया कि हर मौसिमे बहार में मुसलमानों को ख़ुश गवार मक़ाम पर ले जाया करें और हर साल मौसिमे

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۳۸۔

2 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۷۔

www.dawateislami.net

बहार में उन की मदद भी किया करें, नीज़ हर साल मुह़र्रमुल ह़राम के महीने में उन्हें अ़तिय्यात भी दिया करें। हर साल ग़ल्ले की फ़स्ल आने पर उन्हें माले ग़नीमत का ह़िस्सा भी दिया करें।[1]

कूफ़ा में सब से पहले मस्जिद बनाई गई

कूफ़ा में जिस चीज़ का सब से पहले संगे बुन्याद रखा गया था वोह कूफ़ा की मस्जिद थी जो ऐ़न बाज़ार में वाक़ेअ़ थी। मस्जिद, दारुल इमारा और आबादी की जगह की ता'यीन के लिये एक बहुत बड़ा तीर अन्दाज़ जिस का निशाना दूर तक जा सकता था दरमियान में खड़ा हो गया उस ने दाएं, बाएं आगे पीछे चारों त़रफ़ तीर फैंका, जहां तक तीर गया उस से आगे मकानात की ता'मीर शुरूअ़ कर दी गई, ऐ़न मस्जिद से मुत्तसिल दारुल इमारा ता'मीर किया गया।[2]

शहरे कूफ़ा में बैतुल माल का क़ियाम

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कूफ़ा में जो दारुल इमारा क़ाइम फ़रमाया था उसी से मुत्तसिल आप की रिहाइश भी थी और दारुल इमारा के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल भी क़ाइम फ़रमाया, बा'द में किसी ने उस में नक़्ब लगा कर चोरी कर ली तो सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैतुल माल को इस त़रह़ ता'मीर करने का हुक्म दिया कि उस की पुश्त पर मस्जिद आ गई और यूं बैतुल माल चोरी से मह़फ़ूज़ हो गया।[3]

शहरे कूफ़ा के बाज़ार का क़ियाम

कूफ़ा में जो बाज़ार बनाया गया उस में कोई इमारत नहीं थी और न ही निशानात मुक़र्रर थे क्यूंकि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से हिदायत थी कि बाज़ार मसाजिद की त़रह़ हैं, जो सब से पहले किसी ठिकाने पर पहुंच जाए उस का वोही ह़क़दार है जब तक वोह अपना सामान बेच न डाले या अपनी जगह तब्दील न कर ले।[4]

अह्ले बसरा व अह्ले कूफ़ा के मकानात की ता'मीर

अह्ले बसरा व अह्ले कूफ़ा दोनों ने अपने अपने अ़लाक़ों में सरकन्डों से मकानात ता'मीर करने की सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इजाज़त ह़ासिल की और फिर वहां कच्चे घर ता'मीर कर लिये।[5]

---

1 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۸۔
2 ......معجم البلدان، ج۴، ص۱۲۱۔
3 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۸۰۔
4 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۸۰۔
5 ......تاریخ طبری، ج۲، ص۴۷۹۔

www.dawateislami.net

पक्के मकानात की ता'मीर करने की इजाज़त

बा'द में दोनों शहरों में एक भयानक आग लगी जिस से अक्सर घर जल कर ख़ाकिस्तर हो गए तो सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ईंटों और गारे के पक्के मकानात ता'मीर करने की इजाज़त त़लब की, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस शर्त़ पर इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई कि कोई शख़्स तीन घरों से ज़ियादा घर न बनाए और न ही कोई शख़्स लम्बी इ़मारत बनाए।[1]

घरों की ता'मीर में ए'तिदाल

कूफ़ा को बसाने का काम सय्यिदुना अबुल हय्याज बिन मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सिपुर्द था और अह्ले बसरा को बसाने का काम सय्यिदुना अबुल जर्बा आ़सिम बिन दलफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सिपुर्द था, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम मुसलमानों को येह हिदायत फ़रमाई कि वोह मो'तदिल अन्दाज़ से ज़ियादा इ़मारत को बुलन्द न करें, जब लोगों ने इस की वज़ाह़त मांगी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "सह़ीह़ ए'तिदाल येह है कि जिस में इसराफ़ न हो और तुम ए'तिदाल से बाहर न निकलो।"[2]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस हुक्म पर लोगों ने आप की ह़याते त़य्यिबा में भी अ़मल किया और आप के विसाल के बा'द भी अ़मल किया। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे त़ल्क़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के बारे में आता है कि उन की घर की छत बहुत छोटी थी, जब उन से वज्ह दरयाफ़्त की गई तो फ़रमाया कि सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चूंकि बुलन्द इ़मारतें बनाने से मन्अ़ फ़रमाया था इस लिये मैं ने अपने घर की छत छोटी ही रखी है।[3]

सड़कों और गलियों की ता'मीर

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल हय्याज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुलाया और उन्हें अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सड़कों के मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब दिखाया जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह हुक्म दिया था

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۷۹۔

2 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۷۹۔

3 ......الادب المفرد، باب التطاول فی البنیان، ص ۱۲۰، الحدیث: ۴۵۲۔

www.dawateislami.net

कि "बड़ी सड़कें या तो चालीस गज़ की हों, या तीस गज़ की हों या कम अज़ कम बीस गज़ चौड़ी हों । नीज़ महल्लों की छोटी गलियां सात गज़ की हों इस से कम की न हों ।"(1)

शहरे कूफ़ा में फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म

कूफ़ा शहर को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में ऐसी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत मिली कि खुद सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसे "**कन्ज़ुल ईमान**" (ईमान का ख़ज़ाना) "**जम्जमतुल अ़रब**" (अ़रबों का दिमाग़) "**रुमहुल्लाह**" (अल्लाह का नेज़ा) फ़रमाया करते थे, नीज़ आबाद होने के बा'द येह मुसलमानों का एक मज़बूत़ जंगी क़ल्आ़ बन चुका था, इस शहर की इ़ल्मी ह़ैसिय्यत येह है कि फ़िक़्ह और उ़लूमे अ़रबिय्या के बड़े बड़े अइम्मए किराम यहां पैदा हुवे ।(2)

कूफ़ा व बसरा की आबादी

पहले बसरा में दो हज़ार सिपाही आबाद हुवे जो जंगे क़ादिसिया में शरीक थे, फिर बसरा में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ पांच हज़ार अफ़राद आए, कूफ़ा में तीस हज़ार अफ़राद थे ।(3)

फ़ुस्त़ात़ की आबादकारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब इस्कन्दरया फ़त्ह़ कर लिया तो वहीं रहने का इरादा फ़रमाया लेकिन इस्कन्दरया और मदीनए मुनव्वरा के दरमियान दरयाए नील पड़ता था । सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस बात को पसन्द न फ़रमाते थे कि मदीनए मुनव्वरा और मुसलमानों के किसी शहर के माबैन दरया ह़ाइल हो क्यूंकि येह जंगी ए'तिबार से बा'ज़ सूरतों में ख़त़रनाक साबित हो सकता था, येही वज्ह है कि जब सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्कन्दरया में रहने की इजाज़त त़लब की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येही ख़दशा ज़ाहिर फ़रमाया, बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ुस्त़ात़ तशरीफ़ ले आए और कूफ़ा व बसरा की त़रह़ इसे आबाद फ़रमाया, हर हर क़बीले के लिये अलग अलग जगहें मुख़्तस कीं, जामेअ़ मस्जिद बनाने का खुसूसी एहतिमाम फ़रमाया, तक़रीबन 80 सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने मिल कर इस की सिम्ते क़िब्ला की ता'यीन

---

1 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۷۹۔

2 ......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، ماذکر فی فضل الکوفۃ، ج ۷، ص ۵۵۴، الحدیث: ۱۰۔

3 ......تاریخ طبری، ج ۲، ص ۴۹۶۔

www.dawateislami.net

फ़रमाई, येह मस्जिद 50 गज़ लम्बी और 30 गज़ चौड़ी थी, तीन त़रफ़ दरवाज़े थे जिन में से एक दारुल इमारा के बिल्कुल सामने था। सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहां एक घर अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये भी ता'मीर करवाया था, लेकिन जब सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ तवज्जोह न फ़रमाई, बा'द में उसे बाज़ार में शामिल कर दिया गया।[1]

मौसिल की आबादकारी

मौसिल बहुत ही क़दीम शहर है, येह इस्लाम से भी पहले का है, उस ज़माने में यहां ईसाई आबाद थे, सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में इसे ह़ज़रते सय्यिदुना हरसमा बिन अ़रफ़जा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आबाद किया, अ़रबों के कई मह़ल्ले यहां आबाद किये, इस शहर में भी जामेअ़ मस्जिद ता'मीर की गई।[2]

जीज़ा की आबादकारी

जीज़ा फ़ुस्त़ात़ के मग़रिबी जानिब है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्कन्दरया की फ़त्ह़ के बा'द जब फ़ुस्त़ात़ तशरीफ़ लाए तो आप ने उस अ़लाक़े में भी फ़ौज तअ़य्युनात कर दी ताकि दुश्मन को इस त़रफ़ से ह़म्ले करने का मौक़अ़ न मिल सके, जब फ़ुस्त़ात़ में मुकम्मल त़ौर पर अम्न क़ाइम हो गया तो आप ने जीज़ा में मौजूद फ़ौजियों को फ़ुस्त़ात़ में रिहाइश करने के लिये बुलाया लेकिन उन फ़ोजियों ने जीज़ा में सुकूनत को पसन्द किया तो आप ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत के बा'द फ़ौजियों को वहां रहने की इजाज़त दे दी, वहां उन की ह़िफ़ाज़त के लिये एक क़ल्अ़ा भी ता'मीर करवा दिया।[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़हदे फ़ारूक़ी और मुल्की ख़ज़ाने

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन समझदार ह़ाकिम वोही है जो रियासत पर ख़र्च करने के साथ साथ इस के ज़राइए़ आमदनी पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दे, जो ह़ाकिम फ़क़त़ रियासत पर ख़र्च करता रहे वोह भी कभी कामयाब नहीं हो सकता और जो फ़क़त़ जम्अ़ करता रहे वोह भी कभी

1 ......معجم البلدان، ج۳، ص۴۳۶-۴۳۷۔

2 ......فتوح البلدان، ج۲، ص۴۰۸۔

3 ......معجم البلدان، ج۲، ص۱۰۴۔

www.dawateislami.net

कामयाब नहीं हो सकता। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जब बड़े बड़े शहरों को फ़त्ह़ कर लिया तो मुख़्तलिफ़ क़ौमें उन के सामने ज़ेर हो गईं, बा'ज़ ने तो ख़ुद ही हथयार डाल दिये और बा'ज़ ने जंग करने के बा'द हथयार डाले, बहर ह़ाल आप ने अपने और ग़ैरों तमाम के साथ बेहतरीन तअ़ल्लुक़ात के लिये रास्ते हमवार किये, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के दौर में मुल्की ख़ज़ाने में बड़ी वुस्अ़त हुई, जूं जूं मुल्की आमदनी के ज़राएअ़ बढ़ते रहे आप उस को मुरत्तब व मुनज़्ज़म करते रहे, उन की निगरानी के लिये मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारान को मुक़र्रर फ़रमाते गए, सल्त़नते फ़ारूक़ी के ज़राइए़ आमदनी और सरमाया कारी के अस्बाब में ज़कात, अमवाले ग़नीमत, अमवाले फ़ै, जिज़्या, ख़िराज और ताजिरों से ह़ासिल होने वाले टेक्स शामिल थे। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात नाफ़िज़ करने में अपना सानी न रखते थे, लेकिन आप की शख़्सिय्यत में ज़ोर ज़बरदस्ती और तसल्लुत़ न था, येही वज्ह है कि जब भी कोई अहम मस्अला पेश आता तो आप तमाम अस्ह़ाब को बुला कर उन से मुशावरत फ़रमाया करते थे। बहर ह़ाल सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने अ़ह्दे ख़िलाफ़त में दर्जे ज़ैल ज़राइए़ आमदनी को इख़्तियार फ़रमाया :

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ज़कात की वुसूली

ज़कात की अदाएगी की तरग़ीब

वाज़ेह़ रहे कि दुन्या के तमाम मज़ाहिब में इस्लाम ही एक वाह़िद मज़हब है जिस में ज़कात जैसा प्यारा निज़ाम है कि इस पर अ़मल की सूरत में मुआ़शरे के माली मुआ़मलात में ए'तिदाल आ जाता है, कोई ग़रीब भूका नहीं मरता, अमीरों के ज़रीए़ उस की मदद कर दी जाती है, ज़कात की फ़रज़िय्यत, इस की शराइत़, इस के मसारिफ़, इस के मक़ासिद वग़ैरा तमाम उमूर की तफ़्सील कुतुबे फ़िक़ह (इस्लामी किताबों) में मौजूद है। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ न सिर्फ़ लोगों से ज़कात की वुसूली फ़रमाते थे बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन उन्हें तरग़ीब भी दिलाते रहते थे। चुनान्चे,

जिस माल में ज़कात नहीं उस में कोई ख़ैर नहीं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इरशाद फ़रमाया : يَا اَهْلَ الْمَدِيْنَةِ اِنَّهُ لَا خَيْرَ فِيْ مَالٍ لَا يُزَكّٰى "या'नी मदीने वालो ! उस माल में कोई ख़ैर नहीं जिस की ज़कात अदा न की गई हो।"(1)

(1)......كنز العمال، كتاب الزكاة، باب احكام الزكاة، الجزء: ٦، ج ٣، ص ٢٣٣، الحديث: ١٦٨٩١ـ

www.dawateislami.net

आ़मिलीने ज़कात को हर साल भेजते

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है, फ़रमाते हैं : हमें किसी ने येह नहीं बताया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साल में दो मरतबा ज़कात वुसूल करने के लिये किसी को भेजा हो, हां एक मरतबा ज़रूर भेजा करते थे क्यूंकि साल में एक मरतबा ज़कात वुसूल करना तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है।"(1)

फ़तावा अह्ले सुन्नत, किताबुज़्ज़कात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात हर साहिबे निसाब, आ़क़िल बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है, नीज़ ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ा ज़रूरी मसाइल सीखना भी फ़र्ज़ है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तहत "**फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स**" की तरकीब बनाई जाती है, जिस में ह़त्तल मक़्दूर तमाम फ़र्ज़ उ़लूम सिखाए जाते हैं। इस कोर्स में ज़कात के मुख़्तलिफ़ ज़रूरी मसाइल भी सिखाए जाते हैं, आप ख़ुद भी इस में शिर्कत की निय्यत फ़रमा लीजिये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये, नीज़ بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی दा'वते इस्लामी का एक शो'बा "दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत" भी है जिस में मुख़्तलिफ़ मसाइल के शरई जवाबात दिये जाते हैं, इस शो'बे ने ज़कात के ज़रूरी मसाइल पर मुश्तमिल कमो बेश 4000 फ़तावा की एक जिल्द बनाम "फ़तावा अह्ले सुन्नत" (जिल्द अव्वल, किताबुज़्ज़कात) शाएअ़ कर दी है, जिस का पढ़ना हर मुसलमान के लिये निहायत ही मुफ़ीद है, मक्तबतुल मदीना से इसे हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये, ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिये और दीगर इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये।

अह्दे फ़ारूक़ी के आ़मिलीने ज़कात

कुतुबे सियर व तारीख़ में अह्दे फ़ारूक़ी के जिन आ़मिलीने ज़कात का ज़िक्र मिलता है, उन में से हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू ज़ुबाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना मस्लमा बिन मुख़ल्लद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सा'द आ'रज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अस्मा सरे फ़ेहरिस्त हैं।(2)

---

1 ......مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الزکاة، من قال لا توخذ۔۔۔الخ، ج ۳، ص ۱۰۷، حدیث: ۱۔

2 ......کتاب الاموال لابی عبید، ص ۴۲۷، ۵۸۹، مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزکاة، فی العسل هل فیه زکاة، ج ۳، ص ۳۳، حدیث: ۴۔

کتاب الاموال لابن زنجویه، ص ۱۱۹۲، الرقم: ۲۲۴۱، ص ۸۷۳، الرقم: ۱۵۴۰، ص ۱۰۹۲، الرقم: ۲۰۱۸۔

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी में जिज़्ये की वुसूली

जिज़्या उस रक़म को कहते हैं जो ज़िम्मी कुफ़्फ़ार मुसलमानों को इस लिये अदा करते हैं कि वोह मुसलमानों की अमान में रहें। इस जिज़्ये का ज़िक्र क़ुरआने पाक की सूरए तौबह आयत नम्बर 9 में मौजूद है। शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه नीज़ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तीनों के अ़हद में ज़िम्मियों से जिज़्या लिया जाता था। येह एक मुत्तफ़िक़ा मस्अला है इस में किसी का भी इख़्तिलाफ़ नहीं।

ज़िम्मी मुसलमान हो जाए तो जिज़्या न लिया जाए

अलबत्ता ज़िम्मियों में से कोई मुसलमान हो जाता तो अब उस से जिज़्या नहीं लिया जाता था। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि एक ज़िम्मी मुसलमान हो गया जिस से जिज़्या लिया जाता था, वोह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं मुसलमान हो गया हूं, फिर भी मुझ से जिज़्या लिया जाता है।" सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ज़िम्मेदारान को इस से जिज़्या लेने से मन्अ़ फ़रमा दिया।[1]

एक अहम वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "सल्त़नते इस्लामिया की जानिब से ज़िम्मी कुफ़्फ़ार पर जो मुक़र्रर किया जाता है उसे जिज़्या कहते हैं। जिज़्ये की दो क़िस्में हैं : **एक** वोह कि उन से किसी मिक़्दारे मुअ़य्यन पर सुल्ह़ हुई कि सालाना वोह हमें इतना देंगे इस में कमी बेशी कुछ नहीं हो सकती न शरअ़ ने इस की कोई ख़ास मिक़्दार मुक़र्रर की बल्कि जितने पर सुल्ह़ हो जाए वोह है। **दूसरी** येह कि मुल्क को फ़त्ह़ किया और काफ़िरों के इमलाक (जाएदाद, मकानात वग़ैरा) ब दस्तूर छोड़ दिये गए उन पर

1 ......سنن کبری، کتاب الجزیۃ، باب الذمی یسلم فترفع عنہ، ج ۹، ص ۳۳۵، حدیث: ۱۸۷۰۸۔

www.dawateislami.net

सल्त़नत (इस्लामी हुकूमत) की जानिब से ह़स्बे ह़ाल कुछ मुक़र्रर किया जाएगा इस में उन की ख़ुशी या ना ख़ुशी का ए'तिबार नहीं इस की मिक़्दार येह है कि मालदारों पर अड़तालीस (48) दिरहम सालाना, हर महीने में चार दिरहम। मुतवस्सित़ शख़्स पर चौबीस दिरहम सालाना, हर महीने में दो दिरहम। फ़क़ीर कमाने वाले पर बारह दिरहम सालाना, हर माह में एक दिरहम। अब इख़्तियार है कि शुरूअ़ साल में साल भर का ले लें या माह ब माह वुसूल करें, दूसरी सूरत में आसानी है। मालदार और फ़क़ीर और मुतवस्सित़ किस को कहते हैं येह वहां के उ़र्फ़ और बादशाह की राए पर है और एक क़ौल येह भी है कि जो शख़्स नादार हो या दो सौ दिरहम से कम का मालिक हो फ़क़ीर है और दो सौ से दस हज़ार से कम तक का मालिक हो तो मुतवस्सित़ है और दस हज़ार या ज़ियादा का मालिक हो तो मालदार है।"[1]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ख़िराज की वुसूली

कुफ़्फ़ार की मफ़्तूह़ा ज़मीनों से ह़ासिल होने वाली फ़स्ली आमदनी को ख़िराज कहते हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में जैसे जैसे फ़ुतूह़ात की वुस्अ़त हुई वैसे ही ख़िराज में भी इज़ाफ़ा होता गया। अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी में भी कुफ़्फ़ार की मफ़्तूह़ा ज़मीनों से ख़िराज वुसूल किया जाता था। अ़ह्दे रिसालत में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर की मफ़्तूह़ा ज़मीन मुजाहिदीन में तक़्सीम फ़रमा दी थी, जब कि मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह़ के बा'द इस की ज़मीनें आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुजाहिदीन में तक़्सीम करने के बजाए उन के मालिकान के पास ही रहने दीं और सिर्फ़ उन से ख़िराज वुसूल फ़रमाया। येही वज्ह है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बा'ज़ ज़मीनों के बारे में इरादा किया कि उन्हें मुजाहिदीन में तक़्सीम कर दें लेकिन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत के बा'द येह फ़ैसला फ़रमाया कि इन ज़मीनों को इन के मालिकान के पास ही रहने दिया जाए और सिर्फ़ इन से ख़िराज को वुसूल किया जाए।[2]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में ख़िराज के नफ़ाज़ का त़रीक़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब इत्तिफ़ाके़ राए से येह फ़ैसला कर लिया कि मफ़्तूह़ा ज़मीनों को उन के मालिकान के क़ब्ज़े में ही रहने दिया जाए फ़क़त़

1....बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 9, स. 448। जिज़्ये के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 9, स. 447 का मुत़ालआ़ कीजिये।

2.....كتاب الخراج، ص ٢٦ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

उन से ख़िराज वुसूल किया जाए। तो ख़िराज के नफ़ाज़ का त़रीक़ए कार येह वज़्अ़ फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन मफ़्तूह़ा ज़मीनों के सर्वे के लिये भेजा ताकि वोह उन के मालिकान की माली ह़ालत, उन ज़मीनों की ह़ालत और उन की पैदावार वग़ैरा पर ग़ौरो फ़िक्र कर के ख़िराज का तख़्मीना लगाएं, इन दोनों ह़ज़रात ने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से येह काम बत़रीक़े अह़सन सर अन्जाम दिया और सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें नाफ़िज़ फ़रमा दिया।[1]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में सब से ज़ियादा ख़िराज की वुसूली

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अगर्चे ख़िराज वग़ैरा की वुसूली में बहुत नर्मी इख़्तियार की हुई थी लेकिन फिर भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारका में जितना ख़िराज वुसूल किया गया किसी के अ़हद में न हुवा चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज्जाज का बुरा करे कि उसे न तो दीन की समझ थी और न ही दुन्या की, उस ने ज़ुल्मो जब्र के साथ सिर्फ़ अठ्ठारह लाख दिरहम वुसूल किये, जब कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही नर्मी और ख़ुशी से एक करोड़ अठ्ठाईस लाख दिरहम वुसूल किये।"[2]

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में उ़शूर की वुसूली

यहां उ़श्र से मुराद पैदावार का दसवां ह़िस्सा नहीं बल्कि वोह मख़्सूस रक़म है जिसे इस्लामी सल्त़नत से गुज़रने वाले तुज्जार से वुसूल किया जाता है, इसे कस्टम आमदनी या चुंगी मह़सूल भी कहा जाता है, इस के वुसूल करने वाले को आ़शिर कहते हैं।[3]

अ़ह्दे रिसालत व अ़ह्दे सिद्दीक़ी दोनों में इस का वुजूद न था, अलबत्ता जब अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इस्लामी सल्त़नत का दाइरा वसीअ़ होता चला गया, मशरिक़ व मग़रिब में इस्लामी सरह़दें फैल गईं तो दीगर अ़लाक़ों के कुफ़्फ़ार को मुसलमानों के साथ तिजारती लैन दैन को फ़रोग़ मिला। तमाम मुअर्रिख़ीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस्लाम में कस्टम आमदनी का निज़ाम सब से पहले

1 ......كتاب الخراج، ص ٣٨ ماخوذا۔
2 ......معجم البلدان، ج ٣، ص ٨٧۔
3 ....बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 5, स. 909, मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 609 मुलख़्ख़सन।

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने राइज किया, इस का आग़ाज़ अ़लाक़ा "मम्बिज" के लोगों से हुवा, उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़रबों की सर ज़मीन पर कस्टम की अदाएगी करते हुवे तिजारत करने की इजाज़त त़लब की। आप ने अपनी आ़दते मुबारका के मुत़ाबिक़ तमाम अस्ह़ाब को जम्अ़ कर के मश्वरा किया, सब ने इत्तिफ़ाक़ किया। चूंकि कुफ़्फ़ार के अ़लाक़ों में जब मुसलमान तिजारती ह़वाले से जाते थे तो वोह भी कस्टम वुसूल करते थे, इस लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मा'लूमात लेने के बा'द कस्टम नाफ़िज़ कर दिया। इस कस्टम ड्यूटी की वुसूली के लिये आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ जगहों पर मुख़्तलिफ़ अस्ह़ाब को तअ़य्युनात फ़रमाया।(1)

माले फै़ और माले ग़नीमत की वुसूली

हर वोह माल जो मुसलमानों को कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन से बिग़ैर जंगो जदल के ह़ासिल हो उसे माले फ़ै और जो जंग के बा'द ह़ासिल हो उसे माले ग़नीमत कहा जाता है, दोनों के मसारिफ़ (इन को ख़र्च करने की जगहों) का बयान क़ुरआने पाक में मौजूद है :

(1) ﴿مَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ﴾ (پ۲۸، الحشر: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जो ग़नीमत दिलाई **अल्लाह** ने अपने रसूल को शहर वालों से वोह **अल्लाह** और रसूल की है और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये।"

(2) ﴿وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ﴾ (پ۱۰، الانفال: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो तो उस का पांचवां ह़िस्सा ख़ास **अल्लाह** और रसूल व क़राबत वालों और यतीमों और मोह़ताजों और मुसाफ़िरों का है।"

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "ग़नीमत का पांचवां ह़िस्सा फिर पांच ह़िस्सों पर तक़्सीम होगा इन में से एक ह़िस्सा जो कुल माल का पच्चीसवां ह़िस्सा हो वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये है और एक ह़िस्सा आप के अहले क़राबत के लिये और तीन ह़िस्से यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये। **मस्अला :** रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ुज़ूर और आप के अहले क़राबत के ह़िस्से

1 ......كتاب الخراج، ص ۱۳۵۔

www.dawateislami.net

भी यतीमों मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और पांचवां हिस्सा इन्ही तीन पर तक़्सीम हो जाएगा।"(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों की तौसीअ़ के सबब माले फ़ै व माले ग़नीमत की बहुतात हो गई, क्यूंकि मुल्के रूम व फ़ारिस के जंग जू निहायत ही कर्रो फ़र्र और ठाठ बाठ से अपने तमाम साज़ो सामान के साथ मैदाने जंग में आते थे, फ़त्ह़ के बा'द इन का छोड़ा हुवा सारा माल मुसलमानों के हाथ लग जाता था। अ़ह्दे फ़ारूक़ी के माले फ़ै और माले ग़नीमत का दुरुस्त तख़्मीना लगाना बहुत मुश्किल है, अलबत्ता यहां फ़क़त़ एक रिवायत ज़िक्र करना काफ़ी है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं बह़रैन से माले ग़नीमत ले कर बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवा, नमाज़ वग़ैरा के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मुझ से इस की तफ़्सील पूछी तो मैं ने अ़र्ज़ किया : "पांच लाख दिरहम ले कर हाज़िर हुवा हूं।" येह एक अच्छी ख़ासी रक़म थी, येह सुन कर सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हुज़ूर मैं पांच लाख दिरहम ही लाया हूं।" फिर मैं ने एक एक लाख दिरहम पांच दफ़्अ़ा गिन कर बताया तो भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को यक़ीन न आया और फ़रमाया : "शायद तुम थके हुवे हो लिहाज़ा घर जाओ आराम करो, कल सुब्ह़ आना।" जब मैं दूसरे दिन सुब्ह़ आया तो सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा पूछा और मैं ने वोही जवाब दिया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को यक़ीन आ गया और आप बहुत ख़ुश हुवे।(2)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ज़रई निज़ाम

क़ौमे अ़रब और खेतीबाड़ी

जोग्राफ़ियाई ह़ैसिय्यत से देखा जाए तो अ़रब क़ौम एक जंग जू, सख़्त जान और पथरीली ज़मीन पर रहने वाली क़ौम थी, इन में खेतीबाड़ी न होने के बराबर थी, मुल्क का बेशतर हिस्सा रेगिस्तान था जिस में कुछ नख़्लिस्तान थे। नख़्लिस्तानों में घास और चारा होता था, जो अ़रब भेड़ बकरियां या ऊंट वग़ैरा पालते थे वोह इन्ही नख़्लिस्तानों से चारा ह़ासिल करते थे। अ़रबों में ज़राअ़त से

1....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 10, अल अन्फ़ाल, तह़्तुल आयत : 41।

2......مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، ماقالوافی الفروض---الخ، ج۷، ص ۶۱۳، حدیث: ۱ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

दिलचस्पी का आग़ाज उस वक़्त हुवा जब सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में इराक़, मिस्र और शाम की वसीओ़ अ़रीज़ ज़मीन अ़रब मुसलमानों के क़ब्ज़े में आई, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बेहतरीन ह़ाकिम थे, रियासत के तमाम मुआ़मलात की त़रफ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तवज्जोह यक्सां होती थी, आप ने रियासत में मुख़्तलिफ़ ता'मीरात के साथ साथ इस बात पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी कि रियासत के लिये एक ज़रई निज़ाम क़ाइम किया जाए ताकि मुसलमान रोज़ मर्रा की ज़रूरियाते ज़िन्दगी की अश्या में भी ख़ुद कफ़ील हो जाएं। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस निज़ाम के ह़वाले से मुख़्तलिफ़ कोशिशें कीं जिन की तफ़्सील कुछ इस त़रह़ है :

फ़ारूके़ आ'ज़म की बे मिसाल फ़िरासत

इराक़ की फ़त्ह़ के बा'द सब से पहले इस की मफ़्तूह़ा ज़मीनों की तक़्सीम का मुआ़मला आया, सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस के लिये एक अ़ज़ीम मुशावरत त़लब की, मुख़्तलिफ़ लोगों ने मुख़्तलिफ़ मश्वरे दिये। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने येह मश्वरा दिया कि इन ज़मीनों को तक़्सीम न किया जाए। बा'ज़ लोगों ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! अगर आप ने इस ज़मीन को तक़्सीम कर दिया तो ज़मीन का बहुत सा मनाफ़ेअ़ लोगों के हाथ में होगा और लोग इधर उधर मुन्तशिर हो जाएंगे, फिर तो वोह सिर्फ़ एक मर्द या एक औ़रत की मिल्किय्यत हो जाएगी और बा'द में जो मुसलमान उन के क़ाइम मक़ाम होंगे वोह कुछ ह़ासिल नहीं कर सकेंगे, लिहाज़ा आप ऐसी तदबीर इख़्तियार कीजिये जो मौजूदा मुसलमानों और बा'द में आने वालों दोनों के लिये मुफ़ीद हो।" बा'ज़ का मौक़िफ़ येह था कि चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैबर की ज़मीनों को तक़्सीम फ़रमाया था इस लिये तक़्सीम कर दिया जाए।

लेकिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बा कमाल फ़िरासत से येह बात जान ली थी कि अ़रबों को खेती-बाड़ी का कोई ख़ास तजरिबा नहीं है, अगर इन्हें येह ज़र ख़ैज़ ज़मीनें दे दी गईं तो हो सकता है कि येह ज़मीनें ज़ाएअ़ हो जाएं। इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह ज़मीनें उन के मालिकान के पास ही रहने दीं और उन पर ख़िराज वुसूल कर के मुसलमानों पर सर्फ़ किया।[1]

1 ......کتاب الخراج، ص ۲۷ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल से दो बातें सामने आती हैं : एक तो येह कि इस्लाम ऐसा दीन है जो किसी की भी ह़क़ तलफ़ी की इजाज़त नहीं देता, मफ़्तूह़ा ज़र ख़ैज़ ज़मीनें उन के मालिकान को वापस देने में एक ह़िक्मत येह भी थी कि उन की किसी त़रह़ दिल आज़ारी न हो, दूसरी ज़राअ़त की अहम्मिय्यत आप की नज़र में थी, आबाद ज़मीनें आप की नज़र में मुफ़ीद थीं न कि बन्जर ज़मीनें, अगर फ़क़त़ ज़मीनों की मिल्किय्यत मक़्सूद होती तो आप कभी भी उन्हें मालिकान के क़ब्ज़े में न देते बल्कि अ़रबों की मिल्किय्यत में दे देते।

ज़मीनों को आबाद करने का हुक्म

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़राअ़त के ह़वाले से सब से पहले येह हुक्म जारी फ़रमाया कि हर अ़लाक़े में जहां जहां वीरान ज़मीनें पड़ी हुई हैं, जो भी शख़्स उन को आबाद करेगा वोह ज़मीनें उसी की मिल्क हो जाएंगी, अलबत्ता इस बात का ख़याल रहे कि अगर किसी ने एक मख़्सूस ज़मीन पर आबादकारी के ह़वाले से क़ब्ज़ा किया और तीन साल के अन्दर अन्दर उसे आबाद न कर सका तो ज़मीन उस के क़ब्ज़े से निकल जाएगी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस हुक्म के नतीजे में मुख़्तलिफ़ शहरों की मुख़्तलिफ़ ज़मीनों की आबादकारी में तेज़ी से इज़ाफ़ा होने लगा।[1]

ज़रई ह़वाले से एक अहम अम्रे फ़ारूक़ी

ज़रई ह़वाले से सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक अहम काम येह भी किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो माहिर अस्ह़ाब या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों की पैमाइश का हुक्म दिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मिज्लज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मज़ाफ़ात का ख़िराज वुसूल करने के लिये भेजा और उन का रोज़ाना का वज़ीफ़ा चौथाई बकरी और पांच दिरहम मुक़र्रर फ़रमाए। नीज़ उन्हें येह भी हुक्म दिया कि पूरे अ़लाक़े की पैमाइश कर लें ख़्वाह वोह अ़लाक़ा आबाद हो या बन्जर, अलबत्ता सीम वाली ज़मीन, टीले, झाड़ियों और तालाबों वाली ज़मीन, इन तमाम जगहों की और जिस ज़मीन पर पानी गुज़रता है उस की भी पैमाइश न करें। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहाड़ के इलावा हर वोह चीज़ जहां तक पानी पहुंचता है ख़्वाह

---

1 ......بخاری، کتاب الحرث۔۔۔الخ، باب من احیا ارضا مواتا، ج۲، ص۹۰، حدیث: ۲۳۳۵، کتاب الخراج، ص۶۵۔

www.dawateislami.net

आबाद हो या बन्जर उस को जब नापा तो तीन करोड़ साठ लाख जुरैब पाया, जब कि सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो आप को पैमाना बना कर दिया था वोह एक जुराअ़ एक मुठ्ठी से कुछ ज़ियादा था। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़िराज के मुतअ़ल्लिक़ हिदायात देते हुवे लिखा कि : "हर जुरैब ख़्वाह आबाद हो या बन्जर उस पर काम होता हो या नहीं, एक दिरहम और एक क़फ़ीज़ मुक़र्रर करो, तर खजूरों पर पांच दिरहम और दस क़फ़ीज़ मुक़र्रर करो और उन को खजूर और दरख़्तों के फल खिलाओ, येह उन के लिये उन के शहरों को आबाद करने के लिये ख़ुराक होगी। ज़िम्मियों में से जो ख़ुशहाल हो अड़तालीस दिरहम, जो दरमियाने दरजे का हो उस पर चौबीस और जिस के पास कुछ न हो उस पर बारह दिरहम मुक़र्रर कर दो।" सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसा ही किया तो पहले साल सवादे कूफ़ा के ख़िराज से आठ करोड़ दिरहम वुसूल हुवे फिर अगले साल इस की ता'दाद बारह करोड़ तक पहुंच गई।[1]

अ़म्रे फ़ारूक़ी की हिक्मतें

इस में दो हिक्मतें थीं एक तो येह कि तमाम ज़रई अ़लाक़ों का कुल रक़्बा मा'लूम हो जाए जिस से मालिकान पर ख़िराज मुक़र्रर करना और इन की आमदनी या'नी ख़िराज की वुसूली में आसानी रहे, दूसरी हिक्मत येह थी कि मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के हिसाब से जो भी ज़रई मसाइल पेश आएं उन्हें इस के मुताबिक़ ही हल किया जा सके।

खेतीबाड़ी करने वालों को तहफ़्फ़ुज़

ज़रई निज़ाम के क़ियाम के हवाले से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसानों को तहफ़्फ़ुज़ भी फ़राहम किया, जिन दो अस्हाब को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़मीनों की पैमाइश के लिये भेजा था, उन्हों ने ज़मीनों की पैमाइश और इस की पैदावार का सारा हिसाब लगा कर आप की बारगाह में भेज दिया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे नाफ़िज़ फ़रमा दिया। लेकिन आप ने इस शुबे की बिना पर कि कहीं उन्हों ने काश्तकारों की हैसिय्यत से ज़ियादा तो ख़िराज वुसूल नहीं किया उन दोनों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम ने ख़िराज कैसे मुक़र्रर किया ? शायद तुम लोगों ने ज़मीनों के मालिकान को उन की ताक़त से ज़ियादा की अदाएगी पर मजबूर किया होगा।" सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! जितना मैं ने उन से ख़िराज लिया है उस से ज़ियादा उन के पास छोड़ दिया है।"[2]

---

1 ......كنزالعمال، كتاب الخراج، باب الخراج، الجزء: ۴، ج ۲، ص ۲۳۴، الحديث: ۱۱۶۱۷ـ

2 ......كتاب الخراج، ص ۳۷ماخوذاـ

www.dawateislami.net

किसान का माली नुक़्सान पूरा किया

जंगी मुआ़मलात में बा'ज़ औक़ात ऐसा भी होता है कि जब किसी अ़लाके़ से फ़ौज गुज़रती है तो उस की फ़स्ल वग़ैरा तबाह हो जाती है, बा'ज़ औक़ात फ़ौजी ह़ज़रात भूक प्यास के सबब किसी की ज़मीन से फल वग़ैरा भी ले लेते हैं। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक किसान ने शिकायत की, कि इस्लामी लश्कर ने उस की ज़मीन में कुछ नुक़्सान कर दिया है तो आप ने उस नुक़्सान के बदले उस किसान को दस हज़ार दिरहम दिलवाए।(1)

ख़िराज की वुसूली में काश्तकारों से नर्मी

सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िराज वुसूल करने वाले आ़मिलीन को इस बात की ताकीद फ़रमाई थी कि काश्तकारों से ख़िराज वुसूल करने में नर्मी करें, नीज़ इस बात का भी ख़याल करें कि किसी की आमदनी से ज़ियादा ख़िराज वुसूल न किया जाए। इस बात की तफ़्तीश के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर साल ख़िराज की रक़म वग़ैरा पहुंचने पर कूफ़ा और बसरा के ज़िम्मेदारान से सख़्ती से पूछगछ फ़रमाते कि येह माल किसी पर सख़्ती कर के तो नहीं लिया गया। जब हर त़रह़ से इत़मीनान हो जाता तो वोह रक़म बैतुल माल में जम्अ़ कर दी जाती।(2)

ज़िन्दगी भर मा'ज़ूल नहीं करूंगा

एक बार ह़िम्स के वाली ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िराज की रक़म भेजने में देर कर दी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें बुलाया और ताख़ीर की वज्ह पूछी। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! आप का हुक्म है कि चार दीनार से ज़ियादा न वुसूल किया जाए। इस लिये हम न तो चार दीनार से कम और न ही ज़ियादा वुसूल करते हैं अलबत्ता खेती पकने तक उन की सहूलत के लिये मोहलत दे देते हैं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : "मैं तुम्हें ज़िन्दगी भर इस ओ़ह्दे से मा'ज़ूल नहीं करूंगा।"(3)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ......کتاب الخراج، ص ۱۱۹۔

2 ......کتاب الخراج، ص ۷۳ ماخوذا۔

3 ......تاریخ ابن عساکر، ج ۲۱، ص ۱۶۳ ماخوذا۔

www.dawateislami.net

अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आबपाशी का निज़ाम

ज़रई ज़मीनों को मसनूई त़रीक़े (या'नी बारिश के इलावा किसी और पानी) से सैराब करने का अ़मल आबपाशी कहलाता है। आबपाशी की तारीख़ बहुत पुरानी है, यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि सब से पहले आबपाशी का अ़मल कहां से शुरूअ़ हुवा। गुमाने ग़ालिब है कि जब इन्सान दरयाओं के किनारे आबाद हुवे तो वहीं से आबपाशी का सिलसिला शुरूअ़ हुवा। तक़रीबन दो हज़ार साल क़ब्ल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर में मिस्र के लोग दरयाए नील का पानी आबपाशी के लिये इस्ति'माल करते थे। पानी ज़िन्दगी की अ़लामत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक बहुत बड़ी और अ़ज़ीम ने'मत है। पहाड़ों पर सब्ज़ा, फलदार पौदे और दरख़्त पानी ही की बदौलत नश्वो नुमा पाते हैं। वसीओ़ अ़रीज़ मैदानों में सर सब्ज़ और लह्लहाते खेत इसी ने'मते खुदावन्दी का मज़हर हैं। इस लिये आबपाशी के मसनूई त़रीक़ों की अहम्मिय्यत को किसी त़रह़ भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता क्यूंकि मुल्की पैदावार का ज़ियादा तर इन्ह़िसार पानी के मौजूदा मह़दूद वसाइल और इन के इस्ति'माल पर है।

किसी भी रियासत की मुआ़शी तरक़्क़ी में आबपाशी के निज़ाम को बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है, आबपाशी के बेहतर निज़ाम से रियासत में खुशह़ाली आती है, कामयाब रियासती ह़ाकिम की निशानी है कि वोह रियासत के दीगर मुआ़शी उमूर के साथ साथ आबपाशी के निज़ाम पर भी खुसूसी तवज्जोह देता है, नीज़ इस ह़वाले से मज़बूत़ ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार करता है।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में कई ऐसे अ़लाक़े भी थे जिन में पानी की शदीद क़िल्लत थी, उन अ़लाक़ों के मकीनों को घरेलू इस्ति'माल के लिये दूर दराज़ से पानी लाना पड़ता था, नीज़ ज़मीनों को आबाद करने के लिये भी पानी की सख़्त ह़ाजत पड़ती थी, यक़ीनन ज़राअ़त पानी की मोह़ताज है, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने गवर्नरों को मुख़्तलिफ़ शहरों में दरया से उस मख़्सूस अ़लाक़े तक नहरें खोदने का हुक्म दिया। आप के अ़ह्द में कई ऐसी नहरें खोदी गईं जिन से मौजूदा अ़लाक़े और आस पास के अ़लाक़ों में भी खुशह़ाली आ गई, आबपाशी से मुतअ़ल्लिक़ आप का येह अम्र आप की फ़िरासत और बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली पर दलालत करता है नीज़ इस से अ़ह्दे फ़ारूक़ी के आबपाशी के निज़ाम की बेहतरीन अ़क्कासी भी होती है। अ़ह्दे फ़ारूक़ी में खोदी गई नहरों की तफ़्सील पीछे गुज़र चुकी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म तारीख़ के आईने में

13 हिजरी ब मुताबिक़ 634 ईसवी	सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ 53 साल की उ़म्र में मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे।
13 हिजरी ब मुताबिक़ 634 ईसवी	ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप ने पहला ख़ुत़बा दिया।
13 हिजरी ता 18 हिजरी	ख़िलाफ़त के इब्तिदाई छे साल में मुकम्मल मुल्के शाम फ़त्ह़ हो गया।
13 हिजरी ता 16 हिजरी	इराक़ और अत़राफ़ के दीगर कई अ़लाके़ फ़त्ह़ हुवे।
14 हिजरी ब मुताबिक़ 635 ईसवी	दिमश्क़, बा'लबक, बसरा और वाइला फ़त्ह़ हुवे।
14 हिजरी ब मुताबिक़ 635 ईसवी	लोगों को बा जमाअ़त नमाज़े तरावीह़ अदा करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	त़बरिय्या के इलावा पूरा उर्दन फ़त्ह़ हुवा।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	इसी साल जंगे यरमूक और जंगे क़ादिसिया जैसी अ़ज़ीम जंगें लड़ी गईं।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	फ़त्हे़ बैतुल मुक़द्दस के लिये मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	बैतुल मुक़द्दस और इस से मुत्तसिल कई अ़लाके़ फ़त्ह़ हुवे।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने कूफ़ा बसाया।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	ज़िम्मेदारान व दीगर लोगों के वज़ाइफ़ व तनख़्वाहें मुक़र्रर फ़रमाईं।
15 हिजरी ब मुताबिक़ 636 ईसवी	वज़ाइफ़ के इजरा के लिये दीवान क़ाइम फ़रमाए।
16 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	अहवाज़ और मदाइन जैसे अ़लाके़ फ़त्ह़ हुवे।
16 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ऐवाने किस्रा में जुमुआ़ पढ़ाया।
16 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	सर ज़मीने इराक़ पर पहला जुमुआ़ अदा किया गया।
16 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	जंगे जलूला का मा'रिका पेश आया जिस में यज़्दगिर्द बिन किस्रा को शिकस्त हुई।

www.dawateislami.net

16 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	तकरीत, क़िन्नसिरीन, ह़ल्ब, इन्ताकिया और मम्बिज जैसे अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	शहरे बसरा व कूफ़ा की ता'मीर व आबादकारी की गई।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	आप ने जिहाद की निय्यत से मुल्के शाम का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	मुल्के शाम में "जाबिया" के मक़ाम पर तारीख़ी ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ को सिपह सालार के ओ़ह्दे से मा'ज़ूल कर दिया।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ को सिपह सालार के ओ़ह्दे से मा'ज़ूल कर दिया।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ ने मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ फ़रमाई।
17 हिजरी ब मुताबिक़ 637 ईसवी	मौला अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ के मश्वरे से हिजरी तारीख़ का नफ़ाज़ फ़रमाया।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मुल्के शाम के बा'ज़ अ़लाक़े ह़लवान वग़ैरा फ़त्ह़ हुवे।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मौसिल और इस के अत़राफ़ के अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	त़ाऊ़न ऊ़मवास में इस्लामी लश्कर की ख़ैरख़्वाही के लिये मुल्के शाम तशरीफ़ ले गए।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मदीनए मुनव्वरा और अत़राफ़ के अ़लाक़ों में शदीद क़ह़्त़ पैदा हो गया।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	"आमुर्रमादह" में रिआ़या की बे मिसाल ख़ैरख़्वाही फ़रमाई।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से मुतअस्सिरीने क़ह़्त़ साली के लिये इमदाद मंगवाई गई।
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मुल्के मिस्र से मदीनए मुनव्वरा व अत़राफ़ के मुतअस्सिरीन के लिये इमदादी सामान की दर आमद
18 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	सय्यिदुना अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ के वसीले से बारिश की दुआ़ फ़रमाई।
19 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मिस्र और इस से मुत्तसिल कई अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे।
19 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	दरयाए नील आप के हुक्म से हमेशा के लिये जारी हो गया।

www.dawateislami.net

19 हिजरी ब मुताबिक़ 639 ईसवी	मस्जिदे नबवी में मुअ़य्यना तौसीअ़ फ़रमाई।
20 हिजरी ब मुताबिक़ 640 ईसवी	इसी साल यहूदियों को ख़ैबर और नजरान से जिला वत़न कर दिया गया।
20 हिजरी ब मुताबिक़ 640 ईसवी	इसी साल ख़ैबर और वादिये कुरा को तक़्सीम कर दिया गया।
21 हिजरी ब मुताबिक़ 641 ईसवी	इस्कन्दरिया और बरक़ा फ़त्ह़ हुवे।
21 हिजरी ता 23 हिजरी	ईरान और इस के कई अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे।
22 हिजरी ब मुताबिक़ 642 ईसवी	आज़रबाईजान, दीनवर, अस्बज़ान और हमदान फ़त्ह़ हुवे।
22 हिजरी ब मुताबिक़ 642 ईसवी	मग़रिबी त़राबुलुस, रै, अ़स्कर और क़ौस फ़त्ह़ हुवे।
23 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ फ़रमा हो कर जंगे निहावन्द में मौजूद इस्लामी लश्कर की मदद फ़रमाई।
23 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	किरमान, सिजिस्तान, अस्बहान व नवाह़ी अ़लाक़े फ़त्ह़ हुवे।
23 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	उम्महातुल मोमिनीन के साथ आख़िरी ह़ज अदा फ़रमाया।
23 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	आप को ख़न्जर के वार कर के शदीद ज़ख़्मी कर दिया गया।
23 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	नए ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के लिये मजलिसे शूरा क़ाइम फ़रमाई।
24 हिजरी ब मुताबिक़ 643 ईसवी	मुख़्तलिफ़ वसाया व नसीह़तों के बा'द मुह़र्रमुल ह़राम में जामे शहादत नोश फ़रमाया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा तमाम तवारीख़ मुख़्तलिफ़ कुतुबे मो'तबरा और *(Hijri Date Converter)* की मदद से ली गई हैं, चूंकि हिजरी और ईसवी साल के अय्याम मुख़्तलिफ़ होते हैं इसी सबब से तारीख़ों में बा'ज़ औक़ात शदीद इख़्तिलाफ़ भी वाक़ेअ़ हो जाता है, लिहाज़ा मज़्कूरा तमाम तवारीख़ में कमी बेशी मुमकिन है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہ

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

इजमाली फ़ेहरिस्त	6	(4) मुशावरत बहुत ज़रूरी है	44
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़	11	(5) अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम और ज़ुल्मो ज़ियादती की रोक थाम	45
फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म के बारे में.........	12	(6) जानो माल और इमलाक का तह़फ़्फ़ुज़	45
ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म	27	(7) माली हुक़ूक़ की अदाएगी का अ़ह्द	46
ख़िलाफ़ते फ़ारूके़ आ'ज़म	28	(8) रिआ़या के इस्लाही़ पहलू पर ख़ुसूसी तवज्जोह	46
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन आयाते मुबारका	28	(9) हाकिम की इत़ाअ़त में ही फ़ाइदा है	46
पहली आयते मुबारका	28	(10) तुन्द मिज़ाजी और सख़्त दिली से नफ़रत	47
दूसरी आयते मुबारका	29	(11) अहले मदीना मतबूअ़ और बक़िय्या ताबेअ़ थे	47
तीसरी आयते मुबारका	30	(12) साबिक़ा अधूरे कामों की तक्मील	48
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर तीन अह़ादीसे मुबारका	31	(13) सलाहिय्यतों के मुत़ाबिक़ ज़िम्मेदारियों की तक़्सीम	48
(1) मेरे बा'द येही ख़ुलफ़ा होंगे	31	**फ़ारूके़ आ'ज़म ब हैसिय्यते ख़लीफ़ा**	49
(2) अबू बक्र व उ़मर की पैरवी करना	31	**फ़ारूके़ आ'ज़म और मुख़्तलिफ़ इबादात का एहतिमाम**	50
(3) मेरे बा'द येही ख़ुलफ़ा होंगे	31	**फ़ारूके़ आ'ज़म और नमाज़ का एहतिमाम**	51
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी पर इजमाए़ सह़ाबा	32	फ़ारूके़ आ'ज़म और सदाए मदीना	51
एक अहम वज़ाह़ती मदनी फूल	34	घरवालों को सदाए मदीना	52
ख़िलाफ़त के बा'द इब्तिदाई मुआ़मलात	35	फ़ारूके़ आ'ज़म की नमाज़ में त़वील क़िराअत	52
ख़िलाफ़त के बा'द इब्तिदाई मुआ़मलात	36	कभी सूरए नह़्ल की भी तिलावत फ़रमाते	52
फ़ारूके़ आ'ज़म मिम्बरे रसूल पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे	36	ह़ालते नमाज़ में गिर्या व ज़ारी	53
ख़ुलफ़ाए राशिदीन और मिम्बरे रसूल	36	नमाज़ में हिचकियों की आवाज़ पिछली सफ़ों तक	53
ख़लीफ़ा बनने के बा'द फ़ारूके़ आ'ज़म का पहला ख़ुत़बा	37	रोने की आवाज़ पूरी मस्जिद में गूंज उठी	53
दौरे सिद्दीक़ी में फ़ारूके़ आ'ज़म की सख़्ती की हिक्मत	38	इबादत की मे'राज	54
ख़िलाफ़त संभालने के बा'द आप का एक फ़िक्र अंगेज़ ख़ुत़बा	39	अ़ज़ाब वाली आयात सुन कर बीमार हो गए	54
फ़ारूके़ आ'ज़म ने तमाम वा'दे पूरे कर दिखाए	40	नमाज़े ज़ोहर को ठन्डा कर के अदा फ़रमाते	54
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के बुन्यादी उसूल	43	फ़ारूके़ आ'ज़म की नमाज़ से इस्तिआ़नत	55
(1) अपनी इस्लाह़ की कोशिश ज़रूरी है	43	तमाम मुश्किलों और परेशानियों का ह़ल	55
(2) ख़िलाफ़त के लिये ज़रूरी उमूर	44	नमाज़ में ताख़ीर पर दो ग़ुलामों की आज़ादी	55
(3) तमाम मुआ़मलात ख़ुद ही ह़ल फ़रमाते	44	फ़ारूके़ आ'ज़म सफ़ों को दुरुस्त करवाते	56

www.dawateislami.net

घुटनों व पाउं की त़रफ़ देखते	56	**फ़ारूक़े आ'ज़म और इस्तिक़्बाले रमज़ान**	70
क़िब्ला रू हो कर नमाज़ की अदाएगी करो	56	इस्तिक़्बाले रमज़ान पर नसीहत आमोज़ ख़ुत़बा	70
नमाज़ के बारे में पूछगछ फ़रमाते	57	अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर	70
फ़ारूक़े आ'ज़म ने ग़ैर हाज़िर नमाज़ी की मा'लूमात लीं	57	मैं फ़नकार था....	71
गवर्नरों के नाम नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ उ़मूमी फ़रमान	58	**फ़ारूक़े आ'ज़म और हज्जे बैतुल्लाह**	72
फ़ज्र व अ़स्र के बा'द नमाज़ की मुमानअ़त	58	सफ़रे हज में आप की सादगी	73
तुलूए शम्स और ग़ुरूबे शम्स के वक़्त शैत़ान के सींग	58	हज के अख़राजात फ़क़त पन्दरह दीनार	73
पहली सफ़ वालों पर अल्लाह की रह़मत	59	फ़ारूक़े आ'ज़म और हज की ज़िम्मेदारी	73
फ़ारूक़े आ'ज़म रफ़्ए यदैन नहीं करते थे	59	**फ़ारूक़े आ'ज़म और ज़िक्रुल्लाह का एहतिमाम**	74
नमाज़ी के आगे से गुज़रने का वबाल	59	ज़िक्रुल्लाह को अपने लिये लाज़िम कर लो	74
बिग़ैर सुतरे के नमाज़ न अदा करें	60	फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़िक्रुल्लाह के ह़ल्क़े में शिर्कत	74
नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले के साथ शैत़ान	60	दिलों का चैन ज़िक्रुल्लाह में है	75
सुतरे के साथ नमाज़ में शैत़ान ह़ाइल नहीं होगा	60	**फ़ारूक़े आ'ज़म का मसाजिद को रौशन करना**	75
फ़ारूक़े आ'ज़म अपने सामने बत़ौरे सुतरा नेज़ा गाड़ लेते	60	अल्लाह आप की क़ब्र रौशन व मुनव्वर फ़रमाए	76
फ़ारूक़े आ'ज़म नमाज़े फ़ज्र पढ़ कर सफ़र शुरूअ़ करते	61	अल्लाह आप पर नूर की बारिश फ़रमाए	76
तमाम तकालीफ़ और परेशानियों का ह़ल	61	मसाजिद को रौशन करने के मुतअ़ल्लिक़ एक जामेअ़ फ़तवा	76
क़ातिल इमामत के मुसल्ले पर	62	**फ़ारूक़े आ'ज़म का वज़ीफ़ा**	77
फ़ारूक़े आ'ज़म और तरावीह़ की जमाअ़त	63	बैतुल माल के मुआ़मले में आ़म आदमी की हैसिय्यत	77
रसूलुल्लाह ने नमाज़े तरावीह़ अदा फ़रमाई	63	फ़ारूक़े आ'ज़म मुसलमानों के अमवाल के अमीन	78
उम्मत की मशक़्क़त के सबब जमाअ़त तर्क फ़रमाई	64	फ़ारूक़े आ'ज़म और बैतुल माल से क़र्ज़	78
फ़ारूक़े आ'ज़म ने दोबारा तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम फ़रमाई	64	बैतुल माल से फ़ारूक़े आ'ज़म के अख़राजात	78
फ़ारूक़े आ'ज़म का ह़िक्मत से भरपूर जवाब	65	फ़ारूक़े आ'ज़म के यौमिय्या अख़राजात	79
इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	65	फ़ारूक़े आ'ज़म के हज के अख़राजात	79
मौला अ़ली ने फ़ारूक़े आ'ज़म को तरावीह़ की तरग़ीब दिलाई	67	हुक्मरानों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या	79
फ़ारूक़े आ'ज़म ने तरावीह़ की जमाअ़त क्यूं क़ाइम फ़रमाई ?	67	**बा'दे ख़िलाफ़त फ़ारूक़े आ'ज़म की ग़िज़ा**	80
तरावीह़ बीस रक्अ़त है	67	दौरे ख़िलाफ़त में रूखा सूखा खाना	80
बीस रक्अ़त तरावीह़ की ह़िक्मत	68	एक ही रात में इतना फ़र्क़	81
फ़ारूक़े आ'ज़म और रोज़ों का एहतिमाम	69	फ़ारूक़े आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ खाने	81
फ़ारूक़े आ'ज़म की नफ़्ली रोज़ों से मह़ब्बत	69	फ़ारूक़े आ'ज़म की सख़्त ग़िज़ा और फ़िक्रे आख़िरत	82
दो साल मुसलसल रोज़े	69	उ़म्दा ग़िज़ा से परहेज़ की वज्ह	83
रोज़े और मिस्वाक से मह़ब्बत	69	आख़िरत के अज्र पर नज़र	83
रिआ़या के लिये मुसलसल रोज़ों की मुमानअ़त	69	गोश्त में भी नशा है	84

www.dawateislami.net

कच्चे प्याज़ और लहसन की ना पसन्दीदगी	84
फ़ारूक़े आ'ज़म का एक वक़्त में एक ही खाना	84
ख़लीफ़ए वक़्त के ख़ानदान की सादा गिज़ा	84
कभी छना हुवा आटा न खाया	85
एक ही खजूर से भूक मिटा ली	85
बेहतरीन खाना और नेकियों में कमी का अन्देशा	86
क़ियामत में हिसाब कैसे देंगे ?	86
महशर की हौलनाक मन्ज़र कशी	88
फ़ारूक़े आ'ज़म का सादा व मुबारक लिबास	89
ख़लीफ़ए वक़्त और क़ौम की ख़िदमत	89
खजूर की गुठलियों के फ़वाइद	89
फ़ारूक़े आ'ज़म का "शाही लिबास"	90
फ़ारूक़े आ'ज़म के तहबन्द में बारह पैवन्द	90
क़मीस के सबब ताख़ीर पर मा'ज़िरत	90
पुरानी क़मीस दोबारा पहन ली	91
अ़रबो अ़जम के ख़लीफ़ा का लिबास	91
अच्छा लिबास पहनें, लेकिन.....!	94
अदना लिबास ईमान की अ़लामत	94
फ़ारूक़े आ'ज़म का सफ़ेद व जदीद लिबास	94
शलवार नाफ़ के ऊपर बांधते	95
टख़्नों से नीचे शलवार काट दी	95
फ़ारूक़े आ'ज़म का इमामा शरीफ़	95
फ़ारूक़े आ'ज़म की टोपी	96
औ़रतों की त़रह़ बनाव सिंगार की मुमानअ़त	96
फ़ारूक़े आ'ज़म की आ़जिज़ी	96
फ़ारूक़े आ'ज़म ने एक शख़्स से मुआ़फ़ी मांगी	96
सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द	97
न कोई मुहाफ़िज़ न कोई ख़ादिम	97
फ़ारूक़े आ'ज़म गुलामों का हाथ बटाते	98
फ़ारूक़े आ'ज़म और चन्द मुआ़शरती उमूर	98
हाकिम रिआ़या के माल का अमीन है	99
फ़ारूक़े आ'ज़म का जज़्बए ख़ैरख़्वाही	99
मर्दों, औ़रतों के इख़्तिलात़ की मुमानअ़त	100
सफ़र के मदनी फूल	100
तीन मुसाफ़िर एक को अमीर बना लें	100
कोई भी रात को तन्हा सफ़र न करे	101
किसी दिन सफ़र करने की मुमानअ़त नहीं	101
झूट के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म	101
चार फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म	101
ता'रीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीन	102
ता'रीफ़ करने की मज़म्मत	102
मुंह पर ता'रीफ़ करना हलाकत है	102
फ़ारूक़े आ'ज़म और बैठने के मदनी फूल	103
ज़ियादा देर धूप में न बैठो	103
फ़ारूक़े आ'ज़म के बैठने का अन्दाज़	103
इशा के बा'द लोगों से उ़मूमी गुफ़्त्गू	103
इशा के बा'द ग़लत़ियों की इस्लाह़	104
घर में बच्चों की त़रह़ रहो	104
किसी के नमाज़ रोज़े को न देखो	104
सब से अफ़्ज़ल कौन......?	104
ह़म्माम में दाख़िले की ना पसन्दीदगी	105
फ़ारूक़े आ'ज़म और चन्द मुआ़शरती बुराइयां	105
सफ़र करो सिह़्ह़त याब हो जाओगे	106
धूप के पानी से न नहाओ	106
फ़ारूक़े आ'ज़म और क़ैलूला	106
फ़ारूक़े आ'ज़म और अंगूठी	107
तीन ख़ूबियां, तीन बुराइयां	107
मुआ़शरती बुराइयां और उन के नताइज	108
फ़ारूक़े आ'ज़म और ख़्वाहिशाते नफ़्स	108
ख़्वाहिशे नफ़्स की मुख़ालफ़त	108
ख़्वाहिशाते नफ़्स में ताख़ीर	108
नफ़्स की मुख़ालफ़त और इस के उ़यूब का बयान	108
नफ़्स की बीमारी और इस का इलाज	109
चालीस साल से गाजर न खाई	109

www.dawateislami.net

मुख़ालफ़ते नफ़्स के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल	110	शीर ख़्वार बच्चे वाली ख़ातून की ख़ैरख़्वाही	122
फ़ारूके़ आ'ज़म और हुक़ूक़ुल इबाद	111	नाबीना सहाबी के लिये रहनुमा की तक़र्रुरी	123
हुक़ूक़ुल इबाद से ख़लासी नहीं	112	शौहर की जुदाई पर दाद रसी	124
हुक़ूक़ुल इबाद पर तफ़्सीली हदीसे मुबारका	113	फ़ारूके़ आ'ज़म की एक ख़ानदान की दाद रसी	124
(1) फ़ारूके़ आ'ज़म का मिसाली रवय्या	114	इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	125
(2) मुजाहिदीन के अह्लो इयाल से सुलूक	114	फ़ौजियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत	126
(3) मुजाहिदीन के घरों पर जा कर ख़बर गीरी	114	**माले ग़नीमत की तक़्सीम कारी**	126
(4) मुजाहिदीन के अह्लो इयाल के लिये ख़रीदारी	114	ख़ुमुस से ख़ानदाने रसूलुल्लाह की ख़ैरख़्वाही	126
(5) लौंडियों और ग़ुलामों का हुजूम लग जाता	114	औ़रतों वाला बेग सय्यिदा आ़इशा को दे दिया	127
(6) ख़ुद घर पर सौदा सलफ़ पहुंचाते	115	येह माल उ़मर या उन की औलाद का नहीं	127
(7) मुजाहिदीन के मक्तूब घरों पर पहुंचाते	115	अपने अह्ले ख़ाना पर दूसरों को तरजीह़	128
(8) मक्तूब ख़ुद पढ़ कर सुनाते	115	पन्दरह हज़ार दिरहम का हार दे दिया	128
(9) जवाबी मक्तूब के लिये भी आते	115	पैदल के लिये एक, सुवार के लिये दुगना हिस्सा	129
(10) जवाबी मक्तूब ख़ुद लिख देते	115	माले फ़ै में तमाम लोगों का हिस्सा है	129
(11) दौराने सफ़र रुख़्सती का ए'लान फ़रमाते	115	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ का निज़ाम**	129
(12) सत्तू और खजूर की दा'वत आ़म फ़रमाते	116	वज़ाइफ़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने फ़ारूके़ आ'ज़म	130
(13) क़ाफ़िले वालों की अश्या की हिफ़ाज़त फ़रमाते	116	ख़लीफ़ा बनते ही वज़ाइफ़ जारी फ़रमाए	130
(14) क़ाफ़िले वालों की ख़ैरख़्वाही	116	बैतुल माल और रजिस्टर बनाए	130
(15) गिरी पड़ी अश्या को उठा लेते	116	तमाम मुसलमानों को जिज़्या मिलता रहे	131
(16) इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	117	फ़ारूके़ आ'ज़म की दूरअन्देशी	131
इज़ाफ़ी हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी	118	मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारान के वज़ाइफ़	131
मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मुशावरत	118	वज़ाइफ़ देने की तरतीब	132
अ़द्लो इन्साफ़ का क़ियाम	118	रसूलुल्लाह के रिश्तेदारों का लिहाज़	132
मुआ़शरे में आज़ादिये राए	118	मुहाजिरीने अव्वलीन का वज़ीफ़ा	133
मुजरिमों को सज़ाएं देना	119	मुहाजिराते अव्वलीन का वज़ीफ़ा	133
ज़ालिमों के ज़ुल्म से बचाना	119	अन्सार का वज़ीफ़ा	134
मुफ़्त निज़ामे ता'लीम का नफ़ाज़	119	जंगे बद्र में शरीक होने वालों का वज़ीफ़ा	134
मुसाफ़िरों व मेहमानों की ख़ैरख़्वाही	120	शरीकाने बद्र की औलाद का वज़ीफ़ा	134
रिआ़या की ख़बर गीरी करना	120	जंगे बद्र में शामिल ग़ुलामों का वज़ीफ़ा	134
भूके बच्चों वाली ख़ातून की दाद रसी	120	वज़ाइफ़ में महब्बते रसूलुल्लाह का लिहाज़	135
सहाबी की साहिबज़ादी की दस्त्गीरी	120	**उम्महातुल मोमिनीन के वज़ाइफ़**	135
अपाहज, नाबीना, बूढ़ी औ़रत की मदद	121	उम्महातुल मोमिनीन को वज़ाइफ़ भेजा करते	135

www.dawateislami.net

उम्महातुल मोमिनीन का वज़ीफ़ा चार चार हज़ार	135	सूखी खजूरों पर गुज़ारा	149
दीगर लोगों के वज़ाइफ़	135	फ़क़त ज़ैतून खाने से रंग तब्दील हो गया	149
दामाद को ज़ाती माल से अ़ता फ़रमाया	135	फ़ारूके़ आ'ज़म बे मिसाल हुक्मरान	150
फ़ौजियों के वज़ाइफ़	136	**रिआ़या के साथ इज़्हारे हमदर्दी**	151
हर फ़ौजी का वज़ीफ़ा चार हज़ार तक	136	मैं कितना ही बुरा हाकिम होऊंगा	151
मरातिब के लिहाज़ से वज़ाइफ़	136	फ़ारूके़ आ'ज़म ही हर बात कहने के हक़दार	151
लश्कर के अमीरों के वज़ाइफ़	137	इस जानवर पर सुवारी न करूंगा	152
नौमौलूद बच्चों के वज़ाइफ़	137	अपने ऊपर गोश्त खाना ह़राम कर लिया	152
बच्चों के वज़ाइफ़ मुक़र्रर करने का सबब	137	अपनी अज़्वाज से दूरी	152
ग़ुलामों, बांदियों, घोड़ों के वज़ाइफ़	138	मुसलमानों के ग़म से वफ़ात पा जाते	152
ख़ुद अपने हाथों से वज़ाइफ़ तक़्सीम फ़रमाते	138	तरबूज़ खाने पर बेटे को डांट	153
फ़ारूके़ आ'ज़म की उ़म्र में बरकत की दुआ़	139	आ़मुर्रमादह में घी और रोग़नी खाना न खाया	153
हुक्मरानों और ज़िम्मेदारान के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या !	140	बेहतरीन खाना रिआ़या के लिये	154
माल देख कर फ़ारूके़ आ'ज़म रोने लगे	140	बारगाहे इलाही से इस्तिआ़नत	154
कम से कम वज़ीफ़ा दो हज़ार	141	उम्मते मुह़म्मदिय्या को मेरे हाथ पर हलाक न फ़रमा	154
तमाम ह़क़दारों का ह़क़ अदा कर दिया	141	हम से इस बला को दूर फ़रमा	155
बैतुल माल के माल की तक़्सीम	141	तौबा व इस्तिग़फ़ार की तल्क़ीन	155
समन्दरी रास्ते से ग़ल्ला लाया गया	141	**अ़वामुन्नास की ख़ैरख़्वाही**	155
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में वज़ाइफ़ की तक़्सीम का चार्ट	142	ऊंटों का एक त़वील क़ाफ़िला	155
सारा का सारा माल तक़्सीम कर दिया	143	रोज़ाना बीस ऊंट ज़ब्ह़ फ़रमाते	157
हर माह वज़ाइफ़ जारी फ़रमा दिये	144	लोगों में सदक़ात तक़्सीम किये	158
"मुद" और "क़िस्त़" क्या है ?	144	फ़ारूके़ आ'ज़म की ज़ात मर्जए ख़लाइक़	158
फ़ारूके़ आ'ज़म ने ग़नी कर दिया	145	फ़ारूके़ आ'ज़म ने अपने हाथ से पका कर खिलाया	158
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	145	फ़ारूके़ आ'ज़म ने खाना पकाने का त़रीक़ा बताया	159
फ़ारूके़ आ'ज़म और माल की मज़म्मत	146	फ़ारूके़ आ'ज़म खाना पकाना सिखाते	159
मुश्किल वक़्त में रिआ़या की ख़ैरख़्वाही	146	रिआ़या के साथ मां जैसा सुलूक	160
आ़मुर्रमादह की तफ़्सील	146	फ़ारूके़ आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ ख़िदमात	160
अ़वाम के ग़म में बराबरी की शिर्कत	147	मजलिसे ख़ैरख़्वाही का क़ियाम	161
अपने पेट से कलाम	147	मरीज़ों के लिये अ़लाह़िदा खाने का इन्तिज़ाम	161
घी और गोश्त न खाने की क़सम	147	क़ह़्त़ साली के मुतअस्सिरीन की ता'दाद	161
हाकिम को अ़वाम का दर्द कैसे मह़सूस होगा.....?	148	रिआ़या को आ'माले सालिहा की तरग़ीब	162
हुक्मरानों के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह	148	अपने रब को राज़ी करो	162

www.dawateislami.net

अपने रब से डरो	162	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का सफ़रे शाम और वापसी	177
फ़ारूक़े आ'ज़म और बारिश की दुआ	163	सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को फ़ारूक़े आ'ज़म का मक्तूब	179
बाराने रह़मत का सुवाल करो	163	त़ाऊ़न के सबब शहीद होने वाले मुजाहिदीन	180
बारिश वाली आयात की तिलावत की	163	अकाबिरीन को त़ाऊ़न एक साथ लाह़िक़ होना	181
रोते रोते दाढ़ी मुबारका तर हो गई	164	सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल और त़ाऊ़न	181
सय्यिदुना अ़ब्बास के वसीले से दुआ़	164	**फ़ारूक़े आ'ज़म की जानवरों पर शफ़्क़त**	183
या अल्लाह ! हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा	164	ऊंट पर ज़ियादा बोझ लादने वाले की सरज़निश	183
रसूलुल्लाह के क़ासिद की आमद	165	मुझ से बड़ा ख़ादिम कौन हो सकता है......?	184
फ़ारूक़े आ'ज़म और सय्यिदुना अ़ब्बास की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़	165	इन जानवरों का भी तुम पर ह़क़ है	184
सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित के अश्आ़र	167	ऊंट के बारे में पूछा जाएगा	185
इस्लाम में वसीले का तसव्वुर	168	इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	185
वसीला किसे कहते हैं.....?	168	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम**	186
वसीले के सुबूत पर तीन आयाते मुबारका	168	शूराई निज़ाम किसे कहते हैं	187
वसीला तलाश करो	168	मुशावरत से मुतअ़ल्लिक़ एक नफ़ीस तौजीह	187
वसीला बनाना मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा	169	मश्वरे को उम्मत के लिये रह़मत बना दिया	187
ह़ुज़ूर के वसीले से दुआ़ करते	170	अ़ह्दे रिसालत का शूराई निज़ाम	188
आइन्दा आने वालों के वसीले से दुआ़ मांगना	170	अ़ह्दे रिसालत में मुशावरत की पांच मिसालें	188
अम्बियाए किराम के वसीले से दुआ़ मांगना	171	अ़ह्दे सिद्दीक़ी का शूराई निज़ाम	189
रसूलुल्लाह ने वसीले की तल्क़ीन फ़रमाई	171	मुशावरत को ख़ुद पर लाज़िम कर लो	189
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में क़ब्रे रसूल पर सह़ाबी की फ़रयाद	172	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शूराई निज़ाम**	190
बा'दे विसाल रसूलुल्लाह के वसीले से दुआ़	172	(1) फ़ारूक़े आ'ज़म के नज़्दीक तीन त़रह़ के लोग हैं	190
औलियाए किराम के वसीले से दुआ़ करना	174	(2) जिस काम में मश्वरा नहीं उस में कोई भलाई नहीं	191
सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी की क़ब्र के वसीले से दुआ़	174	(3) ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों से मश्वरा करो	191
सय्यिदुना इमाम बुख़ारी की क़ब्र के वसीले से दुआ़	174	(4) मुशावरत वाली बात ही पुख़्ता होती है	191
सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी के वसीले से दुआ़	175	(5) जो बिल मुशावरत अम्र क़ाइम करे उस की इत्तिबाअ़ ज़रूरी है	191
वसीले के बारे में ख़ुलासए कलाम	175	फ़ारूक़े आ'ज़म की मजलिसे शूरा	192
आज़माइश में अ़वाम के साथ बराबरी की शिर्कत	175	फ़ारूक़े आ'ज़म की मजलिसे शूरा के अराकीन	192
त़ाऊ़ने अ़मवास क्या है....?	175	फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा की मश्वरा गाह	192
त़ाऊ़न किसे कहते हैं.....?	176	फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा के मश्वरे का त़रीक़ए कार	193
त़ाऊ़न से मरने वाला शहीद	176	फ़ारूक़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरे	193
त़ाऊ़न से भागना ममनूअ़	176	मजलिसे शूरा के मश्वरों की चन्द झलकियां	194
वबा फैलने पर इत्तिलाअ़ देने का ह़ुक्म	177	फ़ारूक़े आ'ज़म की एक और उ़मूमी मजलिसे मुशावरत	194

www.dawateislami.net

फ़ारूके आ'ज़म की मजलिसे मुशावरत के अराकीन	195
फ़ारूके आ'ज़म की मुख़्तलिफ़ मुशावरतें	195
फ़ारूके आ'ज़म की मुश्किल मुआमले में नौजवानों से मुशावरत	195
फ़ारूके आ'ज़म की औ़रतों से मुशावरत	196
फ़ारूके आ'ज़म सय्यिदतुना शिफ़ा की राए को मुक़द्दम रखते	196
औ़रतों की क़ाबिले अ़मल बातों पर ही अ़मल करो	196
चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल	197
कम उ़म्र होना मश्वरा देने के लिये रुकावट नहीं	198
ज़हीनो फ़तीन व उ़लूमे दीनिया के माहिर से मश्वरे का हुक्म	199
हिक्मत व दानाई अल्लाह की अ़ता है	199
मुशावरत के लिये ओ़ह्दे दार होना शर्त़ नहीं	200
फ़ौजी कमान्डरों को मुशावरत का हुक्म	201
जंगी उमूर के माहिरीन से मुशावरत का हुक्म	201
मुल्के शाम में दाख़िले के लिये अ़ज़ीम मुशावरत	202
इस अ़ज़ीम मुशावरत की सब से अहम बात	202
फ़ारूके आ'ज़म के शूराई निज़ाम का त़रीक़ए कार	203
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में शूराई निज़ाम की वुस्अ़त	203
मशरिक़ो मग़रिब में फ़तावा फ़ारूक़ी की धूम का सबब	205
फ़ारूके आ'ज़म की मुशावरत के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़	205
मुशावरत के तमाम वाक़िआ़त को बयान करना मुश्किल है	206
शूराई निज़ाम फ़ारूके आ'ज़म की फ़िरासत व करामत है	207
शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा मदनी फूलों का गुलदस्ता	208
शूराई निज़ाम से मुतअ़ल्लिक़ा ज़रूरी उमूर	211
शूराई निज़ाम के नफ़ाज़ में एह़तियातें	212
मश्वरे को मुअस्सिर बनाने वाले मदनी फूल	212
मश्वरे के दौरान इन उमूर को मद्दे नज़र रखिये	213
मश्वरा देने वाले के लिये मदनी फूल	214
मश्वरा लेने वाले के लिये मदनी फूल	218
मश्वरे के बा'द येह बातें पेशे नज़र रखिये	221
अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर हैं	222
अमीरे अहले सुन्नत के मदनी मश्वरे का अन्दाज़	222
दा'वते इस्लामी का शूराई निज़ाम	224
दा'वते इस्लामी की मुख़्तलिफ़ मजालिस	224
दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा	225
निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	226
निज़ामे अ़ह्दे फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	227
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मज़हबी आज़ादी	227
फ़ारूके आ'ज़म की बुढ़िया औ़रत को इस्लाम की दा'वत	229
फ़ारूके आ'ज़म की ग़ुलाम को इस्लाम की दा'वत	229
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आमदो रफ़्त की आज़ादी	230
अकाबिरीन सहा़बा को मदीनए मुनव्वरा में रहने का हुक्म	230
फ़ारूके आ'ज़म की सियासी हिक्मत व बसीरत	230
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में इनफ़िरादी मिल्किय्यत की आज़ादी	232
अहले ख़ैबर को इवज़ में माल अ़ता फ़रमाया	232
ह़रमे मक्का की तौसीअ़ के लिये गिराए गए मकानों का मुआवज़ा	232
अ़ह्दे फ़ारूक़ी और आज़ादिये राए	232
मुज्तहिदीन को ग़ैर मन्सूस अ़लैह मसाइल में इजतिहाद की इजाज़त	233
अ़वामुन्नास को नसीह़त करने की इजाज़त	233
ऐ रिआ़या ! ख़ैर पर हमारी मदद करो	234
हाकिमे वक़्त की इस्लाह़ करने की इजाज़त	234
मोह़तसिब की मौजूदगी पर रब का शुक्र	234
हम तल्वार से सीधा करेंगे	235
फ़ारूके आ'ज़म की सब से पसन्दीदा शख़्सिय्यत	235
दौराने बयान ए'तिराज़ को दूर किया	235
ऐ उ़मर......! अल्लाह से डरो	236
अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़हर	237
फ़ारूके आ'ज़म की आ'ला ज़र्फ़ी	238
तीन बातें न होतीं तो बेहतर था	238
औ़रत ने सह़ीह़ कहा और मर्द ने ख़त़ा की	238
काश हम सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वाले बन जाएं	239
ख़िलाफ़े शरीअ़त आरा की मुमानअ़त	239
ऐ अल्लाह के दुश्मन ! मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा	240
अपनी आख़िरत दाव पर मत लगाइये	240
क़ुरआनी तावीलात पूछने वाले को सज़ा	241

www.dawateislami.net

बेजा ए'तिराज़ात से एहतिराज़ कीजिये	242	कामिल अ़द्लो इन्साफ़ का इन्हिसार चार बातों पर है	261
तौहीने मुस्लिम वाली आरा की मुमानअ़त	242	अ़हदे फ़ारूक़ी में मुकम्मल क़ानून का नफ़ाज़	261
हिजू करने पर क़ैद कर दिया	242	अ़हदे फ़ारूक़ी में मुख़्तलिफ़ क़ाज़ियों का तक़र्रुर	262
हर मुसलमान का एहतिराम कीजिये	243	क़ाज़ियों की तक़र्रुरी में फ़ारूक़े आ'ज़म की दो ख़ुसूसिय्यात	262
अहकामे शरइय्या की पाबन्दी कीजिये	244	**अ़हदे फ़ारूक़ी के अ़दालती क़ाज़ी व जज**	262
शराबी आया और मुअज़्ज़िन बन गया	245	उन अफ़राद के अस्मा जो फ़क़त् क़ाज़ी थे	262
अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया	247	उन अफ़राद के अस्मा जो क़ाज़ी व गवर्नर दोनों थे	264
अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे अ़द्लिया	248	क़ाज़ियों का तक़र्रुर अ़मली इम्तिहान के बा'द होता था	265
अ़हदे रिसालत से क़ब्ल नाम निहाद अ़द्लिया का निज़ाम	248	**अ़दालती जजों की फ़ारूक़ी तरबिय्यत**	266
अ़द्लो इन्साफ़ करने पर तीन आयाते मुबारका	249	**फ़ारूक़ी क़ाज़ियों के मुख़्तलिफ़ औसाफ़**	266
अ़द्लो इन्साफ़ न करने पर तीन आयाते मुबारका	250	(1) क़ाज़ी अहकामे शरइय्या का आ़लिम हो	266
तीन आयात के बा'द फ़रीक़ैन में फ़ैसला	250	(2) क़ाज़ी मुत्तक़ी व परहेज़गार हो	266
अ़द्लो इन्साफ़ पर तीन अहादीसे मुबारका	250	(3) लालची और हरीस न हो	267
अ़द्लो इन्साफ़ के वुजूब पर इजमाअ़ है	251	(4) क़ाज़ी ज़हीनो फ़त़ीन और दूरअन्देश हो	267
फ़ारूक़े आ'ज़म का अ़द्लो इन्साफ़	252	(5) क़ाज़ी ए'तिदाल पसन्द हो	268
फ़ारूक़े आ'ज़म का पहला ख़ुत़बा उसूले अ़द्ल पर मुश्तमिल था	252	(6) क़ाज़ी शख़्सिय्यत व रो'ब व दबदबे वाला हो	268
"अ़द्ल" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से अ़द्ल पर		एक अहम वज़ाहत	269
फ़ारूक़े आ'ज़म के तीन फ़रामीने मुबारका	252	(7) क़ाज़ी साहिबे सरवत और आ'ला नसब वाला हो	269
अ़द्लो इन्साफ़ न करूं तो मर जाना बेहतर	252	फ़ारूक़े आ'ज़म ने ग़नी को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया	269
मैं कितना बुरा हाकिम होऊं अगर....!	253	(8) क़ाज़ी इख़्लास व लिल्लाहिय्यत के साथ फ़ैसला करे	270
बकरी का बच्चा भूक से मर जाए तो मुझ से सुवाल होगा	253	एक अहम वज़ाहती मदनी फूल	270
अ़हदे फ़ारूक़ी के "निज़ामे अ़द्लिया" की तफ़्सील	253	**क़ाज़ियों के फ़राइज़े मन्सबी**	271
फ़ारूक़े आ'ज़म ने "अ़द्लिया" को "इन्तिज़ामिया" से अलग किया	253	(1) पेचीदा व मुश्किल मुआ़मलात में मुशावरत का हुक्म	271
फ़ारूक़े आ'ज़म ने निज़ामे अ़द्लिया को बिल्कुल वाज़ेह कर दिया	254	(2) बिग़ैर जुर्म के कारवाई की मुमानअ़त	271
निज़ामे अ़द्लिया के उसूलो ज़वाबित़	255	(3) क़ाज़ियों को तहाइफ़ लेने की मुमानअ़त	272
एक अहम वज़ाहती मदनी फूल	255	(4) फ़ैसला करने में रिश्वत लेने की मुमानअ़त	273
निज़ामे अ़द्लिया के बुन्यादी उसूलो ज़वाबित़	255	हराम ख़ोरी के दो दरवाज़े	273
निज़ामे अ़द्लिया के उ़मूमी उसूलो ज़वाबित़	256	(5) मुक़द्दमे की उजरत लेने की मुमानअ़त	273
सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब	256	(6) मुआ़मले की मुकम्मल तह्क़ीक़ करने का हुक्म	273
इस मक्तूब से हासिल होने वाले उसूले अ़द्ल	258	(7) फ़रीक़ैन को सुल्ह के लिये छोड़ देने का हुक्म	274
अबू उ़बैदा बिन जर्राह को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब	260	कौन सी सुल्ह कराई जाए.....?	274
अमीरे मुआ़विया को उसूले अ़द्ल से मुतअ़ल्लिक़ मक्तूब	260	(8) ख़रीदो फ़रोख़्त की मुमानअ़त	275

www.dawateislami.net

(9) मुजरिम को सज़ा देने से क़ब्ल सफ़ाई का मौक़अ़	275
(10) फ़रीक़ैन के साथ यक्सां बरताव का हुक्म	276
(11) क़ाज़ी कमज़ोरों की हिम्मत अफ़्ज़ाई करे	276
(12) ग़ैर शहरी या ग़ैर मुल्की के साथ बेहतर सुलूक करे	276
(13) क़ाज़ी वुस्अ़ते क़ल्बी और तहम्मुल मिज़ाजी से काम ले	277
(14) क़ाज़ी गुस्से में फ़ैसला न करे	277
(15) क़ाज़ी भूक प्यास में फ़ैसला न करे	277
(16) फ़ैसला करने में ज़ाहिरी दलाइल का ए'तिबार	278
(17) तौबा के बा'द हुस्ने सुलूक की ताकीद	278
फ़ारूके़ आ'ज़म ने रिश्वत का दरवाज़ा बन्द कर दिया	279
फ़ारूके़ आ'ज़म का एक अ़ज़ीमुश्शान इजतिहादी अम्र	280
अ़द्ल के क़ियाम में माहिरीने फ़न की शहादत	280
अ़दालती जजों का एह़तिसाब और उन की मा'ज़ूली	281
दिमश्क़ के क़ाज़ी की मा'ज़ूली	281
सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित की मा'ज़ूली	282
क़ाज़ियों के फ़ैसलों पर कड़ी नज़र	282
निज़ामे अ़द्लिया का अस्ल मक़्सद	283
फ़ारूके़ आ'ज़म ने इन्साफ़ का हुसूल आसान बना दिया	283
अ़ह्दे फ़ारूक़ी की अ़दालत गाहें	283
कोई ज़िलअ़ क़ाज़ी से ख़ाली न था	284
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में अ़वाम की क़ानून से वाक़िफ़िय्यत	284
मुजरिम के ह़क़ में ला इल्मी हुज्जत नहीं	284
अ़ह्दे फ़ारूक़ी के माहिर क़ानून दान	285
क़ानून दानों से पूछगछ	286
फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले	286
अ़ह्दे रिसालत में फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले	286
अ़ह्दे रिसालत में फ़ारूके़ आ'ज़म का तारीख़ी फ़ैसला	287
अ़ह्दे सिद्दीक़ी में फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले	288
फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसले दूसरों के लिये नज़ीर हैं	289
बा'द के ख़ुलफ़ा ने भी फ़ारूक़ी फ़ैसलों को बर क़रार रखा	289
सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी की इत्तिबाए फ़ारूक़ी	289
मौला अ़ली शेरे ख़ुदा की इत्तिबाए फ़ारूक़ी	290
फ़ारूके़ आ'ज़म के फ़ैसलों की ता'दाद	291
फ़ारूके़ आ'ज़म का फ़ैसला करने का अन्दाज़	291
फ़ैसला करने से क़ब्ल दुआ़ मांगते	291
फ़क़त ह़क़ बात का ही फ़ैसला फ़रमाते	291
फ़ैसला दुरुस्त ! तो अल्लाह की त़रफ़ से, ग़लत़ ! तो उ़मर की त़रफ़ से	292
दिल में नर्म गोशा होता तो फ़ैसला न फ़रमाते	292
यहूदी ने दुरुस्त फ़ैसले की गवाही दी	293
फ़ारूके़ आ'ज़म ए'तिदाल के साथ फ़ैसला फ़रमाते	293
फ़ारूके़ आ'ज़म के चन्द तारीख़ी फ़ैसले	294
(1) अल्लाह का ख़लीफ़ा तुम से हरगिज़ नहीं डरता	294
(2) अमीरुल मोमिनीन के बेटे का ऊंट	295
(3) अमीरुल मोमिनीन की ज़ौजा का तोह़फ़ा	296
फ़ारूके़ आ'ज़म की जराइम के ख़िलाफ़ क़ानूनी सज़ाएं	296
जा'ली मोहर बनवाने वाले को सज़ा	296
ज़िना पर मजबूर करने वालों को सज़ा	296
शराब नोशी की ह़द 80 कोड़े मुक़र्रर करना	297
शराब वाला घर नज़्रे आतश कर दिया	298
फ़ारूके़ आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ फ़ैसले	298
(1) फ़ारूके़ आ'ज़म और एक मजलिस की तीन त़लाक़ों का हुक्म	298
रसूलुल्लाह ने इकठ्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया	299
सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म ने यक मुश्त तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया	299
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने इकठ्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया	300
सय्यिदुना मौला अ़ली ने इकठ्ठी तीन त़लाक़ को नाफ़िज़ फ़रमाया	300
(2) फ़ारूके़ आ'ज़म और निकाहे मुतआ़ की हुरमत	301
फ़ारूके़ आ'ज़म अ़द्लो इन्साफ़ का नमूना थे	302
अ़द्ले फ़ारूक़ी पर ज़मीन की गवाही	303
फ़ारूके़ आ'ज़म के अ़द्ल का वसीला	303
अ़द्ले फ़ारूक़ी पर अहले बैत की गवाही	304
इश्क़ो महब्बत के मदनी फूल	305
फ़ारूक़ी तमग़ए इम्तियाज़ ह़ासिल करने वाले क़ाज़ी	306
औरतें मुआ़ज़ जैसा बेटा पैदा करने से आ़जिज़ हैं	306
शानदार कारकर्दगी की तीन लत़ीफ़ वुजूहात	307

www.dawateislami.net

अ़हदे फ़ारूक़ी के ख़ुसूसी जज 308
(1) दो औ़रतों के दरमियान फ़ैसला 309
(2) अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्चे की विरासत का मस्अला 311
फ़ारूक़े आ'ज़म के मुआ़विने ख़ुसूसी फ़िल क़ज़ा 313
इ़श्क़ो मह़ब्बत के मदनी फूल 313
मुख़्तलिफ़ शहरों और सूबों पर मुक़र्रर फ़ारूक़ी क़ाज़ियों का चार्ट 315
निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम 317
निज़ामे अ़द्लिया में मुसावात का क़ियाम 318
जराइम के ख़ातिमे में मुआ़विन सुन्हरी उसूल 318
निज़ामे अ़द्ल ह़ाकिम व मह़कूम सब के लिये 319
गवर्नर के बेटे पर भी कोड़े बरसाए गए 319
सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी के ख़िलाफ़ फ़ैसला 320
क़ाज़ियों व गवर्नरों को मुसावात की हिदायत 321
इन्साफ़ दिलाना मेरी ज़िम्मेदारी है 321
सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स को सख़्त सरज़निश 322
ज़ुल्म के ख़िलाफ़ सालाना इजतिमाई मश्वरा 323
फ़ारूक़े आ'ज़म की अपनी ही अ़दालतों में ह़ाज़िरी 324
फ़ारूक़ी जज और फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला 324
सय्यिदुना उबय बिन का'ब ने फ़ारूक़े आ'ज़म का फ़ैसला किया 326
फ़ारूक़े आ'ज़म की मुसावात की चन्द मिसालें 326
रिआ़या की मुसीबत में बराबर की शिर्कत 326
ख़ुद्दाम को साथ खाना न खिलाने पर जलाले फ़ारूक़ी 326
मख़्सूस खाने पर गवर्नर की सरज़निश 327
गुस्ताख़ी ह़ाकिम फ़ारूक़ी अ़दालत में 328
फ़ैसला करने के मदनी फूल 329
शकर रन्जियां और इन के नुक़्सानात 329
शैत़ान आपस में लड़वाता है 330
(1) उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हों 330
(2) जो अह्ल हो वोही फ़ैसला करे 331
(3) "ह़कम" बनने की ख़्वाहिश नहीं करनी चाहिये 332
ज़िम्मेदारी मांग कर लेने की सूरत 332
(4) फ़रीक़ैन में सुल्ह़ करा दीजिये 333
मियां बीवी में सुल्ह़ करा दीजिये 334
(5) फ़रीक़ैन से बराबरी का सुलूक कीजिये 335
(6) हर फ़रीक़ की बात तवज्जोह से सुनिये 335
(7) फ़ैसला करने में जल्द बाज़ी न कीजिये 336
सह़ाबिये रसूल की ह़िकायत 336
(8) ख़ूब तह़क़ीक़ से काम लीजिये 337
दोस्त के क़ातिल 337
(9) ग़ुस्से में फ़ैसला न कीजिये 338
(10) किसी फ़रीक़ का ह़क़ ज़ाएअ़ न हो 338
दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करने का मश्वरा 339
अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर 340
अमीरे अह्ले सुन्नत का फ़ैसला करने का अन्दाज़ 340
अ़हदे फ़ारूक़ी का निज़ामे एह़तिसाब 344
फ़ारूक़े आ'ज़म का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر 345
दौरे जाहिलिय्यत की रस्म को ख़त्म फ़रमा दिया 346
फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने घरवालों का एह़तिसाब 347
क़ुर्ब के सबब अह्ले ख़ाना की सज़ा भी दुगनी 347
(1) कंघी करने और अच्छा लिबास पहनने पर बेटे का एह़तिसाब 348
(2) एक ऊंट के सबब बेटे का एह़तिसाब 348
(3) तिजारत में बेटे की रिआ़यत पर एह़तिसाब 349
(4) तिजारत में नफ़्अ़ पर दो बेटों का एह़तिसाब 349
(5) वज़ीफ़ा देने में बेटे को तम्बीह 350
(6) बेटे से बैतुल माल के माल की वापसी का मुत़ालबा 351
(7) बिग़ैर त़लब के माल लेने पर बेटे का मुह़ासबा 352
(8) फ़ारूक़े आ'ज़म की ज़ौजा और ख़ुश्बू का वज़्न 352
दा'वते इस्लामी और "फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स" 353
(9) अ़वामी तोह़फ़े पर घरवालों का एह़तिसाब 354
(10) ज़ौजा को दख़्ल अन्दाज़ी की मुमानअ़त 355
(11) ज़ौजा का तोह़फ़ा बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया 355
(12) अच्छी चादर अपनी ज़ौजा को न दी 356
(13) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपनी सगी बेटी का एह़तिसाब 356
(14) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने दामाद का एह़तिसाब 357

www.dawateislami.net

ज़िम्मेदारान के लिये मदनी फूल	357
बा'ज़ मुख़्तलिफ़ शख़्सिय्यात का एहतिसाब	358
हज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़यान का एहतिसाब	358
मुसलमानों को तकालीफ़ से बचाइये	359
फ़ारूक़े आ'ज़म का सय्यिदुना जारूद का एहतिसाब	359
जहां तआ़रुफ़ की ह़ाजत हो वहीं करवाइये	360
सय्यिदुना उबय बिन का'ब का एहतिसाब	360
नफ़्सो शैतान के ख़िलाफ़ जंग	361
सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री का एहतिसाब	361
वक़्फ़ के पैसों में एहतियात कीजिये	362
बा'ज़ बेजा तसर्रुफ़ाती उमूर का एहतिसाब	362
(1) मुसलसल दो दिन गोश्त ख़रीदने पर एहतिसाब	363
(2) एक मांगने वाले साइल का एहतिसाब	363
(3) सर झुका कर चलने वाले का एहतिसाब	365
(4) मुतकब्बिराना चाल वाले शख़्स का एहतिसाब	366
(5) एक मरयल शख़्स का एहतिसाब	366
(6) नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करने वाले का एहतिसाब	367
(7) एक ऊंट वाले का एहतिसाब	367
(8) फ़ारूक़े आ'ज़म का अपनी ता'रीफ़ पर एहतिसाब	368
मेरी भी हलाकत तेरी भी हलाकत	368
अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश होना कैसा......?	368
(9) मक़ामे तोहमत पर खड़े होने वाले का एहतिसाब	371
तोहमत की जगहों से बचिये	371
फ़ारूक़े आ'ज़म से मन्सूब ग़लत़ इस्तिद्लालात	372
(1) फ़ारूक़े आ'ज़म और बैअ़ते रिज़्वान वाला दरख़्त	372
चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल	373
(2) हज़रते सय्यिदुना दानियाल عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र मुबारक	375
सय्यिदुना दानियाल عَلَيْهِ السَّلَام की मुबारक दुआ़ क़बूल हुई	376
जसदे मुबारक की बे हुर्मती का अन्देशा था	376
फ़ारूक़े आ'ज़म ने हुक्मे शरई पर अ़मल किया	376
(3) लोगों को नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया	377
चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल	377
(4) ऐ ह़जरे अस्वद ! तू नफ़्अ़ व नुक़्सान नहीं दे सकता	379
चन्द अहम वज़ाहती मदनी फूल	379
रिआ़या की सिह़्ह़त व तन्दुरुस्ती पर तवज्जोह	381
तोन्द वाले शख़्स का एहतिसाब	382
अपने आप को तोन्द वाला होने से बचाओ	382
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	382
अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं	385
फ़ारूक़े आ'ज़म और जुज़ामी बुढ़िया की इस्लाह़	385
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	386
एक शराबी को सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की नसीह़त	387
मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही कीजिये	388
मख़्सूस अफ़राद पर मुश्तमिल मजालिस के इनइक़ाद का एहतिसाब	390
सब के साथ यक्सां सुलूक रखिये	391
फ़ारूक़े आ'ज़म का अपने नफ़्स का मुह़ासबा	391
अपने नफ़्सों का मुह़ासबा करो	391
फ़ारूक़े आ'ज़म और मुह़ासबए नफ़्स	392
नफ़्स को ज़लील करने की ठान ली	392
अमीरे अह्ले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं	392
रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	393
मोह़कमए पोलीस व फ़ौज	394
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह़कमए पोलीस	395
मोह़कमए पोलीस के फ़ौजी अफ़सरान	395
जेलख़ाने क़ाइम फ़रमाए	395
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में मोह़कमए फ़ौज	396
अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ौज की तक़्सीम	396
जंगी फ़ौज दो त़रह की थी	396
तमाम फ़ौजियों का इब्तिदाई रेकॉर्ड	397
मुख़्तलिफ़ जगहों पर फ़ौज की तक़र्रुरी	397
मफ़्तूहा अ़लाक़ों में फ़ौजी छावनियां	398
मुख़्तलिफ़ फ़ौजी छावनियां और इन के ज़िम्मेदार	398
मिस्र की फ़ौजी छावनियां	398
फ़ौजी छावनियों की अज़ सरे नौ ता'मीर	400

www.dawateislami.net

हर साल इस्लामी फ़ौज में इज़ाफ़ा	400	दो गवाहों के बिग़ैर अ़द्मे क़बूलिय्यत	420
इस्लामी फ़ौज की वुस्अ़त	400	आयाते क़ुरआन में लुग़त का ए'तिबार	421
जंगी तदाबीर के माहिर फ़ौजी कमान्डर	401	अख़्ज़े क़ुरआन में फ़ारूक़ी एहतियात़	421
फ़ौजियों की तनख़्वाहें	402	क़ुरआने पाक का इम्ला क़रशी जवानों से	421
इस्लामी लश्करों के लिये रस्द या'नी ग़ल्ला वग़ैरा का इन्तिज़ाम	403	क़ुरआने पाक की बारीक किताबत की मुमानअ़त	421
रस्द या'नी ग़ल्ला वग़ैरा का मुस्तक़िल शो'बा	403	नाशिरीने क़ुरआन एहतियात़ से काम लें	422
फ़ौजियों की ज़ाती ज़रूरिय्यात का सामान	403	"नह्व" (अ़रबी ग्रामर) वज़्अ़ करने का हुक्म दे दिया	422
तनख़्वाहों की तक़्सीम का त़रीक़ए कार	404	ए'राबी ग़लती करने वाले को कोड़ा लगाते	423
तनख़्वाहों में सालाना इज़ाफ़ा (increment)	404	**क़ुरआने पाक से मुतअ़ल्लिक़ दीगर फ़ारूक़ी इक़्दामात**	423
इज़ाफ़ी सलाहिय्यत पर ख़ुसूसी वज़ाइफ़	404	क़ुरआने पाक के साथ सफ़र की मुमानअ़त	423
कसरते माल के नुक़्सानात	405	क़ुरआन के वसीले से मांगो	424
मौसिम के लिहाज़ से फ़ौज की तक़्सीम	405	दिल जमई के साथ तिलावत करो	424
फ़ौज को ख़ुशगवार मक़ाम की सैर का हुक्म	405	बिग़ैर वुज़ू क़ुरआन पढ़ना जाइज़ है	424
फ़ौजियों को जंग से रुख़्सत	406	जुनुबी और हाइज़ा को क़ुरआन पढ़ना मन्अ़ है	425
फ़ौजियों के ना'रे : ना'रए तक्बीर, ना'रए रिसालत	406	क़ुरआने पाक को छूने और पढ़ने के मदनी फूल	425
फ़ौजियों के साथ रहने वाली ज़रूरी अश्या	408	तफ़्सीर बिर्राए की मुमानअ़त	426
अ़हदे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां	409	क़ुरआन के बदले ओ़हदा देने की मुमानअ़त	426
अ़हदे फ़ारूक़ी में इल्मी सरगर्मियां	410	बिग़ैर तफ़्सीर के क़ुरआने पाक पढ़ना	427
इल्म की अहम्मिय्यत पर फ़रामीने फ़ारूके आ'ज़म	410	**मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान**	428
हिफ़ाज़ते इल्म के लिये फ़ारूक़ी ख़िदमात	411	क़ुरआन में एक दूसरे से मुराजअ़त	428
फ़ारूके आ'ज़म और हिफ़ाज़ते क़ुरआन	412	मआ़नी को समझ कर क़ुरआने पाक पढ़ना	428
एक अहम वज़ाहती मदनी फूल	412	क़ुरआन पर उजरत लेने की मुमानअ़त	429
अ़हदे रिसालत के मुहाफ़िज़े क़ुरआन	413	**मुख़्तलिफ़ फ़ितनों का सद्दे बाब**	430
अ़हदे सिद्दीक़ी के मुहाफ़िज़े क़ुरआन	413	फ़िर्क़ा हरूरिय्या का सद्दे बाब	430
फ़ारूके आ'ज़म की हिफ़ाज़ते क़ुरआन की तदाबीर	414	इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	432
अ़लाक़ाई दर्सो तदरीस की तरकीब	414	**ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआन**	433
अ़हदे फ़ारूक़ी के मुअ़ल्लिमीने क़ुरआन	415	ख़ूब सूरत आवाज़ में तिलावते क़ुरआन	433
मन्सूख़ आयात की अ़लाहिदगी	416	मेरे पास तुम्हारे जैसी आवाज़ नहीं	433
एक अहम वज़ाहती मदनी फूल	417	फ़ारूके आ'ज़म का अन्दाज़े तिलावत	434
तफ़्सीरी इ़बारात की अ़लाहिदगी	417	फ़ारूके आ'ज़म और ख़िदमते क़ुरआन का सिला	435
आयतों के साथ तफ़्सीर न लिखने की हिक्मत	418	**फ़ारूके आ'ज़म और हिफ़ाज़ते ह़दीस**	436
सूरतों की आयात की छान बीन	419	**हिफ़ाज़ते ह़दीस के उमूर की तफ़्सील**	436

www.dawateislami.net

(1)....फ़ारूके़ आ'ज़म का ख़ुद अहादीस बयान न करना	437
फ़ारूके़ आ'ज़म का माहिराना नफ़्सियाती अ़मल	437
रिवायते ह़दीस में फ़ारूके़ आ'ज़म की एह़तियात	438
फ़ारूके़ आ'ज़म और ह़दीस में कमी बेशी का ख़ौफ़	439
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	439
(2)....गवाह के बिग़ैर अह़ादीस बयान करने की मुमानअ़त	440
ह़दीस पर गवाह लाओ वरना दर्दनाक सज़ा दूंगा	440
अगर तुम सच्चे हो तो गवाह ले कर आओ	441
ह़दीस के मुआ़मले में एह़तियात से काम लेना चाहता हूं	441
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	442
(3)....बिग़ैर गवाह ह़दीस बयान करने पर सरज़निश	443
फ़ारूके़ आ'ज़म ने तीन अस्ह़ाब को क़ैद फ़रमा दिया	443
सय्यिदुना उबय बिन का'ब को दुर्रा लगाया	444
एक अहम वज़ाह़ती मदनी फूल	444
सय्यिदुना अबू हुरैरा को बयाने अह़ादीस की इजाज़त	445
(4)....उमूरे ह़िफ़ाज़ते ह़दीस की ह़िक्मतें	445
तिलावते क़ुरआन की रग़बत बाक़ी रहे	446
अ़ल्लामा ज़हबी की दो नफ़ीस वुजूहात	446
अह़ादीस बयान करने में लोग मोह़तात हो जाएं	447
सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म ज़रूर मार से डराते	447
अ़ह्दे फ़ारूक़ी की अह़ादीस बयान करो	447
फ़ारूके़ आ'ज़म की रिवायत से रोकने की मस्लह़त	448
ग़लत बात मन्सूब न हो जाए	448
फ़ारूके़ आ'ज़म ने कसरते रिवायत से मन्अ़ फ़रमाया	449
सह़ाबए किराम का कसरते रिवायत से रुकना	449
सय्यिदुना अनस बिन मालिक की मुवाफ़िक़त	449
सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम की मुवाफ़िक़त	450
शैत़ान झूटी बात बयान करवाता है	450
सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास की मुवाफ़िक़त	451
फ़ारूके़ आ'ज़म का शौके़ इल्मे ह़दीस	452
बच्चा साक़ित करने के जुर्म के बारे में इस्तिफ़्सार	452
जिस्म को गुदवाने के मुतअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार	452
इल्म को फैलाने की तरग़ीब	453
मुख़्तलिफ़ सुवालात करने की मुमानअ़त	453
मा'दूम अश्या के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल की मुमानअ़त	453
सितारों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल की मुमानअ़त	454
इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	454
रिआ़या की ता'लीमो तरबिय्यत की कोशिशें	455
फ़ारूके़ आ'ज़म के मुख़्तलिफ़ इस्लाह़ी मल्फ़ूज़ात	455
(1) अ़मल में इख़्लास की तरबिय्यत	455
हर अ़मल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हो	456
(2) हर नेकी की अस्ल या'नी "मुराक़बा" की तरबिय्यत	456
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है	457
(3) आ'माल में इस्तिक़ामत की तरबिय्यत	458
इस्तिक़ामत करामत से बढ़ कर है	458
इस्तिक़ामत ह़ासिल करने के मदनी फूल	458
(4) मुसीबतों पर सब्र की तरबिय्यत	460
आज़माइशों पर सब्र बाइसे अज्र है	460
(5) ने'मतों पर शुक्र की तरबिय्यत	461
(6) दुन्यवी पकड़ से ख़ौफ़ दिलाना	462
(7) उम्मीद व ख़ौफ़ दोनों को जम्अ़ करने की तरग़ीब	463
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहिये	463
क्या हम अपनी तक़्दीर ही पर भरोसा कर लें ?	465
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस न हों	466
(8) ख़ौफ़े ख़ुदा की पहचान का त़रीक़ा	467
(9) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात पर तवक्कुल की तरबिय्यत	469
अस्बाब पर नज़र तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं	469
ह़क़ीक़ी मुतवक्किल कौन है ?	469
मुतवक्किल की तीन अ़लामतें	470
(10) सख़ावत व बुर्दबारी की तरबिय्यत	470
(11) नसीह़त करने वाले की बात मानने की तरबिय्यत	471
अ़लाके़ का बद मुआ़श मुबल्लिग़ बन गया	473
फ़ारूके़ आ'ज़म के ज़र्बुल मसल ह़कीमाना अक़्वाल	474
अ़ह्दे फ़ारूक़ी का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़	476

www.dawateislami.net

मुसलमानों का ह़क़ीक़ी मदनी मर्कज़	476	मुफ़्तिये मिस्र का इल्मी मक़ामो मर्तबा	508
अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मुफ़्तियाने किराम	479	**फ़ारूक़े आ'ज़म की इल्मी मुआ़वनत**	508
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की अ़ज़ीम कोशिशें	480	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का अस्ल मक़्सद	509
अह़कामे शरइय्या के मराकिज़ व दारुल इफ़्ता	483	**उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम की तनख़्वाहें**	509
(1)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का मक्की तरबिय्यती दारुल इफ़्ता	483	मदीनए मुनव्वरा के तीन मुदर्रिसीन की तनख़्वाहें	510
मक्की दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती पर शफ़्क़ते फ़ारूक़ी	484	मुदर्रिसीन की तनख़्वाहों में इज़ाफ़ा	510
(2)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का मदनी दारुल इफ़्ता	487	ता'लीमे क़ुरआन की रग़बत पर वज़ाइफ़ का हुक्म	510
मदनी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़	487	**मुदर्रिसीन का मदनी लिबास**	511
(3)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का बसरी दारुल इफ़्ता	488	क़ारी को सफ़ेद लिबास में देखना पसन्द है	511
बसरी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़	489	ज़ाहिरी हुल्या दुरुस्त रखने की अहम्मिय्यत	511
मुफ़्तिये बसरा की इल्मी ख़िदमात	491	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शानदार मुदर्रिस कोर्स**	511
मुफ़्तिये बसरा सय्यिदुना अनस बिन मालिक	492	ता'लीमे क़ुरआन की अहम्मिय्यत पर मक्तूब	512
मुफ़्तिये बसरा सय्यिदुना अनस बिन मालिक के जलीलुल क़द्र शागिर्द	494	ता'लीम की नश्रो इशाअ़त अहम अहदाफ़ में शामिल	513
(4)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का कूफ़ी दारुल इफ़्ता	495	मुख़्तलिफ़ शहरों में जामेअ़ मस्जिद की क़ियाम का हुक्म	514
कूफ़ी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती व मुसद्दिक़	495	अ़ह्दे फ़ारूक़ी की मसाजिद की ता'दाद	514
असातिज़ा की इक़्तिदा और पैरवी में इनफ़िरादिय्यत	496	त़लबा के लिये ए'ज़ाज़ी इक़्दामात	515
मुफ़्तिये कूफ़ा की बारगाहे फ़ारूक़ी में अ़ज़्मत	497	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी के मदारिस का ता'लीमी व अख़्लाक़ी निसाब**	515
(5)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का शामी दारुल इफ़्ता	498	**ता'लीमी निसाब**	516
शामी दारुल इफ़्ता के तीन मुफ़्तियाने किराम	498	**अख़्लाक़ी निसाब**	517
मुफ़्तिये दिमश्क़ के इल्मी ह़ल्क़े की वुस्अ़त	499	**इस्लामी बहनों का ता'लीमी निसाब**	518
शामी दारुल इफ़्ता के मुसद्दिक़	499	**फ़ारूक़े आ'ज़म और किताबत (लिखाई)**	518
शामी दारुल इफ़्ता के मुफ़्ती की इल्मी कोशिशें	500	बेहतरीन लिखाई की निशानी	518
मुफ़्ती को कैसा होना चाहिये.....?	500	ख़राब लिखाई पर कोड़े की सज़ा	518
नसीह़त आमोज़ बयान	501	इल्म को लिख कर क़ैद कर लो	519
नसीह़तों के मदनी फूल	501	**फ़ारूक़े आ'ज़म और हिजरी तारीख़**	519
शामी दारुल इफ़्ता के दूसरे मुफ़्ती	503	सब से पहले हिजरी तारीख़ वज़्अ़ करने वाले	519
दो अ़क़्लमन्दों की बातें सुनाओ	504	**तारीख़ वज़्अ़ करने की वुजूहात**	519
सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल पर शफ़्क़ते फ़ारूक़ी	504	ख़ुतूत़ पर तारीख़ नहीं होती थी	519
सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल की इल्मी कोशिशें	505	एक यमनी शख़्स का मश्वरा	520
विसाल के वक़्त भी इल्म की तरग़ीब	506	तारीख़ की जगह फ़क़त़ महीना लिखा था	520
शामी दारुल इफ़्ता के तीसरे मुफ़्ती	506	एक अहम वज़ाह़ती मदनी फूल	521
(6)....अ़ह्दे फ़ारूक़ी का मिस्री दारुल इफ़्ता	507	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी की इल्मी मुशावरतें**	521

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म और शे'र व शो'रा	522	(8) कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन का मुसलमानों के ख़िलाफ़ बुग़्ज़ो इनाद	545
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का शाइराना ज़ौक़	522	**फ़ुतूहाते फ़ारूक़ी की तफ़्सील**	546
रफ़ीक़े सफ़र की मौत पर शे'र	522	अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूहात का इजमाली ख़ाका	547
ज़िन्दगी धोके में न डाल दे	523	इस्लामी लश्कर के उसूलो ज़वाबित़	548
रात काटने के लिये शे'र पढ़ने की इजाज़त	524	**अ़हदे फ़ारूक़ी में मुल्के शाम की फ़ुतूहात**	549
क्या येह क़सीदा तुम ने लिखा है ?	525	अ़हदे फ़ारूक़ी में इस्लामी लश्कर और उस के क़ाइदीन का इजमाली नक़्शा	550
जाहिलिय्यत के अश्आ़र छोड़ने पर वज़ीफ़े में इज़ाफ़ा	525	शाहे रूम हरक़िल का फ़ारूक़े आ'ज़म से ख़ौफ़ज़दा होना	551
अश्आ़र के ज़रीए शाइर की पहचान	526	फ़ारूक़े आ'ज़म का सिक्यूरिटी गार्ड (Security Guard)	552
शरीअ़त के मुताबिक़ अश्आ़र पढ़ने की इजाज़त	527	हुक्मरानों व ज़िम्मेदारों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या	553
अश्आ़र में अच्छाइयों और बुराइयों का बयान	527	फ़ारूक़े आ'ज़म का ला जवाब हुस्ने अख़्लाक़	554
पेट पीप से भर जाए तो बेहतर है	528	दाइमी सरदर्द दूर करने का फ़ारूक़ी नुस्ख़ा	554
फ़ुज़ूल अश्आ़र पर गवर्नर की मा'ज़ूली	528	بسم الله से इलाज का त़रीक़ा	555
हिज्व करने पर ज़बान काटने का हुक्म	529	**(1)....जंगे हि़स्न अबिल क़ुद्स**	555
हिज्व करने पर क़ैदख़ाने में डाल दिया	529	**इस जंग के तीन अहम वाक़िआ़त**	556
क़ियामे अम्न के लिये एक अहम फ़ारूक़ी क़दम	529	(1) अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार की अपने वालिद की क़ब्र पर हाज़िरी	556
फ़ारूक़े आ'ज़म और इस्लाही अश्आ़र	530	(2) सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र त़य्यार और नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा	558
फ़ारूक़े आ'ज़म अश्आ़र सुन कर रो पड़े	530	(3) अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र की रसूलुल्लाह के वसीले से दुआ़	560
इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	531	**(2)....जंगे क़िन्नसिरीन**	563
अच्छे अश्आ़र सुनना बाइ़से सवाब है	531	रुस्तन, हम्मात और अहले शीज़र के साथ सुल्ह़	563
मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है	532	सना ख़्वाने रसूल, ह़स्सान बिन साबित की बरकत	563
मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये	532	एक मुजाहिद के मुक़ाबले में एक हज़ार काफ़िर	564
अ़हदे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात	534	मुजाहिदीन और रूमी लश्कर में शदीद जंग	565
अ़हदे फ़ारूक़ी की फ़ुतूहात का पस मन्ज़र	535	इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़ और रूमियों का फ़िरार	566
इस्लाम तल्वार से नहीं फैला.....!	537	**जंगे क़िन्नसिरीन के दो अहम व मुबारक वाक़िआ़त**	566
(1) अख़्लाक़े ह़सना के सबब क़बूले ईमान	537	(1) सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मुबारक टोपी	566
(2) ए'लाने नबुव्वत से क़ब्ल ही क़बूले ईमान	538	सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की ज़ौजा और मुबारक टोपी	567
(3) ए'लाने नबुव्वत के बा'द क़बूले ईमान	539	इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	569
(4) ह़क़्क़ानिय्यते इस्लाम के सबब क़बूले इस्लाम	539	(2) सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ की ग़ैबी आमद व मदद	572
(5) हिजरते मदीना के बा'द क़बूले इस्लाम	540	इल्मो हिक्मत के मदनी फूल	573
(6) यहूद के जय्यिद उ़लमा व फ़ुज़ला का क़बूले इस्लाम	541	**(3)....जंगे बा'लबक**	578
(7) रसूलुल्लाह ने दफ़्ए ज़रर के लिये तल्वार उठाई	542	जंगे बा'लबक की इजमाली सूरते ह़ाल	578
जानी दुश्मनों को भी मुआ़फ़ फ़रमा दिया	544	**जंगे बा'लबक के चार अहम वाक़िआ़त**	578

www.dawateislami.net

(1) ज़ख़्मी मुजाहिद की दानिश मन्दी	578	जंग की तफ़्सील फ़ारूक़े आ'ज़म की बारगाह में	598
(2) हाकिम हरबीस की अ़जीबो ग़रीब बात	580	फ़ारूक़े आ'ज़म का अकाबिर सहाबा से मदनी मश्वरा	599
(3) बा'लबक क़ल्ए की फ़त्ह़ का सबब	581	रसूलुल्लाह और जंगे यरमूक का ज़िक्र	599
(4) इस्लामी लश्कर और अ़ह्द की पासदारी	582	जवाबी मक्तूब और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ की रवानगी	601
अ़ह्द की पासदारी, मुसलमानों का शिआ़र	583	मौला अ़ली और शाने फ़ारूक़े आ'ज़म	602
(4)....जंगे ह़िम्स (बारे अव्वल)	583	इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	604
जंगे ह़िम्स का इजमाली ह़ाल	583	मदीनए मुनव्वरा से सात हज़ार के लश्कर की रवानगी	606
जंगे ह़िम्स का एक अहम वाक़िआ़	584	**जंगे यरमूक का दूसरा दिन**	606
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की जंगी ह़िक्मते अ़मली	584	सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद माहान के दरबार में	606
(5)....फ़त्ह़े रुस्तन	585	इस्लामी लश्कर की मदीनए मुनव्वरा से यरमूक आमद का नक़्शा	607
अह्ले रुस्तन का तजदीदे मुआ़हदा से इन्कार	585	दोनों लश्करों में घुमसान की जंग	608
सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ की जंगी तदबीर	585	जंगे यरमूक में मुसलमानों का शिआ़र	608
(6)....जंगे शीज़र	587	या रसूलल्लाह के ना'रे और रसूलुल्लाह से मदद	609
जंगे शीज़र का एक अहम वाक़िआ़	587	सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मुबारक टोपी	609
(7)....जंगे ह़िम्स (बारे दुवुम)	588	सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद का मुबारक अ़क़ीदा	609
फ़त्ह़े ह़िम्स का इजमाली ह़ाल	588	इल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल	610
जंगे ह़िम्स के अहम वाक़िआ़त	588	अबुल जई़द पर ज़ुल्मो सितम और रूमियों से बदला	612
सय्यिदुना इकरिमा बिन अबू जह्ल की शहादत	588	रूमी बित़रीक़ की मुक़ाबले के लिये त़लबी	613
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की जंगी ह़िक्मते अ़मली	590	सय्यिदुना मालिक नख़्ई का मुबारक अ़क़ीदा	614
(8)....जंगे यरमूक	591	इस्लामी लश्कर की अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़	615
जंगे यरमूक का पस मन्ज़र	591	फ़त्ह़े यरमूक के बा'द रूमियों के फ़िरार व तआ़क़ुब का नक़्शा	616
दोनों लश्करों की ता'दाद	592	सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ का मुबारक मक्तूब	617
जंगे यरमूक का पहला दिन	592	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल व रसूलुल्लाह की बरकत	617
इस्लामी तारीख़ का सुन्हरी बाब	592	रसूलुल्लाह की फ़ारूक़े आ'ज़म को फ़त्ह़े यरमूक की बिशारत	617
साठ हज़ार के मुक़ाबले में फ़क़त़ साठ मुजाहिद	592	**(9)....जंगे बैतुल मुक़द्दस**	619
जंगे यरमूक का नक़्शा दोनों लश्करों का आमना सामना	593	फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस व रसूलुल्लाह की ग़ैबी ख़बर	619
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद का नफ़्सियाती ह़रबा	594	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म व मौला अ़ली का मुबारक अ़क़ीदा	619
इस्लामी लश्कर के सभी लोग ह़ैरान हो गए	594	जंगे बैतुल मुक़द्दस का इजमाली ख़ाका	620
इस्लामी लश्कर की रवानगी	595	नसरानी राहिब का सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को देखना	620
दोनों लश्करों में घुमसान की जंग	596	दिमश्क़ के मुह़ासरे का नक़्शा	621
जंग का इख़्तिताम	596	इस्लामी लश्कर के बैतुल मुक़द्दस का मुह़ासरा करने का नक़्शा	622
गुमशुदा अस्ह़ाब की तलाश	597	नसरानी राहिब और फ़ारूक़े आ'ज़म का ज़िक्रे ख़ैर	623

www.dawateislami.net

फ़ारूक़े आ'ज़म की बैतुल मुक़द्दस में तशरीफ़ आवरी	624	सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ का मुबारक ख़्वाब	648
फ़ारूक़े आ'ज़म का मुबारक सफ़र	625	हरक़िल का फ़रार और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़	649
फ़ारूक़े आ'ज़म की सुवारी और ज़ादे सफ़र	626	(13)....**साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात**	650
फ़ारूक़े आ'ज़म के सफ़र की नौइय्यत	626	(14)....**पहाड़ी अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात**	651
फ़ारूक़ी मदनी क़ाफ़िले का इस्तिक़्बाल	627	जंगे यरमूक के बा'द साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात का नक़्शा	652
अज़ाने बिलाली से इस्लामी लश्कर पर गिर्या त़ारी	627	शाम की शुमाली साह़िली अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात	653
बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवानगी व शाहाना लिबास	629	(15)....**जंगे मरजुल क़बाइल**	654
फ़त्ह़े बैतुल मुक़द्दस और शहर में दाख़िला	629	रसूलुल्लाह ने सय्यिदुना दामिस की ज़न्जीरें खोल दीं	655
सय्यिदुना का'ब अह़बार का क़बूले इस्लाम	630	रूमियों के लिये कुमक और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़	656
फ़ारूक़े आ'ज़म की मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िरी की दा'वत	631	मक्तूबे फ़ारूक़े आ'ज़म और अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की रिहाई	656
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के मुबारक अ़क़ाइद	632	(16)....**जंगे नख़्ल**	659
(10)....**जंगे ह़ल्ब**	633	रूमी लश्कर का फ़रार और इस्लामी लश्कर की फ़त्ह़	659
जंगे ह़ल्ब का इजमाली ख़ाका	633	(17)....**फ़त्ह़े क़ल्अ़ए त़राबुलुस**	660
रसूलुल्लाह को मदद के लिये पुकारना	633	सय्यिदुना यूक़न्ना की जंगी ह़िक्मते अ़मली और फ़त्ह़े क़ल्अ़ए त़राबुलुस	660
ह़ज़रते सय्यिदुना यूह़न्ना की शहादत	634	(18)....**फ़त्ह़े क़ल्अ़ए सुव्वर**	661
सय्यिदुना दामिस अबुल हौल की आमद	635	सय्यिदुना यूक़न्ना की जंगी ह़िक्मते अ़मली और गिरिफ़्तारी	661
सय्यिदुना दामिस अबुल हौल की जंगी ह़िक्मते अ़मली	635	सय्यिदुना यूक़न्ना की आज़ादी व फ़त्ह़े क़ल्अ़ए सुव्वर	662
इस्लामी लश्कर का शहर में दाख़िला और फ़त्ह़े अ़ज़ीम	637	(19)....**फ़त्ह़े क़ैसारिया**	663
ह़ाकिम यूक़न्ना का फ़सीह़ अ़रबी बोलना	638	फ़त्ह़े क़ैसारिया के मुख़्तसर अह़वाल	663
सय्यिदुना यूक़न्ना के सीरते मुस्त़फ़ा से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात	639	ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के इब्तिदाई छे साल में पूरा शाम फ़त्ह़	664
सह़ाबए किराम और وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى की तफ़्सीर	640	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते मिस्र**	664
कन्ज़ुल ईमान तफ़्सीरे सह़ाबा का तर्जुमान	640	इस्लामी लश्कर और अलयून की फ़त्ह़	664
(11)...**जंगे क़ल्अ़ए इज़ाज़**	642	इस्कन्दरिया की फ़त्ह़	665
जंगे क़ल्अ़ए इज़ाज़ का इजमाली ख़ाका	640	**अ़ह्दे फ़ारूक़ी में फ़ुतूह़ाते इराक़**	665
सय्यिदुना यूक़न्ना की आज़ादी और क़ल्अ़ए इज़ाज़ की फ़त्ह़	642	जंगे कस्कर और मुसलमानों की फ़त्ह़	665
(12)....**फ़त्ह़े इन्त़ाकिया (दारुस्सल्त़नत)**	643	जंगे बुवैब और मुसलमानों की फ़त्ह़	666
इन्त़ाकिया और हरक़िल बादशाह	643	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास की तअ़य्युनाती	666
इस्लामी लश्कर के तीन सौ सिपाहियों का क़ैद होना	644	जंगे बुवैब का नक़्शा	667
ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना और शेर की रहनुमाई	644	**इराक़ की अ़ज़ीम जंग "क़ादिसिया"**	668
सय्यिदुना सफ़ीना का मुबारक अ़क़ीदा	645	जंगे क़ादिसिया के अस्बाब	668
इस्लामी लश्कर और रूमी लश्कर की जंग	646	सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास का तक़र्रुर	668
ह़ाकिमे फ़लन्त़ानूस का क़बूले इस्लाम	646	सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़िरासत व दूरअन्देशी	669

क़ादिसिया की त़रफ़ दोनों लश्करों की पेश क़दमी का नक़्शा	670	**फ़ुतूहात में फ़ारूक़े आ'ज़म का इख़्तिसास**	690
जंगे क़ादिसिया में इस्लामी लश्कर की ता'दाद	671	फ़ुतूहाते फ़ारूक़ी की आख़िरी हद	692
फ़ारूक़े आ'ज़म की मा'नवी शिर्कत	671	**फ़ारूक़ी गवर्नर और उन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर**	693
जंगे क़ादिसिया में इस्लामी लश्कर की तरतीब	672	**फ़ारूक़ी गवर्नर और उन से मुतअ़ल्लिक़ा उमूर**	694
"यौमुल अबाक़िर" और इस की वज्हे तस्मिय्या	673	मिसाली हुकूमत और इस की कामयाबी का राज़	694
इस्लामी सिफ़ारत और मुसलमानों की फ़त्ह़	673	इन्तिख़ाबे फ़ारूक़े आ'ज़म के क्या कहने....!	694
यज़्दगिर्द के दरबार में इस्लामी सिफ़ारत	674	**हुकूमत व मन्सब के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने फ़ारूक़े आ'ज़म**	695
दोनों फ़ौजों का आमना सामना	674	(1)......हाकिम की चार ख़स्लतें	695
रुस्तम का फ़ारूक़े आ'ज़म से ख़ौफ़ज़दा होना	674	(2)......कामयाब हाकिम के औसाफ़	695
जंगे क़ादिसिया का नक़्शा, दोनों लश्कर आमने सामने	675	(3)......गुमराह कुन हुक्मरानों का ख़ौफ़	695
घुमसान की जंग और मुसलमानों की फ़त्ह़	676	(4)......दीन को आज़्माइश में डालने वाली शै	696
जंगे जलूला और मुसलमानों की फ़त्ह़	677	**गवर्नरों के तक़र्रुर की शराइत़**	696
शहरे बसरा की ता'मीर	677	**गवर्नरों की शराइत़े साबिता**	696
अ़हदे ईसवी के एक शख़्स का ज़ुहूर	677	(1)......हाकिम त़ाक़तवर हो	696
अ़हदे फ़ारूक़ी में दौरे ईसवी का एक शख़्स नुमूदार हुवा	677	(2)......हाकिम अमानतदार हो	697
जंगे जलूला का नक़्शा	678	अमानत और ओ़हदे के बारे में पूछगछ	698
अ़हदे फ़ारूक़ी में फ़ुतूहाते ईरान	680	(3)......हाकिम आ़लिमे दीन हो	698
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े आज़रबाईजान	681	(4)......हाकिम तजरिबा कार और साहिबे बसीरत हो	698
अ़लाक़ा "रै" की फ़त्ह़	681	(5)......हाकिम शफ़ीक़ व मेहरबान हो	699
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े जुरजान	681	नर्मी व बुर्दबारी का दर्से फ़ारूक़ी	699
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े त़बरिस्तान	682	फ़ारूक़े आ'ज़म और एक हाकिम की गिरिफ़्त	700
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े "बाब" व "आरमीनिया"	682	(6)......हाकिम वोह जो रिआ़या में से लगे	701
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े ख़ुरासान	683	**गवर्नरों की शराइत़े नाफ़िया**	701
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की फ़िरासत	683	(1)......हाकिम फ़ासिक़ो फ़ाजिर न हो	701
इस्लामी लश्कर और जंगे निहावन्द	684	गवर्नरों के नाम नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ उ़मूमी फ़रमान	702
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े सिजिस्तान	684	तारिके नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमान	702
जंगे निहावन्द का नक़्शा	685	(2)......हाकिम ज़ालिम न हो	702
इस्लामी लश्कर और फ़त्ह़े मकरान	686	सख़्ती ऐसी जिस में ज़ुल्म न हो	703
फ़ुतूहाते फ़ारूक़ी की वुस्अ़त	686	(3)......हाकिम मलामत की परवाह न करे	703
फ़ुतूहाते फ़ारूक़ी की वुजूहात	687	(4)......जज़्बाती फ़ैसले से इजतिनाब करे	703
अ़हदे रिसालत से अ़हदे फ़ारूक़ी तक इस्लामी सल्त़नत का नक़्शा	688	(5)......हाकिम रिश्तेदारी का लिहाज़ न करे	704
अस्ल वज्ह, तकब्बुर व गुरूर का इस्तिह़साल	690	अपने रिश्तेदारों को हाकिम न बनाया	705

www.dawateislami.net

(6)......ओ़ह्दे का त़ालिब न हो 705
(7)......हाकिम तिजारत न करे 706
(8)......फ़क़त़ शुब्हे की बिना पर पकड़ न करे 706
गवर्नरों से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियाती़ तदाबीर 707
गवर्नरों के इन्तिख़ाब के लिये मुशावरत 707
गवर्नरों की तक़र्रुरी से पहले उन का इम्तिहान 707
तक़र्रुरी के बा'द अ़मली कैफ़िय्यत पर नज़र 708
हाकिम के असासों की तफ़्सील 708
माल के दो हिस्से कर देते 708
फ़ारूक़े आ'ज़म माल की तफ़्सील लिख लेते 709
हाकिम की चन्द मुत़लक़ शराइत़ 709
फ़ैसला करने की शराइत़ 709
मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों का एह़तिराम 710
लोगों की इस्लाह़ का राज़ 710
इन्तिख़ाबे हाकिम में त़बई सिफ़ात का लिहाज़ 711
गवर्नरों से अ़हद नामा 711
गवर्नरों से ख़ुत़ूत़ो किताबत 712
हुकूमती मुआ़मलात में मुसलमानों की तक़र्रुरी 712
फ़ारूक़ी गवर्नरों की चन्द अहम ख़ुसूसिय्यात 713
फ़ारूक़ी गवर्नरों का ज़ोह्दो तक़्वा 713
हाकिम का नाम मोह़ताजों की फ़ेहरिस्त में 714
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की दिली आरज़ू 716
इल्मो हिक्मत के मदनी फूल 716
फ़ारूक़ी गवर्नरों की आ़जिज़ी व इन्किसारी 716
फ़ारूक़ी गवर्नरों की हुब्बे जाह से दूरी 718
ज़िम्मेदारान का एह़तिराम करने वाले 719
गवर्नरों का सालाना मदनी मश्वरा 720
अ़वाम के मुतअ़ल्लिक़ गवर्नरों से मदनी मश्वरा 720
गवर्नरों के मुतअ़ल्लिक़ अ़वाम से मदनी मश्वरा 721
हुक्मरान सीधे रहें तो रिआ़या भी सीधी 721
अपने ह़ाकिम से त़लबे आ़फ़िय्यत का त़रीक़ा 721
हुक्मरानों की ज़िम्मेदारियां 722
(1)......अपनी और घरवालों की इस्लाह़ की कोशिश करे 722
फ़ारूक़े आ'ज़म ने ख़ुद को अ़मली नमूना बना कर पेश किया 722
अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं 723
(2)......अपने मुतअ़ल्लिक़ीन व मुहि़ब्बीन की इस्लाह़ करे 724
(3)......रिआ़या के साथ शफ़ीक़ बाप जैसा सुलूक करे 724
अमीरे अहले सुन्नत सीरते फ़ारूक़ी के मज़्हर हैं 725
(4)......अरकाने इस्लाम पर अ़मल में रिआ़या की मुआ़वनत 725
(5)......मुब्तदिईन व गुमराह लोगों की पकड़ करे 726
(6)......मसाजिद की ता'मीर व तरक़्क़ी 727
दा'वते इस्लामी की मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद 728
(7)......मनासिके ह़ज के लिये सहूलियात फ़राहम करे 729
दा'वते इस्लामी की मजलिसे ह़ज व उ़मरा 729
(8)......लोगों को इन्साफ़ दिलाए 730
(9)......जान, माल, औलाद का तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम करे 730
(10)......शरई हुदूद को क़ाइम करे 730
(11)......हर वोह काम करे जो मुल्की मफ़ाद में हो 731
(12)......हाकिम एह़तियात़ करे.... 731
(13)......ता'मीराती मन्सूबों पर तवज्जोह दे 732
(14)......मुआ़शरती उमूर पर ख़ुसूसी तवज्जोह दे 732
फ़ारूक़े आ'ज़म और गवर्नरों का एह़तिसाब 733
(1)......तक़र्रुरी के बा'द निगरानी 733
(2)......हुक्मरानों से वुफ़ूद भेजने का मुत़ालबा 734
(3)......वुफ़ूद से हुक्मरानों की पूछगछ 734
(4)......हुक्मरानों के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुत़ूत़ लिखने की इजाज़त 734
(5)......हुक्मरानों के लिये मजलिसे एह़तिसाब 735
(6)......हुक्मरानों के एह़तिसाब का मदनी मश्वरा 735
(7)......फ़ारूक़े आ'ज़म का एह़तिसाबी अ़लाक़ाई दौरा 736
(8)......रिआ़या की शिकायतों की तह़क़ीक़ 736
(9)......शिकायतों की तह़क़ीक़ के बा'द अ़मली कारवाई 737
हुक्मरानों को दी जाने वाली सज़ाएं 737
(1)......गवर्नरों से रिआ़या को बदला दिलाना 737
(2)......गवर्नरों की दुर्रे से तादीब 738

www.dawateislami.net

(3)......हुक्मरानों को डांट डपट करना	738	हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رضی اللہ تعالٰی عنہ	756
गवर्नरों की मा'ज़ूली	738	**ताइफ़ के फ़ारूक़ी गवर्नर**	756
(1)......हाकिमे वक़्त को साबिक़ा काम पर लगा दिया	739	हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ	756
(2)......हाकिमे वक़्त को चरवाहा बना दिया	739	हज़रते सय्यिदुना उ़तबा बिन अबू सुफ़्यान उमवी رضی اللہ تعالٰی عنہ	757
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली	740	हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ	757
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की मा'ज़ूली की वुजूहात	741	**यमन के फ़ारूक़ी गवर्नर**	757
हुक्मरानों से मुतअ़ल्लिक़ रिआ़या की ज़िम्मेदारियां	744	हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन उमय्या तमीमी رضی اللہ تعالٰی عنہ	757
(1)......अहकामे शरइय्या में इताअ़त	744	हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू रबीआ़ मख़्ज़ूमी رضی اللہ تعالٰی عنہ	758
हबशी गुलाम की इताअ़त का हुक्म	744	**बहरैन के फ़ारूक़ी गवर्नर**	758
(2)......ग़ैर मौजूदगी में ख़ैरख़्वाही	745	हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन हज़रमी رضی اللہ تعالٰی عنہ	758
(3)......ग़ीबत से अपने आप को बचाना	745	हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ	758
बादशाह की सड़ी हुई लाश	746	हज़रते सय्यिदुना क़ुदामा बिन मज़्ऊन जमही رضی اللہ تعالٰی عنہ	759
सियासी तबसेरों की बैठकें	746	**मिस्र के फ़ारूक़ी गवर्नर**	759
हज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़	747	हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ	759
दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़त़रा	747	**फ़िलिस्तीन के फ़ारूक़ी गवर्नर**	759
बद अ़क़ीदगी से तौबा नसीब हो गई	748	हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رضی اللہ تعالٰی عنہ	759
(4)......हुक्मरानों से राबिता	750	हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन मुजज़्ज़िर मुदलिज्जी رضی اللہ تعالٰی عنہ	760
(5)......हुक्मरानों के शरई मौक़िफ़ की ताईद	750	हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ	760
(6)......ग़लत बात की ताईद से परहेज़	750	**दिमश्क़ के फ़ारूक़ी गवर्नर**	760
(7)......मा'ज़ूली के बा'द भी इन का एहतिराम	751	हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رضی اللہ تعالٰی عنہ	760
(8)......ज़ाती मुआ़मलात को ख़ुद ही हल करना	752	**हौरान के फ़ारूक़ी गवर्नर**	760
(9)......मुश्किल वक़्त में साथ देना	753	हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन उ़लासा अल आ़मिरी رضی اللہ تعالٰی عنہ	760
(10)......ग़ैर मौजूदगी में दुआ़ करना	753	**रमला के फ़ारूक़ी गवर्नर**	761
(11)......उ़यूब की पर्दापोशी करना	753	हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन हकीम رضی اللہ تعالٰی عنہ	761
अ़हदे फ़ारूक़ी के गवर्नर	754	**हिम्स के फ़ारूक़ी गवर्नर**	761
मक्कए मुकर्रमा के फ़ारूक़ी गवर्नर	754	हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رضی اللہ تعالٰی عنہ	761
हज़रते सय्यिदुना इताब बिन उसैद رضی اللہ تعالٰی عنہ	754	हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम फ़हरी رضی اللہ تعالٰی عنہ	761
हज़रते सय्यिदुना क़ुन्फ़ुज़ बिन उ़मैर رضی اللہ تعالٰی عنہ	754	हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन आ़मिर बिन हुज़ैम رضی اللہ تعالٰی عنہ	762
हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस رضی اللہ تعالٰی عنہ	755	हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ	762
हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन आ़स बिन हिशाम رضی اللہ تعالٰی عنہ	755	**अल जज़ीरा के फ़ारूक़ी गवर्नर**	762
हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अबू मुलैका رضی اللہ تعالٰی عنہ	756	हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन मस्लमा फ़हरी رضی اللہ تعالٰی عنہ	762
मदीनए मुनव्वरा के फ़ारूक़ी गवर्नर	756	**इराक़ के फ़ारूक़ी गवर्नर**	762

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन हारिसा शैबानी رضی اللہ تعالٰی عنہ	762
हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन मसऊ़द सक़फ़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ	763
हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन फ़रक़द सुलमी رضی اللہ تعالٰی عنہ	763
बसरा के फ़ारूक़ी गवर्नर	763
हज़रते सय्यिदुना क़ुत़बा बिन क़तादा सदूसी رضی اللہ تعالٰی عنہ	763
हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शुरैह़ बिन आमिर رضی اللہ تعالٰی عنہ	763
कूफ़ा के फ़ारूक़ी गवर्नर	764
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ	764
हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رضی اللہ تعالٰی عنہ	764
हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رضی اللہ تعالٰی عنہ	764
हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन अबुल जा'द رضی اللہ تعالٰی عنہ	765
कस्कर के फ़ारूक़ी गवर्नर	765
हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन मुक़र्रिन رضی اللہ تعالٰی عنہ	765
उ़मान के फ़ारूक़ी गवर्नर	765
हज़रते सय्यिदुना बिलाल अन्सारी رضی اللہ تعالٰی عنہ	765
मुल्के शाम के फ़ारूक़ी कमान्डर	765
हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رضی اللہ تعالٰی عنہ	765
मुख़्तलिफ़ सूबों और शहरों पर मुक़र्रर फ़ारूक़ी गवर्नरों का चार्ट	766
अ़हदे फ़ारूक़ी की ता'मीरात	769
अ़हदे फ़ारूक़ी की दाख़िली ता'मीरात	771
मस्जिदे नबवी की तौसीअ़	771
अ़हदे नबवी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़	771
अ़हदे सिद्दीक़ी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़	772
अ़हदे फ़ारूक़ी में मस्जिदे नबवी की तौसीअ़	772
अ़हदे रिसालत से मौजूदा मस्जिदे नबवी तक का तफ़्सीली नक़्शा	773
अ़हदे फ़ारूक़ी में मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़	774
तौसीअ़ में आने वाले घर	774
मस्जिदे ह़राम के चबूतरों की अज़ सरे नौ ता'मीर	774
अ़हदे रिसालत से मौजूदा मस्जिदे ह़राम तक की तौसीअ़ का तफ़्सीली नक़्शा	775
अ़हदे फ़ारूक़ी में मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ व बैरूनी दीवार की ता'मीर	776
अ़हदे फ़ारूक़ी में ग़िलाफ़े का'बा की तब्दीली	776
ज़मानए जाहिलिय्यत में चमड़े का ग़िलाफ़े का'बा	776
सब से पहले ग़िलाफ़े का'बा चढ़ाने वाले	776
रसूलुल्लाह ने यमनी ग़िलाफ़ चढ़ाया	777
फ़ारूक़े आ'ज़म ने क़िब्ती ग़िलाफ़ चढ़ाया	777
हर साल ग़िलाफ़े का'बा को तक़्सीम फ़रमा देते	777
अ़हदे फ़ारूक़ी में मसाजिद की ता'मीर	777
मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों में मसाजिद की ता'मीर	777
अ़हदे फ़ारूक़ी में जामेअ़ मसाजिद का क़ियाम	778
दीनी ता'लीमो तरबिय्यत वाली मसाजिद	778
जामेअ़ मस्जिद बसरा	778
जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़	779
जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा	779
अ़हदे फ़ारूक़ी में मक़ामे इब्राहीम की तब्दीली	780
फ़ारूक़े आ'ज़म ने मत़ाफ़ से बाहर रखवा दिया	780
अ़हदे फ़ारूक़ी की ख़ारिजी ता'मीरात	780
दारुद्दक़ीक़ की ता'मीर	780
दारुद्दक़ीक़ से एक ख़ातून की मदद	780
सरायों की ता'मीर	781
अ़हदे फ़ारूक़ी में दारुल इमारा की ता'मीर	781
अ़हदे फ़ारूक़ी में दीवान की ता'मीर	782
सब से पहले दीवान क़ाइम फ़रमाया	782
दीवान क़ाइम करने के लिये मुशावरत	782
रजिस्टर की इब्तिदा किस के नाम से की जाए ?	783
मुख़्तलिफ़ शहरों में दीवान क़ाइम फ़रमाए	783
अ़हदे फ़ारूक़ी में बैतुल माल का क़ियाम	784
अ़हदे रिसालत व अ़हदे सिद्दीक़ी में बैतुल माल	784
बा क़ाइदा बैतुल माल अ़हदे फ़ारूक़ी में क़ाइम हुवा	784
बैतुल माल क़ाइम करने की वज्ह	784
बैतुल माल के निगरान व मुह़ाफ़िज़	785
कूफ़ा के बैतुल माल के निगरान	785
मदीनए मुनव्वरा के बैतुल माल के निगरान	785
बैतुल माल की इमारतें	785
बच जाने वाला माल दारुल ख़ुलाफ़ा भेज दिया जाता	786

www.dawateislami.net

मुसाफ़िरों के लिये पानी की सबीलें 786
मालिकान को घर बनाने की मशरूत् इजाज़त 786
क़ैदख़ानों की ता'मीर 787
मुख़्तलिफ़ सड़कों की ता'मीर 787
सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान के मुआहदे में शर्त् 788
सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम के मुआहदे में शर्त् 788
सड़कों की कुशादगी 789
सड़कों के मुतअ़ल्लिक़ एक अहम वज़ाहत 789
मेहमान ख़ानों की ता'मीर 789
मुख़्तलिफ़ नहरों की खुदाई 790
बसरा वालों के लिये "नह्रुल इजानह" की खुदाई 790
अहले बसरा के लिये "नह्रुल मलाह़" की खुदाई 790
नहरे सा'द बिन अबी वक़्क़ास की खुदाई 791
ख़लीजे अमीरुल मोमिनीन 791
नह्र व दरयाई रास्तों पर पुलों की ता'मीर 792
बह्री रास्ते पर पुल बनाने की इजाज़त 792
मुआहदों में पुलों की ता'मीर की शर्त् 793
मुख़्तलिफ़ शहरों की आबादकारी 793
शहरे बसरा की आबादकारी 793
शहरे कूफ़ा की आबादकारी 794
मुसलमानों को खुशगवार मक़ाम की सैर का हुक्म 794
कूफ़ा में सब से पहले मस्जिद बनाई गई 795
शहरे कूफ़ा में बैतुल माल का क़ियाम 795
शहरे कूफ़ा के बाज़ार का क़ियाम 795
अहले बसरा व अहले कूफ़ा के मकानात की ता'मीर 795
पक्के मकानात की ता'मीर करने की इजाज़त 796
घरों की ता'मीर में ए'तिदाल 796
सड़कों और गलियों की ता'मीर 796
शहरे कूफ़ा में फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म 797
कूफ़ा व बसरा की आबादी 797
फ़ुस्तात् की आबादकारी 797
मौसिल की आबादकारी 798
जीज़ा की आबादकारी 798
अ़हदे फ़ारूक़ी और मुल्की ख़ज़ाने 798
अ़हदे फ़ारूक़ी में ज़कात की वुसूली 799
ज़कात की अदाएगी की तरग़ीब 799
जिस माल में ज़कात नहीं उस में कोई ख़ैर नहीं 799
आमिलीने ज़कात को हर साल भेजते 800
फ़तावा अहले सुन्नत, किताबुज़्ज़कात 800
अ़हदे फ़ारूक़ी के आमिलीने ज़कात 800
अ़हदे फ़ारूक़ी में जिज़्या की वुसूली 801
ज़िम्मी मुसलमान हो जाए तो जिज़्या न लिया जाए 801
एक अहम वज़ाहत 801
अ़हदे फ़ारूक़ी में ख़िराज की वुसूली 802
अ़हदे फ़ारूक़ी में ख़िराज के नफ़ाज़ का त़रीक़ा 802
अ़हदे फ़ारूक़ी में सब से ज़ियादा ख़िराज की वुसूली 803
अ़हदे फ़ारूक़ी में उ़शूर की वुसूली 803
माले फ़ै और माले ग़नीमत की वुसूली 804
अ़हदे फ़ारूक़ी का ज़रई निज़ाम 805
क़ौमे अ़रब और खेती-बाड़ी 805
फ़ारूक़े आ'ज़म की बे मिसाल फ़िरासत 806
ज़मीनों को आबाद करने का हुक्म 807
ज़रई हवाले से एक अहम अम्रे फ़ारूक़ी 807
अम्रे फ़ारूक़ी की हिक्मतें 808
खेती-बाड़ी करने वालों को तह़फ़्फ़ुज़ 808
किसान का माली नुक़्सान पूरा किया 809
ख़िराज की वुसूली में काश्तकारों से नर्मी 809
ज़िन्दगी भर मा'ज़ूल नहीं करूंगा 809
अ़हदे फ़ारूक़ी में आबपाशी का निज़ाम 810
ख़िलाफ़ते फ़ारूक़े आ'ज़म तारीख़ के आईने में 811
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त 814
माख़ज़ो मराजेअ़ 836
अल मदीनतुल इल्मिय्या की मत़बूआ़ कुतुब की फ़ेहरिस्त 844

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبرشمار	نام کتاب	مؤلف/مصنف/متوفی	مطبوعات
		قرآن پاک، ترجمہ قرآن وتفاسیر	
1	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ١٤٣٢ھ
2	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ١٣٤٠ھ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ١٤٣٢ھ
3	تفسیر الطبری	ابوجعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ٣١٠ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤٢٠ھ
4	تفسیر ابن ابی حاتم	ابومحمد عبدالرحمن بن محمد الرازی المعروف بابن ابی حاتم، متوفی ٣٢٧ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف ١٤١٧ھ
5	التفسیر الکبیر	امام فخرالدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ٦٠٦ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٠ھ
6	جامع احکام القرآن، تفسیر قرطبی	ابوعبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ٦٧١ھ	دارالفکر بیروت ١٤١٩ھ
7	تفسیر مدارک	ابوالبرکات عبداللہ بن احمد بن محمود النسفی، متوفی ٧١٠ھ	دارالمعرفہ بیروت ١٤٢١ھ
8	تفسیر غرائب القرآن	نظام الدین الحسن بن محمد نیشاپوری، متوفی ٨٥٠ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٦ھ
9	اللباب فی علوم الکتاب	ابوحفص عمر بن علی ابن عادل حنبلی، متوفی ٨٨٠ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ١٤١٩ھ
10	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ٩١١ھ	دارالفکر بیروت ١٩٩٣ء
11	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ١١٣٧ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٠٥ھ
12	روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ١٢٧٠ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٠ھ
13	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ١٣٦٧ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ١٤٣٢ھ
14	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ١٣٩١ھ	مکتبہ اسلامیہ لاہور ٢٠٠٠ء
		علوم القرآن	
15	المصاحف	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ٢٧٥ھ	دارالبشائرالاسلامیہ بیروت ١٤١٥ھ
16	احکام القران	امام ابوبکر احمد بن علی جصاص، متوفی ٣٧٠ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ١٤٠٥ھ
		کتب احادیث	
17	الموطا	امام مالک بن انس اصبحی المدنی، متوفی ١٧٩ھ	دارالمعرفہ بیروت ١٤٢٠ھ

www.dawateislami.net

18	مسند الامام الشافعي	ابو عبد اللہ محمد بن ادریس الشافعی القرشی المکی، متوفی ۲۰۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
19	مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
20	سنن سعيد بن منصور	الامام الحافظ سعید بن منصور الخراسانی، متوفی ۲۲۷ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
21	مصنف ابن ابی شيبة	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
22	مصنف ابن ابی شيبة	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	المجلس العلمی بیروت ۱۴۲۷ھ
23	الادب المفرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ازبکستان ۱۳۹۰ھ
24	مسند امام احمد	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
25	فضائل الصحابة	ابو عبد اللہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار ابن الجوزی عرب شریف ۱۴۲۰ھ
26	سنن الدارمي	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
27	صحيح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
28	صحيح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف ۱۴۱۹ھ
29	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
30	سنن ابو داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
31	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
32	مسند الحارث	ابو محمد حارث بن محمد تمیمی بغدادی، متوفی ۲۸۲ھ	مدینہ منورہ عرب شریف ۱۴۱۳ھ
33	مسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ۱۴۲۴ھ
34	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
35	تهذيب الاثار	ابو جعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ۳۱۰ھ	مطبع المدنی قاہرہ مصر
36	صحيح ابن خزيمة	امام محمد بن اسحاق بن خزیمۃ النیسابوری، متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۱۲ھ
37	شرح معاني الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
38	صحيح ابن حبان	ابو حاتم محمد بن حبان تمیمی الدارمی، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
39	المعجم الكبير	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

40	المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
41	سنن الدارقطنی	ابوالحسن علی بن عمر الدار قطنی البغدادی متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۲۰ھ
42	المنهاج فی شعب الایمان	شیخ ابوعبد اللہ حسین بن حسن الحلیمی، متوفی ۴۰۳ھ	دارالفکر بیروت ۱۳۹۹ھ
43	المستدرک	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
44	حلیة الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
45	مسند الامام ابی حنیفة	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	مکتبۃ الکوثر ریاض ۱۴۱۵ھ
46	السنن الصغری	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
47	شعب الإیمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
48	السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
49	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
50	شرح السنة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
51	تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
52	جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شیبانی المعروف بابن اثیر جزری، متوفی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
53	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیتمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۲ھ
54	اتحاف الخیرة المهرة	امام احمد بن ابی بکر بن اسماعیل بوصیری، متوفی ۸۴۰ھ	مکتبۃ الرشد عرب شریف ۱۴۱۹ھ
55	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ
56	جامع الاحادیث	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
57	کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
		کتب شروح احادیث	
58	شرح صحیح مسلم	امام ابوزکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۱ھ
59	تغلیق التعلیق علی صحیح البخاری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۰۵ھ
60	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۵ھ

61	عمدۃ القاری	امام بدرالدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
62	ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
63	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
64	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرء وف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
65	حاشیۃ علی النسائی	ابوالحسن نورالدین محمد بن عبدالہادی السندی، متوفی ۱۱۳۸ھ	دارالجیل بیروت
66	کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد بن عبدالہادی الشافعی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
67	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
68	نزہۃ القاری	مفتی شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۱ھ	فرید بک سٹال لاہور ۱۴۲۱ھ
		کتب عقائد و کلام	
69	الغنیۃ عن الکلام واھلہ	ابو سلیمان حمد بن محمد خطابی، متوفی ۳۸۸ھ	دارالمنہاج قاہرہ مصر ۱۴۲۵ھ
70	الامامۃ والرد علی الرافضۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ۱۴۰۷ھ
		کتب فقہ	
71	کتاب الخراج	ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری، متوفی ۱۸۲ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۰۳ھ
72	کتاب الاموال	ابو عبید قاسم بن سلام بن عبد اللہ الہروی البغدادی، متوفی ۲۲۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ
73	بدائع الصنائع	ابو بکر بن مسعود کاسانی، متوفی ۵۸۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
74	المجموع شرح المھذب	امام ابو زکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالفکر بیروت
75	فتح القدیر	کمال الدین محمد بن عبدالواحد المعروف بابن ہمام، متوفی ۶۸۱ھ	کوئٹہ پاکستان
76	الفتاوی الھندیۃ	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	کوئٹہ پاکستان
77	ردالمحتار مع الدر المختار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
78	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور ۱۴۱۲ھ
79	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
80	فتاویٰ فیض الرسول	مفتی جلال الدین احمد امجدی، متوفی ۱۴۲۲ھ	شبیر برادرز لاہور ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

كتب تصوف

81	الزهد	شیخ الاسلام عبد اللّٰہ بن مبارک المروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
82	الزهد	ابو عبد اللّٰہ امام احمد بن محمد بن حنبل الشیبانی، متوفی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید بیروت ۱۴۲۶ھ
83	الزهد	ھناد بن السّری بن مصعب التمیمی الدارمی الکوفی، متوفی ۲۴۳ھ	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی کویت ۱۴۰۶ھ
84	الزهد	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار المشکاۃ حلوان مصر ۱۴۱۴ھ
85	الموسوعة لابن ابی الدنیا	عبد اللّٰہ بن محمد البغدادی المعروف بابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۴ھ
86	الورع	عبد اللّٰہ بن محمد البغدادی المعروف بابن ابی الدنیا، متوفی ۲۸۱ھ	الدار السّلفیہ کویت ۱۴۰۸ھ
87	الامر بالمعروف ونهی عن المنكر	امام احمد بن محمد خلال، متوفی ۳۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۶ھ
88	المجالسة وجواهر العلم	ابو بکر احمد بن مروان الدینوری المالکی، متوفی ۳۳۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
89	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن عطیہ حارثی مکی، متوفی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
90	جامع بيان العلم وفضله	ابو عمر یوسف عبد اللّٰہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۸ھ
91	الرسالة القشيرية	امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن القشیری، متوفی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
92	احياء علوم الدين	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
93	منهاج العابدين	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	موسسۃ السیروان بیروت
94	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	برادران علمی ایران
95	مجموعة رسائل الامام الغزالي	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۴ھ
96	عيون الحكايات	امام ابو فرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
97	الزواجر عن اقتراف الكبائر	ابو العباس احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۹ھ
98	اتحاف السادة المتقين	محمد بن محمد بن عبد الرزّاق المعروف بمرتضی الزبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۰۰۹ء
99	درة الناصحين	عثمان بن حسن بن احمد الشاکر الخربوی، متوفی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
100	من نفحات الخلود	علامہ محمد عبد الحکیم شرف قادری، متوفی ۱۴۲۸ھ	المتاز پبلی کیشنز لاہور ۱۴۱۴ھ
101	فیضان سنّت	امیر اہلسنّت بانی دعوت اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی ۲۰۰۷ء

www.dawateislami.net

کتب سیر وتاریخ ومغازی

102	فتوح الشام	علامہ محمد بن عمر بن واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
103	فتوح الشام	علامہ محمد بن عمر بن واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	مخطوطہ
104	السیرۃ النبویۃ	ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
105	الطبقات الکبریٰ	محمد بن سعد بن منیع ھاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
106	تاریخ المدینۃ المنورۃ	ابو زید عمر بن شبہ النمیری البصری، متوفی ۲۶۲ھ	دار الفکر قم ایران ۱۴۱۰ھ
107	اخبار مکۃ	ابو عبد اللہ محمد بن اسحاق بن العباس المکی الفاکہی، متوفی ۲۷۲ھ	دار خضر بیروت ۱۴۱۹ھ
108	عیون الاخبار	ابو محمد عبد اللہ بن مسلم بن قتیبہ الدینوری، متوفی ۲۷۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
109	انساب الاشراف	احمد بن یحییٰ بن جابر بن داود البلاذری، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
110	اخبار القضاۃ	امام ابو بکر محمد بن خلف وکیع بغدادی، متوفی ۳۰۶ھ	عالم الکتب قاہرہ مصر
111	تاریخ الطبری	ابو جعفر محمد بن جریر الطبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۷ھ
112	الاوائل	ابو ہلال الحسن بن عبد اللہ بن سہل العسکری، متوفی ۳۹۵ھ	دار البشیر مصر ۱۴۰۸ھ
113	اخبار اصبھان	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
114	مناقب امیر المومنین عمر بن الخطاب	امام ابو فرج عبد الرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار العقیدہ للتراث بیروت
115	المنتظم	امام ابو فرج عبد الرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکہ مکرمہ عرب شریف ۱۴۱۵ھ
116	التبصرۃ	امام ابو فرج عبد الرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۲ھ
117	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار، متوفی ۶۱۶ھ	ایران
118	الکامل فی التاریخ	ابو الحسن علی بن محمد بن اثیر جزری متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
119	الریاض النضرۃ	امام شیخ ابو جعفر احمد طبری، متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
120	تاریخ الاسلام	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
121	البدایۃ والنہایۃ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
122	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

123	وفاء الوفاء	نورالدین ابوالحسن علی بن عبد اللہ الشافعی السمہودی، متوفی ۹۱۱ھ	داراحیاءالتراث العربی بیروت
124	مدارج النبوۃ	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکزاہلسنت برکات رضاہند
125	سمط نجوم العوالی	عبدالملک بن حسین عصامی، متوفی ۱۱۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
126	سیرت سیدالانبیاء	مولانا مخدوم محمد ہاشم ٹھٹھوی، متوفی ۱۱۷۴ھ	مظہر علم لاہور ۱۴۲۱ھ
127	ازالۃ الخفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
128	حجۃ اللہ علی العالمین	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضاہند ۱۴۲۱ھ
129	مردان عرب	علامہ عبدالستار ہمدانی صاحب	شبیر برادرز لاہور ۱۴۳۰ھ
130	سیدی قطب مدینہ	امیرِاہلسنت بانیِ دعوتِ اسلامی مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
131	فیضان صدیق اکبر	شعبہ فیضان صحابہ واہل بیت، المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
		کتب اسماء الرجال	
132	العلل	ابوالحسن علی بن عبد اللہ بن جعفر السعدی المدینی، متوفی ۲۳۴ھ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۹۸۰ء
133	العلل و معرفۃ الرجال	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	عرب شریف ۱۴۲۲ھ
134	کتاب الثقات	ابوحاتم محمد بن حبان تمیمی الدارمی، متوفی ۳۵۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
135	الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبد اللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
136	معرفۃ الصحابۃ	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
137	الاستیعاب	ابوعمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبدالبر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
138	صفۃ الصفوۃ	امام ابوفرج عبدالرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
139	اسد الغابۃ	ابوالحسن علی بن محمد المعروف بابن الاثیر الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	داراحیاءالتراث العربی بیروت ۱۴۱۷ھ
140	تہذیب الاسماء و اللغات	امام ابوزکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
141	سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
142	تذکرۃ الحفاظ	امام محمد بن احمد بن عثمان الذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
143	طبقات الشافعیۃ الکبری	امام تاج الدین بن علی بن عبدالکافی السبکی، متوفی ۷۷۱ھ	داراحیاءالکتب العربیۃ

144	غاية النهاية في طبقات القراء	ابوالخیر شمس الدین محمد بن محمد یوسف ابن الجزری، متوفی ۸۳۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
145	تهذيب التهذيب	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
146	الاصابة في تمييز الصحابة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
147	المقاصد الحسنة	شیخ محمد عبدالرحمٰن سخاوی، متوفی ۹۰۲ھ	دارالکتاب العربي بیروت ۱۴۲۵ھ
	کتب لغت معاجم وبلدان		
148	فتوح البلدان	احمد بن یحیٰی بن جابر بن داود البلاذری، متوفی ۲۷۹ھ	مکتبۃ الہلال بیروت ۱۴۰۷ھ
149	النهاية في غريب الاثر	ابوالسعادات المبارک بن محمد ابن الاثیر الجزری، متوفی ۶۰۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۲۰۱۱ء
150	معجم البلدان	الامام شہاب الدین ابی عبد اللہ الحموی، متوفی ۶۲۶ھ	داراحیاء التراث العربي بیروت
151	لسان العرب	محمد بن مکرم ابن منظور افریقی، متوفی ۷۱۱ھ	مؤسسۃ الاعلمی بیروت ۱۴۲۶ھ
152	تاج العروس	محمد بن محمد بن عبدالرزاق المعروف بمرتضی الزبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	کویت ۱۴۰۷
	متفرق کتب		
153	البيان و التبيين	ابوعثمان عمرو بن بحر المعروف بالجاحظ، متوفی ۲۵۵ھ	مکتبۃ الخانجي مصر ۱۴۱۷ھ
154	العقد الفريد	الفقیہ احمد بن محمد بن عبد ربہ الاندلسی، متوفی ۳۲۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
155	الجامع لاخلاق الراوي	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	مکتبۃ المعارف الریاض ۱۴۰۳ھ
156	ربيع الابرار	ابوالقاسم محمود بن عمرو زمخشری، متوفی ۵۳۸ھ	مؤسسۃ الاعلمی بیروت ۱۴۱۲ھ
157	ادب الاملاء والاستملاء	ابوسعد عبدالکریم بن محمد مروزی، متوفی ۵۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۱ھ
158	التذكرة الحمدونية	ابوالمعالی بہاء الدین محمد بن حسن البغدادی المتوفی ۵۶۲ھ	دارصادر بیروت ۱۹۹۶ء
159	المستطرف	ابوالفتح شہاب الدین محمد بن احمد الابشیہی، متوفی ۸۵۲ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
160	حجة الله البالغة	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
की तरफ़ से पेश कर्दा 261 कुतुबो रसाइल की फे़हरिस्त

नम्बर	किताब का नाम	सफ़्हात
	शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत	
1	राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء)	40
2	करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيهِ الْفَاهِمِ فِي اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم)	199
3	फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء)	326
4	ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيدفِي تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيد)	55
5	वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق)	125
6	अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हिस्से)	561
7	शरीअ़तो त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِإِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء)	57
8	विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة)	60
9	मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह़)	41
10	आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي)	100
11	हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْإِمْدَاد)	47
12	सुबूते हिलाल के त़रीके़ (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال)	63
13	औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْإِرْشَاد)	31
14	ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान)	74
15	अल वज़ीफ़तुल करीमा	46
16	कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	1185
17	ह़दाइक़े बख़्शिश	446
18	बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम	37
19	तफ़्सीरे सिरातुल जिनान	524
20	جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰى رَدِّ الْمُحْتَار (جلداول)	570

www.dawateislami.net

20	جَدُّالْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (جلد ثانی)	672
21	جَدُّالْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (جلد ثالث)	713
22	جَدُّالْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (جلد رابع)	650
23	جَدُّالْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار (جلد خامس)	483
24	اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی	458
25	كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم	27
26	اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة	62
27	اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة	93
28	اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی	46
29	تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان	77
30	اَجْلَى الْاِعْلَام	70
31	اِقَامَةُ الْقِيَامَة	60
	शो'बए तराजिमे कुतुब	
1	अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) (जिल्द अव्वल)	896
2	अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) (जिल्द दुवुम)	625
3	मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِی حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر)	112
4	सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش)	28
5	नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)	142
6	नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة)	54
7	जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِی ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)	743
8	इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَام اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة)	46
9	जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)	853
10	नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَر)	98
11	फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر)	144

www.dawateislami.net

12	दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهدُوَقَصرُالْاَمَل)	85
13	राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِيْقَ التَّعَلُّم)	102
14	उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम हि़स्सए अव्वल)	412
15	उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम, हि़स्सए दुवुम)	413
16	इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء)	641
17	हि़कायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق)	649
18	अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة)	122
19	शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل)	122
20	हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق)	102
21	आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع)	300
22	आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن)	63
23	शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن)	36
24	बेटे को नसीह़त (اَيُّهَاالْوَلَد)	64
25	दा'वते फ़िक्र اَلدَّعْوَةُ اِلَى الْفِكْر	148
26	इस्लाहे़ आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّةشَرْحُ طَرِيْقَةِالْمُحَمَّدِيَّة)	866
27	जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)	1012
28	आ़शिक़ाने ह़दीस की हि़कायात (اَلرِّحْلَةفِی طَلَبِ الْحَدِيْث)	105
29	इह़याउल उ़लूम (जिल्द अव्वल) (احياءعلوم الدين)	1124
30	इह़याउल उ़लूम (जिल्द दुवुम) (احياءعلوم الدين)	1400
31	क़ूतुल कुलूब (उर्दू, जिल्द अव्वल)	826
	शो'बए दर्सी कुतुब	
1	مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح	241
2	الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية	155
3	اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه	325

www.dawateislami.net

4	اصول الشاشی مع احسن الحواشی	299
5	نورالایضاح مع حاشیۃالنوروالضیاء	392
6	شرح العقائدمع حاشیۃجمع الفرائد	384
7	الفرح الکامل علی شرح مئۃ عامل	158
8	عنایۃ النحو فی شرح ھدایۃ النحو	280
9	صرف بھائی مع حاشیۃ صرف بنائی	55
10	دروس البلاغۃ مع شموس البراعۃ	241
11	مقدمۃالشیخ مع التحفۃالمرضیۃ	119
12	نزھۃ النظر شرح نخبۃ الفکر	175
13	نحو میرمع حاشیۃ نحو منیر	203
14	تلخیص اصول الشاشی	144
15	نصاب النحو	288
16	نصاب اصولِ حدیث	95
17	نصاب التجوید	79
18	المحادثۃ العربیۃ	101
19	تعریفاتِ نحویۃ	45
20	خاصیات ابواب	141
21	شرح مئۃ عامل	44
22	نصاب الصرف	343
23	نصاب المنطق	168
24	انوارالحدیث	466
25	نصاب الادب	184
26	تفسیر الجلالین مع حاشیۃانوار الحرمین	364
27	ख़ुलफ़ाए राशिदीन	341

www.dawateislami.net

28	قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی	317
29	فیض الادب (مکمل حصہ اوّل، دوم)	228
30	احیاء العلوم (عربی)	173
31	کافیہ مع شرح ناجیہ	252
32	अल हक़्क़ुल मुबीन	128
	शो'बए तख़रीज	
1	सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इश्के़ रसूल	274
2	बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 ता 6)	1360
3	बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 ता 13)	1304
4	उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ	59
5	अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन	422
6	गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल	244
7	बहारे शरीअ़त, (सोलहवां ह़िस्सा)	312
8	तह़क़ीक़ात	142
9	अच्छे माह़ोल की बरकतें	56
10	जन्नती ज़ेवर	679
11	इल्मुल क़ुरआन	244
12	सवानेहे़ करबला	192
13	अरबईने ह़नफ़िया	112
14	किताबुल अ़क़ाइद	64
15	मुन्तख़ब ह़दीसें	246
16	इस्लामी ज़िन्दगी	170
17	आईनए क़ियामत	108
18/24	फ़तावा अह्ले सुन्नत (सात ह़िस्से)	-

www.dawateislami.net

25	हक़ व बातिल का फ़र्क़	50
26	बिहिश्त की कुन्जियां	249
27	जहन्नम के ख़तरात	207
28	करामाते सहाबा	346
29	अख़्लाक़ुस्सालिहीन	78
30	सीरते मुस्तफ़ा	875
31	आईनए इब्रत	133
32	बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20)	1332
33	जन्नत के तलबगारों के लिये मदनी गुल्दस्ता	470
34	फ़ैज़ाने नमाज़	49
35	दुरूदो सलाम	16
36	फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म	20
	शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत	
1	हज़रते तलहा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ	56
2	हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ تعالٰی عنہ	72
3	हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ	89
4	हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह رضی اللہ تعالٰی عنہ	60
5	हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ	132
6	फ़ैज़ाने सईद बिन ज़ैद رضی اللہ تعالٰی عنہ	32
7	फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ	723
	शो'बए फ़ैज़ाने सहाबियात	
1	शाने ख़ातूने जन्नत (رضی اللہ تعالٰی عنہا)	501
	शो'बए इस्लाही कुतुब	
1	ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के हालात	206

www.dawateislami.net

2	तकब्बुर	97
3	फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	87
4	बद गुमानी	57
5	क़ब्र में आने वाला दोस्त	115
6	नूर का खिलौना	32
7	आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिशें	49
8	फ़िक्रे मदीना	164
9	इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?	32
10	रियाकारी	170
11	क़ौमे जिन्नात और अमीरे अह्ले सुन्नत	262
12	उ़श्र के अह़काम	48
13	तौबा की रिवायात व ह़िकायात	124
14	फ़ैज़ाने ज़कात	150
15	अह़ादीसे मुबारका के अन्वार	66
16	तर्बिय्यते औलाद	187
17	कामयाब त़ालिबे इल्म कौन ?	63
18	टी वी और मूवी	32
19	त़लाक़ के आसान मसाइल	30
20	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी	96
21	फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीस	120
22	शर्ह़े शजरए क़ादिरिय्या	215
23	नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल	39
24	ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	160
25	तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत	100

www.dawateislami.net

26	इनफ़िरादी कोशिश	200
27	आयाते कुरआनी के अन्वार	62
28	नेक बनने और बनाने के त़रीक़े	696
29	फ़ैज़ाने इह्याउल उ़लूम	325
30	ज़ियाए सदक़ात	408
31	जन्नत की दो चाबियां	152
32	कामयाब उस्ताज़ कौन ?	43
33	तंगदस्ती के अस्बाब	33
34	ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात	590
35	ह़ज व उ़मरा का मुख़्तसर त़रीक़ा	48
36	जल्दबाज़ी के नुक़्सानात	168
37	क़सीदा बुर्दा से रूह़ानी इलाज	22
38	तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल	25
39	सुन्नतें और आदाब	125
40	बुग़्ज़ो कीना	83
41	इस्लाम की बुन्यादी बातें (ह़िस्सा 1) (साबिक़ा नाम : मदनी निसाब बराए मदनी क़ाइदा)	60
42	इस्लाम की बुन्यादी बातें (ह़िस्सा 2) (साबिक़ा नाम : मदनी निसाब बराए नाज़िरा)	104
43	इस्लाम की बुन्यादी बातें (ह़िस्सा 3)	352
44	मज़ाराते औलिया की ह़िकायात	48
45	फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स (ह़िस्सए अव्वल)	79
46	फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स (ह़िस्सए दुवुम)	102
47	महबूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात	208
	शो'बए अमीरे अह्ले सुन्नत	
1	सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम	49

www.dawateislami.net

2	मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब	48
3	इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हि़स्सए दुवुम)	32
4	25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम	33
5	दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात	24
6	वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज	48
7	तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)	86
8	आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हि़स्से)	275
9	बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़क्मत	48
10	क़ब्र खुल गई	48
11	पानी के बारे में अहम मा'लूमात	48
12	गूंगा मुबल्लिग़	55
13	दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें	220
14	गुम शुदा दुल्हा	33
15	मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ?	23
16	जिन्नों की दुन्या	32
17	तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ (2)	48
18	ग़ाफ़िल दर्ज़ी	36
19	मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ?	33
20	मुर्दा बोल उठा	32
21	तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ (1)	49
22	कफ़न की सलामती	32
23	तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ (4)	49
24	मैं ह़यादार कैसे बनी ?	32
25	चल मदीना की सआ़दत मिल गई	32

26	बद नसीब दुल्हा	32
27	मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ?	32
28	बे क़ुसूर की मदद	32
29	अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित	24
30	हेरोइन्ची की तौबा	32
31	नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान	32
32	मदीने का मुसाफ़िर	32
33	ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा	32
34	फ़िल्मी अदा कार की तौबा	32
35	सास बहू में सुल्ह़ का राज़	32
36	क़ब्रिस्तान की चुड़ेल	24
37	फ़ैज़ाने अमीरे अह्ले सुन्नत	101
38	हैरत अंगेज़ ह़ादिसा	32
39	मोडर्न नौ जवान की तौबा	32
40	क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम	32
41	सलातो सलाम की आ़शिक़ा	33
42	क्रिस्चैन मुसलमान हो गया	32
43	म्यूज़िकल शो का मतवाला	32
44	नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग	32
45	आंखों का तारा	32
46	वली से निस्बत की बरकत	32
47	बा बरकत रोटी	32
48	इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी	32
49	मैं नेक कैसे बना ?	32
50	शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ?	32

www.dawateislami.net

51	बद किरदार की तौबा	32
52	ख़ुश नसीबी की किरनें	32
53	नाकाम आ़शिक़	32
54	मैं ने वीडीयो सेन्टर क्यूं बन्द किया ?	32
55	चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग	32
56	इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 5)	102
57	हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 6)	47
58	नादान आ़शिक़	32
59	सीनेमा घर का शैदाई	32
60	गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब क़िस्त़ पन्जुम (5)	23
61	डान्सर ना'त ख़्वां बन गया	32
62	गुलूकार कैसे सुधरा ?	32
63	नशेबाज़ की इस्लाह़ का राज़	32
64	काले बिच्छू का ख़ौफ़	32
65	ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ?	32
66	अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची	32
67	शराबी की तौबा	33
68	क़ातिल इमामत के मुसल्ले पर	32
69	चन्द घड़ियों का सौदा	32
70	सींगों वाली दुल्हन	32
71	भयानक ह़ादिसा	30
72	ख़ौफ़नाक बला	33
73	पुर असरार कुत्ता	27
74	शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब और इन का ह़ल	16

www.dawateislami.net

चराग़े बज़्मे इरफ़ां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

बहारे बाग़े ईमां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं
चराग़े बज़्मे इरफ़ां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

नुमायां आप की हर अदा से शाने फ़ारूक़ी
ख़ुदा की तेग़े बरां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّار के मुसद्दक़े आ'ला हैं
मुज़िल्ले कुफ़्रो तुग़्यां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

रसूलुल्लाह ने फ़ारूक़ को अल्लाह से मांगा
अ़ताए रब्बे सुब्ह़ान ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

चुना उस पाक ने दीं के लिये इस पाक सुथरे को
ह़बीबे दीन दारां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

ह़बीबे ह़क़ हैं त़य्यिब इन के साथी भी त़ाहिर हैं
चुनीदा बहरे पाकां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

न क्यूं वोह ज़ात चमके जिस ने दीने पाक चमकाया
जहां के महरे ताबां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

उ़मर आ़मिर हैं दीन के ह़क़ तआ़ला इन का नासिर है
दिले मोमिन के ताबां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

हैं दामादे अ़ली व नाज़िनीने ह़ज़रते ज़हरा
है सालिक जिन पे नाज़ां ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मैं हूं गदा फ़ारूके़ आ'ज़म का

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूके़ आ'ज़म का
ख़ुदा उन का मुह़म्मद मुस्त़फ़ा फ़ारूके़ आ'ज़म का

करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रह़मत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूके़ आ'ज़म का

पस सिद्दीके़ अक्बर मुस्त़फ़ा के सब सह़ाबा में
है बेशक सब से ऊंचा मर्तबा फ़ारूके़ आ'ज़म का

गली से उन की शैत़ां दुम दबा कर भाग जाता है
है ऐसा रो'ब ऐसा दबदबा फ़ारूके़ आ'ज़म का

सह़ाबा और अह्ले बैत की दिल में मह़ब्बत है
ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूके़ आ'ज़म का

रहे तेरी अ़त़ा से या ख़ुदा ! तेरी इनायत से
हमारे हाथ में दामन सदा फ़ारूके़ आ'ज़म का

इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें प्यासी हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासित़ा फ़ारूके़ आ'ज़म का

शहादत ऐ ख़ुदा अ़त्तार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूके़ आ'ज़म का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये ।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

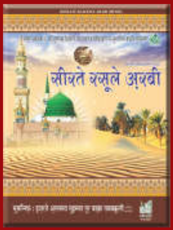

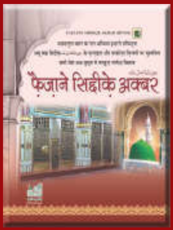

ISBN 978-969-631-352-6
0101917
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560
❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997
❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786
Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com